ॐ नमः

श्री सहजानन्दघन - पत्रावली

सम्पादक :

भँवरलाल नाहटा

प्रकाशक :

श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम

रत्नकूट, हंपी (जि० बेल्लारी)

प्रकाशकीय

आज सारे संसार में अशांति का वातावरण छाया हुआ है। लोग त्राहि-त्राहि मचा रहे हैं। शांति के लिए अनेक खोज हो रही है। विज्ञान भी इसी खोज में संलग्न है। धर्मगुरु भी अपने-अपने ढंग से शांति का उपाय बतला रहे हैं। इतना होते हुए भी वास्तविक शांति उपलब्ध नहीं हो पा रही है।

आज हम शान्ति की प्राप्ति के लिए अनेक क्रियाओं का आलम्बन लेते हैं। जबकि क्रियामात्र से शान्ति की सिद्धि नहीं होती। हृदय की दृष्टि संस्कारित न हो तो क्रिया उपयोगी नहीं हो सकती। क्रिया सहायक है, मूलाधार नहीं। क्रियाओं के द्वारा बाह्य शांति की सन्तुष्टि मिलती है। आन्तरिक शांति के लिए आत्म-स्मृति, आत्म-ज्ञान एवं तदनुरूप क्रिया अपेक्षित है।

आत्म-शांति प्राप्त करना ही जीवन और साधना का परम श्रेय है। अध्यात्म-जगत् का अनुष्ठान और आचार-विचारगत सब विधि-निषेध और प्रयास इसी के लिए है। महापुरुषों ने इसी की उपलब्धि करना नैतिक साधना का केन्द्रीय तत्त्व बताया है।

युगप्रधान योगीराज श्रीमद् सहजानंदघन जी महाराज परम शान्ति की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने बाह्य एवं आन्तरिक उद्दीपकों के तनाव को समाप्त कर सहज आनंदघन रूप परम शान्ति को संप्राप्त किया था। पूज्य महाराजजी ने न केवल स्वयं शान्ति को प्राप्त किया अपितु जो हजारों श्रद्धालु उनके सत्संग में आए, उन्होंने भी शांति का अनुभव किया। आपके सारे उपदेश शांति-लक्ष्योन्मुख है। आपने शांति प्राप्ति के लिए अध्यात्म-लोक का आलम्बन लिया। हमने तो आपकी आध्यात्मिकता का साक्षात् अनुभव किया। आपकी कृतियाँ भी इस बात की साक्षी है।

प्रस्तुत ग्रन्थ पूज्य गुरुदेव के पत्रों का संकलन है। आप जिज्ञासुओं तथा मुमुक्षुओं को पत्र लिखा करते थे। कहने में तो ये केवल पत्र ही है, लेकिन इन पत्रों में लेख के दर्शन होते हैं। पत्रों के वातायन में अध्यात्म एवं आध्यात्मिक शान्ति की सहज अनुभूति की जा सकती है। आपकी आध्यात्मिक वाणी से अध्यात्मरसिक लोग लाभान्वित हों, इसी उद्देश्य से हमने आपकी अनेक कृतियों को प्रकाशित किया है। प्रस्तुत कृति उस शृंखला की एक कड़ी है। इसकी उपयोगिता निर्विवाद सिद्ध है।

प्रस्तुत ग्रंथ के संकलन एवं प्रकाशन में हमें गुरुदेव के अनेक श्रद्धालुओं का सहयोग रहा। उनमें साहित्यकार एवं इतिहासवेत्ता तथा गुरुदेव के परम भक्त श्री भंवरलालजी नाहटा का नाम उल्लेखनीय है।

अंत में हम स्व पर कल्याणकारी योगीन्द्र युगप्रधान गुरुदेव श्री सहजानंदघनजी म० के पुनीत चरणों में श्रद्धा-सुमन समर्पित करते है, जिनके आध्यात्मिक पत्रों से हम सब लाभान्वित हुए व होंगे। साथ ही हम उन सबके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते है, जिनके आर्थिक व हार्दिक सहयोग से यह यह ग्रंथ-रत्न आपके कर कमलों में प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं। सबका सबके प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन। ॐ शांति।

एस० पी० चेवरचंद जैन,
आश्रम-मंत्री

अनुभव-पद

सफल थयुं भव मारूं हो कृपालु देव !
पामी शरण तमारुं हो कृपालु देव !

कलिकाले आ जम्बू भरते, देह धर्यो निज-पर-हित शर्ते ;
टाल्युं मोह अंधारुं हो कृपालु० ॥१॥

धर्म ढोंग ने दूर हटावी, आत्म-धर्म नी ज्योति जगावी ;
कर्‌युं चेतन जड़ न्यारूं हो कृपालु० ॥२॥

सम्यग् दर्शन-ज्ञान-रमणता, त्रिविध कर्म नी टाली ममता ;
सहजानंद लह्युं प्यारूं हो कृपालु० ॥३॥

युगप्रधान दादा श्री जिनदत्तसूरीश्वर मूर्त्ति (हम्पी दादावाड़ी)

जन्म सं० ११३२ दीक्षा ११४१ सूरिपद ११६९ स्वर्गवास १२११ आषाढ़ सुदि ११

धोलका धोलका चित्तौड़ अजमेर
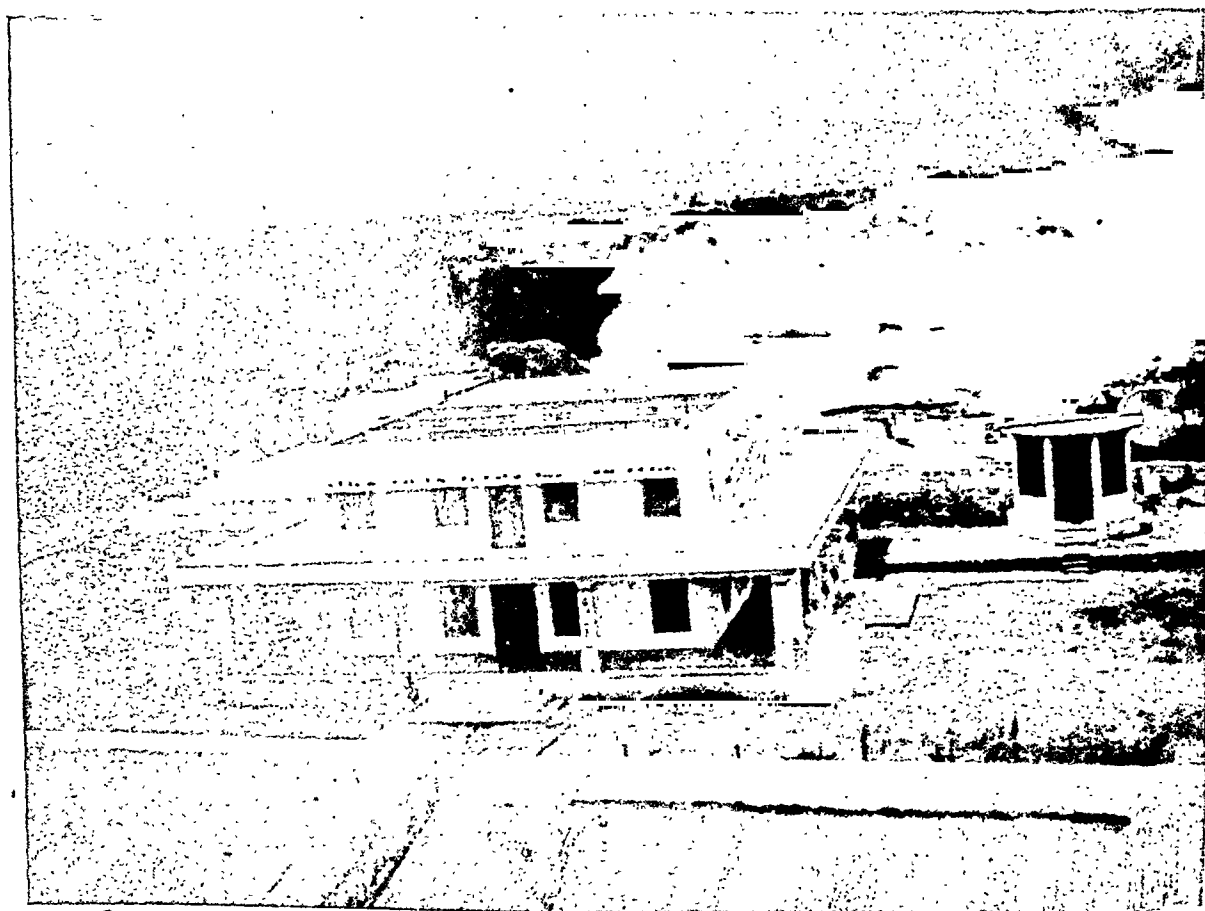
श्री समाधिमन्दिर और दादावाड़ी हम्पी

प्रस्तावना

योगीन्द्र युगप्रधान गुरुदेव श्री सहजानन्दघन जी महाराज विश्व की महान् विभूति थे। गत सहस्राब्दी में जो आत्मद्रष्टा महापुरुष हुए हैं उन में आप का नाम गौरव के साथ लिया जा सकता है। आपकी आत्म-साधना बड़ी उदात्त और विलक्षण थी। नये कर्मबन्धन न कर, उदयानुसार पूर्वकृत कर्मों को भोग कर, ध्यानाग्नि द्वारा कर्मकाष्ठ को दग्ध कर शीघ्र स्वधाम प्राप्ति में आपका पुरुषार्थ अद्वितीय था। आपने साधु समुदाय के साथ बारह वर्ष विचरण कर आगम, प्रकरण, षट्भाषा व्याकरण, काव्य-कोश आदि का समुचित अध्ययन किया था। आप भाव दयासागर एवं परमकृपालु थे। अनेक भवों का अभ्यस्त आत्मसाधन एकाकी गुफावास मोकलसर में स्वीकार कर भारत के अनेक स्थानों में उदयानुसार आत्मसाधनरत विचरते रहे। अपने अप्रमत्त साधनाकाल में जो भी मुमुक्षु सम्पर्क में आये उन्हें आत्मोपलब्धि हेतु पात्रानुसार सहायता करने में सतत प्रयत्नशील रहते। आपने शास्त्रानुसार 'एगेवत्थे एगे पाए'—एक भत्तंच भोयणं' अर्थात् 'एक वस्त्र, एक पात्र और एक बार भोजन' इन नियमों का आजीवन पालन किया। आपके आहार में नमक, चीनी आदि का त्याग था। आप अल्पाहार लेकर 'ठाम चौविहार' प्रत्याख्यान करते। हमने अनुभव किया है कि बाद में आप प्राणान्त कष्ट होने पर भी मुँह में पानी की बूँद या औषध कुछ भी न लेते। हिमालय, पंजाब आदि के शीतल वातावरण में भी एक पतली सूती चादर, पंछीया या लंगोटी के अतिरिक्त कोई वस्त्र नहीं रखते। ईडर के पहाड़ की तप्त शिलाओं पर मध्याह्न में कायोत्सर्ग करने से शरीर श्यामवर्णा हो जाने पर भी प्रशान्त मुद्राशील रहे।

पूज्य गुरुदेव प्रचार प्रसार से दूर रहते थे। इससे आपकी आत्मसाधना में अनुकूलता रही, विक्रम संवत् २०१८ ज्येष्ठ शुक्ल १५ को घोरड़ी में हजारों व्यक्तियों की विद्यमानता में विहरमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी की आज्ञा से देवेन्द्रदेव (श्री जिनदत्तसूरिजी) द्वारा युगप्रधान पद प्राप्त होने की महान् घटना को भी अखबारी प्रचार-प्रसार से सर्वथा दूर रखा।

आप श्री के साथ हमारा परिचय व पत्र-व्यवहार तो पहले से ही था। काकाजी श्री मेघराजजी, श्री अगरचन्दजी उनके साक्षात् दर्शन बहुत पहले कर चुके थे। पूज्य श्री हमारे योग्य साहित्यिक सामग्री भेजते अथवा सूचित करते रहते थे। परन्तु मुझे विक्रम संवत् २००८ कार्तिक शुक्ल १३ को चारभुजा रोड (आमेट) में प्रथम दर्शन का सौभाग्य मिला। तत्पश्चात् तो अनेक बार अनेक स्थानों में मिलन व सत्संग का अवसर प्राप्त हुआ।

के प्रभाव से कठिन हो गया है। आत्मा की निर्मलता से प्राप्त ज्ञानबल से आपने अष्टापद तीर्थादि के दर्शन किये और उसका नक्शा तक बनाकर बतलाया एवं स्तवनादि में भी वर्णन किया जिसका अन्तर शास्त्र वर्णन और अनुभूति धारा का ही प्रभाव समझना चाहिये।

आप इतने विनीत और गुणग्राही थे कि किसी भी अन्य धर्मावलम्बी को अपने बराबर बैठाने एवं आदर देने में संकोच नहीं करते। पावापुरी जी में बौद्ध भिक्षुओं के दर्शनार्थ गाँव मन्दिर से आने की इच्छा प्रगट करने पर स्वयं मध्यान्ह की कड़ी धूप में आकर मिले अपने लिये मेरे द्वारा बिछाया आसन भूमि पर बिछाकर उन्हें पाट पर बैठाया। दर्शक लोग उनकी विनयशीलता देखकर गद्‌गद् हो गये। वे गुणवानों के प्रति पूज्य और बहिनों और चारित्रात्मा साध्वियों को मातेश्वरी शब्द से अभिहित करते हुए अपने को बालक रूप में ज्ञापित करते। आपने "सविजीवकरूं शासन रसी" की उदात्त भावना के वशीभूत होकर बड़वा-अगास आश्रम के मुमुक्षुओं के हेतु खण्डगिरि में दिन में तीन-तीन बार प्रवचन की अजस्र धारा बहाई। इसी प्रकार प्रवर्तिनी जी श्री विचक्षण श्री जी म० की विदुषी साध्वियां चन्द्रप्रभाश्री जी, मणिप्रभाश्री जी आदि के पधारने पर आठ-आठ घण्टा तक प्रतिदिन ज्ञान गंगा प्रवाहित की। आपके द्वारा मुमुक्षुओं को दिये गये हजार ग्यारह सौ पत्रों में बहुमूल्य सामग्री भरी पड़ी है जो ऐतिहासिक दृष्टि से, सैद्धान्तिक दृष्टि से, शंका समाधान की दृष्टि से, यात्रा विवरणादि विविध ज्ञातव्यों साथ-साथ जिज्ञासुओं के लिये परम प्रेरक और आत्मोत्थानकारी तत्त्वों के भण्डार से परिपूर्ण है। इनमें कहीं स्वगत उद्‌बोध हैं तो कहीं सदुपदेश, मार्ग दर्शन हैं, कहीं जीवनचर्या, कहीं स्वरोदय ज्ञान, कहीं यात्रा वर्णन तो कहीं समाधि मरणोपाय उपदिष्ट हुआ है। पत्रांक ६१ में लिखित नैपथ्य वाणी में संवाद द्वारा अपनी आत्मा की दृढ़ता को और साधनाक्षेत्र में कार्य-सिद्धि के लिये भीषण प्रतिज्ञात्मक अभिव्यक्ति की प्रस्तुति है।

पाकिस्तान द्वारा भारत पर आक्रमण होने पर जब हमने भारत की सुरक्षा के लिये प्रार्थना की तो उन्होंने पत्रांक ११६ में दिनांक ७-११-६५ को लिखा कि दीपावली के अवसर में तो भारतीय सुरक्षा हेतु की गई प्रार्थना तो सुन ली गई, अब आगे तो वह ऊपरवाला जाने। दि० १७-११-६५ के पत्र में लिखा "हवे फरी थी नापाक नी नापाक प्रवृत्ति बमणा जोश थी चालू थवा संभव छे, जो के तेमां तेज खता खाशे छतां भारत ने नुकशान तो करशेज, जे जे प्रदेश मां पापोदय तीव्र हशे त्यां-२ अमारी रक्षा भावना शुं काम करी शकशे। पुण्यबल ज्यां हशे त्यां बाल वांको नहीं थाय।"

वि० सं० २०१० में जब आप पावापुरी तीर्थ में थे और सरला के समाधिमरण होकर सच्चिदानन्द कुमार देव रूप में अवतीर्ण होने पर उनके पिताजी को दिये गए पत्र (४४६) में विस्तृत विवरण लिखा है। काकाजी श्री मेघराजजी नाहटा को दिये गये पत्रांक ४६१ में पू० काकीजी के ३१ उपवास तपश्चर्या के समाचार पाकर रात्रि के समय लब्धि-संपन्न माताजी द्वारा बीकानेर जाकर आशीर्वाद दे आने का स्पष्ट उल्लेख हैं। पत्रांक (४५८) में गणिवर्य प्रेममुनिजी को दिये पत्र में अपनी आत्म जीवनी की अनेक बातें प्रामाणिकता पूर्वक लिखी हैं।

श्री केशरीचन्दजी धूपोया के चन्द्रलोक यात्रा सम्बन्धी सामयिक प्रश्न का समाधान पत्रांक ४६३ में गुरुदेव ने बड़ी ही युक्तिपूर्वक संक्षेप में किया है कि घनवात तनवात पर स्थित पृथ्वी को आकाश के वातावरण उदधि मान लेने से तथा दो-दो सूर्य-चन्द्र के अतिरिक्त समस्त असंख्य विमानों में आबादी, नहीं मानने से वैज्ञानिक मान्यता और शास्त्र मान्यता में सामंजस्य बैठ सकता है।

माताजी के 'अलसर' आदि व्याधि के समय ऑपरेशन होने की बिल्कुल तैयारी थी पर गुरुदेव के पधारने पर उनका योगबल और माताजी का समर्पण भाव काम कर गया। ऐक्सरे में बिल्कुल साफ ऐसी घटना पर जब श्री पूज्यजी जिनविजयेन्द्रसूरिजी की व्याधि निवारणार्थ प्रार्थना की गई तो उसमें उन्होंने पत्रांक २६१ में लिखा था कि होगा वही जो ज्ञानियों ने देखा है। ऐसी अनेक रहस्यपूर्ण बातें इन पत्रों द्वारा जानने को मिलती है।

पत्रांक १३१-१३२ में बद्रीनारायण यात्रा वर्णन करते समय अष्टापद तीर्थ स्थापन करने का विचार था पर धरणेंद्र द्वारा ३ वर्ष वहा उपद्रव रहने से रुक जाने के संकेत से स्थान मन में निर्धारित करते हुए भी चुप रहे। उनके पत्र भक्तजनों को दिये हुए बहुसंख्यक मिलते हैं जिनमें लगभग ३५० सद्‌गृहस्थों को १०-१२ साध्वियों और १५-२० मुनिजनों को जिनमें उपाध्याय लब्धिमुनिजी, गणिवर्य बुद्धिमुनिजी संतबालजी, सुलोचनविजयजी, जयानंदमुनिजी, माणकविजयजी, महानंदविजयजी, सूर्यसागरजी, देवेंद्रसागरजी, पुण्यसागरजी, भद्रसागरजी, निरंजनविजयजी, गणिवर्य प्रेम मुनिजी, आदि को दिये गये हैं। इन सब में मुनि श्री आनंदघनविजयजी के पत्र विस्तृत, बहुसंख्यक और बड़े ही महत्त्वपूर्ण समाधानों से मंडित है। श्रावकों में पं० प्रभुदास भाई, घोरजलाल टोकरशी, पं० हंसराजजी, आदि को कुछ पत्र दिये हैं। संख्याबद्ध पत्र हमारे नाहटा परिवार को अहमदाबाद के श्री लालभाई सोमचंद के परिवार को आहोर के वैद्यराज कोजमलजी बाफणा, नवीनभाई नेमचंद जौहरी परिवार को विजयकुमारसिंह बहेरं, केशरीचंदजी धूपिया, न्यायाधीश श्री मगरूपचन्दजी भंडारी, भाई हजारीमल बांठिया आदि शताधिक भाग्य शालियों को संबोधित है। उनमें अनेक बातों के समाधान सार्वजनिक, व्यक्तिगत और व्यापक भी हैं। इन पर विवेचन कर प्रस्तावना का कलेवर बढ़ाना अनुचित है। मुमुक्षुओं को क्षीर नीर न्याय से स्वाध्याय कर अभीष्ट ग्रहण करना अनिवार्य है।

गुरुदेव की पद्यरचनाओं का संग्रह मैंने सन् १६७१ में सहजानंद सुधा नाम से सम्पादित किया था। गुरुदेव के परमभक्त श्री लालभाई सोमचंद शाह ने सहजानंद विलास का संकलन किया जिसे मैंने देवनागरीलिपि में आश्रम की ओर से मुद्रित कराया। 'पत्र सुधा' में उन्होंने ३०० पत्र गुजराती लिपि में अहमदाबाद से प्रकाशित करवाये थे। गुरुदेव ने 'श्रीमद् राजचन्द्र' से तत्व-विज्ञान संकलित कर तैयार किया एवं 'उपास्यपदे उपादेयता' लिखी। ये सभी ग्रंथ हंपी आश्रम द्वारा प्रकाशित हैं। श्री आनंदघन चौबीसी के मार्मिक भावार्थ की मुद्रणप्रति (प्रेस कोपी) तैयार कर मुद्रण यन्त्र में देने के लिये रखी थी परन्तु शारीरिक व्याधिग्रस्त हो जानेसे इतस्ततः हो गई। अब तो हम्पी से दोबारा नकल प्राप्त होने पर

प्रकाशित की जायेगी। प्रस्तुत सहजानन्दघन पत्रावली में ७०६ पत्र प्रकाशित किये जा रहे हैं। पठन-पाठन की सुविधा के लिए मैंने ग्रंथ में दो खण्ड बनाये हैं। प्रथम खण्ड में पृष्ठ १६८ में २०१ पत्र हैं। द्वितीय खण्ड में पृष्ठ २२४ एवं १०८ पृष्ठों में ४६७ पत्र छपे हैं। कुल पृष्ठ ५०० में ७०६ पत्र हैं। क्रिंचित स्थानों पर पृष्ठीय विशृंखलता अवश्य है, जिसका कारण मुद्रण की असावधानी और मेरी अस्वस्थता है। प्रस्तुत ग्रंथ मुमुक्षु साधकों के पवित्र कर कमलों में प्रदान करते हुए आत्यन्तिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। गुरुदेव के परम भक्त काकाजी शुभराजजी, अगरचन्दजी नाहटा, सुन्दरलालजी पारसान, श्री लालभाई, राजवैद्य जसवन्तरायजी जैन, केशरीचन्दजी धूपिया, रतनलाल जी बदलिया आदि प्रस्तुत रचना देखने की मन में ले गये। भक्तवर्य श्री समरेन्द्रपतसिंहजी कोठारी ने मुझे गुरुदेव के जीवन चरित्र संकलन से पूर्व आत्मज्ञानी माताजी श्री धनदेवीजी का जीवन वृत्त लिखने का सुझाव दिया जो मुझे उपयुक्त लगा क्योंकि उन विद्यमान महान् आत्मा की जीवनी गुरुदेव के ही जीवनवृत्त की एक विभाग है। अतः मैंने उसे लिख तो दिया है साथ ही गुरुदेव एवं माताजी के परमभक्त विद्वद्वर्य श्री प्रतापभाई टोलिया ने भी लिखा है संयुक्त या स्वतंत्र जिस रूप में भी प्रकाशित होने का भवितव्य है, होगा। सम्प्रति सभी सामग्री के आधार पर परम पूज्य गुरुदेव का जीवन चरित्र विस्तार से प्रकाश में आना परमावश्यक है। साथ-साथ चित्रकथा, रजत मुद्रा आदि के द्वारा प्रचार होना मुमुक्षुओं के लिए परम प्रेरणा स्रोत होगा। प्रस्तुत ग्रंथ के प्रकाशन में शक्तिपुञ्ज आत्मज्ञानी प्रात स्मरणीय परमपूज्य माताजी श्री धनदेवीजी का आशीर्वाद ही प्रधान सम्बल रहा है। उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए आश्रम मंत्री श्रीयुत घेवरचन्दजी जैन, पूज्य काकाजी मेवराजजी नाहटा, विजयकुमारसिंहजी वडेर एवं अन्य सभी गुरुभक्तों के प्रति मैं सादर आभार व्यक्त करता हूँ जिनके सहयोग से गुरुदेव के पत्रों को मुमुक्षुजनों के कर कमलों में प्रस्तुत किया जा रहा है। अन्त में विविध कारणवश की विलम्बता एवं मुद्रणादि अशुद्धियों के लिये हार्दिक क्षमा प्रार्थी हूँ।

युगप्रधान जयन्ती
२८-६-१९८५

संत चरणरज

योगीन्द्र युगप्रधान श्री सहजानन्दघनजी (भद्रमुनिजी) महाराज

युगप्रधान गुरुदेव श्री सहजानन्दघनजी महाराज

परम कृपालुदेव श्रीमद् राजचन्द्रजी
जन्म सं० १९२४ कार्तिक पूर्णिमा ववाणिया
निर्वाण सं० १९५७ चै० कृ० ५ राजकोट

परमपूज्या आत्मद्रष्टा माताजी श्री धनदेवीजी

श्री सहजानन्दघन-पत्रावली

पृष्ठ	पत्रांक
१ से १६८	१ से २०९

अर्हम्

परम पूज्य योगीन्द्र युगप्रधान सद्गुरु

श्री सहजानन्दघन पत्रावली

श्री सहजात्म-स्वरूप परमगुरु शुद्ध चैतन्य स्वामीभ्यो नमः

(पत्रांक—१) पावापुरी

ॐ नमः अतिथि (सं० २०१०)

अनन्त सौख्य नाम दुःख-त्यां रही न मित्रता,

अनन्त दुःख नाम सौख्य-प्रेम त्यां-विचित्रता,

उघाड़ न्याय नेत्र ने—निहाल रे! निहाल तुं!

निवृत्ति शीघ्र मेव धारी ते प्रवृत्ति बाल तुं "१ [श्रीमद् राज०]

[आ पत्र गाम डुमरा मधे मोरारजी भाई ने सम्बोधी ने लखायो छे]

—आत्मा छुं" हुं"'हुं आत्मा छुं, अहो! हुं आत्मा ज छुं—आत्मा ज छुं. हुं केवल एक आत्मा ज-आत्मा ज. शरीर ते हुं नहीं ज—हुं शरीर नथी ज. शरीर तो राखनो ढगलो-प्रगट राखनो ढगलोज छे ए मारूं स्वरूप न होय. ए राखना ढगला साथे मने कशुं सम्बन्ध नथी ज. ए तो मसाण नी चीज मसाण नो राखनुं मने शुं प्रयोजन ; भला! मसाण नो राख अढ्या जोग्य खरी के? तेना पर ममत्व करवा थी शो लाभ? भले ए बली जाओ! गली जाओ! सड़ी जाओ! कपाई जाओ! विखराई जाओ! अरे! मलवुं विखरवुं ए तो ए जड़ नो स्वभाव ज छे. जड़ ना संयोग-वियोग थी चेतन मां कशुं फेरफार थतुं ज नथी. हुं चेतन अने शरीर जड़. माटे एने ने मने कांइ लेवुं देवुं नथी ज. एना नाश थी मारूं नाश थई शके ज नहीं. ए संयोगी-विनाशशील अने हुं असंयोगी—अविनाशी छुं. माटे एना नाश थी मने शी हानि? जे. हानी. ऊ. नहीं. चो. स्पष्ट. शा. माटे. ? मरे. ! ए. मसाण. नी. माटी. ना. निकस्तोर. केम. ? हुं तो आत्मा-आत्मा-आत्मा ज. त्रिकाल एक आत्मा ज 'छुं शुद्ध बुद्ध सुख धाम महा, हुं स्वयं ज्योति परिमुक्त अहा! 'सहजानंदी शुद्ध स्वरूपी अविनाशी हुं आत्मस्वरूप'।

अहा! हुं चोक्खो आत्मा, चोक्खो आत्मा ज छुं. मारा मां कर्म क्यां छे? छेज नहीं मारा स्वरूप मां कर्म नुं अस्तित्व नथी-नथी ज. कर्म मारूं स्वरूप न होय—कर्म मारूं स्वरूप न होय. शरीर

ए तो कर्म छे. कर्म छे. वेरा छोकराय कर्म. कर्म ते तो कर्म—आत्मा ते आत्मा ज. शरीर ते आत्मा नहीं अने आत्मा ते शरीर नहीं, बस-आत्मा तो आत्मा ज. अहो ! हे आत्मा ! तारुं अचिन्त्य माहात्म्य. अहो !! अहो !!

अरे ! आटलो काल तो कोरी कल्पना मां ज खोयो—कोरी कल्पना मां ज खोयो ! देव ने नामे कल्पना ! गुरु ने नामे कल्पना ! धर्म ने नामे कल्पना ! शरीर कुटुम्ब देश-समाजादि नामे पण कल्पना ज. कोरी कल्पना ज. पण कल्पना ते कल्पना. ए आत्मा न होय ! कल्पना आत्मा न होय. आत्मा ज देव छे ! आत्मा ज गुरु छे ! आत्मा ज धर्म छे हुं ज आत्मा छुं. हुँ ज देव छुं. हुँ ज गुरु छुं. हुं ज धर्म छुं. हुं ज मोक्ष छुं. सोहं ! सोहं !! सोहं !!! अहं-अहं-अहं···अरे केटली बधी भूलवणी ! पहेलां समजातुं न्होतुं···हाश ! हवे समजायुं ! हवे समजायुं ! सर्वाभास रहित हुं सत् चैतन्यमय आत्मा छुं ! हुं आत्मा ज छुं—आत्मा ज छुं. आत्मा ! आत्मा !! आत्मा !!!

"आतम भावना भावतां-जीव लहे केवलज्ञान रे"—महात्मा श्री सरलाए भावेली आतम भावना नुं अल्पांश ।

हे जीव ! जो तने आत्मा जोइतो होय तो आ आत्म-भावना ने अविच्छिन्न भाव···एक क्षण पण बीजो विकल्प न कर ! जेने जे भावे ते मले शरीर भावे तो शरीर मले-अने आत्मा भावे तो आत्मा मले···जो तुं जन्म मरण थी कंटाल्यो हो तो भाई ! आतम भावना चूकीश मा ! सत्य कहुं छुं आतम भावना भावतां जीव केवलज्ञान पामी शके छे···आ वात नी खात्री करवी होय तो मात्र चोवीस कलाक एकधारी आतम भावना भाव···पछी···कर अनुभव रस पान. ॐ आनंद आनंद ।

सहजानन्द

ता० क० भाई ! आतम भावना भावी ने आत्मा नो साचो भाई बनजे ! पूज्य मुनि भगवंतो ने आ देहधारी ना भवोभव-परिभ्रमण ना खमतखामणा सहित तेमना प्रत्युत्तर मां आ पत्र वंचावजे. प्रियजनो सौ ने भव-खामणा सह एज आतम भावना प्राप्त थाओ !

ॐ सहजानंद आनंद आनंद !

(पत्रांक—२) पावापुरी

ॐ नमः (सं० २०१०)

हे जीव ! तुं सद्गुरु आज्ञा माथे चढावी ने तेमना बतावेला मार्गे एकलोज आगे कूच कर ! निज बल परज अडोल रहे ! बीजा कोई नो पण सहायता इच्छ मा ! शरीर ने अचिन्तता ना समुद्र मां फेंकी दे जो के तेथी शरीर ने तो खोइश पण आत्मा ने प्राप्त करीश ।

* साधकीय जीवन मां शूरवीरता एक आवश्यकीय वस्तु छे. जे जंगल ना सिंघ मां होय छे. केवल दृढ़ भुजाओज माया ना पड़दा मारी शके छे. ज्यां सूधी तुं शरीर आदि ना भयो थी आक्रांत छे त्यां सूधी आत्म-साक्षात्कार माटे अयोग्य ज छे.

❀ आराम आपनारा स्थलो थी तद्दन असंग था ! मैदाने जंग मां फंगडाव-अनंत मेरा आत्मा ने ज पोतानो लक्ष बनाव ! समस्त अनुभवो नो स्वागत कर ! संकुचित झाड़ी मां थी बाहर निकल !

❀ साक्षात्कार माटे तारे स्वयं सन्मुख थवुं जोइए माटे उठ ! मर्दानगी नी साथे पोताना ज पग ऊपर ऊभो था ! तुं साचो साधक बन ! समस्त बंधनो ने कापी छिन्न भिन्न करो, सर्व भयो ने जीती तुं आत्म-साक्षात्कार कर !!

❀ झट कर ! खोटी न था, समय थोड़ो छे जीवन वहयुं जाय छे. केटलाय युगो वीती गया. आज नो दिवस पण सपाटा भेर वीती जाय छे.

❀ काल शिर पर घूमी रह्यो छे. जेणे आत्म साक्षात्कार नो दृढ़ संकल्प करी लीधो छे तेनो मार्ग कोण रोकी शके छे ? तूं तारा मां विश्वास राख ! विश्वास राख ! तूं घणा समय थी उदासीन रही चूक्यो छे—भले ? एने तुं केटलूं य घातकी पणु मान, पण याद राख—के कोई पण समये कोई पण प्रकारे आ समस्त देहने बलिदान पणे आत्म वेदी पर चढावी देवु पडशे. देहाध्यास छोडवो पडशे. मृत्यु-धर्मा शरीर पर दया केवी ?

❀ पोताना शिकार ऊपर तुं सिंहनी माफक त्राटकी पड़. एकज झाटके तुं पूर्व संस्कारो ना समुहित बंधनो ने कापी शके छे—माटे कापी नाख. शानी राह जुवे छे ? बीजानी सम्मति नु तारे शुंप्रयोजन ! तुं तारी पोतानीज आंखे पवित्र बन ! उपदेश नी खोज न कर ! मात्र तु तने पोताना अंतरतम प्रदेश मां खेंच. बाह्य वस्तुओ नो मात्र हाईड्रोजन बोम नी माफक आत्म घातक छे. निज अंतरात्मा नेज पोतानो निवास स्थान बनाव. मृत्यु समये दुनिया भर नो खजानो शा कामनो ? समस्त रूपधारिओ मृत्यु ने अवश्य प्राप्त थशे. कारणके तेओ विनाशशील छे मन पण परिवर्त्तनशील छे माटे तुं मन अने रूप थी अलग था ! दृश्य मां थी अदृश्य मां लक्ष फेरव ! आत्मा सिवाय बीजुं बधुं भूली जा. तुं मात्र पोतानी साथे ज संबंध राख.

❀ बीजा ना दूर दुराचारो भणी नजर न कर ! तिरस्कार अने आलोचना माटे तने तारा जीवन मां थी पूर्ण सामग्री मलशे. एटलुं ज नहिं बल्के आनंद पामवा माटे पण पोता मांथीज तने पूरती सामग्री मलशे कारण के प्रत्येके पोताना माटे पोतेज विश्वरूप थवुं जोइए.

तारा मां रहेला जीव भावने तुं मरवा देके जेथी तने ताहं ईश्वरत्व तारा मांज अनुभवाय. सत्य कहु छुं. आत्मा छुं—आत्मा छुं—ॐ आनंद आनंद आनंद

आत्मा छुं आत्मा छुं !

(पत्रांक—३) तीर्थराज श्री अपापा

ॐ नमः का० शु० १२/२०१०

प्रश्न—आ नेत्र अनंत सौन्दर्य ने केम जोई शकता नथी ?

उत्तर—सीमित सौन्दर्य नी दासता मां आबद्ध होवा थी.

सिद्धात्माओ मां अन्य छए द्रव्यो नो सम्पर्क छतां तेओ बंधाता नथी। तेनुं कारण शुं? अने आपणे तेम वर्त्ती शकीए के नहीं? सुख-दुःख-आयु-ए त्रणे परस्पर जीवो घड़े आप ले थई शके तेवी चीजो नथी तो पछी पोताना आत्मा सिवायनी नकामी चिन्ता करवा थी शो लाभ?

भीषण नरकगती मां तिर्यंच गतिमां कुदेव नरक गतिमां

पाम्यो तुं तीव्र दुःख भाव रे जिन भावना जीव!......?

हे भव्यो! जिन भावना-आत्म भावना एक क्षण पण विसारो मां-भले शरीर अने कुटुम्ब नुं गमे ते थाओ ते आपणुं नथीज एम निश्चयें करी ने मन ने दृढ़ बनावो. एक आत्मा ज आपणो. बाकी बधुं कर्म छे कर्म! ते तो आवे जाय—बने-बिगड़े तेनी फिकर शी? आत्मा तेवो नथी. तेनो नाश कोई करी शकनार नथीज. माटे निर्भय रहो!

पत्रनोत्रुटित भाग समजवा माटे नीचे प्रमाणे अक्षरो गोठवीये तो वखते सुगमता थई शके. अे न्याय थी तो अक्षरो गोठवुं छुं. भूल चूक नी ज्ञानियों पासे क्षमा मागुं छुं.

१	२	
न दिठा	आ जीवे	बोध शब्द प्रासमा त्रुटि हती
उपासे सुखिया	आश्चर्य कर्यो	ते टालवा मूक्यो छे
देव ने सभारत	विचारवा पाठ	बाकी ना खूटता शब्दो नो स्थले
उळसाय छे करी	अेक मुमुक्षु ने प्लेगनी	मूकेला शब्दो अर्थ बोध करावी शकशे.
करी परमातम	अने बालको	
(बोध) सुक्षमा	तेमना सगा	
	तेना	

आशा छे के आप एथी संतोषाशो. सर्व याद करनारा आत्माओ ने आत्म भावे अभेद प्रणाम

ॐ आपनो बाल आत्मा

(पत्रांक—६)

ॐ नमः

श्री जेठी मां जेतबाई मा आदि प्रियजनो नी सेवा मां

विनम्र निवेदन के आपनी कृपा थी घणो बोझो उतरी गयो होय. तेम चित्त मां विश्रान्ति शांति अनुभवाय छे. गुप्त मौन अने असंगता ने अनुकूळ देश-काळ अने गुफा नु वातावरण छे. आपणे शरीर ना मिलनने गौण करी आत्म भावे उपयोग मां उपयोग जोड़ी ने टकवुं एज आपणो पारस्परिक मिलन छे—जे गमे त्यां गमे तेवी परिस्थिति मां गमे ते काले थई शके छे. माटे हे भव्यात्माओ चित्त ने अचिन्त करी प्रगट मिलन अनुभवो, हुं बालक आपने अधिक शुं जणावी शकुं.

व्हेन लक्ष्मी हेमलता वगेरे मे आत्म स्मरण. पत्र मी बात गुप्त राखजो आत्म स्मरण मां ~~~
नहि राखता मने त्यांथी ज आशीष मोकलजा रहेशो तो ते मने मली शकशे. ॐ आनंद आनंद अ
सहजानंद आत्मस्मरण

(पत्रांक—७) अज्ञातवास
ॐ नमः अतिथि

आतम भावना भावतां जीव लहे केवल ज्ञान रे.

मन तूं मह्या शरीर मां, क्यम माने सुख चैन;
ज्यां नगारा कूचना, वागे छे दिन रैन''।
आव्याता ते नहि रह्या, दशरथ लक्ष्मण राम,
तो तुं केम टकीश रे, मूढ पाप ना धाम'''२

- ❀ प्रतिदिन प्राणी मरी ने यम मन्दिर मां पहोंचता रहे छे. मोटुं आश्चर्य ए वात नुं छे. के बाकी ना जीवो पोताना जीवन नी आशा सेवी रह्या छे !!
- ❀ अरे ! आ प्राणी निद्रावस्था द्वारा पोताना मृत्यु नो आशंका उत्पन्न करे छे. अने जागी ने जीवन नो आनन्द फलक झुमे छे. आ प्रकारे ज्यारे जीवन मरण नुं खेल एज प्रतिदिन नी लीला छे. तो पछी आ जीव आ देह मां क्यां सूधी निवास करी शकशे ?
- ❀ आ जीव श्वास अने उश्वास ना गमनागमन द्वारा आ देह मां थी प्रयाण करवा नुं निरन्तर अभ्यास करतो रहे छे. आश्चर्य छे के जगतवासिओ पोत पोताने अजर अमर मानी बैठा छे !!!
- ❀ हे जीव ! तूं मने एम न पूछ के धर्म करवा थी शो लाभ ? तुं प्रथम चेला पालखी उपाड्नाराओ आणी आछो नजरे जो. पछी तेने जो जे पेली पालखी मां बैठो छे.
- ❀ साचा सुख मां निमग्न रहेवा मां पाप नथी. परन्तु साचा सुख ना हेतुभूत धर्म नी वात करवा मां पाप छे. विषय कषाय नी अधीनता एज धर्म नी घात छे. माटे तेथी तुं उपराग छे ७९र म दया थी लबालब भरेलुं दिल ज साची दौलत छे. संसारिक दौलत तो नीच माणसो पासे पण होय छे. आत्म प्रदेशो नुं स्थिरत्व एज साची दया छे. माटे हे जीव ! तुं निर्विकल्प था, निर्विकल्प !!
- ❀ मने कोई पूछे के तुं गरीब छो के तवंगर ? तो हुं कही शकुं खरो के हुं दुनिया नो मोटा मां मोटो धनवान शेठ छुं. कारण के मारी पासे एटलो सन्तोष धन छे जे दुनिया भर ना सम्राटो ना खजाना मां नथी !!! जो के मारी पासे संग्रह मां एक काणी कोडी पण नथी कदाच परिग्रह पिशाच ने आधीन थई एकाद कोडी संगृहीत करत तो मारी कीमत ते कोडी जेटली ज अंकात। ॐ ॐ ॐ

[प्रि० भ० आ !] बधाय सत्संगीओ ने आत्म स्मरण मां मदद करजो. काई अज्ञात प्रदेश मां छुं दिगम्बर समाज नो सम्पर्क छे. क्षुल्लक जीवन नी तालीम मां छुं. लोको मने क्षुल्लकजी पणे संबोधे

छे. आहार-निहार-विहार आदि येवुं तदनुकूल पणे वर्त्ते छे. जो के हजु तेवा त्यागीजनो नुं सम्पर्क नथी. मात्र श्रावक समाज नुं छे. सुखलाल साथे छे मजा मां छे. त्यां पू० वेलबाई आदि सौ सत्संगीओ ने नामवार अभेद आतम भावे नमस्कार. देणुवासिओ ने पण प्रणाम पहोंचाड़जो.

ॐ सहजानन्द आनन्द आनन्द आनन्द

पू० जेठी मां—आप ज दुखी आप थी, क्यां करवी पोकार।
दुख कारण ने पोपतो, अन्यज थाय खुआर।

मनन करशोजी प्रणाम !

(पत्रांक—८)

ॐ नमः (गोकाक १९५६)

ॐ सहजात्म स्वरूप परमगुरु शुद्ध चैतन्य स्वामीभ्यो नमः

भव्यात्मा,

पत्र मल्युं. पूर्व नु ऋण तो तीर्थङ्कर जेवा महात्माओ ने पण चूकववुं पड्युं, तो आपणा जेवा पामर प्राणीओ ने चूकव्या सिवाय छूटको ज क्यां छे ?

जे जे स्थिति उदय मां आवे तेना थी गभरावुं नहीं, पण समभाव थी तेना जोनारा पणे साक्षी रहेवुं. भली न जवुं. तो नवां कर्मो न बंधाय अने जुना कर्मो नु ऋण चूकवी देवाय.

जेम सोना ने गमे तेवा अग्निमां वालो कुटो तोय तेनो नाश न थई शके पण शुद्ध थाय. ते कर्म ने आधीन परिस्थितिओ वड़े आत्मा गमे तेवा सारा नरसा प्रसंगो मां सपड़ाय. छतां तेनो नाश थई शके ज नहिं, कारण के आत्मा जन्म-जरा रोग-शोक-मृत्यु आदि थी मुक्त ज छे—मात्र शरीर ने ज ते ते भावे स्पर्शे-पण आत्मा ने नहीं—आत्मा शरीर थी जुदोज छे—माटे दुखो थी गभरावुं छे. सुख अने दुख ओ मात्र मननी ज कल्पना छे, आत्मा मां मन ने लगाड़ी दइए तो सुख दुख थी मन अलिप्त रही शके अने आनन्द मां ज मस्त रहे माटे आतम भावना सदा भाव्या करवी. अधिक शुं लखुं ?

त्यां विराजता मुनिवर भगवंतो ने मारा विनयपूर्वक नमस्कार जणावजो. हजु मौन वधारे लंबाववाना भाव होवा थी हाल मां तमो मलवा करवा नी उतावल नथी करता. पण धीरज धरजो. हृदय मां जे मलवुं थाय तेज साचुं बाकी शरीर ना मिलन मां न तो लाभ अने न नुकशान. माटे शरीर ने मलवानी इच्छा जती करवी.

बाई मेघबाई-भाणबाई वगेरे ने पण आज उपदेश छे. कोई पण प्रकारे शरीर भाव छोडी आत्मभावना मां रहो. एज कल्याण नो मार्ग छे.

अनादिकाल ना चक्रवा मां जीव फसायो छे. तेमांथी आत्मभावना बल वड़ेज छूटी शकाय. आत्मा शिवाय बीजुं स्मरण मन मां ठरवा न देवुं. अेम करवा मां अेटले आत्मभावना करवा मां जीव स्वतंत्र छे परतंत्र नथी—तेमां बीजी सगवड़नी अपेक्षा नथी. माटे 'आत्मभावना भावतां जीव लहे केवल

ज्ञान रे' आ मंत्र नी धून कर्ये जवी अने शरीर थड़े उदय प्राप्त काम कर्ये जवो एज सारनी सार वात छे. जो बनी शके तो तत्त्वज्ञान पुस्तक मां थी निवृत्ति ना समये कांइक वांचवुं विचारवुं—मुनि महाराजाओनी सेवा मां लक्ष देवुं अने वे बोल ग्रहण करवां. ॐ शांति,

जे कोई याद करता होय ते बधा ने आज्ञ भलामण अने धर्मलाभ हो.

सहजानंद—आनंद आनंद

(पत्रांक ६) ता० ३-८-५६

ॐ नमः

आतम भावना भावनां जीव लहे केवलज्ञान रे'''

शिर उपर सगड़ी सोमिले करी रे, समता शीतल गज सुकुमाल रे'''

क्षमा नीरे नवराव्यो आत्मा रे, देह दाझे तेहनो नहिं ख्याल रे'''

धन्य धन्य जे मुनिवर ध्याने रम्या रे'''

देहादिक ए मुझ गुण नांहि, तो किम रहेवुं मुझ ए मांहि ? चेतन सांभलो !

जेहंथी बंधाए निज तत्त्व, तेह थी संग करे कोण सत्त्व ? चेतन सांभलो !

× ×

देह गेह भाड़ा तणो, ए आपणो नांहि;

तुझ घर आतम ध्यान छे, ते मांहि समाहि'''रे जीव ! साहस आदरो :—

[श्रीमद् देवचन्द्रजी]

भव्य आत्मा !

गई काले पत्र मल्यो. एमां जणाव्या मुजब तमारा भावो नी जे परिणति वर्त्ते छे ते अंतरंग वैराग्य अने कषाय ना उपशम रूप छे. आ बे गुणो जे हृदय मां होय, तेनी मंदता न थवी जोइए परंतु दिने बमणो अने राते चोगुणो जे विकास थतो रहे, तो परिणामे आत्मा अने आत्मा ने जोई शकवा ने समर्थ एवी जे अन्तर्दृष्टि, ते बन्ने नी वच्चे जे पड़दो छे ते वळी ने राखनो ढगलो थई विखराई जाय. त्यार पछी ते अंतरदृष्टि वड़े शरीर तथा शरीर ना संग थी अनुभवाता सुख दुःख अने तेना कारणे मन मां देखाता राग-द्वेष आदि परिणामो—ए बधांने जोनारो अने जाणनारो छतां ए बधा थी तद्दन जुदो-एवो पोतानो आत्मा प्रत्यक्ष देखाय. आवी रीते पोताना असली स्वरूप ना दर्शन थतां नी साथे ज पोताने आनन्द उपजे छे. ते आनंद-स्वर्ग लोकना (इन्द्र) चक्रवर्ती राजा नी सम्पूर्ण साहेबी ने भोगवतांपण जडतो नथी. एवा ए अनुपम-अमूल्य-अपूर्व-सातिशय-आनन्द ने प्राप्त थई, जीव आ संसार ना मनाता काल्पनिक सुख-दुःख नी जंजाल थी मुक्त थई कृत-कृत्य थाय छे. मात्र चामड़ा नी आँख थी जोनारी दुनियां नी दृष्टि मां ते भले पैसे टके गरीब अने दुःखी देखातो होय, छतां ज्ञानिओ नी ज्ञान-चक्षु थी तो ते बादशाहो नो बादशाह ने शाहेनशाह तेनां करतांय अनंतगणो तवंगर अने सुखी देखाय छे.

जेना स्वरूप ने समजाववा वाणी मांय सामर्थ्य नथी, एवो ए महामहिमावान अने बहु चमत्कारी आनन्द, आत्मा ने, मात्र पोताना ज दर्शन वड़े पोता मां थी ज प्रगट थई ने पोताने ज मले छे पण बहार थी के बीजाना आपवा थी मली शकतो नथी. एटले के पोतानो आत्मा ज एवा निर्दोष आनन्द नो खजानो छे. वैराग्य अने उपशम ते खजाना नां तालांओने खोलवानी कुंचीओ छे.

वैराग्य ने—साचा ज्ञानगर्भित वैराग्य ने अने तेना वड़े उत्पन्न थएला विवेक वड़े उदय मां आवनारा अने आवता कषायो ने दबावी तेमने मन्द=शक्तिहीन करता रहेवा रूप उपशम-गुण ने प्रगटावी तेना ताणा-वाणा वड़े पोताना जीवन ने वणी तेवुं—एज आत्मार्थी नुं परम कर्त्तव्य छे.

पारमार्थिक दुखनी कृपा थी ज साचो वैराग्य प्रगटे छे. आत्मकल्याण माटे ज हृदय मां उत्पन्न थयेली तड़फड़ाट ने पारमार्थिक दुख कहे छे. पारमार्थिक दुख नी उत्पत्ति मां व्यवहारिक दुख निमित्त-कारण छे. दुनिया नी प्रतिकूल परिस्थिति ने व्यवहारिक दुख कहे छे. दुनिया प्रत्येना पोताना प्रतिकूल वर्त्त नथी जे कर्मो बंधाया, तेना फलपणे ते प्रतिकूलताओ एक पछी एक जीवन मां आवती रहे छे. अने पूर्वे जेने-जेने दुःख आप्युं हतुं, तेने-तेने निमित्त बनावी दुख आपनारनेज व्याज सहित तेनुं आपेलुं दुख पाछुं सोंपी जमा-उधार ना खातां खतवी विदाय थतो रहे छे, 'वावे तेवुं लणे अने करे तेवुं पामे' आ कथनी मोंढेथी कह्या करे, छतां मूढ जीव ! एनो मर्म समजतो नथी अने बीजाने दुःख आपती वखते तो खुश रहे छे, परन्तु तेने पाछुं लेतां नाराज थई आनाकानी करवा मांडी जाय छे. पाछुं लेवा इच्छतो नथी, न छूटके जो पाछुं लेवुं पड़े तो मन मां वेर भाव राखी फरी तेने आपवा ना भाव राखी, लाग जोई ने आपी दे छे. तेवी रीते सामो जीव पण एनी साथे एज रीते वर्त्ते छे—आम अनादिकाल थी तेनीज कला-कूट मां आ मूढ जीव अनन्तानंत वार जन्म्यो अने मूवो पण हजी सूधी ते खातुं चुकते करतो नथी. ज्यां सूधी आमने आम ए नामुं नहिं पतावे त्यां सूधी मां कोण जाणे केटलाय दूरी जन्म-मरण करवा पड़शे. ते ज्ञानी जाणे.

कदाच कोई जीव ने ज्ञानिओ ना संग थी आ रहस्य समजाय, तो तेने आवा संसार व्यवहार प्रत्ये उदासीनता प्रगटे छे. परिणामे तेने कल्याण अने अकल्याण नुं रहस्य समजाय छे. जेथी आत्म कल्याण नी तीव्र कामना तेना हृदय ने संसार व्यवहार मां क्यां ये चेन थी रहवा न दे. आवी तेनी अन्तरंग दशा ने साचो वैराग्य कहे छे. आवा साचा वैराग्य थी ज क्रोध-मान-माया-लोभ-हास्य-रति-अरति-भय-शोक-दुगंछा कामादि राग-द्वेष रूप परिणामो थी पाछो हटी जीव समता भाव, केलवतो उपशम गुण ने दृढ करे छे—परिणामे आत्मा ना दर्शन करी, देहादि थी भिन्न 'हुं आत्मा छुं' शरीर नथी, एवो निश्चयवालो आत्मज्ञान पामी पोताना आत्मा ने ज जोवा जाणवा वड़े मनने आत्मा मां ज रमाड़ी तेमांज लीन करी स्थिर थाय छे. अने उदय मां आवतां कर्मो ने समभावे सही, जे-जे सुख के दुख जेने जेने जेवी रीते आप्यां हतां, ते ते सुख के दुख चक्र वृद्धि-व्याज सहित ते ते पासे थी तेवी ज रीते

साक्षी भावे लई, त्यारा पतवी आ संसार जेल थी सदा ने माटे छूटे छे एटले के मोक्ष पामे छे. आम वस्तु स्थिति छे माटे कोई नी पासे थी मलता दुख ने हर्ष थी वधावी लेजो. पण कायर थई आनाकानी करता नहीं. कारण के दुख एज महात्मा नी जननी छे. ॐ आनन्द आनन्द आनन्द

सहजानन्द आत्मस्मरण !

(पत्रांक—१०) (खण्डगिरि १९५७)

ॐ नमः

भव्यात्माओ ! (मोरारजी भाई परिवार)

हाल मां आ शरीर कच्छ देश थी घहु दूर देश ना एक जंगल मां छे. ज्यां पहोंचवा रहेवा अने पाछा ठेकाणे पडवा मां भारे जोखम अने खर्च उठाववो पड़े. तेवी व्यवस्था नी जोगवाई तमारी पासे होय के केम ए मोटो प्रश्न छे. वली अहिं पांच माइल जेटली हद मां खावा पीवानी कोई चीजो मली शके, तेवी कोई गाम नी रचना प्राये नहीं जेवी हशे. पण तेथी यात्रिओने राहत तो मली शके ज नहिं.

कोई खास व्यवस्थित गाम के ज्यां जैन नुं एक पण घर होय, ते घहु दूर छे. जे शहेर थी खावा पीवा नी सौथी अहिं आववा जवा मां बहू खर्च थया करे. जे तमारा थी नहीं बने.

चोमासा नी मोसम मां तमने महीना भर नी फुरसद मलवी पण दोहेली अने तेथी अहिं आवी ने आ शरीर नी सेवा करवी सोहली लागती-जगाती नथी. अहिं कोई श्रावक नुं घर नथी के तमारा जेवा नी आवभगत करे.

अहिं डुंगरा मां घींच झाडी होवा थी अने आ प्रदेश मां कच्छ करतां घणी वधारे वर्षात पड़ती होवा थी बेसुमार डांस मच्छरो छे. जे दिवस मां पण सुखे बेसवा न दे.

डुंगरा मां २३०० वर्ष पूर्व नी कोतरेली अनेक गुफाओ छे, जेमां जैन तीर्थंकरो नी मूर्त्तिओ छे. शिखर उपर एक जिनालय पण छे. नीचे नानकड़ी धर्मशाला छे. पण तेमां रूमो मां वर्षाद नुं पाणी टपक्या करे, सुखे थी रही शकाय नहिं.

माटे आ चोमासा मां तमारा थी अहिं आवी ने पोतानी इच्छा पूरी करी शकाय, तेवी आशा राखवी व्यर्थ छे. चोमासा बाद बधां अने क्यारे संयोग बने ? तेनो विचार छोड़ी दई, हाल मां तो वियोग मां ज रही, जेम जेम वैराग्य अने उपशम भाव टके, अने वधे, तेवा ढंगे प्रभु-स्मरण करवां के आत्म भावना भावतां समरस पणे रहो, एमां ज तमने प्रत्यक्ष मिलन करतां य अधिक लाभ छे. एम आ आत्मा कहे छे. आम करवा थी डुंगरो तमने डुंगरा पणे आत्म-साधना मां सहायक नीवडशे. डुंगरा मां तो उंदरा सांप सिंहादि अनेक प्राणिओ रहे छे. पण तेथी तेमनुं कल्याण संभवतु नथी. कारण के आत्मा ना लक्ष विना कोई पण तप जप के त्याग मोक्ष अपावी शकतुं नथी.

जो आत्मा नुं लक्ष होय तो घरवास पण वनवास नी गरज सारे छे. भरत महाराजा ने आरीसा भुवन मां ज केवलज्ञान थयुं. तेमां तेमने क्यां जप तप कर्यां ? वली बाहुबली जेवा ने जंगल मां वर्ष भर

ना कायोत्सर्ग थी पण तपश्या करवा छतां पोतानी मेले केवलज्ञान न थयुं कारण के मान-हाथी उपर बैठेला हता. तेम अम जेवा बाह्य त्यागीओ ने मान कषाय डुंगरा ना टोचे चडावी ने पण पटकी नांखे अने तम जेवाने ते स्पर्शी शके नहिं. कारण के बाह्य त्यागिओ तो पोताने गुरु मानी ने चेलाओ पासे थी मान लई पोताने अभिमानी बनावी बेसे अने चेलाओ पोतानी पासे नो ते मान गुरु ने आपी दई पोते तेना थी छुटो थई निरभिमानी थई ने रहे, जेथी तेमने मोक्ष मेलववो कंइ अघरो नहिं गणाय आम बावत छे, माटे अमजेवा ने डुंगरा पर चढेला जोइने तम जेवाए डुमरा नी छोडवानी कोई आवश्यकता नथी—मात्र हुं–मारुं छोडी ने घरमां साक्षी पणे न राजी थवुं न नाराज थवुं पण प्रत्येक काम मां समता केलवतां नर्श के नटनी माफक घर मां रहेतां अनंती कर्म निर्जरा थई शके छे. ॐ

साथे ना पत्र ने मनन करी मनमां थी उद्वेग काढी नाखी वियोग अने संयोग नी पेले पार जई आत्म भावना भावता रहो—एज आशीष. ॐ आनन्द आनन्द

सहजानन्द

(पत्रांक ११)

ता० २४-६-५७

ॐ नमः

मातेश्वरी जेठी बाई सपरिवार

भवो भवना अपराधो नी विशुद्ध हृदये उत्तम क्षमा मागुं छुं. मारा तरफ थी सौ ने क्षमा छे. साक्षात् मोक्ष माटे असंग अनुष्ठान आवश्यकीय छे, तेनी योग्यता माटे शासको प्रत्ये जे आज्ञा तत्परता छे, वडीलो प्रत्ये जे भक्ति छे अने पति-पत्नी नी परस्पर जे प्रीति छे ते सौ नी प्रत्याहारी करी एक मात्र परम कृपालुदेव नी प्रीति भक्ति पूर्वक आज्ञा आराधना जो जीव भेठ बांधी मंडी पड़े तो आ देहे कृत कृत्यता अनुभवाय, आ जीव मां जे जे अनादिय दोषो छे ते वधाय तेवी एकनिष्ठ भक्ति थी अवश्य जाय पण ते माटे जीव मां लगनी लागवी जोइए

मने एक लगनी लागी रहो अेवी आशीष आप सौ आपजो अने सौ ने तेवी भक्ति प्राप्त थाओ एवी परम कृपालु प्रत्ये प्रार्थना करी विरमुं छुं.

सहजानन्द खामणा !

(पत्रांक—१२)

१-१०-५७

ॐ नमः

सहजात्म स्वरूप-परमगुरु

तोजो मुंनो करी करी, पाप घड़ा भरी भरी,
कदं न वञ्ने तो ठरी, मानखो तो हारीये''' [साजन बावनी]

भव्यात्मन् (मोरारजी भाई)

पत्र मल्युं. जवाब मां वखत न मलवा थी ढील थई. जे क्षमा योग्य छे. मुनिश्री नो जवाब आ साथे बीड्यो छे. तेमने आपजे.

'ज्ञानिओ ए मानेलुं छे, के आ देह पोतानो नथी. तेम ते रहेवानो पण नथी, ज्यारे त्यारे पण तेनो वियोग थवानो छे. ए भेद विज्ञान ने लई ने हमेशां नगारां वागतां होय तेवी रीते तेना काने पड़े छे. अने अज्ञानी ना कान व्हेरा होय छे. एटले ते जाणतो नथी.

ज्ञानी देह जवानो छे, एम समजी तेनो वियोग थाय तेमां खेद करता नथी. पण जेवी रीते कोई नी वस्तु लीधी होय अने तेने पाछी आपवी पड़े—तेम देह ने उल्लास थी पाछो सोंपे छे : अर्थात् देह मां परिणमता नथी.

देह अने आत्मा नो भेद पाड़वो ते भेद ज्ञान; ज्ञानी नो ते जाप छे. ते जाप थी देह अने आत्मा जुदा पाड़ी शके छे. ते भेदज्ञान थवा माटे महात्माओए सकल शास्त्रो रच्या छे. जेम तेजाबथी सोनुं तथा कथीर जुदां पड़े छे. तेम ज्ञानी ना भेद विज्ञान ना जाप रूप तेजाब थी स्वाभाविक आत्म द्रव्य अगुरु लघु स्वभाव वालुं होइने प्रयोगी द्रव्य थी जुदुं पडीने स्वधर्म मां आवे छे.

बीजा उदय मां आवेलां कर्मो नें आत्मा गमे तेम समाधान करी शके, पण वेदनीय कर्म मा तेम थई शके नहीं, अने ते आत्म प्रदेशे वेदवुं ज जोइए. ते वेदतां मुश्केली नो पूर्ण अनुभव थाय छे. त्यां जो भेद ज्ञान सम्पूर्ण प्रगट थयुं न होय तो आत्मा देहाकारे परिणमे एटले देह पोतानो मानी लई वेदे छे. अने तेने लई ने आत्मा नी शांति नो भंग थाय छे. आवा प्रसंगे जेमने भेदज्ञान सम्पूर्ण थयुं छे एवा ज्ञानिओ ने अशाता वेदनी वेदतां निर्जरा थाय छे अने त्यां ज्ञानी नी कसोटी थाय छे. (श्रीमद् राजचन्द्र)

ऊपर कहेली शिक्षा ने वारम्वार याद करवा थी दुख ना समय मां पण समता भावे वर्त्ती शकाशे. आ शाता छे अने आ अशाताछे. एवुं जाणपणुं जेने थाय छे—थई रह्युं छे—ते शाता अने अशाता वन्ने थी जुदोज छे ज्ञान नो स्वभावज एवो छे के ज्ञेयो ने जेम छे तेम जणावे—छतां तेनो जाणनारो ज्ञेय रूप एटले पर द्रव्य रूप के परभाव रूप कोई काले थतो नथी, सदा ज्ञाता रूपेज ते रहे छे. ते ज आत्मा छे तेज हुं छुं-हुं आत्मा ज छुं-शरीर नथी. शरीर धर्मो जे जन्म जरा रोग मरणादि ते पण मारा नथी—तो पछी मने तेनी शी चिन्ता? मात्र भान न होवा थी तेवी चिंता थई जाय छे—छतां हवे हुं सावधान ज रहीश. शरीर ने हुं पगे हुं मानुं ज नहीं. मान्यता मां तो हुं स्वतन्त्र ज छुं. भले अत्यारे ज ते छूटतो होय तो छूटी जाओ-वली जाओ-गली जाओ-सड़ी जाओ—तेमां मारे शुं? हुं तो अजर अमर शाश्वत ज छुं. कदी जन्मनार के मरनार नथी ज. आत्मा छुं-आत्मा छुं-आत्मा छुं. बस एक आत्मा ज छुं-हुं ते हुं—शरीर ते शरीर—हवे हुं मने ज याद करतो रहीश—शरीर ने भूली जाऊँ छुं. शरीर भाव वोसिरे! वोसिरे! आत्मा छुं. आत्मा छुं—आतम भावना भावतां, जीव लहे केवलज्ञान रे.

आ प्रमाणे आत्म भावना भावतां रहेवा थी घणा कठण कर्मो बली ने भुंसालीओ थई ने वही जाय माटे 'आत्मा छुं' आ मन्त्र भूलतो नहीं.

आ तो बधो पक्षी नो मेलावड़ा जेवो स्त्री-पुत्र-मित्र पड़ोसी आदिओ तो प्रसंग छे—तेमां मारा पणुं करवुं ज नहीं, तेम तेमने तरछोड़वा पण नहि. साक्षीभावे जेम धाव माता बीजा ना बालको ने

सांकेतिक भाषा में उपदेश दे रहे हैं—कि पाव घड़ी का भी भरोसा नहीं है, मानवो ! जागो ! तू तो एक घड़ी की बात बताता हुआ—१ घड़ी का भरोसा नहीं २। अतएव घड़ी-घड़ी घड़ीयाल को बजाता है, किन्तु तेरी महिनत तो पावघड़ी का भरोसा नहीं, ऐसा सतत उपदेश को देनेवाली मानव की पाघड़ी के सामने व्यर्थ ही ठहरती है, अतः तू चुप रह ! बेर बेर घड़ी मत बजा !

अथवा तू कहता है कि एक घड़ी का भरोसा नहीं, किन्तु तुझे वे कहते हैं कि हे घड़ियाली पाव घड़ी का भी भरोसा नहीं है। अत. तू भी तो अपना काम करले। मात्र दूसरों को उपदेश देने का ठेकेदार क्यों बन बैठा है। क्या तूने अपना अजरामर पद पा लिया है ! ॐ ॐ ॐ

अन्य दोनो प्रश्नों का समाधान उक्त पाघड़ी के उपदेशानुसार जगकर स्वरूपानुसंधान के अभ्यास द्वारा स्वतः हल होंगे, अतः पत्रारूढ मात्र से क्या ? ॐ शांतिः

पू० वर्णीजी महाराज लिख रहे हैं कि मैंने इन्दौर पत्र दे दिया है। हमें निराकुल रहने के लिए अपनी सहृदयता बताई है।

अब तक सत्ताधीशों की ओर से कोई यहां आया नहीं है, व न कोई पूछताछ... किन्तु सम्भव है कि दो-चार दिन में महामंत्री आदि में से कोई भी यहां आवेंगे एवं परोक्षा लेते लेते खुद की भी परीक्षा का प्रदर्शन यथाशक्ति करेंगे।

जो कुछ हो। हमें तो उन लोगों के प्रति उत्तम क्षमाभाव ही है। उनका वे जानें। तू तेरा संभाल ! ॐ...

आप व आपकी मंडली को इस घटना से खेद खिन्न न होकर जो सत् शिक्षा लेने योग्य हों वह ले लेनी चाहिए। और तो सब कुछ स्वप्नवत् तमाशा ही है।

आगन्तुकों को इसलिए मना किया कि वे हमारे पास ही ठहरना चाहेंगे—व यहाँ वैसी स्थान को सुविधा नहीं है, क्योंकि दोनों रूमों में पानी गलता है। करीब पक्ष भर से यहां वर्षा चालू है। एवं हमें अधिक संग भी सुहाता नहीं। यदि दिगम्बर जैन धर्मशाला में ठहरें तो खुशी से आ सकते हैं। क्योंकि दि० जैनों के लिए वहां ठहरने में प्रतिबन्ध नहीं है, मात्र श्वे० से वैर है।

हे विकराल काल ! विकराल जीव !! व जीवन !!!
सभी भावुकों को आत्मस्मृतिपूर्वक सद्धर्म वृद्धिरस्तु !

भवदीय
सहजानन्दघन

(पत्रांक—१५) ऊन

ॐ नमः २७-७-५८ रविवार

भव्यात्मन्! (गोरारजी भाई)

खण्डगिरि चोमासा पछी अनेक श्वेताम्बर-दिगम्बर जैन तीर्थों नी वंदना करते-करते अहिं अवायुं. आ तीर्थ नुं नाम सिद्धक्षेत्र-पावागिरि शिलालेख थी प्रसिद्धि मां आव्यु छे. दिगम्बरो नी आधीनता मा नानी नानी बे टेकरीओ छे, जेना ऊपर बधा मलीने ७ मन्दिरो नाना मोटा छे. मोटुं मन्दिर मोटी टेकरी पर भव्य छे. तेमा शांति-कुंथु-अर त्रणे चक्रवर्त्ती तीर्थङ्करोनी मोटी मोटी काउसग मां ऊभेली मनोज्ञ प्राचीन प्रतिमाओ छे. बाजु मां टेकरी नी कमर भाग मां बे कृत्रिम गुफाओ छे—तेमां चोमासा माटे नी स्थिरता थई छे.

अहिं थी एक फर्लांङ्ग दूर ऊन गाम छे. जेमां प्राचीन काल मां बनेला कलामय ७ मन्दिरो ना खंडेरो छे. पूर्वे आ नगर हतुं. ९९ जिनालयो हता. गाम नी एक बाजु दिगम्बर जैन धर्मशाला जेमां २८ रूमो अने एक मोटुं मन्दिर छे. गाम मां जैनो नुं एके घर नथी बहार थी सत्संगिओ दिगम्बरो अधिक संख्या मां आव्या छे. श्वेताम्बरो मां एक कुटुंब आव्युं छे. आहार पाणी नी बधी व्यवस्था थती रहे छे

तारी परिस्थिति जोईने नानपणनी केटलीक वातो याद आवी, कर्म नी केवी विचित्रता छे? मारी दीक्षा ना निमित्ते मां-बाप ने भय लाग्यु के आ पण भणशे तो छोडी ने चाल्यो जशे. तेथी तने उठाड़ी लेवा प्रयत्न थयुं. में तेमने अने तने खूब समजाव्या, पण तारा भविष्य नो ख्याल न आव्यो. तुं पण ते वखते तारा मंद भाग्य ने कारणे अभ्यास छोडवा तैयार थयो—अने छोड्यो ज. तो पछी तेनुं अत्यारे शुं परिणाम आव्युं ते विचारतां एवोज सिद्धान्त दृढ थयेलो वधारे दृढ थयो के 'कर्म ने शर्म नथी.' माटेज महावीर प्रभु जेवा महासमर्थ ज्ञानी ने पण साडा बार वर्ष, कर्म ऋण चूकवतां केवा करुण संयोगो मांथी पसार थवुं पड्युं हतुं एमना जीवन ने याद करी एमणे सेवेली समतानेज हृदयमां स्थिर करी साक्षी भावे विना उद्वेगे ऋण चूकवी छूटी जवुं''' नवुं करजुं कर्मोनुं न वधारवुं एज आपण ने शिक्षा लई वर्तवानुं छे. करज लेती वखते जेवी हौंस होय तेवी चूकवती वखते पण रहेवी जोइए. आनाकानी करवाथी ते फेडातुं नथी. पण उलटुं वधे छे—माटे ममता थी 'हुं आत्मा छुं शरीर नहीं' कुटुंब कबीलो तो पखी-मेलो छे—ते मारो क्यांथी होय? एवो भाव दृढ करवा स्मरण मां लावी पुरुषाप आत्म भावना भावना रहेवुं. जेथी हृदयमां समता रहे—आकुलता न थाय, परिणामे नवां कर्मो न बंधाय. कुटुंबीजनो तरफ पण जेम राग न करवो तेम द्वेष पण न करवो. तेमने तरछोडवा नहीं—मात्र नटनी माफक बधा स्वांगधारीओ ने जुदा-जुदा अने स्वतन्त्र जोवा जाणवा अने श्रद्धवा, जेथी मारापणुं न थाय. अने नवा करमो न बंधाय, शरीर मां हुं अने कुटुंबादि मां मारापणुं करवुं एज संसार नुं मूल छे.

बाई मेघबाई अने भाणबाई क्यां छे ? तेमनी शी प्रवृत्ति छे ? काका उमरशी चीआसर हशे. तेमनो रंग ढंग हवे ठीक हशे'''काकी ने माता नी जेम जाणी तेमना थी सरलता थी विनयपूर्वक वर्त्तजे, कोई सेवा करवानो समय होय तो करी छुटवुं. बदला नी इच्छा न राखवी. मोटाओ नो परस्पर गमे तेवो व्यवहार हतो अथवा होय तो पण तेनो ख्याल आपणा मन मां न आववा देवो—आपणे तो आपणी शी फरज छे ते जोई ने फरज ने अदा करवी. मारा पर तो काकी नो अपार उपकार छे कारण के रजा मेलवती वखते एमणे पोतानो एकमात्र त्रिशनजो गोद मां छतां ते मारा बदले नागजी भाई ने आपवा तैयार थया—अने मने रजा अपावी-दुनिया भले गमे तेम बके, पण आवा काम मां अेमणे जे मने स्हाय करी ते हुं केम भूलुं ? माटे मारा बदले तुं तेमनी सेवा करीश तो तेने हुं मारी ज सेवा करी एम मानीश. तेमने आ पत्र वंचावजे अने मारा तरफ थी धर्मलाभ कहेजे.

तारा घरमां थी अने बालको ने कइंक धर्म ना संस्कार मले. तेवो प्रसंग राखवो. बच्चाओ ने भणाववुं ज. तेमां जराय कसर न राखवी, तुं पण काम करते छते आत्मा ने नहिं भूलतो, कारण के आत्मा ने भूलवा थीज हुं-मारुं आदि अहं-ममता थाय अने तेथी संसार वधे, फुरसद ना वखत मां पूज्य महाराज नी सेवा मां प्होंची जवुं अने कंइक साची समज संसार थी छूटवा माटे मेलववी. मात्र गपाटा मां न पडवुं.

मोटा महाराजजी नी तबियत सारी हशे. मारा तरफ थी घणाज उल्लास भावे अने विनय थी वंदना कहेजे. एमनी केवी शान्त-परिणति छे—जे आपण ने शीखवा जेवी अने अमल मां मूकवा जेवी छे. बाकी तो बधुं मूकवा जेवुं छे. जेने जीव वारंवार कर्या करे छे—अने तेने लईने चोर्यासी ना फेरा फर्या करे छे. मातेश्वरी पूज्य कबुबाई पासे पण जतो हशे. तेमनी तबियत सारी हशे ज्ञानशाला मां साध्वीओ पण हशे. आपणे बधा मां थी गुण लेवा—दोषो तरफ ध्यान न आपवुं. कारण के दोषो तो आपणा खजाना मां घणाय पड्या छे के जे काढवा योग्य छे. लेवा के संग्रहवा योग्य नथी. क्षणे क्षणे पोताना भावो ने तपासतां रहेवुं'''बीजाओ थी एवो वर्त्ताव करवो के जेवो आपणे बीजा तरफ थी इच्छीए छीए. जेने आपणे इच्छता नथी–ते बीजा ने पण न आपवो. अेथी जीवन-शुद्धि सधाय छे. घर मां संसार नाटक मां नाचते छते ते नाच छूटवा मांज मददगार थाय एवो करवो. गम्भीर भावे बधुं समजी ने शमाई रहेवुं. उछांछला के उतावलीआ न थवुं. आपण ने गरीबी ज हितकर छे. पैसा होय तो तेनो सदुपयोग थाय के न थाय पण दुरुपयोग अने अभिमान तो अज्ञान दशा मां थाय ज. अने ते ज्यारे जती रहे त्यारे घणी ज आकुलता—आर्त्तध्यान थाय अने तेवा ध्यान मां जो परभव नुं आयुष्य बंधाइ जाय तो नरक-निगोद के तिर्यंच गतिमांज जइने सडवुं पड़े''माटे जड़ वैभवथी भला दूर करवामां सलामती छे. ज्यां सूधी आयुष्य कर्म छे त्यां सूधी पेट-पोषण तो कोई पण रीते थतुंज रहेवानुं. कुतराओ ने बोलावी ने पण जेम खावानुं लोको आपे छे—तेम आपणुं भाग्य कुतरा करतां ओछुं न ज समजवुं—ॐ

तारा निकट पाडोसीओ मेघजीभाई प्रेमजी भाई तथा जे जे तारा सगां सम्बन्धीओ संभारता होय ते ते बधाने आत्म स्मरणपूर्वक धर्मलाभ कहेजे. मने तो याद पण नथी आवता. के कोण सगा ने कोण दगा ! बधाय मुसाफरो आत्म-ज्ञान विना चतड़ा रफड़ी रखडीने फोकट ना फांफां मारता होय तेम प्रगट जणाय छे. तेमां कोई कोई नुं सगुं थाय एवुं तो कांइ देखानुं ज नथी. त्यां मारा तारापणुं शुं करवुं ? समजी ने शमाई रहेवुं एज उचित छे. शांति थी अने धीरज थी पत्र नो जवाब आपजे. उतावडनुं काम नथी. हमणा आववानी भावना ने पण रोकजे. बीजाना कहेवा ऊपर देखादेखो न करवी. मलवा जेवो प्रसंग हशे त्यारे हुं जाते लखी जणावीश. ॐ आनन्द आनन्द आनन्द

सहजानन्द आत्मस्मरण पूर्वक आशीष !

(पत्रांक—१६)

ॐ नमः

१५-८-५८ शुक्रवार

ऊन.

मेघभाई,

पणा वर्षो याद हुं पत्र रूपे मलवा आव्यो छुं मने घणाज हर्षथी वधावजो. हुं आत्मा छुं शरीर नहीं-शरीर तो मसाणनी राखनो पोटलो छे. ते हुं क्यां थी होई शके ? नाम ठाम जाति पांति एतो बधां शरीर ना, मारां नहिं जन्म मरण रोग शोग जरा आदि बधा शरीरना धर्मो छे मारा नहीं-माटेज हुं शरीर रूपे तमने मलवा आव्यो नथी. पण आत्मा रूपेज. आत्मा चामड़ानी आंखे जोई शकाय नहिं. तेने जोवामां समर्थ तो एक मात्र ज्ञान-नेत्रज छे, तेथी मने एटले आत्मा ने तमे चामड़ानी आंखथी जोई शको नहिं-तेथी रखे ने एम मानो के ए मलवा नथी आव्यो. पण जो ज्ञान नेत्र थी जोशो तो मने तमे जरूर तमारी पासेज जोई शकशो. माटे मने साक्षात् जोवा अने मलवा तमने अहिं आववानी जरूर नथी. मात्र तमे मांहेनी आंख जे बंध छे-तेने उघाड़ी ने जुओ—एटले हुं जरूर देखाईश-वाहामां वड फरी आगां तमाराज नहिं पण पधराना तमारा मानेला घर मांज मने आत्मा ने तमे जरूर भेटी शकशो अने तेथी तमने घणोज आनंद थशे. ॐ शांतिः

सहजानंद ना धर्मलाभ ।

(पत्रांक—१७)

ॐ नमः

६-११-५८

प्राथमिक अभ्यास दशा में तो जो तालपुट-विष तुल्य प्रतीत होता है, किन्तु फलतः अमृत स्वरूप ही है, ऐसे अप्रमत्त संयम को पराभक्त्या अनंतशः नमस्कार हो ! नमस्कार हो !!

सद्गुणानुरागी सत्संग योग्य भव्यात्मन् !

आपका कार्ड मिला! इस दूषमकाल में आत्म समाधि का योग व उसकी साधन सामग्री प्राप्त होना अत्यन्त दुर्लभ है। अनुभव मार्ग की श्रेणि व गुरुगम लुप्त प्रायः है। जन रुचि व उपदेश-पद्धति मूल मार्ग से प्रायः विमुखसी ही दिख रही है। शुष्क ज्ञानित्व व क्रियाजड़त्व का ही सर्वत्र बोलबाला है। परम तत्व को प्रायः साम्प्रदायिकता मे आवद्ध करने की ओर ही उपदेशकों का पुरुषार्थ है। हमें ऐसे काल में समत्व प्रधान अनुभव पथ पर आरूढ होना व चलना दुःसाध्य सा प्रतीत हो रहा है, अतएव महा-ज्ञानिओं ने इस काल को 'दुषम' कहा, जो यथार्थ है।

अनुभव पथ तो रत्नत्रयात्मक एक ही है, किन्तु उसके फाटक अनेक प्रकार के हैं, जितने कि संवर के भेद प्रभेद हैं। योगों से उपयोग को असंग रखना ही संवर है। जिसकी साधन प्रणालियाँ देश काल पात्रादि भेद से अनेक हैं। एक सी रुचि वाले साधकों का समाज वना। भिन्न-भिन्न रुचि के कारण समाज उपसमाजों की संख्या वढी। परमत सहिष्णुता जव तक जिस व्यक्ति व समाज में रही, तव तक उस व्यक्ति व समाज ने अपनी उन्नति की। उससे विपरीत ईर्षालु व्यक्ति व समाज ने अपने को अवनति के पथ पर अग्रसर किया। अवनति पथानुगामी व्यक्ति व समाज ने दंभ का आदर किया, इस दंभने अनुभव प्रधान सम-मार्ग को लुप्त प्राय करके प्रायः सारे विश्व को अपने जाल में फँसा लिया। गंभीरता से अवलोकन करने पर वह वात प्रत्यक्ष अनुभव गोचर हो सकती है।

दाम्भिकता की पराकाष्टा में विश्व अत्यन्त अशान्त हो उठता है, वैसी हालत क्वचित् कदाचित् संशोधक शांति की खोज में लग जाते हैं। शांति व शांति के उपाय एवं अशांति व अशान्ति के कारण सांगोपांग रीत्या जिस व्यक्ति ने पहचाने, उसने अप्रमत्त आत्म संयम द्वारा 'सम' मार्गारूढ हो परम शान्ति किंवा आत्म समाधि पायी। इतना ही नहीं, अपितु उसने स्याद्वाद शस्त्र द्वारा विभिन्न साधन प्रणालियों का समन्वय करके पर मत-असहिष्णुता का भंडाफोड़ किया।

उक्त कार्य के प्रारंभ काल से ही उसके सामने अनेकानेक प्रतिकूल-परिस्थितियों के ववंडर आए. किन्तु आप अडिग ही रहे व शान्ति का साम्राज्य स्थापन किया।

विभिन्न समयों में ऐसे अनेक महात्मा हुए। इस काल ऐसी दिव्य विभूति की क्या आवश्यकता नहीं है? क्या कोई महात्मा (उक्त-मार्ग में आरूढ) आपके दृष्टि-पथ में हैं? यदि हों तो हमें सूचित करियेगा। ॐ शांतिः

सहजानंद आत्मस्मरण

जिन्हें अप्रमत्ततया स्वरूप-निष्ठा सहज सिद्ध हो, ऐसे संत भगवंत यदि हमें सद्भाग्यवशात् मिल जाएं तो हम 'अहम्' को उन्हीं के पावन चरणकमलपर चढा कर उन्हीं की आज्ञानुसार त्रियोग प्रवृत्ति करने के लिए तय्यार हैं। अभी तक उक्त हमारी अभिलाषा सफल नहीं हुई। व स्वानुभव वल से आरा-धना करते हुए अनेक रूढमार्गी वाधकता पटकते रहते हैं, जिसे सुलझाना कठिन हो जाता है। वर्त्तमान चातुर्मास ऐसे ही कटु अनुभव से गुजरा है।

वाधकता के निमित्तों को कर्त्ता न मानने से अपने ही उपादान की कमी समझकर यथाशक्ति निजीपरिणाम धारा को साम्य भाव की ओर शासित रखने का अभ्यासक्रम कथंचित् चल रहा है। उस में पूर्णतः सफलता तो नहीं है, तथापि क्रमशः श्री वीतराग की कृपा से भावी में कृतकृत्य होंगे, ऐसा विश्वास है।

यहां सत्संग के लिए दिगंबर समाज के भावुक स्वल्प संख्यक ही आए; किन्तु श्वे० अत्यधिक आ आकर गए हैं व आते ही रहते हैं। मना करने पर भी अब तक उन्हों का तांता नहीं टूटा। जब से वे आने लगे तब धीरे धीरे मुनीमजी ने लोभवश उन्हीं के साथ व्यवहार प्रारम्भ किया। शुद्ध देव गुरु शास्त्र की ओर उन्हें आकृष्ट करने के ध्येय में उक्त व्यवहार वाधक सा प्रतीत हुआ, जिसे सुधारने की सूचना विभिन्न ढंग से दी गई तथापि असफलता देखी गई।

बहुत से आगंतुक अपरिचित से ही थे, उन्हें दि० पद्धति के देवादिस्वरूप का आदर कराना ही हमारा काम था, रुचि बढने पर वे स्वयं विधि-विधान ग्रहण करें यही उनके लिए हितावह मैं समझता हुं. तथापि मुनीम आदिने सभी आगंतुकों के पूजन मे शामिल न होने से टेढीनजर से देखना शुरू किया।

दशलक्षणी पर्व में कुछ सज्जन खंडवा से पधारे, उनमें से कुछ व्यक्तियों को मुनीमजी ने भड़काया संध्या बाद सामाईक के अनन्तर भक्ति-क्रम चालू था, उसमें आत्म-धून में पुजारीजी भावावेश में आकर नृत्य करने लगा। उसे प्रकाश का अनुभव हो चुका था, व उस अन्तर्ज्योति में भामंडल युक्त समोशरण निष्ठ श्री जिनेन्द्र के दर्शन हो रहे थे। उस नशे में उसे देह का लक्ष छूट जाता था। दो चार रोज से वैसी दिन भर खुमारी उसे रहती थी जिससे मुनीमजी के घर का काम (जो कि अनुचित था) वह नहीं कर सका, अत एक दिन दो एक व्यक्तियों को अपने पक्ष में लेकर भगवान के दरबार में हमारे व सारी सभा के समक्ष नृत्य करते हुए पुजारी को पीटना शुरू किया। उस सभा में बडवानी वाले श्री हेमचन्द्रजी साव जोकि यहाँ की संस्था के 'महामंत्री अतिमंद कषायी हैं, मौजूद थे। उक्त दृश्य हमसे नहीं देखा गया व यथाशक्ति समझाने की कोशीश की। फलतः हम पर ऐसा आरोप दिया गया कि आप हमारे भगवान पर चक्षु लगाकर हमारे तीर्थ का कब्जा लेंगे; अत. कल से इस मंदिर में आप लोग भक्ति नहीं कर सकते हैं। दि. समाज की ओर से हम आपको मना करते हैं। महामंत्री कुछ भी कह नहीं सके। उन्हें बड़ा ही दुख हुआ। यावत् अश्रुधारा भी उन्हीं की आँखों में बही। और भी कई आक्षेप दिए गए। वैसी हालत देख सभा से क्षमा की प्रार्थना करके विनम्र भाव से क्षमा का पालन पूर्वक सभी को समझा बुझा कर भाद्रपद शुक्ल दशमी के प्रात:काल को यहाँ महालक्ष्मी की धर्मशाला में चला आया हूँ महामंत्री के भाई साव की धर्मपत्नी के दस उपवास के पारणा के प्रसंग पर वहाँ आहार के लिए गया था। दूसरे के आग्रहवश फिर से एक बार गया था।

श्वे० यात्री कुछ तो यहां चार रूम और मिल गए, जहां ठहरे, कुछ ग्राम में किराए के मकान में व शेष चले गए। कितनेक खरगोन ठहर कर सत्संग करके चले जाते थे। स्थान की कमी के कारण कभी-

कभी बम्बई से सीधे कार से आकर दर्शन मात्र से सन्तोष मानकर तुरत वापस चले गए। ऐसी कितनीक कारें आ आकर गयीं।

श्रीमद् राजचंद्रजी की एकमात्र सन्तान मातेश्वरी 'जवल बहिन' भी कितनेक सत्संगीओं को लेकर आयी थी, उन्हीं ने ववाणिया में (श्रीमद् की जन्मभूमि) एक अपनी ओर से आश्रम बनाया है, वहां ले जाने की बहुत ही विनय की, किन्तु जाना कर्मतन्त्र के अधीन हैं।

आगन्तुक रात्रि में यदि कदाचित् आवें व बस स्टैंड के पास ही दि० धर्मशाला होने से वहां यदि कोई जाय, घण्टा दो घण्टा ठहरने लिए भी मुनीम इनकार कर देता है।

कल शाम को श्री अगरचंदजी नाहटा के बड़े भाई साहब पधारे तो उन्हीं के साथ भी वैसा ही व्यवहार हुआ। खैर अन्धेरे में भी खोजते खोजते वे चार व्यक्ति यहां पहुंच ही आए, यह सब है कर्म-तन्त्र का तमाशा मुनीमजी भी इसके ही तो एक्टर ठहरे, किसी का दोष हम क्यों देखें।

वर्णीजी महाराज से भी शायद उन लोगों ने हमारी शिकायत की है, जिससे वे भी झिझक गए से मालूम पड़ते हैं! दशलक्षणी पूर्व हमने पत्र दिया उसका उत्तर भी वे नहीं दे सके। हमें तो कोई नुकशान की बात ही नहीं। समरस रहना ही अपना कर्त्तव्य है। यह घटना लिखकर बताना ठीक नहीं समझा. फिर भी आपके समाधान के हेतु लिखना ही पड़ा। ऐसी हालत में आपको सिद्धचक्र विधान में क्या प्रत्युत्तर दूं ? अतएव उडाऊ जवाब दे दिया था।

इस वख्त प्रारम्भ से ही ऐसा हुआ था, अतः दीपावली पर्यन्त वर्षायोग की धारणा हो गई थी। फिर भी आगन्तुक यदि निकलने न दें तो शायद पूर्णिमा यहां हो जाय! तो कोई आश्चर्य नहीं। हम हर हालत में खुश रहने के अभ्यास को हितकर जानते हैं, तथैव प्रयत्न है, आप भी अपनाइएगा। सभी प्रियजनों को आत्मस्मरण सह सद्धर्म वृद्धिरस्तु। ॐ आनन्द आनन्द आनन्द

सहजानन्दघन

(पत्रांक—१८)

ॐ नमः १८-११-५८

चक्रवर्त्ती ना वैभव मां पण जेमणे भावथी असंगता केलवी जे असंगता दृढ थये आरीसा-भवन मां समस्त जेओ अनित्य भावना भावतां केवलज्ञान प्राप्त करी जीवन सफल बनाव्युं जे केवलज्ञान उत्कृष्ट त्याग वैरागे वर्ष भरना काउसग्ग करनारा तपोनिधि श्री बाहुबलीजीने घणीज कठिनता थी प्राप्त थयुं ते केवलज्ञान ने घरमां रहीनेज प्राप्त करनारा एवा श्री भरतेशने अगणित वन्दन हो!
भव्यात्मन्! (मोरारजी भाई)

घणा समय थी पत्र नथी आपी शक्यो. ते माटे जरूर तने खेद रहेतो हशे. आवनारा सत्सं-गिओ नो भीड़ अने अनेक विध जिज्ञासुओने समाधान आपवामां व्यस्त, तेमज अन्य स्मृति ओछी

रहेती होवाथी पत्र लखवामां आटलो समय वीती गयो. ते माटे क्षमा योग्य छे. तने सत्संग-विरह पण गुणकर छे. एम जाणी तेम थवा देवानी अतरंग इच्छा होवाथी-एम थवा दीधुं छे.

तने चोमासा काल मां फुरसद नो पण अभाव जेथी अहिं आवीने अधिक न रोकाई शकाय अने व्यर्थ नो द्रव्य-व्यय करवो पडे. थोडा समयमा जे समजवा जेवुं छे. ते न समजाय. तेथी तने अहिं न आववा जणावेलुं. बीजुं कांइ कारण न्होतुं.

तने त्यां घर बेठे ज गंगा छे. परम पूज्य महाराज श्री पद्मविजयजी-श्री माणेकविजयजी तम जेवा भव्य जीवो माटेज महान् पुण्योदये घणा कालथी त्यां विराजे छे-तेमनी पासे थी फुरसद लई ने-परम अमृत नुं पान कर्या करवुं अने जीवन मां पचाववुं तो ते पच्चे भवना फेरा घणाय टली जशे. एम विश्वास राखजे वीतेला जन्मो मां भ्रांतिपणे जीवे जे करज लीधुं छे तेने चूकव्या शिवाय ते कोई काले मुक्त न थई शके एम जाणी जे कांई उदयमां छे तेमां समता राखी हुं आत्मा छुं शरीर नथी आ बधु नाटक कर्मोनुं छे मारुं नथी-अेने अने मारे कोई पोतापणा रूप संबंध नथी-माटे साक्षी रही ने आत्मस्मरण मां दृढ रहेवानी भावना दरेक काम करतां छतां भाव्या करवी -एज करज थी छूटवानो सरल उपाय छे. शरीर काम करे अने मन पोतानी फिल्म बतावे, वाणी पण तेने लगतो ज चेष्टा करे तो पण हुं ए त्रणे थी स्पष्ट जाणनारो जोनारो जुदोज छुं. हुं आत्मा छुं एवो लक्ष जमावी सारुं के खोटुं न लगाडवुं शांत रहेवुं. ए शांत रस मां ठरवा थी घरमां पण केवलज्ञान थई शके तो पछी आत्मज्ञान थाय तेमां तो आश्चर्यज शो ?

वन मां रही ने त्यागीओने पण एज एक काम करवानुं छे ते जो के घरमां रही करवुं ए बहु विकट छे. तो पण जो बीजो उपाय न होय तो तेम करी लेवुंज, ते सिवाय दुःखथी छूटी शकाय नहीं एम जाणी हर्ष शोक थी असंग रहेवुं, हुं मारुं मूकीने घर मां रहेतां छतां जीव बंधाय नहीं पण छूटे-एवो ज्ञानिओ नो अभिप्राय खोटो नथी. मात्र ते रहेवानी युक्ति आवडे तोज छूटे न आवडे तो जीव जरूर बंधाय ज. ए कलानी पुष्टि माटे अवकाश मेलवी अवश्य थोडुं पण सत्संग करवुं. तेमां प्रमाद न करवो बाकीना काममां तो प्रमाद सेवाय तो हरकत नहिं पण आ काम माटे जाग्रत-जाग्रत रहेवुं एने माटेज जीववुं ॐ

अहिं घणा सत्संगिओ आवी आवी ने गया केटलाक हजु छे हवे पूनम पछी क्यांक बीजे स्थले प्रयाण थशे माटे आ कागलनो जवाब आपवानी जरूर नथी एम समजी ने संतोष राखजे·

त्यां तारा पडोशी मोंघीबा काकी पानबाई तारां मनायलो परिवार लालजीशा वगेरे ने आ पत्र वंचावी, ओ बधा माटे नां छे एम समजावी आत्मा नु स्मरण कहेजे. अधिक फुरसद न होवा थी जुदा लखी शकाय तेवी शक्ति नथी. माटे बधा माफ करे. भक्ति क्रमे जीवन बीते एज जाण्यानुं सार छे. बाकी तो ते विना पशु जीवन नी शी कीमत !

मृत्यु अचानक अवश्य आवशे ते पहेलां जे भवमां जवुं छे ते भवने माटे उचित सामग्री अथवा जो भव थी छूटवुं छे तो मोक्ष ने योग्य सौ सामग्री मेलवी तैयार रहेवं. एमा गफलत करनारा घणाय

पस्ताया छे. पस्ताय छे अने पस्ताशे माटे गफलत न थाय तेवी कालजी राखवी—जो भवमुक्त थवुं होय तो महावीर प्रभु वर्त्या तेम वर्त्तवुं. जो देव थवुं होय तो दैवी-सम्पदा ने योग्य सामग्री माटे देवताई काम मां जोडावुं. जो फरी मानव थवुं होय तो साची मानवता अपनाववी. प्राण जाय तो पण नीतिनुं उल्लंघन न करवुं—विषय विकारोमां न जालवुं. शरीरनी बीमारी शरीरमां छे तेने जोनारो शरीर नथी तेथी शरीर नी बीमारी ने जोनारो मात्र साक्षी छे, पण तेनो कर्त्ता-भोक्ता वास्तविक पणे नथी. जेओ साक्षी भावे शरीर नी साथे व्यवहार करे छे तेओ शरीर मां बीमारी छतां तेनो दुख भोगवता नथी. पण आत्माने जुदो जाणी तेमां रहवाथी आनन्द अनुभवे छे—माटे साक्षीभाव केलवाय एम लक्ष राखी उपयोग पूर्वक वर्त्तवुं. भयभीत थई शोक करवो नहिं जेओ देवताइ के मानवता अपनावता नथी. तेओ ने माटे ते शिवाय नी तिर्यंच के नरक नी गति ना फेरा तो तैयारज छे. ते माटे क्यांक सोखवा जवुं पड़े तेम नथो, अेम समजी ने पोतानुं जेमां हित होय तेवी प्रवृत्ति आदरवी. एमा बीजा नी सलाह तो निमित्त मात्र छे. करवुं पोताने आधीन छे. ॐ

हवे आत्मा में रहेजे हुं रजा लउं छुं. ॐ आनन्द आनन्द आनन्द

सहजानन्दघन आत्मस्मरण !

(पत्रांक १६)

ॐ नमः

शिववाड़ी

२६-१२-५८

भव्यात्मन् (नवीन भाई)

आपनुं पत्र मल्युं. देवचंद्रजी महाराज नु मोकलावेल पद जे पुस्तको मां प्रथम वार छपायुं. तेमां थो जोयेलुं अने याद पण करेलुं अनुभव प्रधान वचनो छे. एमां कहेली शिक्षा प्रमाणे जेओ चालशे तेमनुं कल्याण अवश्यम्भावी छेज.

आपने पांच भावना नी सज्झायो याद न होय तो करजो. गजसुकुमाल प्रभंजना आदि नी सज्झायो पण कण्ठाग्रे करवा योग्य छे. कोई पण प्रकार उपयोग अन्तर्मुख थई आत्माकार ठरे एवो पुरुषार्थ जगाववो अने तेमां जेना जेना वचनो बल आपे ते ते उल्लास थी आराधवा. श्वासोश्वास ना अवलम्बनपूर्वक आत्म स्मरण सतत बनी रहे. ते माटे सत्संग सत्शास्त्र श्रवण मनन अने भक्तिक्रम नियमित रीते आराध्ये जवां तो वर्त्तमान समय नो सदुपयोग थशे. भाविनी घड़तर वर्त्तमान वर्त्तन पर निर्भर छे. भावी जेवुं बनाववुं होय तेने अनुकूल वर्त्तमान समय जे हाथ मां छे. ते वड़े वर्त्तना करवी, बीजा भणी जोवा मां खाटी न थवुं. पोतपोतानुं संभालीं तार्कीदे पंथे पडवुं. नवीन भाई नी भावना पण स्तुत्य छे. प्रभावतीए तो बीजी कोई चिन्ता करवीज नहीं. मंत्र नो आराधना कर्ये जवी. शांति अन्दर छे. माटे डुबकी लागतां तेनो अनुभव थशे. शरीरादि तो विनाशशील होवाथी तेवी चिन्ता न करवी.

…नी भावना हती तेथी रोकाया. मारे कोई खास काम न्होतुं के तेमने रोकुं. पोताना कामने माटे ज रोकाया होय एम लागे छे.

प्रकृति तो प्रथम थी जेवी बांधी छे. तेवी उदय मां आवे जाय छे. पोते चेते तो सुधारो थाय. बाकी तो कहेनारो क्ही छूटे. साध्वीजी म० नी भावना प्रशंसनीय छे. लघुता खूब छे अने ते तेमने उपयोगी छे. चोमासा माटे नी विचारणा ने अत्यारे क्यां अवकाश छे. भावि नी चिन्ता न करवानुं ज्ञानिओ कही गया छे, माटे वर्त्तमान नो ज सदुपयोग करी लेवो. त्यां याद करनाराओ ने सहजात्मस्मरण संप्राप्त हो. ॐ आनंद आनंद आनंद

सहजानंद

(पत्रांक—२०)

सूरज कोठी

ॐ नमः

शिवबाड़ी-बीकानेर १५-१०-५६

आसो सुद १४-२०१५

भव्य आत्मा भाणबाई,

ओंउ अज मील आयो अेयो, कि अय ? ठीक आयन ? आत्मा संभरे तो क न ? संसार केणे फूटरो अय ? डिन में आत्मा पंढ जो भलो करे, न थई सके-तोजे-मुजो छडी ने प्रभुजो स्मरण जीव करे, निंदा-कुथली में वखत न गुमाय, हथ सें कम ने मों से स्मरण चालु कर्या ज करे, ता डिन जीवजो जरूर भलो थीअे.

पण हाय होय में भगवान भुलाजी वंभे न कंदें पण भलो न थींअे. माटे तुं भगवान के मा भुलजे. छोकरें छैयें के पण भक्ति में लगाड़जे. मों मंजा गार, फसार न निकरई खपे. जिभ्भ से मिठास-रखी ने रोणुं. त वगर फोकट जा करम न बंधाजे.

छोकरां छैयां पण आत्मा, तुं पण आत्मा. मिणी में आत्मा नो ख्याल रखणुं. त समता रे, समता सें आत्मा में शांति रे, ने जीव हलको फुल जेडो थई मति सुधारी शके. तोजे शरीर नो निटी काकी, वड़ी बाई ने भाणे जोगे जेणा. आया अे! तुं माठो न लगाइज के वड़ी भेण जे गाम में व्या० मं जे गाम में पण न आया. पण गाम न वड़ी भेण जो आयके न निंढी भेण जो. कें जो गाम ने केर मीफ विठो अय.

ठकरेंजो गाम पण हाणे न रयां, गाम-गरास मिडे जटजी व्या० वरीइंय पण मचोज, के वडी भेण मरथयो रो प्रेम अय—तदें पिढ ई गिया वोलाया, मुं मथे जरा पण नांय. अेडी कल्पना म्म कज्ज वड़ी भेण तां पिढ जे उमरशी के वोराण अनणु प्यो. तुं तोजे हंसराज के वोराण अच्ये न केंजी न आय ? माटे दो म्म दीज, छोकरें के—आतम भावना भावतां, जीव लहे केवळ ज्ञान रे'''ही मन्त्र सिख्राज !

जुरको संभारें तें मिणी के धर्मलाभ ओज अने तुं आत्मा में रोज, ठीक हणे आंउ विन्ना तो वोल्यो चाल्यो मिच्छामि दुक्कडं. ॐ शान्ति

सहजानन्द धर्मलाभ

(पत्रांक—२१)

ॐ नमः

बंध समय चित चेतिये, उदये शो संताप ?

परम कृपालु देवनां अनुरागिओ श्री जेठीवाई सपरिवार, लक्ष्मीबेन आदि

अंतरंग परिणति चित्रण वालु' पत्र संप्राप्त थयुं. सत्संग वले वघेल धर्म भावना ने हार्दिक अभिनंदन !

श्री भोगीभाईए जे पत्रांको लखी मोकल्या छे ते तथा ते जेवा कृपालु ना वचनो मां लक्ष लगाड़ी ने वचनाशयमां जेम जेम निमग्न थशो तेम तेम आनंद लहरीयो आत्म प्रदेशे प्रगटशे. तमाम भौतिक पर्यायो नाशवान छे. तेना संयोग वियोग मां हर्ष शोक शो ? ने सौने जाणनार-जोनार आत्मा त्रिकाल हाजरा-हजूर छे. तेमां दृष्टि स्थिर करी रहेनारजो प्राकृतिक तमासा अद्भेज नहीं. माटे ए सिवाय वाकी वधुं भूली जाओ आ कचरो कर्मजन्य छे. एने जोवुं पण पाप छे—तो पछी अड़वाथी शो लाभ ? अहिं तो आनंदनीज गंगा लहेराय छे. अस्तु, माताजीए आप सौने हा० धर्मस्नेहे याद कर्या छे. वीढना पटेल श्री मगनभाई अने लक्ष्मीवाई एओ अहिं रहेवा आव्या छे आपने घणा याद कर्या छे. आपना आगमन नी राह जुए छे. सौ परिचितो ने हा० आशीर्वाद जणावजो.

देहने देह गुण धर्मोथी आत्मा जुदो जाणी आत्म भावना मां लीन रहेतां भवरोग जाय छे तो शरीर रोग पण जायज. ते माटे तेवो पुरुपार्थ करी अत्यन्त शांति पामो. एज सौने आशीर्वाद अहिं तो सत्संग गंगा ना निमज्जन शिवाय वीजु' कोई याद करावे त्यारे याद आवे छे. पत्र लखवानी रुचि ओसरती जाय छे. कृपालुना मार्गनी प्रभावना स्वतः थती जाय छे. ॐ शांतिः

सहजानन्दघन अगणित आशीर्वाद ।

(पत्रांक—२२)

ॐ नमः ८-२-६०

रामजी धारशी—

भव्यात्मा,

पत्र मल्युं दुखनुं कारण परिग्रह प्रेम छे. परिग्रह जाळमां फसायलो जीव पोताना दोपो के जे मोक्ष मार्गमां कांटा रूप छे. तेने पोतानाज पग मां छूपावे छे. अने वीजाजीवो प्रते मायाचारे वर्ते छे. तेमां जो फावे तो करे अभिमान अने न फावे तो क्रोध लोभ आचारे दोप वड़े पोतानी वृत्ति शरीराकारे राखी आत्मा ने भूली अने पोताने शरीर रूप माने, शरीरनुं ज ध्यान राखे, आत्मा ने तो याद ज न करे. एम अनादिकाल थी शरीर भावे खर्ची ने चोर्यासीनी जेल मां फुटवॉल नी माफक उछल कूद कर्या करे छे. त्यां एने शांति केम मले ?

शांति ते आत्मा ना खजाना नो अनुपम रत्न छे आत्म भावे जो खर्चे तो तेने आत्मा मले अने आत्मा ने जोई जाणी ठरतां शांति मले. अनन्था दुःख टले माटे भाई ! हुं शरीर, वाणी के संकल्प विकल्प रूप मन नथी-पण आत्मा छुं. शरीरादि कोई मारां नथी. जे मारां नथी ते हुं नथी. तेने माटे राग-रीश शा माटे करवी ? माटे हे जीव ! तुं रागरीश छोड अने आत्मा मां चित्त जोड़ ॐ शांतिः

सहजानन्द

आत्मस्मरण !

(पत्रांक—२३)

ॐ नमः

१०-२-६०

भव्यात्माओ,

पत्र मल्युं. प्रभु कृपाथी अहिं आनंद मंगल वर्ते छे. त्यां पण सौने हो ! एज इच्छुं छुं.

अनादि काल थी जीव उन्मार्गे—अज्ञानिओ ना मार्गे चालतो आव्यो छे. अज्ञानवश पोताना आत्मा ने भूली, शरीर मां पोतापणुं स्थापी राग द्वेष ना प्रवाह मां तणातो गचकडीयां खातो पोता वडे ज पोते दुखी थई रह्यो छे. छतां सन्मार्गे—ज्ञानिओना मार्ग भणी ए दृष्टि फेरवतो नथी. ज्यां सुधी ए पोतानी दृष्टि फेरवी चीलो नहीं बदले त्यां सुधी कोई रीते दुखथी छूटी शकनार नथी. पुण्योदये ज्ञानी नो जोग मल्ये, तेमनी वाणी नुं साची शिखामणनुं उल्लासथी श्रवण-मनन करी पोतानी समज सुधारी जो दृष्टि फेरवी ने चीलो बदले अेटले आत्मा अने शरीरादि नुं साचुं स्वरूप जेम छे तेम समजी, शरीर मांथी आत्म भाव टाली पोता ना आत्मा मांज आत्म भावे जोई-जाणी टके तोज ए आ भवभ्रमण ना दुख थी सर्वथा छूटी शके

जेने दुख थी छूटवुं ज होय तेणे तो पोतानी बधी कल्पना छोडी ज्ञानी ना शरणे तेमनी आज्ञाए वर्तवुंज जोइए—केम के तेम कर्या विना छूटको थनारज नथी. माटे हे जीवो ! जागो जागो, प्रमादवश आ हाथ मां आवेली बाजी हारी जशो. ते छोडवा जेवुं छे. तेमांज शा माटे मोही पड्या छो ! झांझवा ना पाणी नी पाछल आटला बलपापड़ कां थाओ छो ? शुं ते पाणी हाथ आववानुं छे ? अने तेना वड़े प्यास बूझवानी ! चेतो ! चेतो !!

हजी हाथमां छे बाजी, कर तुं प्रभु ने राजी ,

मुद्दो तारी थाशे ताजी रे – पामर प्राणी

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

सहजानंद प्रभु स्मरण

अहिंनी चिंता करशो नहिं सौ बराबर थया छे. त्यां जे कोई याद करे ते सौ ने यथा योग्य. उमरशी हजी सुधी मारी साथे टकी शके तेवो शक्यो नथी. छतां निभावुं छुं. जोउं छुं के योग्य बनी जाय तो ठीक नहिं तो पाछो मोकलीश-समो यथायोग्य बनो.

ॐ नमः २ - ३ - ६०

ज्ञानिओ ना उत्कृष्ट सुख स्वरूप आत्म समाधि मार्ग ने उत्कृष्ट भक्तिए नमस्कार हो !
भव्यात्माओ ! (मेघवाई वि०)

आत्मानं साचुं जीवन ज्ञान स्वरूप छे तेना स्पर्श मात्र थी अनंत सुख उपजे छे. ते जीवन पोतानीज मिल्कत पोताना घर मां होवा छतां, तेने अज्ञान ना पड़दा मां दाटी मूंकी आ मूढ जीव घांची ना बलद नी माफक तेनी आस-पास कुदड़ी नी माफक फर्या करे छे कुदड़ी फरतां एने अनंत शोक अनंत ताप अने अनंत खेद वेठवो पड़े छे छतां ए थाकी ने निरांत लेतो नथी. एज अनादि नो आश्चर्य छे.

आंखे अज्ञान ना पाटा बांधी ए न जोवानुं जुए, न भणवा जेवुं भण्या करे. अने न करवा नुं कर्या करे तो पछी ए सुखी केम थई शके ? जे जोवा जाणवा अने करवा जेवुं छे ते तो एना ध्यान मांज नथी आवतुं. बाकी नुं बधुं ध्यान मां रहे तोय शुं ?

हे जीव ! जरा तो थोभ !! आंख ना पाटा उतारी जो तो खरो के तारी केवी दशा छे ? दुनिया ना प्रवाह मां तणांतो तो तुं आ भयंकर भवसागरमा गचडकियां खाय छे. छतां केम नथी अटकतो ! हवे अटकीने ज्ञानिओनी ज्ञाननौकामां केम नथी चढतो ! जीव प्रमाद छोडी, जाग्रत था ! जाग्रत था !
ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

तमारो स्टीमर मां लखेलो कागल मल्यो. हकीकत जाणी. अहिंवधा आणंदमा छे.

शेखरचंद भाईनी साथे उमरशी पोतानीज इच्छा थतां मुंबई गयो.

जो के कर्माधीन जीवो होवाथी दरेकनी प्रकृति भिन्न भिन्न होय पण तेवी भिन्नता छतां पोतानी प्रकृतिने बीजाने अनुकूल बनाववी होय तो ते बनी शके छे.. पण ते आवडत विरला जीवो मां देखाय छे.

डुमराथी माणेकविजयजी नो अने मुरारजी नो पत्र हता. श्री पद्मविजयजी महाराज आ विनश्वर शरीर ने छोडी पोतानी यात्रा मां आगल वध्या ना समाचार छे. एमणे मुसाफरी मां प्रयाण कर्युं तेम सौ ने करवा नुं छे. छतां मूढ जीवो स्टेशन ने ज घर मानी सजावट मां राच्या माच्या छो ! अचानक गाडी स्टेशने आवशे त्यारे कोण जाणे साथे शुं शुं लई जशे ?

चेतो ! चेतो !! चेतो !!!

सहजानंद—प्रभु स्मरण,

(पत्रांक २५) शिवबाड़ी
ॐ नमः २१-१०-६०

परम कृपालुदेवनुं योगबल जगतनुं कल्याण करो !

भव्यात्मन्

पत्र मल्युं अनादिनुं महापाप मिथ्यात्व छे. ए वड़े आत्मा पोतानोज अपराधी छे. सम्यग् दर्शन वड़े ओ अपराध टले त्यारे आत्मा पोते पोताने मिथ्यादुष्कृत-मिच्छामि दुक्कड़ं आपी कृत-कृत्य थाय छे. तेवुं मिच्छामि दुक्कड़ं सर्वजीवोने हो. एवी दशाएज तेनुं नूतनवर्षाभिनंदन उचित छे. वर्ष एटले क्षेत्र. आत्मा मांथी मिथ्यात्व खरो अने सम्यक्त्व प्रगटे त्यारे तेना स्वक्षेत्र चैतन्य प्रदेश में नूतनता-नवीनता प्रगटे छे जे अनादि थी कोई समये प्रगटी न्होती अने ओज एने कल्याणप्रद छे. तेथी ते अभिनन्दनीय छे. ओवी दशा जे प्राप्त करे तेने नूतन वर्षाभिनन्दन घटे छे. तेवी दशा जे-जेने प्राप्त थई होय ते तेने मारा नूतनवर्षाभिनंदन हो !

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

सहजानन्द आत्मस्मरण।

आ पत्रनी नकल वेलमां वगेरे जे इच्छे तेने मारावती आप लखीने आपजो हवे अहिं थी अन्यत्र प्रयाण थशे माटे कोइए अहिं पत्र न मोकलवुं।

(पत्रांक—२६) घोरा गुफा १५-१-६१
ॐ नमः

सद्गुणानुरागी श्री नेमचन्द भाई.

पत्र मल्युं हकीकत जाणी आ संसार केवल मोहजाल रूपेज छे. एमां गमे तेटली भौतिक अनुकूलता मली रहे छतां फसातो जाय एवीज एनी रचना छे. अने ओथीज विचारवानो वधी अनुकूलताओ छतां तेने लातमारी वीतराग-सन्मार्ग के अनन्य आश्रय करी वधता वैराग्ये उपयोग ने अन्तर्मुख करी तेने आत्मा मां जमावी-शमावी ने ओ जंजाल मांथी छूटी गया. ते मार्गमां चालता वच्चे असह्य कष्टोनो तेमने सामनो करवो पड्यो छतां तेओ पोतानी निष्ठाथी न डग्या अने तेथीज तेमना पुरुषार्थ ने संसारी मुमुक्षुओ नुं शिर तेमनां चरण मां झूकी पड़े छे.

जेने-जेने संसार थी तरवुं छे ते तेने तेम कर्या सिवाय छूटकोज नथी. गमे तेटला लाभ नजरे चढ़तो होय छतां ते भौतिक होवाथी कामनोज नथी ओवी जेने खात्री थाय छे ते जड़ना लाभे लोभाय नहिं कारण के ते वधी ठगवाजी छे आ वात निसन्देह सत्य छे आत्म साधन कार्य केजे जीवनमां अनिवार्य छे. जेमा अमाप लाभ छे. ते लाभ नो लोभ कोई विरलाज जीवोमां देखाय छे. बाकी तो जड़ना लाभ भणीज

थी रू वारीक कपड़ा मां भरी खूब मजबूत पणे आउट साइड नाक ना फणा मां वेसाड़ी देवुं तेथी ते नाड़ी पलटती जशे. वाहन ना उपड्या पछी ते काढी नाखवुं.

६—मात्र प्रवाही पीणां पीवा होय तो ते डावा-स्वर मां अने भोजन जमणा स्वर मां करवाथी तबियत वगड़शे नहिं भोजन वच्चे पाणी लई शकाय पण प्रारंभ मां घन पदार्थ लेवोज.

७—वाहन थी उतरती वखते पण वन्ने स्वर साथे चालता होय तो ते वखते थोभी जवुं डावो स्वर होय तो डावो जने जीमणो होय तो जीमणो पग प्रथम आगल करी चालवुं. एमने विदेश-पेरीस प्होंचतां जल्दी काम आटोपवुं होय तो सूर्य स्वर मां उतरवुं अेटले जमणा स्वरमां उतरवुं. जो डावा मां उतर्यां तो वधारे रोकावुं पडशे काम पण धीरे-धीरे थशे माटे प्लेन मां पांच मिनिट पहेलां थी ज डावा नाक मां रू भरी ने ते स्वर वंद करी देवुं. मकान प्रवेश चंद्रमां थाय तो स्थिरता थाय. जमणा मां थाय तो थोडुं रहेवाय.

८—कोई थी मित्रता करवी होय तो मलवा जतांके तेओ मलवा आवे त्यारे आपणो डावो स्वर चालवो जोइए. अने आपणी डावी वाजुए के सामे तेओनी वैठक रहे तेम आपणे वसवुं जोइए.

९—खाली स्वर वाला दिशाना हाथथी कोई पण चीज लेवी देवी नहीं जेम के डावा खाली स्वरमां डावा हाथे अने जमणो स्वर न चालतो होय त्यारे जमणा हाथे कोई आपीए तो ते पाछी न मले. एवी अनेक वावतो छे पण आटली सचवाय तो तेओनी विदेश यात्रा सफल थशे. अन्यथा जेवो उदय.

विशेप मां—डावा पगला भरवा हो तो प्रथम चार वखत तेज पग आगल करवो अने जमणो चार आंगलपाछल राखवो. पण जमणा नो नंवर होय तो ते पग प्रथम त्रणवार आगल रहेवो अने डावो पाछल रहेवो जोइए.

पत्र उतावडे थी पतावी हवे मारा वीजा काम मां लागीश. प्रभातेज आ लखुं छुं जो कोई पत्र लई जनार मलशे तो आजनी टपाल मां निकली शकशे.

स्वास्थ्य सारू छे १६ मा स्तवन नुं विवेचन चालू छे. मुंवई, वोरड़ी, मालवा-डग रामगंजमंडी अने झालावाड़ थी केटलाक सत्संगीओ अहिं आवनार छे-ते सहज.

"ऊपली वीना मां व्यापारिओ जो पोतानुं जीवन घड़े तो नुकशानी थी वची जाय. आ सत्य हकीकत छे. एना ऊपर तो संत चिदानंदजी महाराजे एक स्वतंत्र पुस्तक लख्युं छे. भारतीय विद्या अजव-गजव छे.

आप दम्पती ने मारा अंतर ना आशीप छे. के धर्मध्यान मां दिनोदिन वृद्धि थाओ.

शुभेराजजी अहिं आवी गया छे. हवे स्वस्थ छे. सुखलाल आनंद मां छे—आपने जयजिनेन्द्र लखावे छे. ॐ शांतिः

सहजानंद धमस्नेह

(पत्रांक २६)

ॐ नमः।

हंपि १७-६-६१

भव्यात्मा व्हेन श्री भाणबाई सुत हंसराज वेलवाई, निर्मला, पद्मा, प्रेमजी,

हंसराज नो कागल मल्यो पण जवाब आपवानु याद न रह्यु, माटे क्षमा करजो. सर्व जीवोनी साथे तम सौथी भवीभवना खमतखामणा अम सौए कर्या छे ते स्वीकारजो.

भक्ति भाव मां प्रमाद करशो नहि प्रभु भक्ति थी वधाय दुखनो निवेड़ो थई शकशे, शरीर अने संसार माटे जीवे घणु कर्यु पण शांति पाम्यो नहीं कारण के तेनो रस्तो जुदो छे, ते भणी एने प्रेम नथी. अने दुखना रस्तामां प्रेम आवे छे. तो पछी जन्म-मरण केम टले? खीमजीभाई ने तो केटला वर्षोथी पत्र लखवानी हिंमत नथी. तो पछी मारे शुं लखवुं सौने धर्मलाभ ॐ शान्तिः।

सहजानन्दघन

खमतखामणा धर्मलाभ!

(पत्रांक ३०)

ॐ नमः

हंपि २३-९-६१

भव्यात्मा हंसराज!

तारुं खामणा पत्र मल्युं. तारा माता-पिता भाई व्हेनो अने बीजा सगा-सम्बन्धी सौने अमोए शुद्ध भावे खमाव्या छे. ते जाणजो. काकीया अने जेतबाई माए पण सौने खमाव्या छे.

तारा फोई ने जे दर्शन थाय छे ते पुण्योदयनी वात छे. भावना उत्तम छे. ने दर्शन निकट भव्यो ने थाय. तेमने कहेजे के जे जे अनुभवो थाय छे तेने गुप्त राखे अने मंत्र स्मरण कर्या करो तो आत्मा मां प्रकाश थशे अने पछी बधुं प्रत्यक्ष नजरे देखाशे. वात करवाथी धन लुंटाई जाय माटे तिजोरी मां समावी ने राखजो तारा बापूजी ने अठाई नी शाता हशे? धर्मध्यान मां वृद्धि करजो. अमरशीद पालीताणाथी पत्र लख्योहतो हवे त्यां तेने काथी गयुं. कुमरा नो पत्र हतो—तप जप ठीक थयुं लखेछे. तुं त्यां रोज पूजा करतो रहेजे. अने भक्तिमां मन राखजे, तारी जनेताने २० दोहरा वगेरे कंठस्थ करावजे. अहिं अमसौना शरीरे ठीक छे. पजूसण मां सारीरीते आराधना थई शान्तिः।

सहजानन्दघन सा० खामणा सहित धर्मलाभ!

(पत्रांक ३१)

ॐ नमः

Hampi
27-10-61

देह गेह भाड़ा तणो ए आपणो नाहि :

शुभ गृह आतम ज्ञान ए, तिणमांहि समाहि'''रे जीव साहस आदरो

भव्यात्माओ! जेठाभाई परिवार)

आधि, व्याधि अने उपाधिना ज ज्यां मुख्य पणे दर्शन थाय छे, एवा आ संसार मां शान्ति केम मळी

शके ? कोईना जन्मना समाचार तो कोईना मृत्युना, कोई ना बीमारी ना तो कोई ना स्वस्थता नां, कोई ना वैराग्यना तो कोई ना रागना-आवी विचित्रता जोई चित्त उदासीन थई जाय छे. अने संसार भणी जोवानु मांडीवाली आत्मामां लीन थवामांज सार जुअे छे. वाकीनी पंचायत मां कांइ सार नजरे चढतुं नथी. तो पछी कोने शुं कहुं अने कोने शुं लखुं ?

मोनजी वापाए जे रस्तो लीधो ते रस्तोज वधाने लेवा नो छेज कोई आजेतो कोईकाले छतांजीव भाथुं तैयार करवामां कचाश राखे छे ए आश्चर्य छे शरीरमाटे तो जिन्दगी भर धमपछाड़ा मार्या. पण तेथी कांइ हाथे न चढ्युं हवे आत्मा माटे धमपछाड़ा मारे तोज कइंक हाथ चढ़े. पण तेम करवा ए वाना-वाजी करे छे. केवो तमाशो ?

शरीरनी चिंता करतां आत्मा नी चिंता विशेष हितकर छे. छतां ते थती नथी. एज भवभ्रमण नो तैयारी वतावे छे. माटे हेजीवो ! वूझो, वूझो ! आत्महित त्वराए करीलो। ॐ शांतिः।

सहजानन्दघन धर्मलाभ !

(पत्रांक ३२)

ॐ नमः

२८-५-६२

सद्गुणानुरागी श्री नवीनभाई

तमारुं पत्र १२-५ नुं लखेलुं यथासमय मल्युं. आजे प्रत्युत्तर आपवा अवकाश लई प्रवर्तित थाऊं छुं.

"धर्ममां वृत्ति स्थिर थाय अने मानसिक संतोष मले" एवो उपाय सूचवा लख्युं. तेमां प्रश्न ने वांची मने घणो संतोष थयो छे. आवा प्रकार ना भावो कोई विरला जीवो मां स्फुरे छे.

उपला प्रश्नतु समाधान तो प्रत्यक्ष सत्संग योगे शक्य छे. पत्र द्वारा वतायेला उपायो थी पूर्णतः समाधान शक्य नथी. छतां सामान्य इशारा रूपे जे स्फुरे छे ते पाने चढावुं छुं.

सामायक प्रतिक्रमण के पूजन काले मन अने श्वास ने साथेज राखो. नाक अने नाभि पर्यन्त चालता श्वासोश्वासमां मन मेलवी प्रत्येक पाठनुं उच्चारण करवुं. काउसग्गमें नवकार मन्त्र ना आठ अने लोगस्स ना (प्रतिपादे १) २८ श्वासोश्वास थवा जोइए. सामाइक लीधा पछी पद्मासन किंवा सुखासने टट्टार वेसो कंठमांथी आवाज संभलाय (जेम निद्राकाले गोरतां शब्द संभलाय छे तेम) तेवा प्रकारे दीर्घ श्वास लो अने छोड़ो. साथे मन मेलवी जप सतत् कर्याज करो. शरीर आदिनुं भान छोडी दो. आम करतां वीजा विचारो अटकशे. शरीरमां स्फूर्ति वधशे. अने मन थाकी चुप रहेशे.

आ अभ्यास सवारे-सांजे वे-वे अथवा एक एक कलाके चालु करो अने क्रम क्रम थी त्रण कलाक पर्यन्त प्होंचो. प्रारम्भ मां न फावे छतां घभराववुं नहिं. अभ्यास चालुज राखवो छमास पर्यन्त आ अभ्यास करनार ने मननी फरीयाद प्रायः नहिं रहे.

तदुपरान्त श्रीमद् ना वचनामृत नुं एकाद कलाक मनन रोज चालू राखो. ओछुं वोलवानी टेव पाड़ो अभ्यासथी जो एकनिष्ठा रही तो कइंक अनुभूति थशेज.

उपयोग ठरे छे तेम उपयोग एटले चैतन्य प्रकाश स्वं स्वरूपे ठरतां मंगं=असली स्वाधीन बाधा रहित इन्द्रियातीत अनंत सुख ल=प्रगट थाय छे.

एवी चैतन्य ज्योति नो जे हृदय मां ज्यारे उदय थाय छे-त्यारे त्यां तेने मंगल प्रभात कहे छे.

एवी मंगल प्रभात आपना आत्म-प्रदेशे प्रदेशे प्रगटो एज आपना जीवनुं नूतनवर्षाभिनंदन हो !

(पत्रांक ३६)

ॐ नमः १-८-६३

भव्यात्मा श्री भाणबाई.

क्षामणा पत्र गई सांजे मल्युं तमारा सौ अपराध माफ छे. अहिं पर्व नो आराधना यथाशक्ति थई छे. सां० प्रतिक्रमणमां सौ जीवोनी साथे पहला भवोभवना अपराधोनी क्षमा मांगी अने आपी छे. तेमां तम सौनो समावेश अवधारजो.

तमे तमारा धंधा मां मशगुल छो अने अमे अमारा धंधा मां मशगुल छीए. अमारो धंधो तमारा थी समजाय अने आराधाय तो अनंता भवनुं साटुं एक भव मां वाली शकाय. पण तेवी समजण तमने आ भवे थाय तेम लागतुं नथी, माटे वधारे कागलीया चित्रित करी खाली मोह वधारवा इच्छा थती नथी.

भाई व्हेन घणी वार थया पण भाई व्हेनपणुं टाली आत्मा रूपे आत्मा न थया, त्यां मोहने साथे रहेवुं पड्युं. हवे मारे तो एवा मोहने पोषवो नथी अने ते माटे भाई व्हेन पणुं खतम करवुं छे करी रह्यो छुं. माटे तमने पसंद होके न हो तेमां मारे लेवा देवा नथी.

तमारी संभाल एवा प्रकार नी छे के तेनो पाछल आखुं भव जीव हारी जाय तो पण समेटाय नहीं अने तेथीज हालत तेना करतांय वधारे कफोडी हालत छे गुरुजी नो. तम बन्ने नी दशा जोई दया आवे छे पण शुं थाय ?

अहिं थी कालीदास मनी बाई जेठबाई वगेरे ना खमतखामणा वांचजो. जेम बने तेम मंत्र स्मरण कर्या करजो. थवा कामना शरीर भले रहे पण मन मां मंत्र रटवानुं न छोडवुं. सौ पईक ज्ञान नी शुद्धि थई शके. तेवी समजण पण जोइए. पण तेने आडी नडे एवी जडता जीव मां पेठायली लागे छे. त्यां हवारा त्यां वधारे श्रम करवो. सौने हा० आशीर्वाद। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन धर्मलाभ पूर्वक खमतखामणा

(पत्रांक—३७) २-८-६३

ॐ नमः

श्री नवीनभाई सपरिवार

सो अहिं थी प्रयाण करी त्यां क्षेम कुशल पूर्वक आवी पहोंच्या हशे. तेमनी साथे आवशो हशे. ते ध्यान मां लेशो.

पण मेलववानी महेनत नथी करतो. अने अनात्म व्हाना काढी कहे छे के शुं करीये ? अमारा थी तो कांइज थई शकतुं नथी. तो आवा ढोंग थी जीवथी खरे-खरो धर्म थाय ज नहिं अने कोई नो उपदेश लागे पण नहीं एमा बीजा शुं करे ? ॐ

अहिं वधा आणंद मां छे. त्यां सौने धर्मस्नेहपूर्वक प्रभु स्मरण सह धर्मलाभ साध्वीजीने धर्मस्नेह.

सहजानंदघन

भवोभवना सौने मिच्छामि दुक्कड़ं

लि. काकीवाना खमतखामणा वांचशो.

(पत्रांक—३४)

ॐ नमः

२५-९-६२

[जेठीवाई उपर लखेल छे]

खामणा पत्र मल्यो. सफरनी हकीकत जाणी. अहिं २०० भावुको नी साथे पर्वाधिराज नी आराधना उल्लास भावे थई.

अनादिय दोषो ने दूर करवां क्षमापना ना अवसरे सहु जीवो थी क्षमानुं आदान-प्रदान कर्युं जेमां आप वधाय परिचितो थी पण खमतखामणा कर्या छे. स्वीकृत थाओ.

अहिंथी श्री जेतवाई, काकीवां, सुखभाई, आदिए पण खमाव्या छे.

जीव पोतानी शक्ति पूरे पूरी अेकत्र करी पोताना अंतर शोधन मां लगावे तो शीघ्र तरीने पार थाय—आ वात न्याय सिद्ध छे. छतां पोतानुं काम पडतुं मूकी बीजा ना खेत्र खेडवा लागी जाय वगर ढींगले वैजे खेतरे में निरज वढ्या करे त उलथो थई थेवें। छतां मजुरी न मिले अने पिंडजो मोल पण सोकी वेभे इय अचरज जी गाल अय उपयोग शुद्ध करवा मांज आपणी शक्ति खर्चाओ एज भलामण सह विरमुं छुं. व्यर्थ चिंतन व्यर्थ वकवाद अने व्यर्थ चेष्टा मे त्यागी अंतरमां अजुवालु करो। ॐ शान्तिः

सहजानंदघन—सहजात्म स्मरण

(पत्रांक ३५)

ॐ नमः

मंगल प्रभात

(भँवरलाल नाहटा को सन् १९६३ में दिया पत्र)

अनादिय अंधकार-आत्मभ्रम ने टालनारी जे प्रभात-प्रकृत चैतन्य-ज्योति, जेना आत्म-प्रदेश मां जगमगे छे, जे ज्योति ना प्रगटवा थी आत्मा ने आत्मा पणे अने शरीर ने शरीर पणे प्रत्यक्ष जोइ जाणी शकाय छे, तथा रूप जोवा जाणवा थी आत्मा मां आत्म बुद्धि अने शरीरादि मां अनात्म बुद्धि थाय छे तेम थये शरीरादि सर्व जड़ पदार्थो मां अनादि थी सेवायलुं मं=अहंत्व ममत्वादि गल=गली जाय छे अेटले के हुं आत्मा छुं पण शरीर हुं नहिं एवो दृढ निश्चय थइ पोताना चैतन्य-मूर्त्ति स्वरूप मां जोवा जाणवा रूपे

उपयोग ठरे छे तेम उपयोग एटले चैतन्य प्रकाश स्व.स्वरूपे ठरतां मंगं=असली स्वाधीन बाधा रहित इन्द्रियातीत अनंत सुख ल=प्रगट थाय छे.

एवी चैतन्य ज्योति नो जे हृदय मां ज्यारे उदय थाय छे-त्यारे त्यां तेने मंगल प्रभात कहे छे.

ऐवी मंगल प्रभात आपना आत्म-प्रदेशे प्रदेशे प्रगटो एज आपना जीवनुं नूतनवर्षाभिनंदन हो!

(पत्रांक ३६)

ॐ नमः १-८-६३

भव्यात्मा श्री भाणबाई,

खामणा पत्र गई सांजे मल्युं तमारा सौ अपराध माफ छे. अहिं पर्व नो आराधना यथाशक्ति थई छे. सां० प्रतिक्रमणमां सौ जीवोनी साथे थएला भवोभवना अपराधोनी क्षमा मांगी अने आपी छे. तेमां तम सौनो समावेश अवधारजो.

तमे तमारा धंधा मां मशगुल छो अने अमे अमारा धंधा मां मशगुल छीए. अमारो धंधो तमारा थी समजाय अने आराधाय तो अनंता भवनं साटुं एक भव मां वाली शकाय. पण तेवी समजण तमने आ भवे थाय तेम लागतुं नथी, माटे वधारे कागलीया चित्रित करी खाली मोह वधारवा इच्छा थती नथी.

भाई व्हेन घणी वार थया पण भाई व्हेनपणुं टाली आत्मा रूपे आत्मा न थया, त्यां मोहने ताबे रहेवुं पड्युं. हवे मारे तो एवा मोहने पोषवो नथीं अने ते माटे भाई व्हेन पणुं खतम करवुं छे करी रह्यो छुं. माटे तमने पसंद होके न हो तेमां मारे लेवा देवा नथी.

तमारी जंजाल एवा प्रकार नी छे के तेनो पाछल आखुं भव जीव हारी जाय तो पण समेटाय नहीं अने तेथीज हालत तेना करतांय वधारे कफोड़ी हालत छे मुरारजी नी. तम बन्ने नी दशा जोई दया आवे छे पण शुं थाय?

अहिं थी काकीबा ममी बाई जेतबाई वगेरे ना खमतखामणा वांचजो. जेम बने तेम मंत्र स्मरण कर्या करजो. धंधा काममां शरीर भले रहे पण मन मां मंत्र रटवानुं न छोडवुं. तो कईक ज्ञान नी शुद्धि थई शके. तेवी समजण पण जोइए. पण तेने आडी नडे एवी जडता जीव मां फेलायली लागे छे. त्यां हताश न थतां वधारे उद्यम करषो. सौने हा० आशीर्वाद। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन धर्मलाभ पूर्वक खमतखामणा

(पत्रांक—३७) २-८-६३

ॐ नमः

सद्गुणानुरागी श्री नवीनभाई सपरिवार

नेमचंद भाई तो अहिं थी प्रयाण करी त्यां क्षेम कुशल पूर्वक आवी पहोच्या हशे. तेमनी साथे कंइक सूचनाओ जणावी हती. ते ध्यान मां लेजो.

शुभराजजी नाहटा ने तार द्वारा जयपुर थी मूर्ति अहिं लाववा सूचव्युं हतुं, परन्तु बीकानेर तरफ दुष्काल जेवी परिस्थितिए पशु हत्यामां जो कर्युं होवा थी बीकानेर ना भूगर्भमां रहेली धातु प्रतिमाओ वहार काढी शांति अनुष्ठान द्वारा ते संकट निवारण थाय एवी परम्परा चालती आवी छे. ते अनुसार बीकानेर वासिओए ते अनुष्ठान करावावानो निर्णय लई शुभराजजी ने रोकी लीधा छे. तेथी तेओ त्यार बाद आ तरफ आवशे. त्यारे जोयुं जशे.

१—मूर्ति ऊपर पाकुं मानव वर्णवत् रंग लगाड़ी मोकलशो. पद्मासन नी नीचेनां भागमांजग्या बहु थोड़ी राखी होय एम लागे छे. जो ए वात खरी होय तो लेखनी तकती जेटला जुदा पाषाणमां नीचे मुजब लेख अंकित करावावो :—

"सहज समाधिनिष्ठ-ज्ञानावतार-जैनधर्मोद्योतकर्ता-युगप्रधान सहजात्म स्वरूप-परमगुरु श्रीमद् राजचंद्रदेव की ध्यान मुद्रा दक्षिण भारत के कर्णाटक देश में किष्किन्धा नगरावशेष हंपि ग्राम के निकटवर्त्ती रत्नकूट के उपर श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम में स्थापित की गई"

२—चरण चिन्हनुं पत्र मल्युं-तेमां आलेखित चित्र मां फेरफार करावावा एक चित्रकार ने आमंत्रण अपायुं हतुं परन्तु ते नज आवीशक्यो जेथी मने ड्रोइंगना अभ्यास नहीं छतां उचित चिन्होंनो सुधारो कर्यो छे. ते बन्ने पदचिह्न मां कोतरावजो. आरसनी तकतीबहु लांबी चोड़ी न होवी जोइए आपणा पग जेवड़ा चरण चिह्न तेनी आसपास डिझाइन अने पगलां नी वच्चे खोदाई करी पगलां तकती नांज लेवल मां कोतराय छे ते बराबरनथी परन्तु कमल मां पगलांनी थोड़ी ऊंडीछाप मुजब उपस्यां विना ना बनाववा. जेमके सीमेंट रेती मेलवी तेमां समाप पाणीमूंकी प्लास्टींग कर्या पछी तेना ऊपरऊभा थइए अने साचवी ने पाछा हटी जइए त्यारबाद तेनुं जे चित्र नजरे चढे छे तेवी रीतेज डीजाइन अने तकतीना लेवल थी नीचा चरण चिन्ह बनाववां पगलां नहिं पण पगलां पडेली भूमि ऊपरनी छाप. आवांज दक्षिण भारत मां अहिं हंपी मां पण बहु छे. ते दादाजीनी अनुमति पूर्वक बनाववा तमने भलामण करुं छुं. माटे तेमां विकल्प नहीं करता.

३—दादा श्री जिनदत्तसूरिजीनी मूर्ति नेमचन्द भाई ने बनाववा कही छे. ते जेसलमेरनी काष्ठ पट्टिका ऊपर थी सुखसागरजीए जे चित्र कराव्युं छे तेमां धोती जेवी चोलपटानी आकृति छे ते सुधारी गोठण ऊपरना चार आंगुल खुला होय तेवी रीते चित्र तैयार करावी १५ इंच ना माप थी बनावजो. अने चार पगलां पण श्रीमद्ना चरण चिन्ह थी स्हेज मोटां अने तेनो माफकज कमलादि चिन्हो कोतरावजो.

(पत्रांक—३८)

१०-६-६३

ॐ नमः

भव्यात्मा

तमारुं खामणा पत्र मल्युं हतुं अहिं थी अम सौए तम सौने बधाय जीवोनो साथे खमतखामणा छे. भवो भवना मिच्छामि दुक्कड़म्.

धर्मध्यान मां लक्ष राखी शुक्ल ध्यान मां प्रवेश करवा मेहनत करजो. दुनिया कांई भली थवा नी

नथी छोको कांइ मृत्यु रोग मटाडी आपशे नहीं ओतो पोतानेज मटाडवो रह्यो. करवा जेवुं काम तो एकज छे. अने ते एज के पोतानाज दोषो ओळखी तेने दूर करवा. परन्तु जीव पोतानुं काम मूकी पारकी पंचात मां समय गाळे नाहिं तो तेथी शुं वळवानुं हतुं ?

लाखो आंधळाओ करतां १ देखतानी सलाह गुणकर मनाय छे. ते देखता पुरुष कृपालु देवे जे कह्युं छे. ते मान्य करवा योग्य गणी निज आत्म-शुद्धि झटपट करी ल्यो एज भलामण.

सहजानन्द सादर स्मरण

(पत्रांक—३९) हंपि १८-१०-६३

ॐ नमः

भव्यात्मा श्री भागबाई अने बाळको.

अहिं प्रभु कृपा थी आनन्द मंगळ छे. प्रभु-भक्ति मां अनंत शक्ति छे. जे आत्माने बंधन थी मुक्त करावी शके छे.

जन्म-मरण ने उत्पन्न करावनारा राग अने द्वेष ए मुख्य बंधनो छे. तेने आधार स्तंभ छे शरीर रूपे पोतानी मान्यता-आत्मा ड्राइवर छे छतां पोतेजे शरीर मोटर मां बैठो छे ते रूपे पोताने माने छे. ए मान्यता ने लई ने राग द्वेष ना प्रवाह मां वहेतो भव समुद्र मां डुबकां खातो त्राय-त्रोय करे छे. माटे हुं आत्मा छुं—शरीर नथी एज जीवन नुं सार छे.

बधाने मारा आशीर्वाद।

सहजानन्दघन सौने धर्मलाभ हो !

(पत्रांक—४०)

ॐ नमः हंपि ८-११-६३

भव्यात्मा भाग बाई सपरिवार.

हाथ ना खोबामां भरेलुं पाणी जेम एक एकटीपुं थई खाली थई जाय छे. तेम आ शरीर नुं आयुष्य एक एक क्षण थई खतम थतुं जाय छे. थतुं खलास थये आ भाड़ा ना मकान जेवुं शरीर खाली करी बीजी दुनियामां जवुं पड़शे. एमां समजवानुं एज छे के दरेक पळनो प्रभु स्मरण बड़े सदुपयोग जो थाय तो फरी थी उत्तम मानवो मळी शके. नहीं तो अधोगति तो तैयारज छे. अधोगति मां न जवुं पड़े तेथी काळजी राखी जीवन जीवो एज भलामण. सौने धर्मलाभ !

सहजानन्दघन

(पत्रांक— ४१)

ॐ नमः

हंपि १७-१-६४

भव्यात्मा वेलवाई,

तारो लखेल कागल मल्यो. तारा अक्षरो सारा छे. लखवानी रीत मामा पासे थी शीखी लागे छे. पण ते वरावर नथी. साध्वीजी पासे थी शीखी लेजे. अने प्रभंजना नी सज्काय नो अर्थ तुं जरूर साध्वीजी पासे थी सांभली लेजे. ते परणवा सखीओ साथे जती हती वच्चेना गाला मां साध्वीमंडल ना दर्शन बोध मलतां त्यां ने त्यां केवलज्ञान पामी. आ वात अत्यारे तने समजवा जेवी छे. वाकी तो संसारी थवुं अे अनादि थी मोहजाल मां फसाववा-फसवानो आदत छे. जे काले छूटशे ते काले जीव साचो सुखी थशे. तारी जननी, व्हेनो, भाइओ अने वीजा सम्वन्धीजनो सौने धर्मलाभ !

धर्मध्यान भक्ति मां मन लगाड़जे ॐ शान्तिः ।

सहजानन्दघन धर्मलाभ !

(पत्रांक ४२)

ॐ नमः

हंपि ४-६-६४

परम कृपालुदेवनुंज एक अनन्य शरण अने स्मरण हो !

पू० मातेश्वरी जवलवा, (मुंवई)

आगामी सां० खामणा ना अवसरे परम कृपालु देवनी साक्षीए सर्वजीवोनी साथे भवोभव ना अपराधो नी त्रिकरण शुद्धिए उत्तम क्षमा मागीश ते समये आपनी साथे पण खामणा करीश तेनो आप उदार भावे स्वीकार करी क्षमावंत वनो एज आशा पूर्वक विरमुं छुं

काकीवाए पण तथा प्रकारे खामणा स्वीकारवानी प्रार्थना पाठवी छे. तेनो पण स्वीकार हो !

सर्व ज्ञानीओ अने कृपालु देवनी साक्षीए हूं विनम्र पणे जणावुं छुं के वोर्डी तेमज अहिं थएला अने थता चमत्कारोमां आ आत्मानी अणु मात्र पण शक्ति खर्चाई के खर्चाती नथी. तेम तेमां दंभ ने पण स्थान नथी, मात्र ते देवकृत थयां छे. अने थाय छे तेने पण जो मारो अपराध मानवो अने मनाववो जेने इष्ट छे तो तेथी मारे कांइ लेवा देवा नथी.

"चार अतिशय मूल थी, ओगणीश देवना कीध" एम जे ज्ञानिओ कही गया छे तेमा देवकृत अतिशय अर्थात् चमत्कार जो तीर्थंकर ने वाधक न थई शके तो तेना अनुचर ने पण तेमनी सेवामां हाजरी होतां तेवुं कांइ थाय तो केम वाधक वनी शके ?

कृपालु देव ना वचनो मात्र नोज जेने परिचय छे पण साक्षात् अनुभव नथी तेवा मुमुक्षुओ जेने साक्षात् अनुभव वर्त्ते छे तेना विषयक जे कांई खतपणी करे ते साचीज छे एम जो आप मानता हो तो तेथी आप पण निरपराधी सिद्ध नहिं थई शकशो एम हुं खात्री पूर्वक नम्र भावे कहुं छुं.

एक तरफ आप मने अपराधी गणो छो अने बीजी तरफ मारा लेखित उपदेश ने इच्छो छो ! ते माटे मने आश्चर्य उपजे छे. अने मारो उपदेश हुं क्यां आपुं छुं पत्रो बधो ज्ञानिओनोज वही चलावुं छुं. बाकी हुं तो मात्र लाउडस्पीकर छुं.

तमे कृपालुदेव ना जेटला हकदार छो तेना करतां आ जीव ओछो हकदार छे. पण आप शा आधारे मानो छो ? ए पण हुं प्रमाण मागवानो अधिकारी छुं.

काशीदा विषयक पण आपना ख्यालो तद्दन नापायादार छे एम पण जणावतां मने जराय कर्म बंध नथी थतो अने नथी थवानो. एवो आत्म विश्वास छे.

सां० क्षामणा वखते आ बधो कचरो साफ करी आपणा परस्पर वास्तविक क्षामणा थाय एम इच्छी आ नम्र निवेदन श्री लालभाई ना हाथे आपनी सेवा मां मोकलुं छुं. तेनो स्वीकार थाशो.

मारा जे वचनो आपने दुःख लगाडे तेवा सिद्ध आपना मते थाय तो पछी आ लेखक नी साथे आपे जे उपदेश ग्रहण करवानो इच्छाए सम्बन्ध जालवी राख्यो छे ते निष्फल नीवडशे. माटे शुद्ध विवेक ना प्रकाश मां उपला वचनो नुं रहस्य विचारी आपने जे उचित लागे ते करशो ॐ

आश्रमवासिओ ना पण क्षामणा स्वीकारजो ॐ शांतिः

हार्दिक क्षामणा पूर्वक धर्मस्नेह !   सहजानन्दघन

(पत्रांक ४३)

ॐ नमः   हंपि १९-७-६४

सद्गुणानुरागी सरल हृदयी वात्सल्यमूर्ति भव्यात्मा श्री प्रेमाबाई सपरिवार,

जीवामा अने हीरजीभाइ ना मोढुंए आपनी तबियतना तथा चि० गोविन्दजीभाई ना देह छूटवा ना समाचार सांभळी आ संसारनी असारता प्रत्ये विशेष दृढता थई.

आप मारा पत्रनी चातकवत् अभिलाषा राखो छो एम जीवाभाए गई काले जणाव्युं. पण तेथी पहेलां कोईए मने समाचार आप्या न्होता तेथी फुरसद लई अत्यारे पत्र लखवा बेठो छुं.

आपनी शारीरिक वेदना तथा इष्ट जन वियोगजन्य मानसिक वेदना जाणी नजर करतां आ आत्मा मां अनुकम्पा जागी तेथी आपने आश्वासन आपवा पुरतुं आ पत्र प्रयत्न करुं छुं.

ज्ञानीओए आ शरीर संसार तथा भोग सामग्री ने अनित्य, अपवित्र अने असार बताव्या ते यथार्थज छे. आपने तो जातेज अनुभव थई रह्यो छे. तेथी आ शरीरादि प्रत्ये नो मोह छोडी केवळ पोतानो आत्मा के जे स्थायी स्वभाववाळो जन्म-मरण-जरा-व्याधि आदि दुःखो थी रहित छे. सिद्ध भगवान जेवो पवित्र अने पोता माटे सर्वस्व मात्र छे तेनेज ओळखवा प्रयोग करवा, तेमांज लक्ष राखवा तथा तेमांज पोतानी चित्तवृत्ति ने लीन करवानी मेहनत करवी एज आ अवसर नुं सार्थक थवुं छे.

पूर्व जन्मो मां मोह भावे आ जीवे जे-जे इच्छ्युं हतुं तथा प्रवृत्ति करी हती ते-ते बधु आ भव मां मली रह्युं छे. तेमा बीजा जीवो प्रत्ये जे जे सुख अथवा दुख आपवा भावना करी ते-ते प्रमाणे आपण ने अत्यारे सुख अने दुख एक सामटा मली रह्यां छे. तेमांथी आपण ने सुख तो प्रिय छे पण दुख अप्रिय थई रह्युं छे. छतां ते भोगव्या वगर टले नहिं. एवो कर्म तंत्रनो कायदो छे.

महावीर भगवान जेवा ने पण पोताना शुभ कर्मोअे न छोड्या तेम अशुभ कर्मोए पण न छोड्या. त्रिपृष्ट वासुदेवना भवमां तेमणे शय्यापालक ना कानमां सीसुं रेडाव्युं तेना फल रूपे अन्तिम भव मां कान मां खीला ठोकाणां अने तेमणे समता थी सही लीधा. तेवा अनेक घोर उपसर्गो अने परिषहो १२॥ वर्ष सूधी समता भावे सह्यां त्यारे करज फोटी गयुं अने पोते अरिहंत भगवान पणे पुजाया. पोते पण तर्या अने बीजाओ कैंक ने तारी गया. तेम ज आपण सौ ने वर्त्तवुं जोइए कारण के आपणे भगवान महावीर ना अनुयायी धर्म-पुत्रो छीए. आपणा बाप ने खुश राखवा होय तो तेमनी आज्ञा माथे चढाववी ज जोइए.

भगवाने कर्म भोगवतां पोताना आत्मा मां जराय राग-द्वेष ने पेसवा न दीधा, तेम आपणने पण राग-द्वेष करवो न घटे.

बंध समय चित्त चेतिये, उदये शो संताप ?

विषम भावे प्रतिपल कर्म बंधाय छे ते बंधना समयमांज प्रभु नी आज्ञा प्रमाणे समभावे रहीअे तो कर्म न बंधाय छतां विषमभावे वर्त्तीए तो फरी थी कर्म बंधाशे अने ते भावि ना जन्मो मां भोगववां पडशे. एटले भविष्य न बगाडवुं होय तो हवे थी समभावे ज रहेवुं कोई जीव प्रत्ये राग के द्वेष न थाय अने शरीर मां आत्म बुद्धि न थाय तेम वर्त्तवुं एज धर्म छे.

तीर्थङ्कर जेवा समर्थ पुरुषो पण आ शरीर ने कायम न करी शक्या. कारण के ए तो मसाण नी चीज छे ते ज्यारे त्यारे मसाण ने ज सोंपवी रही. अने तेमां रहेलो आत्मा तो कदी मरनार नथीज. तो पछी मरवानो भय शा माटे राखवो ?

गोविन्दजी भाई नी शरीर-मकान मां रेहवानी जेटला दिवस नी पास हती, तेटला दिवस रह्या. अने पास नो टाइम पूर्ण थतां ते खाली करी बीजा देह मकान ने धारण करवा चालता थया. पण तेमनो आत्मा तो जेमनो तेम छे, अमर छे. तो पछी तेमने याद करी ने आपणने शा माटे विलाप करवो ? आतो बधी नटनी बाजी छे. नाटक छे. तेमां दरेक जीव स्वतन्त्र छे. कोई कोई नो मां-बाप-स्त्री-पुत्र के भाई-व्हेन नथी. ए तो बधा वेष छे. तेने साचा केम मनाय ? ए बधा खोटा ख्यालो छे तेने छोडी प्रभु ना स्मरण मांज रहो. हुं शरीर नथी, स्त्री नथी पण आत्मा छुं. जन्म-मरण अने रोगादि थी रहित नित्य छुं अने शरीरादि तमाम पदार्थो थी भिन्न छुं. एटले के

"आत्मा छुं नित्य छुं देहथी भिन्न छुं". आ मंत्र ने सतत रट्या करो. एथी आत्मा मां अपूर्व शांति नुं बल प्रगटी मोह घटशे. परिणामे ए धारा कायम रही तो देह त्याग वखते पण समाधि रहेशे. एक वार जो समाधि मरण सधाय तो अनन्ता असमाधि मरणो टली जई आत्मा मोक्ष मार्गे चढी कर्मो

थी मुक्त थइ सदाने माटे अव्याबाध समाधि पामी कृतकृत्य थाय, माटे हे आत्मा ! जाग्रत थाओ, जाग्रत थाओ. मोह ने छोडी आत्मा माज शरण ध्यान मां रहो. एज भलामण करी अने तमने शान्ति थाओ, ए आशीष आपी, आ पत्र समाप्त करुं छुं. याद करनारा बधा भव्यात्माओ ने मारा धर्मलाभ कहेजो. ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः सहजानन्दघन अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक—४४)

हंपि २०-७-६४

ॐ नमः

धर्मात्मा श्री धनी व्हेन,

पत्र संप्राप्त थयुं. बधी बधी हकीकत ध्यान मां लीधी. कृपालुदेवनुं स्मरण अने शरण अखण्ड राखनार निकट मांज मोक्ष जशे. एवो आ आत्मा मांथी पोकार उठे छे. बीजा बधा भले रूडा होय. छतां आपणने तो ए एकज सती भावे भजवा योग्य छे. सती ने पति एकज होय. ए वात खूब दृढ करवी. तेवी दृढता तमारा आत्मामां छे. एवो विश्वास होवाथी ते विषे अधिक नथी लखतो.

कुंवरजी नो उपकार भूलाय तेम नथी. जेओ ते उपकार ने ओलवशे तेओ मूल-मार्ग पामी शकशे नहिं. तेमणे एक कृपालुदेवनुं ज शरणुं तम सौने अपाव्युं छे ते यथार्थ ज छे. तेमने घेर जरूर सत्संग माटे जवानुं राखजो. पू० जवलबाने पण जरूर मलता रहेजो बाकी आम तेम वृत्ति ने जोडशो नहिं. श्री कमलाब्हेन तथा प्रभाब्हेन ने पण दृढ वृत्ति छे. तेमां वृद्धि थाओ. एवा आशीर्वाद छे.

'योग-दृष्टि समुच्चय' ग्रन्थ प्राणलाल भाई ने खास मनन करवा जेवुं छे. तेमनी साथे तमे पण समजवा प्रयत्न करजो. छतां न समजाय तो मात्र कृपालुदेवना ज वचनामृत नुं खूब उल्लास थी पान करता रहेजो. तेमां बधुं छे. एवो विश्वास राखजो.

जेम बने तेम कषाय भाव मंद थाय-क्षीण थाय ते भणी जरूर उपयोग राखजो. जे दोष आपणा बले दूर न थतो होय तो परम कृपालुनी सामे बेशी ते दोष थी छूटवा बल आपो. एवी हार्दिक प्रार्थना रोज कर्या करवी, तो जरूर बल मलशे. अने काले करी ते दोष दूर थशे.

बीजा ना दोष तरफ लक्ष न आपवुं. मात्र गुणो ने जोई राजी थवुं अने मनमां मंत्र रट्या ज करवो. एक श्वास पण मंत्र स्मरण विनानो न जवा देवो. ए प्रमाणे सतत साधना करनार ना आ संसार ना बंधनो शीघ्र नाश पामे. ॐ

(पत्रांक ४५)

हंपी ३०-७-६४

ॐ नमः

भव्यात्मा व्हेन भाणबाई अने वेलबाई,

तमे अहिं थी गया पछी जेटला पत्रो लख्या, बधा मल्या. पण जवाब आपवानुं याद ज नथी रहेतुं. आज याद आवतां फुरसद लई लखी रह्यो छुं. पगे घारआना सुधारो छे. बाकी बधुं आराम छे. काकीमा प्रसन्न छे.

हम्पी २८-६-६४

ॐ नमः

परम वीतराग स्वभाव को अभिन्न भावपूर्वक नमस्कार !

भव्यात्मन्

पत्र मिला। हाल ज्ञात हुए। श्राविकाजी ने सावधानी पूर्वक शरीर छोड़ा—यह हम सभी के लिए अनुकरणीय है। वास्तव में आत्मा अमर ही है अतः खेद के लिए हृदय में जगह नहीं है, फिर भी उनके सद्गुण, चिर परिचितों के हृदय में यदि खेद जगादें तो कोई आश्चर्य भी नहीं है। और विवेकयुक्त खेद को वैराग्य में बदलदे ऐसा उसमें सामर्थ्य है अतः विवेकशील आप उक्त खेद को वैराग्य में ही बदल रहे हैं—यह आपके लिए अत्यन्त हितकर और आवश्यक भी है।

अब आप अपने भावि जीवनक्रम को व्यवस्थित करना चाहते हैं, और ऐसा करना ही चाहिए। इस विषय में ज्ञानियों की तो यही शिक्षा है कि यह शरीर कभी भी छूट सकता है और छूटने वाला ही है—ऐसा निर्णय करके अपने हृदय में ऐसे तैयार रहना चाहिए कि शरीर चाहे अभी छूट जाय फिर भी अपने मन में उस समय पश्चात्ताप का प्रसंग खड़ा ही न हो कि "अरे ! कुछ भी न कर सका"।

यह शरीर चाहे १०-२० साल और टिक जाय अथवा चंद रोज में ही जाने का निश्चित हो फिर भी अपने तो १ श्वासमात्र का भी विश्वास नहीं करना चाहिए। स्टेशन पर जैसे सामान को व्यवस्थित रखकर प्रतिपल गाड़ी की इंतजारी की जाती है वैसे ही मृत्यु की इंतजारी आवश्यक है।

यद्यपि मृत्यु से डरना नहीं है, क्योंकि भूल जाने पर ही प्रमाद के शिकार बनना पड़ता है।

आप अभी मृत्यु की फिकर न करें और न प्रमाद भी· क्योंकि मानव आयु का एक-एक क्षण अनमोल है। शरीर जहां भी ठीक रह सकता हो उसे वहीं रखिए, और उसकी सेवा में वफादार व्यक्ति की नियुक्ति निभाते रहिए।

मात्र मंत्र-स्मरण-धारा अन्तर्लक्ष पूर्वक अखंड बनाने का ही हर हालत में पुरुषार्थ करते रहिए और इसकी पुष्टि रूप में सत्संग किंवा सद्विचार सदाचार आदि का सेवन करते जाइए।

दानादि चाहे आज करें, चाहे आगे-पीछे, किन्तु अपनी भावना का फल तो अफर रहेगा ही, अतः इस विषय में ऐसा कर लेना अभी से ही ठीक होगा कि भावी में कभी भी शरीर छूटे फिर भी न तो अपने चिन्ता ही रहे और न उसका दुरुपयोग भी।

विशेष आपको मैं क्या लिखूं आप स्वतः सुज्ञ हैं ही।

काकीमाँ ने श्राविकाजी विषयक आपके प्रति काफी समवेदना व्यक्त की है और हार्दिक आशीर्वाद लिखाया है। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन

हार्दिक आशीर्वादपूर्वक जिनस्मरण।

(पत्रांक ५८)

ॐ नमः

हंपि ४-१०-६४

साक्षात केवलो भगवान श्री परम कृपालुदेवनुं शरण अने स्मरण अखण्ड वर्त्तो !

मातेश्वरी जवलबा सपरिवार,

आपनुं सां० खामणा पत्र मल्युं. साथे आपनी शारीरिक परिस्थिति नुं अने आत्मभाव नुं दिग्दर्शन जाण्युं.

शरीर तो साक्षात् माटी नुं पिण्ड छे, ते ठीक रहे तोय शुं ? अने अठीक रहे तोय शुं ? कारण के तेने अने आत्मा ने कांइ कायमी नातो नथी. मात्र रेलवे स्टेशन ना वेइटिंग रूम जेवाज विसामा जेवो क्षणभर नो नातो छे. ट्रेन स्टेशन पर आवी के तेने खालो करीने जेम मुसाफिरो कोई प्रकारनी कचवाट वगर ज चालता थाय छे तेमज आ शरीर ने छोडी ने जरासरखी पण कचवाट वगर ज परम कृपालु ना चरण माँ उल्लासपूर्वक प्होंचवानी तैयारीपूर्वक प्रत्येक क्षण बीतावयो एज आपण सौनु एकमात्र कर्त्तव्य छे.

शरीर मां जे अनादिकालनी आत्म बुद्धि छे ते टाल्या वगर उपली दशा प्राप्त थवानी नथी. घट मां ज्यां सूधी अंधारुं होय त्यां सूधी भले मोढे थी आत्मा-आत्मा रट्या करशुं छतां व्याधि काले देहात्म बुद्धि जीव ने गुंगलावी देवानी ज छे. ते न थाय ते माटे घट मां जल्दी मां जल्दी सर्वाङ्ग अजवालुं करी लेवुं जोइए. ते अजवालुं प्रगटाववा माटे जेने सर्वाङ्ग अजवालुं प्रगट छे ते श्री परम कृपालुदेव नी साकार मूर्त्ति ने पोताना हृदयमन्दिर मां सप्रेम प्रतिष्ठित करी तेमाज चित्तवृत्ति ने स्थिर करी ते 'सहजात्म स्वरूप परमगुरु' नुं अखंड स्मरण कर्या करवुं जोइए.

उक्त शरण अने स्मरणधारा नी अखंडता मां बाधा न पहोंचे तेम त्रणे योगो नी प्रवृत्ति थवा देवी आ अभ्यास एक धारुं छ मास पण जे जीव एक निष्ठा थी कर्या करे तो तेने अन्तरमां अजवालुं थया-वगर न रहे. एवो मने विश्वास छे. माटे आप तेवी महेनत जरूर कर्या करो. एज भलामण छे.

जो के तेवी महेनत आप करवा मां लागेला छो, पण ते धारा हजु अखंड थई शकी नथी. ते खामी हवे आपने पोसाय नहीं. माटे बीजी दैहिक आदि चिन्ता छोडी मंडी पडो. अधिक हुं शुं लखुं ? आपने पण ए बातनी सुज तो छेज.

मने जेना जेना ज्यारे-ज्यारे पत्र आवे छे तेनी कोई याद करावे त्यारे-त्यारे ते-तेनुं स्मरण थाय नहिं तो विस्मरणवत् रहे छे. तेने लईने आपने पत्र न आपी शकुं तो क्षमापात्र गणजो. आपना प्रत्ये मने अन्यथा भाव नथी माटे आपने ज्यारे आ भणी ना पत्र नी इच्छा थाय त्यारे कोइक पासे थी लखावी एकाद कार्ड मोकलवो के जेथी मने ते लक्ष मां आवे. बीजाओ नी साथे आपनो पत्र व्यवहार बंध तो नथी तो पछी ? संकोच शा माटे करो छो.

अहिं थी जीवनभाई, सुगनभाई आदि सौ भाइओ तेम काकीबा, प्रभाव्हेन, जेतबाई आदि सौ व्हेनोए परमकृपालुदेवनी स्मृति पूर्वक हार्दिक प्रणाम जणाव्या छे—स्वीकार थाओ. ॐ आनन्द आनंद आनन्द

सहजानन्दघन

हार्दिक धर्मस्नेहे सहजात्म स्मरण सम्प्राप्त थाओ।

(पत्रांक— ५१)

ॐ नमः हंपि ४-१०-६४

भव्यात्मा जेठी बाई सपरिवार,

गई सांजे आप नुं सां० खामणा पत्र मल्युं. अहिं अमो सौ लगभग ४०० थी अधिक संख्याए मली सौ जीवो नी साथे थएला भवोभवना अपराधो थी मुक्त थवा परस्पर उत्तम क्षमा नुं आदान प्रदान शुद्ध भावे कर्युं हतुं ते काले आप सौने पण क्षमा आपी क्षमा इच्छो हती तेनो स्वीकार थाओ. विशुद्ध भावे मिच्छामि दुक्कडम्.

पोताना आत्मा नुं कल्याण थाय तेज आपण सौए करवुं छे तेम करवामां नड़ता बाधक दोषो आत्मा मां थी दूर करवा अनिवार्य छे. ते दोषो बीजा काढी नहिं आपे, मात्र जणावी शके. हडसेलवानुं काम तो पोतानुं छे. दोषो नी संख्या अनन्तगणी छे. अने आयुष्य छे थोड़ुं. त्यां प्रमाद करवुं केम पालवे ? पोतानुं काम पडतुं मेली, बीजाना काममां पोतानो समय वगाडवो प्रमाद छे. माटे ते प्रमाद टालवा खूब मेहनत करजो. ॐ शांतिः शांतिः शान्तिः

सहजानन्दघन सां० खामणापूर्वक सहजात्म स्मरण !

(पत्रांक ५२)

ॐ नमः हंपि-८-१०-६४

भव्यात्मा कीर्तिभाई, जयन्तीभाई आदि सपरिवार !

आपनुं पत्र मल्युं, जयन्ती भाई ना धर्मपत्नी नुं देहावसान वांची जिनेन्द्रदेवनी शिक्षा विशेष सांभरी.

जीव पोतानी अणसमजणे अनादि काल थी जन्म-मरणनुं खेत्र खेड्याकरे छे. तेमां जोके तेने एक क्षणपण साचुं सुख अनुभव मां नथी आवतुं छतां खोटा सुख नो मोह नथी छोडतो. ज्ञानीओ पोकारी पोकारी कही गया अने कहेता आवे छे के हे जीवो ! तमे चालो छो ते साचा सुख नो मार्ग नथी-शरीर मां चेतना फेलावीने विषयवन मां गमे तेटलुं खेडाण करो पण कइंए हाथ आववानुं नथी. साचुं सुख तो आत्मा मां छे. त्यांज अमृत छे. तेने शोधो तो जरूर कइंक पामशो. पण सांभले कोण ? संभलाय तोय गले उतारे कोण ? गले उतर्यापछी पण पचावे कोण ? पचेतोज शक्ति आवे. माटे तम सौ व्यक्तिगत मोहने छोडी आत्म कार्य मां वेलासर लागो तो हजुय हाथ मां बाजी छे. बचेलुं आयु हवे जयंतीभाईये तो केवल आत्मसिद्धि मांज लगाडवुं जोइए एवी भलामण आ आत्मा करे छे. इष्ट वियोग जन्य शोक त्यागी संसारनी अनित्यता ध्यान मां लई नित्य एवा पोता ना स्वरूपनी ओलखाण करवा सत्संग मां जीवन गालवुं जोइए. केम के ते देहनी माफक आ देह पण एक दिवस तजवानी घड़ी नजीक आवे छे.

कीर्त्तिभाईए तो तेमनाथी मोटा भाई होवा थी नाना भाई ने पोताना जीवन मां परिवर्त्तन लावी आत्म कार्यमां जोड़वो जोइए अधिक शुं लखुं.

देह छोडनार आत्माने तो आ आत्माए खंडगिरिमांज चेताव्या हता के तमे पुत्र कामना त्यागी आत्म ओळखाण ना काम मां लागो. पण जीव चेत्योज नहीं त्यां शुं थाय ? जेवो भावीभाव. हवे तेमना जीवन थी धडो लई आप सौ आत्महितने पंथे वळो. अने शोक छोडो. एज भलामण पूर्वक विराम पामुं छुं. ॐ शांतिः

सहजानंदघन
हार्दिक धर्मलाभ।

श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ ज्ञान भंडार
जयपुर (पत्रांक ५३)

हंपि १६-१०-६४

ॐ नमः

भव्यात्मा मुरारजी भाई सपरिवार

पत्र मळ्युं व्हेन मेघबाईए पण वांच्युं.

आ संसारी जीव ने ज्यां सुधी देह रूप जेल यात्रा चालु छे त्यां सुधी तेने जेल मां रहेवानी अनुकूलता न सांपडवी ए पण एक भगवान नी खरेखरी कृपा माणवी. कारण के जेल नी अनुकूलता अने तेथी उत्पन्न लालसा जीव ने जेल मांज रोकी राखे छे. जेल ना मोहमां रोकायलो जीव जेल थी मुक्त थवा मेहनत न करी शके. तेथी तेवी अनुकुलता ए खरेखर प्रभुनी अवकृपा समजवी आ वात यथार्थ पणे समजी तुं दुरहालतमां समरस रहेतां सीखजे. आत्मा ने हलवो करवा ते शिक्षा बहु लाभदायी नीवडशे.

जड ना लाभ करतां तेनो अलाभज उत्तम छे हित रूप छे. एम ज्ञानिओ कही गया छे. माटे ते शिरोधार्य करजे. बाकी घर गृहस्थ नी गाडी उदय प्रमाणे चाल्या करशे. ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन
अगणित आशीर्वाद

(पत्रांक ५४)

हंपि १६-१०-६४

ॐ नमः

भव्यात्मा श्री मोहन भाई.

पत्र मळ्युं. अहिं आनंद मंगल वर्ते छे. तमोने पण वर्तो.

ज्ञानधारा अने कर्मधारा नुं ज्ञान जेने थाय छे. ते कर्मधारामां गफलत थकी तणाय छतां जागृत तो रहेज. अने लाग आव्ये किनारे पकडे तेने माटे पुष्ट सत्संग आवश्य खरो. तेना अंतरायमां सत्संग वृत्ति राखी वर्त्तवुं ए पण साधन छे. माटे तेवी वृत्ति ने मजबूत करजो बाकी नी प्रेरणा मुनिश्रीना पत्र मोथी मळी शके ते लई संतोष राखजो-

श्री गोरबाईमां आदि याद करनाराओ ने मारो हार्दिक धर्मस्नेह जणावजो.

काकीबा स्वस्थ अने प्रसन्न छे. तेमनी पण आत्मानुभव धारामां आगे कूच चालु छे. तमने आशीष जणाव्या छे. ॐ शांतिः

सहजानन्दघन
अगणित आशीर्वाद

(पत्रांक—५५) हम्पी ७-११-६४ रात्रे

ॐ नमः

परम कृपालु देवनु शरण अने स्मरण अखंड थाओ.

सद्गुणानुरागी श्री प्रवीण भाई दम्पति

पत्र मल्युं अने साथे आनंदघन-पद-संग्रह ना बे पुस्तकोपण मल्यां ते माटे हार्दिक अभिनंदन।

कृपालु देवनी कृपाए अहिं तो आनंदनी गंगाज ल्हेराय छे चाहे दुनिया माने तो शुं? अने न माने तो शुं? पण दुनियानी मान्यता साथे अ(म) ने कशो—संबंध नथी. ते आनंद जगतना तमाम जीवो पामो एवो ध्वनि प्रत्येक रोम रोम मां प्रतिदिन ध्वनित थती रहे छे. ते आनंदनी प्राप्ति मां अंतराय रूप केवल जीवनी पोतानी वंचक वृत्ति छे. ते जो दूर थई तो पछी परम कृपालुनी निश्राए तेमनीज भक्ति मां एकनिष्ट थई सतत आराधना करनार ने बाह्य परिस्थितिओ गमे तेवी होय छतां तेना अंतर आनंदनो स्रोत कदि सूकाय ज नहि. ते तो अभंगज रहे एवो अखण्ड आत्म विश्वास छे. ॐ

(पत्रांक ५६) हंपि

ॐ नमः १४-११-६४

आत्मार्थी मुनिवर आनंदघनविजयजी.

पत्र संप्राप्त थयुं विगत सुविदित थई परम कृपालु नी कृपाए अहिं आनंद मंगल वर्त्ते छे ते आनंद विश्व ना वधाय जीवो ने हो!

आ० जं० ईडर आवनार हता त्यारे तमे पत्र द्वारा मने जे लख्युं हतुं तेमा "गच्छवासिओ कदाच बहिष्कृत करे" एवा भाव हता अने तेने लई ने तात्कालिक राहत पूरतुं भोगीभाई नुं आश्रय सूचव्युं हतुं पण तमे नमतुं आपी गुफावास छोडी वस्तीवास स्वीकार्युं अने परस्पर समाधान कर्युं. बाकी मारी आत्मानी स्फुरणा रूपे निर्णयात्मक ए जवाब न्होतो अपायो.

मारी दीक्षा पर्याय ने ३० मुं वर्ष चाले छे. बारमें वर्षे में गुफावास स्वीकार्यो. जेथी समुदाय प्रतिबंध छूटी गयो. जोके में त्यार पछी दिगंबरीय क्षुल्लक पद्धति प्रमाणे विचरवानुं उभय समाज मां चालू राख्युं छतां पोताना आत्मबल उपर निर्भर होवाथी मने क्यांय सामाजिक प्रतिकूलताओ न नड़ी. जो के क्वचित् कोई-कोई मताग्रहीओए पीठ पाछल विरोध कर्यो छे पण सामे मोढे नहीं. एकादा अर्थात् दोढेक वर्ष तो हुं मात्र अजैन समाजमां पण विचर्यो. उतरवानुं गाम बाहर, क्वचित वृक्ष नीचे तो क्वचित् कोई कुटियाओमां थतुं. क्वचित् कठिनाइओ आवी पण आत्मा मां तेनो प्रभाव न पड्यो. एथी सर्वत्र आनंदज रह्यो. ए अनुभव ऊपरथी हुं तमने एज सलाह आपवानो हतो के जे तमे पोते अंतिम पत्रमां जणावी छे. जेथी एमां हुं सहमत छुं "पोताना संयम उपरज आधार राखी विचरो बाकी बीजा कोई नो भरोसो आवश्यक नथी".

मने पण वडवा, ववाणीया, ईडर आदि आश्रमवासिओए पोताने त्यां रहेवानो घणो आग्रह कर्यो हतो अने करे छे. छतां सौथी प्रेमभाव जालवी मारा उदय अनुसार विचरतो-विचरतो अहिं आव्यो अने आ स्थाने आश्रमनो आकार धारण कर्यो. तथा प्रकारे तमे उदयानुसार विचरो ए कांइ खोटुं नथी. मात्र तथा प्रकारे विचरतां मार्ग स्खलना न थाय. एज ध्यानमां राखवानुं छे. बाकी आ काले तो सर्वत्र वाडे बंधी कोइ ने कोई आकार दर्शन दे छे. अने देशे. आपणे तो आपणा हृदय मांथी तेने हडसेली पाछी प्रवेशवा न देवो एज कर्त्तव्य छे. आपणे गुणानुरागे तेओनो संपर्क साधी कंइक विशेषता भासती होय तो ते निःसंकोचता थी स्वीकारवी. तेम "एकाकी विचरतो वली श्मशान मां" आ लक्ष गौण न थवा देवुं. अस्तु.

वचनामृत मांथी ध्यानमी विधि विषयक आपना प्रश्ननं समाधान निम्न प्रकारे संक्षेप थी अवधारजो.

बाह्यदृष्टि कोई पण निर्मल प्रतीक ऊपर स्थिर करीने विचार द्वारा लक्ष ने अंतर्मुख दृढ करवं. ए रीते त्राटक करतां नजर ने जराय श्रम के खेद जणाशे नहिं. ते पण चश्मा होयतो भले न होयतो भले. मात्र लक्षनी अंतर्मुखता टकवी जोइए. अंतर्लक्ष विनानो मात्र बाह्यत्राटक नजर ऊपर थाक लावे छे. तेमां प्रतीक पणे तो ज्ञानिओनी मुद्राज राखवी उचित छे. अने चश्मा सहित त्राटक करवुं. ते सहन थाय तेटली स्थिरता राखी उपयोग ने पलटवो-एटले के आंख बंद करी विश्राम लेवुं. फरी अनुसंधान करवुं. एम क्रमे स्थिरता वधारते जवी. आंख बंध करतां ते आकार अन्तर्चक्षु सामे देखावा लागशे अस्तु. आपनी आगलोड तरफ जवानी भावना छे ते अनुचित नथी. आ देहे ते गाम स्पर्श्युं नथी.

आ देहे स्वस्थता छे. तमारा स्वास्थ्य ने अपारिणामिक ममताए जालवी आत्म-साधन मां आगल वधो एज अंतरना आशीष साथे विरमुं छुं. धर्मस्नेहमां वृद्धि हो—ॐ शांतिः

सहजानंदघन

सादर जिन स्मरण !

(पत्रांक—५७)

ॐ नमः

१७-११-६४

भव्यात्मा भाणभाई वेलभाई प्रेमजी आदि,

तमारो कागल मल्यो आजे हंसराज मुंबई थी अहिं पहोंची आव्यो.

तमे बधा आत्मा ने भूलशो नहीं, हुं आत्मा छुं. शरीर नथी आ आत्म भावना ने याद रखावनार 'सहजात्मस्वरूप-परमगुरु मंत्र रटताज रहेशो.तो कंइक आत्मा हलको फूल जेवो बनी शकशे. बाकी तो माया जाल छे तेमां शुं साचुं मानवुं ? आ महामुलो मानव भव आत्म-शुद्धि मांज वपराय एज तेनी सार्थकता छे. आ संसार समुद्र मां थी कोई नेय सार हाथ लाग्यो नथी, ने लागवानो नथी, माटे जेमणे संसार दशा प्रत्ये मोह छोड्यो अने आत्मानुं भान प्रगटावी. आत्म भावना सतत भावी तेमणे आत्म प्राप्त करी संसार थी सदाने माटे मुक्त थया माटे आपणे पण एम करवा लेवुं छे तेमां लक्ष राखजो. ॐ

धर्म आराधन मां प्रमाद न करना

सहजानंदघन धर्मलाभ

(पत्रांक ५८)

ॐ नमः

हंपि १७-११-६४

हजारीमल जी वांठिया-हाथरस.

भक्तवर !

पत्र मिला। दादाजी ने ५ प्रकार के चैत्य वताये हैं:—निश्रागत, अनिश्रागत, भक्ति, मंगल और शाश्वत। हाट हवेली के मुख्य द्वारोपरि "जिन विम्व" स्थापना मंगल चैत्य कहलाता है। जिसे नमस्कार पूर्वक उनकी आज्ञाएं शिरोधार्य करते हुए प्रवेश और निर्गमन किया जाता है। एक साधर्मिक तथा त्यागीजनों को मालूम हो जाता है कि यह जैन की हाट हवेली है। यह प्रथा लुप्तसी हो गई। सिर्फ जिन मंदिरों के मुख्य द्वार के उपर कहीं-कहीं जिन विम्व पाये जाते हैं। वाकी अजैन कारीगरों ने अपना माना हुआ गणेशजी को स्थान दे दिया जो मूढता है। आप सत्यान्वेषी हैं। ऐतिहासिक खोज से जांच कर सकते हैं। प्राण प्रतिष्ठा के विना जिन विंव की आशातना नहीं होती अतः अपने राशि मेल के अनुरूप जिन विम्व किंवा श्रीमद् राजचन्द्रजी की कलाकृति स्थापन कराइए। तीर्थंकरों के गणधर को मरोड़ कर गणेश की कल्पना की गई है जो जैनों को उपादेय नहीं है।

राज जयन्ती की भावना अनुमोदनीय है। यहां भी प्रतिवर्ष चालू है। अवकाश निकाल करके जरूर यहाँ आइए आश्रम प्रगति पथ पर है। सत्संग-भक्ति नियमित होते हैं। शुभैराजजी साव का कल ही पत्र था, वीकानेर भक्त मंडल आमंत्रण दे रहा है पर यहाँ साधना विकास के आनंद को छोड़ कर जाने का दिल नहीं। काकीमां ने आशीर्वाद कहा है। ॐ

सहजानंदघन

हार्दिक आशीर्वाद!

(पत्रांक—५६)

ॐ नमः

हंपी-७-१२-६४

भक्तवर (के० डी० जैन, हैदराबाद)

पत्र मल्युं.-प्रभुकृपा थी अहिं परमानंद छे. भूत अने भाविनुं वर्तमान मां एक क्षण पण हाथमां नथी, अने जे हाथमां छे ते एक मात्र वर्त्तमान क्षण. तेने जे आत्म-भान अने समता द्वारा सफल करे छे ते परम सुखी वने छे तथा त्रिकालिक जड़ वस्तु अने व्यक्ति भणी नी कल्पना द्वारा विफल करे छे ते दुखी नो दुखीं वन्यो रहे छे पोताना सुख दुख मां पोते स्वतंत्र छे तो पछी शामाटे दुख द्वंद्व मां पड्या रहेवुं ? परम सुखी वनो—एज मारा तेमज मातानी ना अंतरंग अगणित आशीर्वाद छे ॐ शांतिः

सहजानंदघन

(पत्रांक—६०)

हंपि ७-१२-६४

ॐ नमः

[विशनजी काराणी, मुंबई]

पत्र मल्युं, विगत सुविदित थई.

भूत अने भाविनुं एक क्षण पण हाथमां नथी. अने हाथ मां छे ते तो सदासर्वदा एक मात्र वर्त्तमान नुं एक क्षण ज. ते प्रत्येक क्षण ने जे सतत आत्म-भान अने समता पूर्वक सफल करे छे ते सदा सर्वदा परम सुखी बन्यो रहे छे. तथा आत्म अभान तथा विषम भाव पूर्वक विफल करे छे ते तो सदा परम दुखी नो दुखी बन्यो रहेवानो—आ एक अफर सिद्धान्त छे. बाह्य परिस्थितिओ गमे तेवी होय तेनी साथे कशी लेवा देवा नथी. ॐ

देह-भान अने विषम भावे स्थिति होय त्यां कोई पण धर्म, कोई पण धर्मक्रिया तथा धर्मस्थान जीवने सुखी बनावी शकतुं नथी.

धर्म ध्यान वन्युं रहो।

सहजानंदघन आशीर्वाद,

(पत्रांक ६१)

हंपी ७-१२-६४

ॐ नमः

अध्यात्मा श्री मोहनभाई सपरिवार, (डुमरा)

ता. २४-११ नो तमारुं पत्र मल्युं. विगत सुविदित थई. मुनि विहार थी तमारा सत्संग मां अंतराय पडयो तेथी ज्ञानिओना वचनामृत ने प्रगट सत्संग रूपे समजी आराधवा तेनुं परिणाम पण आत्म-शुद्धि रूपे परिणमे.

अहिं कृपालु देवनी कृपा थी आनंद मंगळ वर्ते छे. स्वास्थ्य पण सारुं छे. काकीबा मेघबाई आदिपण स्वस्थ अने प्रसन्न छे. तमने आशीर्वाद जणाव्या छे.

हाल मां विश्व वातावरण अतीव क्षुब्ध छे अने ते संसारनी असारताज सिद्ध करे छे. छतां तेनी असर जड़ शरीरादि ऊपरज शक्य छे. आत्मा ऊपर नहिं छतां अज्ञानता वश आत्मा तेनो पोता ऊपर स्वीकार करी व्यर्थ दुख मनावो रह्यो छे जे साची समजणे दूर थई शके छे. ज्ञानिओनी समजणे विचारवुं अने वर्त्तवुं सुख स्वरूपे अनुभवाय. तेमां पोतानी समजण नडतररूप छे. माटे तेने न वापरवी-एवो दृढ निर्णय करी तथा प्रकारे वर्त्तजो.

धर्मस्नेह मां वृद्धि हो ! ॐ शान्तिः

सहजानंदघन

सहजात्म भावे अगणित आशीर्वाद

(पत्रांक—६२)

ॐ नमः   हंपि ७-१२-६४

भव्यात्मा मुरारजी सपरिवार,

तारूं पत्र मल्युं हतुं अने तेनो उत्तर मेघवाईए आपेलो मल्यो हशे.

अहिं प्रभु कृपा थी आनंद मंगल वर्ते छे ते आखा विश्व ने हो. कोई जीव दुखी न थाओ. जेओ आत्म शुद्धि भणी लक्ष राखी वर्त्ते छे तेने दुख ना दहाड़ा सुख रूप नीवड़े छे शरीर, कर्म नो कचरो तथा राग द्वेष आदि अशुद्ध भावो थी हुं आत्मा तद्दन जुदो छुं तेम बीजा कोई जीवो पण मारा नथी-एवो आत्म भान टकावी उदय प्रमाणे आवनारी परिस्थितिओ मात्र शरीर संबन्धे छे तेना थी मारे लागे वलगे नहीं. माटे ते भणी समता थी वर्त्ततां आत्म-शुद्धि गमे त्यां थई शके छे. तेने कोई देश के वेश बाधक नथी· एवो ज्ञानिओ नो अनुभव छे. तेने मान्य राखी जे जीवो पोतानुं वर्त्तन तथा प्रकारे राखी जीवे छे तेमनुं जीवन हरहालत मां सुखमय थाय छे अधिक शुं लखुं ?

तारे तेवुं जीवन जीववानो अभ्यास राखवो· एथी कर्म ना बंधातां ओछा थशे ने जीव हलवो फूल जेवो बनशे. धर्म ध्यान मां लक्ष रखावजे ॐ शान्तिः

सहजानंदघन

अगणित आशीर्वाद

हम्पी

(पत्रांक—६३)

ॐ नमः   ७-१२-६४

दीपचंदजी सेठिया, बीकानेर (राजस्थान)

तीनों ही पत्र मिले। हाल ज्ञात हुए। भूत कालीन कल्पनाएं काम नहीं आतीं और न भविष्यकी। क्योंकि हाथ में नहीं, हाथ में है केवल एक वर्त्तमान क्षण। प्रत्येक वर्त्तमान क्षण को जो धर्मध्यान द्वारा सफल करता है वह सुखी और आर्त्त-रौद्र ध्यान द्वारा विफल करता है, वह दुखी बना रहता है।

अपने सुख और दुख का जवाबदार आप ही है।
हम और माताजी परम सुखी हैं वैसे आप बनें।

सहजानंदघन धर्मलाभ !

(पत्रांक ६४)

ॐ नमः   २८-१२-६४

भव्यात्मा श्री भाणबाई सपरिवार,

वेलबाई ना हाथ नो पत्र मल्यो हतो. आ शरीर रूप मोटर माँ ड्राइवर रूप जे छे ते आत्मा छे तेमां हुं मेलवो. शरीर मांथी हुं काढी नाखी ने सतत आत्म-भावना भाववो एथी मोहनो नशो उतरशे.

काकीबा, मेघबाई आदिए आशीष कह्या छे. वेलबाई सासरे जई पत्र लखशे त्यारे जवाब आंपीश. प्रभु स्मरण अखंड राखवुं. आत्मा छुं शरीर नथी ए भान टकावी राखवुं बीजुं तो जंजाळ चाला थी न थाय पण आटलुं तो थायज. ॐ शांतिः

सहजानंदघन धर्मलाभ !

(पत्रांक ६५)

ॐ नमः

२१-१-६५

भव्यात्मन, (नवीन भाई)

तमारुं पत्र मल्युं. हकीकत जाणी आनंद. हवे महेताजी ने आराम हशे ?

दादाजी आदि ना चरणो ना खर्चविषे खजानची नी चीठी तमने मळी हशे. तेमने जवाब आपजो. हॉस्पेट मां मंत्री अने खजानची संयुक्त कुटुंबनी दादावाड़ी छे तेना मंदिर मां पट स्थापन कराववाना छे. १ शत्रुंजयनो अने बीजो अष्टापद नो. ते बनाववा १ फुट ना लेखे शुं चार्ज छे ? ते तेमणे पूछाव्युं छे. तपास करावी तेमने जवाब आपजो.

तमने पारमार्थिक कार्यो माटे जे कष्ट अपाय छे· तेने तमे भक्ति पोतेज गणो छो ! एम समजी ने बार-बार कार्य सोंपाय छे अने सोंपाशे. दादाजी नी प्रतिमा विषे शो खुलाशो छे ?

श्रीमदनी अगास आश्रमना भोंयरा मां जे प्रतिमा छे तेज प्रमाणे जेणे बनावी छे ते बनावी आपशे· जीवणभाईए तेमने काम सोंप्युं छे ६०००) मां फुल साइज. तेटला मांज एक देवलाली खाते स्थापन थयां छे. रमाव्हेन अने बालको बधा आनंद मां हशो. काकीबाए आप सौने हार्दिक आशीर्वाद लखाव्या छे. अहिं स्वास्थ्य बधाना सारा छे. तेम तम सौना सदैव रहो काकाजी तथा रजनीकान्त परिवार सौने मारा तथा काकीबाना अगणित अशीष जणावजो. धर्म ध्यान मां अप्रमत्त रहेजो. ॐ शांति.

सहजानंदघन धर्म स्नेह !

(पत्रांक ६६)

ॐ नमः

हंपी२४-१-६५

परमपूज्य श्री उपाध्याय जी भगवन्,

आपनुं कृपा पत्र मल्युं.

दादाजी नी मूर्त्ति अने स्थापनाजी पृथक पृथक, बनवाथी आपने तथा साधु-साध्वी मंडल ने जे मनः दुख थयुं तो ते सम्बन्धी मिच्छामि दुक्कडम् स्वीकारजो.

आप कोई ने मनः दुख थाय तेम तो हुं इच्छतो नथी. छतां आपे मन दुख लगाड्युं तो ते विषय मां हुं लाचार छुं.

मने दादा श्री जिनदत्तसूरिजी गुरुवरे प्रत्यक्ष थई जे आज्ञा फरमावी तेने अनुसरी ने उक्त कार्य करवामां आव्युं. एम में पूर्व पत्रो मां स्पष्ट जणाव्युं छे. छतां ते कथन ऊपर आप पूज्यो ने ते विश्वास नथीज एम आपनो मनः दुख सिद्ध करे छे. पण मने खात्री छे के आगामी देहे आपनो मारा भणी नो अविश्वास टली जशे. वाकी गणिवरादि मुनिजनो ने विषे हुं कंइ जणावुं ए उचित नथी.

मुंबई मां बनेलां स्थापनाजी मारा ध्याननी व्हार नथी. परन्तु दादाजी पोते स्थापनाजी ने पीठ आवे तेम बेसवा राजी नथी. अने स्थापना जी सम्मुख रहे तेम संयुक्त स्था० मूर्त्ति बनावो शकाय खरी के? ओ आप विचारी जोजो.

पहेलां नी अने अत्यार नी बनावटोनी कला नुं कोई कलाकर पासे थी परीक्षण करावी जोजो. वळी १९९६ अे २०२१ ना मोंघवारी तथा मजुरी नी अधिकता भणी दृष्टि दइ विचारशो तो खरचानुं ख्याल आवी शकशे.

मारे दादाजी नी आज्ञा मानवी के वीजा कोई नी? जिनेन्द्रदेवनी साक्षीए जणावुं छुं के तेओ मने प्रत्यक्ष छे. जुठुं कंकास मारी ने मारे कांइ नरक मां नथी जवुं अेटलो तो भवभय मने हशे ज.

पंदर भेदे सिद्धनो सिद्धान्त तो मने आपेज भणाव्यो छे. छतां मारी साथे ना आपना अभिप्रायो एक भेदना आग्रहीज कां? खेर

आपने जेम सुख ऊपजे तेम मानो, छतां मारा तरफ थी आप सौने अे मनः दुख भूतकाले के अत्यारे थयुं होय तो ते संबंधी श्री वीतराग देवनी साक्षीए विनम्रभावे खमावुं छुं. अने माठुं लगाड्या वगरज लागणीवश पुनः जणावुं छुं के दादाजी नी प्रतिमा-मात्र जो आपने अनुकूल न होय तो मने पछी मोकलावी द्यो, कारण के मारी पासे दादाजी नो मूर्ति मांगनाराओ छे. जेथी खपी जशे. वाकी स्थापना जीने पीठ आवे तेम बनावेली पहेलांनी स्थापनाजी दादाजी ने मंजूर नथी.

अधिक आप पूज्योने हुं बाल शुं लखुं? नाने मोढे मोटी वात जेवुं थाय छे. अतएव क्षमस्व.

हेमचंद्रभाई नो गई काले पत्र करनुल थी छे के ८-१० दिवस मां हुं हम्पी आवीश. तेओ आवे थी आपने भेट हुं सप्रेम स्वीकारीश. सहु मुनिजनो समेत आपश्री ना चरणारविंद मां आ बाल ना भवोभवना मिच्छामि दुक्कडम् सहित सविनय सादर सविधि वंदना सुखपृच्छादि स्वीकृत हो!

(पत्रांक ६७)

ॐ नमः

हंपि २५-१-६५

परम कृपालु देव प्रभु, अहो प्रगट महावीर!
सद्गुरु राज पदेधरुं, श्रीफल स्थल निज शिर...

परम कृपालु महाविदेही ज्ञानावतार प्रगट परमात्म-स्वरूप श्रीमद् राजचंद्र भगवान ना निष्ठाधान पराभक्त श्री देवशीभाई.

प्रथम मुमुक्षु बन्धुश्री जशराज जी ना श्रीमुखे अने पछी आपना पत्र थी आपना देह-नेह नां व्यतिकर जाण्या अने तेनी साथे आपनी आत्म निष्ठा, मृत्यु-मित्र ने निर्भयपणे भेटी परम कृपालु ना चरण-शरणे आत्म भावे भळी जावानी उत्कट तैयारी सांभळी-वांची रोमांच थयो हृदय गद्-गद् थयुं.

आत्मा ने खात्रीज छे के आपनी समाधिमरण नी महेच्छा "विजय नो डंको" वगाड़शे. अने बीजा मुमुक्षु बन्धुओ ने प्रबल प्रेरणा आपशे. परम कृपालु देव नुं योग बलज समाधि अपाशे:

हवे थी आप अनिवार्य आहार-विहार सिवाय नो वखत शवासन आदि अनुकूल आसने स्थित करी फरी सर्वांग मां प्रकाश व्याप्त करी देह थी प्रत्यक्ष जुदा देखाता आत्मोज उपयोग टकावी निर्विकल्प पणे आत्म-समाधि मां लीन रहेवा प्रयत्न शील रहेजो.

ज्यारे-ज्यारे तेमां शिथिलता जणाय त्यारे-त्यारे पोताना आत्म प्रकाश मां परम कृपालु नां साकार स्वरूप ने प्रतिष्ठित करी तेओमांज आत्म लक्ष जोड़ी तेमनाज स्मरणमां तल्लीन रहेजो. अने लक्ष देह मां न जाय तेवी मानसिक प्रार्थना कर्या रहेजा. अंदरना रेडिया मां "सहजात्म स्वरूप परम गुरु" नुं रेकार्डिंग चालु राखजो.

कदाच देह मां लक्ष जतां व्याधि सहन न थाय तेवुं होय त्यारे पीळा प्रकाश मां परम कृपालु नी पीळी आकृति नुं दर्दना स्थाने ध्यान करवुं तेथी व्याधिनी असर ओछी जणाशे.

ए रीते उचित प्रकारे अभ्यास मांज अनुरक्त रहेजो. जरूर समाधि मरण नी सिद्धि थशे.

अनादि काल थी अद्यक्षण पर्यन्त आ आत्मा तरफ थी राग-द्वेष अने अज्ञान त्रिदोष सन्निपात वश कोई पण योगाध्यवसाय थी आपनी आत्मा ने कष्ट अपायुं होय जाणते के अजाणते ने सौ अपराधो नी परम कृपालु देवनी साक्षीए उत्तम क्षमा प्रार्थुं छुं. अने आपने उत्तम क्षमा आपी निःशल्य थाऊं छुं. ते स्वीकारजो.

त्यां सौ मुमुक्षु भाई व्हेनो ने मारो हार्दिक जय सद्गुरु वंदन सहित धर्मस्नेह जणावजो. यथाशक्ति यथा अवसरे तबियत ना खबर कोई नी मार्फत मोकली शकाय तो मोकलशो. अहिं थी सौ मुमुक्षु भाई-व्हेनोए आपने भवोभव ना अपराधोनी क्षमा याचना पूर्वक हार्दिक अभिनंदन जणाव्या छे.

देवलोक के बीजी कोई पद नी रुचि आत्मा मां स्फुरवा नहिं देजो. मात्र एक शुद्ध आत्मा तथा सहजात्म स्वरूप परम कृपालु देव ना साकार स्वरूपमांज निर्विकल्प थई देह भान खोई लीन रहेजो. हुं खरा अन्तःकरण थी परम कृपालु देव ने प्रार्थना करुं छुं के तेओ आपने समाधि दशा मां टकवानुं अचिन्त्य धीर्य अर्पावे. ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

—सहजानंदघन हार्दिक खामणा; सुख पृच्छा सहित अगणित अभिनंदन ! जय परमकृपालुदेव की आ क्षेत्रे आव्या पछी आ आत्मा मां दिनो दिन आत्म सन्तोष वधतो जाय छे. परमकृपालुदेवनुं प्रत्यक्ष अनुभव करी कृत कृत्य थई रह्यो छुं. घणा दिवंगत सत्पुरुषो नो प्रत्यक्ष परिचय अने तेमना थई परम कृपालु देवना मार्ग नुं अद्भुत सामर्थ्य अने प्रेरणा पामी धन्य धन्य थई रह्या छुं.

देह पण ठीक सहायक पणे काम आपे छे ॐ

श्री जशराजजीए आपने हार्दिक जय सद्गुरु वंदन जणाव्या सुख शाता पूछावी छे·

(पत्रांक ६८)

ॐ नमः

हंपी१४-२-६५

भव्यात्मा भाणबाई तेजबाई आदि बधा बालको.

तमारु पत्र सांजे मल्युं. विगत जाणी. बाई, मेघ बाई अने तेना बालको साथे मुरारजी मुंबई गयो. अठवाडियुं थयुं. माटे मुंबई ना सरनामे तेने कागळ लखजो. आ तरफ नो कोई मेलु न उतर्यो ज्यां जाओ त्यां पोताना कर्म साथे ने साथे. पूर्वे जेणे पुण्य कर्या होय तेने अनुकूलताओं बधे ठेकाणे मले. पाप कर्या होय तो बधे प्रतिकूलताओज मले. छतां ते बधामांथी जीवे आत्म बुद्धि काढी नाखी ने समभावे आत्म-भान पूर्वक वर्त्तवुं तेथी जूना पाप ताप मटे. एज धर्म नो मार्ग छे. तमो सौ धर्म करणी करजो आत्मा नुं भान मूलशो नहि. आत्मभान वगर नी धर्म करणी मोक्ष माटे थती नथी. मंत्र रटणा करवुं तेथी पण आत्मभान रहे. ॐ.

माताजी नु शरीर ठीक छे. आ देह पण बराबर छे. त्यां तमो बधा प्रशन्न रहेजो. धर्म करणी करजो. माताजीए तम सौने आशीर्वाद जणाव्या छे. ॐ. शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक ६९)

ॐ नमः

ता१५-२-६५

भव्यात्मन् नवीन भाई सपरिवार,

तमारु पत्र सप्ताह पूर्वे मल्युं. हरखचंदजी अंगत काम ने अंगे अन्यत्र गया हता. ते हजी आवी शक्या नथी तेनी राह जोई तेथी जवाब मां ढील थई.

महेताजीनी घात दादाजी नी कृपा थी टली गई-जाणी प्रसन्नता थई.

मारा ऊपर तो एमनी असीम कृपा छे. तेथी नित्य तेमना प्रत्यक्ष पणे आशीर्वाद. पामी अतीव प्रसन्न रहुं छुं. तमे पण तेमनी माला नियमित जपता रहेजो. क्षायिक सम्यक्द्रष्टा छे तेमने जिनवत्-उपासवा थी दर्शनविशुद्धि थाय एवो मने दृढ विश्वास छे. माटे तमारा बधाय कुटुम्बी जनोए तेमनो मंत्र अवश्य रटवो. बधाय ने तेमना प्रत्ये दृढ श्रद्धा तो छे ज. तेमां वृद्धि करजो. दादाजी नी १५ इंचनी मूर्त्ति बनाववा ने गदगना एक कलाकार ने २००) मां ओर्डर आप्यो छे. तेनी बीजी कलाकृति जोई बहु सुंदर लागी. तेथी आर्डर आप्यो छे. जोइए केवुं काम करी शकशे.

पगलां ना चार्ज विषे हरखचंदजीए तमने लख्युं हतुं-तेना जवाब मां तमे लख्युं तेम तमारा मांथी ज्यारे आवशे त्यारे ते चूकवी देवाशे. काकाजी सूरत थी पाछा फरतां जो अहिं आवीजशे तो तेमने ते रकम सुप्रत थशे. क्यारे आववाना छे ? मारु स्वास्थ्य सारु छे. काकीबा पण स्वस्थवत् अने प्रसन्न छे. तम सौने हार्दिक आशीर्वाद लखावे छे. रेणुने खूब आशीर्वाद जणावे छे. गर्मीनी छुट्टिओमां जरूर तेड़ी आवजो ॐ

'साधन मां एकनिष्ठा मेज सफलता नी कूंची छे.' आ महावाक्य ने ध्यान मां लई साधन मां नियमित रहेवुं जोईए. बीजा गमे तेवा कार्यो तथा तेथी उत्पन्न गमे तेवी परिस्थिति होय छतां जो नियमित साधना न चूकीये तो सिद्धिओ प्रगटे छे. जे सिद्धिओ सामे आ दुन्यवी वैभव तुच्छ वत् छे. तेथी दुन्यवी कार्यो चूकाय तेनी परवाह न करवी. फेवल आत्म वैभव प्रगट करावया वाली साधनानीज परवाह करवी. प्राण जाय तो पण तेमां गौणता न थवा देवी. एवी दृढता जरूर फेलवजो अेथीज समाधि दशा संपादन करी शकशो. शरदी गरमी जेवा द्वन्द्व भावो थी पराभव पामी प्रमादी बनशो तो मृत्यु काले समाधि मरण केम पामी शकशो ? मृत्यु नी वेदना करतां शीत उष्णतानी वेदना शी विसात मां छे ?

जेने एक भव मां अनंत भव टालवा होय तेणे तो आगंतुक उपसर्ग-परिषहो थी जराय डगवुं न जोइए. व्यवहारिक कार्यो मां साहस धैर्य अने उत्साह वापरिये त्यारे कथंचित् सफलता मले, तो आध्यात्मिक कार्यो मां ते सद्गुणो वापरवामां शा माटे कंजूस थवुं ? आवा दृढ विचारो वड़े मन ने मजबूत करी आत्म-साधन मां थतो प्रमाद टालवो. "समयं गोयम मा पमाए" हे गौतम ! एक समय नो पण प्रमाद न कर ! एम भगवान कहेता हता.

तमारा जनक जननी अने रजनीकान्त सपरिवार तथा तमारा परिवार सौने मारा हार्दिक आशीर्वाद जणावजो !

उपाध्याय श्री लब्धिमुनिजी महाराज ने पेशाब ना दर्द नी विशेषता हती ठीक छे. एवा समाचार हता. धर्म स्नेह मां वृद्धि करजो. त्यां जे कोई याद करे—धर्मलाभ जणावजो—ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद !

पट ना समाचार हरखचंदजी आवशे त्यारे जणावीश

(पत्रांक ७०)

ॐ नमः हंपि १६-२-६५

परम कृपालु देव नुं शरण अने स्मरण अखण्ड थाओ !

मुमुक्षु बन्धु श्री कान्तिभाई सपरिवार,

आज सांजे पत्र मल्युं. श्री मोहनभाईनी तबियत ना समाचार जाणी मनमां जराक दुःख थयुं. ते पटला माटे के वड़वा नी वाड़ी ने लीलीछम बनाववाना उद्योग मां देखा केटलाक समय थी तेओ दत्त-चित्त आगल वधी रहा हता तेमां व्याधि देवे थोडुं अन्तराय कर्युं परम कृपालु देव प्रत्ये हुं तथा काकीबा प्रार्थना करीए छीए. "हे कृपालो ! आपना आ निष्ठावान वयोवृद्ध भक्त ने शीघ्र स्वस्थता अर्पी अेमना वडे आपना शासननी अपूर्व प्रभावना करावो. महावीर्य धाम श्री वड़वा नी महिमा महिमंडल मां विस्तरावो, अने अेमना हृदय मन्दिर मां आत्म-ज्ञान ज्योत जगमगावजो ॐ

आप सपरिवार सौ सदा स्वस्थ अने प्रसन्न रही परम कृपालु देव नी भक्तिमां लीन रहो. पत्र मारा तथा काकीबा ना हार्दिक आशीर्वाद ! ॐ सहजानंदघन सहजात्म स्मरण !

(पत्रांक—७१)

ॐ नमः हंपि १६-२-६५

परम कृपालु देवना भक्तो नो जय जयकार हो!

सत्संगनिष्ठ सद्गुणानुरागी स्थविर मुमुक्षु वन्धु श्री मोहन भाई.

श्री कान्ति भाई ना पत्र थी जाण्युं के आपना शरीर मां अशाता नो उदय वर्त्ते छे. ते हवे मन्द पड्यो हशे? पत्राङ्क ६१३ मां परम कृपालु देवे अशाता ने शाता वेदनीय करतांय अधिक आत्म हितकर समजावी छे. ते एटला माटे के शरीरादिक नी क्षणिकता, असारता अने अशुचिता नुं तेवे टाणे विशेष अनुभव थाय छे. जेथी जीव नी वृत्ति शाश्वत, सार अने शुचि स्वरूप पोता ना आत्मा मां अथवा आत्म-निष्ठ परम कृपालु सत्पुरुषो नी मुद्रा अने आज्ञा मां जोड़ाई तेनाज स्मरण ध्यान मां तन्मय थई शके छे ते तन्मयता जो अन्तर्मुहूर्त्त पर्यंत टकी जाय तो आत्मसमाधि मार्ग नुं फाटक खुली जइ ते मार्ग मां प्रवेशाय छे. आवो प्रवेश शाता ना उदये प्रमादवश सुगम होई शके नहिं एवो आ आत्मा नो अनुभव छे. तेथीज कृपालु ना वचनो प्रत्ये अत्यन्त आदर भाव उपजावी आप पण अशाता वेदनीय ने हितरूप मानी परम कृपालु ना स्मरण मां तन्मय रही अनुभव मार्ग मां प्रवेश पामो. तेनी आ उत्तम तक सांपडी छे. एवो निर्णय लावी परम कृपालु नी छवी अने मंत्र स्मरण नी धारा मां लीन थवा शिवाय बीजा बधाय ख्यालो भूली जजो. एज भलामण.

देहनु भूली जा भान, भक्ति ना तांन मां।

आवा मस्त बनो एज अंतरना आशीष छे. काकीबाओ पण आपने शाता पूछावी छे. अने आत्म-लक्षमांज लीन रहेवा भलामण करी छे. ॐ शान्ति

सहजानंदघन

हार्दिक धर्मस्नेह सहजात्म स्मरण!

(पत्रांक—७२) १-३-६५

ॐ नमः श्रीमद्‌राजचन्द्र आश्रम, हंपि

कलिकाल केवली, कल्पद्रुम, करुणासागर, कृपानिधान, ज्ञानावतार, अखण्डस्वरूप समाधिनिष्ठ परमोपकारी श्रीमद् राजचंद्रदेवनाचरणारविंद मां परमोल्लासथी अनन्य प्रेमलक्षणा भक्तिए त्रिकाल नमस्कार हो! नमस्कार हो!

परम कृपालु देवना सन्मार्ग ने परम प्रेमे आदर करनारा परमार्थ लक्षी सत्संग-रंग-रंगी सदगुणा-नुरागी वयोवृद्ध मुमुक्षु वन्धु श्री मोहन भाई सपरिवार!

आपना पत्र अने तारनुं पहोंच पत्र मोकल्युं ते मल्युं हशेज हवे आपनुं स्वास्थ्य घणे अंशे सुधर्युं हशे तेवा खबर लखावशो. सत्संग क्रम जे चालु छे-तेचालु रखावशो.

पू० भाईश्रीजीए आपना हृदयमां जे बीज वाव्यां हतां ते साचा होवा थी व्यर्थ तो नहिं ज जाय. तेने जो यथाकाले सिंचन मल्या क्युं होत तो क्यारनांय अंकुरित थई गया होत. जोके तेने सिंचन तो मलतुं रह्यु छे पण ते पुरता प्रमाण मां ग्रहण न थई शक्युं. अन्यथा तेना अंकुरित थवा मां आटली ढील न थात.

अत्यार नी आपनी परिणिति प्रत्ये नजर करतां एम जणाय छे के ते बीज अंकुरित थई वृक्षाकार धारण करी रह्यां छे. ते जेम-जेम मोटां थशे तेम-तेम तेने पोषण पण वधारे प्रमाण मां जोइशेज. अने रक्षण नी जवाबदारी पण वधती जशे. माटे तेना पोषण अने संरक्षण मां जराय गफलत नहिं सेवता.

श्री अमृतभाई बे वखत सत्संग लाभ नियमित आपी रह्या छे ते हर्षनी वात छे. ते उपरांत सवार-सांज नियमित भक्तिक्रम, मंत्रधून पण चालु रखावो. जागृति नो वधोकाल आत्मभान टकाववा मांज वापरो. हृदय मंदिरमां परमकृपालु देवनीज साकार मूर्ति स्थिर राखो तेथी तेमां देह भाव प्रवेशी नहिं शके!

कोई तबियत नी खबर पूछवा आवी ढीलें मोढे वात करे तो तेम करता तरतज रोको. कारण के तेनो असर थी तमारुं दिल भराई जाय छे. मात्र तेमनी जोडे आत्माना नित्य स्वभावनीज वातचीत करो आत्मा ना छ पद मांथी नित्य पद उपर लंबाण थी चर्चा विचारणा करो-करावो आवी वातावरण आत्मा ना नित्य स्वभाव नी चर्चा-विचारणा थी भरी दो. परम कृपालुदेव नो देह-व्याधिकाले केवी आत्म-निष्ठा हती? तेमना ते चरित्र ने वारंवार सत्संगीओना मुखे सांभलो तथा पोते तेमां उपयोग जोडो. भगवान महावीर नो १२॥ वर्ष पर्यन्त नो साधनाकाल चिन्तवन मां ल्यो. श्री गजसुकमाल मुनि, श्री खंदक मुनि आदि महापुरुषो ना प्रेरक चरित्रो नी चर्चा विचारणा पण सत्संग मां करो-करावो. मने अनु-भवपूर्वक खात्री छे के तेथी बल मलशे ज.

तमे कंइ जेवा तेवा नथी जगगुरु राज ना कुमार राजकुमार शूरा क्षत्रिय छो. मोहराजु साथे रण जंगे चडता क्षत्रिय कुमार ने मृत्यु भय केवो? पीछे हट केवी? खबरदार! होशियार रहो! क्षत्रियवट संभालो!

"बीजो मन मंदिर आणुं नहिं ए अम्ह कुलवट रीत"

"धींग धणी माथे कियारे कुण गंजे नर खेट"

आपसौ मुमुक्षुओ ना अग्रगण्य छो. तेथी एवुं जीवन जीवी बतावो के जेथी बीजाओ मां शूरातन आवी जाय, देह तो माटी छे. अने माटी तो मफत मले छे तेनो आटली बधी चिंता शी? आत्मा अचिंत चिन्तामणि रत्न छे. तेनीज एक मात्र रक्षा कर्तव्य छे. ते रक्षा आत्मभावे टकनारज करी शके छे. देहना गुलामो थी नहिं थाय. आप कोइ देह ना गुलाम नथी. देहना गुलाम होत तो आटलुं बधुं जंगी प्रेम आपना थी न वमावी शकत. जे शक्ति जे रीतिए प्रेस नी जमावट मां वापरी तेने त्यांथी खसेडी ने आत्म भान ने टकाववा मां वापरो एटले थयं, अधिक शुं जणावुं आप पोते जाण छो.

श्री जयन्ती भाई अदि सौ मुमुक्षु भाई व्हेनो ने मारो हार्दिक धर्मस्नेह जणावजो. काकीबाए आपने तथा परिचित बधायने बहु याद कर्या छे. तेमनी तबियत मां कंइक सुधारो जणाय छे. ॐ शान्तिः

सहजानंदघन

जय सद्गुरु वंदनपूर्वक अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक ७३)

हंपि १२-३-६५

ॐ नमः

(फागण पूर्णिमा)

सहजानंद विलास पृ० ७७ में प्रकाशित पत्राङ्क ५६ अधिक अंश :—
लालभाई को दिये पत्र का अप्रकाशित भाग—

श्री काकीबा नी गरदन ग्रन्थी विषयक पूर्वे लख्युं हतुं. गदग ना एक वैद्य नी दवा प्रथम शरु कराई तेथी प्रथम जरातरा ठीक लाग्युं पण आखरे परिणाम ठीक न निवड्युं. त्यार बाद इच्छा नहीं छतां होस्पेटना भाईओ नी लागणी वस त्यां नी एक लेडी डॉ० नो इंजक्शन प्रयोग शरू कर्यो बीजे इंजक्शने कोर्श पूर्ण थयो. पण ते तेवा जता-आवतां शरीर वधारे कथड़ी गयुं. आवतां ज देह भाव मुश्कली थी टकी शक्युं अकथ्य वेदनीओ कृपा करी दीधी. माथा ना चक्कर अति वध्या तेने लईने हार्ट ऊपर घणी असर थई हृदय उपर आंगली अडे तोय तीव्र वदना वेदाय छे. उपर सोजो वध्यो छे. तेम श्वासा शरीरे जणाय छे. आवो स्थिति छतां पोते वेदनीय-देवी ने जाणे साक्षात् सामे होय तेम संबोधी कहेता होय के "देवी भले पधार्या " स्वागत ! हवे तमारी जेटली शक्ति छे ते बधी एकत्र करी आ शरीर ऊपर एक सामटी तीव्रपणे वापरो तमने मारी परिपूर्ण सम्मति छे. अने मारा मां जेटली शक्ति छे. ते बधी एकठी करी तमने सहर्ष वधावी लेवा हुं तैयारज छुं बधु सहीश. तमारी पूर्ण ताकात जोवा हुं मारा आत्म प्रदेश मां त्यां सूधी नहिं जाऊं. देह मां ज मारे तमारी लीला जोवी छे. जो आत्म प्रदेश मां जाउं तो मने तमारी खबर ज नथी पड़ती तो पछी तमारुं स्वागत केमकरी शकुं ? तमे तमारी फरज बजावजो. अने हुं मारी फरज अदा करुं तमने वधावी पछी हुं मारा घर मां जईश. आवी छे एमनी मस्त दशा.

आम होवा छतां चीछानां वश नथी. पोता नुं क्रम हंमेश मुजब ज चालु छे आत्मानंद मां कोई कमी नथी ! मुसाफरी ने योग्य शरीर नथी. तेथी अन्यत्र कोई रीते जवा तैयार नथी तो पछी आपणे दबाण केम करी शकीए ? माटे मुंबई के अमदावाद हाल मां आववुं शक्य नथी. पछी जेवो उदय.

आप आ हकीकत श्री मोहनभाई ने मात्र जणावजो. अने गुप्त राखजो. कारण के जन मानस मां एमना प्रत्ये मांदगी नुं वातावरण सर्जवुं नथी. अने वेदनीय नो कचरो तो जड़ं जड़ं करीने जाय छे. तेमा आत्मा ने जराय नुकशान नथी. आटला खुलासा थी लखवानो हेतु ए छे के आप अमदावाद तेड़वानो आग्रह राखो छो ते जतो करो ! कारण के एं शरीर खमी शके तेम नथी. × × × गई काले हसमुख नो पत्र हतो १०० आत्मसिद्धि अंग्रेजी तथा चित्र पट १०० नुं पारसल अहिं मंगाव्युं छे. ते मोकलवा

संबंधी तेने फोन थी जणावजो के पार्सल आवे थी पहोंच लखी मोकलुं. ए चित्रपट्ट खपं गयो पछी चौजानौ आर्डर आपशुं अस्तु.× × ता० क० कलकत्ता थी भंवर लालजीए एम. वाडीलाल ने त्यां थी तत्व-विज्ञान अं. आत्म सिद्धि अने गांधीजी ना अं. पत्र पुस्तिका मुं पारसल मंगाव्ये घणादिवस थया, छतां ते गयुं नथी. ते संबंधी एक पत्र में पण लख्यूं छे. आप पण ते संबंधी फोन थी सूचवशो के जेथी जल्दी अमल थाय.

(पत्रांक ७४) हंपि २८-३-६५

ॐ नमः

परम कृपालु श्रीमद् राजचंद्र देव नुं शरण अने स्मरण अखण्ड रहो !

सुमुक्षु बन्धु. श्रीनरोत्तम भाई,

पत्र मल्युं. सत्संगनिष्ठ श्री देवशी भाई ना समाधि मरण ना खबर वांची प्रसन्नता एटला माटे थई के तेमणे उत्तम गति प्राप्त करी अने खेद एटला माटे थयो के एवा निष्ठावान कृपालु देवना भक्तो मां आ क्षेत्रे ओछप थई. ए खोट खरेखर साले एम छे. परिचय मां आवेला बधा ने ए सालशे.

जेना रोम रोम मां कृपालु देव नी श्रद्धा-भक्ति विकसया हतां अने परिणामे देहथी भिन्न केवल चैतन्य नुं भान प्रगट्युं हतुं. तेथीज देह व्याधि अमाप छतां ते भणी उदासीन रही आत्म भावे आत्मा मां उपयोग जोड़ी शरीर छोड्युं. ए नानी सूनी सिद्धि नथी। ॐ

बधाय मुमुक्षु भाई व्हेनो ने मारा सादर जय सद्गुरु वन्दन! जणावजो अने तमे पण स्वीकारजो· ॐ शान्तिः सहजानंदघन

(पत्रांक—७५) हम्पी २२-३-६५

ॐ नमः

सद्गुणानुरागी श्री भण्डारी साब,

आपका पत्र यथासमय मिला था परन्तु यहाँ सत्संगी जनों की भीड़ के कारण अवकाश नहीं था, अतः पत्रोत्तर में विलम्ब हुआ।

आपसे जान बूझ पूर्वक गलती होना असंभव है. और अनाभुति से होनहार गलती सदैव क्षमा पात्र है अतएव हमने उस गलती को महत्त्व नहीं दिया था। हमारी ओर से तो क्षमा ही है अतः आप निःशल्य ही रहिएगा।

आपका सुखलालजी के उपर का जब पत्र आया था तब जसराजजी यहां आगये थे इसलिए आपके लिखे अनुसार सुखलालजी ने फौरन वह चीज उन्हें लौटा दी थी। बाद में जब कि हमारे ऊपर आपका द्वितीय पत्र आया तब उसका पालन मुखलाल नहीं कर सका. क्योंकि जसराज जी आश्रम के ट्रस्टी और बड़े व्यापारी भी हैं। उनके साथ ऐसी बावतों में तुरन्त फेर-फार करने पर उनके दिल पर न जाने क्या असर होगा? अतः वह सहम गया और आपकी आज्ञा का पालन नहीं कर सका जो क्षंतव्य है।

अभी आपकी यह भेंट योंही पड़ी है जब तक उसका इन्साफ न हो जाय तब तक अधिक बोझ क्यों उठाया जाय-ऐसा ख्याल माताजी एवं सुखलाल को है। इसलिए भावि में जब कि आपको भेजने की सुविधा हो और पूर्ववत् उलझन न हो उसी तरह आप अपनी भावना को कार्यान्वित करें-यही उचित उन्होने समझा है अतः आप भी वैसाही करियेगा और अपने मन में द्विधा भाव न रखियेगा।

जिस चिन्तन में आत्म विस्मरण हो और रौद्र परिणाम हो उसे हम आर्तध्यान कहते हैं। बैंक ने परिस्थिति पैदा की उससे आपके चित्त में खेद उत्पन्न न हुआ हो ऐसा हमें नहीं लगता और खेद ही आर्त्तध्यान का फल है। अतएव हमने आर्त्तध्यान न होने के विषय में जो कुछ लिखा उपेक्षणीय नहीं है। आप इस विषय में गहराई से सोचिएगा। चिन्तन के तह में पहुंचने पर आपको यह महसूस होगा कि हमें आर्त्तध्यान भी हुआ था। पर उसकी पहचान न हो सकी अतएव उसका भी एकरार नहीं हो सका जो दूसरी गलती हो गई। गलती हो जाना उतना बाधक नहीं है किन्तु गलतियों को न समझ पाना साधना क्षेत्र में साधक के लिए अतीव बाधा है। क्यों कि वैसी परिस्थिति में साधकीय हृदय में आत्म ज्योति उदित नहीं हो सकती। यदि उदित हो तो विकसित नहीं हो पाती इसलिए अपनी चित्त वृत्तियों की गहरी छानबीन करना साधक के लिए नितान्त आवश्यक है।

आपकी प्रज्ञा विकसित है क्योंकि व्यवहार क्षेत्र में उसे उसी प्रकार की ही तालीम मिली है, अब उसको आध्यात्मिक क्षेत्र में तत्वज्ञान की तह में पहुचाकर स्वस्वरूप को हस्तगत कराने में आप लगा ही रहे हैं जो कि प्रशंसनीय है पर अब तक आत्म साक्षात्कार नहीं हो पाया अतः उसके बाधक कारणों को भी खोज निकालना यह आपका सर्व प्रथम कर्त्तव्य हो जाता है। और आपके इस कर्त्तव्य को अदा करने में हम यथाशक्ति मदद करते रहें यह तो हमारी सौभाग्य है क्योंकि यही हमारा कर्त्तव्य है, उससे हम क्यों पीछे हटकरें अतः इस विषय में आप अन्यथा कल्पना न करें, यही हमारा कहना है ॐ माताजी ने आपको हार्दिक आशीर्वाद फरमाया है। यद्यपि उन्हीं के देह में अशाता वेदनीय का मुख्यतः उदय है फिर भी शाता-अशाता से परे आत्मानंद की गंगा में ही अनवरत निमज्जन कर रहा है। जोकि अपने सभी के लिए अनुसरणीय है।

श्री मोहनराजजी सा'ब दम्पती को हमारा और माताजी का हार्दिक धर्मस्नेह फरमावें और धर्मस्नेह में अभिवृद्धि करें। ॐ शांतिः

सहजानंदघन—सादरजिन स्मरण पूर्वक अगणित आशीर्वाद

(पत्रांक ७६) हंपि

ॐ नमः २८-३-६५

भक्तवर्य,

पत्र मल्युं बधी हकीकत जाणी. जेम आपणे मलीये अने परस्पर वा[illegible]

ना स्वांगरूप मांज दादाजी नुं मलवुं थाय छे. पण तेओनी भलामण पण आ[illegible]

मां नहिं पड़वानो होय छे. घण्टाकर्ण ए समकि[illegible]। नथो.

ध्यारणानी पण विधि लखाएली छे. माटे हुं तो ए वस्तु ने महत्त्व नथी आपी शकतो. निष्काम एवा जैन मार्ग थी दूर सकाम मार्ग नी पुष्टि रूपे आ थयुं थई रह्युं छे. एज कलियुगनी महिमा छे.

शिवगंजना ओटरमलजी थी वधारे परिचय राखशो नहीं, मुखे बहुमीठा छे. पण अंतरमां विचित्र एवो मताग्रह श्रीमद् ना नाम थी पण वर्त्ते छे. आ आश्रम ने उखेडवाना प्रयत्नो पण कर्या हता. माटे सावधान रहेजो.

नीलगिरि वाला अनोपचंदजी श्रावक त्यां आव्या हता के नहिं? तेमनी साथे मोकलेल पत्र तमने मल्यो के नही? ते जरूर लखी जणावजो.

भागीदारोना मोह मां जरगडजीए जे अनुभव कराव्यो ते शुं ओछो गणाय? तेवीज आ बला गणी शकाय. थोडा प्रश्न नी चर्चा पत्र वाटे नहिं थाय-प्रत्यक्ष मिलने करी शकाशे तो करशुं.

काकाजी, जननी तथा रमा अने बालको सौने आशीर्वाद जणावजो काकीवाए अगणित आशीर्वाद वधा ने जणाव्या छे. तेमनी तबीयत वच्चे बहु लथडी हती पण हवे सुधरती जाय छे. धर्म ध्यान मां वृद्धि करजो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद!

(पत्रांक ७७)

ॐ नमः

६-५७५

सद्गुणानुरागी लाला श्री कृष्णचंदजी सा'ब सपरिवार,

पत्रमिला। हालज्ञात हुए। आपकी मानसिक व्यथा लक्ष में है। उसे मिटाने की तीव्र अभिलाषा आपको है. पर होगा वही जो श्री जिनेन्द्रदेव के ज्ञान में है।

वर्त्तमान प्रत्येक परिस्थिति जीव के अपने ही पुरुषार्थ का फल मात्र है। और उसके प्रभाव से अपने आत्मा को प्रभावित न करके आत्म भान एवं वीतराग भाव से समरस रहना यही अपना धर्म है। इसी आत्म-धर्म की आराधना चाहे घर में रहकर किंवा वन में जाकर किये विना चारा नहीं है। जिसे आत्म-भान एवं वीतरागता का आदर नहीं है, वह चाहे दि० मुनि हो. एलक हो, क्षुल्लक हो किंवा ब्रह्मचारी अथवा व्रती हो पर उस में धर्म नहीं है, वह तो कर्म की जाल में ही उलझा हुआ है। और जिसे आत्म-भान तथा वीतरागता का आदर है, वह चाहे घर गृहस्थी की झंझटों में रहता हो फिर भी उसमें धर्म ही उसका निस्तार अवश्यंभावी है.

जीव चाहे धर्मात्मा हो पर जिन-जिन जीवों के साथ जो-जो और जितनाऋणानुबंध है, उसे भुगतान किये विना भव बंधन से छूट नहीं सकता. जूना कर्जा ज्यों का त्यों रखकर नया कर्जा जो चढ़ाता हो वह कैसे छूट सकता?

संसार में सबसे बड़े दो बंधन हैं—रागबन्धन और द्वेष बन्धन। रागबंधन के तीन प्रकार हैं—१ कामराग बंधन—२ स्नेहराग बंधन एवं—३ दृष्टिराग बंधन। राग का यह तीसरा हिस्सा देव, गुरु और धर्म के नाम से व्यक्तिगत बंधन बढाता है। आपकी फरियाद का इस तीसरे हिस्से से संबंध है। पर इसमें आश्चर्य नहीं है क्योंकि प्रायः इस दूषम काल में सभी धार्मिक समाज दृष्टिराग बंधन में जकड़े से महसूस हो रहे हैं। कोई विरल व्यक्ति ही इस दोष से मुक्त होंगे और उनको देहादि से भिन्न अपने आत्मा का साक्षात्कार दर्शन-ज्ञान-रमण हो रहा होगा। यदि अपने घट में तो है अंधेरा और अपने आपको मानता है, सम्यग्द्रष्टा सम्यक् ज्ञानी, सम्यक् चारित्री—केवल आत्म-वंचना है।

जो ज्ञान आश्रवों से मुक्त नहीं हो सका है वैसा भेदविज्ञान और अज्ञान में कोई अंतर नहीं है। जो मुख से ज्ञान की बड़ी-बड़ी बातें बनाते हैं पर आचरण में विरति भाव तक नहीं है वे शुष्क ज्ञानी स्वयं भी मोहाधीन है। और दूसरों को भी मोह मदिरा का नशा चढा देते हैं। वैसे लोगों से जो साव-धान नहीं रहते वे आखिर पछताते हैं।

व्यक्तिगत रागबंधन बंधे हुए जीवको जब तक होश नहीं तब तक तीर्थंकर जैसे भी उसे मुक्त नहीं करा सकते, तब भला हम आप क्या चीज हैं।

हमें तो आप से यही कहना है कि आप स्वयं अपने आप में समरस रहो और दूसरों के प्रति जो-जो अपनी फर्ज है-साक्षी भाव से अदा करते रहो। परिणाम जो भी आए—हर्ष शोक मत करो। यदि इतनी सी शिक्षा अपने जीवन में उतारली तब तो आपके लिए न मन्दिर जाना आवश्यक रहा और न शास्त्र-सभा। अधिक क्या कहुं? यही तो धर्म का मर्म है।

लाला दीपचंदजी से मिलकर इस लेख पर कुछ चिन्तन करियेगा। शान्ति अपने ही भीतर के समाधान पर अवलंबित है। वह बाहिरी चीज नहीं है। ॐ शांतिः शांतिः शान्तिः

लाला दीपचंदजी को हमारा हार्दिक आशीर्वाद! व्यक्तिगत राग के कारण दूसरे पण्डित नाका-मयाब होंगे अतः किसका नाम बताऊं? यदि बताऊं तो भी वे देहरे क्यों आवें अतः चुप रहना ही ठीक है

आपकी देवीजी और सभी बच्चों सपरिवार को हमारा एवं माताजी का हार्दिक आशीर्वाद!

(पत्रांक—७८) हम्पी १-७-६५

ॐ नमः

सद्गुणानुरागी श्राद्धवर्य श्री नेमचंद भाई सपरिवार.

पत्र संप्राप्त थयुं विगत हृदयगत करी. व्हेन नी साथे ना वार्त्तालापथी तमे जे जाण्युं ते वांची ने मने-पण आश्चर्य थयुं. कारण के हुं सामायिक प्रतिक्रमण छोडवा विशे कदी कोई ने कहेतो नथी. पण ते करवा छतां जे फल आववुं घटे ते शा माटे नथी आवतुं? तेमां शुं खामी छे? ते खामी शोधी टालवा माटे ज लक्ष करावुं छुं. ते तो तमे पण मारा थोड़ाक परिचये समजी शक्या हशो? छतां जोवो पोतानी

समजणे चाले अने ज्ञानो नी समजणने न समजी शकवा थी थोडुंक करता होय ते पण छोडी बेसे तो तेमां कांइ आश्चर्य नथी. कारण के आ पंचम काल ना जीवो वक्र अने जड़ होय. एम श्री महावीर प्रभु कही गया ते वात खोटी केम सिद्ध थाय ? ब्हेनने में कदी एवो वात नथी करी के तमे प्रतिक्रमण सामाइक छोड़ो केवळ एमणे पोतानी मरजी थी तेम करवुं मूकी दीधुं छे. तेम में एमने कदी पूछयुं पण नथी के तमे शुं करो छो ? मात्र मारी धारणा एवी छे के जीव प्रथम पोतानुं स्वरूप समजे तो पछी तेनी साधना लक्ष पूर्वक थाय. तमने जे समय आप्यो हतो ते समय ने जाळवी तमे प्रयाण न करी शक्या तेथी मने जरा उदासीनता ते वखते हती जे तमारा धर्मपत्नी समजी शक्या परिणामे जयंत ने रस्तामां तकलीफ रही. पण जो समय मचवायो होत तो तेनुं परिणाम जू दुं आवत हवे जयंतनी तबियत सारी हशे? तेम तम सौ पण प्रसन्न हशो.

अहिं अम सौ स्वस्थ तेमज प्रसन्न छीए. आ देह हवे बरावर छे. काकीबा ने पण ठीक छे. सुखभाई ने पण सरदीनी असर थई हती तेने पण आराम छे.

आजना दिवसे तमे आखनुं आपरेशन करावावाना हता ते संबन्धी समाचार लखजो. खेंगारभाई गई काले अहिं आवी गया छे. अने तम सौ ने याद कर्या छे.

नवीन भाई नुं मुंबई थी पहोंच पत्र हतुं पण त्यां नुं अेड्रेस मारी पासे न होवाथी जवाब नथी मोकल्यो. तमे गया त्यार बाद ट्रीची थी एक टेलेग्राम आव्युं हतुं पण तमे स्थाने पहोंचवाना होइ ते पाछुं न मोकल्युं. आपणो धर्म संबंध नवो नथी अने तेने लई धर्मस्नेह उभराय ए स्वाभाविक छे. साचो स्नेह ते धर्मनो छे. तेवा स्नेहीओ नो विरह जीव सही न सके ते वेदना जो थाय तो ते जीव नो रस्तो क्लीयर थवा बराबर छे कारण के निर्विष प्रीतड़ी छे जे कर्म निर्जरा नुं कारण थाय छे. आपना बधा मां ते धर्मस्नेह दिनोदिन वृद्धिगत थाओ एज अंतर ना आशीष छे. प्रभावती ब्हेननो सरळता कोमलतादि प्रशस्त छे तेमने हार्दिक आशीष धर्मध्यान मां अप्रमत्त रहेजो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन

सादर जिनस्मरणपूर्वक धर्मलाभ !

(पत्रांक ७६) हंपि

ॐ नमः ९-७-६४

सद्‌गुणानुरागी श्री रजनीभाई सपरिवार,

पत्र मल्युं. लीधेली प्रतिज्ञानुसार साधन-क्रम नियमित चालु कर्युं ते जाणी प्रमोद थयो ते क्रमे एकनिष्ठा थी वर्त्तशो तो धीमे-धीमे मन नी शांतदशा नो अनुभव थशे. एवो दृढ विश्वास राखी आगळ वधो. तेमां सफळता थाओ. ओ मारा अंतरना आशीर्वाद छे.

तमारा अर्द्धांगिनी ने पण एज रस्ते दोरजो. जयन्तने हवे आराम हशे तेवा समाचार लखजो. काकीबाए तम बधाय ने वात्सल्य भावे अगणित आशीर्वाद जणाव्या छे. हवे नवीनभाई जयपुर पहोंच्या

हशे ? तेम ने मारा वती आशीर्वाद साथे लखो जणावजो. के तमारो मुंबई थी लखेलुं प्होंच पत्र हम्पी मल्युं हतुं, अेड्रेस न होवा थी जवाब नथी अपायो. हवे जयपुर नो प्होंच पत्र आवशे त्यारे जवाब आपीश धर्म स्नेह मां वृद्धि करजो ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक ८०)

हंपी ५-७-६५

ॐ नम

ज्ञानावतार परम कृपालु श्रीमद् राजचंद्र देव नुं शरण अने स्मरण अखण्ड थाओ !

पू० श्री जवलबा सपरिवार.

वार दहाड़ा ऊपर आपनुं पत्र मल्युं. वधी हकीकत जाणी. आपना शरीर नी हालत वांची आप प्रत्ये समवेदना जागी. आप शरीर ने दुःखे-दुखी थाओ ए तो न बने एम जाणी सन्तोष रहे छे. परम कृपालु देवनुं ज एक स्मरण ध्यान सतत रहेशे तो बीजा देहे तेमना चरणनुं शरण अवश्य पामशुं.

आ आत्मा तो अवश्य त्यांज जशे, एवो निश्चल अनुभव छे चाहे दुनिया माने के न माने पछी दुनिया नी मान्यता साथे लेवा देवा नथी.

जन्म शताब्दी ना स्थान निर्णय विषयक तो आप वधाय मलीने जे नक्की करो तेज मने मान्य छे. अेवो विचार प्रथमथीज छे.

बाकी स्वतंत्र पणे स्वात्मा ने स्फुरावबा हजु लक्ष आप्युं नथी. जे काले जे बनवानुं हशे ते बनशेज एथी ए विषे पण अविकल्प छुं.

आवती पूनमे-गुरुपूर्णिमाए अहिं घणा भावुको परम कृपालु नी भक्ति मां जोड़ाशे. एम लागे छे.

काकीबा, जीवण भाई, प्रभा व्हेन. सुखभाई आदि वधाए आपने सादर जय सद्गुरु वन्दन जणावी सुखशाता पूछावी छे.

त्यां श्री काशी व्हेन आदि आपना पारिवारिक जनो तथा सत्संगीओ सौने सादर जय सद्गुरु वन्दन ! धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

सहजानंदघन

सादर सहजात्म स्मरण. जय सद्गुरु वन्दन !

(पत्रांक ८१)

हंपी १२-७६५

ॐ नमः

सद्गुणानुरागी स्वरूप जिज्ञासु श्री प्राणलाल भाई सपरिवार.

पत्र मल्युं तेमां आ देहे समकितनी प्राप्ति करी लेवानी तमारी तमन्ना ना दर्शन थया-ते वांची प्रसन्नता मां वृद्धि थई.

. . . समकित-दीवड़ो जेना आत्मा मां प्रगट थाय तेनी नजर मां शरीर अने आत्मा तद्दन जुदा-जुदा प्रत्यक्ष देखाय. तेम थये शरीरमांनी आत्म बुद्धि सांथो खसे अने आत्मा मां आत्म बुद्धि दृढ थाय. अने ते आत्मा मां वीतरागता नो आविर्भाव थतां थतां क्रमशः संपूर्ण कैवल्य प्रगटे अने आत्मा सिद्ध पद ऊपर आरुढ थाय. माटे ते दिल नो दिवड़ो अवश्य प्रगट करवो ज घटे.

मात्र एकज जागती ज्योत वालो दीपक बीजा अनेक दीपको प्रगटावी शके पण लाखो बुझायला दीपको एक पण नवो दीपक सलगाववा जेम समर्थ नथी तेम जेना हृदयमां सम्यक् ज्योत प्रगटी नथी तेवा लाखो उपदेशको नवा एक पण जीव मां आत्म ज्योत प्रगटाववा समर्थ नथी. मात्र जेना घटमां आत्म ज्योत प्रगटेली छे. तेना संगज जीव आत्म ज्योत प्रगटावी शके छे आटली वात आपना हृदय मां कोतराई जवी जोइए.

परम कृपालु श्रीमद् राजचंदजी ने आत्म ज्योत प्रगट हती. एम तो आप पण मंजूर राखो छो, छतां जे उपदेशको तेमने मिथ्यात्वी माने-मनावे छे. तेओने खरे खरं आत्म ज्ञान होय अेम तो आप न ज मानी शको-एवो मने विश्वास छे. आ मारो विश्वास खोटो न ठरे तथा प्रकारे आप सावधान रही मात्र वैराग्य ने पोषण मले एवी बुद्धिए तमे विविध वक्ता नी सभा मां तटस्थ रहीने जाता हो तो तेमां कांई वांधो नथी. परन्तु तेमनी पासे थी समकित मेलववा जो तमे जता हशो तो तमने केवल वाड़ेबंधी ना समकित नी प्राप्ति सिवाय बीजुं कांइ मलवानुं नथी. एम मारी आत्मा साक्षी- भावे पोकारी रह्यो छे. अने ते बावत मां आ आत्मा ने कोई जात नो स्वार्थ नथीज.

तमे जेनी पासे थी समकित प्राप्ति नी आश राखो छो तेने विनय भावे आटलुं जरूर पूछी लजो के आ काल मां आत्मा ना साक्षात् दर्शन थाय के नहिं ? जबाब मां जो हा आवे तो तेना लक्षणो प्रगट व्यवहार मां शा शा होय ? ते पूछजो अने ते मने लखी जणावजो. तो ते ऊपर थी हुं साक्षीभावे कंइ सलाह आपी शकीश जो उपला जवाब मां "ना" आवे तो खात्री थी जाणजो के-तेने समकित नथीज. अेटले के आत्म ज्योत तेमां नथी. केवल उछीनी रकम वत् मात्र शास्त्रीय ज्ञान ना आधारे ते व्यापार करे छे. तेनां अति निकट ना परिचय मां जेम-जेम आगल वधशो तेम-तेम ते धीरे-धीरे वाड़ावंधीना समकित नो व्यापार करवा तत्पर थएलो तमे जोई शकशो. आ हकीगत हुं अनुभव ज्ञाने कहुं छुं. कोई द्वेषभाव थी करतो नथी. आटली वात तमे स्मरण मां राखजो. ए विषयो ने अधिक स्पष्ट पणे समजवा माटे प्रत्यक्ष समागमनी अनिवार्यता लागे छे माटे तमने जो अवकाश मले तो थोड़ा दिवसनी स्थिरता थाय तेवी गोठवण थी पधारो.

मारा परिचय थी कोई जातनुं नुकशान तमने नथी थयुं एवी जो तमने खात्री छे तो हृदय ने टुंकुं करशो नहिं जो उचित लागे तो अर्धांगिनी अने बालको ने पण साथे तेडवा आवजो !
पूनम नी भीड़ जामती जाय छे. उल्लास पूर्वक सत्संग थाय छे ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक ८२) हंपि १३-७-६५

ॐ नमः

भव्यात्मन् नवीन भाई सपरिवार

मुंबई तथा जयपुर थी लखेल बन्ने पत्रो मल्या. प्रभु कृपाए अहिं आनन्द मंगल वर्त्ते छे. आ०सु ११ ना दादाजी नी मोटी पूजा भणाववा मां आवी हती. गणदिवस थी खूब भीड़ जामी छे आजे भक्ति मां अनेरो रंग जामशे. ट्रीचीथी पत्र हता ओ. ठीक थई गयानुं जणावे छे. काकीवा तम वधायने घणा वात्सल्यथी आशीर्वाद जणावे छे. रेणुने बहु प्यार; अम वधायनुं स्वास्थ्य ठीक छे. तेम-तम सौनुं पण नीदैव बन्यं रहो.

बोड़ेली तमे गया हता तेथी त्यांथी मुनिश्री नुं पत्र छे. जरावस्था मां पण भावना उत्तम छे. धर्म स्नेहमां वृद्धि करजो. याद करनारा सौने आशीष.

सहजानन्दघन

सहजात्म स्मरणे अगणित आशीर्वाद

(पत्रांक ८३)

ॐ नमः हंपि १६-७-६५

परम कृपालु देव नुं शरण अने स्मरण अखण्ड थाओ.

स्वरूपजिज्ञासु भक्तवर भोगीभाई, (ईडर)

पत्र यथासमय मल्युं हतुं. अमदाबाद थी ता० १३-७ना श्री त्रीकमलालभाई तथा श्री लालभाई अने सकराभाई अहिं आव्या हतां.

पूनम नी भक्ति मां श्री लालभाई मस्त बन्या हता. तेनी खुमारी तो तेओज वर्णवी शके.

आपणे सौए कोई पण प्रकारे आ अेकज अभ्यास सिद्ध करवो छे—'आत्मभान अने वीतरागता' उदयमान त्रियोग प्रवृत्ति गमे ते प्रकार नी रहो पण आत्मभान छूटे नहीं. अने राग द्वेष स्फुरे नहीं ज्यां आ अभ्यास दृढ थयो के घरमां पण भरतजी नी माफक केवलज्ञान थाय अने जो अे अभ्यास मां लक्ष न जामे तो वनमां पण आत्मज्ञान ये नं थाय माटे ए अभ्यास दृढ करो. परम कृपालु कहीज गया छे ने के— "हणे बोध वीतरागता" आ लब्धि वाक्य हृदय मां स्थिर करी तेने खोलवो. बस एज एक सदा ने माटे भलामण.

धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो ॐ शान्ति :

सहजानंदघन

हार्दिक आशीर्वाद पूर्वक सहजात्म स्मरण !

(पत्रांक—८४)

ॐ नमः हंपि १६-७-६५

परम कृपालुदेव नुं योगबल अमारूं कल्याण करो!

सत्संग रंगी भव्यात्मा श्री मोहनभाई दम्पती,

ता० ४-७ नुं लखेलुं पत्र यथा समये मल्युं. सत्संगीओनी भीड़ वच्चे ठीक-ठीक जामेली हती तेथी प्रत्युत्तर न अपायो.

अमदावाद थी श्री लालभाई आदि मुमुक्षुओ गुरुपूनम ऊपर आवी भक्ति-रस मां मस्त बनी १६-७ ना पाछा गया. पूनमे १५० थी अधिक संख्या हती.

अहिं अमने तो थीजुं याद करावे तो भले नहिं तो स्मरण ओछुं रहे छे. सत्संग नियमित चाले छे. जे सत्संगनी महिमा शब्दे वर्णवाय तेवी नथी. तमने पण तेनी आवश्यकता जणाय छे, ते रूचिपण उपजवी ए अहोभाग्य छे.

ऋणानुबंध ना अनुसार प्रत्यक्ष समागम नो जो के वियोग वर्त्ततो होय छतां तेज रुचि वेदाती रहे तो तेनुं फल पण तेवुंज आवे छे जेवुं के प्रत्यक्ष समागम नुं आववुं घटे माटे तेज रूचि धारा ने अखंड प्रवाहे वहेवडाता रहो. जो अवकाश मेलवी शकाय एम होय तो आ पर्युषण मां आववानुं बनावजो.

कल्पसूत्रना माध्यमथी ज्ञानिओनुं अंतरंग स्वरूप विशेष चर्चाशे. जे चर्चा आत्म प्रेरणामां वधारो करी शकशे.

काकीया स्वस्थ छे. अने प्रसन्नता तो अंतरनी अखूट छे. आ देहे पण स्वस्थता अने आत्मा मां प्रसन्नता छे. सौ सत्संगी भाई-बहेनो आनंद मां छे. आश्रम विकास चालु छे. त्यां सर्व धर्म स्नेहीओ ने हार्दिक आशीर्वाद जणावजो. ॐ शांतिः

मूलजी नानजी काराणी सहजानंदघन

डुमरा (कच्छ) अगणित आशीर्वाद

(पत्रांक—८५)

ॐ नमः १०-८-६५

भव्यात्मा श्री नवीनभाई सपरिवार.

ता० ४-८ नुं पत्र मल्युं. वांची हृदयगत कर्युं फुरसदना अभावे जवाब मां ढील थई जे क्षतव्य छे तमे जे भावना लखी ते उचित कर्युं. केम के मानसिक चिंतन नुं विश्लेषण अने तेनु फल जो जाणता थईए तो कर्मबंध अने मोक्षनुं रहस्य हाथ लागे. उक्त भावना मां निदान बुद्धि छे. जे हेय छे. निष्काम भावेज दानादि करवाथी तेनुं फल प्रशस्त आवे. सकाम भावे तेज दानादि संसार फल आपे-मोक्षफल नहिं, माटे ते भावना सुधारी लेजो.

हाल मां अहिं मद्रास वाला मणिभाई अने कंपली वाला बन्ने पोत पोताना मकान तमे जे मकान मां उतर्या हता तेनी उपली श्रेणीमां वनावे छे. काम सुन्दर थाय छे. तेमज १५-२० हजार ना खर्चे एक भाई वाईओ माटे हॉल वनावे छे. पण ते वे महीना वाद काम आवशे. तमे पण दीवाली बाद अवकाश मेळवी ने तमारूं रूम तैयार करावशो तो आगल जतां रहेवा मां अनुकूलता सधाशे काकाजी नुं पत्र हतुं नजर मां घणो सुधारो जणावे छे. जवाव आजे लखी मोकलुं छुं.

काकीवा नी आम तो तवियत ठीक-ठीक चालेज छे पण हार्ट नी गड़बड़ी मां वधघट थाय छे. तमे पेलो पत्थर मोकली आपवा नी वात करी हती ते भुलाई गयुं लागे छे. नहिं तो क्यार नुं अहिं आवी जात. तेमणे तमने रेणु ने नलीन, भावना अने तेमनी वाने वहुज याद कर्या छे. साथे अगणित आशीर्वाद जणाव्या छे.

रजनीकान्त विपयक परिवर्तन थयानी बात वांची प्रसन्नता थई. जीव रूड़ो छे पण काल मर्यादा नी लीधे तेवा वातावरण थी जीव मुंझाई ने श्रेयोमार्ग ने तजी दे छे. तेने सारा निमित्तो मल्ये फरी जागृति आवे एम वनवा योग्य छे. तमारुं पार्टनर संवंधी जंजाल सुलटी गयुं हशे. आरती विपयक दि० श्रेणो मां एकज दीवो करी चलावे छे. श्वे० श्रेणि मां उभय प्रथा छे. पण पांच नी अधिक प्रचलित छे तमे तमारे जे भावना होय ते करजो. तेना अर्थ रूपे आत्म ज्ञान ज्योति प्रगट करवाना प्रतीक पणे धारणा राखवी.

साधन क्रम मां फावी गयुं ते उत्तम थयं. आसनो नियमित करता रहजो. नलीन, रेणु भावना ने खूब वात्सल्य थी आशीप जणावजो. खेंगारभाई तो तुर्तज आवी गया हता.

गत पूनमे अगरचंदजी, भंवरलालजी नाहटा तथा ताजमलजी वोथरा आदि आव्या हता तेमां थी भंवरलालजी परिवार पर्युषण अहिं करशे. अत्यारे आश्रम मां भीड़ सारी जामी छे. जामती जाय छे.

अहिंना वातावरणनी शी वात करवी? योगीजनो नी भूमि छे. धर्मध्यानमां वृद्धि करजो.
ॐ शान्तिः

सहजान्दघन

अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक ८६)

हंपि २४-८-६५

ॐ नमः

भव्यात्मा भाणवाई सुत हंसराज आदि,

पत्र मल्युं हकीकत जाणी. प्रभुकृपाथी अहिं आणंदमंगल वर्त्ते छे तेम तमसौने पण सदाहो! त्यां कोई साधु साध्वी नथी. तो पण धर्म ध्यान मां वीजु न थई शकतुं होय तेमा छतां मंत्र रट्या करीए तो ते धर्मध्यान ज छे. संसारी भावो केवल स्वप्नवत् जाणी ते भणी उदासीन रहेजो एक आत्मा तुं ज भान राखी राग द्वेप टालवा मेहनत करजो प्रभु समरण भूलशो नहीं, ॐ शांतिः

काकीवाए आशीर्वाद लखाव्या छे. बाई ने फुरसद ओछी रहे छे. तेथी तेमना वती हुंज जवाब आपी रह्यो छुं. ॐ

सहजानंदघन आशीर्वाद !

(पत्रांक ८७)

ॐ नमः

हंपि-३-९-६६

भव्यात्मा श्री नवीनभाई तथा श्री रमाब्हेन अने बालको.

रा० पत्र मल्युं. अत्रे पण पर्वाराधना घणाज उल्लास पूर्वक थई. अमोए विशुद्ध भावे खमाव्या छे. ते स्वीकारजो. काकीबाए बालको ने खूब खूब याद करी खमाव्या छे तेमनी पुत्री चंचल ब्हेने अठाई करी हती. तेमां अने पारणा मां कोई तकलीफ न थई.

अंतराय कर्म नो उदय होई ने जे प्रसंग बने तेमां निष्काम भावे रही सत्साधन मां लाग्या रहेवा थी ते कर्म नो जल्दी अंत आवे. पछी प्रतिकूलता अनुकूलता मां फेरवाई जाय. माटे तेम करजो. आ माया-जाल मां मनने मुंफावा देवुं नहि. स्वप्नवत् गणी साक्षी रहेवुं. आत्म धन कोई लई शकतुं नथी. अने जड़ धन तो जनार छेज पछी फिकर शा माटे करवी.

तकती विषे ट्रीची लख्युं तो फरी सूचन करजो. तेमने में पण ते वखते सूचव्युं हतुं पण वात याद रही नहि होय.

प्रभुमूर्ति नी सामे त्राटक पद्धतिए श्वासानुसंधान पूर्वक मूलबंध लगावी ने साधना करशो तो ध्यान नी स्थिति वधशे माटे तेम करजो सौने पुनः-पुनः आशीर्वाद. ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद सह सां० खामणा

(पत्रांक-८८)

ॐ नमः

७-११-६६

भव्यात्मा श्री नवीनभाई सपरिवार.

पत्र मल्युं परन्तु काकीबा माटे नी तकती न मली. ट्रीची थी त्यांज तूटी गएली मली हती. पण अखण्ड न होवाथी विशेष फायदो आपी शकती नथी.

दीवाली ना त्रणे दिवसोए आखी सभानी सामे प्रकाशमांज दिव्य कुंकुम वृष्टि थई हती तेथी सुगंध नो नशो हजीए वर्ते छे. एवा अवसरे तम जेवानी हाजरी होय तो आ मननी फरीयाद घणी ओछी थाय मननी फरीयाद करो छो पण ते तो साधन मांगे छे तेने वापरे छे कोण. तेनीज तो भूल छे. अने मनने माथे ठोकी बेसाड़ाय छे पोते सावधान रहो.

श्राविका तथा बालको ने मारा तथा काकीबा ना हार्दिक आशीष. तमारा भागीदार नुं शुं थयुं ? ट्रीची वधाने आशीष लखी जणावजो. धर्मस्नेहमां अभिवृद्धि करजो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद

(पत्रांक ८९)

ॐ नमः हंपि १२-९-६५

स्वानुभूति अभिलाषिणी वात्सल्यमूर्ति साध्वी श्री विज्ञानश्रीजी श्री विचक्षणश्रीजी आदि स्वर्ण-मण्डल,

सां० खामणा पत्र मिला। उसी अवसर में यहां से हमने ससंघ आप सभी को उत्तम क्षमाधर्म में आरूढ होकर विशुद्ध भाव से खमाया है एवं क्षमा प्रदान की है—स्वीकृत रहे।

स्वानुभूति के लिए सरलतम उपाय है—स्थिरत्रिविध कर्म निरपेक्ष "ज्ञायकसत्तामात्र" में आत्म बुद्धि रखना, उदीयमान त्रियोग क्रिया तथा क्रियाफल में वीतराग स्वभाव मात्र बनाये रखना।

जानने वाले स्वभाव मात्र को जानते रहना ही ज्ञायक स्वभावमयी ज्ञायक सत्ता मात्र को पकड़ना है अर्थात् उपयोग में उपयोग को जोड़े हुए रहना है और "यही मैं हूँ" इस प्रकार धारणा करना ही आत्मा में आत्म बुद्धि स्थिर रखना है। तथा उदीयमान त्रियोग प्रवृत्ति एवं तत्फल में राग-द्वेष परिणामों को न मिलाना ही वीतराग स्वभाव बनाये रखना है।

बेहोशी में देखने की आदत आत्म-भान रहे एवं आचरण की आदत वीतरागता से मिटाई जा सकती है। सुज्ञेषु किं बहुना!

सहजानंदघन
सादर धर्म-स्नेह

(पत्रांक ९०)

ॐ नमः २२-९-६५

सद्गुणानुरागी परम धर्मस्नेही बा० दीपचंदजी साब सपरिवार

क्षमापना पत्रिका मिली। जिसका हमने, माताजी ने एवं ब्र० आदि ने हृदय से स्वागत किया है। हम सभी ने उसी अवसर में आप सभी को क्षमा प्रदान की थी एवं क्षमायाचना भी—स्वीकृत हो।

तीर्थराज श्री शिखरजी के विषय में अब तो आपकी भावनानुसार ही समाधान हो गया न?

हम सभी स्वस्थ एवं प्रसन्न हैं तथैव आप सभी होंगे—ऐसी आशा है।

अब तक त्याग की आराधना में कितना विकास हुआ! लिखिएगा।

मुझे विश्वास है कि जो संग में रहकर त्याग को विकसित करता है वही आगे चलकर असली असंगता सिद्ध कर सकता है।

धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

भवदीय हि० चि०
क्षु० सहजानंदघन सद्धर्मवृद्धिरस्तु!

(पत्रांक ६१)

ॐ नमः

आत्मार्थी मुनिवर श्री आनंदघनविजयजी

पत्र संप्राप्त थयुं ते मनन करी गयो ! प्रश्नो ना समाधान नीचे मुजब अवधारसो।

१—अभ्यन्तर असंगतदशानी तालीम माटे सतत त्रिविध धर्म थी मुक्त हुँ आत्मा छुं ए आत्मभान अने त्रियोग प्रवृत्ति मां वीतराग भाव ए बन्ने टकावी राखवानो अभ्यास पाड़ो। खेदभाव न राखवो. अभय, अद्वेष अने अखेद ए त्रण गुणो वड़ेज साधना मां विकास थाय छे. खेद दोष टालवो जोइए तेने न संघरो।

२—अत्यारे मारूं अनुसरण न थाय तो कांइ वांधो नहिं. ज्यां सूधी उपसर्ग सहन करवानी योग्यता पूर्णतः न सधाय त्यां सूधी चालू वेष व्यवहार पालो। कारण के "पंदर भेदे सिद्ध" थाय छे. तेमा अमुक वेष अने अमुक क्रिया अनिवार्य नथी।

३—आत्मलक्ष पूर्वक तमे तमारूं चालू साधन क्रमज चालू राखो पण खेद भाव ने तजीनेज।

४—काया शक्ति करो पच्चखाण, शुद्धि पालो जिनवर आण, माटे यथाशक्ति तप करो।

५—चाहे जंगल मां रहो चाहे वस्ती मां, पण सचित्त त्याग नी महत्ता गौण न थवी जोइए नहीं तो निर्ध्वंश परिणाम आवी जाय। माटे नदी जल नी कल्पना त्यागो आवी कल्पना केम जड़ी ? विवेक रहित स्वाधीनता पण शुं काम नी ? तीर्थंकरना मार्ग मां ए न शोभे। आपणे जे पदे छीए तेथी नीचे न ज उतरवुं. वधु न थाय तो कशी चिंता नहीं. बाह्य असंगता अेकान्तिक आवश्यक नथी. ते अनेकान्तिक होषी ज घटे. अेटले के अंतरनी पूरक होवी घटे. अन्यथा बंधन रूप ज नीवड़े।

६—मन डामाडोल रहेतुं होय अने ते वश न थतुं होय त्यारे प्रभु ने चरणे तेने चढावी हृदय ना शुद्ध भावे प्रार्थना करो. तो बल मलशे.

७—आपना समुदाय वाला ज्यां सुधी बाधक न बने त्यां सुधी चालु पद्धतिमां फेरफार करशो नहीं. अने जो बाधक बने तो पोताना ध्येय ने छोडशो नहीं. पण ते संग नो त्याग करी देजो. पछी परम कृपालु पोतानी कृपा-दृष्टि वर्षावी रस्तो करी आपशे एवो दृढ विश्वास राखजो.

आ देहे स्वस्थता छे अने आत्मा मां प्रसन्नता छे. तेम तमने पण हो. धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि करजो ॐ शांतिः

सहजानंदघन

सादर जिन स्मरण पूर्वक हार्दिक आशीर्वाद

(पत्रांक ६२) हंपि

ॐ नमः १-१-६६

आत्मार्थी मुनिवर श्री आनंदघन !

पत्र मल्युं. बधी हकीकत ध्यान मां लीधी. समाधान नीचे मुजब :—

१—श्री आनंदघनजी महाराज अचित्तजलज लेता हता. पण ते अचित्तता स्वकृत नहिं, तेमां २१ प्रकारनो समावेश पण करता मात्र उष्ण जलज नहीं तेमनी सेवा मां अमुक भाग्यशाली पण पाछल थी भल्या हता. तथा प्रकार नो जल तमे पण लई शको छो. सर्वथा आरंभ त्यागी ने केवल असंगता ज इष्ट नथी पण साथे अनारंभी होवुं घटे.

२—अनारंभी पणे असंगता साधवा मां तमने तमारूं शरीर जो न नडे तो स्थानो घणा वतावुं पण तमने शरीर वाधक छे. तेथी शरीर ने पण उचित न्याय आपी असंगता केलवो. ए इष्ट छे.

३—उपली वावतने ध्यान मां लई वर्त्तमान मूंझवण थी वचवा मांगता होय तो मालवा मां डग ग्रामे तमने गुफाओ मली शकशे. गाम मां मुख्य व्यक्ति श्री भंवरलालजी धींग भक्तिवाला छे. घर थोड़ा छतां तमने सहायक थशे तेओ आध्यात्मिक रुचि वाला छे. त्यां सकामता जेवुं नथी गामनी आस पास अव्यवहार गुफाओ छे· वे माइल छेटे एक गाम जोड़े पहाड़ मां पण गुफाओ छे. चार माइल ना आंतरे पडासली तीर्थ छे. तेना पण तेओ ट्रस्टी छे. त्यां सगवड़ सचवाशे. वली मेवाड़ मां राणकपुर थी उपर कुंभलगढ जवाय छे. त्यां केलवाडा गाम नी व्हार एकान्त स्थान छे. आसपास वीजा गामो मां पण एकान्त जेवुं छे. वली नाथद्वारा थी १२ माइल दूर मर्चींद गाम छे १५ घर छे त्यां पहाड़ नी खीण मां एक माइल छेटे मच्छेन्द्रनाथ नी गुफा छे. तद्दन एकान्त छे ज्यां महाराणा प्रताप गुप्त रह्या हता. हुं चारभुजारोड पासे नदी मां जे गुफा मां रह्यो हतो त्यां कोई अजैन छे. नहिं तो ते सुन्दर छे.

गिरनारजी मां राजुल नी गुफा थी दक्षिणे एक फर्लांग दूर चिदानंदजी गुफामां रह्या हता. ते प्रेमचंदजी नी गुफा कहेवाय छे. पण त्यां यात्रिओ ऊपर नभवुं पड़े अने पछी प्रसिद्धि थये पाछी आवी हालत थाय आ वधा मां मर्चींद अेवुं एकान्त स्थान छे के त्यां तमने दुनिया सतावी न शके पंदर घर होवा थी आहार मां पण हरकत नथी. मन्दिर उपाश्रय पण छे. वे खंडेर रूपे मंदिरो जंगल मां छे. आरसना ज्यां जवुं होय त्यांनो परिचय जाहेर मां न आपवो. तेथी संग टली शकशे.

४—जो मेथी थी तमने फायदो छे तो ते चालू राखो. वाकी तो देह ना दंड देह ने भोगवा अनिवार्य छे

जो डग तरफ जवानी इच्छा होय तो पत्र व्यवहार करी जोजो "श्री भँवरलालजी धींग पो० डग जि० कोटा (राजस्थान) तेओ मारा परिचित छे. ते सिवाय दूर दूर जवुं होय तो घणा स्थानो छे. पण तेवो साहस करी शको तोज जई शकाय.

धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. पत्रोत्तर आपजो· ॐ आनंद आनंद आनंद

सहजानंदघन

धर्मस्नेहे हार्दिक आशीर्वाद

(पत्रांक—६३) हम्पी २७-१-६६

ॐ नमः

सद्गुणानुरागी अध्यात्मा श्री नेमचंद भाई तथा प्रभावती बहेन सुत ची० रजनीकांत भाई सपरिवार

आपना क्रमशः बे पत्रो मल्यां तेनुं समाधान नीचे मुजब जाणजो.

१—उपदेश मां निष्काम भाव नी प्ररूपणा करती वेलाए जे प्रतिपादन नवीन भाईए सांभल्युं तेनी असर तेमने थई. पछी एकान्त मां में सहज भावे जणाव्युं के तमारो अमारो पारमार्थिक संबंध विकासवो घटे तेमां तमलोको जे व्यवहारिक प्रश्नो पूछो ते उचित नथी तेनो अर्थ कदाच तेमणे नाराजी रूपे कर्यो होय अने तमने लखी जणाव्युं होय पण मारे तमारा प्रत्ये गुस्सो शा कारणे आवे ? ते तमेज विचारजो.

२—नवीनभाई अहिं हता त्यारे आपने माणस अहिं मोकलवा जणावेलुं तेनो जवाब आपना तरफथी ता० १२-१ ना लखायो ते दरमियान नवीनभाईए जयपुर जई पुछाव्युं तेना उत्तर मां में लख्युं के "हजु ट्रोची थी कोई जवाब नथी. 'भावीभाव' आ वाक्य नो अर्थ पण नवीनभाईए दुःखमां खतव्यो लागे छे पण मने दुःख लागड्वा जेवुं कांइज नथी.

३—नवीनभाईए जे भूल करी छे ते सुधारवा आपे मने प्रेरणा करी ते विषय मां में तेमने उचित उपदेश तो आप्यो ज हतो. साथे ते हताश न थई जाय ते माटे में तेमने एम जणाव्युं हतुं के जे थई गयुं तेमाकिक रत करशो पण हवे थी एवुं काम नहिं करता छतां तमारा लक्ष्य प्रमाणे फरी साहस लेइ युं-तेमां तमने मारुं उत्तेजन मल्युं छे एवो आपे मारा उपर आक्षेप मूक्यो ते बराबर नथी. हुं आवा काम मां उत्तेजन आपी शकुं ? तेओने अथवा बीजा कोई ने पण आत्मार्थ सिवाय बीजी प्रेरणा नथी आपतो, सट्टाना तो पच्चखाण आपतो रहुं छुं तो पछी आपे एवी कल्पना केम करी ?

४—आपनुं ते खानगी पत्र आव्युं त्यारे नवीनभाई पासे ज बेठा हता ट्रोचीनुं जोई ने तेमणेज खोल्युं वांच्युं तेमां तेमनो पण वांक न्होतो अने मने पण गुनेगार तो नहिज गणी शको.

५—सत्संग भवननो नकशो नवीनभाई ए फेरव्यो अने जयपुर गया. तेने पाकुं दोरवा मंत्रीने सोंपायुं ते धारवाड़ा उपर ज मल्युं तेथी आपने हुं जवाब न आपी शक्यो. ते नकशो मंत्रीजीए आपने मोकल्यो छे. वली हजु सूधी कार्यकर्ताओनी गेरहाजरी ने लई ने सामान संग्रह नथी थयुं तेथी हालमां माणसने मोकलशो नहीं. जेने काम सोंपायुं हतुं तेओ पैकी लग्न आदि प्रसंगे गेरहाजर छे. हजु आव्या नथी आम बाबत छे.

हवे उपलो बाबत ने अंगे आपणा वच्चे जे समझ फेर थी मन दुःख जेवुं थयुं होय ते बदल ज्ञानिओनी साक्षीए मिच्छामि दुक्कड़' मारा तरफथी आप निशल्य रहेजो. अने धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. काकीबाए आप सौने बहुत याद कर्या छे. खंगारभाई अने सुखभाई ए पण याद काय छे. ॐ शान्तिः

सहजानंदघन

सादर जिनस्मरण पूर्वक धर्मलाभ !

(पत्रांक ६४)

ॐ नमः

हंपी ३०-१-६६

परम कृपालु देव नो अनुभव मार्ग त्रिकाल जयवन्त वर्त्तो !

असंगता ना अभ्यासी मुमुक्षु बन्धु श्री भोगीभाई,

पत्र संप्राप्त थयुं. मारा पत्रो मुद्रित करावावा तो हुं उदासीन छुं. हुं तो केवल कृपालु ना वचनामृतनो उपासक छुं. तेओ गौण न थई जाय तेनो पूरो लक्ष राखुं छुं. ए आप अने श्रीलालभाई स्वतंत्र छो.

आपने हवे देहाध्यास अटले चेतना नो शरीर मां बेठक जामेली छे त्यांथी तेने उठाड़ी आत्मामां जमाववो अनिवार्य छे. टार्चना बटन ने अंतरमुख दबावीए तो बल्बमांनुं प्रकाश त्यांथी हटी ने शेलमां-जेन समाई जाय छे तेम मन बटन ने अंतरमुख दबावी राखीए तो शरीर बल्ब मांनों चैतन्य प्रकाश चैतन्य प्रदेश मां पाछो शमाई जाय छे आ काले पण चैतन्य प्रदेशमां चेतन प्रकाश शमावी शकाय छे. ते जेटलो समय टके तेटली चारित्र नी आराधना गणाय तेटलो वखत देहाध्यास छूटी गएलो जाणवो आ देहे आ प्रयोग सिद्ध करवो घटे छे तेमां आपनो जय थाओ !

अहिं आनंद आनंद छे, देह स्वस्थ छे आपने पण स्वस्थता अने प्रसन्नता हो ॐ शांतिः

सहजानंदघन

सहजात्म स्मरणे अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक ६५)

ॐ नमः

हंपी
३०-१-६६

भावितात्मा श्री वेलबाई,

पत्र यथासमये मल्युं. अवसर मेलवी जवाब लखी रह्यो छुं ज्ञान चर्चा विषयक पत्रोत्तर माटे श्रम नथी लागतो. मात्र अवकाश ओछो होवाथी ढील थवी शक्य छे.

कर्मना मर्मनो जाणनार कर्मबंधनथी छूटवानो विशेष अधिकारी होइ शके. कर्म बंधन ना निमित्त रूपे बनता अज्ञानी जीवो के जेओ पोतानी जवाबदारी समजी शकता नथी, तेओ ने दोष केम देवाय ? माटे ज्ञानी ने माथे बेवड़ी जवाबदारी समजी लेवी घटे १ पोताने मुक्त करवानी अने बीजी बीजाने कर्मबंधन मां पोते निमित्त न बनवानी. गमे तेवा त्रियोग प्रवृत्ति ना उदय मां पण जे आत्मभान अने समता-साक्षीभावी-वीतरागभाव टकावी शके तेनो मोक्ष आवश्यंभावी छे ज.

बाह्य तप-जप अने क्रिया नो खप तो तथा प्रकार नी पात्रता पामवा माटे छे. तथा प्रकार नी पात्रता विकसाववा आपे वीसस्थानक तप नी आराधना शरूकरी ते अनुमोदनीय छे. एमा जाप अने कायो-त्सर्ग श्वासानुंसंधान पूर्वक करशो तो अनाहत ध्वनि प्रगट थशे. तेमां सफल मनोरथ बनो. ए अंतर ना आशीष छे. तथा माताजी ना पण.

मोताजी अतीव प्रसन्न अने स्वस्थ छे. आपने घणाज याद कर्या छे. तेम व्हेन झवेर ने तथा भाई रमण ने याद करी वात्सल्य भावे आशीर्वाद जणाव्या छे. मारा पण तेमने आशीष जणावजो. धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि करजो-ॐ शांतिः शांति शांतिः

सहजानंदघन

सादर आत्म स्मरण पूर्वक धर्मलाभ

(पत्रांक—६६)

ॐ नमः

हंपि ३१-१-६६

मोह क्षोभ परिमुक्त सहजात्म स्वरूप ने अभेद भक्तिए नमस्कार !

आत्मार्थी मुनिवर श्री आनंदघन

पत्र संप्राप्त थयुं विगत जाणी. परम कृपालु नी पावन कृपा थी अहिं आनंद मंगल वर्त्ते छे. ते जगत ना तमाम जीवो ने हो. आ देहे स्वस्थता अने आत्मा मां प्रसन्नता छे.

आ काले आ क्षेत्रे तपस्विओनी प्रायः रुग्ण अवस्था अधिक वर्त्ते छे. तेमां मुख्यतः वेदनीय कर्म नो उदय तो छेज पण गौणतः गजा उपरांत नो तप तथा धारणा-पारणानी अविधि प्रायः जोवा मां आवे छे. गजा उपरांत ना तपनुं कारण छे—देखादेखीए होडाहोड अने ख्याति नी कामना, तथा धारणा मां अति भोजन, गरिष्ट भोजन अने पारणामां मलशुद्धि विनाज अन्नाहार ग्रहण. आवुं तप ए शोधन क्रिया-परक होवा छतां मल-संग्रह नुं कारण बनी अनेक आकस्मिक रोगोनुं उत्पादक बने छे. तमारी हालत ना कारणो शोधशो तो आमांना कोई कारण दृष्टिगोचर थशे.

मने लागे छे के शरीर नी शक्ति उपरान्त तमे तप करो छो. आत्म भाव तो तेवो होय ज पण साथे काया शक्ति नुं ध्यान साधकोने राखवा योग्य छे. "काया शक्ति करो पच्चखाण, शुद्धि पालो जिनवर आण" आवी शिक्षा पूर्व पुरुषो नी विचारवा योग्य छे.

तमारे प्राकृतिक चिकित्सको नी सलाह लई आपणने छाजे तेवा प्रयोगो वड़े प्रथम आंतरड़ाओ नी शुद्धि करी लेवी जोईए. त्यार बाद तप नी पद्धति अपनावी जोइए.

तमारा शिष्य जो उत्तरसाधक नुं काम आपी शके तो साथे राखी बने परस्पर साधक उत्तरसाधक पणे परस्पर सहायक बनवुं जोईए. तेमने पण साधना नं लक्ष करावीने आगल वधारवा जोइए. एथी समुदायनी कटाक्ष वृत्ति पण ओछी थाय.

अन्य समाज ना भावुको ने परम कृपालु ना वचनामृत नो स्वाद चखाड़वानी आपनो प्रवृत्ति खरे-खर स्तुत्य छे. धीरे-धीरे एमने ए साहित्य खरीदीवार-वार मनन करे तेथी प्रेरणा पण आपता रहेजो. एकाद जीव पण जो जिन मार्गे वली आत्म-शुद्धि पामे तो बधी मेहनत सफल छे.

आ बधुं छतां घेरा मां जीव न घेराय एवी सावधानी अनिवार्य छे. धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि करजो. ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

सहजानन्दघन

आत्म भावे जिनस्मरण सह अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक ६७)

ॐ नमः हंपि ६-२-६६

भव्यात्मा श्री धनजीभाई नानजी शाह

तमारुं पोषसु ३ नुं लखेलुं पत्र अड्रेस बराबर न होवाथी भटकतुं भटकतु आजे मल्युं. तमारी भावना उत्तम छे.

कर्म बंधन थी मुक्त थवा नो उपाय छे—आत्म भान अने वीतराग भाव टकावी राखी उदय प्रमाणे त्रियोग प्रवृत्ति साक्षी भावे करवी.

जेम ड्राइवर अने मोटर नुं स्वरूप क्रिया अने क्रियाफल जुदा-जुदा छे. तेम आत्मा अने आत्मा नुं स्वरूप, क्रिया अने क्रियाफल जुदा-जुदा छे. ए सर्व प्रथम समजण मां दृढ करी लेवा घटे छे. ते दृढ करी देह अने कर्म थी तद्दन जुदो हुं सिद्ध समान आत्मा छुं. आ आत्म-भान अखण्ड धाराए टकावी राखवो अने उदयोमान त्रियोग प्रवृति मां प्रवृत्त थतां जे जे वस्तु के व्यक्ति नो प्रसंग पड़े तेओ भणी राग द्वेष न स्फुरवा देवा केवल वीतरागभावे-साक्षीभावे-समता भावे रहेवुं. आ प्रयोग नवा कर्म बन्ध थी बचावे छे. अने जूना कर्म थी मुक्त करावे छे.

उक्त शिक्षा ज्यांथी मलती होय तेवो सत्संग करवो अनिवार्य छे. सत्संग ना अभावे तेवुं साहित्य विधिवत् नित्य मनन करवुं जोईए. तेमज ते शिक्षा जीवनमां उतारवी जोइए. शिक्षा जीवन मां उतारवा माटेज सामाइक प्रतिक्रमण-पूजनआदि विधि विधान छे. छतां आत्म भान अने वीतरागता नुं अवलंबन लीधा विनाज ते-ते क्रियाओ कराय छे. जेथी धार्युं फल प्राप्त थई शकतुं नथी.

आत्मानंद प्राप्त करवा माटेज आ मानव जीवन कार्यक्षम छे. छतां जीव एडे गुमावी चालतो बने छे. अे अफसोस नी वात छे.

पुनसी भाई तथा लखमशी भाई तो अहिं थी गये घणा दिवस वीती गया. जेथी तमने जोइतं साहित्य केम मोकलाय ? कोई वखत अवकाश मेलवी अहिं आवो तो कइक गुरुगम आपी आपने संतोषी शकाय बाकी पत्र वाटे समजाई जाय अेवी वातो नथी. धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन

हार्दिक आशीर्वाद

(पत्रांक—६८)

ॐ नमः हंपी ४-४-६६

भव्यात्मा श्री नवीन भाई सपरिवार

तरुती अने पत्र मल्या. विगत वांची परिस्थितिओ तो परिवर्त्तनशीलज होय पण तेने जाणनारो आत्मा अपरिवर्त्तनशीलज छे. एवा निर्णये आत्म भान टकावी राखीये तो हर हालत मां शांति वेदाय प्रतिकूल प्रसंगे भगवान महावीरनी साधनानुं ध्यान करवाथी बल मले.

दुनिया मां दुखनुं आववुं आवश्यक छे तेमां धैर्य राखी ते दुखज सुखरूप निवड़े छे. जीवबधी परिस्थितिओ अनुकूलज आव्या करे एम इच्छे पण ते प्रमाणे वर्त्ततो नथी तो पछी तेनुं परिणाम शुं आवे ? ॐ

ट्रीची थी बे पत्रो आव्या छे. तेमां एज संसारी फिकरो व्यक्त करायेली छे आ देहे केटलाक दिवस थी अस्वस्थता हती तेथी जवाब आपी शक्यो नथी. हवे ठीक छे शुं हतुं तेनो चित्रण नथी करतो.

काकाजीए तेमने पंच रतन नी पोटली विषे लख्यानुं जणाव्युं छे. ते मली शकशे के ? कलकत्ता थी धन्नुलालजीए लख्युं छे. के मने हुकम मले तो मोकली आपुं ? तेमा कया कया रत्नो होय ते पूछाव्युं छे मने ते तरफ लक्ष न हतुं तेथी मने खबर नथी के कया कया रत्नो क्यां वपराय छे तमे मने लखी जणावो कया कया अने केटला वजन ना रत्नो जोईए ? वलती टपाले जवाब लखो. !

वैशाख सुद मां मुहूर्त्त आवे छे पण काम संभालवा वालाओ ने हजु फुरसद नथी, कोई सारो कण्ट्राकर शोधायो नथी. जे काले जे थवानुं हशे ते थशेज ए निश्चय होवा थी चिंता थती नथी.

काकीबा प्रसन्न छे. तम बधाने बहु याद कर्या छे. हाल भक्तो नी भीड जामी रहे छे. धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन आशीर्वाद !

(पत्रांक ६६)

ॐ नमः

हंपि १७-४-६६

भव्यात्मा श्री भाण बाई अने बालको,

पत्र मल्युं. आ देहमां व्याधिदेवनी कृपा हती, तेथी जवाबमां ढील थई हवे ठीक छे. चिंताजेवुं नथी. मन बालक जेवुं अने आत्मा मां जेवी छे. बालक दूध पीने रमे तेने अटकावी शकाय नहीं पण तेने कांइ वागे नहीं अथवा नुकशान न करे तेनी मां चिंता राखे छे. तेम मनने आत्मा थी जुदो जाणी ते कांइ नुकशान न करी बेसे तेटलीज नजर राखी पोते पोताना भान मां रहेवुं. हुंआत्मा छुं आ भान भूलवुं नहीं मन तो जुदो छे. तेने साक्षी भावे जोयाकरवुं—आम करवा थी मन नो नाच कूद थी आत्माने गभराट नहि थाय. अेवा संस्कारो दृढ करवा तमने घणो समय सत्संग मां रही अभ्यास करवो जोइए. पण तेवा भाग्य होय तो बने.

गई सांजे मेघबाई नो कागल हतो. बधाना सारा समाचार लख्या छे. अने पोते तारी माफक फरियाद लखे छे.

माताजी आनंद मां छे अने बधाने आशीष जणावे छे. चंचलमुंबई मां प्रथम वर्ष नी परीक्षा आपी अहिं आवी पन्दर दिवस रोकाई पाछी मुंबई पहोंची गई छे! खूब आनंद मा छे. त्यां बालको अने याद करनारा बधाने आशीर्वाद । ॐ शांतिः

सहजानंदघन धर्मलाभ !

(पत्रांक १००) हंपि २०-४-६६

ॐ नमः

भव्यात्मा श्री नवीनभाई सपरिवार

आखात्रीजे हुं काकीवा अने केटलाक भावुकोसाथे मली नीलगिरि—कून्नूर जइए छीए त्यां एकाद मास कदाच लागी जाय. त्यांनु पतुं:—

लालचंद अनोपचंद &CO माउण्ट रोड कुन्नूर नीलगिरि खास प्रसंग होय तो त्यां पत्र आपजो.

काकीवाए आप सौने हार्दिक आशीष जणाव्या छे. धर्मस्नेहमां अभिवृद्धि करजो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन

अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक १०१) कुन्नूर-नीलगिरि

ॐ नमः १-५-६६

भव्यात्मा श्री नवीनभाई सपरिवार

पत्र १ हंपी थईने अहीं मल्युं. विगत जाणी. पंच रत्नोनी पोटली कलकत्ता थी आवी गई छे. माटे तमो लावशो नहीं ट्रीची थी पण नथो आवी.

तमे ट्रीची जवाना छो अने जवा भावना धरावो छो पण हजु मने महीनो मास बाहर फरवामां कदाच लागी जाय जेथी हंपी जवानुं तमे मौकुफ राखजो. अहिं केटलूं रहेवाय ते नक्की नथी. पण कदाच मे मास नो केटलोक भाग अहिं निकली जाय.

मसानी तकलीफ वधारे हती अने हजु छे. बेसवा मां तकलीफ जेवुं छे पण धीरे धीरे अहींना वातावरण थी आराम थतुं जशे एवी धारणा छे. अहिंनु प्राकृतिक सौन्दर्य विशेष आकर्षक छे. रात्रे खूब ठंडी पड़े छे. रोज वर्षा नी कृपा वर्त्ताय छे. सवारे ८॥-१० नित्य सत्संग थाय छे. मध्यम प्रमाणमां लोक लाभ ले छे.

तमे मारी मुसाफरी ना समाचार ट्रीची लखी जणावजो मैं पण सूचना घणु करी लखी मोकली हती. काकीवा अने डजनभर भाई-व्हेनो साथे आव्या छे. ते शिवाय ना आस-पास ना महेमानो आवजा करता रहे छे. वधाने श्री अनूपचंदजी सेवा सुश्रुषा घणाज उल्लास थी (करे छे) एमनो परिचय पण तमारा जेवा ने प्रेरक बने. धर्मध्यान मां वृद्धि करजो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक १०२)

ॐ नमः १५-८-६६

भव्यात्मा श्री नवीनभाई सपरिवार

पत्र मल्ये घणा दिवस थई गया. तेरापंथी पूज नी मुलाकात नुं व्यान जाण्युं निकट भव्य विना असली तत्व न पकड़ाय मत पंथ ना आग्रहोज आत्म-दर्शनमां बाधक छे. पोते दृष्टि अंध बीजा ने शुं तारी शके ?

मसा मां घणो सुधारो छे. तेथी तमारी दवानो उपयोग कर्यो नथी. लोही तो बंधज छे. ज्वलन अने शूल पण बंध छे. मात्र एक हजु बाहर छे ते सूकायो नथी तेथी आसन लगाडी शकातुं नथी. धर्म समन्वय भावना वश अहिंना भावुकोए पर्यूषण बीजा उजववा निर्णय कर्यो छे आपणने तो रोज पर्यूषण छे. अहिं पर्यूषण मां कल्पसूत्र वांचन वि० बधुं थाय छे· सां० प्रतिक्रमण पण थाय छे. समयसारनुं वाचन खरेखर आवश्यक छे पण गुरुगमे विशेष समजी शकाय तेवुं छे

काकीवा ने गांठ तो पांच वर्ष थी छे. मेरुदण्ड ना गर्दन पर ना मणका मां सोजो छे तेने गांठ कहे छे. ते वधे त्यारे सिर दर्द पण बहु थाय छे पण आत्म-मस्ती मां रहेता होवा थी दवानुं कोई वार सांभले. नहिं तो चलावे राखे छे, हमणा शांत छे. तेमणे तम बधाने बहु याद करी आशीर्वाद जणाव्या छे, अने पूछाव्युं छे के अहिं क्यारे आवशो ? धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि करजो· ॐ शांतिः

सहजानंदघन
अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक—१०३)

ॐ नमः

हंपि ३-९-६६

भव्यात्मा भाणबाई वेलबाई आदि सपरिवार

तमारा बन्ने पत्रो मल्या. साध्वीजीनुं पत्र पण हतुं तम सौने मारा तथा काकीबाना पण प्रतिखामणा स्वीकृत हो. आदेहे हजु मसानी कृपा छे. व्रणेक बहार छे. जेना ऊपर बेसतां दर्द थाय छे. आसन लागी शकतुं नथी. तेथी पत्रो ना जवाब अपाता नथी. माटे क्षमा पात्र छुं.

देशी सादा उपचार चालु छे. तेथी घणो सुधारो छे. हवे काळक्रमे शांत थई जशे. तेनी फिकर नथी. काकीबा आनंद मां छे. तम बधायने घणा ज हरख थी आशीर्वाद जणावे छे. साध्वीजी ने वंदना सुख शाता जणावे छे.

आ शरीर-गाडी मां बेठेला ड्राइवर ने पोतानुं स्वरूप मानी ने ते न भुलाय तेवी रीते उदय प्रमाणे व्यहार साक्षी भावे करवो. तेथी नवां कर्म न बंधाय अने जुना भोगवी लेवाय. काळ क्रमे जीव बंधनथी छूटी कृतकृत्य थाय. माटे तेवो अभ्यास तम बधाय करता रहेजो. याद करनारा सौने हार्दिक आशीर्वाद जणावजो. ॐ शांतिः

सहजानन्दघन खामणा सह आशीर्वाद !

(पत्रांक—१०४)

ॐ नमः

हंपि २८-९-६६

मुनिवर श्री आनंदघन.

खामणा पत्र मल्युं अहिं पण तेज दिवसे सां. खामणा अवसरे सौ जीवो थी क्षमानुं आदान प्रदान करतां तमने पण खामावी क्षमा आपी छे. ते स्वीकारजो !

आवश्यकता विना पत्र व्य० थी विरक्त रहेवुं. ऐज उचित छे.

अहिं पर्वाराधना मां लगभग ५०० सूधी नी व्हार थी आवनाराओ नी जन संख्या हती. गत दशमे ३०० सूधी नी हती. हवे विखराय छे. एम जंगल मां मंगल सधाय छे.

तमारे मसा नी फरियाद शांत थई हशे. आ देहे क्वचित् किंचित् वर्त्ते छे.

तमारी साधना मां दिनोदिन उन्नति थाओ. मंत्र आराधना जाणवा ना स्वभाव मां उपयोग जोड़ी ने एकाग्र पणे करतां देह भान छूटी जशे. शब्दनुं अवलंबन पण नहीं रहे. वीतेला समय नी पण खबर नहीं रहे क्वचित् बीजो दुनियां मां पण प्होंची जवाय. चित्त जे-जे चित्रो खेंचे ते बधा अनात्मा जाणी ते भणी उदासीन रही मात्र ते-ते चित्रो ने जोनार जाणनार मां ज स्वआत्म बुद्धिए टकवूं एज केवलज्ञान नो मार्ग छे. तेमां आरूढ थई कृतकृत्य थाओ ।

हरिजन बंधु ने जे जैनत्व प्रत्ये अभिरुचि थई ते अभिरुचि ने अभिनन्दन । आत्मसिद्धि नुं मनन अेमने जैनत्व अपावशेज माटे ते मनन मां तमे मददगार बनो छो. तेथी विशेष बनजा.

हिम्मतनगर—हिम्मत हाइस्कूल ना क्लर्क मनहरभाई दम्पति नुं चारेक महीना पूर्व पत्र हतुं बंने दीक्षार्थी छे तमारा समागम नी सलाह आपी हती पछी पत्र नथी.

धर्म ध्यान थी शुक्ल ध्यान मां प्रवेश हो । ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

सहजानंदघन हा० सा० क्षामणा पूर्वक
अगणित आशीर्वाद

(पत्रांक— १०५)

ॐ नमः

हंपी २९-९-६६

भव्यात्मा श्री भाणबाई वेलबाई मणी आदि.

पत्रो तो तमारा आवताज रहे छे. पण अहिं अमारा धर्म ना धंधा मांथी फुरसद ओछी मलती होवा थी जवाब लखवानी कजूसाई वर्त्ते छे, घराकी घणी होय, कमाणी थती होय तो बीजे ध्यान केम जाय ? तमे तमारा मां मगन अने अमे अमारा मां मगन. एवी वात छे. बाई ने पण हाल मां अहीं आववानी फुरसद नथी मली शकी.

"बधवा पणुं संसार नुं नरदेह ने हारी जवो" पोतरा ने दोयतरा मांथी छूटी मले तो ने ? आ मधु-बिंदु नो मोह उतरवो कठण जेने छे. तेने आत्म शांति क्यांथी मले ? तेवी दशा तमारी छे. शुं उपदेश

लखुं ? समजवानी तैयारी केटली छे. ? मास्तर लेशन आप्या करे पण लेशन करे कोण बोलो, ? केटलुं लेशन तैयार कर्युं ? आत्मा नुं भान केटलुं रखाय छे ? तो पछी बीजुं लेशन केम अपाय ? ॐ

मुंबई थी बाप बेटानुं खामणा पत्र हतुं. जवाब लखी मोकल्यो हतो वनडोक थी तेजबाई नुं कागल छे. पण मारावती तमेज आशीर्वाद लखी नाखो तो ? लखीज देजो. काकीबा ए तम सौने हार्दिक आशी-र्वाद जणाव्या छे· पजुसण मां अहिं जंगल मां आराधको नी संख्या वधीने ५०० थी अधिक थई हती मुरारजीना कागल आवे छे. त्यां जे-जे याद करे ते-ते सौने मारा धर्मलाभ जणावजो. धर्म-धननी कमाणी करवामां प्रमाद करशो नहि. ॐ शांतिः शांति

सहजानंदघन
अगणित आशीर्वाद !!

(पत्रांक—१०६) हम्पी ५-११-६६

ॐ नमः

भव्यात्मा श्री नवीन भाई सपरिवार,

पत्र मल्युं विगत जाणी 'श्री मद्नो संदेशो' अेनाम नो पुस्तक में जोयुं नथी. केटला पेज नुं छे ? कोणे छपाव्युं छे ? किंमत केटली छे ? क्यां थी मले छे ? लखशो.

मसा मां आराम छे माताजी नी तबियत ठीक-ठीक चाले छे लीवर मां थोड़ी गड़बड़ छे, हार्ट नो पण सामान्य बीकनेश तो रहेज छे. छतां आत्मध्यान ना बले मस्त छे.

तमारा काकाजीए तो अमारी साथेना व्यवहार ना लेखा जोखा समाप्त कर्या छे. अने-तेने अमे बधावी लीधुं छे प्रयोजन विना नी चर्चा छेड़ी अने पछी पोतेज उश्केराइ गया. मात्रि भाव· एमां अमने शो लाभ हानि ? ए विषे प्रत्यक्ष मिलने कंइक तमने जणावीश. श्रीमद्जीए नानी वये जे काम कर्युं ते काम आपणे पण यथाशक्ति महेनत करीये तो थोड़ो घणुं सफलता पामीये. ते काम असंभव जेवुं तो नथीज. अंतर्लक्ष नी साधना छे. ते समजण मां उतरवी जोइए. पछी ज तेमां प्रवेशाय तमे महेनत करता रहेजो.

अहिं सत्संग भवन निर्माण विषे हजु कोई प्रयत्न थयुं नथी कारण के कोई काम नी जवाबदारी उपाडनार नथी. पैसा आपनार तैयार छे. मात्र कार्यकर्ता नी खामी छे. थशे तो खरुं ज पण धीरे-धीरे दीवाली नजीक आवे छे. श्रगदियमनी अखंड धून रहेशे आराधको नी संख्या मां वृद्धि थई रही छे.

त्यां श्री रमादेवी बालको आनंद मां हशे अने सदैव रहो ए आशीष मारा तथा माताजी ना छे तमोने आववुं छे तो खुशी थी पधारो. सुमभाई आनंद मां छे. खेंगारभाई, हीरजीभाई आदिबधा आनंद मां छे. धर्म स्नेह मां अभिवृद्धि करजो. अहिं सत्संगभवन मां आपणे श्री शांतिनाथ भगवान जो प्राचीन प्रतिमाजी मलशे तो ठीक नहीं तो नवीन व्यवस्था करशुं तम जेवाने फुरसद अहिं होय तो निर्माण कार्य मां सफलता मले.

श्री उपाध्यायजी महाराजने एक चंदन ना दादाजी ४। इंचना हमी मां कोतरावेला मोकल्या ते जोई ने तेओ अतीव प्रसन्न थया छे. ॐ शांतिः शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक—१०७)

ॐ नमः	हंपी-२६-११-६६

भव्यात्मा व्हेन श्री भाणवाई सपरिवार.

प्रभु कृपा थी अहिं आनंद मंगल वर्त्ते छे. तमने पण ते प्रगटो.
प्रभु भक्ति मां जीवन बीते तेज लेखे लगशे. बाकीनुं तो जीवे घणुं अनेक भव मां करी लीधुं पण तेथी खरो सुख नज मल्यो· वधाय कुटुंबीओ ने तथा साध्वीजीओने मारा तरफ थी हार्दिक आशीर्वाद ! ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीश !

(पत्रांक—१०८)

ॐ नमः	हंपि-१६ १२-६६

भव्यात्मा श्री काकु शेठ तथा श्री विजयादेवी सपरिवार

पत्र मल्युं हकीगत जाणी. आ० रजनीश ए पोते दिगंबर-तारणपंथ संप्रदायना जन्मेल छे. जे संप्र० मूर्तिपूजाने बदले शास्त्र पूजा माने छे. माटे साकार उपासनाने तेओ न माने ए स्वभाविक छे. पण तेमनुं कथन अनेकांतिक नथी ए सांभलीने बाल जीवो भ्रम मां पड़ी शके खरा. माटे आपणे तो एक परम कृपालु ना ऊपर विश्वास राखो ने वर्त्तवुं· बीजा नी कडाकुट मां न पड़वुं. कृपालु नी छबी हृदय मां स्थिर करी अने 'सहजात्म स्वरूप परमगुरु' ए मंत्र ने अखंड राखता तमने जो मोक्ष न मले तो मारी पासे थी लेजो. अधिक शुं लखुं ?

विजया शेठाणी ने वली मुंजवण केवी ?

आत्मभान अने वीतराग स्वभाव वड़े देहात्म बुद्धि अने शुभा-शुभ कल्पना ऊपर जे विजय पामे ते विजयात्मा कहेवाय.

कल्पनाओ करीये तो थाय न करीये तो पोतानी मेले कांइ थतो नथी. आत्मा ने भूली जइए त्यारे ज कल्पना-प्रवाह मां तणाई जवाय छे पछी मुंजवण ऊभी थायज· आ भूलकाढी नाखो अने पछी जूओ के आत्मा मां मुंजवण क्यां छे. त्यांतो केवल आनंद-आनंद बस आनंदज छे.

आत्म लक्ष्मी ज जेने रोमे-रोमे प्रिय छे. ते लक्ष्मीवाई ने वली देह-लक्ष्मी शाता रूपे हो तो शुं अने अशाता रूप होय तोय शुं ? देह लक्ष्मी तो गमे त्यारे मसाण नी माटी मां मलवानी ज छे. पण तेथी आत्म लक्ष्मी मां शुं घटाड़ो थवानो हतो ?

सौने आत्म लक्ष्मी प्रगट थाओ, एज आशीर्वाद—

अहीं थी माताजीए सौने बहु याद करी सादर धर्मस्नेह जणाव्यो छे. परम कृपालु नी भक्ति मां तन्मय थाओ ॐ शांतिः

सहजानंदघन

आत्म स्मरणे अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक १०६)

ॐ नमः

हंपी २६-१२-६६

स्वरूप जिज्ञासु भव्यात्मा श्री हीरजीभाई तथा श्री लक्ष्मीबाई विजयाबाई.

पत्र मल्युं. विगत जाणी. परम कृपालुनी कृपा थी अहिं आणंद छे. त्यां पण हो !

वर्त्ते निज स्वभाव नो, अनुभव लक्ष प्रतीत.
वृत्ति वहे निज भावमां, परमार्थे समकित.

आत्मा ज्ञान स्वरूप पदार्थ छे. माटे जाण्या करवुं ए एनो स्वभाव छे. पोताना ज स्वरूप ने जोनारा जाणनारापणे जाण्या करवुं ए निज स्वभाव कहेवाय छे मात्र पोतानाज स्वरूप ने जाण्या करवानी क्रिया त्यारेज थईशके के ज्यारे पोताना स्वरूपथी भिन्न आ शरीर, वाणी, मन, तेनी क्रियाओ तथा तेना क्रियाफलने जाणवानुं छोडी देवाय. कारण के एक समय मां बे उपयोग न होय ज्यारे बीजा बधाने छोडो मात्र पोताने ज जाण्या करे त्यारे पोताना स्वरूप शिवाय बीजा कोई विकल्प नहीं उठे. आ दशा ते शुक्ल ध्यान कहेवाय. जे दशामां चेतनानो प्रवाह पोताना ज भाव स्वरूप अस्तित्व ना ख्याल ने टकाववा मां ज वह्या करे. ओ प्रयोग जो अन्तर्मुहूर्त पर्यन्त एकधारुं टकी रहे तो आत्मा नो अनुभव थाय ज थाय. अने देहादिनो नो अनुभव छूटी जाय—देहाध्यास छूटी जाय. जेटलो समय देहाध्यास छूटी गयो होय. तेटलो समय शरीर मां रहेली व्याधि नो पण अनुभव छूटी गयो होय छे. आ क्रिया संवर क्रिया कहेवाय छे. एमां नवा कर्म न बंधाय ने जुना कर्म ध्यानाग्नि वडे बलो ने विखराता जाय. आत्मा थी छूटा थाय जेटला छूटे तेटलो तेना थी आत्मा मुक्त थाय थतो जाय. अन्तर्मुहूर्त काल वोत्ये सत्तागत कर्मो एकदम उछालो मारे अने अनुभूतिधारा मुटो पडे छतां मनगमती चीज जमीलीधा पछी ते स्वाद मां जेम लक्षनुं अनुसंधान बीजा काम करतां छतांय लाग्युं रहे, तेम आत्मा मां लक्ष बन्युं रहे. आम आ लक्ष जागृतिकाल पर्यंत टकी शके पण ज्यां निद्राए घेरो घाल्यो के लक्षचूकी जाय छूटी जाय, त्यां पण सप्रतीति-खात्री बनी रहे. जेमके-हुं हीरजीभाई छुं. एवी प्रतीति निद्रामां पण बनी रहे छे. तेमहुं आत्मा छुं तेवी खात्री निद्रामां कायम थई शके छे. आ प्रमाणे ज्यां आत्मानुभव—आत्म लक्ष—अने आत्म प्रतीति क्रमशः वर्तता होय त्यां पारमार्थिक समकित—निश्चय समकित होय ज छाय. एम परम कृपालुदेवे अनुभव करीने इशारो कर्यो छे. आ इशारा प्रमाणे जो जीव महेनत करे तो पल में प्रगट सुख आगल से अधिकशुं लखुं ? मनन करजो. जे जीव पोताना के पारकाना कर्म ना कचरामां माथुं मारतो रहे ते जीवने समकित पामवानो अवकाश ज क्यां रहे ? ॐ

श्री काकीबाए आप त्रणेने घणाज उमलका थी जय सद्गुरुवंदन सह प्रणाम कह्या छे. पछी सुखभाई, अलपई बाला हीरजीभाई आदिए पण याद कर्या छे.

धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि करजो । ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

सहजानंदघन

हार्दिक आशीर्वाद सह सहजात्म स्मरण

ता० क—आपत्रमां लखेली शिक्षानी नकल डुमरे मोहनभाई नानजी काराणी ने लखी मोकलशो.

तद्दन मुक्त राखीए तो ते घन (बरफ अवस्था) थाय; तेमज ज्ञान-दर्शनमयी चेतना ने निर्विकल्प स्थिर राखीये तो निर्मल शुद्ध थाय अने कषायाग्नि थी मुक्त राखीये तो घन थाय आ प्रमाणे चेतनावंत चेतन नुं शुद्ध अने घन थवुं ते चारित्र कहेवाय छे आ चारित्र गुण नी आराधना गृहवासे वसनार ने घणीज कठण छे. ज्यारे अणगार ने सरल थई पड़े छे तेथी अणगारधर्मे स्थित थई ने बाह्य संयम पूर्वक संवरक्रिया नी आराधन नुं निषेध केम होइ शके ? होय शुभा शुभ क्रिया अने मनावे संवर क्रिया तो ते भूल सुधारवा पूरतुं एकली द्रव्य क्रिया नुं निषेध कथंचित् कर्त्तव्य छे अशुभास्रवोनुं तो साधकीय जीवन मां स्थानज नथी।

बाह्य वेष अने व्यवहार ना एकान्तिक आग्रहो थी मुक्त रहीने तमे जे संवर क्रिया भणी कूच करी रह्या छो तेमां जे-जे साधनो सहायक थता होय ते तेनी ज्ञानीओ तरफ थी सदाय आज्ञाज छे आ साधनाकाले शब्दावलंबन छूटी जाय ते वखते अर्थावलंबने निर्विकल्प स्थिरता थाय. ते स्थिरता जेटली आराधाय तेटलो समय संवंध रहेवाय छे. माटे शब्दावलंबन छूटी जवानो भय न सेववो। अमुक क्रिया ओ छुटी जशे तों ?......तेवी कल्पना न करवी आखरे बधो द्रव्य क्रियाओ छूटी जवी अने भाव अक्रियता निर्विकल्पता अखण्ड थवी एज यथाख्यात चारित्र कहेवाय छे. जेनी सिद्धि करवी एज ध्येय छे. ए ध्येय ने वलगी रहेनारे छूटी जती द्रव्यक्रिया नी फिकर नज करवी आवी दशा मां उत्पन्न थती लब्धि-सिद्धिओ पण ओलंगी जवी. क्यांय खोटी न थवुं एथो ज एकावतारी पणु सिद्ध थशे ?

निद्रा मां पण आत्म प्रतीति छूटे नहीं, पांच प्रकारनी प्रवृत्तिओ पैकी कोई पण प्रवृत्ति मां आत्मलक्ष खंडित थाय नहिं. अने निवृत्ति मलतांज मन आत्म रमणता मां डूबीजाय-त्यारे खरेखरुं साधु पद सिद्ध थयुं गणाय. ते पदनी सिद्धि थाओ एज अंतरना उमलका थी सदाने माटे तमने आ आत्मा ना आशीर्वाद छे वचनामृतमांना पत्रांक ८३३ कण्ठस्थ करी ध्यानकाले तेनुं स्वाध्याय करतां करतां, आत्म भावना भावतां भावतां निर्विकल्प थई ने स्वरूप निष्ठ थवानुं क्रम बांधजो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद !

(पत्रांक ११७) हंपि

ॐ नमः ७-७-६७

परम कृपालु देवना चरणारविंद मां अभेद भक्तिए नमो नमः

मुमुक्षु बन्धु श्री खोड़ीदास भाई

ता० २३-६ ना रोज आपनुं प्रथम पत्र मल्युं. अवकाश लई आ जवाब लखी रह्यो छुं. आपनी अंतर परिणति नी ओलखाण अभिनंदनीय छे. सर्वज्ञोए जेने केवलज्ञानकह्युं छे तेनी अंतर्मुहुर्तकालीन साक्षात अनुभूति ज्यारे जेने थाय, त्यारे तेने पारमार्थिक-सम्यक्त्व थयुं गणाय. ते अनुभूति नो प्रतीति भाव अखण्ड रह्या करे तो क्षायिक. क्वचित्मंद-क्वचित्तीव्र-क्वचित्-स्मरणक्वचित् विस्मरण-एवी हालतमां रहेतुं होय तो क्षयोपशमिक अने अनुभूति काले औपशमिक एम सम्यक्त्व नी त्रिविध अवस्थाओ होय छे

थली सास्वादन नाम नो भेद तेनी वमन क्रिया रूप होवाथी हेय छे. अने वेदक क्षायिक थतां पूर्वे अन्तर्मुहूर्त कालीन स्थितिनुं होय छे. त्रिविध कर्मथी तद्दन जुदो आत्मा साक्षात भास्यो नथी· पण अनुमान प्रमाण थी वेदाय छे अने ते पण खंडित के अखंडित धाराए आवीस्थिति बीजरुचि मां समाय छे. मिथ्यात्व एटले देहादि अने आत्मा नुं एकाकार अनुभव, तेनी हाजरी मां तमाम प्रकार ना कषायो अनंतानुबंधीज कहेवाय ज्यारे समकित नी हाजरी मां ते यथा प्रकारो अप्रत्याख्यानी गणाय; समकित साथे देश थी आत्मलक्षनी हाजरीमां प्रत्याख्यानी-ज्यारे समकित साथे सर्वथा आत्मलक्षनी हाजरी मां ते बधा कषायो संज्वलन कहेवाय छे. जेनी पासे समकित दीवड़ो होय तेना घट मां अंधारुं न होय. प्रकाश होय अने ते प्रकाश मां आत्मा तेनी क्रियाओ अने क्रियाफलः तथा मन-वाणी-शरीर रूपगणे योग, तेनी क्रियाओ अने क्रिया फल तद्दन जुदाजणाय; वली पोतानी चेतना मां थी उठता चिद्‌विकारो-कषाय भावो अने तेनी क्रिया तथा क्रियाफल पण आत्मा थी जुदा जणाया करे, ते कषायो उदय आवे त्यारे तेने पोतानुं भिन्नपणुं विसराय नहिं जोके ते कषायों ने पोते जीती न शके कारण के तेओने जीतवा नुं काम सम्यक् चारित्रनुं छे. परंतु समकित तेवो हालत मां आत्मभान रखाव्या करे, अने दर्शन ज्ञान चारित्रादि गुणो ने जगाड्या करे. समकित अने दर्शन गुण एक नथी भिन्न-भिन्न छे. जेम बल्बगत प्रकाश पाछुं सेलमां समावी शकाय छे तेम देह इन्द्रियादि मां स्थित चैतन्य प्रकाश ने पाछुं चेतना मां समावी शकाय छे.

अने ते समावा नी क्रिया एज समकित ने समावी ने पछी जोवुं ते सम्यक् दर्शन जे थये जड़-चेतन तेना व्यापारो अने लाभ हानि तद्दन जुदां-जुदां स्पष्ट नजरे देखाया करे ॐ

आपनी वर्त्तमान हालत नुं तारण आ ऊपरथी स्वयं करी शकशो एमां बीजाना अभिप्रायथी कोई मतलब नथी. आ विषय मां प्रत्यक्ष मिलन अपेक्षित छे. तेमाटे अवकाश मेलववो या नहीं तेमां आप स्वतंत्र छो. केवल पत्र व्यवहार थी आवां काम न पते. आ आश्रममां एकान्तिक भक्ति ज्ञान अने क्रिया नो आग्रह नथी रखायो ने जेने रास्तो होय ते स्वतंत्र छे. आपणे आपणी भावनाना मालिक होइ शकीए. आश्रममां रहेवानी अने भोजन नी व्यवस्था छे· गादला गोदडानी नथी. तेने बदले चटाइओ मली शके छे. होस्पेटथी केवल ७ माइल S. T. थी अवाय छे· अवकाश मल्ये अवसर जोजो. धर्मस्नेह मां वृद्धि हो· ॐ शांति.

सहजानंदघन
हार्दिक आशीर्वाद

(पत्रांक ११८)

ॐ नमः

हंपि ८-७-६७

भव्यात्मा बहेन श्री भाणबाई. विजया अने बालको.

ता. २४-६ नुं लखेलुं पत्र समय सर मल्युं हतुं. तेनो जवाब आजे अहिंथी जेठालाल साथे मुंबई मोकलुं छुं. त्यांथी तमने मली जशे. हंपि आववानी तमारी भावना ज्यां सुधी फले नहीं. त्यां सुधी सत्संगनी भावना टकावी, दरेक श्वासे 'सहजात्म स्वरूप—परम गुरु' रटता रहेवुं अने मन मां आर्त्तध्यान तथा रौद्र ध्यान

ना विकल्पो थवा न देवा. जे परिस्थिति मां थी पसार थता होइए तेने सारी के खराब न मानवी. पण समता भावे रहेवुं. तेथी पापबंधन थी बचाव थाय. अने पुण्यानुबंधी पुण्य नो संचय थाय आटली शिक्षा ध्यान मां लेवाय तो ते सत्संग लाभ तुल्य छे.

पूर्व ऋणानुसार जे-जे जीवोनो संबंध छे तेने साक्षी भावे जोवो-जाणवो, पण तेने सारो-खोटो न गणवो तो जीव बंधनथी मुक्त थाय.

आत्मा अने शरीर जुदा-जुदा ज ख्याल मां राखवा, आत्मा पणे पोताने याद राखवा थी शरीर मां आत्मा बुद्धि न थाय एज भावना टकी रहे तो शरीर छोड़ती वखते समाधि मरण थाय अने जीवनी सारी गति थाय. माटे तेवो पुरुषार्थ करवो ज. खालो रोवणारोवाथी कांइ छूटकारो न थाय. उचित महेनत कर्या थी ज छूटाय. अधिक शुं लखुं ? ॐ

अहिं माताजी, बाई, रूपाबाई, गुणवंती बाई, मोंघीबाउ आदि सौ आनंदमां छे. तमने हार्दिक आशीष अने याद लखावे छे. चंचल ता० २-७-६७ ना रोज मुंबई पहोंची गई छे. तेनी तबियत हवे सारी छे. एम० ए० मां दाखलथई छे साथे संस्कृत नो अभ्यास पण लीधो छे. एमां पण आगल वधशे ज आशारीया बाप ना परिवार मां ए पण एक रतन छे.

बालको वधाने सारा संस्कार आपवा. बाल जीवन तो रमतीयाल होय जेम छतां संस्कार सारा आपवा तो भविष्य मां तेमनुं जीवन दीपी नीकले माटे तेथी उचित केलवणी आपवी. गुरारजी नो कागल हतो. धर्मध्यान मां रहजो अने कर्म ध्यान छोड़जो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद !

(पत्रांक—११६)

ॐ नमः

हंपि २०-८-६७

मुनिवर श्री आनंदघन

ता० ५-७-६७ अने ता० १४-८-६७ नां लखेला बन्ने पत्रो मल्या शिरनामाना अक्षरो मां भूल होवाथी भटकी जाय बन्ने पत्रो नो समुच्चय प्रति उत्तर अति संक्षेप थी निम्नप्रकारे आलेखुं छुं.

पत्र १—आधुनिक श्वे० दि० उभयप्रकार ना उपदेशको नी प्ररूपणा प्रायः एकान्तिक जणाय छे. क्वचित विरल व्यक्तिओं पूर्व संस्कार बले मूल मार्ग ने यथार्थपणे समजी ने अनेकान्त दृष्टिए मार्गारूढ देखाय छे. जेओ मार्गारूढ छे तेओ मत ममत्व शुष्कज्ञान किंवा क्रियाजड़त्व थी मुक्त होय छे. जेओ उक्त दोषो थी आक्रान्त छे तेओमां "वृत्ति वहे निज भावमां परमार्थे समकित" होय नहिं घटमां अंधारुं होवाथी तेमने मोक्ष मार्ग सूझे के देखाय नहिं. तो भला एमनी वातो मां तथ्य केटलुं होय ? तेओ मार्गदर्शक केम होइ शके ? तेवाओ नी वाणी मां-आ काले यथाख्यात चारित्र, केवलज्ञान, मोक्ष, क्षायिक समकित आदि न होय. आत्मा देहादिथी भिन्न प्रत्यक्ष न देखाय; केवली ने वेष धारण करवुं पड़े, पंदर भेदे सिद्ध ए अपवाद

मार्ग; आ काले केवल समकितनी ज प्राप्ति थई शके विगेरे हीनसत्वनीज जाहेरात होय तेमां आश्चर्य शो? माटेज तेओ नुं संग खतरनाक असत्संग छे. "अप्पनाणेण मुणी होइ" (आचारांग) आत्मज्ञान होय त्यां मुनि पणु होय-त्यांसमकित होय· समकित रहित जैन साधु स्वांगवाला श्रणि शुद्ध बाह्य चारित्र पालवा छतां कुगुरु अने बाकी ना अगुरु छे. तीर्थंकर ना जीवो छद्मस्थ छतां गृहत्याग काले जे-जेवेष पूर्वे धारण करेलो होयते-तेनो त्याग करे छे. ते त्यागी, ने बीजुं कांइ ग्रहण करताज नथीज. तो पछी जेना घन-घाती चारे खतम थयां तेवा सामान्य केवली ने वेश अंगीकार करवानी आवश्यकता शी? वेष एतो साधन छे, साध्य नी सिद्धि पछी साधन अकिञ्चित्कर छे; छतां दृष्टि अंधताने लीधे मताग्रहीओ तेमने वेष पकडावे छे एज सांप्रदायिक रोग ना लक्षण छे.

ज्यां साचुं समकित होय त्यां अंशतः यथाख्यात चारित्र केवलज्ञान अने मिथ्यात्वथी मोक्ष थयेलुं होयज-समकितनी अखण्ड धारा रूप क्षायिक समकित पण आकाले आ क्षेत्रे होई शके छे. नवमां ग्रैवेयके पहोंचनारा अभव्योनी बाह्य क्रिया शुं जेवी तेवी होय? तो भला? मामुली तिथिप्रकरण जेवामां पण अटकेला, जरा कोई नी महत्ता सांभले के अंतर थी बली ने खाख थनारा, चालू रूढी थी टस थी मस न थई शकनाराओ मां बाह्य शांति के भक्तिरस देखाता होय तो तेनी कीमत केटली? सोनगढ वासीओनी मान्यता तेमनेज मुबारक आपण ने एनुं काम नथी. कृपालु देव ना अनुयायी पणे पोताने गणता मुमुक्षुओ पासे थी मान नी भीख मागवानीय आपणने आवश्यकता नथी; तेओ आपणा उपर खुश थाय के नाखुश तेथी आपण ने लाभहानि नथी थवानी मात्र प्ररम कृपालुए दोरवणी आपी छे तेने अनुसरवामांज आपणी शक्ति परिपूर्ण पणे वापरवी. एमांज आपणुं श्रेय नियमा छे· अधिकशुं जणावुं? दुनिया ने तारवानी लागणी उपजती होय तेणे सौथीपहेलां पोते तरतां बराबर शीखी लेवुं जोइए, माटे तूं तारु संभाल!

पत्रने वालू मां श्रीमद् राजचन्द्र आश्रमनी स्थापना समये अहिं आमंत्रण पत्रिका आवेली तेमां संस्थापक पणे शिवलाल नुं नाम हतुं· डंकावाला भोगीभाई थी पत्र व्य० नथी.

हजारो वर्ष ना सिद्ध योगीओ विषेजे किवदन्ती चाले छे. तेनुं रहस्य निम्न प्रकारे जाणज्यो—साकार उपासको मांना उचित पात्र नें भावनानी सिद्धि थये तेजे आकृतिनु एकाग्र भावे ध्यान करे ते साकार देखाय. जे व्यक्ति नुं आकार देखाय तेज व्यक्ति कंइ तेनो समीप सदेहे हाजर होती नथी छतां अमुक अवस्था पर्यंत साधकने ते रहस्य समजातुं नथी अने तेथी भरथरी-गोपीचन्द हजी जीवता छे—तेज देह मां जीवे छे एवी वात तेनामोढे वहेती थाय छे. अने थएली छे. बाकी ते-ते देहे विद्यमान नथीज. ॐ

टुंका मां जवाब लखी पत्र समाप्त करूं छुं. आज भक्तोनी भीड़ खूब छे, छतां तमारा मनने समाधान थया समय मल्यो ते उपयोग मां लइ विरमु छुं. धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. भिन्नता जाणसो नहिं ॐ शांतिः

सहजानंदघन
हार्दिक आशीर्वाद.

ॐ नमः

मुनिवर (श्री आनंदघनविजय)

क्रमश वे पत्रो मल्या. अहिं पर्युषण पर्वनी आराधना तथा कार्य-कारण न्याये पर्युषण रहस्य उपर वे वखत प्रवचन, रात्रे भक्तिक्रम आदि मां व्यस्त रहेवा थी जवाब मां ढील थई. भक्तोनी भीड़ पूनम सुधी रहेशे. आगामी का० सु० ८ थी १५ सूधी श्रीमद् राजचंद्र जन्म शताब्दी निमित्ते अठाई महोत्सव नो निर्णय लेवायो छे. तेथी तेनो पूर्व तैयारी माटे निर्णयो लेवा मां फुरसद ओछी हती. तमारा घणा वधा प्रश्नो आ उभय पत्र मां छे तेनुं संक्षिप्त उत्तर निम्न प्रकारे अवधारजो.

१-२-११ सिद्धचक्र नो जप के जेमां पांचे पद समाई जाय छे ते तमने वधारे सहायक नीवड़शे. कलाकार सामे फोटो राखी मूर्त्ति घड़े छे त्यारे तेनी दृष्टि जेम अनुक्रमे बंने मां रहे छे तेम परमात्मा अने आत्मा उभय मां दृष्टि स्थापन करी जप करवो एथी मन-पवन नी एकता सधाय छे.

३-४ कृपालु देव विषयक संग-दोषे जे भावो नी गौणता थाय छे ते न थवा देवो जागरूक रहेवुं. कल्याण मासिक मां तेमना खंडन करनार ने पोताना आत्म-लाभ नुंज खंडन-फल मलशे. बापड़ा दया पात्र छे.

देव पद मां गुरु पद तो समाई गयेलुंज होय छे. पण गुरु पद मां देव पद समावी ने जे आराधना कराय ते पेला करतां विशेष बलदायी निवड़े छे. कारण के—

"सद्गुरु ना उपदेश वण, समजाय न जिनरूप,
समज्या वण उपकार शो ? समज्ये जिन स्वरूप"

आ रहस्य भणी विशेष चिन्तन करजो ।

५—आ देहे आ देहधारीए हठयोगनी खास साधना नथी करी. परन्तु व्यतीत भवो पैकी एक भव ए साधना मांज लगाड्यो हतो. तेने लइने ते विषयकेटलोक ख्याल मां छे.

६-७—सिद्धासन ना डावा पगनी एडी बन्ने गंदा नालानी वच्चे अने जमणी लिंगमूल नी ऊपर राखवी, एनाथी भगंदर नथी थतुं पण ते तो मल ना सड़वा थी थाय छे.

८—जेम बने तेम स्वरूप जागृति टकी रहे तथा प्रकारे स्वाध्याय ध्यान नो क्रम पोते संजोगो ने अनुसरी घड़ी लेवो—विशेष हितकर छे. अने एज आज्ञा छे.

९—'पर प्रेम प्रवाह वढ़े प्रभु से'—एना भाव होय तो स्वप्न तो सुं जाग्रति मांज कृपालु ना दर्शन थई शके छे· माटे प्रेम मां निशंक थाओ.

१२—अनेक मंत्रो करतां एकज मंत्र मां निष्ठा अखंड रहे तो मनोजय सरल बने छे. एक वस्तु ना अवलंबनेज एकाग्रता थाय.

१०-१३—संकल्प विकल्पो ने जाणनार जुदो ज होय छे. ते जाणनार नुं विसरण न थाय. तेने पकड़ी ने रहेवाय तोज संकल्प-विकल्प नी फिल्म भणी जती दृष्टि अटके अने स्वरूपस्थ थवाय.

मार्गदर्शक नुं काम अंगुली निर्देश करवानुं होय छे. तथा प्रकारे हुं मारी फरज बजाववा प्रयत्नशील छुं. चालवानुं तमारे पोताने आधारे छे.

१४—आत्मसिद्धि नुं स्वाध्याय चालु छे ते क्रम बराबर निभावता रहेजो.

१५—उपयोग स्वरूपाथ थतां देह भान नुं छूटी जवुं—तेनुं नाम देहाध्यास थी मुक्त दशा. ते जेटलो समय टकी शके ते टकावी तेमां समय मर्यादा वधारवी जवी. यथासमय काया कुतरी ने टुकड़ो नाखी देवो के जेथी चुप रहे. गजा उपरांत तप-त्याग आवश्यक नथी. माटे तणातुं नहिं. तमारे भावी-चिन्ता करवा जेवी नथी. भावि तो आत्मार्थी नुं उज्वलज होय छे. समाज तजशे तो भले तजे, ते तो आखरे वाली मुकशे ? जेने तजवानुं छे तेने भले ने समाज तजे, आत्मा नुं समाज कांइ न करी शके. आपणे तो आत्मा छीए-शरीर नहीं. तो पछी भय शो ? ज्यारे समाज तजवानी खटपट करे तो तेने करवा देजो, आवी जाजो अहिं आ आश्रम तमारुंज समजजो.

१६—गुरुकुलवासनी वात साची पण ते सद्गुरु विषयक छे. नहिं के असद्गुरु विषयक आत्मज्ञान शून्य असद्गुरु जाणवा. गुण विकास करवा मां लोकलाज जती करवी. केवल अपराध थी बचवा लोक-लाज हितकर छे. दोषो बचवा तेने नजर मां राखवी, बीजी रीते नहिं.

१७—अज्ञानी गुरुनी निश्रा मां शास्त्रो वाग्जाल समान छे. तेज ज्ञानी गुरुनी निश्रामां अमृत रूप निवड़े छे. एक पोताना स्वरूप ने ओलखवा शास्त्रो कामना छे स्वरूप ने मुंझाववा नथी प्ररूपाया, माटे मुंझावुं नहीं आत्मभान अने वीतरागता ने टकाववामां कमर कसीने मंड्या रहो बधा समाधान अवश्य थशे

जिंदगी लांबी हो के टुंकी परंतु हाथ मां तो तेमां नो प्रत्येक वर्त्तमान एकक्षणज होय छे. तेनो चाहे सदुपयोग करो किंवा दुरुपयोग करो—स्वतंत्र छो.

मात्र बे घड़ी ना सदुपयोग थी जीवनो शिव थाय छे. तो पछी लांबी टुंकी नी कल्पना शा माटे ?

रमण महर्षि नुं उदाहरण लख्युं तेमां कार्य-कारण तपासो सामा जीवनी सत्पात्रता विनाज एकलुं निमित्त शुं करी शके ? तेमना आटला बधा भक्तो मां थी तेमनी कृपाना पात्र केटला सांभल्या ?

तुम करुणा तो उपरे, सरखी छे महाराज,
पण अविराधक जीवने, कारण सफलुं थायरे''' चंद्रानन जिन.

आ वात विशेष मथनीय छे. प्रथम पत्र ना लगभग बधाय प्रश्नो ना समाधान रूपे उपलुं अति संक्षिप्त लखाण जाणजो. बाकी ना ३ अंकनुं वर्णन समाचार रूपे छे.

आ देहे प्रायः स्वस्थता छे. अहिं सां० खामणा अवसरे चराचर तमाम जीवो नी साथे भवो भवना अपराधो नी उत्तम क्षमानुं आदान-प्रदान करतां तमारी साथे पण तथा प्रकार ना खमतखामणा कर्या छे ते स्वीकारजो.

चोथा प्रश्नोना प्रश्नोत्तर पछी लखी जणावीश. धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि करजो. ॐ शान्तिः

सहजानंदघन सां० खामणा सह हार्दिक धर्मस्नेह आशीर्वाद !

ॐ नमः

ईडर ११-६-६७

[मुनि आनन्दघन जी]

बीजा पत्रनुं समाधान निम्न प्रकारे अवधारजो.

तमे ठाम चो. एकाशणा आदर्या, तेनाक्रम मां सुधारो कर्त्तव्य छे. ते नीचे मुजब—

ज्यारे सूर्य स्वर होय त्यारे ज आहार नुं आरंभ करवुं चन्द्र के सुषुम्नामां नहिं ज, आ नियम बराबर पालजो. प्रथम मुखशुद्धि करी लई कठण चीजो ज वापरवा नी शरूआत करवी. एक-एक कोलीयो बराबर प्रवाही थई जाय तेटलो वखत चावीचावी गुंटलो उतारवो. १ कोलीयो ३२ वखत चवाय तो आंतरड़ानुं काम सरल थाय. दांत नुं काम आंत वडे न कराववुं. पाचन क्रिया मां मुख रस अमुक माप थी अनिवार्य होय छे· केवल सूकी चीजो ने चावतां ते पर्याप्त मात्रा मां भले छे. दालनो घुंटीयो ते पछी लेवाय. ते पण ठीक मुखमां फेरवी ने दरेक कोलीया ने अंते तो सर्वोत्तम. वेसाथे लेतां मुख रस बराबर उतर्या विनाज पेट मां पधरावी देवाय छे ते बराबर नथी. उदरनाखाडा ना चार भाग पैकी एक भाग पूर्ण थये जलपान करवुं. ने प्रत्येकघुंटडो मुखमां खूब फेरवी-फेरवी मुखरस मली गये नीचे उतारवो. एक भाग तेथी भरी फरी १ भाग आहार थी भरवो अने एक भाग हवा माटे खाली रहेवा देवो. अंतमां जो शक्य बने तो अचित्त वरियाली खूब चावीने उतारवी जेथी मुखरस विशेष मलशे अने रेच आवशे. पछी मुखशुद्धि करवी. दांतो मां अनाजनो अंश न रहेवो जोइए. भोजनान्ते जो तमने कफ प्रकृति नो उदय न होय तो दही मली शके तो तेनो घोलीयो पर्याप्त मात्रा मां लेवो तेथी तमारा नबला आंतरडा मां घणो सुधारो थशे. कफ प्रकृति नो उदय वर्त्ततो होयतो दूध वापरवो. तेमां कफ दोष नाशक सुंठ के हल्दी उचित मात्रा मां मेलववी. आहार लीधा बाद ०। कलाक वीत्ये दुध नुं प्राशन विधिवत् करवुं. पछी मुखशुद्धि करी पच्चक्खाण करवो.

एकला प्रवाही ऊपर रहेवुं होय वो ते चन्द्रस्वरमांज. बीजामां नहिंज. ईडरमां तमे एकला दूध ऊपर रहेवा लाग्या तेथी गंठीया नी असर थयानी फरियाद लखी हती. तेम होय तो तेनो आग्रह न राखो. वैद्यनी सलाह लइ साथे आरोग्यवर्धिनी जेवो कोइ प्रयोग रहे तो एकला दूध उपर विशेष लाभ थाय.

जूनी कब्जियत ने मटावा एकाशण ना समय थी एक कलाक पूर्वेज केवल नवशेका पाणी नुं एनिमा लेवाय तो घणो फायदो थाय. पण तेनी विधि साचववी जोइए. ऊंधा सूइ माथुं जमीन उपर रहेवा दई बन्ने घोडा उपर बने जंघाओ ऊभी राखवी जेथी गुदा जमीन थी बे फुट ऊंची रही शके अने शेर भर पाणी चडाववा थी ठेठ उपला आंतरड़ाओ मां ते जई शके. ते पाणी ओछामां ओछुं १० मीनट पेट मां रहेवुं जोइए. ०॥ कलाक रहे तो वधारे सारु. पछी नौली पूर्वक मल विसर्जन करवो. सांजे पण ते प्रयोग करवो. पाणी क्रमशः बे शेर पर्यंत वधारवो एक अठवाडीउं सतत उक्त प्रयोग थया पछी· अठवाडीउं एक वार अने एक शेर उपर पहोंचवुं त्रीजे अठवाडीए एकान्तरे पछी अठवाड़ीया मां बे त्रण वखत. एम एक महीना लगी करशो तो तेनुं परिणाम सुन्दर आवशे. पाणी मां लींबुंनी खटाई भले तो मल नी चिकाशने फाडीने आंतरड़ाओथी छूटुं पालवामां सहायता थाय पण ते अनुकूल न होय तो केवल जल पर्याप्त छे. ॐ

केटलाक दि० पद्धति ना करपात्रीओ मळ शुद्धि माटे गरमागरम पाणी ले छे. प्रथम थोडुं लेवानुं कारण आहार ना कोळिया मां वाळ के अन्य जन्तु कलेवर आवीजाय के कोई ना रडवानो अवाज आर्त दर्शन संभळाय के तत्काल अन्न जल छोडी देवो पडे।

तेवा ३२ अंतरायो पैकी कोई अंतराय आवे तो पछी पाणी पण न लेवाय. तेथी अथवा केटलाक सर्व प्रथम थोडुं जल लई ले छे परन्तु यथाय तेम नथी करता. सर्व जल लेतां करमुद्रा छोडवी पडे करमुद्रा छुटी जाय तो पछी आहार न लई शकाय तेवी हाल करपात्रीओ नी रूढी छे. माटे अंतमाज जल ले छे. क्षुल्लक-एलक ने ते कानून नथी. ठाम चोविहार तो अमे पदमां होयज छे तथा प्रकार नी टेव पडी गये शरीर मानी जाय छे.

हमे १॥ किलो दूधनी वात वैद्य कथित हती पण आ देहधारी प्राय क्वचित पाव भर के अर्धो शेर मात्र थी प्रायः ३ वर्ष. रही शक्यो छे साथे क्वचित् ५-६ केळा· विहार ना अभावे तमारुं हालनुं खोराक अधिक गणाय पाचवा ना नियमनुं पालन करशो तो त्रण चार रोटली घणी थइ गणाय. पहेले थी आहार विधि तपविधो साचवता नथी, परिणामे रोगी ना रोगी ज रहे. अेमा कोइ आश्चर्य नथी। अन्यथा तपथी देह शुद्धि कां न थाय ?

पुन्यविजय २० वर्ष उपर मल्या हता। कृपालुना अनुरागी थवामा थोडी मदद आ देहधारी नी पण तेमने लीधी छे। तेमना मा धर्मीरवाने लीधे जडता अधिक छे। हालमा तेओ नवाजिया क्षेत्रे छे। पण हजु तेओ स्वानुभूति मां प्रवेशी शके तेवी योग्यता नथी । तमे समाजनी बीक छोडी निशंक साधना करता रहो आपना भाग्य कोइ लुंटी शकशे नहीं गच्छवाळा कदाच हसशे तो ते शिवायनी दुनिया कोई ओळखी नथी अन्ते तो यथाय सम्बन्धो सता करवाना छे ने ? ॐ शांतिः हार्दिक आशीर्वाद !

सहजानंदघन

(पत्रांक १२२)

ॐ नमः

१७-६-६७

आत्मप्रिय श्री नवीनभाई, सपरिवार

तमारा बे पत्रो मल्यां पर्युषण पछी मुंबई थई हम्पी आववा प्रथम पत्र मां जणाव्युं ते भावना कार्यान्वित थाओ, ट्रीपी थी सामणा पत्र हतुं जवाब हतो मोकल्यो छे. अने तमने सामणा अवसरे अहिंथी कांकोता. सुमभाई आदि अम सौव स्नमावो क्षमा आपी ते स्वीकारजो.

का० सु० ६ थी पूनम सुधी शताब्दी महोत्सव नु अहिं नक्की थयुं छे अेकम सुधी नी १ नवकारसी ना चढावा मां ४१००० थया छे. व्ययामा मां वृद्धि थई रही छे ते अवसरे तमे अहिं न आवी शको ?

सादीमंत्री प्राणलाल भाई ने एक स्फटिक नी जिनमूर्ति जोइए छे तो ७-६ के ११ इंच पर्यन्त नी मळी शके तेनो अन्दाज खर्च शुं आवशे ? वि० तपास करी जणावजो.

प्रभुकृपाए अहिं आनंद मंगळ वर्ते छे. तम सौने पण यथां ओ आशीर्वाद छे. धर्मस्नेह मा वृद्धि हो,

ॐ शांतिः सहजानंदघन, हार्दिक स्नमता सह आशीर्वाद

(पत्रांक १२३)

हंपी ५-१०-६७

ॐ नमः

भव्यात्मा श्री हीरजीभाई दम्पती.

पत्र मल्यं वधा समाचार जाण्या. क्यारे थशे ? केम करुं थतुं नथी. एवा विकल्पो तजी उदयना नाटक ने केवल द्रष्टा भावे जोता रही आत्मभान ने अखण्ड करो. हुं आत्मा छुं ए एकक्षण पण न विसराय तेवी स्मरण नी आदत दृढतम करो. बाकीनुं बधुं पछी थई रहेशे. अधिक शुं जणावुं ?

अहिं कृपालु नी जन्म शताब्दी मनाववा माटे पूर्ण तैयारियो थई रही छे. घणा भाइओ सेवा आपी रह्या छे, तंबुओ माटे ना प्लोट मोटर रोड विगेरे चालू छे. काती सु. ६ थी वद १ सुधी नव दिवस नी नौकारसीओ नक्की थई तेना चढावा बोलाई गया छे. आमंत्रण पत्रिकाओ छपाववा गई छे. अने नित्य सत्संग गंगा पण प्रवहे छे. श्री ववाणीआ माटे पण तडामार तैयारीओ थई रह्या ना समाचार छे. त्यां ३ दिवस छतां मोटा पाया पर प्रोग्राम थशे. वडवा शायद मागसर पुनमे उजवे एवी संभावना छे, अने ते प्रसंगे आ सेवकने आमंत्रण पण आप्युं छे. परन्तु उदय योगे जे थवानुं हशे ते थशे. श्री लालभाई पर्यूषण मां अहिं हता. अहिं अमो बधा आणंद मां छीए. जीवन मां थी खेदभाव ने जलांजली आप्या विनां साधना विकास शक्य नथी माटे सदा मगनमां रहेवानी टेव पाडो. ॐ शान्तिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद सह सहजात्म स्मरण !

(पत्रांक १२४)

हंपी

ॐ नमः

३-१२-६७

भव्यात्मा श्री नवीनभाई सपरिवार

शा हाल छे ? न तो तमे महोत्सव मां आव्या, न तो कोई पत्र मोकल्यो महोत्सव घणां ज उल्लास थी सम्पन्न थयुं १॥ लाख खर्चाया, जोवा जेवुं बन्युं.

हवे ११-१२-६७ ना मध्याह्न पछी अमे अहिं थी श्रीवडवा आश्रमे (खंभात पासे) शताब्दी उजववा प्रयाण करीशुं. साथे काकीबा अने घणा भाई व्हेनो हशे ! १४।१५ बे दिवस नो प्रोग्राम छे पछी ववाणिया ईडर विगेरे कदाच जवाय. आगलनुं प्रोग्राम निश्चित नथी. काकीबाए तम बधाने हार्दिक आशीर्वाद जणाव्या छे. धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक १२५)

शिववाड़ी-बीकानेर

ॐ नमः

२६-१-६८

भव्यात्मा श्री नवीनभाई सपरिवार

अमो जोधपुर थी ता २६-१ नां सांजे स्टेशने जई ११ नी गाड़ी थी २७-१ ना प्रभाते अहिं सकुशल प्होता. प्रतिदिन व्याख्यान शहेरमां ६॥-१०॥ राख्युं छे. गईकाले २॥-४ जाहेर प्रवचन हतुं आजे ६॥-

११॥। उपरांत वपोरना ब्राह्मणो ना आमंत्रण थी भांडासर मन्दिर पासे लक्ष्मीनारायण मन्दिरमां ३-४ अेक कलाक प्रवचन थशे" अहिं अठवाडियुं थशे त्यार बाद जेवो उदय. जो बनी शक्शे तो जयपुर आवशुं. त्यां अधिक रोकाण शक्य नथी. काकीया प्रसन्न छे. तम सौने हार्दिक आशीर्वाद जणाव्या छे.

अहिं थी नाहटा परिवार तथा अमारी साथे ना भाई व्हेनो ना यथायोग्य. धर्मस्नेहमां अभिवृद्धि हो ! ॐ शान्ति :

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक १२६)

ॐ नमः ३-३-६८

आत्मार्थी मुनिवर आनंदघन

हुं गई काले २॥ वाग्ये सुख रूप प्होंतो छुं अने आवतो काले प्रयाण करी मद्रास, ट्रीचीनापल्ली आदि तरफ जाऊं छुं, त्यांथी पाछा फरी पुनम लगभग अहिं प्होंची आववानी भावना छे. वद २ ना फरी प्रवाण करी शिखरजी, राजगिरि, पावापुरी आदि तरफ जवानी संभावना छे आ वर्ष यात्रा नाना उदय रूप होय एम लागे छे.

तमारा अगाऊना बे पत्रो अने साथे बीजाओनी टपाल अहिं थी बीकानेर मोकली पण ते धार्या प्रमाणे समयसर न मली तेथी अगरचंदजी नाहटाए हाथरस मोकली. हुं समयाभावे हाथरस न जई शक्यो. त्यार पछी तेओए पाछी अहिं मोकली हशे पण ते गुम थई. अहिं न प्होंतो जेथो तेमांनी विगत ज्यारे अहिं स्थिर थाउं त्यारे तमे लखी जणावजो.

आबू थी अमारो संघ जीरावल्लीजी, मुंडराबल्ली, मानपुरा, चंद्रावती खंडेरो, राणकपुर, आदि पंचतीर्थी करी लगभग बीजा त्रीसेक तीर्थ धामो फरी गुलबर्गा थई अहिं आव्यो. सर्वत्र पारमार्थिक रुचि भणी वलण जोयुं कोटा, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर आदि शहेरो मां सारा जेवी जन संख्याए लाभ लीधो.

तमे जे साधन निष्ठा अपनावी छे ते सफल थाओ, ए अंतर ना आशीष छे. डॉ० हरिभाई विषे लख्युं ते सिवाय पण त्यां अध्यात्मरुचि जीवो छे. तेमां भोगीलाल, गोदड़भाई, कुवरजीभाई, आदि मुख्य छे. हरिभाई नो मने परिचय नथी. दादाजी ना जाप विषे फरी कोई वखत याद देवरावजो. हालमां तमे जे करो छो तेज एकनिष्ठाए कर्या रहो.

धर्मस्नेहमां अभिवृद्धि हो ! ॐ शांतिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद सह
सहजात्म स्मरण !

(पत्रांक १२७)

हंपि १४-३-६८

ॐ नमः

ध० सौ० रमाव्हेन तथा बालको.

सौ आनंद मां हशो-आपना बन्ने पत्रो मल्या' खूब आनंद थयो. आप बधानो भक्ति क्रम बराबर चाले छे. ते वांची प्रसन्नता थई. नवीनचंदभाई खूब मजा मां छे. आप चिन्ता न करता. हवे समेतशिखर जी नवीनचंद भाई ने साथे लई जईअे छीए. आपबधा धीरज थी रहेजो अने खूब भक्ति करता रहेजो. नलीन, भावना, रेणु नीता ने पण भक्ति ना संस्कार तो छेज आप तेने मजबूत वधारे करजो. भक्ति ना संस्कारो आखरे काम आववाना ज छे. खाली जाय नहिं आ शरीरे जरा तकलीफ लेवुं छे. एटले वधारे लखवानुं मन थतुं नथी. ॐ शांतिः ली. माताजी ना आशीर्वाद !

(पत्रांक—१२८)

हम्पी १४-३-६८

ॐ नमः

सद्धर्मरुचि भव्यात्मा श्री रमाव्हेन अने बालको.

तमारी सद्रुचि थी उद्भूत सद् विचारो अने वंदनादि परिणती घणा पत्रो मां उल्लेखित सांभली प्रसन्नता थई. सफर नुं वर्णन तो तमने क्रमे-क्रमे मल्या करतुं हशे ? ट्रीची पण जई आव्या. त्यां मोटेराओ ने परिस्थिति ना प्रभाव थी अलिप्त भाव केलववा बोध आपी शांत कर्या; अने अशुभोदय ने सद् निमित्त वडे समता थी वेदवा ना पुरुषार्थ ने जाग्रत राखवा श्री नवीन भाई ने आटली लांबी सफर मां साथे राख्या अने हजु कल्याणक भूमि श्री समेतशिखरजी, पावापुरी, राजगिरि वि० स्थलोए मोटेराओनी सम्मति थी साथे राखशुं. त्यां लगी तमे धैर्य्य राखता आव्या छो तेमां वधारो करजो. तमारा ए धैर्य ने हार्दिक अभिनंदुं छुं.

माताजी अने तेमनी बधी मंडली आप सौने बहु-बहु याद करता रहे छे. अने हार्दिक आशीर्वाद जणावे छे..

आत्मलक्षे मंत्र स्मरण धाराने अखंड करवा अने तेने पुष्ट करवा थोडुंक नियमित वाचन चालु राखवा मारी तमने पुनः-पुनः भलामण छे तेने जीवन मां वणी लेजो. आध्यात्मिक जीवन नी घड़तर विना मानव पशु जेवो ज बन्यो रहे छे. अेवा अनंत मानव शरीरो धारण करीने व्यर्थ विताव्या हवे एम न ज करवुं एवो निश्चय जे करशे ते आध्यात्मिक जीवन नी घड़तर माटे कमर कसी मंडी पड़शे.

जो संसारिक सुखो कायम रहेता होत तो कोइए आध्यात्मिक नित्य जीवन भणी दृष्टि सरखी करी न होत. परंतु ते कायम नथी रही शकता. माटे ज नित्य जीवन नी शोध परापूर्व थी चालती आवी छे. तथा प्रकार नी शोध माटे तम दंपती ने आ उत्तम अवसर सांपड्युं छे माटे ल्हावो लेवा मां कचाश आणशो नहिं सौ बालको तथा जिज्ञासुओ, परिचितो ने मारा तथा माताजी ना हार्दिक आशीर्वाद जणावजो. साध्वी मण्डल ने हार्दिक धर्मस्नेह जणावजो.

थै ग्रे अहिं थी १७-३-६८ नां प्रभाते प्रयाण करी मसांह अंते प्रायः कलकत्ता पहोंचवांनी आशा राखीए छीए.

तमे सती दंपती ने याद करी अतूट धैर्य त्ताखजो. हिंमत हार लगीरे थशो नहीं. माताजी ना पुनः पुनः अगणित आशीर्वाद ! चंचलब्हेन आजे अहिं आवी प्होंचा छे. ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

सहजानंदघन
हार्दिक आशीर्वाद

(पत्रांक १२६) देहरादून
ॐ नमः २-५-६८

भक्तवर्य श्री नवीनभाई सपरिवार.

गईकाले सकुशल प्होंच्यानुं टेलेग्राम मल्युं. अमो मंसुरी अने जडीपाटी तथा राजपुर ना केटलाक स्थलो जोई आव्या. छदामीलाल नी कोठी भीड़भाड़ मां छे. जडीपाटी जे मकान मां अमो उतर्या हता ते जीर्ण शीर्ण छे बाकी ना खाली नथी त्यांनो प्रोग्राम रद्द कर्यो, आजे मंडली ने हरिद्वार-ऋषिकेश फेरवी आवशुं. अहिंना भावुको ने संतोषवा राजपुर रोड तरफ ना बे त्रण मकानो जोई आव्या. हजु निर्णय थयो नथी.

हंसकुमार परमदी रात्रे अहिं आवी प्होंच्या अने बधी हकीगत जणावी. एनी भावना तो तमे जोई छे. आजे प्रभाते ६ नी बस थी गया फरी रवीवारे आवशे.

माताजी प्रसन्न छे तमे बधाने हार्दिक आशीष जणावे छे. तारा ब्हेननुं पग सुधारा ऊपर छे. मंडली ना तमाम सभ्यो तमने बहु-बहु याद करे छे. सौना यथायोग्य स्वकारशो. ट्रीची बधाने आशीर्वाद जणावजो. मंत्र स्मरण अने शरण भाव दृढतम बनावी तेमनी रजा मां राजी रहेजो. जो अनुकूलता जणाय तो बधाने तेड़ी आवजो. धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन सहजात्म स्मरणे हार्दिक आशीर्वाद !

(पत्रांक १३०)
ॐ नमः हंपि ३-५-६८

भव्यात्मा श्री नवीन भाई सपरिवार.

गई सांजे पत्र मल्युं-हकीकत बधी जांणी तारनुं प्रत्युत्तर अपायुं हतुं ते मल्युं हशे. आवती काले अमे सहस्त्रधारा P. W. D. बंगला मां रहेवा जईशुं अठवाडियुं त्यां रही पछी नीचे केनाल बंगला मां महीनो भर रहीशुं. सुशीलभाईए ते मेलवी लीधुं छे. जेथी बीजे रहेवाना प्रोग्राम रद्द कर्या.

गई रात्रे सतीशभाई अने रमेशभाई दंपती अहिं आव्या त्यारे समाचार तेमणे जणाव्या. गईकाले मध्याह्न पछी ऋषिकेश फरी आव्यो. गंगानी पेले पार घणु बांध काम थई गयुं छे.

मांताजी प्रसन्न छे तमने, रमाने अने बधा वालको ने हार्दिक आशीर्वाद जणावे छे मारापण सौने जणावजो. प्रतिदिन सवार नुं प्रवचन मन्दिर मां अपाय छे. हंसकुमार रविवारे आवी मंगल ना प्रभाते पाछा जशे. अेवी रीते प्रति सप्ताह आव जा करशे. धर्म ध्यानमां वृद्धि करजो. ट्रीचीनुं पत्र गई काले जयपुर मोकल्युं छे ते मल्युं हशे. ॐ शांतिः

सहजानंदघन सहजात्म स्मरण अगणित आशीर्वाद

(पत्रांक १३१) सहस्रधारा-देहरादून

ॐ नमः P.W.D. बंगलो ६-५-६८

भव्यात्मा श्री नवीनभाई सपरिवार,

गई काले पत्र मल्युं विगत बधी जाणी. गया शुक्रवारे ४॥-४॥ वाग्ये मुंबईमां जेतबाई नुं हार्ट फेइल थी देह विलय थयुं (ज्यां चंचल रहेती हती) ते समाचार सांभली काकीबा ना हृदये धक्को लाग्यो हवे तबीयत सुधारा पर छे बाकी ना तमाम आनंदमां छे. मनसुखभाई, तारा व्हेन, गई काले अहीं आवी गया छे. जून ना प्रथम सप्ताह लगी अहिं नुं भाडुं चूकवाई गयुं छे. सवारे नित्य ६॥ मंदिर भणी प्रयाण थाय छे. ७॥-९ मंदिर मां प्रवचन अपाय छे, जनता नी रुचि वधती जाय छे. मिसिस कृष्णचन्द्रजी अने त्रणे भाइओ सेवामां तत्पर रहे छे. तमारा समाचार तेमने जणावी दीधा छे.

चांदमलजी लोढा अधिकतर रामगंजमंडी रहे छे. अने कोटा मां तेमनो मोटो पुत्र हुकमचंद रहे छे. बन्ने स्थानो ना अेड्रेस निम्न प्रकारे :—C/o किशनलाल चांदमल लोढा क्लोथ मरचेंट पो० रामगंज मंडी Dt. कोटा (राज०) C/o हुकमचन्द केशरीमल लोढा C/o बजाजखाना कोटा (राज०)

अेमने पत्र लखो तो अहिंनी विगत साथे लखी जणावजो. माताजीए हार्दिक आशीर्वाद तथा बीजा बधाए सादर जयजिनेन्द्र लखाव्युं छे. धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि हो. ट्रीची बधाने अशीर्वाद लखी देजो ॐ शांतिः

सहजानंदघन आशीर्वाद!

(पत्रांक १३२)

ॐ नमः देहरादून २२-५-६८

भव्यात्मा श्री नवीनभाई सपरिवार

पत्र मल्युं. जवाब मां ढील थई ते क्षन्तव्य छे. जयंतीभाई नी मंडली सकुशल प्होंती, गई काले तेओ ऋषिकेश हरद्वार जई मसूरी गया छे. आजे अहिं आवशे पछी तेओ तथा मनसुखभाई, ताराव्हेन, चन्दना त्रिपुटी काले अथवा एकाद दिन आगे पीछे काश्मीर तरफ प्रयाण करशे. अेवी इच्छा छे. स्वास्थ्य सौना बराबर छे. अमारी मंडली प्रसन्न छे. माताजीए आप सौने हार्दिक आशीष अने बीजाओए तथा लालाजी नी मंडलीए सादर धर्मस्नेह जणाव्यो छे मिसिस कृष्णचन्द्रजीए आप सौनी आगमन प्रतीक्षा खूब करी तेमने समझावी दीधा छे के हमणा अनिवार्य कार्य प्रसंगे रोकाई जवुं पड्युं छे.

मूर्ति विषे हकीकत जाणी १। फुट जाडाई अने तेमां ११ इंच नी खोदाई तथा ४ इंच पीठफलक रहे तो ते सुन्दर अने मानोपेत गणाशे ५। इंच ऊँचाई बराबर छे कमल पण व्यवस्थित थवुं जोइए, मूर्तिनुं चहेरो तथा तेमां आंख नी खरी खूबी तमने समजावो छे तेवी जोइए अंगोपांग बधा यथावत् थवा जोइए.

बनी रह्या पछी अमारी परीक्षामां थी पास थवी जोइए. अने बनीने मुकर्रर समय पर मली जाय तेवी पहेले थी बोली करवी जोइए. पैसानो सवाल नथी. ते मूर्ति ने लगती छत्री पण योजनाबद्ध अने कलामय थवी जोइए. तेनुं पण नक्की करीलेजो. अने पछी धन्नुलालजी ने व्यवस्थित जणावी देजो अमने पण सूचना लखी जणावजो. कुमार ने जतो करजो आ कलाकार ने जणावजो के श्रीमद्ना त्रीसेक आश्रमो छे तेमां आ एक सेम्पल जो पास थयुं तो तमने योजानां चांस मलशे. माटे बधी कला ठालवी दे, पैसा ने नहि जुवे, परमार्थ लाभ नजरमां राखे, मूर्ति निर्माण कार्य पण उत्तम नक्षत्र अने समयमां थवुं जोइए, गुरु पुष्य के रवि पुष्य होय तो घणुंज उत्तम गणाय, तमे कोई ज्योतिषी ने पूछी ते नक्की करावजो, ते नक्की थये मने जणावजो,

काश्मीर थी मंडली आव्या पछी अमो दक्षिण भणी प्रयाण करशुं, कये रस्ते जवुं ते त्यार बाद नक्की थशे, अस्तु धर्मध्यान मां मग्न रहेजो, लाभालाभ प्रत्ये साक्षी रहेजो, धूप छाया प्रमाणे परिस्थितिओ बदलायाज करे छे, तेथी प्रभावित न थवुं ओज पुरुषार्थ कर्त्तव्य छेज, रमाव्हेन अने बालको तथा याद करनारा सौने हार्दिक आशीर्वाद जणावजो, ॐ शांतिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद

(पत्रांक १३३)

ॐ नमः

६-६-६६

भव्यात्मा श्री नवीनभाई सपरिवार

अमो गई कालेज अहि सकुशल आव्या छीए. चंचल आदि काश्मीर फरी आव्या· अहिंनो समाज गद्-गद् छे. प्रवचन मां बहु भीड़ थाय छे. विद्यानंदजी महाराज ने मल्यो प्रसन्नता थई.

गमे तेम करी चारेक दिवस मां अही थी रजा लई हाथरस आग्रा ग्वालियर भोपाल खंडवा मनमाड़ औरंगाबाद वि. थता हम्पि आवता पक्ष मां पहोंचवा धारणा छे. जयंतीभाई फरी मली गया हशे हंपीज आवो ते तरफ हाल मां नथी आववुं, गुरु कृपाए ग्वालियर तरफ जतां भय शो ?

देहरादून समाज खूब जाग्रत बन्यो. पाछलथी भीड़ खूब बधी-मिसिस कृष्णचन्द्र अने सुशीलभाई वि० खूब जाग्रत बन्या. माताजी वि० अमो सौ स्वस्थवत् छीए. तमो सौ सदा रहो एज आशीष. धर्मनिष्ठाए गाड़ी पार थाओ. ट्रीची तमाम ने आशीष. तम सौ ने पण मारा तथा माताजी ना आशीष. बाकीना बधाना जयजिनेन्द्र ! धर्मस्नेह मां वृद्धि हो ! ॐ शांतिः

सहजानंदघन आशीर्वाद!

(पत्रांक १३४)

ॐ नमः

हंपी-२३-६-६८

भव्यात्मा श्री नवीनभाई सपरिवार.

पत्र संप्राप्त थयुं. देहरादून-मेरठ-हाथरस-आग्रा-ग्वालियर-ललितपुर-विदिशा-भोपाल-खण्डवा-खामगांव गुलबर्गा अने हंपी ए रस्तो टुंकोटच होवा थी पसंद कर्यो अने ता-२०-६-६८ ना अहिं क्षेम कुशल प्होंची आव्या चंबल घाटीने अभयपणे वटावी गया.

धन्नुलालजीए कृपालुदेवनुं खड्गासन चित्रपट मोकल्युं छे. ते आ पत्र साथे मोकलावुं छुं पीठफलक सिवाय केवल मूर्ति पातलुं शरीर होवा थी सुरक्षित केम रही शके ? जेथी पीठफलक सहित उचित छे. अने पीठ भणी वंधकघरनी आरसनी छत्री बनी शकशे. माटे तेवी गोठवण करजो. ते संबंधी कलाकार नी विशेष सलाह शी छे. ते विचारी ने लखो जणावजो. पारसान ने पण सूचवजो.

छेल्ले ३ दिवस मां १००० माईल नी सफर थई. तेथी आराम आवश्यक हतुं ते लई ने पत्र ने लखुं. मनसुखभाई तेमना सासुजी अेवं खेतसी भाई शनिवारे प्रभाते अहिंथी प्रयाण करी बेंगलोर तरफ गया त्यां साध्वीजी विचक्षणश्रीजी आदि ने मली मद्रास अने कलीकट जशे. देहरादून मां धीमे धीमे घणा जणा जाग्या. सुशीलभाई त्रणे भाइओ पण भक्ति रंगे रंगाया. मेरठ मां तो हंसकुमारजी विगेरे सेंकडो भाई व्हेनो भक्ति रसे तरबोल बन्या. हाथरस मां नो एकज घर सिवाय थोड़ाक पंजावीओए लाभ लीधो. ग्वालियर मां जागृति आवी भेलसा (विदिसा) अने भोपाल मां अनेक भावुको अनुरागी बन्या. गुलबर्गा नुं तो शुं कहेवुं ? हवे गुरुवारे कंपली अने त्यार पछी बेल्लारी जवुं पड़े एवो तेओनो आग्रह छे. जई आवशुं. तमारी गाड़ी पाटे चढी हशे ? ट्रीची नुं काम केवुंक चाले छे ? तेओ ने तथा तम सौने मारा तथा माताजी ना अगणित आशीष. बाकीनी मंडली ना सादर जयजिनेन्द्र ! हवे अहिं भीड़ थवा लागशे, हजु आसपास खबर प्होंच्या नथी. धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो रमा अने बालको ने कोटिशः आशीष. ॐ शांति पत्रोत्तर आपजो.

सहजानन्दघन अगणितआशीष

(पत्रांक १३५)

ॐ नमः

हंपी

७-७-६८

मुनिवर आनंदघन,

परम कृपालु देवनी जन्म शताब्दि निमित्ते आ वर्षे लगभग १६०० माइल नी सफर थई भारत ना घणां गाम नगर अने तीर्थोनी सुखद यात्रा थई, घणा नव-नवा जीवो टच मां आव्या. सर्वत्र आध्यात्मिक रुचि वधती जोवामां आवी,

बराबर ६॥ मास सफर चाली ता-२०-६ ना अहिं आव्या पछी आस-पास ना भावुको पोत पोताना ग्राम नगरे लई गया, ते सौने संतोषी अहिं आव्ये ३ दिवस थया छे. सत्संगीओनी पधरामणी थती जाय छे,

तेमां थी अवकाश थोड़ो मळे छे, टपाल ना ढगला एकत्र थाय छे यथाने जवाब आपी शकाय तेम लागतुं नथी.

दादाजी नो आदेश छे के—नवपद नुं ज आत्म लक्षे जप करो माटे एमनी आज्ञा प्रमाणे एज कम जमावी द्यो. एओ प्रत्यक्ष थई ने तमने ओज भलामण करवाना होवाथी ओमणे प्रत्यक्ष करवानुं हमणां गौण करी द्यो, कारण के एमना वती आ देहधारी ज तमारी पूर्ति करी रह्यो छे, वासक्षेप दिव्य होवाथी पोष्ट मां मोकलतां आशातना थाय अने तेथी ते दिव्यता मां भंग पड़े अतएव ए रीते मोकली शकाय नहिं, अतः ए इच्छा ने शमावी द्यो, माताजीए हा० धर्मस्नेह जणाव्यो छे ॐ शांति.

सहजानंदघन हा० आशीर्वाद !

(पत्रांक १३६)

ॐ नमः

हंपि-२५-७-६८

मुनिवर श्री आनंदघनवि०

पत्र मल्युं साधनक्रम अपनाववा बदल अभिनंदन. ते वड़े दिनो दिन आत्म-शुद्धि अने आत्म सिद्धि विकसे जाओ ए अंतर ना आशीष छे.

जेम दादाजी नो जाप अने वासक्षेप मंगाववा नी इच्छा नो जय कर्यो तेमज दैवी शक्ति वड़े वासक्षेप प्रेषण नी इच्छा ने पण शमावो, कारण के आत्मा प्रगट करवो छे· ए मुख्य कार्य होवा थी ते सिवाय नी उठती तमाम इच्छाओ बाधक छे. पुण्योदये स्वतः थाय तेमां बांधो नथी परन्तु इच्छता बांधो आवे एम छे. कारण के एक भव मां अनंता भव टाळवाना छे. इच्छा नी संतती वड़े भव वधे, पण घटे नहीं. माटे जागेली तेवी वृत्ति ने शमावी आत्म स्मृतिए स्वरूप जागृत रहो एज भलामण छे.

तमारुं स्वास्थ्य ठीक रहेतुं होवा थी, तेने हवे धक्को न लागे तेवी प्रणालीए तप करजो, कारण के आ काया कुत्री ने बटकु नाखीए तो चुप रहे. छानी-मानी पड़ी रहे· मोह वश तो एने कशुंज आपवुं नथी. आत्मार्थेज एने टकाववुं छे. आ देहे स्वस्थता छे, माताजी प्रसन्न छे. आपने धर्मस्नेहे नमस्कार जणावे छे. धर्मस्नेहमां अभिवृद्धि हो ! ॐ शांतिः

सहजानंदघन

आत्म स्मृतिए अगणित आशीर्वाद

अमदावाद थी श्रीलालभाई पंदर दिवस अहिं वितावी हमणां पाछा फर्या

(पत्रांक—१३७)

हम्पी-१-८-६८

ॐ नमः

भव्यात्मा श्री नवीन भाई सपरिवार,

तमारुं सविस्तर पत्र मल्युं, घणो दिना बांधी तमारा था हवे केम छे. त्यां यथाने आशीर्वाद लख्यी जणावजो. मूर्ति तथा देरी बाबत चोकस समाचार क्यारे आपशो ? पद्मचन्द्रजी जो युरेन प्रयोग करे तो

घणो फायदो थाय, बाकी कर्म ने शरम नथी. काकीबा नी तबियत ठीक ठाक चाले छे. बधाय ने घणा-घणा आशीर्वाद जणाव्या छे. तमारुं तंत्र सुधरे अे आशीर्वाद. पद्मचन्द्रजी ने पण हार्दिक आशीर्वाद.

तमारुं कार-एक्सीडेंट मात्र कार उपरथीज पसार थई गयुं. ते मुद्दत बीत्या पछी शामाटे सफ़र मां गड़बड़ थाय ? कलकत्ता ना वैद्यराज अहिं आवी मली गया. पाछा अवकाश लईने आवशे. अहिं बहु गम्युं. खेतसीभाई नो बीजा नंबर नो पुत्र सोलमां वर्षे थोड़ा दहाड़ा ऊपर गुजरी गयो.

सत्संग भवन निर्माण माटे हवे पर्यूषण पछी कइंक चौकस निर्णय लेवाशे. मारी तबियत ठीक छे. सुखभाई सुख मां छे कस्तूरबाई पोयरीये गयां. मांघीबाई अने रूपांबाई सासरीये गयां. माताजी ना मोटा व्हेन आव्या छे. धर्मस्नेहमां वृद्धि करजो ॐ शांतिः

—सहजानंदघन

(पत्रांक १३८)

ॐ नमः १४-८-६८

भव्यात्मा श्री नवीनभाई सपरिवार

तमारुं पत्र तेमज देरी नो मेप अने तेना खर्च नो अंदाज ए विगत जाणी. पारसन देरी नो ए खर्च उपाड़ी नहीं शके. बीजा कोई नो तेवो आर्डर के विचारणा सांभली नथी

एओज पोताना रूम नी बाजू मां पोताना अंगत साधनालय बनाववा इच्छता हता. तेथी आ रजनुं गज थयुं. हवे मूर्ति के देरी विषे ज्यां सुधी अहिंथी तेमज कलकत्ते थी खुलाशा भर्यो ओर्डर नहिं मले त्यां सूधी कशुं बनावता नहीं. पारसन ने पण पत्र लखी मोकल्युं छे.

माताजी नी तबियत सुधारा ऊपर छे. रोज बे त्रण माइल फरवा जाय छे, तम बधायने हार्दिक आशीर्वाद जणावे छे. आजे मुंबई चोर्डी थी केटलाक पेसेंजरो अहिं आवी पहोंचशे अहिं हजु सूधी भीड़ नथी जामी, हवे जामशे.

सूरत आदिना समाचार पत्रो मां वांच्या खूब आसमानी सुलतानी थई गणाय. ट्रीची मां बधाने मारा हार्दिक आशीर्वाद जणावजो. तमारा पार्टनर केम छे ? आशीर्वाद कहेजो. श्री रमा अने बालको बधाने हार्दिक आशीर्वाद धर्मस्नेहमां वृद्धि करजो. मनसुखभाईए यादी लखी छे देवी यादकरे छे ॐ शांतिः

—सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक १३९)

ॐ नमः हंपि-१४-८-६८

भक्तवर्य,

फुरसद ना अभावे शिक्षा पत्र केम आपी शकाय ? हवे कृपालु नो परिवार वर्धमान थतो जाय छे. बधाने पत्र थी संतोषवा अशक्य छे. तेथी गणाय नहिं अने वीण्या वीणाय नहिं तेटला हार्दिक आशीर्वाद अमारा तथा माताजी ना तम सौ स्वीकारताज रहेजो.

, बधाने आशीर्वाद जणावजो मोटर गाड़ी ने टांका-टेभा आपी ने आगे कूच करता रहेजो आपणो.. देश क्यां दूर छे ? कृपालु ने शरणे गएला नजीक ज होय ने ? मात्र शरण ने स्मरण साचा होवा जोइए, तेमां पोळ चाले नहिं, व्हेनश्री प्रसन्न हशेज, धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो ॐ शांतिः

सहजानंदघन

अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक १४०)

ॐ नमः

हंपि-२०-८-६८

भव्यात्मा श्री नवीन भाई सपरिवार

मारं पत्र तमने मळी गयुं हशे ? धन्नुलालजी ने तमारं पत्र मल्यं नहिं होय ते पहेला तेमणे तमारा माटे पत्र तैयार करी मने वंचावी तमने मोकलवा अहिं मोकल्युं छे ते आ साथे मोकलुं छुं तदनुसार व्यवस्था करजो,

सूरत शहेरनी वीगतो छापाओ द्वारा कंईक जाणी, तमारी अंगत रीते त्यांनी हकीकत लखी जणावजो, मृगेन्द्रमुनि ना पत्रोत्तर ने वांची ते तेमने पहोंचतो करजो, आजे पर्वाधिराजनी शरूआत थई रही छे, हजु खास भीड़ नथी क्यांक अनावृष्टि तो क्यांक अतिवृष्टि, अने तेने लीधे दुर्भर जीवन निर्वाह ने माटे चोरी-चकारी तथा अल्प राजतंत्र नी आडखीली ने वश थई मुंझायेला केटलाक सत्संगीओ गेरहाजर देखाय छे, पण हवे भीड़ जामशे.

काकीबाए तम सौने बहु याद कर्या छे अने अगणित आशीर्वाद जणाव्या छे, तबियत सुधार पर छे, पद्जीमा मां आराम थतुं जाय छे, ट्रीची बधाने आशीष जणावजो, घर मां बधाने हा० आ० धर्म स्नेह मां वृद्धि करजो, ॐ शान्तिः

—सहजानंद

अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक—१४१)

ॐ नमः

हंपि८-९-६८

भव्यात्मा श्री खोडीदासभाई सपरिवार,

आपना छेल्ला बन्ने पत्रो मल्या हता. अवकाश ना अभावे प्रत्युत्तर मां ढील थई जे क्षंतव्य छे.

सां० क्षामणा अवसरे जेम आपे खमाव्या तेमज अत्रे थी अम सौ ए आप सौने क्षमा आपी क्षमा मांगी छे. तेनो पारस्परिक स्वीकार थाओ ! संसारिक-पद-प्रतिष्ठा निमित्ते करेला नियाणा नु फळ संसार छे जे हेय छे परन्तु केवल आत्मशुद्धि ना कारण पणे निष्काम भक्ति नुं नियाणुं मोक्षार्थे छे. माटे ते अमुक हद सूधी उपादेय छे. माटेज ते जयवीयराय नी स्तुति मां पण गोठवायुं छे. कृपालु देव ने १६४८

मा माग सु० ६ पहेलां क्षायोपशमिक सम्यक्त्व हतुं ते क्यारेक छूटी जायने पाछुं संधाय एवी अवस्था वालुं होय छे. ते छुटी गयुं हतुं तेवी अवस्था मां उपला भावो तेमना उपयोग मां हता. माटे ते अवस्थामां नियाणुं नियाणुं घटे छे. विशेष प्रत्यक्ष मिलने जणाववा योग्य होवा थी यथावकाशे ॐ धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि करजो ॐ शांतिः

—सहजानंदघन

सां० खामणा पूर्वक हार्दिक आशीर्वाद !

आश्रमवासी आत्मा ना पण खामणा स्वीकारशो.

(पत्रांक १४२)

ॐ नमः

देहरादून १३-९-६८

भव्यात्मा श्री नवीनभाई सपरिवार.

खामणा पत्र समयसर मल्युं. पण भीड़ अधिक होवाथी तेमज टपाल ना ढगला आववाथी जवाब मां ढील थई ते क्षंतव्य छे.

अहिं पर्वाराधना घणाज उल्लास थी थई. खामणा काले छसो थी अधिक संख्या हती. सौथी उत्तम क्षमा नुं आदान-प्रदान करती वेला अमसौए तम सौने पण खमी खमाव्या छे. ते स्वीकारी निशल्य थजो.

माताजी नुं स्वास्थ्य ठीक-अठीक चाले छे. तेमणे तम सौने खमावी खूब याद कर्या छे. आ देहे ठीक छे तम सौ स्वस्थ हशो ? कलकत्ता थी सुंदरलालजी तथा तेमना भाणेज पर्यूषण करवा अहिं आव्याहता ते गया मंगलवारे पाछा फर्या. विमल बाबू पण अहिं आवी गया.

धन्नुलालजी तो मोटो खर्च करवा मक्कम छे. माटे तेओ जेम ओर्डर आपे तेम तैयारी करजो.

आ वेला बेंगलोरथी गुजराती भाई व्हेनो आव्या हता तेओए खूब प्रचार कर्यो छे. वखते चोमासा बाद बेंग्लोर जवुं पड़े. तेमां एक मोटा कण्ट्राक्टर छे—चंदुभाई नाम छे. तेओ सत्संग-भवन अने वीसेक रूमो बांधी आपवानुं स्वीकार्युं छे. सत्संग भवन नुं ग्राउण्ड तैयार थई रह्युं छे. पोते गया सोमवारे पाछा आवनार हता पण. अक्सीडेंट थवा थी अटकी गया एवा समाचार छे. अनूपचन्दजी श्रावक आव्या हता दीवाली बाद तेमना रूमो नुं काम काज शरू थशे.

हीरजीभाई तेमना जमाई रतीलाल भाई सपरिवार साथे आव्या छे. खेतसीभाई उपर तेओ हवे प्रसन्न छे. त्यां अनिवार्य अंगे शनिवारे एटले आवती काले पाछा जशे. अमदावाद थी लालभाई अने बालुभाई पर्यूषण करवा आव्या हता आ वखते नवा घणा आव्या हता ते सहज जाणवा लख्युं छे. तमारी मुंजवण ओछी थई हशे ? त्रीची थी पत्र छे हवे जवाब लखीश. धर्मस्नेह मां वृद्धि हो ! मृगेन्द्र मुनिने जागृति आपजो. सूरत मां तमे आबाद वसी गया ते जाणी संतोष थयो. ॐ शांतिः

—सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद !

ॐ नमः   इंपी ता०-३०-६-६८

मुमुक्षु मुनिवर श्री आनंदघन

पत्र संप्राप्त थयुं विगत सर्व ज्ञात थई परम कृपालु देवनी कृपाथी अहिं आनंदनी गंगा लहेराय छे. तमने पण हो ! तमारा प्रश्नो नुं समाधान निम्न प्रकारे—

१—सूत्रो मां गृहस्थ पणे रहेला गुरु एकान्ते निषेध्या नथी. केमके कूर्मापुत्र सकारण गृहस्थ पणे रहेला छतां महाविदेह क्षेत्रे विराजमान ईश्वर नामा तीर्थंकर नी प्रेरणा थी चारण लब्धि संपन्न बे मुनिओ तेमना बोधे कैवल्य संपदा पाम्या. ते मुनिओए शुं विनय व्यवहार विनाज केवल लीधुं ? आत्म समाधिरूप भावचारित्र ज आत्मा ने मोक्ष प्राप्ति करावे छे ते विना नुं एकलुं द्रव्य चारित्र स्वर्ग प्राप्ति करावी शके प्रत्युत मोक्ष प्राप्ति नहीं, ते भाव चारित्री ज मोक्षार्थे उपासनीय छे किन्तु केवल द्रव्य चारित्री नहीं ज. आधुनिक त्यागी वर्ग मां आत्म-समाधि दशा वाला केटला जोया ? यदि नहीं, ते तेओ मोक्षार्थे उपासनीय केम होइ शके ?

"आतम ज्ञानी श्रमण कहावे बीजा द्रव्यतः लिंगीरे" (आनंदघन.)

आत्मज्ञान-ज्योतिवालाज साधु—खरेखरा साधु-कहेवाय केम के—अप्प नाणेण मुणिहोइ' एम आचारांग सूत्रे वर्ण्युं छे. तेवा आजे कोण छे ? बुझायेला लाखो दीवड़ाओ मली एक पण नवा दीपक ने शुं प्रगटावी शके ? जागती ज्योति समा एकज आत्मज्ञानी लाखो नवा दीपको ने प्रगटावा समर्थ छे. लाखोने आत्मज्ञान ज्योति युक्त करवा मां समर्थ छे, माटेज तेओ उपासनीय छे

यदि द्रव्य-भाव चारित्री उपास्य पणे मली जाय तो ते दुध अने शाकर मलवा तुल्य छे. तेमना अभावे भाव चारित्री पण साकर बराबर, किन्तु केवल द्रव्य चारित्री तो विष तुल्य छे. केमके तेओ केवल मत पंथमां भेर ने फेलावी पोताना आश्रित ने बेभान बनावी छे. एवा बेभान जीवो ज आजे सर्वत्र देखाय छे के जेओ देव-गुरु अने धर्म ने नामे लड़ाई करी रह्या छे.

द्रव्य-भाव-चारित्री अथवा भाव चारित्री, जीवो ने लड़ाई थी मुक्त करावे छे छतां मोहांध जीवो ने तेवाओ नी ओलखाण नथी माटे कदर पण नथी कोरा द्रव्यचारित्री नी ओलखाण छे माटे तेनीज कदर करता प्ररूपे छे के केवलज्ञान थया पछी पण ओघा मुहपति विना ते वंदनीय नथी. आ विषय मां घणु बधुं लखवा योग्य स्फुरे छे. पण पत्र वाटे तेनो अवकाश नथी.

२—आधुनिक सूत्रो—ए द्वादशांगी रूप सिन्धु ना बिन्दुओ तुल्य छे. तेमां पाछल थी बहु भेलसेल थई गई होवा थी सर्वथा उपादेय किंवा सर्वथा हेय नथी; प्रत्युत कथंचित् उपादेय छे सूत्र मां कहेली साधुचर्या अने आधुनिक साधुचर्या वच्चे आकाश अने पाताल नुं जेटलुं अंतर प्रत्यक्ष देखाय छे. पोतानी अंध दशा ने पोषवा तेमाना थोड़ाक वाक्यो अने शब्दो वपराय छे. बाकीना तमाम वचनो नी उपेक्षा कराय छे. आवा प्रयोजन भूत सूत्रार्थना उत्थापको पोते ज उपेक्षणीय छे. कारण के तेओ पोते ते सूत्र वडे हजी सुधी पोताना दिवड़ा प्रगटावी शक्या नथी तो बीजानुं शुं अजवालवाना हता ?

३—सूत्रोमा साधुचर्या उत्सर्ग अने अपवाद एम बे प्रकारे प्ररूपित छे. ते पैकी पैदल विहार ए उत्सर्ग मार्ग छे अने नौकाविहारादि ए अपवाद मार्ग छे. अपवादे पशु-सवारी सर्वथा हेय छे, पण मानव सवारी कथंचित् उपादेय छेज, आधुनिक श्वे० त्यागी नौकाविहार मानव सवारी नो तो निःशंक उपयोग करे छे.सूत्र संकलन काले आधुनिक यांत्रिक वाहनोवत् वाहनो न्होता अतएव तत्संबन्धी कोई उल्लेख नथी. छतां यांत्रिक वाहनो नो कथंचित् वज्रस्वामीवत् उपयोग अपवादे थतो हतो ज.

यमो अपरिवर्त्तनीय छे ; परन्तु नियमो अपरिवर्त्तनीय नथी. माटे देश-काल-पात्र भेदे तेमां परिवर्त्तन कथंचित् थई शके छे. अतएव दिगम्बर श्रेणी मां क्षुल्लक-एलको ने माटे अपवादे यांत्रिक वाहन व्यवहार नी प्रथा प्रमाणी छे. ज्यारे श्वेताम्बर श्रेणीमां त्यागीओ ना सामान माटे वाहन व्यवहार करे छे. जेमा पशु वाहन नो उपयोग तक थाय छे. हित अहित नुं बलाबल जोतां पैदल विहारीओनी पाछल वाहन व्यवहार थी थता खर्च अने आरंभ दोष करतां यांत्रिक वाहन व्यवहारिओनुं खर्च अने आरंभ दोष अल्प देखाय छे, छतां श्वेताम्बर परिपाटी मां तेनुं संशोधन हजु सूधी थई शक्युं नथी. अतएव रूढी धर्मे तेने वखोड़े छे. ज्यारे पोते पैदल चाली पोतानाज निमित्ते वाहनो दोड़ावी लाखो नुं खर्च करावी राजी थाय छे. ॐ……

४—आचारांग सूत्रानुसार श्रमणोना त्रण विभाग हता (१) वस्त्र रहित, (२) कटिबंधन-कोपीन धारी, (३) अने "एगे वत्थे एगे पाए" एक वस्त्र एक पात्र वाला. जेने दिगम्बर श्रेणिए मुनि, एलक, क्षुल्लक पणे हजु सूधी निभावी रही छे. त्रीजी श्रेणि नो देशकालानुसार फेरफार युक्त विस्तार एज श्वेताम्बर श्रेणि छे. एमां नानी अने मोटी दीक्षा ना नामे नाममात्र बे भेद होइ शके माटे ते देखाय छे. परन्तु दिगम्बर श्रेणिवत् मूल त्रणभेद तो संभवी शके नहीं. कारण के नीचली कक्षा मां उपली कक्षाओ शमाई शकती नथी.

५—दीवानी ज्योत सचित्त छे, पण ज्योति सचित्त नथी. कारण के ज्योत तो दहनीय पदार्थो ने बाले छे. पण ज्योति तेम करी शकती नथी. जेओ अंधारा थी बचवा उपाश्रयो मां ज्योत तो गृहस्थो द्वारा करावी राखे छे अने ज्योति थी बचवानी कोशीस करे छे, ए नरी बालीशता छे.

६—पूर्व जन्ममां इच्छापूर्वक तथा प्रकारनी आराधना ना फल स्वरूपे माताजी ने अत्यारे इच्छा न होवा छतां चमत्कारिक घटनाओ अनुभवाय छे. ते पैकी वासक्षेप वाली तमारी सांभलेली वात सांची छे.

७—मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यम्—आत्मज्ञानी सद्गुरू ना वचनो ए खरेखर मंत्र छे. कारण के सर्प विषवत् ए मंत्रो जीवन मोह विष ने दूर करी शके छे· यथा—माषतूष मुनि नुं माषतुष मंत्र—

आत्मभान अने वीतराग स्वभाव ने जालवी राखवा माटेज केवल निष्काम भावे रहेला कोई पण मंत्र नुं फल मोक्ष छे. ज्यारे सकाम भावे शुभ भावना युक्त मंत्र स्मरण नुं फल पुण्य अने अशुभ भावना युक्त मंत्र स्मरण नुं पाप छे. अतएव मोक्षार्थी ए सकाम उपासना त्यागी केवल निष्काम भावे आत्मभान अने वीतरागता ने जालवी राखवाना अवलंबन पणे मंत्र स्मरण करवुं घटे छे. तथा प्रकारना पण भंगो घणा छे ते पैकी सोहं अने नवपद मंत्रोनो रटण पद्धति प्रचलित छे.

जेने त्रिविध कर्म—कर्मफल थी तद्दन रहित ज्ञायक सत्ता मात्र स्वात्म द्रव्यनी परोक्ष प्रतीति वर्ते छे. तेने गुरु कृपाओ सोऽहं जाप हित रूप छे. सः अर्थात आ देहादि सर्व दृश्यो ज्ञेयो ने जुओ जाणे छे. छता पोते वर्त्तमाने नजरे नथी चडतो। पोते ज्ञाता द्रष्टा रूपे हाजरा हजुर ज छे। कारण के तेनी हाजरी विना आ बधु देखाय जणायज नहीं माटे ते छे ज। छता परोक्ष होवाथी आ प्रत्यक्ष देखाता अेक क्षेत्रावगाहे रहेला शरीरने हुं पणे मानु छुं ते खरे ज भुल छे। कारण के शरीरादि मा जोवा जाणवानो शक्ति थीज तेने हुँ पणे केम मनाय ? माटे आ देह हुँ नथी। परंतु देह अधिष्ठित ज्ञाता द्रष्टा अंधारामा हाजर छता देखातो नथी ते सोऽहं ते हुँ छुं। आ साऽहं अर्हम्‌द उपासना मंत्र छे। अेमा परमात्मा नुं अवलम्बन नथी।

जेने अनेक लब्धि सिद्धिओ प्रगटवा छतां अहं भाव अडो न शके तेवा उत्तम पात्रोने माटेज आ मंत्र उपादेय छे। बाकीना माटेय हेय छे। ज्यारे नवपद मंत्र सिद्धचक्र मंत्र ए भक्ति प्रधान मंत्रो होई तेवा दोष थी साधक ने बचावी ले छे। अतएव सौ साधको ने उपादेय छे। सिद्धचक्र एटले चार प्रकारनी आराधना युक्त पांचे परमगुरु पदे प्रतिष्ठित सहज जन्म मरणादि रहित अकृत्रिम आत्म स्वरूपे सहज आत्म स्वरूप छे। अतएव सिद्धचक्र मंत्रनो सार सहजात्म स्वरूप परमगुरु आ मंत्र छे। चारे आराधना युक्त पाँचे पद परमगुरु कहेवाय छे। ते परमगुरुओ सहजात्म स्वरूप छे। प्रत्युत जन्म-मरण युक्त कृत्रिम देह स्वरूप नथीज। माटे नवपद या पाँच पदना सार रूपे आ सहजात्मस्वरूप परमगुरु भक्ति मंत्र छे जेनी आराधना परम कृपालु देवे करी आत्म-समाधि दशा प्राप्त करी हती। अर्हंगृह अथवा भक्ति प्रधान उभय निरालंबन सालम्बन ध्यानना प्रकारो पैकी पोतानी योग्यता प्रमाणे अेक मंत्रनुं निष्ठापूर्वक आराधना करवाथी आत्मशुद्धि अने सिद्धि अवश्यंभावी छे। माटे वारे घडीए मंत्र बदलता रहेवाथी तेमज अनेक मंत्रोनी आराधना थी आराधक शक्ति संगठित अने अेकाग्र थवी कठण पडे छे। आ तथ्य ने स्वीकारी तमने जे उचित जणाय ते मंत्रमा एकनिष्ठ थाओ अे वधारे हितकर थशे। जो शुष्कता अने अभिमान थी बची शको तो सोऽहं नु ध्यान करी शको छो।

तेनाथी घण्टानाद जोडाशे, नादलये सुधारसनी धारा प्रकटशे। ते धाराए मन पवन सहेजे स्थिर थशे। ते स्थिरताए चैतन्य ज्योति जलहलशे। ते ज्योतीए चक्रभेदन षट् चक्रादि जे कमलाकारो छे, ते उघडता जशे अने तेमाथी दिव्य सुगंधी फेलाशे प्रति चक्रे ध्यान धारणा अने समाधि स्थितिओ रहेता पुरुष संस्थान अेवा लोकना अर्थात् विश्वना ते ते विभागो ना दर्शन थता जशे अेम नभग्र सर्वाङ्ग ध्याने विश्वदर्शन आत्मामां थशे अन्ते विश्वदर्शनना प्रत्याहारे आत्म-साक्षात्कार थशे अे उपरथी 'जो एगं जाणेइ सो सव्वं जाणेइ' आ आचारांगसूत्र कथन सिद्ध थशे। सुज्ञेषु किं बहुना ?

हार्दिक धर्मस्नेह अगणित आशीर्वाद

सहजानन्दघन

(पत्रांक-१४४)

६-१०-६८

ॐ नमः

शरद पूर्णिमा-२०२४

भव्यात्मा श्री नवीनभाई सपरिवार

शी हकीकत छे ? आ काले आ मार्ग खाडा टेकरा, कांटा-कांकरा -झाड़ी-जंगल अने जर जनावरो थी भरपूर छे. तेमां थी पसार थनार मुसाफर जो हींमतहार होय तो पतो नहीं लागे. माटे हिम्मत मां छो ने ? 'हिंमते मर्दा तो मददे खुदा' ए कहेवत खोटी नथी हो ! "जे शिर परमकृपालुदेव, तेने शुं करशे संसार"

घर भरना तमाम सौ कुशल छो ने ? अहिं अम सौ कुशल छीए. आ देह स्वस्थ छे. काकीबा नी गाड़ी ढचु पचु पण चाले छे अटकी नथी. प्रभाते रोज फरवा जाय छे. चंचल व्हेन १५-१० ना प्रायः अहिं हीरा भाई आदिनी साथे आवशे.

मृगेन्द्रमुनि आ साथे ना पत्र प्रमाणे जो अहिं आववा मक्कम होय तो मात्र अहिं आववा नी टिकिट अने उदर पूर्त्ति नी व्यवस्था करजो—करावजो. तेवी मक्कमता तमने न भासे तो उदासीन रहेजो. एक जैन कण्ट्राक्टर चन्दुभाई टोलिया हाल बेंगलोर रहे छे. तेओ नी फ्री देख-रेख मां सत्संग भवन, जिनालय अने तमे जे जग्या पसंद रूम माटे करेली ते प्लॉट ऊपर १८ रूमो (१०-१२ अने ८ फुट वाली) बांधवानुं नक्की थयुं छे. सत्संग भवन माटे नी जमीन ने १० फुट नीचे उतारवानी क्रिया चालू छे. बाकी नुं काम दीवाली आस पास तेमना एक मिस्त्रीने तेओ तेड़ी आवशे. तेनी निश्रा मां थशे. दशेराए खात मुहुर्त्त करवा नी धारणा मां-तेमनी गाड़ी धारवाड़ जतो वेळा समय थई जवा थी एक्सीडेंट थयुं. गाड़ी ने नुकशान थयुं. बाकी बधा बची गया आथी अंतरायपडयुं. तेओ धारेली मुद्दते न आवी शक्या. सत्संग भवन मां दोढ लाख खर्चाय तेवी संभावना छे. एक लाख हरीजीभाई आपी शकशे. बाकी नी पूर्त्ति बीजो कोई करवा तैयार थाय तो ठीक नहीं तो आश्रम करशे.

धन्नुलालजीनुं पत्र आ साथे बीडुं छुं. तेओ १०-१० लगभग अहिं आववा धारे छे. तेमना रु० मोहनलालजी तमने जे कांइ आपे ते लई लेजो, पण धन्नुलालजो ने मल्या पछी हुं आर्डर लखुं त्यारेज मूर्त्तिनो काम कारीगर ने सौंपजो-कारण के ए विषय मां हजु मारे विचार-विनिमय करवो पड़शे.

सुंदरलालजी गई पूनम बाद कलकत्ते गया. तेमनी भावना स्तुत्य छे. बेंगलोर मा दादावाड़ी माटे जमीन लेवाई गई छे. ५० हजार पूनमचंद भाईए अने बाकी ना बीजा गुजराती भाईओए खर्चाया ना समाचार गई काले मल्या-हीरजी भाई साथे बदलीया दंपती केराला जई बेंगलोर प्होंता छे. अठवाडीए अहिं आवशे त्यारे पाका समाचार मलशे. बेंगलोर थी घणा पीढ माणसो अहीं आवता थया छे. चो० बाद कदाच तेओ ना अति आग्रहे ते तरफ जवुं पड़े । ट्रीची ना हाल कोई समाचार नथी बधाने आशीर्वाद लखी जणावजो, तमारा पदमचंदजी, मेहताजी, जरगड़जी वि० ना समाचार

लखजो अने आशीष जणावजो. धर्मध्यान मां वृद्धि हो. माताजी ना तम सौने अगणित आशीर्वाद !
ॐ शांतिः सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद !

अमदावाद मां जयंतीभाई ना काका मोहनभाई नुं २-१०-६८ ना अवसान थया ना समाचार तार थी अहिं मल्या. तार थी समवेदना प्रगट करी छे, पत्र वांची शीघ्र जवाब आपजो.

(पत्रांक-१४५)

ॐ नमः

१०-१०-६८

भव्यात्मा श्री जेठीबाई सपरिवार

मिच्छामि दुक्कडं नुं पत्र मल्युं तेमां बलुभाई नी हकीकत जाणी तेमने शी तकलीफ छे ? जो अहिं आवी शकाय तो तेडी आवो. रसोईघर सूधी सड़क छे. रहेवानी पण सगवड़ बधी छे. कारथी आवी शको तो आवी शकाय. हवा फेर अने सत्संग बन्ने लाभ मली शके जो हीमत होय तो आवी जाओ, जीव प्रमादमा रही ने रोदणां रोया करे तो तेथी कंई छूटी जाय तेम नथी. तम जेवाने रोटला अने ओटला नी आटली बधी सगवड़ अने आत्म शांति प्राप्त करवानी कामना छतां जो प्रमाद नहीं छोडी शको ! तो कई गतिमां लई ने तेनी पूर्त्ति करशो ? खाली वात डाह्या पणा थी शुं आत्म शुद्धि थई जशे ?

हे जीव, प्रमाद छोडी जागृत था ! जागृत था !

'समयं गोयम मा पमायए' एवी ज्ञानिओनी पोकार कोण सांभले छे ! तेना माटे कान ने व्हेरा बनावी राख्या छे ! हे प्रभु ! तारी अनंत करुणा छतां आ दुनिया केवी राते तरी शके ? ज्यां तारी वात न प्होंचे त्यां मारा जेवानुं शुं गजुं ? हे शासनदेवी ! शुं तारा मां आ लोको ने जगाड़वानी शक्ति नथी ?
ॐ ॐ ॐ सौने हार्दिक आशीर्वाद !

माताजी ना पण आशीर्वाद ! बाई मेघबाई ना सादर प्रणाम।

घाटकोपर मां जीवा मां अने हिंमत भगत ने आशीर्वाद जणावजो-बली कांदीवलीवाला लक्ष्मीबाई. काकु शेठ ने पण आशीष पहोंचाडजो.

(पत्रांक १४६)

हंपी

ॐ नमः

४-११-६८

भव्यात्मा नवीनभाई.

सफर बधेनुं अने त्यार पछी १२-१० लखेलुं तमारुं पत्र मल्युं. काकाजी नो मल्युं हतुं. तेमने हवे जवाब लखीश तमे सुख रूप जयपुर प्होंच्या ?

धन्नूलालजी तरफ थी जे निर्णय लेवायो ते अनुसार छत्री मूर्त्ति माटे हवे प्रयत्न करावजो.

काकीबा नी तबियत कइंक सुधरेके एवा कोई आघातजनक समाचार अथवा दृश्य जोई फरी गड़बड़ मां पड़ी जाय छे. कोई बैरां पोताना दुख रडे तो तेनी असर थई जाय छे. आम बाबत छे.

हवे थवानुं थई गयुं ते बदल ते जोवने जो दबाण करीए तो तेनी बुद्धि गभराई कुंठित थई प्रीति भेद उत्पन्न करावे, माटे अमारे के तेमारे तेमने आ वधं रहस्य ध्यान मां राखी ने भलामण करवी घटे. टग-टग न करवी घटे तेमज हींमतहार न थई जाय तेवी ढबे मीठास थी अने मोके-मोके उचित शब्दो मां हित-शिक्षा कहेवी घटे, आटलुं तमे ध्यान मां लेजो-अने आर्त ध्यान मां तमो तणाई जाओ छो तेमां सावधान रहेजो, आ वधुं संसारीक नाटक एक मोटुं स्वाग छे एम याद राखो ने तेने माटे फाकी चिंता नहीं करता-कारण के आपणे महाविदेह जवानी मनोकामना पार पाड़वी छे. महाविदेह तेज जई शके के जे धर्म ध्यान थी विचलित न थाय. तेवा समये त्यांनु मनुष्यायु बंधाय छे अने त्यां जाय छे माटे हवे थी तमारी आर्त्त एटले दुःख नुं ध्यान धरवानी टेव ने सुधारजो एज भलामण छे·

श्री प्रभावती व्हेन नी तवियत सुधरती जाणी प्रसन्नता थई. तम बन्ने ने मारा तथा काकीबा ना हा० अशीर्वाद स्वीकृत हो. काकीबा ने हार्ट नी तकलीफ मुसाफरी मां वधी जवाथी सफर टुंकावी अहिं जल्दो आव्या हता अने हवे देशी उपचारो थी घणो सुधारो छे·

सत्संग भवन नुं जमीन लेवलींग नुं काम चाले छे एक मिस्त्री ने खावुं-पीवुं अने मासिक २००) थी गोठव्यो छे. आ प्रदेश नो भोमियो छे अने कच्छी छे. हजु शरुआत छे. धीमे-धीमे जामी जाय तो पछी निर्माण कार्यो ठीक चालता रहेशे पोते कण्ट्राक्टर नो काम करता हता·

धर्म ध्यान मां थो मंत्र स्मरण अखंड बनाववानुं प्रयत्न तम बन्ने करता रहेजो. अने तेमां सफलता थाओ ए आशीर्वाद छे. सुखभाई खेंगारभाई नी यादी ॐ शांतिः

सहजानंदघन हार्दिक अगणित आशीर्वाद!

(पत्रांक १४६)

हंपि-१५-१२-६८

ॐ नमः

भव्यात्मा मुमुक्षु श्रीछोटुभाई, श्रीसविताव्हेन श्रीसुधा अने श्रीकिरण.

आप सौना पत्रो मल्यां तेमां दर्शावेला भक्त भावना ने हार्दिक अभिनंदन.

माताजी नी तवियत तो नरम गरम चालतीज रहे छे अने तेने समभावे वेदवानी तेमनी वर्षोनी आदत छे· आत्मभाव अने जड़भाव जुदां अनुभव्यां होवा थी देहना गमे तेवा सम-विषम उदयो मां आत्म भावने टकावी राखवानी एमने स्वाभाविक शक्ति स्फुरायेली रहेती होवाथी एमने मृत्यु भयनो अभाव वर्ते छे आ एमनी दशा मुमुक्षुओ ने अभ्यासवा योग्य छे. एमनी सेवा नो ल्हावो सौ कोई इच्छे तेम आप सौ इच्छो ए स्वाभाविक छे. परन्तु पूर्व ऋणानुबंध अनुसारज जो कोई नी सेवा यथा काले लेवी उचित जणाय तो ज एमना मुखे हा नो उद्गार निकले छे. जो पूर्व ऋण शिलक मां न होय तो नवुं न वधार वानुं लक्ष बन्युं रहेतुं होवाथी एओ स्वीकारी शकता नथी. आपनी सेवा भावना ने अत्यारे एओ स्वीकारी शके तेम जणातुं नथी. भाविमां जो उदय मां जणाशे तो तेनो यथान्याये स्वीकार थशे ॐ

माताजीए पण आप सौ ने हार्दिक आशीर्वाद जणाव्या छे. धर्मस्नेहमां अभिवृद्धि करजो ॐ शांतिः

सहजानंदघन

(पत्रांक—१५०)

ॐ नमः   हंपि १५-१२-६८

भव्यात्मा श्री जेठीबाई सपरिवार

पत्र संप्राप्त थयुं. विगत बधी वांची. सफर मां श्रोताओ उपर शी असर थई ते वरंगळ खीमजी पटेलने लखी पूछावी लेजो. कारण के ते बुद्धि मां चाणक्य छे. देवराज भाई तो सीधा सादा छे. तेओ पण साथेज हता. तेओ थोडुंक जणावी शकशे.

माताजीनी तबियत तो पहेले थीज नाजुक हती. तेमा जराक धक्को लागे के पंचर थई जाय. सफर मां एमज थयुं. हार्ट मां घणी वीकनेश छे. उपचारो चालु छे. देशी गोळीओ ले छे. तेथी सुधारो देखाय छे. बाकी आत्म मस्ती मां खामी नथी. आ देह भाड़ा तणो गेह छे. तो पछी तेनो शी फिकर ? तेमणे आप आप सौ ने आशीर्वाद जणाव्या छे. बच्चुभाई घेर आवी ग्होता हशे. तबीयत डॉ० ना कहेवा मुजब संभाळजो. जोशीओ ना कथन करतां ज्ञानिओ ना कथन ऊपर ध्यान वधारे आपवा जेवुं छे. तेओ कहे छे के :—देहनी चिन्ता करतां कई गुणी अधिक आत्मानी चिन्ता करो केम के एक भवमां अनंत भव टाळवा छे. एक भवना थोड़ा सुख माटे अनंत भव शा माटे वधारे छे ? शरीर तो नाशवान छे. ते गमेत्यारे पण जनार छेज. तो पछी तेने तुं शाश्वत बनाववां कां मथामण करे छे ? ते जवाथी कई आत्मा नो नाश थनो नथी, तो पछी मृत्यु नी बीक शा माटे राखे छे ? मृत्यु मित्र छे, तेनी मदद न मळत तो कोई पण मोक्षे न जात. ते मृत्यु ने शत्रु मानी तुं कां भयभीत थाय छे ? खरेज ए मोह छे. बेभान पणुं छे माटे भानमां आवीने तपास के आ वात साची के खोटी छे ? भानमां आववा माटे सत्संग नुं नित्य सेवन कर. कारण के जेम शरीरने नित्य भोजन जेम आत्मा ने नित्य सत्संग अनिवार्य छे. आ तारी वाडी-वाडी- गाडी कंइ मृत्यु ना क्षणे काम नहिं आवे. पण सत्संगे मळेल सद्शिक्षा काम आपशेज. तने ते समये बीजो कोई नहिं पण सद्बोध बचावी शकशे. ओज तारो खरो बचाव छे. बाकी तू तो अजर अमर शाश्वत छेज. ॐ तेमने अहिं तेडी अवाय जेवी स्थिति थये तेडी आवजो. गाडी ठेठ रसोडा सुधी आवी शके छे. आजे पण एक यात्रिओ नी बस ऊपर आवी छे. रूमो पण हमणां केटलाक खाली छे. तमारी भूख जाणीती छेज पण तेमनी भूख उघड़वी जोइए. बाकी तम ढींगलावाला ने ढींगळा नो नशो उतर्या विना अम जेवा फकीरो नी वात गळे ऊतरे तेम नथी. जेथी अधिक कहेवा लखवा मां शुं फायदो ? नाना मोटा बधाय ने अने तमने हा० आशीर्वाद ॐ शांतिः

सहजानंदघन

अगणित आशीर्वाद सह सहजात्म स्मरण

(पत्रांक १५१)

ॐ नमः   देहरादून २१-१२-६८

भव्यात्मा श्री नवीन भाई सपरिवार

पारसनजी ए अगाऊ मोकलेल देरी नो फोटो गेरवले गयो जाणी गईकाले रजि० करी फरी मोकल्यो

छे, काकीबा ने हार्ट दर्द चालु छे. उपरांत छाती ने जमणे पड़खे पण सखत दुखावो चालू थयो छे. चालतां शरीर ढोली जाय छे छतां आत्मानंद मां कमी नथी, दवा चालू छे.

अमरचंदजी नाहर सुपुत्र धरमचंदजी ने अहिं आववानी भावना सफल थाओ, तेमने हार्दिक आशीर्वाद.

रमा व्हेन तथा बधा बालको ने मारा तथा माताजी ना हा० अगणित आशीर्वाद लखो जणावजो·

काकाजी अने रजनीकांतना पत्रो हतां जवाब लखी मोकल्या छे· सामान् माटे तम बन्ने भाइओ नो एकज अभिप्राय जाण्यो अने मांडो वाल्यूं. तमे काश्मीर जई आव्या हशो· त्यांनूं गोठवाई गयूं हशे. उद्यम चालू राखजो, तमे फरीथी शेरो खरीदी मोटी नुकशानी व्होरी छे· जेनी फरियाद काकाजी वती घणी लांबी चोड़ी आवी छे. शुं हकीगत छे ? सावधान रहेजो मृगेन्द्रमुनि विषे रिजल्ट लखशो. रजनीकान्त ने तमे अहिं आवो त्यारे आववानी इच्छा छे· सूरत जतां तो आवशेज·

ता० ११-११-६८ ना अहिंथी गुलबर्गा जतां ३० माइल शेष रस्ता परी पैंड़ निकली खेतरमां गयुं अने त्रण पैड़े फर्लाङ्ग गाडी चालती चालती सहज रीतेज अटकी ब्रेक फेल हती. छतां सामेथी कोई ट्रफिक एवं सड़क मां वणांक न हतुं. जेथी जरा सरखीय आंच न आवी· ए दादीजीनी कृपाज हतो·

अहिं सत्संग भवन नुं काम मजुरो नी कमो ने लीधे धीमी गतिए चाले छे. चंदनमलजी नूं मकान चालु छे· आजे पारसाननुं चालु थशे· हीरजोभाईनी सामेना पहाड़ मां ३ गुफाओ तैयार थवा आवी छे· त्यां महेताजी पदमचंद आदिए जे कोई याद करे तेते सौने हा० आशोर्वाद। ॐ शांतिः माताजोना अगणित आशीर्वाद.

सहजानंदघन अगणित आशीष

(पत्रांक—१५२) हंपि १७-१-६६

ॐ नमः

भव्यात्मा श्री नवीनभाई सपरिवार

पत्र मल्युं विगत सर्व जाणी· काश्मीरनी मीठी मधुरी लाइन मली ने जालवी राखजो. त्यां बरफ खरुं ने ? तेथी शीतलता मले ज. काकाजी ज्योतिपीओने भले मानता रहा. पण असावधान नहीं रहो तो हित छे. आत्मभान ने जालवी व्यवहार ने आटोपता रहो. माताजी नी तवियत हवे घणी सारी छे. हार्ट शान्त छे. शिर दर्द उपड्यूं हतुं ते मरीनो धुम सुंघवाथी शान्त थयुं. आ देह स्वस्थ छे. ता० २०-१ ना मद्रास भणी बपोर पछी ३ वागे प्रयाण थशे. त्यां महाशुद ५ मे १ विद्यामन्दिर नुं उद्घाटन त्यां ना आगेवानोनी आग्रह भरी विनती थी करवुं पडशे. शिक्षामंत्री नी हाजरी मां.

पारसन अहिंज छे. मकान बंधाई रह्युं छे. बे महीना लागशे. मूर्त्ति विषे जे कांइ करवुं छे ते तमारा भरोसे. आ काम तमने पुण्यबंधक नीवड़शे. माटे महेनत थी थाकता नहिं·

'श्रीरमा, नलीन, रेणु नीतु. पंचपरमेष्ठि ने निजपद प्राप्त थाओ—ए आशीर्वाद, माताजीए घणा-घणा याद करी आशीष जणाव्या छे मद्रास जाउं छुं. ट्रीची तमे होत तो खेंची जात.

रजनीकान्त भाईने त्यां २३-१ नो मलवा लख्युं छे, अहिं बांध काम उपर जे माणस हतो ते थाकी ने चाल्यो गयो. योजानी आवश्यकता छे, ते सम्बन्धी वाटाघाट करावी छे. धरमचंदजी वि० आशीर्वाद ॐ शान्तिः

श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ ज्ञान भंडार
जयपुर

सहजानंदघन अ० आशीर्वाद

(पत्रांक—१५३) हंपि २-२-६६

ॐ नमः

आत्मार्थी मुनिवर आनंदघन

पत्र संप्राप्त थयुं वांची प्रसन्नता थई. आनंद वर्त्ते छे. स्वास्थ्य सारुं छे. तमारी स्वस्थता अने प्रसन्नता सदैव बनी रहो. हुं अहिं थी २०-१-६६ ना प्रयाण करी अनंतपुर बे प्रवचन आपी २१ मी सांजे मद्रास प्होतो. त्यां वसंतपंचमीए जैन विद्यामन्दिर नुं उद्घाटन जनताए आ हाथोए कराव्युं. २४ मी सुधी जुदे जुदे स्थले प्रवचनो गोठवाया २५ मी नो सवारे प्रयाण थयुं. वेलुर प्रवचन अने क्रिया पतावी सांजे ट्रीचीनापल्ली प्होता।

त्यां २६ मी जान्युआरी स्वातंत्र्य दिन नी पब्लिक सभा मां राजवर्गीओ नी हाजरी मां स्वतंत्रता नुं वास्तविक रहस्य ए विषय उपर प्रवचन थयुं. तेनुं एक प्रोफेसरे तामिलमां अनुवाद करी संभलाव्युं. जनता हर्षित थइ. बीजे दिवसे प्रवचन-आहार पतावी तिरुवन्नामल्लइ, रमण महर्षि आश्रम नी मुलाकात लेतांक बेंगलोर प्होता-त्यांज ४ दिवसो मां चिकपेठ, गांधीनगर ना उपाश्रयो ने स्थानक मां प्रवचनो गोठवाया, जनता मां उत्साह नी लहेर फेलाइ. सर्वत्र आत्मरुचि वधती जोवाई. सर्वत्र अधिक रहेवा नो आग्रह छतां हंपि आववुं अनिवार्य होइ १-२ ना प्रभाते त्यां थी प्रयाण करी अहिं सकुशल आवी प्होता· अवकाश मेलवी आजे जवाब लखी रह्यो छुं· काले बेल्लारी ना दि० जैन संघ तरफ थी दिगम्बर जिनालय नुं महोत्सव होवा थी तेमनी सभा मां तेओ लई जवा आज सांजे आवशे घणुं करी सोमवारे पाछो आवीश. हवे लोको आसपास खेंची जवा मांड्या छे तथा प्रकार ना उदय ने वेदवा अनिवार्यता देखाय त्यां जवुं पडे छे कोईं रीते जनता आत्म-धर्म ने समजे तो हितावह छे.

तमारी वृत्ति अने प्रवृत्ति थी प्रसन्नता छे. बस आगे कूच कर्ये जाओ अने सत् ना प्रकाश पाथरता जाओ वहाली ना मुमुक्षुओ ना आग्रहे त्यां चोमासु नक्की कर्युं ते सर्वथा उचित छे आत्मभान सदा टकावी शकाय तथा प्रकारे प्रेरणा आपी तेथी मुक्तता माटे कृपालु नुं साकार स्वरूप पोताना चैतन्य दर्पण मां अंकित करी तेमांज लक्ष ने जोड़ी उदयमान त्रियोग प्रवृति करवा थी जीव आश्रव ना उदय मां पण संवर क्रिया साधी बंधना थी मुक्त थई शके छे. तथा प्रकार नी चालवट करता जवुं के जेथी आत्म धर्म नो अनुभव सदैव विस्तरे·

अर्हं-मद-वाद मां-अहमदावाद मां रहेतां पण श्री लालभाई साहित्य प्रकाशन आदि कार्यों मां व्यस्त रहे छे. शरीर नी शक्ति उपरांत शरीर थी काम लेता होय छे. घणा दिलखुश अने भक्तिमान माणस छे. व्यस्त होवाथी न मली शक्या होय एम संभवे छे. भोगीभाईना पत्र पण अहिं आवे जाय छे.

श्रीभद्रंकरविजयजी नी साथे पण व्यवहार राखता रहेजो ए गुणानुरागी पवित्र जीव छे. १९९८ मां मुंबई-लालवाड़ी उपाश्रये १ रात्रे तेमनेसाथे मिलन अने वार्त्तालाप थयुं ते वखते गच्छवासीओ नी प्रणाली मुजब जे चर्चा थई ते एमनी सरलता, विशाल बुद्धि मध्यस्थता अने जितेन्द्रियता झलकती हती. ते वखते हूँ आत्मानुभूति विषयक वार्त्तालाप चाही ने न्होतो करतो, कारण के तेनी गुप्तता ज उचित मानी हती. मद्रास वाला रिखवदास स्वामी गत वर्ष अहिं रह्या हता तेमना मन मां कांइक भ्रम हतुं. ते पत्र व्यवहार द्वारा निकली गयुं—एम तेओए एकरार कर्यो. जीव व्यर्थ कल्पना प्रवाह मां तणाई अमूल्य अवसर खोई नाखे छे तेवी टेव तेमने बहु हती तेमां सुधारो थवा मांड्यो छे. ॐ

माताजीए आपने हार्दिक धर्मस्नेहे याद कर्या छे. धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि हो ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद

(पत्रांक १५४)

ॐ नमः

१६-२-६६

मुनिवर श्री आनंदघन,

प्रथम पत्र नुं प्रत्युत्तर मोकलाव्युं, मल्युं हशे ? आ द्वितीय नुं मोकलुं छुं. गत रविवारे अहिं थी ५० माइल बेल्लारी दिगम्बर जिनालय ना शिखरे धातुमय कलश स्थापन करवाना महोत्सव मां त्यांना आगेवानो तेड़ी गया हता. श्वेताम्बर-दिगम्बर उभय संप्रदाय मली ने ए काम करी इतिहास सर्ज्युं आम एक सूत्रे बांधवानो आज मनो जगड़ा टाली वीतरागता नी श्रेणी मां प्रवेशवा आवश्यक छे.

प्रायः फागण मास अहिंज वीतशे. होली बाद एकाध दिवस कंपली अहिं थी १४ माइल जवुं पड़शे· त्यांना भक्तो नक्को करी बेठा छे. अतएव डा० पारेख खुशी थी अहिं आवी शके छे. एम तेमने जणावजो. हुं पण पत्र लखी जणावीश.

दादाजी ना जप विषयक गत वर्षे सुमतिमुनिजीए आग्रह करतां तेमने माटे ते मंत्र लखी आप्युं हतुं· तेमां ना मंत्राक्षरो मां थोडुंक फरक करवाथीज तमने काम आवे; तमारी इच्छा ना समाधान माटे खुशी थी करो. ते मंत्र निम्न प्रकारे कंठस्थ करी हमणां विना विधिए प्रेक्टीस जमावो.

आह्वान-विसर्जन विधि बीजा पत्र मां लखी जणावीश.

तमने वांचन करतां जप ऊपर अधिक रुचि छे ते हित रूप छे कारण के तत्व निर्णय मां दृढ़ता माटे स्वाध्याय अने तत्वानुभूति माटे ध्यान ए साधनो छे. जप ए ध्यानना भेद रूपे छे माटे उल्लसित रोमांकुरे तेमा निमग्न थाओ। आ देह स्वस्थ अने आत्मा प्रसन्न छे. माताजी नुं स्वास्थ्य पण हाल सुधरतुं छे. एमणे

वेदनादि जणाव्या छे. धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि थाओ. सिद्धचक्र ए कर्मरिपु सैन्य ने हणवा माटे चक्रवर्त्ती ना चक्ररत्न करतां य अनंत गुण विशिष्ट शक्तिवान छे. अवश्य ए वडे शत्रुसैन्य उपर विजयवंत बनो ! ए अंतरना आशीष. ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

ता० क० आह्वान-विसर्जन विधिमां पणो थघी मुद्राओ आवे छे ते जो तमने आवडती होय तो तमने विधि लखी मोकलुं. अने जो तेनो परिचय न होय तो केवल पत्र व्यवहार थी ते विधि समजावी शकाय नहिं तो लखी मोकलवा नुं कांई अर्थ नथी. मुद्राओ पैकी आह्वाहनी, सन्निधापनी, अवगुंठनी, स्थापनी, अस्त्री, अने विसर्जनी ए आदि मुख्य छे. तमने एनो परिचय छे के नहिं ? ते वलती टपाले लखी जणावो ॐ

सहजानंदघन सहजात्म स्मरणे आशीर्वाद

(पत्रांक १५५)

ॐ नमः २६-२-६६

अध्यात्मा श्री हीरजी भाई विजया बाई सपरिवार

पत्र मल्युं तमारी भक्ति भावना अनुमोदनीय छे. देह तो माटी छे, तेनी शी फिकर ? अहिं गया गुरुवारे बेल्लारीना श्रीअमीचंदजी भाईए जे वर्षोथी T. B. नी कृपा वाला शरीरधारी छे. २२ वर्ष थी सत्संग लाभ लेता आव्या छे, तेमणे दीक्षा अने अनशन अंगीकार कर्युं. अने कृपालुनी भक्तिमां मंडी पड्या छे. बे वखत प्रवचन सिवाय रात-दिन अखंड धून चाले छे. पजुषण जेवी भीड़ जामी छे बधाने कृपालु प्रत्ये आंगली चींधी तेमनी भक्तिमां जोड़वा नो प्रेरणा करता रहे छे. शरीरमां असह्य पीड़ा छतां धुंकारो करता नथी अने आनंदमां नाची ऊठे छे. जे जोई ने बधाय आश्चर्य मां गरकाव थई जाय छे. माताजी बल आपवा मां लाग्या रहे छे. वातावरण कृपालुमय थई गयुं छे. तमे पण आत्मबल जगावो एज आशीष. ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीष !

(पत्रांक १५६)

ॐ नमः हंपि ४-३-६६

मुनिवर आनंदघन

क्रमशः बन्ने पत्रो मल्यां आ देहधारी नो गुफावास २००३ पोष सुदि १४ सोमवार थी शरूथयो । त्यार थी आनंदघन चोवीसी ना अर्थ समजवा ए पुस्तक लई लई ने गड सीवाणा निवासी अमीचंद भाई आवता थया. तेमनी दुकान अहिं थी ५० माइल दूर बल्लारी मां होवाथी आ हंपि आश्रमनी स्थापना मां पण तेओ निमित्त बन्या. तेमनुं शरीर छेल्ला बे वर्ष थी T. B. थी घेरायुं गयुं छेल्ले बे मास उपर

(पत्रांक १५६)

ॐ नमः

हंपि ६-३-६६

मुमुक्षु भव्यात्मा श्री काकुशेठ सपरिवार

तमारुं भक्ति पत्र मल्युं. तेमां भावेली भावना फलो ओ हा० आशीर्वाद छे. श्री अमीचंदजीने बाबा आनंदघन ना नामे परम कृपालु देवनाज शिष्य बनाव्या हता, परम पुरुषार्थ करी तेमणे तो फंको ने जगाड्या. नव दिवसनी एकधारी आराधना मां हजारो लोकोए लाभ लीधो, आप जेवा अहिं होत तो नाची उठत. भावावेश मां तेओ नाचता अने अलौकिक शिक्षा बोध रूप अमीधारा वर्षावता हता, ते सांभली ने श्रोताओ आश्चर्य चकित थई पुलकित थता हता, घणा नव-नवा जीवो कृपालु भणी श्रद्धान्वित थया. आ बधो परम कृपालु नो प्रताप छे· आपणे तो एमना दासानुदास छीए· अने तेमना प्रतापे लीला ल्हेर करीए छीए.

हवे आपनी तबियत सुधरी हशे. विजया शेठाणी आनंदमां हशे ? तेमने, बालको, लक्ष्मी व्हेन, अमृत भाई वि० बधाने हा० आशीर्वाद मारा तथा माताजी ना जणावजो· माताजी ने श्री आनंदघन बाबाए पोतानी आराधना मां बल आपवा वचनबद्ध कर्या हता. तेथी तेओ दिन रात सतत हाजर रही बल आपता हता. तेथी काम पत्या पछी तेमनुं नाजुक शरीर अशक्त बन्युं पण हवे सुधारो छे. आपने बहु याद कर्या छे. बाई मेघबाईए प्रणाम जणाव्या छे· बाकी नी हकीगत देवराज पासेथी मुखे सांभलजो, धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो, अमदावाद थी श्रीलालभाई ने श्री जयन्ती भाई आवो ने गया ॐ शांतिः

सहजानंदघन

आत्म स्मरणे हा० आशीर्वाद !

(पत्रांक १६०)

ॐ नमः

हंपि-१६-३-६६

परम कृपालुदेव ने अभेद भक्तिए नमो नमः

भव्यात्मा श्री हीरजी भाई अने श्री विजया व्हेन.

पत्र मल्युं कृपालु ना शरण स्मरण थी आनंदघने पोतानुं नाम सार्थक कर्युं. अने तेज रस्तो आपणे पकड़वो छे. ज्यारे देहाध्यास मुंझवे त्यारे "छूटे देहाध्यास तो···"ए आदि त्रण गाथा जोर थी धून पणे रटवी तेथी जीव मां जागृति आवशे. आ देहे हरसनी कृपा करी थी शरू थवा मांडो छे. कृपालु नी कृपाए करज जल्दी पती जशे· माताजी नी तबियत ठीक छे एमणे तथा मेघबाईए आपने जय सद्गुरु वंदन पूर्वक प्रणाम जणाव्या छे. बवाणीआथी पू० बाना पत्रो आवे जाय छे. धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक-१६१)

ॐ नमः

हंपि

२४-३-६६

आत्मार्थी मुनिवर आनंदघन,

पत्र संप्राप्त थयुं. विगत बधी ज्ञात थई. कृपालुदेवनी कृपा थी अहिं आनंद-आनंद वर्त्ते छे. तमारा अंतर मा सदैव जागृत रहो !

गया गुरुवारे अहिं खरतरगच्छीय विचक्षणश्री जी नी ४ शिष्याओ आवी छे. बेदिवस मां बीजा २-३ आववाना छे. बधी बालकुमारीकाओ अने विदुषी छे. सत्स्वरूप विषयक रुचिवंत छे. जेथी दिवस नो घणो खरो समय एमनी जिज्ञासानी पूर्त्ति रूपे सत्संग चालु रहे छे. गच्छनी रूढिओथी मलेला संस्कारो पैकी केटलाक सत्स्वरूप बाधक छे तेने काढवा मां-कढाववा मां अतिश्रम पडतो होय एम लागे छे·

रात्रे माताजी नो समय तेओ ले छे· अने तेओ तेमने रमुजी स्वभावे केटलाक प्रश्नो ना समाधान आपता होय छे, तेथी साध्विओ ने आश्चर्य लागे छे के एमने शास्त्रज्ञान नहिं छतां आवा अपूर्व उत्तरो कई रीते आपी शके छे ? खरे ज एमने कंई विशेष ज्ञान होय एवी खात्री थाय छे. उक्त कारणे अवकाश अभावे जवाब ढील थी लखी रह्यो छुं. आ पत्र मां तमारी अंतरंग नी हलचल लखी हृदय हलवुं कर्युं ते श्रेय रूप छे वारंवार साधन बदलवुं एटले वारंवार दवा बदलवा जेवुं थाय अने तेथी देहरोगनी जेम भवरोग कावु मां न आवे माटे "साधन मां एकनिष्ठा ज सफलता नी कुंची छे" आ सूत्र ने हृदयमां स्थिर करवुं घटे छे. हवे तमे जे साधनक्रम गोठव्युं छे तेमां एकनिष्ठ रहेजो.

शंका मोहनिय ना दलिक उदय आवे त्यारे साधन क्रम मां विचलित थवाय तेवा समये सद्गुरु आज्ञा ना महत्व विषयक उंडाण थी चिंतवन करवुं के जेथी साधन निष्ठा जमे.

तमारी आनन्दघनावस्था विषयक जे स्वप्नाभास थयो हतो तेनी पूर्त्ति करतां·करतां ते थशेज. एवो दृढ विश्वास राखी वर्त्तो, अधीराई न करशो, अधीराइ थी उत्साह भंग थाय छे. माटे धीर-वीर-गम्भीर बनी ने मंड्या रहो. एटले "चार चार गाउ चालतां लांबो पंथ कपाय" आ उक्ति चरितार्थ थशेज.

बाह्य मार्गों में जेम चढाव उतार आवे अने तेने पारकरीगंतव्य स्थले पहोंची शकीये छीये तेम आ अन्तरमार्ग मां पण घणां चढाव उतार तो आवेज. अने तेने पार करवा मां नाहिम्मत न थवुं जोइए. चढाव ना प्रसंगे ट्रेन ने पण पाछल थी धक्का मारनार बीजुं इंजिन जोडवा मां आवे छे. तेमज आ जीवन ट्रेन ने चढाव ना समये सत्पुरुषार्थ नामनुं बीजुं एंजिन जोड़ी दइए तो जरूर उन्नति ना शिखरे पहोंची शकीए। त्यां एकलुं भाग्य नाम नुं एंजिन काम नज आपी शके. माटे कमर कसीने मंड्यां रहो अने एमां सफलता थाओ एज सर्व ज्ञानीओ वती आ आत्मा आशीर्वाद आपे छे. कृपालुदेव नुं सुन्दर चित्रपट अहिं जे उपलब्ध छे ते मोकलुं छुं. वासचूर्ण दैवी होवाथी टपाल मार्फत मोकलतां आशातना लाग्या वगर न रहे जेथी मोकलवुं शक्य नथी, फरी कोइवार मिलन थये जोयुं जशे.

तमारा चातुर्मासपूर्व ना वधाय कार्यक्रमो नी रूपरेखा-वांची. तप जपना क्रम पण जाण्या, अने तेथी संतोष छे अने रहेशे. गमे ते प्रकारे आ जीव ने शिव निरुपद्रव बनाववो छे. तेथी तेवा लक्षे उद्यमवंत रही श्रमशील श्रमणपणुं विकासाववुं घटे छे.

तमारा आ श्रमणपणा ने जोइ ने आ आत्मा अतीव हर्षवन्त थाय छे. श्री भोगीभाई नुं घंटिये थी पत्र छे, तेमां तमारी अमुक समये घंटिये रहेवानी भावना छे एम सूचित कर्युं छे. अने खुश थया छे. भोलाजीव छे. एमनी पासे अध्यात्म राजचंद्र ग्रंथ (कर्त्ता डा० भगवानदास) होय तो ते एकवार नजर तले काढी जजो. अन्यथा अगास आश्रम थी V. P. द्वारा चौमासा मां मंगावी लेजो. ए वल आपशे. एमां श्री सौभाग्यभाई कृपालुने जे बीज मंत्र आपवा मोरवी जवाना हता अने ते वयं ज्ञान थी कृपालुए अगाऊ थी जाणी एक कापली मां लख्युं आप्युं हतुं. तेमां जे लखेलुं हतुं तेनी डॉ० जे कल्पना करी छे ते बरोबर नथी. बाकी नुं लखाण उत्तम छे. आ वात नुं रहस्य डॉ० ने गत वर्षे मुंबई मां समागम थतां प्रेम थी जणाव्युं हतुं अने तेओए दलील विना सांभली लीधुं हतुं.

माताजी ए आपने पूर्ण वात्सल्य भावे हार्दिक अभिनन्दन सह वन्दनादि जणाव्या छे.

श्री भद्रंकरविजयजी महाराजने जो पत्र लखतां हो तो धर्मस्नेह लखी जणावजो. धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि हो. ॐ शान्तिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद!

(पत्रांक-१६२)

२६-३-६६

ॐ नमः

भक्तवर्य श्री नवीनभाई सपरिवार

गई सांजे पत्र मल्युं. बधी विगत जाणी. कृपालुनी कृपा थी अहिं आनंद छे. होली पछी अहिं गरमी वधी. तेथी मसामां तकलीफ शरु थई छे. एक्जिमा नी शरुआत पण थइ छे. कर्मनो कचरो जाय छे. माताजी स्वस्थ छे.

गया गुरुवारे श्री विचक्षणश्रीजीनी शिष्याओ चंद्रप्रभा, मनोहरश्री, मणिप्रभा अने मुक्तिप्रभा एवं परम दिवसे मंजुलाश्री, ज्योतिप्रभा अने भाग्ययशा एम ७ शिष्याओ अहिं आव्या छे. सांजे विहार करी जशे. गुरुणीजी रायचुर छे. तेओ माँ महाराज ने अंगे अहिं न आवी शक्या. तिलकश्रीजी बल्लारी छे. ते सीधा हैद्राबाद तरफ जशे. अहिं नहिं आवे. प्रथम ना चारे ना भाव ऊंचा छे. लोकलाज बंधनो एमने मुंजवे छे.

रजनीकान्त सपरिवार समाचार जाण्या. मोहनजी पण सूरत गया छे. अहिं आववानी भावना हती. सूरतनी दादावाडी नी हकीकत जाणी. सर्वोदय होस्पीटल माटे नी मूर्त्तिओ विषयक अने हंपि आश्रम माटे ना कृपालुदेव तथा छत्री ना विषेनी हकीकत जाणी. अहिं माटे उतावल नथी. हजु तो सत्संग भवन नुं लेवल पण संपूर्ण पड्युं छे. अठवाडिया बाद उदानी कंपनी—बेंगलोर वाला चंदुभाई एक

सुपरवाइजर ने लईने अहिं आववा धारे छे. पछी जे थाय ते खरू. काश्मीर विषयक कार्य सफल थाओ. मृगेन्द्र मुनि ने प्रत्युत्तर नथी आप्यो. एने एमना भाग्य उपर छोडी धो. पोतानी मरजइे तेओ अहिं आवे तेनी वात जुदी चाही ने तेड़ववा नथी. माताजी ना पाड़े छे·

माताजी नी तबियत सारी होवाथी साध्वीमंडलनी सेवा मां दिन-रात लाग्या रहे छे. मारो दिवस भर साध्वीमंडलनी जिज्ञासा ने संतोषवा सत्संग मां वीते छे. कालथी निरांत थशे. त्यां वर्षा थई. अहिं वादल थाय छे वर्षे त्यारे खरू !

विमल बाबू नी तबियत सुधरी रही छे. धन्नुलालजी नुं मकान लगभग तैयार थवा आव्युं छे. एमनी पत्नी अने छठा पुत्र अठवाड़ीया उपर अहिं आव्या छे. पुत्र गई काले मद्रास बेंगलोर उटी वि० नुं निरीक्षण करवा गया छे. मेघबाई रूपीबाई मोंघीबाई अहिं छे. जयजिनेन्द्र जणावे छे अने देवाजी पण याद करे छे त्यां श्री रमाब्हेन, नलीन, भावना, रेणु, नीता ने मारा तथा माताजी घणाज वात्सल्य पूर्वक आशीर्वाद जणावजो· सुरत बधाने आशीर्वाद लखी जणावजो. धर्म स्नेहमां वृद्धि हो. प्रतिकूल परिस्थिति ओज जीवन नी मजबूत घडतर करी शके छे. माटे तेनो सदुपयोग करतो आवडे एटले आत्मोन्नति अवश्य थवा मांडे. तेवी तक तमने वारंवार सांपड़े छे. तेमां सफलता थाओ. ॐ शांति.

सहजानंदघन

अनेकानेक आशीर्वाद !

(पत्रांक १६३)

हंपि-३०-३-६६

ॐ नमः

मुमुक्षु भव्यात्मा श्री जेठीबाई सपरिवार,

आपनुं पत्र यथा समये मल्युं. तेमां आपनी मनोव्यथाना दर्शन थयां तेनुं समाधान नीचे मुजब अवधारसो जी·

व्यवहारथी जे चोक्कस स्थले पहोंचवानुं होय त्यां जवानो स्पेशियल ट्रेन मली जाय तो क्यांय खोटी थया वगर शीघ्र गंतव्य स्थले पहोंची शकाय ; तेम परमार्थ थी जो स्पेशियल ट्रेन समां परम कृपालु देवनुं शरण अने स्मरण जीवन मां अखण्ड धाराए वणाई जाय तो सीधां अहिं थी महाविदेहे जवाय अने त्यांथी बाकी नुं अधूरुं काम पूरुं करी आ भव रोग थी सदाने माटे मुक्त थवाय-आपने कृपालु प्रत्ये श्रद्धा छे ज, माटे तेम करवुं उचित छे ए श्रद्धाबल अने स्मरणबल विकसाववा गमे त्यां जई शको छो. पण ए कृपालु ने छोडी बीजा कोईनुं शरण जो स्वीकार्युं तो ते जीवना जेटला भव बाकी हशे तेटलाज भव करवा पड़शे—आ वात नक्की छे. आ सिद्धान्तिक तथ्य ने गंभीरता थी ऊंडाण थी विचारी आपने जेम हित लागे तेम करो· मारा तरफ थी कोई नेय क्यारे पण आ एज सलाह छे अने आ जीवन मां ए अफर छे. बाकी सौ पोत पोताना अभिप्राय मां स्वतंत्र छे.

ववाणिया तीर्थ थी पू० जवलवा नुं पत्र हतुं जवाब लखी मोकल्यो छे. श्री जीवामा ने पण एक बोध पत्र लखी मोकल्यो हतो-तेमने हवे सारु जाणी प्रसन्नता थई· तेमणे हिम्मतभाई तेनी वा प्रवीणभाई तेमनी वा. नरेन्द्रभाई तेमनी वा. जया व्हेन वि० ने हा० आशीर्वाद जणावजो· हीमत भाई प्रवीण भाई अने जया व्हेन ना पत्रो मल्या छे. तेनी प्होंच जणावजो अने आशीर्वाद !

आ देहे मशानी कृपा होली पछी शरू थई छे. वेसवा मां फावतुं नथी. तेम छतां वन्ने टाइम सत्संग नियमित चालतुं रहे छे. खरतर गच्छीय ७ साध्वियो आव्या छे तेमां थी ३ वेल्लारी गयां छे. वाकी ना चार त्रण वखत आव्या छे. तेओ वीजो वार गई काले पधार्यां छे· सत्संग रुचि असीम छे. प्रथम एक अठवाड़ियुं रोकाया जेथी ८-८ कलाक सत्संग चालतुं हतुं·

आजे आनंदघन बावा ना देह विलयने १ मास थयो. जेथी तेमना परिवार वालाओ तरफ थी सिद्ध-चक्रनी मोटी पूजा भणावशे. माताजी नी तबियत हवे वणी सारी छे. आपने धर्मस्नेहे प्रणाम जणाया छे देवराज भाई तथा हीरजीभाई ना पत्रो मां आपनो उल्लेख छे. सौने हा० आशीर्वाद जणावजो. जेठा भाई मेघवाई. विशनजी सुखभाई वि० नी हा० यादि सह प्रणाम ! ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक १६४)

ॐ नमः

हंपि-६-४-६६

आत्मार्थी मुनि आनंदघन,

अठवाड़िया उपर तमारुं प्रश्न पत्र मल्युं. पण आ देहे मसानी असीम कृपा छे. सतत वलतरा शूल अने क्वचित् रक्त वहन प्रायः चालू रहे छे वेसवानीय असुगमता छे. जेथी पत्रोत्तर केम लखी शकाय ? तो पण सत्संग क्रम चाले छे. अने तमारी जिज्ञासा ने संतोषवा आजे आ पत्र पण लखाय छे· तमारा पत्र मां स्वकीय सिंहावलोकन नुं चित्रण वांच्युं अने साथे उठती शंकाओ पण वांची· आ प्रश्नो ना उत्तर आपणा अत्यार लगी ना पत्र व्यवहार मां अपाई गया छे. छतां शंकाओ उठे ए आश्चर्य जणाय ? छए प्रश्नो नुं तात्विक समाधान सार नीचे मुजब अवधारजो.

१—जे हृदय प्रधान होय, जेणे पोताना हृदय मन्दिर मां साकार भगवान विराजमान कर्या होय, वृत्ति प्रवाह प्रभु प्रत्ये वहेतुं होय ए रूप 'शरणता' अने प्रभु भूलाय नहिं ए रूप 'स्मरण' ए बन्ने जेने चालता होय ते भक्त गणाय तेनी आ आराधना पद्धति ते भक्ति मार्ग गणाय.

२—जे मस्तिष्क प्रधान होय जेनो उपयोग ज्ञेयो थी असंग एवा ज्ञान मात्र मां टकी रहेतो होय ज्ञाननिष्ठ ज्ञानी कहेवाय अने तेनी आराधना पद्धति ते ज्ञानमार्ग कहेवाय छे.

३—उपरोक्त उभय मार्ग पैकी एक पण मार्ग मां जे आरूढ न होय तेम छतां मार्गारूढ थवानी जेनी प्रबलतम भावना होय तेवा उमेदवार ने तेनी पात्रता विकसाववा भक्ति अने ज्ञान गर्भित क्रिया मार्ग

आश्रय अनिवार्य छे जेमां विधिवत् यम-नियमो नुं पालन आवश्यक होय छे. ते नियमो पैकी सामायिक प्रतिक्रमणादि मुख्य छे. तेओए नियमित जिनवंदनादि भक्ति करवी. शास्त्राभ्यास करवो अने प्रतिक्रमणादि करवां ए त्रणे पद्धति तेज. भक्ति ज्ञान अने योग साधनानुं त्रिवेणी संगम जेनुं नाम क्रिया मार्ग छे.

४—जे भक्ति मार्गारूढ होय तेनुं ज्ञान स्वतः निर्मल थवालागे छे ज्ञान नी सर्वथा संपूर्ण निर्मलता एज श्रेणिए सिद्धि थये, ते ज्ञान—केवलज्ञान—कहेवाय छे. आ प्रकारे वर्त्तनार नी बाह्य क्रियाओ उदयाधीन गमे ते प्रकार नी होवा छतां अभ्यंतर सम्यक् चारित्र रूप आत्म स्थिरता वधतीज जाय अने ते यथाख्यात स्थितिए पहोंचे छे. आवा साधकने शरुथीज शास्त्राभ्यास के क्रियाकाण्ड अकिंचित्कर होय माटे तेमनुं कांइ करवुं बाकी रहेतुं नथी जेम के मरुदेवी माता.

५—हृदय मंदिर मां विराजमान साकार परमात्मा अने पोताना आत्मा नुं भक्ति मार्गे चालतां ज्यारे अभिन्न पणुं अनुभवाय त्यारे आत्मज्ञान प्रगटे छे, आ साधक हवे पछी मात्र ज्ञाननिष्ठ रहेवा रूप ज्ञानमार्गी कहेवाय छे. एने पण शास्त्राभ्यास के क्रियाकांड आवश्यक नथी रहेता मात्र ज्ञाननिष्ठा ने अखण्ड राखवा भणी ज जेनो पुरुषार्थ छे. तेनी परिपूर्णता एज केवलज्ञान कहेवाय छे. भरत महाराज ने एज श्रेणीए कैवल्य प्रगट्युं हतुं. त्यार पछी तेओ साधक न रह्या के जेथी साधन अपनाववा पडे अने क्रियामार्ग अपनावीनेज तेओ कांइ केवलज्ञान पाम्या न्होता माटे एकान्ते क्रिया मार्ग नो आग्रह राखवो न्याय विरुद्ध छे.

६—क्रियामार्ग अपनाव्या पछी य अमल अभिमान वश बाहुबलीजी नुं वर्ष भरनुं कायोत्सर्ग प्रयत्न निष्फल गयुं अने मान वमन थया पछी चालवानी क्रिया करता ज केवलज्ञान थयुं.

आजे तो क्रिया मार्ग ना नामे क्रियाभासो एटला वधी गया छे. अने साथे गर्व पण जाणे ए लोकोने मानमे आसमाने पहोंचाड्या होय ज्युं प्रत्यक्ष जोवाय छे. एवाओ ना पुण्य ना पडिका छूटशे त्यारे अेवा पटकाशे के रत्नप्रभानुं राज्य लेवा जाणे होडा-होड ना करी होय ? मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना ? मुण्डे मुण्डे बहुना ?

बाहुबलजीए कयुं प्रतिक्रमण कर्युं हतुं ? स्थूलिभद्रजी ना शेष त्रण साथीओ जे सर्पबिल, सिंहगुफा, अने वावडीना भारवट उपर चोमासुं रह्या तेओ कई क्रिया करता हता ? समवशरण मां कइ क्रियाकाण्ड नुं वर्णन शास्त्रो करे छे ? घणाक ने तो उपदेश श्रवण करतां करतां केवलज्ञान थइ जवानी वातो शास्त्रो पोतेज संभलावे छे. एतो जग प्रसिद्ध वात छे, तो पछी तम क्रियाकांडीओ ने भक्तिमार्गे चालनार कृपालु ना भक्तो भणी कटाक्ष वृत्ति कां उद्भवे छे कृपालु ना नामनी दुहाई दई स्वच्छंद वर्त्तनारा नाम निक्षेपी भक्तो पोताना हृदय मां अंधारुं छतां भक्तिमार्ग मां प्रवेश नहि छतां ते मार्ग नी योग्यता पामवा जेओ त्याग वैराग्य अपनावी श्रावकाचार के साध्वाचार पाले छे तेनी एकान्त खंडना करी व्यर्थनी विडंबना वधारी स्व-परना कर्मबन्धनो वधारे छे तेओ खरेज दया ना पात्र छे ए ए लोको नो दोष छे. कृपालु नो नहि ज.

उक्त त्रिवेणी संगम रूप मोक्ष मार्ग भूतकाल ना ज्ञानीओ आवी ने आपण ने समजावी शकशे नहिं आपणी भूलो शास्त्रो कढावी शकशे नहि—माटे प्रत्यक्ष सत्पुरुषरूप भगवान मार्गदर्शक पण अनिवार्य थई पड़े छे एने ज भगवान मानीने एमनी दोरवणीए जीव चाले तोज क्रमशः भक्ति, ज्ञान, अने संवर क्रिया रूप रत्नत्रय नी सिद्धि करी शके.

माटे कृपालु देवनी हाजरी मां एओए त्रण रत्नो पैकी प्रथम सम्यग्दर्शन नी आराधना रूप भक्तिमार्गनी मुख्यता बतावी तेने झीली ने श्री लघुराज स्वामी आदिए कृपालुनेज भगवान मानी ने आराधना करी तो आत्मदर्शन-आत्मज्ञान सिद्ध कर्युं—कराव्युं. आजीव उपर पण ए कृपालु नो जन्मान्तर नो असीम उपकार छे. अने एमना अवलंबने घणा जीवो तरवाना छे. माटे एमनी भक्ति नुं प्राधान्य आपीए छीए.

वली अनादि सिद्ध नवकार ना पांचे पदोनुं परम गुरु शब्द मां समाणर करी तेपद नुं अंतरंग रहस्य छतुं करवा सहजात्म स्वरूप नुं अवलंबन लई 'सहजात्म स्वरूप परमगुरु' आ नवकार ना सार रूप मंत्र ने रटवुं ते नवकार मंत्रनीज महिमा रूपे छे. छतां रूढिगत जीवो माष-तुष रटवा मात्र थी केवलज्ञान थवानी वातो संभलावता छतां एकांत नवकार ना शब्दो मां अटवाइ जइ नवकार अर्थ मां प्रवेशता नथी —ए अनर्थ नी हद छे कांइ ?

नवकार ना अर्थ रूपे ज आ संक्षिप्त मंत्र छे. एम तमे जाणो. बीजा गमे तेम टेकड़ी करे तेथी मुंझावानी जरूरत नथी. वली बाह्य साधुवेश जेने उदय मां छे तेने छोडवो आवश्यक नथी भले असली साधुता नथी पण तेनो खप तो छे ने ? तेमां ए सहायक छे. एने असली साधुता नो खप ज नथी तेवाओ तो वेशने लजवे छे. तेओए तेवा वेशने छोडीदेवो हितरूप छे. हवे वधारे बेसातुं नथी तेथी संक्षेप थी पतावी रजा लउं छुं.

माताजीए हार्दिक वंदनादि जणाव्यां छे. धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक १६५)

ॐ नमः

२३-४-६६

भव्यात्मा श्री नेमचंदभाई दम्पती

आपना गई सांजे बे अने पहेलां एक एम त्रणे पत्रो मल्या. समाचार बधा जाण्या.

मसा ने भूंगली थी काढवा मुंबई ना एक भक्त एक वैद्य ने तेड़ी गईकाले आव्या छे. आवती काले ते प्रयोग विना इंजेक्शने मात्र दवाई चोपड़ीने थशे. उपाध्यायजी लब्धिमुनिजी महाराज ने मुंबई मां ते प्रकारे कढावेल हता. आ जूनो शस्त्र क्रिया हजु प्रचलित छे. त्यां श्री श्राविकाजीनी तबियत सारी जाणी प्रसन्नता थई. दादावाड़ी नी उन्नति पण प्रशंसनीय छे.

काकीबानी तबियत पण हाल बराबर चाले छे. तेमणे आप बन्ने ने घणाज उमलका थी धर्मस्नेह जणाव्या छे.

अक्षय तृतीया त्रण दिवस नुं ओच्छव खूब उल्लास थी उजवायुं बेक हजारे भोजन कर्युं. बाकी ना आव्या गया ते जुदा. सिद्धचक्र, नवाणुंप्रकारी अने दादाजी नी पूजाओ भणवाई हती.

नवीनभाई नुं हाल मां पत्र नथी. रजनीकान्त नुं पण पहोंच पत्र हजु नथी. तमे श्वास माटे कालीं दवा साथे बीजी बे चीजो मेलवी. ते त्रणे नुं माप लखी जणावजो. अहिंपण एवा दर्दी जोवा मां आवे छे. तेथी विधिवत् लखी जणावजो. अहिं गरमी आ वर्षे लागे छे. वर्षा थये शांत थशे. ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद !

नेमचंद भाई सपरिवार आनंद मां हशो ? ली० माताजी ना आशीर्वाद !

(पत्रांक १६६)

ॐ नमः

हंपि २७-४-६१

मुनिवर श्री आनंदघन,

क्रमशः ८-४ अने १६-४-६६ ना लखेलो बन्ने पत्रो मल्यां व्याधिवेदनी छता असीम हती. तेथी घणा भक्तो देशी औषधि मोकलता रह्या. ते पैकी लीबोड़ीनी मींज न० ३ नुं पावडर दही नी साथे लेवा थी फायदो थतो जणायो. एक भक्त मुंबई थी अनाड़ी वैदनी जोडी बंधु युगल ने तेही महा सु० ७ ना विना इंजक्सन शस्त्र क्रियाकरी तेमां १ मसो नीकल्यो. हवे धीमे धीमे रूक आवे छे. हजु बेसातु नथी. छतां आडे पडखे आ पत्र लखी रह्यो छुं.

होमियोपेथी औषधि स्पीरिट ना माध्यम थी बने छे अने स्पिरिट एटले दारू कीडाओ नो ज अर्क छे. जेथी मने घणा भावकोए कहेलुं छतां ते औषधि नथी करतो. तमने पण आ बात नी जाणकारी नहिं होवी जोइए. अन्यथा नहीं ल्यो.

अने बदले ०।। तोलो लींबोडी मींज पावडर अने ०।। तोलो साकर बने मेलवीने लेशो तो घणो फायदो थाय. एवी अनुमान प्रमाण थी धारणा छे.

तमारा छेल्ला पत्र मां ना स्वप्नो फलो. पूर्वजन्म संस्कार तो काम करी रह्या ज छे. भूत-भावी नी कल्पनाओ त्यागी केवल वर्त्तमान क्षण धर्मध्यान मां ज वीते तो शुक्लध्यान मां प्रथम पाद मां प्रवेश थई आत्म साक्षात्कार थाय ज थाय, अतः बाकी नी बधी कल्पनाओ हठावी द्यो अने आगे कूच करो.

माताजी आदि नों धर्मस्नेह स्वीकारजो घंटीये जाओ त्यारे श्री भोगीभाई ने हार्दिक सहजात्म स्मरणे आशीर्वाद जणावजो ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक—१६७)

ॐ नमः

हंपि ६-५-६६

वंध समय चित्त चेतिये, उदये शो संताप ?

भव्यात्मा श्री नवीनभाई सपरिवार

व्यथित हृदये लखायलं पत्र मल्युं· ज्ञानीओ ज्ञान एटले जाणकारी आपे. छतां जीव पोतानाज अज्ञान ने वापर्या करे तो तेने ज्ञानिओ नुं ज्ञान शुं करे ? स्पष्ट शब्दो मां ठोकी वजावीने जे न करवानुं वारंवार कह्यं हतुं छतां तेने ठोकरावी, पोताना मननुं कह्युं कर्युं ! तेनुं परिणाम प्रत्यक्ष छतुं थयुं, आनुं नाम छे "तीव्र अशुभोदय" एवा समये लगाम खेंचो, पण उलटी चाल नो घोड़ो रोक्यो रोकाय नहीं· अने खाडा मां सवार ने पटकी पाड़े. एवुं ज तमारा जीवन मां अनुभवायुं.

पोतानुं धार्युं करवानी हठीली टेक अेज मानकषाय, एने लीधे खोटा साहस कर्येज जताहता, न कुटुंबिओ नुं मान्युं अने न अम जेवाओनुं. हितैषुओ ना तमने बचाववाना प्रयत्नो पण तमे हाथे करी ने निष्फल कर्या, अने पछी कहो के बचावो ! डूबता ने बचावनार दोरडुं आपे, तेने पकड़वानी कोशीस न करे तो तेमां बचावनार बीजी रीते बचावी न शके. तेवी परिस्थिति मां बीजुं करी पण शुं शके ? तमारी हठोली टेव ने लपड़ाक रूपे आ एक सजीव शिक्षा थयानुं स्वीकारी रजामां राजो रहेवानुं राखजे· एज लाभ समजी ने शान्ति ने सेवजो.

सदाय तड़को के सदाय छायड़ो जेम संभवे नहीं. तेमज शुभाशुभ उदय नुं समजवुं. माटे तमारी विछावेली जाल ने जेम संकेलाय तेम संकेलतां नडती मुश्केली मां सतत लघुता अने दीनता भावने दृढ़ करी मंत्र स्मरण रटता आत्मभाव ने जालवी राखजो. जन्म अने मृत्यु समये साथे चाले तेवुं आ मार्ग छे. तेवी समजण दृढकरी जे साथे नहीं चाली शके तेवा आ भौतिक वैभव ना मोह जता करजो एथी आत्मा मां शांति टकी शकशे—"तेरा है सो तेरी पास, और सभी अनेरा'''''आप स्वभाव मां रे'''अवधू-सदा मगन में रहना'''

आत्मा शिवाय बाकी नुं बधुं भले चाल्युं जाय छतां आत्मशान्ति मां भंग न पड़वा देवा नुं पुरुषार्थ अने साहस जरूर कर्या ज रहो तो ए महान् लाभ नुं भावि मां परिणाम सुन्दर आवशे. माटे हिम्मतहार थशो नहीं.

जिन्दगी भर चाले तेटला रोटला छतां पोतानी शक्ति आध्यात्मिक मार्गे वालवानो मोको छतां वैठे वैठे कांइक करवुंज जोइए एवा खोटा ख्यालो ने लीधे जे कांइ कर्युं तेनुं परिणाम जे आव्युं ते वडे भविष्य नुं जीवन क्रम हवे घड़वुं आवश्यक छे माटे आ बधुं शिक्षा रूप समजी घटनाओ ने भूलीजजो 'सुज्ञेषु किं बहुना ?'

सूरत थी पत्रो आवे छे तेमो पण प्राप्त प्रतिकूलता ने लीधे थयेली हृदय व्यथा हलवी करवा घणुं वधुं लखाण छे. मृगेन्द्रमुनि हैदराबाद थी अहिं आवी चार दिवस रही पाछा गया. ए विषय मां एक पत्र वडे तमने कइंक लख्युं हतुं.

मसा मां खून पडतुं हतुं ते हवे बंध थयुं छे दर्द नथी. पण स्थिर आसने बेशवा जतां हजु दर्द थाय छे. हजु कचास छे. माताजी नी तबियत हाल ठीक-ठीक चाले छे तकती माटे उचित प्रबन्ध यथा समये थई रहेशे.

मूर्त्ति विषेना पाषाण नी शोध नी कठिनता जाणी पन्नालालजी ने आ समाचार वांची संभलाव्या छे एमना मकाननी छत नुं काम हवे शरू थशे, कारीगरो बहु ढीला मल्या छे सत्संग भवन नुं काम हजी पमज पड्युं छे, लेवलिंग अधूरुं पड्युं छे· वर्षा हजु थई नथी पहाड़ना कुंडो सुकाई गया, हवे वर्षा थये बांध कामो चालु थशे. चंचल व्हेन परीक्षा पतावी वोर्डी पूना जई आवी हवे कच्छ जवानी तैयारी मां छे, त्यार बाद अहिं आवशे, अहिं ३५-४० सत्संगीओ हाल छे बीजा आव जा पण चालू छे. तम सौ शरीरे स्वस्थ हशोज. मननी मुंजवण टालवा अहिं जे कांई लखशो तेमां संकोच करजो नहिं हृदय नो भार हलवो थतो होय तो जे कांइ लखवुं होय ते खुसी थी लखता रहेजो· धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि हो. याद करनाराने हा० आशीर्वाद जणावजो. ॐ शांतिः

सहजानन्दघन हा० आशीर्वाद !

(पत्रांक—१६८)

ॐ नमः

हंपि-२०-५-६६

आत्मार्थी भव्यात्मा श्री नेमचंद भाई, श्री प्रभावती व्हेन श्री नवीनभाई आदि,

आप बन्ने ना पत्रो मल्या, नेमचंद भाई ना पत्र नुं जवाब अर्धुं लखायलुं पड्युं रह्युं. अठवाड़िया पर पेट मां शूल व्याधिनो अचानक उदय थयो ८ कलाके शम्यों· तेणे शक्ति हरी लीधी, जेथी पत्र पूर्ण न थयुं· गई सांजे नवीनभाई नुं पत्र मल्युं• हकीकत वांची आ जवाब लखुं छुं.

जन्मान्तरो मां जीवे जे-जे इच्छ्युं हतुं अने तेथी जे कर्म बीज वबाया हता-ते-ते कालक्रमे फले अने वर्त्त माने ते फलो क्रमबद्ध उदय आवे छे. तेमा अशुभकर्म बीज वावेलां होय तेनो परिणाम उदय आवे आ जीव अकलाय छे, मुंमाय छे. ते भोगववानी इच्छा नहिं छतां भोगववुंज पड़े छे. ए भोगवता मां जो जीव ज्ञानी नी दृष्टिए समभावे साक्षी पणे भोगवे तो नवां कर्म बीज ववातां नथी अने जूना वेदीने नष्ट थाय छे· परिणामे जीव कर्म बोझ थी हलको फूल जेवो थाय छे, आ सिद्धान्तिक तथ्य छे, अमुक समय थी तमारा पारिवारिक उदय ने जोतां जे कांइ बनी रह्युं. छे, ते अशुभोदय नो. परिपाक छे. आधि, व्याधि अने उपाधि नो चारे तरफ थी भरड़ो छे. एमा टकवानुं बल आपनार तमारा धर्म संस्कार छे. ए हर्ष नो विषय छे.

कर्म नो संबंध देह साथे अने धर्म नो संबंध आत्मा साथे छे. जेटलुं आत्मभावे रहेवाशे. तेटलुं धर्म संबन्ध आत्मा ने शांति आपशे. कर्म संबन्ध ना साक्षी पणे रहेवुं एज आत्मभावे रहेवुं छे. माटे आत्म भावेज रहेजो ए वारंवार भलामण छे. पूज्य श्री देवचंदजी महाराजे पण एवी भलामण करी छे के— "आतम भावे रमो हे चेतन आतम भावे रमो. जड़ भावे रमता हो चेतन, काल अनंत गमो" आपद्य मां अद्भुत शिक्षा छे.

वली शुभ के अशुभ कर्मजन्य परिस्थितिओ कंइ कायमी होती नथी. एतो तड़को अने छांयड़ो जोइल्यो. वारंवार बदलायो ज करता होय छे. बन्ने मांथी अशुभ कर्मोदय जीव ने संसार नु साचुंस्वरूप समजाववा बलवान निमित्त छे. सुसंस्कारी जीव एना प्रतापे वैराग्य भावने पामी अनित्य जीवन नो मोह छोड़ी नित्य जीवन पामवा प्रयत्नशील बने छे. अने पछी शुभ कर्मोदय पण झेर समान भासे छे. खरेखर ? तम सौने हाल नो उदय कोई अंशे उपकारी गणी शकाय. माटे निज दोष दलन थई आत्म गुण प्रगटे तेवी संभावना जाणी हर हालत मां समरस रहेजो. जे थई गयुं. ते घटनाओ मांथी शिक्षा गुण ग्रहण करी, थएली भूलो सुधारी सुधरावा शक्य प्रयत्न आदरी फरी थी भूलो न थाय तेनी कालजी राखी धर्म ध्यान ना अंग रूपे मंत्र स्मरण धारा ने अखंड बनावजो. ज्ञानिओ नुं शरण अने स्मरण जेने प्राप्त छे तेओ चक्रवर्तीओ नी ऋद्धि करतां य वधारे धनवान समजवा योग्य छे अस्तु.

आदेहे हवे मसानी तकलीफ नथी. ते सिवाय पण हवे शरीर ठीक छे काकीबा नी तबीयत ठीक चाले छे.

श्री प्रभावती व्हेन नी देह स्थिति नु वर्णन वांच्युं. ओ आत्मा ने शान्त भाव केवलवायलो होवाथी देह स्थिति बाधक नथी. आखरे आ देह साप नी कांचली समान ज छे ने ? तेतो दूर फेंकवानी चीज छे. ए घसाई जवाथी के दूर थया थी आत्मानुं तो कशुं ज जतुं नथी, माटे तथा प्रकार नी चिंता छोडी द्रव्य-क्षेत्र काल भावे जे एमने मदद करी शको ते फरज अदा कर्या रहो, अने आत्मभाव कोई पण रीते छोडशो नहीं. एमने तथा आप सौ ने मारा तथा काकीबा ना हा० आशीर्वाद धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि हो० ॐ शांतिः

सहजानंदघन हा० आशीर्वाद सहजात्म स्मरण !

वली धन्नुलालजी साव ने समयसार नाटक हिन्दी भाषान्तर जोइए छे ते अगरचंदजी नाहटा ना जणाव्या प्रमाणे सूरत मां जे दि० भाईओनुं मूलचंद कीशनदास कापड़िया प्रेस छे. त्यांथी मली शकशे. माटे एक प्रति खरीदी अहिं मोकली आपजो. एओ महीना पछी जयपुर जावशे त्यारे पैसा तमने आपी देशे एमना नी छत R.E.C थई गई छे. ते शिवाय नुं काम हजु बाकी छे.

अहिं अठवाडिया थी वर्षा शरू छे कुंडो बधा खाली हता ते भराता जाय छे. हवे चंदुभाई ने सुपरवाइजर मोकलवा जणाव्युं छे के जेथी बांध काम शरू थाय· मृगेन्द्र मुनि तो हैद्राबाद प्रतिष्ठा मां विधि विधान करावे छे. साध्वी श्री विचक्षण मंडली त्यां छे. बे दीक्षा अने प्रतिष्ठा चालू छे. अगास आश्रम फरी आव्या अने ते संबंधी अभिप्राय लख्यो ते तेमज छे. रजनीकान्त अने तमे बन्ने नानी वये सारी जेवी कशोटीए कसाई ने मजबूत बनी रह्या छो. माटे हिंमत छोड़शो नहीं पाणी मांथी पग शोधवा बरोबर आ घड़तर थई रह्युं छे. आ घड़तर पेला शाता वेदनीय ना उदय करतां य विशेष हितकर जाणजो. ॐ शांतिः

कृपालु देव नी मूर्त्ति ना पाषाण विषयक खोज चालू राखजो. अहिं अमे एक चंदन मां दादा दत्त गुरु नी ५। इन्चनी मूर्त्ति जिनमुद्रा मां पद्मासन वाली बनाववावी छे. जे तमे जोई ने खुश थई जाओ. *एना आधारे ३६ इंचनो बनावशुं कारण के अहीं दादावाड़ी नुं. पण निश्चित छे.*

तमे बन्ने भाइओ आ अशुभोदय नो गालो अहिं तीर्थस्थान मां सेवा आपवा रूपे गाल्यो होत तो परिणाम कंइ जुदुं ज आवत जेम यात्रा में ३ महीना वीत्या तेमां तमारो कर्मोदय गाड़ी ऊपर उतरी पसार थई गयो तेम थात. पण एटली हिम्मत क्यां थी स्फुरे ? कारण के कंइक कर्यांज करवानी जीवनी आदत खरी ने. जो के तेवी सेवा आपवानी मागणी तो करीज हती खरुं ने ? पण हवे बधुं भूली जजो. अने नव निशालिया बनजो ॐ.

(पत्रांक १६६)

ॐ नमः

हंपि-१२-६-६६

भव्यात्मा श्री नवीनभाई सपरिवार.

गई सांजे पत्र मल्युं. एमां अंकित तमारी समजण अने धैर्य ने हा० अभिनंदन छे.

जड़ पदार्थ के जे आत्मा ना नथी छतां तेना ऊपर नो मोह आत्मा ने दुखी करे छे, ते पदार्थों जतांनी साथे तेनो मोहपण जाय ए आत्मा ने बहुज हित रूप छे अने ते *निकट भव्यता नुं लक्षण छे.*

जड़ धन नुं आववुं के जवुं ए सुख दुख रूप नथी परंतु तेमां मोहनुं टकवुं के जवुं ए दुख अने सुख रूप छे. आ मोह आखा संसार ने छेतरे छे. तेनुं भान तमने थयुं एज साचो लाभ तमने सौ ने थयो जाणी प्रसन्नता थाय छे. आ महान् लाभ आगल तुच्छ जेवा जड़ वैभव नी किंमत शी ? आ भावो टकावी राखजो. अने हवे थी फरी अहम्-मम न जागे तेवो तकेदारी राखजो· तमारा बानी तबियत सुधरती जाणी प्रसन्नता थई. जो अवकाश होय तो खुशीथी हंपी यता टीची जाय. तेमने अने तमारा काकाजी ने मारा तथा माताजी न० हा० आशीर्वाद जणावजो. अहिं तो नाना बालको पण बोलवा पूरतुं मोटर ड्राइवर नुं भिन्नत्व शीखी जाय छे पछी कालांतरे तो काम आवशेज. आ देहे हवे तद्दन शांति छे. माताजी ने ठीकाठीक चाल्या करे छे. अने तेनी परवाह नथी करता, आत्मानंद मां कचाश न रहेवी जोइए अने तेओ जागृत छे.

समयसार नाटक ग्रन्थ न मोकल्युं होय तो हवे न मोकलता. केमके राह जोया पछो बीजे थी धन्नु-लालजीए मंगावी लीधुं छे. छतां मोकलाशो तो अमे राखी लइशुं. जयपुर क्यारे जवुं छे? रमाव्हेन अने बालको ने अने तमने मारा तथा माताजो ना हा० आ० धर्मस्नेह मां वृद्धि थाओ.

सहजानंदघन

हंपि

(पत्रांक-१७०)

ॐ नमः

१६-६-६६

परम कृपालुदेवने अभेद भक्तिए नमोनमः

मुमुक्षु आत्मा श्री हीरजीभाई सपरिवार.

पत्र मल्युं तेमा लेखीतो वधी विगत जाणी. टपाल वधी आवे छे. के तेनी पहोंची थलातुं नथी. जेथी आपना आगला पत्र नो उत्तर नहीं आपी शकायो होय ए बनवा जोग छे.

घणुं वांच्युं अने सांभल्युं. हवे तो ते वधी शिक्षा कार्यरत थई जवी जोइए. आत्म-भान अने वीतरागता नी आराधना मां बाकी नुं आयुखर्चो नांखवानुं छे. तेमांज श्रेय छे. माटे मंडी पड़ो पोताना हृदय मंदिर मां परम कृपालु नी छवी स्थापन करी श्वासानुसंधान पूर्वक 'सहजात्म स्वरूप परमगुरु' आ महामंत्र नी स्मरणधारा ने अखंड करो. वीजा जे-जे विकल्पो उठे ते-तेने जाणनार हुँ आत्मा छुं. अेवी भावना दृढ कर्ये जाओ, विकल्पो थी मुंजाओ नहीं अने आत्म जागृति राखो आ प्रयोग थी अंतरलक्ष जामशे अने देहाध्यास छूटी अंतरंग मां प्रकाश थशे. तेना परिणामे शाता—अशाता थी भिन्न आत्मानंद नो अनुभव थशे.

आ फरियादो नी टेव छोड़ी उदय ना साक्षी रही ऊपर जणाव्या प्रमाणे कृपालु नी भक्ति मां मंड्या रहो एज भलामण. आपने माताजी तथा मेघबाईए प्रणाम लखाव्या छे, सत्संगीओनी आव जा चालुज रहे छे. सत्संग प्रसंग शिवाय निमित्त विना कोई याद रहेतुं नथी पत्र नी वाट शा माटे जोवी.

धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद!

(पत्रांक—१७१)

हम्पी-१८-७-६६

ॐ नमः

भव्यात्मा श्री भाणबाई.

प्रभु कृपाए अहि आनंद वर्त्ते छे. त्यां पण सदाय वर्त्तो. चंदना-तो एम० ए० फर्स्ट क्लाश फर्स्ट नंबर पास थई ने लायब्रेरी सायन्स नुं एक वर्ष नुं कोर्श लेवा क्यारनी मुंबई पहोंची अभ्यास मां लागी गई छे. देवराज भाई जवाहर पण साथे गया छे.

बाई! तारे शरीरे पण तपस्या चालू छतां गड़बड़ चालू थई. ए पण कर्म नो नाटक ज ने? देह गुण-धर्मोज एवा छे. देह ए व्याधिनीज मूर्त्ति छे. ज्ञानिओए देहमां रोमे-रोमे पोणा बब्बे रोग ना बीज

होवानुं जणावो गया छे. ते बीज मांथी जे-जेने-पोषण मले ते फुटी नीकले छे, माटे तेओ ने पोषण न मले
. ते प्रकार आहार—निहार अने विहारादि करवां घटे छे, न खावुं, ओछुं खावुं. थोड़ीकज चीजो खायी बाकीनी त्यागवी ए विगेरे बाह्य तप तो शरीर ने ठीक राखवा माटे छे. पण तेनी विधि समज मां न होवा थी तपसीओ शरीर बगाड़े छे. एज तपनी विडंवना छे.

कारण के तेओ आत्मानुं तप साधे करता नथी. आत्मा शिवाय बीजा कशानी खावा पीवा के अडवानी, जोव. जाणवानी इच्छाज उठवा न देवी ते आत्मा नुं तप छे. अथी आत्मा सुख समाधि पूर्वक रही शके छे. एना विना भोगीओ के जोगीओ बधा दुखना दहाड़ा वितावे छे. माटे आत्मा नुं तप सधाय तेवी रीते बाह्य तप करवुं. अन्यथा तप ना नामे ढोर लंघन घणुँ करी ने थाय छे. आ विषय मां वधारे समजवा श्रीमाणेकविजयजी महाराज पासे थी समजवा प्रयत्न करजो. अने तेमने मारो धर्म स्नेह कहेजो. त्यां वेदांती भाटवाई ने हा० आशीर्वाद कहेजो तमारा बधा सगां स्नेहीओ ने मारा धर्म लाभ तथा माताजी तथा बाई ना प्रणाम जणावजो अने तमे बधा आशीर्वाद स्वीकारजो.

धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो ॐ शांतिः

सहजानंदघन हा० आशीर्वाद!

श्री माणेकविजयजी पासे थी शास्त्र श्रवण अने धर्म आराधना मां मार्गदर्शन लेजो, योगानुयोगे तपस्यानी साथे ज साधु संगति नो योग बन्यो छे, तेनो पूरो लाभ उठावजो, अहिं खरतर गच्छीय चार साध्विओ आव्या छे, ८-१० दिवस रोकाई चेन्नारी जवाना छे.

(पत्रांक—१७२)

ॐ नमः

हंपि ८-८-६६

बंध समय चित चेतिये, उदये शो संताप?

भव्यात्मा नवीनभाई सपरिवार

लांबे गाले विस्तृत पत्र मल्युं, गई काले मुरत थी पण हतुं, तमारा बा अने तमारी तबियत सारी जाणी प्रसन्नता थई, तमारा माथे थी घात टली गई. सामुदिक कर्म नो कचरो पण तमारा परिवारिको ना आत्म प्रदेश थी जत्थाबंध खरो छे. अने ते आ प्रमाणे विविध रूपे दर्शन देतो जाय छे. परिणामे आत्मा हलवो थतो जाय छे, ए पारमार्थिक लाभ जाणी तमो संतोष राखो छो एज हर्ष नो विषय छे. श्री धन्नुलालजी तो तमने मल्या हशे? अने अहिं ना बधा समाचार जणाव्याज हशे? नीलगिरि-कुनूर माटे दादावाड़ी नो फुल साइज नो बैठी प्रतिमा बनाववा माटे चंदन नी प्रतिमा बनावरावी तेओ लई गया छे. आवते वर्षे पोष पूर्णिमा गुरु पुष्ये तेओ मूर्त्ति शरू करावशे, जयपुर मां कृपालु देव नी प्रतिमा विषे शुं थयुं? प्रगति थई के एमज छे? अहीं पण सत्संग भवन विषे हजु लेवल नुं अधुरू काम एमज पड्युं रह्युं छे. संजोगे थई रहेशे!

संसार नी असलियत नुं खरेखरुं दर्शन तमे करी रह्या छो ते लाभ माज छे ने ? माताजी नी तवियत ना समाचार धन्नुलालजीए आप्या ज छे. तेमां हवे राहत छे. तेमणे तम वधाय ने हा० आ० जणाव्या छे. मारा पण जणावजो अने स्वीकारजो. प्रभु भक्ति मां मग्न रहेजो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन हा० आ० !

(पत्रांक—१७३)

हंपि २२-८-६६

ॐ नमः

व्हेन श्री रमाव्हेन सपरिवार

पत्र मल्युं. श्री नवीनभाई नी ट्रीचीनी सफर जाणी. अहिं आवशे त्यारे बोध जल-पान यथाशक्ति करावशुं. तम लोको ने संसार नं असली चित्रपट जोवा नुं मल्युं अने मली रह्युं छे. अने एथी जे स्वरूप जागृति आवी छे ते कोटि द्रव्य व्यये पण न आवे माटे अचिंत रहेजो.

युवा वये कर्म बोझ थी हलवुं थवुं श्रेयकर छे. वृद्ध शरीरे भोगववुं भारे पड़े.

अतएव—"बीती ताहि बिसारदे, आगेकी सुध लेहि" आ महावाक्य स्मृति पटमां अंकित करी राखी समय नो सदुपयोग करजो. काकीबा अस्वस्थ हता पण हवे राहत छे. आदेह स्वस्थ छे. तमसौसदाय स्वस्थ अने प्रसन्न वन्या रहो ए हा० आशीर्वाद ! वधा बालको सह तमने मारां तथा माताजी ना हा० आ० धर्मस्नेह मां वृद्धि हो ! श्री धन्नुलालजो ना जयपुर थी ३ पत्रो मल्या तेमने कलकत्ते उत्तर लखीश. ॐ शांतिः

सहजानंदघन हा० अशीर्वाद

(पत्रांक १७४)

ॐ नमः

२७-८-६६

भक्तवर्य श्री मोहनजी सपरिवार.

"पत्र मिला, हाल ज्ञात हुए. श्री नवीन भाई के साथ आप आना चाहते है, खुशो से पधारें माताजी के स्वास्थ्य में सुधार है। यह शरीर स्वस्थ है। शेष सभी प्रसन्न है। आपको आपके घर वालों को और मित्रों को हमारा तथा माताजी का० हा० आशीर्वाद !

श्री नवीनभाई तथा श्री रजनीकान्त भाई सपरिवार.

हाल तमारुं कोई पत्र नथी. पण सूरत थो काकाजो नुं तथा श्री रमा व्हेन नुं एम बे पत्रो हता. पारसन नां ३ हता. सौना पत्रो थी तमे ट्रीची गया नुं अने त्यां थी अहिं आववा नुं उल्लेख छे ते तमारी भावना सफल थाओ. माताजी नी तवियत मां हाई प्रेशरे अने हार्ट नी तकलीफ मां घणो सुधारो छे, पण गरदन पर नीं गांठ एमज छे. गदग ना डा० मुंबई मां आपरेशन कराववानी सलाह आपी छे. परंतु तेम तेओ इच्छता नथी. छतां आगल जेवो उदय.

(पत्रांक—१७६)

हंपि-३१-८-६६

ॐ नमः

भव्यात्मा श्री नेमचंद भाई सपरिवार,

पत्र मल्युं तेज दिवसे ट्रीचीथी नवीनभाई नुं पत्र मल्युं· आपे लख्या मुजब ज नवीनभाई नी भावना वर्त्ते छे. पण भागीदार थी छुटवुं बनशे तो धारणा सफल थशे.

वली आपे जे पर्वतनी जाहेरात वांची ते अष्टापद नथी. परन्तु कैलाश पर्वतना नामे जे प्रख्यात छे. तेज अष्टापद छे· आखा हिमालय प्रदेश मां तेज चारे तरफ थी किल्लेबंधीने योग्य ठीकठाक करायेलुं छे. अष्टापद नुं मूल नाम पण 'कैलाश' छे. ठीक-ठाक कर्या पछी उपनाम अष्टापद पड्युं छे· दिगंबर मां हजु सुधी कैलाशज बोलाय छे अने ते मानसरोवर थी ३० माइल उत्तरे छे. हाल चीन ना कब्जा मां छे. तेमां रहेला रत्न बिम्बो बरफ मां छुपायेला होवा थी सुरक्षित छे. अन्यथा लोको तेनो दुरुपयोग करे आ काल मां ते गुप्त रहे तेज हित रूप छे.

वली व्याख्यानो छपाववा नो आपनो आग्रह उचित छे पण तेवी व्यवस्था सहेल नथी. मारा थी ते शक्य नथी. अने बीजाओ ओमां भोग आपी शके तेवा कोई हजु सुधी मल्या नथी. भावना तो घणा लोको भावे छे. पण बधाने तैयार रसोई जोइए छे· रांधवानी महेनत तो कोई नें करवी नथी. अने तैयार रसोई मले एम नथी. तो पछी शुं करवुं ??? मात्र भावना भाव्या करवी एटलुंज.

माताजी नी तबियत मां सुधारो छे. मात्र गांठ नी गड़बड़ पूर्ववत् छे· सत्तागत कर्मो पोतानुं काम करे छे अने करशे· एमा ज्ञानी के अज्ञानी फेरफार न करी शके. मात्र ज्ञानी समता थी भोगवी छूटे, नवुं संसार ऊभुं न करे।

त्यां श्राविकाजी ने राहत हशे ? आपनी तबियत पण ठीक हशे ? आप बन्ने ने मारा तथा माताजी ना हा० आशीर्वाद !

साध्वी विचक्षणश्रीजी नुं चांदा थी पत्र छे. उदयसागरजी आदि पण त्यांज चातुर्मास छे. घर थोड़ा छे अने साधु साध्वी घणा· तेमनी साध्वीओ थोड़ीक हैद्राबाद पण छे. तेमना पत्रो पण आवे छे· हवे तो पर्वाराधना नो समय नजीक आवे छे, भीड़ मां पत्र लखाशे नहीं तेथी संतोष राखजो· धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन हा० आशीर्वाद !

(पत्रांक १७७)

ॐ नमः

हंपि ७-९-६६

मुनिवर,

दीर्घ समय बाद विस्तृत पत्र मल्युं तेमांना अनेक प्रश्नो वांच्या. ते पैकी केटलाक प्रश्नो ना जवाब पूर्व पत्रो मां अपाया ज छे. केटलाक अनावश्यक पण छे तथा केटलाक आवश्यक छे· किन्तु आ

भा० सु० १० ए अने सां० दिने ४०० नी संख्या संभवाई हती. खूब उल्लास नुं वातावरण सर्जायुं हतुं प्रति वर्ष करतां आ वर्षे उपज अधिक २६-३० हजार थया नुं सांभल्युं छे. मोहनजी प्रभुना मुनीम बन्या हता. माताजीए भावुकोने भक्ति रस मां तरबोल करी पोताना देहनुं लक्ष भूली जता हता. तबियत तो केवी छे. ते तमे जाणो छो. छतां तेमांय कंइक राहत छे. आ देह पण स्वस्थ छे

पारणुं सवा बारसो मण मां मणिबापाए लीधुं हतुं. प्रायः जनता मां एवी छाप पड़ी गई छे के अत्यार लगी जे जेणे पारणुं लीधुं तेनुं पारणुं खाली नथी रह्युं तेथी पड़ापड़ी थती होय छे. मणिबापा ना द्वि० पुत्र ने पुत्री छे. पुत्र नथी अतएव लेवा मां अवल रह्या.

धन्नुलालजी नुं अहिं पण तमारा लख्या अनुसार पत्र हतुं. सुंदरलालजीए ते वंचाव्युँ हतुं पण जेम थवुं होय तेम थाय छे. सुन्दरलालजी त्रिपुटी गया शुक्रवारे पुनम पतावी ने गया. खूब उल्लास थी अठाइ-ओनी तपस्या अने पारणा पार पाम्या पूनमे बहार ना नव-नवा आवी जवाथी भीड़ ठीक रही. चालू आव-नाराओनी पजूषण मां अधिक समय रहेवा थी···गेरहाजरी होय ज. तेनी पूर्त्ति बीजी रीते थई गई हती, हवे भीड़ विखराई गई, अल्प संख्या रही छे· मोहनजी पंचमी दिने मुंबई गया अने त्यांथी ट्रीची प्होंता चौथ ना आखु नियमसार बारसानी जग्याए संभलाववा मां आव्युं ते तेमणे टेप रेकर्डिंग करी लीधुं ॐ

तमारी साथे पुजूषणना शेष चार दिन दादाजी हताज. तेमनी सानिध्य मां तमे भावनात्मक सां० प्रतिखामणा कर्याज. भावना नी सिद्धि छे. अमसौ ए पण तमने खमी खमाव्या छे. श्रीनगर मां अनेक व्यापारिओ अने सरकारी अमलदारो थी परिचय वध्यो अने ते बधा फेवर मां रह्या जाणी संतोष थयो. दादाजीनोज परचो खरो ने आ बधु श्रद्धानु फल छे.

सूरत थी नहिं पण ट्रीची थी काकाजी ना बे पत्रो तमारा प्रयाण पछी हता तेओ तो बिल्कुल नूतन जीवन मां आवी गया होय तेवा उल्लास मां रहे छे. जवाब सूरत लखी मोकल्यो छे. अहं-मद-वादनुं नाटक अमदावाद मां भजवाई रह्युं छे ते गुजरात ने कलंक रूप छे. दशलक्षण नुं वर्णन पण पूर्व करतां आ वखते विलक्षण पणे थयुं तेनी पूर्णता मां छेल्ले बे त्रण लक्षणो नुं संक्षेप वर्णन करो समेटायुं. त्यार पछी गई-शनी-सांजे तमारुं पत्र मल्युं ॐ सूरत, ट्रीचो बधाने मारा तथा माताजी ना हा० खामणा लखी जणावजो. अने तमे लखी मोकल्याछे तेमने आशीर्वाद पण स्वीकारजो-ॐ शांतिः

—सहजानंदघन हा० आशीर्वाद !

(पत्रांक १७६)

ॐ नमः

हंपि ३०-१०-६६

मुनिवर श्री आनंदघनवि०

गइ सांजे पत्र संप्राप्त थयुं विगत सर्व जाणी. गच्छवासिओ विषे नी तमारी धारणा पण वांची तेमनी अने मारी वच्चे सत्संग निमित्ते एक व्यक्ति नी आव-जा थया करे छे. ते व्यक्ति ने तमारो परिचय करवा बे वर्ष पूर्व इशारो कर्यो हतो. पण तेम करतां गच्छवासीओए रोक्या होय एम जणाय छे. ए दृष्टिए आपणे

पांरस्परिक परिचय होय एम तेओ क्वचित् अनुमान करी शके छे. चाणक्य बुद्धि ने लीधे तेओ लखवी (कळवा) नहि दे. ते तथा तमारा लखेला कारणों थी पण तमारो पारस्परिक तेमनी साथे पत्र व्यवहार न बने ए संभव छे. तो तेनी शी परवाह? आत्म शुद्धि नेमार्गे संचरवानी जेने दढता छे. अने साथे प्रयत्न पण छे तेने लोक लाज नडती नथी.

वली बाळ जीवो कोइ महात्मा नी प्रसिद्धि सांभले अने आकर्षाइ ने गमे ते बुद्धिए आवे तो तेथी शुं? आपणा उदये आपणी साथे तेम थवा मांडे तो तेथी मनमां गमो के अणगमो पेदा थवा न देवो, समत्व भावे रहेवुं अने जो उपदेशनो प्रसंग सांपडे तो तेमनी सकाम भावना ने निष्काम-मार्गे वालवानो इशारो करवो अकळाइ न जवुं एज तो साधना नी कसोटी छे. आ देहधारी ने पण पहेलां तमारी जेमज थतुं पण धीमे-धीमे ए वृत्ति विलीन थई गइ.

धंटिया-निवासी जनो ने के अन्य वडवा-अगास मां रहेताओनो आ देहधारी साथे काइ अधिक संग-प्रसंग नथी. तेमां थी थोड़ाक व्यक्तिओ ज विशेष परिचय मां आव्या छे. बाकी ना कहेवाता मुमुक्षुओ रूढि धर्मे आरूढ छे गच्छवासिओ नी जेम ऐकान्तिक वलण धरावे छे. तेमने कंठे स्याद्वाद शब्द हशे पण हैये जणातो नथी. आ काले आ क्षेत्रे माध्यस्थ भावना अने मात्र गुणानुरागिता अल्प जीवो मां देखाय छे. शेष बधा जीवो पक्षपात अने दोष दृष्टि थी आबद्ध थई प्रवर्त्ते छे माटेज आ काळ कलियुग कहेवाय छे. साधु के श्रावक वर्ग मां जे उपदेशक पणे वर्त्तता होय छे तेओ पैकी घणा खरा अन्य ना उत्कर्षने सही सकता नथी. तेथी पाणी मांथी पोरा काढवा जेवी चेष्टा करे करावे छे भोळा जीवो तेमना केता-केनी ने प्रचार करवा मंडी पड़े छे. तमारा काने पण तेज न्याये चर्चा आवी होय एम जणाय छे. ॐ

तमे तमारा साधना क्रम मां मग्न रहो, दुनिया ना अभिप्राय दुनियाने ज मुबारक ॐ शांतिः

माताजी नुं शरीर छेल्ला केटलाक दिवसोथी अस्वस्थ छे चारेक दिवस थी अन्न लेवायुं नथी छतां आत्मबळ अनुपम छे.

—सहजानंदघन धर्मस्नेहे हार्दिक आशीर्वाद!

(पत्रांक—१८०)

हंपि २२-८-६६

ॐ नमः

भव्यात्मा श्री नवीन भाई सपरिवार,

सूरत थी लखेल पत्र मल्युं. वांची विगत जाणी. अहिं दीवाली नी त्रिदिवसीय धून सानंद संपन्न थई. आ वखत नी दिवाली रात्रिए धून अभूतपूर्व हती. बार थी ८ सुधी आ देह धारी अने माताजी पण सम्मिलित हतां केटलाक भाई व्हेनो देह भान रहित चैतन्य चांदनी नो अनुभव करी शक्या-आमां केटलाक सदन नवा हता. शरद पूर्णिमाए चंदुभाई टोळीयाना नाना भाई प्रो० प्रताप भाई टोलिया पण आव्या हता. मरोद वादन द्वारा 'अपूर्व अवसर' गाता अद्भुत अनुभवो कर्या आ० रजनीश प्रत्ये नो तेमनी भक्ति ओसरी गई· अने अहिं रंगाया मने अमेरीका तेड़ी जवा तैयार थया. पण

आपणुं त्यां काम नथी. तेओ भारतीय विद्यालय अमदावाद मां प्रोफेसर छे, फरी थी अवकाशे आवशे.

त्यां मूर्त्तिओ विषे करेली प्रगति थई ते लखजो.

श्रीरमा अने वालको ने मारा तथा माताजी ना हा० आशीर्वाद जणावजो· बधा स्वस्थ हशो ? आ देह ठीक छे· माताजी नी गाठ मां कंइ फरक न पड्युं चंदना पोतानी मंडली लई दीवाली उजवी पाछी गई.

आ पूनमे कृपालु नो जन्म जयन्ती, ध्वज परिवर्त्तन वरघोड़ो साधर्मीवात्सल्य आश्रम नुं वार्षिक रिपोर्ट, ट्रस्टीओ नी चुंटणो अने रातभर भक्ति विगेरे कार्यक्रमो छे· मोहनजी ना माता-पिता भाई परिवार ट्रोची थी आवशे. हीरजी भाई कुलपाकजी छे· हवे अहिं आववानुं लखे छे, तेमनी गुफा ऊपर छोटुभाई अने तेमज मित्र भाणजोभाई मकानो बांधवा इच्छे छे. बने त्यारे खरुं कोई कण्ट्रक्टर जामतो नथी. अने मजुरोनी तंगी छे. अत्रेथी आश्रमवासिओ ना जयजिनेन्द्र. माताजी ना आशीर्वाद !

ॐ शांतिः

—सहजानंदघन हा० आशीर्वाद !

(पत्रांक १८१)

ॐ नमः

हंपि-१२-१२-६६

मुनिवर श्री आनंदघनजी

वडाली नुं अंतिम-पत्र मल्युं. विगत जाणी प्रसन्नता थई· अहिं कृपालु नी कृपाथी आनंद मङ्गल वर्त्ते छे. आ देहे फरी मरसा नी कृपा वर्त्ते छे· छतां सत्संग क्रम मां भंग पडतो नथी· कर्म नो कचरो शीघ्र उदय आवी विखरतो जणाय छे· आश्रम नी उन्नति साथे धर्म प्रभावना वधती रहे छे. अनेक देशोना अनेक संप्रदायो ना मुमुक्षुओ. भक्तो, विद्वानो, विचारको परिचय मां आवे जाय छे. तमारुं देह तंत्र हाल बराबर काम देतुं हशे अने आत्म तंत्र पण सुसंवादित हशे ज· धर्म प्रभावना वर्द्धमान हशे. आत्मार्थी पणा ने विकसाववा मार्ग दर्शन करता रहो—ए पण स्वाध्याय छे ने ? जगत नुं ऋण पतावबुं पण अनिवार्य होय छे·

माताजी ना देहे पण हार्ट हाई प्रेशर वि· नी. कृपा हती, उचित उपायोथी राहत छे. कर्मो शीघ्र खपवा सामटां आवे छे· अने तेना उदय मां आत्मानंद रहे छे· एज हितावह छे· केमके व्याधि समाधि रूप निवड़े छे·

का. १५ दिने अहिं जन्म जयन्ती खूब उल्लास थी उजवाई· सन्मार्ग प्रभावना मां दिनो दिन वृद्धि थई रही छे अने आश्रम मां पण अभिवृद्धि थई रही छे·

ध्यान बल वड़े समाधि स्थिति उत्पन्न थाय छे, अने एज· "संवर समाधिगत उपाधि" सम्यक् चारित्र छे· जेनुं फल मोक्ष छे· स्वाध्याय बल वड़े ध्यानबल वधे छे. अतएव अहोरात्र मां ४ पहोर स्वाध्याय अने बे पहोर ध्यान करवानी आज्ञा उत्तराध्ययन मां बतावेल छे. ज्यारे जे ध्यान मां स्थिरता न रही शके

त्यारे तेने स्वाध्याय आवश्यक छे. जो ध्यान टकी रहेतुं होय तो तेने स्वाध्याय ते काले आवश्यक नथी. व्याख्यान काले स्वलक्षे स्वाध्याय करूं छुं, अेवो भाव केलवी कर्त्तव्य अदा करवा थी अभिमान न आवे सांभलनार भले सांभले आपणे तो पोताने ज उद्देशी ने व्याख्यान करता रहेवुं.

तारंगानी गुफा तमने अनुकूल रहे ते स्वाभाविक छे. दि० मन्दिरो मां पण एक गुफा छे. ते मन्दिरो मां पण थाय जा करवी. एथी तेओ पण परिचय मां आवे. दि० धर्मशालानी सामे ना पश्चिम हिस्सां मां केटलेक दूर एक बौद्ध गुफा छे. जेमां एक पत्थर नी पट्टी मां श्रेणिबद्ध पांच बुद्ध मूर्त्तिओ छे. ज्यां घोड़ियाँ चढाववा मां आवे छे. वली ज्यां कुदरती जलस्रोत छे. त्यां कुण्ड मां गोमुखी लागेल छे तेनी उपर १ शिला मां गुफा छे. ज्यां केटलीक मूर्तिओ छे. (अजैन)

आ देहधारी ने अनेक स्थलो ना आमंत्रणो छे. पण मस्सा ने लीधे हाल,दोढ़ेक मास अहिंज रहेवानी भावना छे. धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन ना० आशीर्वाद !

(पत्रांक—१८२)

हंपि-१६-१२-६६

ॐ नमः

भव्यात्मा श्री नवीनभाई सपरिवार

गई काले तमारूं पत्र मल्युं. विगत वधी जाणी. अहिं प्रभु कृपा थी आत्मानंद छे. अने व्याधिनी कृपा थी देहमां मस्सा वीसेक दहाडा थी पोतानुं काम करे छे. घर गत्थु उपायो चाले छे. अेथी राहत छे.

भावाजी ना देहे पण हार्ट तथा हाई प्रेशरनी असर हती. तेना उपायो थी राहत छे. तम सौ स्वस्थ जाणी प्रसन्नता. सूरत थी छ एक दहाड़ा ऊपर पत्र हतो अने ट्रीची थी पण हतो, जवाब आपी रह्यो छुं. कुनूर माटे नी मूर्त्ति विषे पोष पूर्णिमाए गुरु पुष्यामृत योग मां ते काम शरू कराय एवी गोठवण करजो. अने अेडवान्स ना पैसा त्यांथी मंगावी लेजो.

अहिं माटे पण कृपालु तथा दादाजी नी मूर्त्तिओ माटे पण सुन्दरलालजी ने लखी जणावजो मुंकाशो नहीं त्यांथी न मंगाववा होय तो अहिं लखी जणावजो अहिंथी मोकली देवाशे. हीरजी भाई अहिं आवी गया छे. तेमना सत्संग भवन माटे ताकीद करे छे. जिनालय माटे पाछल थी नक्की थशे. हीरजी भाई नी गुफा ना सामेना पहाड़ ऊपर एक नानकड़ो शत्रुंजय बने तेवी मारी भावना छे. हजु ए वात चर्चा नथी. पण आ पूनमे चर्चीश. तथा दादावाड़ी माटे जशराजजी-हीराभाई ना रूमो नी उत्तरे अने अजैन समाधि स्तूप नी पूर्वे जे पुडवी शिला छे. त्यां कदाच नक्की थाय. वली धर्मशालामाटे हीरजीभाई नी गुफा नी पश्चिमे जे विभाग छे, तेना ऊपर अत्यारे धारणा छे. पछी अेवो उदय.

दर पूनमे ट्रस्टिओ नी मीटिंग थाय एवो कायदो घड्यो छे जेथी चंदुभाई दोलिया पुनमे आवशे त्यारे वधारा ना बांधकाम माटे विचारणा थशे. बाकी ना वीसेक मकानो स्वतंत्र व्यक्तिगत पण बनशे.

रजनीकान्त लखे छे. के वर्माशेल अेजेन्सी हवे बंध थशे ते इण्डियन आइल रूपे जो अमने मली जशे तो गाड़ी पाटे चढ्या पछी हूँ पण एकाद मास सेवा आपीश.

गर्मी मां आप सौ अहिं आववा इच्छो छो ते उत्तम छे. पण त्यारे जेवो उदय हशे, जोयुं जशे. तो धरमचंद नाहरनी भावना जाणी-तेमने माटे तैयार थयेली कृपालु मूर्त्ति नुं चित्रपट मोकलजो· तमारी व्यवहारिक उपाधि नुं वर्णन जाण्युं ते बधुं कर्मफल रूपे आवे जाय छे. त्यां हर्ष शोक शो ? नाहर ने आशीर्वाद जणावजो.

काकीबा नी गांठ एमज छे. अत्यारे अन्य व्याधिवश क्यांय जवा तैयार नथी. पछी जेवो उदय तमारा काकाजी छो रेकर्डिंग सांभलता. एमने शांतिः थाय एज इच्छनीय छे विषम परिस्थिति कंइक विश्राम जोइए. एमने भ्थी राहत छे.

त्यां श्री रमाब्हेन अने बार्लको ने मारा तथा माताजी ना हा० आशीर्वाद जणावजो. अने तमे पण स्वीकारजो. काश्मीर जइ आव्या हशो, भयंकर थंडी नु वातावरण हशो. अहिं वर्षा थी वातावरण छवायलुं रहे छे. तेथी ठंडी मोडे थी झलकी छे.

—सहजानंदघन हा० आशीर्वाद !!

(पत्रांक १८३)

ॐ नमः

हंपि-१५-१-७०

भव्यात्मा श्री नवीन भाई सपरिवार,

पत्र मल्युं· विगत उपर उपर थी वांची पछी पत्र सुखलाले परठी दीधुं आजे शोधतां न जड्युं. गई काले झावक जी नुं पत्र छे. एक हजार मंगाव्या अने कुल त्रणहजार मां मूर्त्ति बनशे एम जणाव्युं छे. मूर्त्ति तमे ३५ इंचनी बनाववा नक्की कर्युं. शास्त्रीय दृष्टिए अंगुल ना माप हता अने ते अेकी अंक ना होवा जोइए. बेकी अेटले २-४-६-८-१० न होवा जोइए. ए पण कारीगर ने जणावजो. अने चंदन मूर्त्ति ना आधारे चहेरो एवो आकर्षक बने के जोनार नी दृष्टि ज ठरीजाय. आंख कुदरती आंख जेवी अने अर्द्ध खुल्ली जोइए ऊपर थी आंख लगाड़वी नथी ध्यान मग्न दशा जोइएज आटलुं बार-बार कारीगर ने ठसावी देजो.

कृपालु देव विषे केटली प्रगती थई ? धन्नुलालजी नो बीमारी नो तार हतो. तार थी आशीर्वाद मोकली आप्या. शुं बिमारी छे· ते जणाव्युं नथी तेने अठवाडियुं थयुं· पाछल थी पत्र पण नथी. नाहरजीनी अहिं आववानी अने ते पण तमारी साथे आववानी भावना ने हा० अभिनंदन ! आदेहे मस्सानी कृपा हजी चालु छे. अर्धो आराम छे.

पंजाबी बाप बेटा माँ थी बेटा नी पात्रता नथी. आलसु अने उद्धत प्रकृति छे. आरामतलब वृत्ति छे. बापमाँ पण शाताशीलियापणुं छे. तेने ताव आवे छे. हजु मन ठर्युं नथी· तेथी. दवाई व्यवस्थित थती न होवा थी तेनी दवा बंद करी छे. मात्र सुरत नुं मलम अने हवे तमे पडीकु मोकल्युं छे. ते चालु करशुं. महा-

जयन्तो अथवा आखात्रीजे नीलगिरिनुं. खात मुहूर्त थाय तेम तेओए इच्छयुं छे. तेथी हमणा त्यां नथी जवुं. पण माह सुद १३ थी कुंभोजगिरि मां दि० ने त्यां प्रतिष्ठा छे. तेओ नुं हा० आमंत्रण बल पूर्वकनुं छे. हैदराबाद नुं क्यार नुं आमंत्रण छे. वली आदोनी नुं पण आमंत्रण आवे तेवा समाचार छे. शरीर ठीक थये क्रमशः पताववा पड़शे अेटले चोक्कस समय तेमने न आपी शकाय के क्यारे अहिंनुं मेल बेसे अत्यारे तो तमे आवी शको नहीं. नहीं तो १ महोनो कदाच अहिंज बीते बीते, आवता सोमवार सवारथी सांज लगी कंपली माटे नुं प्रोग्राम नक्की छे. आज काल मां प्राणलाल कापड़िया आवनार छे. जीवणभाई दंपती भांडक जी गया छे. तेओ पण आवो जशे. भांडकजी मां साध्वी मंडल विचक्षणश्रीजी आदि तथा उदय सागरजी नो निश्रामां उपधान नुं ठाठ जाम्यु छे. दादा० नो चंदन मूर्त्ति ५। इंचनी तेओए मंगावेलो मोकली आपी. दत्त कुशल गुरु ना संपुट मूर्तिओ ६ तैयार हतीते जीवणभाई साथे मोकलावी छे· ल्पशे तेटली लेशे काकीवानी गाठतो एमज छे. आपरेशन ना नाम थी गभराया छे. अेमनी प्रकृति ने लीधे हूँ कांइ वधारे कहेतोज नथी आपणे आदरता थी कहीए अने तेनु विपरिणाम आवतु होय तो शुं करवुं ? आपणी सफर मां अेवा प्रसंगो बन्या त्यारथी में तेवी वृत्ति ज खतम करी दीधी छे. जोके हाल मां गांठ मां दर्द नथी पण आस-पास नी नसो तथा शिरदर्द नी फरियाद रहेती होय छे. तकती ? अखण्ड अहिं पड़ी छे, तेमां दोरी नथी आवतो अने हवे बहु मोंघो थई गई छे तो नथी लेशो नहिं. कारण के ए कांइ नियमित वपराश करता होता नथी. याद आवे तो क्वचित् वपराश पहेला करता हता—सूरत थी पत्र छे. तमारा जननी नुं स्वास्थ्य नरमज रहा करे छे· अने तेवो ज वंधोदय छे. थोगड़ा थी वस्त्र चला वाय छे. बाकी कांइ कहेवा जेवुं नथी. तमारी गाड़ी साधारण पणे चाली रहे छे ते जाण्युं. जेवो उदय हशे तेवो नाटक भजववो रह्यो· श्रीरमा तथा बालको तथा तमने मारा तथा माताजी ना हा० आशीर्वाद धर्मस्नेह मां वृद्धि हो, तमे अहिं तमारी अनुकूलताए आवो, तेमा कदाच क्योक प्रयाण थाय तो त्यां पण साथे आववा मां जो वांधो न होय तो आवी शको छो. अने प्रोग्राम बनशे तेवी सूचना करतो रहीश. ॐ शांतिः शांतिः

सहजानंदघन हा० आशीर्वाद !

(पत्रांक-१८४)

हंपि-२८-१-७०

ॐ नमः

भव्यात्मा श्री नवीन भाई. सपरिवार·

पत्र अने चित्र मल्यां. मूर्त्तिओ माटे ना पत्थरनुं पूजन गुरु पुष्ये कर्युं पण तेज दिवस थी काम प्रारंभ करवुं जोइतुं हतुं ते शरू न कराव्युं होय तो फरी सारो दिवस जोइ कलाकारे 'परम गुरु' आ मंत्र नुं मन मां स्मरण करता-करता प्रारंभ करवुं. मंत्रस्मरण थी कलाकारनी कलाखीली उठशे, माटे मारा वती तेमने आटलो संदेशो पहोंचाड़शो.

१—दादाजी नी एक मूर्त्ति तैयार थये बीजी अहिं माटे नी त्यार बाद शरू करावयानी मारी धारणा हती, छतां तमे कुनूर अने हंपि बन्ने माटे एक साथे आर्डरो आप्या तो कांइ वांधो नहिं परन्तु ते बन्ने

अद्भुत पणे आकर्षक थवी जोइए नेत्र अर्द्ध खुल्ला रहे अने ते स्वभाविक नेत्र जेवां जोइए, ते खास भलामण करजो·

२—श्रीमद्जी नी मूर्त्ति नी पीठफलक मां अशोकवृक्ष अने इंद्रोनी तमारी कल्पना वखाणवा लायक छे, काकीवाने आ वात पसंद आवी. मने पण पसंद छे पण इन्द्र ने ठेकाणे श्री लघुराज स्वामी तथा सौभाग्यभाई हाथ जोड़ी खड़े-खड़े नमस्कार करता होय तेम इन्द्रो नी जग्याए पण एमना चरणो नी नीची कक्षाए ऊभा होय तेम बनाववानी भावनास्फुरी. ते वात काकीवाने जणावतां तेमणे इन्द्रोज पसंद कर्या कारण के अत्यारे श्रीमद् केवली पणे विराजे छे. अने आपणे भगवान पणे आराधीये छीए तेथी इन्द्रोज ठीक गणाय· आ वात पण न्याय संगत छे. माटे इन्द्रो भले चामर ढोलता रह्या, पण इंद्रो अने श्रीमद् ना वच्चे छे खाली भाग छे. त्यां जो ते बन्ने पराभक्तो पोताना बन्ने गोठण जमीन ऊपर एक साथे गोठवी ने बेठा होय अने थोडुंक मस्तक झूकावी बन्ने हाथ जोड़ी नमस्कार करता होय तेवी मुद्रा मां गोठवी शकाय तो ते मने अनेत्यार पछी नी आराधक श्रेणी ने बहुगमशे. एम लागे छे·

माटे ते आदेश पण कलाकार ने आपजो. अने जे मंजुर होय तो तेना फोटाओनी व्यवस्था करीए. तेकाले श्रीमद्नी ३३ नी वय लघुराज स्वामी नी ४७ अने सौभाग्य भाई नी ७९ वर्ष नी वयहोवी घटे, शताब्दी अंक मां तेमना फोटाओ छे. ते पुस्तक तमारीपासे न होय तो लखी जणावो के जेथी मोकलावी आपुं. दादाजी नी मूर्त्ति प्रत्येक नुं अने श्रीमद् नी खड्गासन प्रतिमा उक्त ढबेज बनशे तेनुं महेनताणुं कलाकारने शुं ठेराव्युं छे ? एडवान्स ना पैसा नीलगिरि ना अने कलकत्ता थी मंगवी लीधा हशे ? प्रथम प्लास्टर मूर्ति बनावी ने पास थये ज आ कामो शरू करवाना हता, ते प्लास्टर मूर्त्ति नुं मोडल तैयार करी फोटाओ मोकलो, आ वात तो तमारा अने कारीगर ना ध्यान मांज हशे ? एम मानुं छुं माटे विगते पत्र लखो.

आ वखते मसामां लोही पड्तुं ज न्होतुं अने नथी पडतुं, तेने माटे ज तमारी दवा पिप्टि जो मोकली होय तो तेने जे चालु करी दे छे ते बंध राखुं ? काली मलम सूरत थी आवेल ते लगाड़तो हतो तेना थी खास फायदो न जणातां यति श्रीदेवेन्द्रसागरजीए मोकल्यो ते गत-१४ थी लगाडता आराम जणाय छे, हवे चार आना कसर छे, ठीक थई जशे एम लागे छे, अने माताजी ने कलकत्ता थी सुन्दर लालजीए वाकला नाम ना दवाना ३ डब्बाओ मोकल्या छे ते लेवा थी फायदो जणाय छे, वली पाणी बदलने माटे तमारी जननी ट्रीची पासे ना जे गामे रह्या हता त्यां ना निकट ना बीजा कोई गामे जवा नी भावना छे मोहनजी अहिं पूनमे आव्या हता, तेओ ट्रीची पहोंची ने तपास करी तार वड़े खबर आप्या के सगवड़ थई जशे, हवे अमे अमारी सगवड़ जोई अहिंथी जवानी भावना राखीये छीये, पण हजु आठ पंदर दहाड़ा वखते वीती जाय त्यार वाद पण चोकस नथी के क्यारे नीकलाशे ते ने नक्की थये जणावीश घर मां बधाने अने तमने मारा तथा माताजी ना हा० आशीर्वाद ! धर्म ध्यान मां दृढ रहो !

सहजानंदघन !

(पत्रांक—१८५)

ॐ नमः　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　हंपि १६-२-७०

भव्यात्मा श्री नवीन भाई सपरिवार.

पत्र मल्युं विगत सर्व जाणी, प्रभुकृपा थी आत्मा मां आनंद छे, देह मां मसानी व्याधि हजु छे आनी हशे ? पिष्टी तो पूर्ण थई गई, आ वखते लोही तो मुद्दल न्होतुं पड्युं, अने नथी, परन्तु मां सुजन जुवलन अने शूल हता, ठीक थई जशे, माताजी ना डीचर-गांठ अने हार्ट-शिरदर्द वि० छे, पाणी बदलवानी आवश्यकता छे माटे आजे मध्यान्हे हजनेक भाई व्हेनो सहित प्रयाण करी आवती काले प्रभाते मद्रास पहोंचशुं त्यां ४-६ दिवस कदाच रोकाण थाय, पछी ट्रोची जशुं, त्यां व्होता पछी सिंगीपट्टी नुं अनुकूल पड़शे तो महीना मास रोकाइशुं, त्यांथी पत्र व्यवहार तो थशेज.

श्रीमद्नी मूर्त्ति नुं काम शरु कराव्युं ते अभिनंदनीय छे, दादाजी नी बे मूर्त्ति नुं काम पण चालु हशे प्रत्येक नी किंमत शी ठरावी छे ते लखजो, सौभाग्य भाई तथा लघुराज स्वामी ना अलग फोटाओ अहिं नथी छतां थोजे थी तपास करावीश, मल्ये ते मोकलवा प्रबंध करीश.

धन्नुलालजी ने उपरोक्त काम नी खबर लखजो, तेमनी तबियत हवे सुधरवा उपर छे, सुंदरलाल-आसाम गया ना समाचार छे, पद्मचंद जी नी घटना जाणी भावीभाव उल्टुं चक्र होय त्यां आम बन्या करे नाहरजी नी तबीयत नुं जाण्युं, आप बन्ने नी भावना राज-मंदिर बनाववानी छे ते सफल थाओ सूले पत्र लखीश. देवेन्द्रसागरजी पण त्यां जवाना छे एवो तेमनो पत्र छे तेमनी लगाड़वानी दवा थी फायदो थयो छे. माताजीए तम बधाय ने आशीर्वाद अने सुरा भाई आदिए जयजिनेन्द्र ! जणाव्या छे, धर्मध्यान मां अभिवृद्धि हो ! ॐ शांतिः

सहजानंदघन ना० आशीर्वाद !

श्री कल्याणश्रीजी महाराज ने मारा हार्दिक आशीर्वाद जणावजो, अने आत्म भान तथा वीतरागता आलववा ना पुरुषार्थ नी प्रेरणा आपजो, समय अभावे अलग पत्र नथी लखी शक्यो.

(पत्रांक १८६)　　　　　　　　अपर डेम P. W. D. बंगलो

ॐ नमः　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　ट्रोची २८-२-७०

भव्यात्मा श्री नवीन भाई सपरिवार,

ता० २०-२. नुं लखेलुं पत्र मल्युं वांची प्रसन्नता थई. अमो हंपि थी ता० १६ ना प्रयाण करी मद्रास गया त्यां छ दिवस रही पुनूर (कुंदकुंद चरण) थई, सींडीवनम् मां आहार ग्रहण कर्युं त्यांथी १० माइल एक गाममां १० आनो जैनो छे, जैन मठ अने भट्टारक छे विशाल जैन मंदिरो छे त्यां पण जई शनी नी सांज पछी ट्रोची आव्या सींगीपट्टी नुं जोई राखेलुं मकान रविवारे जोयुं, पण त्यांनी पब्लिक आस-पास मां शौच जती होवा थी वायु अशुद्ध जणायुं. तेथी ते जतुं कर्युं पछी आ स्थान जोई ने पास कर्युं.

आ बंगला ना ३ खंडोपैकी १ खंड मल्युं छे· जेमा माताजी अने एक तेमनो मंडली तथा ट्रीची ना भक्तो मोहनजी नो परिवार सेवा मां हाजर रहे छे. तेओ छे. अने एक कुटीया तैयार करी तेमा हुँ बेंठो छुं. जो पाणी अनुकुल थयुं तो महीनो मास रोकाइशुं. रजनीकान्त नी अवार नवार हाजरी होय छे.

हंपी मां श्री टोलिया जी नी जवाबदारीए निर्माण कार्यो चाले छे महीना मां एकाद फेरो तेओ करता रहेशे.

श्री अमरचंदजी नी तवियत नरम थवी. तमारो अध्यात्मिक मदद मलवी अने राजमन्दिर तथा साहित्यादि मुद्रण नुं नक्की थयुं जाणी प्रसन्नता थई. आत्म-सिद्धि अने राज पद्यावली ओ बन्ने बालबोध टाइप मां छपायेला अगास आश्रम थी मली शकशे. अने ते सस्ता पडशे. आ वात पहेली थी जणावी होत तो सुविधा थई जात. छतां हजु आत्म-सिद्धि नुं काम शरू न थयुं होय तो १ प्रति चार आना ने लेखे अगास थी मंगावी दई अने मुद्रण कार्य रोकी शकाय तो रोकी दो. राजपद पुस्तको पण हिन्दी टाइप मां मली शकशे. आ विषय मां तुरत खुलाशो लखजो. हमणा अगास ना मुमुक्षुओ ट्रेनथी समेतशिखरजी यात्राए चारेक दिवश थी निकल्याना समाचार छे.

गई कालेज धन्नुलालजी नुं पत्र छे दादाजी नी मूर्ति पेटे एडवान्स ना पैसा तमने मोकलाववा विषे तमारू पत्र त्यां गये मोकलीश एम लख्युं छे. तने पत्र तो लखी मोकल्यो हशे. कृपालु ना साहित्य मांथी प्रार्थना पुस्तिका मां मंगलाचरण रूपे 'अहो सत्पुरुष के वचनो'''तथा आरती—मंगल दीपक सिवाय मारी कोई कृति तेमां उमेरवा मां न आवे ए ध्यान राखजो. प्रार्थना पुस्तिका मां तत्व-विज्ञान स्थित भक्ति कर्त्तव्य नो विभाग मूकवो—आपवो. तेमां 'अनंत-अनंत' पछी 'जड़ने चैतन्य बन्ने द्रव्य नो स्वभाव भिन्न' आ पद्य आपी पछी २० दोहरां आपवा.

आ भक्ति कर्त्तव्य—राजपद अने आत्म-सिद्धि त्रणे एकज पुस्तक मां संकलित करी छपावता तो ते ठीक थात· आ पुस्तक नी मांग पण वारे घड़ीए थाय छे. राज मन्दिर नी स्थापना करवानी तमारी अने तेने लीधे अमरचंदजी नी तमन्ना जागी ते स्तुत्य छे, मारा अंतर ना आशीष छेके आ कार्य निर्विघ्नतया संपन्न हो.

नीलगिरि-कुनूर मां जिनालय - दादावाड़ी तथा हम्पी मां सत्संग भवन—दादावाड़ी नुं खात-मुहूर्त्त क्यारे करवुं ? ते विचारणा हेठल छे ते नक्की थये जयपुर राजमंदिर विषे नी तमारी भावना ने अवश्य विचारी शकाशे ॐ

काकीबा ना गर्दन नी हार्ट, लीवर, पासलां विगेरे ना अेक्सरे फोटो मद्रास मां कढावी जोयां, तेमां खास बाधाजनक कोई खराबी नथी· एवो अभिप्राय मल्यो. आ देहे मसा मां लगभग दर्द शान्त थवा आव्युं छे थोड़ीक कचाश जणाय छे. ते पण सुधरी जशे एम लागे छे. तमारी पिष्टि पेट साफ करवानुं आंवला आदिनुं चूर्ण रजनीकांत भाईए अपाव्युं तेना फल स्वरूपे पेट मां दर्द

उपद्रव. गैस बधी गयु जेथी ते बंधज करी दीधुं. छतां दर्द हजु चालू छे. संभव छे के हवे ये चार दहाड़ा मां शांत थई जशे.

तमे तथा रमा व्हेन अने बालको बधा स्वस्थ प्रसन्न हशो. तम सौने मारा तथा माताजी ना हा० आशीर्वाद! तमारी अंगत परिस्थितिओ मां सुधारो हशे. धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि करजो. ॐ शांतिः!

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद!

(पत्रांक-१८७)

ॐ नमः

२३-३-७०

भव्यात्मा श्री नवीन भाई,

जयपुर थी मोकलेल पत्र मल्युं. हाल मां तमे सुरत हशो प्रतिष्ठा पतावी जयपुर जशो त्यां तमारुं आयोजित राजभवन साहित्य प्रकाशन, मूर्त्तिओ अने मंडल स्थापना कार्यो सफल बनो ए आशीर्वाद!

अहिं उदय अनुमार शरीर अस्वस्थ रह्युं. हवे पणो आराम छे प्रायः आवता सोमवारे अहिं थी प्रयाण करी त्रिचुर जशुं त्यां थी नीलगिरि--कुनूर जवानी धारणा छे पहेलां कोटालय जवानी भावना हती, पण त्यां गर्मी वधी गया ना समाचार छे तेथी मोकुफ राख्युं.

श्री देवचंद्रजी साहित्य नी प्रेसकापीओ नाहटाजीए मोकली छे. तेनुं संशोधन कार्य चालु छे. त्यां तमारा काकाजी, बा, तथैव श्री देवेन्द्रसागरजी आदिने मारा हा० आशीर्वाद जणावजो.

देवेन्द्रसागरजी ने कहेजो के कुनूर माटे स्टेज आ वर्ष मन मानुं मारुं नथी. अने ओथीज मारा तरफ थी हुं मारो अभिप्राय आपी दईश, आगामी वर्षे ओ कार्य शक्य बने तो सुन्दर थशे.

मसामां ओकाद आनी कसर, गर्मीने लीधे गई काले जरा दर्द थयुं हतु पण आज ठीक जणाय छे.

माताजी नी तबियत मां राहत छे. तरुनी रजनीकान्त भाईए बनावी हती धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद!

(पत्रांक-१८८)

ॐ नमः

हंपी-७-४-७०

भव्यात्मा श्री नवीन भाई,

तमारुं कागल गई काले मल्युं विगत बधी जाणी, आ देहनी परिस्थिति नुं वर्णन त्यां काकाजी ना पत्र थी जाण्युं ज हशे. थोडुं थयुं सुधरतुं जाय छे. पण कमजोरीयात पिंड छोडती नथी. बे दिवस बीत्या आजे त्रीजो दिवस छे शौच थयुं नथी.

तमे हंपी कागल शामाटे मोकल्युं? ते हजु मल्युं नथी बहु मोडे थी मलशे. त्यार पछी ते ऊपर अभिप्राय बंधाशे. देह व्याधिनी घटाकूट थी श्री देवचंद्रजी साहित्य संशोधन पण अटक्युं पड्युं छे.

पारसने तमे मांगेली रकम मोकली आपी हशे ज. वली अहिं माटे दत्तगुरु मूर्त्ति उपरांत श्री मणि-

धारी दादा तथा कुशल गुरुदेव ना चरण चिह्न-पादुका-हंपी माटे वन्या तेवा बनाववा नो आर्डर पण गुरु पुष्पे फरी आवे त्यारे आपी देजो· तथैव हंपि माटे पण मणिधारी तथा कुशलगुरु ना चरण चिह्न तैयार करावजो.

हंपी जिनालय माटे जिन बिंब बनाववा, आपेला कामो पार पड्ये आर्डर आपशुं. मारी धारणा ऐतिहासिक ढबे ऋषभ प्रभु विराजमान करवानी छे के जेथी नाना शत्रुंजयवत् तीर्थ कायम थाय. कृपालु देव तथा दादा गुरुमूर्त्तिओ नी आंखो कुदरती आंखो जेवी मूर्त्तिमांज घड़ाववी जोईए ते भूलशो नहीं.

तमारी बानी तबियत नी विगत जाणी. T. B. वालाओनी तबीयत ना घड़ी-घड़ी मां रंग बदलाया करे. तेमां सारुं देखाय पण तेनो कोई भरुसो नहीं, माटे अंतिम आराधना नो क्रम बांधीलेवो ज्यारे ज्यारे बापरवुं होय ते समय ध्यान मां लई ने ते सिवाय ना अमुक कलाको सागारी अेटले आगार सहित अनशन करावबा नी टेव पाडवी तेनी विगत देवेन्द्रसागरजी महाराज पासे थी जाणी लेजो· भले पछी देह लांबा गाला सूधी टके पण तेम करवुं ज. एथी असावधानी न रहे, अेवी मारी भलामण छे तमारा काकाजी अने बाने माताजी ना हा० आशीर्वाद जणावजो. अने तमे पण स्वीकारजो, खूब-खूब आशीर्वाद जणावजो.

माताजी नी गांठ मां कोई सड़ो नथी अने थवानो नथी. मात्र नश मरड़ाई होय अने मेद वध्युं होय तेवीज संभावना छे. मालिश मात्र थी पते तेवुं छे गई काले सोमवती अमावश्याए अहिं दादाजी नी पूजा भणावाई हती. मारा थी तो हजु मकान छोड़ी ने कइं जवाय तेवी स्थिति नथी, अने माताजी समाधि मां बीजी दुनियां प्होंची ने तेओनी पूजा मां सामेल हता जेमां वधा दादाजी नी हाजरी हती. तेमा समय वीती गयो, समाधि मांथी जाग्या त्यारे वासक्षेप थो भरायेला हसता हसता व्हार आव्या आम बाबत छे,

शुं रजनीकान्त भाईए हूँ नोर्लगिरि प्होंच्यो तेना समाचार तुरत न्होता लख्या ? के जेथी हंपी पत्र मोकल्यो ? धर्मस्नेह माँ वृद्धि हो ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद !

(पांत्रक-१८६)

ॐ नमः

भव्यात्मा श्री नवीन भाई,

तमारा प्रश्नो नो समाधान निम्न प्रकारे अवधारशो.

१, मकान नुं नाम श्रीमद्राजचन्द साधना मंदिर आपजो.

२, ते मकान रचना भोंयतलीये दुकानो, पहले माले अम जेवा ने उतरवानी व्यवस्था अने ऊपर साधनामन्दिर होवुं उचित छे, अने ते माटे पहलेथीज व्यवस्था करी लेवी घटे छे, साधनामंदिर ऊपर

श्रम जेवा नो उतारो उचित न गणाय, शहेर मां ठल्ये माटे जवुं तेनी व्यवस्था पण त्यांज होय ए न्याये पण विचारवुं घटे छे,

A अत्यारे दाननी रकम ओछी होय तो पहले माले हॉल भले बने. पण ते पछी उचित दान मळ्ये हाल मां पार्टिशन वड़े रूमो बनी शके अने ऊपर साधनालय बने. ए उचित छे· त्यां लगी पहेले माले टेम्पर्येरो स्थापना बनाववी अने बीजो माल वास्तविक साधनालय तैयार थयेज स्थापना विधिवत् कराववी.

३, स्थापना माटे—चित्रपट मात्र मूकवानी नाहरजी नी भावना जोके ठीक छे पण तेनी उंमर ओछी गणाय अने जयपुर ए मूर्तिकलानुं. केन्द्र छे. चित्रपटना खर्च जेटलाज खर्चे नानी आरस मूर्त्ति बने अने तेमनी मात्र अग्र पूजा थाय-अंग पूजा नहिं तोय चाले ए भावना थी मूर्त्ति स्थापना करो तो हरकत नथी. घरनो बाजु मां घर मंदिर तो होयज छे तेमां निषेध नथी, जुदा मकानो होवा थी उत्तम गणाय. माटे मारी सलाह मूर्त्ति नी तरफेण मां छे, छतां सौनी जेवी मरजी.

४, कार्त्तिकी पूनमे हंपी आश्रम मां कृपालु नी जन्म जयंती महोत्सव होवा थी अने चातुर्मास नो अंतिम दिन होवा थी हंपी छोड़ी शकायज नहिं। माटे स्थापना दिन माटे बीजो कोई दिवस नक्की करवो तो सिवाय अन्य व्यक्ति वड़े ते दिवसे ते काम करी शको तो ठोक गणाय.

५, मकाननो खात मुहूर्त्त विषे—तेनी भूमि शुद्धि आदि विषय नुं मुहूर्त्त अने विधि विधान व्यवस्था त्यांज उचित व्यक्तिओ द्वारा करावी लेजो.

६, साहित्य प्रकाशन नी बे पुस्तको विषे खपती प्रस्तावना स्वस्थता सांपड़े लखी मोकलीश पण तमे प्रत्येक पत्र मां याद देवड़ावजो

७, श्री नाहरजी सपरिवार तथा म्युनि० अफसर ने द्दा० आशीर्वाद जणावजो. श्री अगरचंदजी नाहटा, श्री केशरीचंदजी धूपिया कलकत्ता थी सुद १ प्रयाण करी मद्रास बेत्रण दिवस रहो अहिं आववा धारे छे, अने श्री शुभराजजी ७ जणा पालीताणा आवाग्रोज पताबी अहिं आववा नी भावना भावे छे. ते सहज जाणवा लख्युं छे, ते धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि हो ॐ शांतिः

सहजानंदघन द्दा० आशीर्वाद !

(पत्रांक १६०)

ॐ नमः

२४-४-७०

पूज्य मुरब्बी श्री नेमचंद भाई, सूरत.

कुनूरथी प० पू० गुरुदेवनी आज्ञा थी आ पत्र लखी रहो छुं आपनो पत्र घणा दिवस पहेलां हतो. तेमां श्री नवीनभाई ना मातुश्री नी तबियत अस्वस्थना समाचार हता ते पछी कोई पण समाचार नथी. तो हवे तबियत केम छे. ते तुरत जणाववा कृपा करशो. प०पू० गुरुदेव तथा पू० माताजी ना आपने तथा आपना सारा परिवार ने अगणित आशीर्वाद स्वीकारशो. प० पू० गुरुदेव नो स्वास्थ्य हवे सुधारा उपर छे.

ता० १७-४-७० शुक्रवारे आहार वखते कोई अशुभ कर्मना उदय थी एक अजब घटना बनी गई. आहार लेतां-लेतां ज देहातीत दशा थई गई. मोढा मांथी थोडुं पाणी बहार आव्युं अने नाड़ी बंध थई गई. हाथ ने वल आवी गया अने आँखोपण फेरी गई. आ बधुं जोई प०पू० माताजी घबराइ गया. प्रभु स्मरण तो प०पू० माताजी नुं चालुज रहे छे. हीमत राखी बधू जोर थी करवा लाग्या. डाक्टर ने बोलावी लाव्या. नाड़ जोई पण जग्याए शरीर मां प्राणनुं स्पंदन जणाव्युं नहि डॉ० हाथ झटकी नांख्या-प्राण वायुनी उर्द्ध गति थई ब्रह्मरंध्रमां स्थिति थई जवाथी शरीर खोलीया रूप थई गयुं आ स्थिति २०-२५ मिनीट सूधी रही हशे. ते दरमियान प०पू० माताजीए पोताना आत्म बले दिव्य शक्ति द्वारा प्राण ने फरी संचार कर्यो अने सहजें हाथ ऊंचो कर्यो. पछी प० पू० गुरुदेव स्वस्थ थई पोताने पाट ऊपर सुवड़ाववा कह्युं-ते मुजब बे जणाए पकड़ी ने पाट पर सुवडाव्या. बधा गभराई गया हता जेथी कॉल द्वारा मुंबई, होस्पेट, समाचार आव्या. चि० चंदना मुंबई हती तेने तेड़ी अमो अहिं आव्या छीए होस्पेट वाला पहेलां आवी गया हता. गदग मुंबई वगेरे ना मुमुक्षु भाई व्हेनो पण आवी गया बे चार जणा अहिं छीये बन्ने ना स्वास्थ्य नरमज छे पण चिन्ता जेवुं नथी. अब बन्ने भाईओ पू० मातुश्रीनी सेवा मां हाजर छो. आप बधी वाते जाणकार छो. प० पू० गुरुदेव आपने ए बाबत मां अगाऊ जणावेल ते मुजब आराधना करावसो. अेमने समाधि रहे ते मुजब प० पू० कृपालु देवना तथा प० पू० गुरुदेव ना वचनामृत संभलावता ज हशोज. अहींना मुमुक्षु भाई व्हेनो प० पू० गुरुदेव तथा प० पू० माताजी तथा आव जा करनार मुमुक्षु भाई व्हेनोनी खड़े पगे तम मन धन थी जे सेवा करी रह्या छे ते जोई हृदय आनंद थी उभराई जाय छे. धन्य छे अेमने अने अेमना कुटुंब परिवारने एमना चरण मां आ बालकनुं हृदय नमी पड़े छे.

पू० व्हेन श्री मेघबाई भाणबाई श्री जेठालाल भाई श्रीशा अनोपचंद जी श्री देवराज भाई चंदना सर्वे आपने सहुने याद करे छे. श्री हीराचंदना सप्रेम जय गुरु वंदन!

आप सहु कुशल रहो! एज परम कृपालु देवने प्रार्थना, दासानुदास हीराचंदना भक्ति भावे प्रणाम! ता० क० आपने उपरना समाचार विगतवार लखी जणावजो. अहिंना समाचार ऊपर मुजब जाणजो. जेम सूरतमा आ देहे घटना घटी हतो. तेवी अहिं पण अनुभवाई. दत्त गुरुदेवे बधुं संभाली लीधुं, अशक्ति बहु छे तद्दन आराम लऊंछुं, चिन्ता करशो नहि, श्री देवेन्द्रसागरजी त्यां होय तो धर्मस्नेह जणावजो अने आप सौ हार्दिक आशीर्वाद स्वीकारजो पत्रोत्तर शीघ्र आपजो ॐ शान्तिः

—सहजानंदघन हा० आशीर्वाद

(पत्रांक—१६१)

ॐ नमः हंपि २५-४-७०

सद्गुणानुरागी सत्संग प्रेमी भाई श्री नवीनभाई.

सप्रेम जय सद्गुरु वंदन आपनो पत्र आजे मलयो. विगत जाणी. गई काले प० पू० गुरुदेव आपने याद कर्या हता अने प० पू० गुरुदेवनी आज्ञा थी अेक पत्र सूरत लख्यो छे. आज आपनो विगतवार कागल आव्यो प० पू० मातुश्रीना देह विलयना समाचार मली दुख थयुं. आपे आराधना मां जे सहा·

यता थापी ते योग्यज कर्यू. परम कृपालु एमना आत्मा ने शांति आपो· अेज प्रार्थना प० पू० गुरुदेव नु स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन सुधरी रह्युं छे. अमो मुंबई थी नव जणा आव्या साथे चंदना बेन छे चंदना बेन रोकाशे. बाकी बधा बे चार दिवस मां पाछा जशे. अमो आव्या त्यारनी अने आजनी स्थिति मां घणो फरक छे, आजे ज डॉ० तपासी गया, योग्य सूचना आपी छे ते मुजब थशे, आप चिन्ता करशो नहीं. प० पू० गुरुदेव तथा पू० माताजी ना आपने तथा आपना परिवार ने अगणित आशीर्वाद।

संत चरणरज दासानुदास हीराचन्द ना प्रणाम !

(पत्रांक—१६२)

हंपि २-५-७०

ॐ नमः

भव्यात्मा श्री नवीनभाई सपरिवार,

गईकाले पत्र मल्युं विगत बधी अवगत थई. परम कृपालु नी कृपाए आत्मा प्रसन्न छे. गत ता० २७-२८-२९ त्रणे दिवसेए वॉमेटिंग थयुं आहार वपराते जे कांइ ग्रहण थयुं हतुं ते उपरांत जूनुं जे कांइ जमा हशे ते बधुं प्रवाही ग्रीन कलर नुं निकल्युं २९ नी सांजे कोइम्बतूर रहेवासी अनोपचंदजी ना वेवाईने अनोपचंदजी ए तेड़ाव्या तेओ मारवाड़ थी अगले दिवसेज आव्या हता. तेओ आयुर्वेदिक पद्धतिना अभ्यासी छे. तेमनी दवाई शरू करी तेने परिणामे हवे ठीक लागे छे. आजे त्रीजो दिवस छे· रोज अेनिमा प्रयोग चालु छे. तेथी जूनुं मल लगभग साफ थवा आव्युं छे, हवे परिणामे ठीक जणाय छे हजु अशक्ति छे. मसा विषयक जे दर्द हतुं ते शान्त थयुं छे· पण एना ऊपर हजु आसन लगाडो ने बेसवानु बनतां जरा दर्द अनुभवाय छे. तेथी नथी बेसतो. वैदे बे त्रण मास एक आसने बेसवानी मनाई करी छे. हवे ए चालु वेदनीय नो समय पूर्ण थवा जाय छे. अने शीघ्र स्वास्थ्य लाभ थशेज तेवी खात्री छे· माटे चिन्ता करशो नहीं.

माताजी नी तबियत पण हवे लेवल ऊपर छे. तेओ दिन रात आ देहधारी ने सेवा मां लाग्या रहे छे· बीजुं कांइ एमने याद पण नथी आवतुं अने अेथीज तम जेवाने समवेदना पत्र नथी लखी शक्या पण अंतरना तार थी तमने तथा तमारा पारिवारिको ने समवेदना सहित अगणित आशीर्वाद आपता ज रहे छे. तेनो स्वीकार थाओ. मुंबई थी आवेल मंडली पैकी चंदना, देवराज, जवाहर अने बोर्डी वाला हीराचंद भाई, अहीं छे· मेघबाई, भाणबाई, जेठा भाई, भीमजी भाई वि० पाछा गया कारण के भाण बाई ने वरसी तपनुं पारणुं छे. अने नाना भाई नी पुत्री नुं लग्न पण छे. चंदना P. H. D करवा धारे छे· विषय निर्णय हजु नथी कर्यो. तम सोने बहु याद कर्या छे.

सूरत थी तमारा काकाजी नुं पत्र हतुं आ देह नी चिंता बहु करे छे. ते माटे बेचार वखत आहार ग्रहण नो आग्रह करता आवे छे. पण परीक्षा मां नापास शामाटे थवुं ? जिंदगी मां परीक्षा ना समयोज आलवणा ना होय छे. ते वात प्रत्ये थोड़ाक भव्योनुं ध्यान होय छे. जवाब लखी मोकल्यो छे. रजनीकान्तनी चिठी के समाचार नथी. गईकाले सूरतथी श्री देवेन्द्रसागरजी नुं पत्र हतुं जवाब अनोपचंदजी अपावीश.

तमारो जीवन ट्रेन हवे परठ गतिए व्यवहार मार्गे आगल वधो परमार्थ मार्गे घडे अेज अंतर ना आशीष छे. अत्रे थी सर्वेना जयजिनेन्द्र स्वीकारशो· श्रीमती अने बालको ने घणाज आशीर्वाद बाकी ना प्रश्नों नुं उत्तर आ साथे जुदा लखी मोकलुं छुं. हाथ थाकी जाय छे. ॐ शांतिः धर्मस्नेह मां वृद्धि हो !

सहजानंदघन आशीर्वाद !

नवीन भाई, रमा व्हेन, बालको आनंद मजा मां हशो. आपनुं पत्र वाच्युं आप पत्र लखवा माटे जणाव्युं पण बेटा, मारी पासे अत्यारे समय नो अभाव छे अने साचुं पुछावो तो मारे कांइ सूझतुं पण नथी, कारण के पू० प्रभुजी नो शरीर ज्यां सूधी अशक्त छे. त्यां सूधी बेचेनी मने रहेवानी छे. माटे आटले थी संतोष मानजो. लि माताजी ना आशीष.

(पत्रांक १६३)

हंपी-२२-५-७०

ॐ नमः

सद्‌गुणानुरागी सत्संग प्रेमी भाई श्रीनवीन भाई.

सप्रेम जय सद्‌गुरु वंदन ! आपनो विगतवार लखेलो पत्र मल्यो. हंपी आव्या पछी गई काले बधी टपाल जोई.

कुनूरनां प० पू० गुरुदेव ने उलटीओ बंध थवानुं कोई चिह्न न जणायुं जेथी ता-१४-५-७० ने गुरुवारे सांजे त्यां थी प्रयाण कर्युं रात्रे ११ वाग्ये मेसूर प्होंची मुकाम कर्यो. मेसूर थी शुक्रवार सांजे ४-४५ ना ट्रेन थी होस्पेट आव्या ता० १६-५-७० ना बपोर बे वाग्ये हंपी प्होंच्या. रस्तामां पण त्रण उलटीओ थई. बेंगलोर स्टेशने ६०-७० भाई व्हेनो प० पू० गुरुदेव ना दर्शनार्थे आव्या हता. गुंतकल थी होस्पेट सूधी नो प्रवास गरमी मां थयो अगाऊथी अशक्ति तो हतीज तेमां गरमीए वधारो कर्यो होस्पेट स्टेशने ज्यां प० पू० गुरु देव उतर्या ने आगल डग भरवा जाय त्यां चक्कर आव्या. पहेले थी खुरसी लाव्या हता पण प० पू० गुरुदेव ना पाड़ता हता छेवटे न छूटके खुरसी मां बेसाड़ी मोटर सूधी लई आव्या. होस्पेट थी हंपी मोटर मां बराबर भान मां हता पण ज्यां मोटर मांथी नीचे उतरी आगल चालवा गया के फरी चक्कर आव्या तेथी श्रीबेवरचंदजी उंचकी ने अंदर लई गया. मंदिरजी नी सामे थोड़ीवार सूता पछी शांति वली. पछी पोते बेसी ने एक एक पग आगल मूकता नानो बालक जेम चाले तेम चालीने प० पू० भगवान चंद्रप्रभु भगवान नी सामे साष्टांग दंडवत करी सूई नइ दशेक मिनिट प्रार्थना मां गाली त्यांथी राख्युं छे गई काले पोतानो नानी गुफा मां फकत बे मिनिट दर्शन करवा गया हता, हंपी आव्या फरी बेसो बेसी नेज प० पू० माताजी नी गुफामां जई त्यां सूई गया. हाल मां त्यांज उठवा बेसवा नुं पछी एकज दिवस उलटी थई, ते पछी उलटीओ बंध छे. आजे पांच दिवस थया शरीर प्रकृति सुधरी रही छे चार आनी फरक पड़ी गयो छे आहार पण थोड़ो थोड़ो पेट मां जाय छे दस्त कोई वखत अनीमा थी कोई वखत पोतानी मेले आवे छे. कुनूर मां पेशाब पण साफ न्होतो आवतोज. हवे आवे छे. आम एकंदर अहिं आव्या पछी सुधारो घणोज छे. छतां महीनो सूधो विश्रान्ति नी जरूर छे. प० पू० गुरुदेव आपने तथा आपना सारा परिवार ने हार्दिक अगणित आशीर्वाद लखाव्या छे. शरीर प्रकृति उपर मुजब होवा थी हाल आपनुं कोई काम हाथ पर लई शके तेम नथी महीनो तो आमज नीकली जशे पछी कंइक स्वस्थ थतां आपनुं काम हाथ पर लईश एम जणाव्युं छे. बे जाणशो.

त्यां याद करता सर्वे भाई व्हेनो ने प० पू० गुरुदेव ना आशीर्वाद !

प० पू० माताजी पण आप सौने खूब याद करे छे अने नलीन भाईए मोकलेल स्टेंप मल्या छे तेनो उपयोग पण आ कवर उपर कर्यो छे ते स्हेज जाणवा खातर,

काले पूनम उपर घणा भाई व्हेनो-आव्या हता आजे जाय छे. अहमदावाद वाला श्री जयंती-लाल भाई तथा अगरचन्दजी नाहटा कुनूर थी अहिं आव्या हता तेओ पण आजे जाय छे.

लि० दासानुदास हीराचन्द ना प्रणाम !

(पत्रांक—१६४)

ॐ नमः

हंपि २०-७-७०

मुमुक्षु बन्धु श्री नवीन भाई सपरिवार

अमो मुंबई थी योजनानुसार अहीं ता० १४प सकुशल पहोंच्या छीए छे ता० १५ मी ए दादाजी नी पूजा जमण वगेरे सविस्तर थयुं हतुं. गुरु पूर्णिमाए पण सारी रीतीए उत्सव मनाव्यो हतो. भगंदर मां लगभग १० आनी आराम छे. वहोराजीनी मलम पट्टीनो प्रयोग चालू छे. आशा छे के महीना भरमां आ दर्द शान्त थई जशे. नित्यक्रम पुस्तको विषयक संकलन करवानो समय हजु मल्यो नथी. हवे भीड़ ओछी थई छे. एटले तैयारी करीने मोकली आपशुं. तमे त्रणेक हजारनी भावना सेवी छे तेमां बेहजार पुस्तिकाओ अहिंना मुमुक्षु तरफथी वधारानी छपावशे. आत्मसिद्धि हिन्दी अनुवादनी पुस्तिका तमने मुंबई मां आपेलीते अहिं आव्या पछी तपासतां तेनो हिन्दी अनुवाद बराबर नथी. जेथी प्रो० प्रतापभाई के जेओ अहिंना प्रमुख साहेब ना अनुज छे गुरूपूर्णिमाए अेमनी अहिं हाजरी हती. तेमने फरीथी अनुवाद करवानुं काम सोंप्युं छे. पंदरे क दहाड़ामां प्रेसकापी तैयार करीने बेंगलोर थी सीधा तमने मोकलशे. तदनुसार तमे मुद्रण करावजो. ते प्रेसकापी न आवे त्यां सूधी उतावड़ करशो नहीं. तेओ अंग्रेजी अने हिन्दी ना M. A. छे. अने सारा साक्षर छे, माटे तेओनी कृति बहुज उपयोगी नीवड़शे. अेमां संस्कृत पद्यानुवाद पण आपीशुं.

राज मन्दिर विषयक प्रगति चालू हशे. श्री अमरचन्दजी नाहर ने खूब हार्दिक आशीर्वाद जणावजो.

तमारा काकाजी नु पत्र आवेलुं तेनो प्रत्युत्तर हीराभाई द्वारा अपावेलुं ते तेमने मल्युं हशे. तेमनी वैराग्य भावना ने हार्दिक अनुमोदना अने हार्दिक आशीर्वाद जणावजो.

श्री रमा व्हेन अने बालको ने मारा तथा माताजी ना हार्दिक आशीर्वाद जणावजो. दादर स्टेशन मोहनलाल भाई रायचा मल्या हता तेओ पजोसणा मां अत्रे आवे अने तमारी पण तथा प्रकारनी भावना छे ते सफल थाओ.

माताजी ने शरदीनी असर थई हती अने आ देहेपण शरदीनी कृपा हती. हवे बन्ने ने ठीक छे. धर्मस्नेहमां अभिवृद्धि हो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन

द: विशनजीना सादर जयजिनेन्द्र

(पत्रांक १६५)

ॐ नमः

हंपि-२२ ८-७०

आत्मार्थी मुनिवर श्री आनंदघन,

तमारुं जिज्ञासु पत्र समय सर मल्युं. परन्तु आ देह तंत्र हजु व्यवस्थित नथी थयुं. भगंदर किंवा नासूर दर्द मां जो के राहत छे. हतां हजु सरखा आसने बेसी शकतुं नथी, वली गई आठम थी उलटीओ शरू थई छे. पित्त प्रकोप जणाय छे. छेल्ले बे दिवस थी २४ कलाक मां ४-४ थइ गई एथी अशक्ति वधी

गई छे छतां तमारा भाव आन्दोलनो थी प्रेराई तमारा संतोष माटे आ प्रत्युत्तर लखवा बेठो छुं आडेपडखे रही संक्षिप्त उत्तरो लखुं छुं.

१—तमारा माटे सिद्धचक्रनो पूर्ण जपज सर्वस्व छे. तो पछी बीजा बीजा अनेक मंत्रो भणी शामाटे आकर्षाओ छो ? कारण के कोई पण मंत्र नु रहस्य शुद्ध आत्मा-सहजात्मस्वरूपज छे अने ते परमगुरु पंच परमेष्ठी पदारूढ आत्मवत् छे. एक साधवाथी बधु सधाय छे. माटे निष्ठापूर्वक एकमांज लीन रहो।

२-३ दादा-साहेब तो कोई पण साचा साधक ने उचित एवी सहायता आपता ज रहे छे. पण तेनो परिचय तेज करी शके छे के जे निर्विकल्प विश्वासे साधना मां एकनिष्ठ होय. तमेजो व्यर्थनी कल्पनाओ छोडो तथा बाह्य प्रवाह मां तणाई न जाओ गच्छमतीनी मानेली रूढ़िओ मां खेंचाई न जाओ तो तमने आत्म विशुद्धि कइं दुर्लभ नथी. अधिक शुं लखुं ?

४—गुरु ना आशीर्वाद थी बधु आप मेले त्यारेज परिणमे जाय, ज्यारे शिष्य त्रणे योग एकत्व थी वर्त्ते आज्ञाधार……

५—स्वप्न महिमा हृदय थी दूर करो ! अनुभव प्रमाण ने ज महत्व दो।

६– श्री शुभराजजी नाहटा पासेथी तमे जे वस्तु इच्छो छो ते जो तेमनी पासे त्यां होय अने तेमनी आपवानी भावना होय तो मारी तेमा सम्मति छे. ते सिवाय निर्विकल्प छुं. तमारी योगोद्वहननी क्रिया योग साधना रूपे होइ आत्म लक्षे थाय तेम करजो. आत्म विस्मृति न थाय तथा प्रकारनुं लक्ष अन्तर्मुख राखीने करजो. तेथी घणी निर्जरा थशे.

तमारी त्यांनी बधी प्रवृत्तिओ नुं वर्णन वाच्युं. स्व० परहित कारक जीवन जीवी समय नो सदुपयोग करी शीघ्र आत्म समाधि पामो एज अन्तर ना आशीष !

अहिं थी माताजी आदिना हार्दिक वंदनादि स्वीकृत हो। ॐ शांतिः सहजानंदघन आशीर्वाद

(पत्रांक-१९६)

हंपी-१७-६-७०

ॐ नमः

भव्यात्मा श्री नवीन भाई सपरिवार,

कामकाज नी भीड़ वश मोडे थी नीकली अने रस्ता मां मोटर बगड़वा थी प्रो० प्रताप भाई तमे गया तेने बीजे दिवसे अहिं आवी शक्या. मात्र बे दिवस रही गई काले प्रभाते पाछा गया. आत्म सिद्धि नुं हिन्दी अनुवाद तेमनी धारणानुसार अहिं पण न करी शक्या. जेथी खेद व्यक्त कर्यो मैं आश्वासन आपी अवकाशे करवानुं जणावी विदाय आपी माटे हाल मां तो तमे प्रथम पुस्तक नुं ज प्रकाशन करजो. आत्म सिद्धिनुं आत्मसिद्धि त्यार बाद जोयुं जशे. अनुवाद करके करके तमारे त्यां मोकलता रहेशे.

प्रथम पुस्तक ना आद्य पाना मां मूकवा माटे नवकार मंत्र आदि मुं संशोधन पूर्वक नुं मैटर अेक पेज मात्र आ साथे मोकलुं छुं. तेना मथाले क्रमांक न मूकवुं. त्यार बाद ज मूकवुं.

पुनमनी सामान्य भीड़ हती ते गई काले विखराई गई हवे सुंदरलालजी पण प्रयाण करशे. अेमना भाभी साव ने मासखमण नो पाको विचार होवा थी उपवास लंबावे जाय छे. ट्रीची अने त्यार बादनी सफर निर्विघ्ने पतावी घरे पहोंच्या हशो. घरमा तमारा तमाम मेम्बरो ने मारा तथा माताजी ना अगणित आशीर्वाद, तमे शेरबजार नी शेरगाह करता रहेता होवा थी घर भर ना ने नाराज करो छो ते ठीक नथी. माटे सवेला चेती ने रस्तो क्लीयर करो.

आ देह गई काले वोमिट थयुं. हवे जे थाय ते खरुं. चिन्ता नथी. तमे पण करता नहिं ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीष. माताजी ना पण आशीष.

आनंदघन चो० नकल तैयार हो गई है, पर उसे प्राचीन प्रतियों से मिलाना है, जिसके लिए कुछ समय लगेगा। इस वक्त अगरचंदजी अन्यान्य कार्यों में व्यस्त हैं अतः धैर्य की आवश्यकता है।

कोठारीजी सप्ताह से ज्वराक्रांत हैं अब पक्षभर और रेस्ट लेने में लग जाय और तदनंतर दीपावली है। प्रभु इच्छा। यह काम इस ढंग से पार होना सुलभ नहीं। सभी सत्संगियों के जय सद्‌गुरु वंदन-सह सहजात्म स्मरण। ॐ शांतिः भवदीय—सहजानंद

(पत्रांक १९९) १०, मसूरी रोड पो० राजपुर

ॐ नमः जिला देहरादून यु० पी०

६-९-६०

भक्तवर,

आप सभी सत्संगी जन द्रव्य भावतः कुशल होंगे। कृपालुदेव की कृपा से यहां आनंद मंगल है।

देहरादून दि० समाज की ओर से हम देहरा० मसूरी रोड बीच राजपुर के निकट एक प्रशान्त स्थान में चातुर्मास रहे हैं। दश लक्षण पर्व की आराधना यथाशक्तितः सम्पन्न हुई। क्षमावणी पर्व आज है।

वर्तमान क्षण पर्यन्त मेरी ओर से सभी प्रकार के अपराधों की सभी जीवों के साथ आपसे भी क्षमायाचना करता हूं। मेरी ओर से सभी के प्रति क्षमाभाव ही है।

कृपालुदेव के वचनामृत पान से अपनी आत्मा को सदैव जाग्रत रखें। यहां अधिक ठहरने की गुंजाईश नहीं अतः किसी को भी आने की आज्ञा नहीं है। ब्र० सुखलाल भी सभी को खमाता है।
ॐ शांति

सहजानंद

जय सद्‌गुरु वंदन सह सां० क्षमापना स्वीकृत हो।

(पत्रांक २००)

ॐ नमः हम्पी २५-७-६३

परम कृपालुदेव का शरण और स्मरण अखण्ड रहो।

सद्‌गुणानुरागी मुमुक्षु श्री सोहनलालजी एवं श्री खीवराजजी।

पत्र मिला। हाल ज्ञात हुए। कृपालु की असीम कृपा से यहां हम सभी की द्रव्य और भावतः स्वस्थता है। तथैव आप सभी को बनी रहे-यही आशीर्वाद है।

यहां सत्संग में आने वालों के लिए ठहरने एवं जीमने की व्यवस्था बराबर चल रही है। नव निर्माण भी होता रहता है। आप जब कभी भी आना चाहें खुशी से आ सकते हैं।

मन, वाणी और शरीर इन तीनों की क्रियाएं एवं क्रियाफल आत्मा से भिन्न हैं और इन सब में क्षीर-नीर की तरह आत्मा के रहने पर भी इन सभी से आत्मा जुदा ही है--ऐसा ज्ञानियों ने अनुभव किया है—जो अत्यन्त सत्य है ऐसा हृदय में विश्वास स्थिर करके उस शिक्षा के अनुरूप आत्म लक्ष जमाये हुए सहजात्म स्वरूप परमगुरु का स्मरण किया करो यावत् स्मरण धारा को अखण्ड करो। बीच में आने वाली परिस्थितियों के साक्षी होकर समत्व को धारण किये हुये जीवन यापन किया करो, यही हितकारी शिक्षा हम सभी के लिए उपयुक्त है। ॐ शांतिः

सहजानंदघन

सादर धर्मस्नेह पूर्वक सहजात्म स्मरण

(पत्रांक-२०१)

ॐ नमः

हम्पी ३-७-६४

परम कृपालुदेव का स्मरण अखण्ड हो!

भक्तवर सोहनजी, खीवराज जी एवं दिनेशजी

पत्र मिला। आपकी सत्संगनिष्ठा प्रशंसनीय है, परन्तु हमारी ओर से आपको सन्तोष देने में प्रत्यक्ष समागम आवश्यक है। क्योंकि लेखन क्रिया के लिए अवकाश नहीं है।

द्रव्य—भावतः स्वस्थता है और आप सभी को भी सदैव बनी रहे यही आशीर्वाद।

सहजानंदघन

सादर धर्मस्नेह पूर्वक सहजात्म स्मरण

(पत्रांक-२०२)

ॐ नमः

१०-६-६५

परम कृपालुदेव का शरण और स्मरण अखण्ड रहो।

भव्यात्मा श्री सोहनलालजी सपरिवार तथा श्री खीवराजजी सपरिवार,

सां० खामणा पत्र मिला। हम सभी ससंघ ने भी आप सभी को खमाया है और क्षमा दी है स्वीकृत रहे। परम कृपालु की भक्ति में एकनिष्ठ रहो उनके वचनामृत का पान किया करो-प्रत्यक्ष सत्संग रूप ही इन्हे समझो-बड़ा ही लाभ होगा। यहां तो सत्संग की गंगा ही बहा करती है। पर्वाराधना बड़े ही उल्लास से हुआ। संख्या भी अच्छी रही भीड अब तक रही। धर्मस्नेह में वृद्धि करियेगा।

ॐ शान्ति

सहजानंद

खा० सह अगणित आशीर्वाद और सहजात्म स्मरण

(पत्रांक-२०३)

ॐ नमः हंपि-४-८-६८

अनन्य आत्म शरणप्रदा। सद्गुरु राज विदेह
पराभक्ति वश चरण में। धरूं आत्मबलि एह

भव्यात्मा श्री खींवराजजी सपरिवार

आपका पत्र मिला। आपके शरीर को अस्वस्थता का समाचार पढ कर आत्मप्रदेश में अनुकंपन हुआ।

परम कृपालुदेव की अमृतमयी वाणी के आप अभ्यासी हैं। अतः आप जानते ही हैं कि शरीर प्रत्यक्ष वेदनामूर्ति है। अशुचि, असार और अनित्य है। जबकि आत्मा आनन्दघन-मूर्ति, शाश्वत, पवित्र और सार स्वरूप है, अतः शरीर में से आत्मबुद्धि हटा कर उसे आत्माधीन करके सतत परम कृपालु परमगुरु समान हो मैं सहजात्मस्वरूप हूं किन्तु शरीर स्वरूप नहीं हूं इस प्रकार आत्म भावना सतत करते रहना नितान्त आवश्यक है।

यह सब कर्म का कचरा उदय में आ-आ कर जा रहा है, मेरा कुछ भी नहीं जाता। तो फिर हे जीव तू क्यों फिकर करता है? फिकर की फाकी करे उसका नाम फकीर। वास्तव में तू फकीर है क्योंकि यहां न तो कोई तेरा है और न तू किसी का है अतः तू अपने आप में मस्त रह। ॐ शान्ति।

जया बहन,

तुम अपने पिताजी को आत्मजागृति रखाना। चाहे स्मृतिशक्ति वेदनावश कुंठित हो गई हो फिर भी बार-बार याद दिलाते रहने से बडा ही लाभ होता है।

श्री गणेशमलजी, सोहनलालजी, श्री कांकरियाजी एवं वकील साहब आदि को हमारा आशीर्वाद कहिएगा और वे भी इन्हें आत्मजागृति में मदद करते रहें वैसी उन्हें भलामण करिएगा।

यहां आनन्द ही आनन्द है। माताजी प्रसन्न है। आप सभी को हार्दिक आशीर्वाद कहे हैं।

धर्म स्नेह में अभिवृद्धि हो। ॐ शान्ति।

सहजानन्दघन हार्दिक अनंतशः आशीर्वाद। सार रूप आत्म स्मरण।

(पत्रांक-२०४)

ॐ नमः हंपी ५-८-६८

भक्तवर्य श्री सोहन जी सपरिवार

श्री खींवराजजी की अस्वस्थता का समाचार मिला। उन्हें आप सत्संगबल देते रहें। और साथ में चिट्ठी भेज रहा हूं, उन्हें पहुंचा दे। श्री कांकरियाजी एवं श्री वकील साब आदि सभी याद करने वाले महानुभावों को मेरा तथा माताजी का हार्दिक आशीर्वाद कहें।

पत्रादि लिखने की वृति संक्षिप्त सी है और फुरसद भी कम है अतः किस किस को पत्र देना यह बड़ा सवाल है क्यों कि पत्रों की आनेवाली संख्या दिनों दिन बढ रही है। परिचय भी बढ रहा है। अब के ६००० मील की ६॥ माह तक सफर हुई। आध्यात्मिक रुचि जनता में बढती हो ऐसा लगता है।

माताजी का स्वास्थ्य ठीकाठीक चल रहा है। आत्मा में प्रसन्नता है। और हम सभी स्वस्थ और प्रसन्न हैं ही। आप सभी स्वस्थ एवं प्रसन्न सदैव बने रहें—यही आशीष।

श्री कांकरियाजी आदि को लेकर सत्संग में आईए। धर्म स्नेह में अभिवृद्धि हो। ॐ शान्ति

सहजानन्दघन

सहजात्मस्मरण पूर्वक हार्दिक आशीर्वाद

(पत्रांक-२०५)

ॐ नम. २०-९-६८

भव्यात्मा श्री सोहनलालजी

आपका, खींवराजजी का खामणा पत्र मिला। यहां भीड़ अधिक थी तथा डाक का ढेर होने लगा-जिससे प्रत्युत्तर देना असंभव हो गया। पर्व में ६०० से अधिक संख्या थी अब बिखरी, खामणा समय में हम सभी ने आप सभी को हृदय से खमाया है और क्षमा प्रदान की है, जो-जो याद करते हों उन सभी को खामणा कहें। धर्म स्नेह में अभिवृद्धि करें मानाजी ने आपको याद किया है रूपाबाई गोकाक हैं और बिमार हैं ऐसा पत्र था ॐ शान्ति

सहजानंदघन

हार्दिक खामणा सह आशीर्वाद।

(पत्रांक-२०६)

ॐ नमः हंपि २१-९-६६

ॐ सहजात्मस्वरूप परमगुरु शुद्ध चैतन्यस्वामीभ्यो नमः

सांवत्सरिक-क्षमापना

परम कृपालुदेव की छवी हृदय मंदिर में प्रतिष्ठित करके श्वासानुसंधान पूर्वक सहजात्मस्वरूप परमगुरु-इस महामंत्र के रहस्य मंत्र को सतत रटते हुए त्रियोग प्रवृत्तियां करते हुए भी समाधि मरण की योग्यता संपादन की जा सकती है। अतः कमर कसे हुए रहो और इसमें सफलता हो यह आशीर्वाद।

(पत्रांक-२०७)

ॐ नमः स्थान हंपि २१-६-६६

ॐ सहजात्मस्वरूप परमगुरु शुद्ध चैतन्य स्वामीभ्यो नमः

सांवत्सरिक क्षमापना

परम धर्म स्नेही साधर्मी मुमुक्षु श्री सोहनलालजी समित्र मंडल

खमावुं सर्व जीवोने, थया होय दोष जे म्हारां
भवो भवनां वधां खमजो, क्षमा धर्मे रही प्यारा ॥ १ ॥
करूं हुं पण क्षमा सौना, थया होय दोष म्हारी प्रत्ये,
परस्पर खमी खमावी ने, आराधक आपणे थइए ॥ २ ॥
निःशल्य थवा तणी ए रीति सर्वज्ञे बतावी छे,
हृदयनी शुद्धता करवा, प्रणाली आत्म हितकर ए ॥ ३ ॥
मिच्छामि दुक्कडं मांगुँ, प्रभु गुरुराजनी साखे
करो स्वीकार सौ जीवो, ए सहजानंदघन भावे ॥ ४ ॥

क्षमाप्रार्थी सहजानंदघन व माताजी संसघ ना हार्दिक खामणा स्वीकृत हो।

परम कृपालु की असीम कृपा है। यहां सभी सत्संगी आनन्द में निमग्न है। माताजी सभी को भक्ति रस में मस्त बना रही हैं इन्होंने आप सभी को हा० आशीर्वाद कहा है और अवकाश लेकर आने का हा० आमंत्रण भी।

(पत्रांक-२०८)

ॐ नमः हम्पि १८-१२-६६

भक्तवर श्री खींवराजजी सपरिवार

आपके क्रमशः दोनों कार्ड मिले काफी दिन हो गये। इन दिनों इस देह में भी व्याधिदेव की असीम कृपा बरस रही हैं और माताजी के देह में भी। एक और भक्तों की भीड़, दोनों वक्त प्रवचन, उसके बाद जिज्ञासुओं की शंका समाधान, आने वाली डाक का ढेर-इन सब परिस्थितियों वश आपके जवाब में ढील होना स्वाभाविक है।

आप तो अपने हृदय में कृपालुदेव की साकार मूर्ति प्रतिष्ठित करके श्वासानुसंधानपूर्वक सहजात्म स्वरूप परमगुरु-इस मंत्र को रटा करें। और सारी कल्पनाएं छोड़ दें। श्रीमती कांकरिया को भी यही सूचित करावें। पत्र द्वारा हम क्या मदद कर सकते हैं और यहां आना भी आप लोगों के हाथ नहीं। अतः अबतक जो सुना और समझा है, उसे जीवन में उतारें-यही सार है।

यदि हृदय मन्दिर में प्रभु की प्रतिष्ठा करके उन्हीं की शरण और स्मरण रहा तो यह व्याधि भी समाधि के रूप में बदल जायगी ऐसा हमारा अनुभव है। अधिक क्या लिखूं।

वहां सभी मुमुक्षुओं को हमारा तथा माताजी का हार्दिक आशीर्वाद कहें और आप भी स्वीकारें ॐ शांतिः

सहजानन्दघन का० आशीर्वाद

(पत्रांक-२०६)

ॐ नमः हंपि १७-१-७०

स्वरूप जिज्ञासु आत्मार्थी मुमुक्षु श्री नथमलजी चोरडिया,

दोनों पत्र मिले। पढ़ कर प्रसन्नता हुई। यहां हमारी स्थिरता माघ शुक्ला १० तक प्रायः सम्भव है, तत्पश्चात् दक्षिण भारत में ही कई जगह के आमंत्रण हैं अतः शरीर व्याधि यदि शान्त हुई तो अन्यत्र गमन होगा। अभी बवासीर के दर्द में कुछ राहत है और माताजी के देह में भी आंशिक राहत है। आगे जैसा उदय।

प्रयाण करने के पश्चात् रास्ते में जगह-जगह की जनता आगे निकलने नहीं देती, अतः निश्चित समय का पालन भी हमसे नहीं हो सकता। चातुर्मास तो यहीं होता है, अतः उस समय जिसे लाभ लेना हो आ जाते हैं। आपकी आराधना की तमन्ना सफल हो, किन्तु प्रत्यक्ष मुलाकात और यहां की परिस्थिति का परीक्षण न हो जाय तबतक आप इस्तीफा की कल्पना स्थगित रखें। मार्च में हम कहां होंगे ? पता नहीं।

आपके प्रश्नों के संक्षिप्त और अपर्याप्त उत्तर निम्न प्रकार हैं :—

(१) जिस मंत्र को रट कर सिद्ध किया गया हो और उसके द्वारा अपनी आत्मा को जिन्होंने महात्मा बनाया हो वे सद्गुरु हैं और उनसे प्राप्त मंत्र द्वारा शिष्य भी आत्मशुद्धि कर सकता है और उसी मंत्र में सभी मंत्र समा जाते हैं "एक साधे सब सधे, सब साधे सब जाय"—यह सैद्धांतिक तथ्य है।

(२) आपके लिये नित्य स्मरण—सतत स्मरण के रूप में 'सहजात्म स्वरूप परमगुरु' जो कि नवकार मंत्र का सारांश है—रटना उचित है। नवकार में पांच पद हैं वे पांच गुरु कहलाते हैं, और वे सिद्ध भगवान आदि सहज=अकृत्रिम—जन्म मरण रहित आत्मस्वरूप हैं प्रत्यक्ष शरीर स्वरूप नहीं हैं। जैसे परमगुरु सहजात्म स्वरूप हैं वैसा ही मैं हूं—मैं देहादि स्वरूप नहीं हूं—इसी भावना—आत्म साधना को जगाने—सतत जागरूक रखने के हेतु स्वरूपानुसंधान पूर्वक आप सहजात्मस्वरूप परम गुरु इस महामंत्र को निर्विकल्प विश्वास के साथ रटते रहिएगा-बड़ा लाभ होगा-इस विषयक विशेष ज्ञातव्य बातें प्रत्यक्ष मिलने के समय पूछियेगा।

(३) वन्दों पांचों परमगुरु, चौबीसों जिनराज—देह त्याग के समय जबतक आत्मसाक्षात्कार नहीं हुआ हो तबतक उन परमगुरुओं में लक्ष टिकाना आवश्यक है कि जो बाह्यान्तर ग्रन्थि मुक्त निर्ग्रन्थ है अतएव सर्वज्ञदेव भी। इस तथ्य को हृदयगत रखने हेतु 'परमगुरु निर्ग्रन्थ सर्वज्ञदेव' की नित्य ५ माला जाप करते रहें। ये दोनों मंत्र आत्मभावना स्वरूप हैं और आत्मभावना के करने से ही केवल ज्ञान होता है—इस उद्देश्य को हृदयगत रखने हेतु आतम भावना भावतां, जीव लहे केवलज्ञान रे—इस मंत्र की नित्य ३ माला जपते रहिये। ॐ

(४) भोजन के अवसर पर यह ध्यान रहे कि मैं तो आत्मा हूं अणाहारी हूं अतः मैं खाता पीता नहीं हूं प्रत्युत यह खुराक देह-मोटर का है अतः इस मोटर को पेट्रोल-पानी दे रहा हूं। इसी भावना से साक्षीभाव रहेगा। शेष कल्पना छोड़ दें।

(५) चौबीसों जिनराज की शासन देवियां भिन्न-भिन्न हैं-एक नहीं।

अब डाक का समय हो चुका अतः यहां ही अटकता हूं। मनन कीजियेगा। पत्रोत्तर अवश्य दीजियेगा। धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो। ॐ शांतिः

सहजानन्दघन आशीर्वाद!

●

श्री सहजानन्दघन-पत्रावली

पृष्ठ	पत्रांक
१ से २२४	१ से ३३५
एवं	एवं
पृष्ठ १ से १०८	३३६ से ४६७
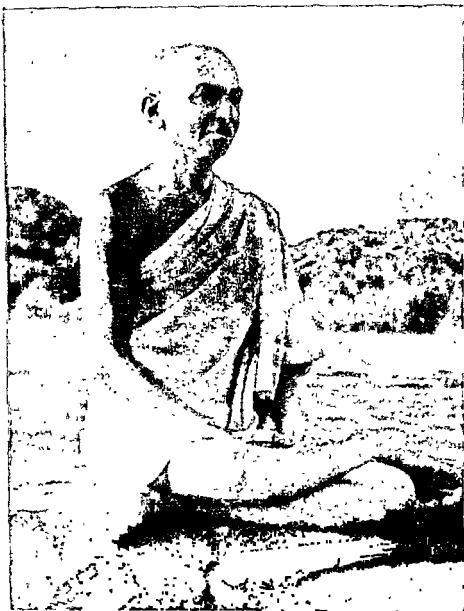
योगीन्द्र युगप्रधान श्री सहजानन्दघनजी (भद्रमुनिजी) महाराज

जन्म सं० १६५०	दीक्षा १६६१ वै० सुदि ६	महाप्रयाण हम्पी
भा० सु० १० कच्छ डुमरा	कच्छ लायजा	२०२७ का० सु० २ मध्य रात्रि

२ कईंक विचार योग पण जोइए ते माटे ज्ञान बल पण जोइए. संत नी आश्रये ते बधा प्रसंगो बनी रहे छे. तेना अभाव मां उदयाधीन ? उल्लास पूर्वक जप बल मां लीन थवुं जोइए तो अवश्य मार्ग आगल नो खुले ·

३ मेहनत करो छो तेम कर्या करो, बहार नी ख्यालात भूली ने श्वास साथे अेकमेक थई जमो, अेज सार छे.

—भद्रमुनि धर्मलाभ

देव अरिहंत गुरु निर्ग्रंथ धर्म केवली नो परूपेलो ए त्रणे नी श्रद्धा ने जैन मां सम्यक्त्व कह्युं छे.

(पत्रांक ३)

(मोहनलालजी छाजेड़)

१ जे नानी प्रसन्नता मां बंधानो नथी तेवो ज स्थायि असीम अनंत अखण्ड प्रसन्नता मली जाय छे.

२ जे प्राप्त करवा मां प्राणी सदा स्वतन्त्र छे· परतन्त्रता केवल संयोग थी उत्पन्न होवा वाला रस ने माटे ज छे·

३ जेनो विचारशील प्राणी स्वीकार न ज करे कारण के संयोग मां वियोग नो संभव बन्यु रहे छे·

४ भय युक्त प्रसन्नता तेनेज प्रिय छे जेने साची आस्तिकता नथी. आस्तिक तो ते प्रसन्नता नो स्वीकार करे छे· जेमा कोई प्रकार नो भय नथी, ॐ ॐ ॐ

(पत्रांक ४)

ॐ नमः सहजात्म स्वरूपाय: दाहाणु

शरद पूर्णिमा २००५

सत्संग प्रेमी श्री ऋषभचंदजी श्री हेमराजजी श्री कोजमल आदि मुमुक्षु मंडल

मु. आहोर

आपनी चिट्ठीओ मली. टिकीटादि ना असंग्रह थी पत्रोत्तर न अपायुं आ चिट्ठीसाथ पत्र होवाथी जवाब आपवानी फरज पड़ी छे. गढ़ सीवाणा थी पुजारीजी आदि आज अत्र आव्या छे. तेओनी साथे पण हेमजी ना समाचार हता ते मल्या, गुरुदेवनी कृपा थी आणंद छे. उदय प्रारब्ध समभावे भोगव्या विना कोई मुक्त थई शकतुं नथी, अत्र ना केटलाअेक जीवो ना संबंध ने आधीन थई ऋणमुक्त थवा चोमासुं करवुं पड्युं छे. तमो ने जे विरह रहे छे, तेमांपण लाभज छे. माटे क्षोभ नहिं पामतां उत्साह मां वृद्धि करशो जी. श्रीमद् ब्रह्मचारीजी ना पत्रो हतां, महापुरुष छे. घणुंज पवित्र हृदय छे आश्रम निवासीओ अेमने बराबर ओलखी शक्या नथी. आपणे हमेशां गुण दृष्टिज राखवी. जगत गमे तेम वर्ते ते न जोवुं, जगत मां ज्यां ज्यां गुणो पथरायेला छे ते ते खेसी ने आपणे आपणुं कार्य पार करवुं जेम बने तेम स्मरण विस्मरण न थाय तेनी कालजी राखवी· प्रत्येक क्रिया मां वर्तता छतां हृदय मां तो स्मरण

चालु ज रहेवुं जोइए तेथीज स्वरूप प्रत्यक्ष थाय छे . अन्य कोई रीतिए नथी थतुं . हिमतमलजी नु पत्र हतुं पत्र जवाबी न होवा थी उत्तर नथी अपायुं. तेमने तथा अन्य जे कोई संभारे तेने धर्मलाभ निवेदन करजो. मुनि देवप्रभ संस्कृत पहेली बुक पूर्ण करी ने बीजीनी शरुआत आजे करी छे. बंने ने शारीरिकादि अनुकुलता छे. धर्मध्यानादि मां वृद्धि करजो. इति शम्

—भद्रना धर्मलाभ मिती शरद पूर्णिमा २००५ सन् ४८

(पत्रांक ५) ईडरगढ-कंदरा

ॐ नमः वै० शु० १२/२००५

भलुं थयु भागी जंजाल, सुखे भजसुं श्री गोपाल—

धन्य छे ए माड़ी जाया नरसैया ने ! ! ! केवी एनी निर्भय दशा ! एवी निर्भय दशा अपावनार एवा श्री आत्मज्ञान ने अनन्य भावे नमस्कार हो ! नमस्कार हो ! !

मातेश्वरी लक्ष्मीदेवी !

आ सहजानंदघन आत्म-स्वरूप ने दुखी करनार एक अज्ञान ज छे. जेना वशवर्त्ती पणा थी संसार निष्ठ अनंत जीवो, शुद्ध दृष्टिए जोता जे सहज-अकृत्रिम-अनादिय-असंयोगी-अजन्मा-अनंत ज्ञान-आनंद परिपूर्ण-सदा स्वतंत्र एवा अन्य जीवो, जेओ मात्र निमित्त-नैमित्तिक संबंधे मल्या छे. तेमा कोई ने मातापणे-पितापणे-पुत्रपणे-पुत्रीपणे-पतिपणे-पत्नीपणे इत्यादि भावाधीन थई ने ममत्वे बंधाय छे अने तेओ ना संयोग वियोगादि प्रसंगे रति-अरति पामी असन्न दुखी थई रह्यो छे. ए ख्याल जो आपणे अति शांतिए विचारीशुं तो तद्दन सत्य ठरे छे, आपणे पण ते दुख ना सपाटा मां सपडायला होइए एम निर्णित थाय छे . तो ते दुख नी निवृत्ति केवी रीते थाय ? ते आ बाल ने आप समजावी शकशो ? शुं एटलीए कृपा आप नहीं करो !"'बारू"'

त्यारे आ बाल ना निर्दोष वचनो भणी दृष्टि करो !"'

सर्व दुखो नुं मूल अज्ञान छे तेनो निवृत्ति आत्म-ज्ञान थी थाय . आत्मस्वरूप नी ओलखाण थी आत्म-ज्ञान पमाय .

आत्म द्रव्य ना गुण पर्याय—लक्षणादि ना अति अभ्यासे आत्मस्वरूप नी ओलखाण थाय. आत्म-स्वरूप ना लक्षणादि नुं संक्षेप ख्यान श्री ज्ञानी पुरुषोए आ प्रमाणे मने आप्युं छे —

'चैतन्य लक्षणम्' पद
ढाल—चेते तो चेतावुं तुंने रे

बालुड़ो अमर तारो रे चेतना माड़ी !
नथी जेने श्वासोश्वास, अंधकार के प्रकाश, स्पर्श-रूप-रस-वास रे चे० १
नथी जेने रागद्वेष, नाम ठाम जाति वेष, जड़ नो धर्म लेश रे चे० २.

नथी गति के आगति, भय शोक ने अरति, जुगुप्सा ने हास्य रति रे चे० ३
नथी जड़ काय भोग, जनम मरण रोग, पर संयोग वियोग रे चे० ४
नथी जेने तृष्णा धोध, लोभ-मान-माया-क्रोध, अविरति के अबोध रे चे० ५
वले जे न अग्नि मांहि, जल मांहि गले नांहि, छेदन भेदन कांई रे चे० ६
एतो छे अनंत ज्ञान, चरण दर्शन वान, क्षायिक नवे निधान रे चे० ७
शुद्ध बुद्ध अविकार, शाश्वत अचल सार, अखंड स्वरूप धार रे चे० ८
धन्य माडी ! तारा जाया, रोम-रोम मां सुहायो, सहजानंद सुहायो रे चे० ९

अतीव सुदृढ भावे मनन करजो. जे कांई भूल जेवुं जणाय तो आ बाल ने जणावी कृतार्थ करजो. कि बहुना सुज्ञेषु ?
लि० अव्यक्त बाल ना प्रणाम पहोंचे.

---

¹लक्ष्मीजी नो बाबो लालजी स्वर्गवास थतां तेमने सांत्वन अर्थे बाबा ना आत्मा विषेनुं भान करवानुं पद.

(पत्रांक ६) दहाणु
ॐ नमः दिनांक १६-११-४८

श्री कोजमलजी तथा हिम्मतमलजी मु० आहोर
आपनी चिट्ठीमली. अत्र हजी पखवाडीआ नी स्थिरता संभवे छे. बाद उत्तर दिशा तरफ प्रयाण थवा संभव छे. मद्रास थी रिखबचंदजी नो पत्र हतो. अठवाड़िया मां अहिं आववा जणावे छे. धामील मुनिजी ने जे हिस्ट्रीया नो गोलियो आपे छे तेनुं नाम स्पष्ट अक्षर थी वलती टपाले लखी मोकलजो. सत्संग बल मां वृद्धि करजो. स्मरण विस्मरण न थवुं जोइए. संतो मार्ग बतावे पण चालवुं तो पोताने आधीन छे माटे सत्पुरुषार्थ ने अपनावी ने सज्ज थाओ वधारे शुं कहेवुं ? सर्व ने यथायोग्य प्राप्त थाओ
लि० भद्रना धर्मलाभ !

(पत्रांक ७) चन्द्रभागा नदी तट विवर
ॐ नमः चारभुजा रोड (मेवाड़)
[वैद्य कोजमलजी पर आया पोस्टकार्ड] चैत्र कृ० १२/२००६

पत्र मल्युं. पोस्ट सामग्री हुं नथी राखतो ए तमने खबर छे. छतां जवाबी कार्ड मोकल्या विना जवाब नी मने फरज पाड़ो ते शुं वाजबी गणाय ? जवाब लेवुं होय तो कृपणता ने छोड़ो. बिलारी थी घेवरचंदजी नुं पत्र छे तेमां लखे छे के तीन थोय ना भंडार मांथी सम्मति-तर्क ना ग्रंथो जे आपने सिवाणे मोकल्या हता ते हजु सूधी पाछा नथी मल्या भंडारवाला उगराणी करे छे तो कृपा करी तेनी व्यवस्था जणावो, भाई कोजमलजी ! तमो तथा तमारा साथ वाला अने मूलचंदजी वंदा विगेरे के जेओ

सिवाणे आव्या हता तेओ बधा ने मली तपास करो के पुस्तको कोने पासे छे. चार थोय नुं भंडार तपासो वखते भूल थी त्यां अपाया होय. अरजण्ट तपास करी जवाबी कार्ड थी जवाब अरजण्ट मोकलो. जेथी तमारी दवाई रूप कांइक बोध वचन पण पाछा लखी मोकलाय, भाई हिम्मत विगेरे ने आज कारणे जवाब नथी आपी शकाया. आ पण कोक नुं आवेलुं पत्र वधारा नुं होवा थी तमने लखी मोकलुं छुं, आ जीव जे वस्तु नी खोज मां छे, ते वस्तु ना स्वरूप ने यथार्थ पणे जाणवुं ते जाण्या पछी तेने इच्छवुं तेने ध्येय कहे छे. ध्येय नक्की कर्या विना साचुं ध्यान थाय ज नहिं. मारे अमुक ज गाम जवुं छे. ते अमुकज दिशा मां छे तेनो अमुकज मार्ग छे एम नक्की कर्या विना जे चालवाज मंडी पड़े तो तेनुं चालवुं नकामुंज छे . तेम ध्येय नक्की कर्या विना ध्यान ते तरंग रूप ज छे. अने ध्यान विना मन स्थिर थायज नहिं. संपूर्ण परमानंदना परमधाम स्वरूप अेवुं जे पोतानुं आत्म स्वरूप, तेनी चाह भूली ने जे जीव जगतनी अनुकूलता रूप शाता वेदनीय कर्म के जेने अरमनी सुख माने छे, ते सुख ने जे जीव इच्छे छे तेने पोतानु ध्येय शाता वेदनीयन रूप जड़ भौतिक पदार्थो मान्या ते शाता ने मेलववा ने वहाने तेने ज मेलववानुं ध्यान ते करे ज. जेना परिणामे क्षणस्थायी स्वभाव वाली एवी शाता आवी साधक ने क्षण भर राजी करी पाछा अशाता मां धकेली पोते पलायन थई जाय छे. आम तेवा ध्यान थी जीव चौरासी लाख चौटा मांज भटक्या करे छे. भाई ! ध्येय नक्की कर्या विना तमो जगत नी अनुकूलता नुं ज्यां सूधी ध्यान करशो अने तेने प्रभु ना ध्यान रूपे ओलखावशो त्यां सूधी तमारा संकल्प विकल्प नहिं टले. कारण के ते तो प्रगट आत्म वंचना ज छे माटे आत्मा सिवाय बीजुं कांइ पण चिंतवो मा. जोनार ने भूलो मा. जोनार ने जोवाथीज सहजानंद प्राप्त थाय छे ॐ सर्व ने यथायोग्य प्राप्त थाय .

(पत्रांक ८) गढ सिवाणा (मारवाड़)

ॐ नमः कार्तिक कृष्णा १०/२००६

श्री कोजमलजी !

पत्र मल्युं, मौन वरते छे, दलीचंदजी घेवरचंदजी विगेरे आप सर्व ने हाल मा त्यांथी भावना भाववा नुं निवेदन छे मने मारुं करवा दो तुम तुमारा संभालो वधारे नी जरूर नथी चे अक्षर श्रवण करी ने पचावो तो आनंद आनंद बाकी लरू लरू मां तत्व नथी । भद्रं भयतु !

लच्छीरामजी आदि ना यथायोग्य स्वीकारजो, अमीचंदजी देसावर गया ।

(पत्रांक ६)

ॐ नमः गढ़ सीवाणा

१-१०-४६

छप्पय— नाद करत है साद, जिया तू सो मत प्यारे,
मोह नींद कर त्याग, रहो पर परिणति न्यारे,

स्व स्वरूप कर याद, अहं सो सोहं भावे,
ज्ञाता द्रष्टा शुद्ध, रहो तुम आप स्वभावे,
ब्रह्मरंध्र में ब्रह्म नाद ॐ ऐसी धूम मचात है,
सहजानंदघन राज ताज हर्ष शीर्ष हिलात है… १

पद

[सरल मधुकुमार निमित्ते बनेलुं]

(तुं तो राम सुमर जग लडवा दे… ए ढब)

हुँ तो अमर बनी सत्संग करी…

स्वामी श्री चैतन्य प्रभु थी, लग्न कर्युं में वात खरी;
शुं गुण ग्राम करूं एना हुँ, शक्ति नहीं मुझ मांहि जरी…हुँ तो० १
जन्म मरण रोगो नहिं जेने, इच्छादिक नहीं दोष सरी,
तन धन परिजन शत्रु मित्रता, नष्ट थया कामादि अरी…हुँ तो० २
शिव सुखदायक निज गुण नायक, अक्षर अक्षय ऋद्धि भरी;
सच्चिदानंद सहज स्वरूपी, भवसागर जल तरण तरी…हुँ तो० ३
सर्व भाव शुद्ध ज्ञाता द्रष्टा, जिन-ब्रह्मा-शिव-राम-हरि;
सुखणी थई हुँ सखि साच कहुँ छुं, नाथ चरण नुं शरण वरी हुँ तो० ४
जन्म मरण रोगो ए रोगी, मुरतीआथी सृष्टि भरी;
कामी केदी ने जे परणे, जाय चोरासी मां तेह मरी…हुँ तो० ५
माटे सेवो नाथ निरंजन, शुद्ध प्रेम रस हृदय धरी
सहजानंद लयलीन सुमति ए, सरल मधुरी वात करी…हुँ तो० ६

प्रभो !

पत्र मल्युं आल्बम अने भावना प्रवेशिका हजु नथी मल्या . आगमन राह नथी जोवाई . शारीरिक परिस्थिति जाणो, तेने माटे 'नौली कर्म' बस छे . जेटलुं कर्ज थी मुक्त थवाय तेटलुं हितज छे . एक लक्ष तो छेज मात्र साधन नो पूर्ण ल्हावो लेवा जरूर पूरती तेनी जे सार वार थाय छे जे आत्मार्थेज गणाय ।

पाठवेल सत्शिक्षा ने अभिनन्दन हो ! एवी सत्शिक्षा नी घणीज जरूरियात छे .

"हित कह्युं सुणे न कह्युं ते बधिर सरखो जाणवो" मुक्ति साधन विषे मारी समझ :—

अनादिय परिभ्रमण काल मां द्रव्य थकी प्रत्येक द्रव्यो नो पारस्परिक संयोग जे भावे जे क्षेत्रे जे काले थवानो होय ते ते भावे ज ते ते क्षेत्रे ज ते ते काले ज थाय छे . पूर्वकाले थयो हतो , अने वर्त्तमाने वर्त्ते छे. तथापि भाव थकी ते ते पर द्रव्य मां वर्त्तता निज उपयोग ने त्यांथी समस्त पणे व्यावृत्त करी जे

केवल त्रिकाल शुद्ध एवा निज चैतन्य धन मां अखण्ड पणे जेओए द्रव्य दृष्टि नां अभ्यास बले स्थापित कर्युं तेओ मुक्त थया.

आल्बम नी तपास करजो मोकल्या छे के नहीं ?

(पत्रांक १०)

स्टीप ऊपर

२६-२-५०

भगवानजी भाई,

जे कोई ना नथी जेनो कोई नथी तेना भगवान आपोआप थई जाय छे. कारण के प्रभु अनाथ ना नाथ छे. जे कोई नो नथी अने जेनो कोई नथी तेना वड़े कोई नो पण चिंतवन थातो नथी. तेनी बधी शक्ति भगवान मां विलीन थई जाय छे. भगवान मां विलीन थएली शक्ति अनन्त अने नित्य छे थई जाय छे कारण के तेज तेनु स्वरूप छे जे करवुं पड़े छे तेने संयम पूर्वक करो· जे करवुं पड़े छे तेने अहंता थी करो. जे आवश्यक छे तेने भूलो नहीं शुं करवुं पड़े छे ? संयोग. शुं करवुं पड़े छे ? वियोग आवश्यक छे नित्य जीवन अनन्त रस सहजानंद स्वरूप. भक्त पर सुख दुख के चिंता आदि नु शासन नथी होतुं अपनत्व ए महि बलो मां उत्कृष्ट बल छे. वर्तमान परिस्थिति नो सदुपयोग ए सर्वोत्कृष्ट साधन छे. पोतानी मेले आवेला सुख ने दुखियो मां वांटी देवो जोइए अने पोतानी मेले आवेला दुख पासे थी त्याग नो लेशन सीखी लेवो एज परम पुरुषार्थ छे तेनी शोध करो के जेना विना तमो कोई प्रकारे रही न शक्ता होय. जे प्रकाशित न करी शकाय एवुं कोई पण काम न करो. जेनी आवश्यकता छे तेना अभाव स्वीकार न करो. मानेला पदार्थ ने सच न समझो. कारण के ते अस्वीकार मात्र थी रही शके. त्याग करवा वाला नो अवश्य त्याग करी दो. एक निष्ठा ए संतुलतानि सर्वोत्कृष्ट कुंची छे. 'शरीर भाव ते संसार आत्म-भाव ते मोक्ष' देह माने संसार भाव, आत्म माने परमात्म भाव प्रगटे छे

ज्ञान से संसार के बंधन टूट जाते हैं।

ध्यान से आनन्द की अनुभूति होती है।

सुख से दुख और दुख से आनन्द मिलता है।

कर्म को विश्व-प्रेम के भाव से करना चाहिए कर्म का अन्त होने पर आस्तिकता आपोआप आ जाती है आस्तिकता आने पर (राग-द्वेष) त्याग प्रेम में बदल जाता है. सभी प्रकार की चाह मिट जाने पर अहंकार मिट जाते है। अहंकार मिटते ही सत्य का अनुभव हो जाता है। संसार के साथ न्याय और सत्य के साथ प्रेम करना चाहिए।

(पत्रांक ११)

पारभुजा

(मोहनलालजी छाजेड़)

ता० २६-२-५०

(१) मन नी स्थिरता माटे संसार नी दासता अने भोग वासनाओनु त्याग परम अनिवार्य छे.

(२) जेम संयोग नु दासत्व टलतुं जाय तेम तेम मन नी स्थिरता आपो आप आवती जाय छे.

(३) जेम जेम मन नी स्थिरता आवती जाय तेम तेम छुपायली शक्ति नो विकास आपे आप थई जाय छे.

(४) प्रत्येक प्राणी मां आवश्यक शक्ति विद्यमान छे परन्तु व्यर्थ चिंतवन थी तेनो विकास रुंधाई जाय छे.

(५) जे प्राणी आगल पाछल नो व्यर्थ चिंतवन शमे छे तेना मन मां ध्यान करवानी शक्ति अवश्य आवी जाय छे.

(६) ध्यान करवा माटे संसार नी सहायता नी आवश्यकता नथी परन्तु संसार नी असंगता ज अनिवार्य छे.

(७) जेना मन मां थी भौतिक पदार्थो नुं ध्यान निकली जाय छे तेना मन मां भगवान आनन्दघन नु ध्यान आपोआप होतु रहे छे। जे आपोआप थया करे छे तेज ध्यान कहेवाय छे.

(८) भक्त अने भगवान वचे भौतिक चिन्ता जे पडदा रूप छे जे बन्ने ने भेटावा मां अन्तराय करे छे. जेणे भौतिक चिन्ता त्यागी तेज प्रियतम ना प्रेम ने प्राप्त थाय छे।

(पत्रांक १२) चन्द्रभागा नदीतट विवर

[कोजमलजी वैद्य को दिया कार्ड] ॐ नमः चारभुजा रोड (मेवाड़)

प्यारे आनंदघन ! १४-४-५०

यदि भिखारी बनना पसन्द है तो ऐसे भिखारी बनो कि दाता को ही भिक्षा में ले लो जिससे बार-बार मांगना शेष न रहे. दृष्टि को दृश्य से हटा लो. चित्त को निराधार कर दो. परतंत्रतापूर्वक जीवित रहने से स्वतंत्रतापूर्वक मर जाना अच्छा है. जो आपके बिना किसी प्रकार भी रह सकता है उसकी ओर मत देखो. आप उसके दर के भिखारी हैं जो निरन्तर आपकी प्रतीक्षा करता है.

प्यारे! प्रेम पात्र को प्रेमी के सिवाय और कहीं स्थान नहीं मिलता क्योंकि प्रेम पात्र वहां निवास करते हैं जहां स्थान खाली हो. प्रेमी का स्वरूप प्रेम पात्र की अभिलाषा है और कुछ नहीं अतः यह निर्विवाद सत्य है कि प्रेमी के बिना प्रेम पात्र किसी प्रकार नहीं रह सकते. अपने में से विषयीभाव को निकाल दो अहंता के विपरीत प्रवृत्ति नहीं होती अपने में ही अपने प्रेम पात्र की स्थापना कर लो. यही परम भाजन है.

जो प्राणी अपने से भिन्न में अपने प्रेम पात्र को देखते हैं उनका प्रेम पात्र से योग नहीं होता बल्कि संयोग होता है. संयोग तथा योग में भेद है.

संयोग का वियोग अनिवार्य है, योग का वियोग नहीं होता. दृष्टि को दृश्य बिना ही स्थिर कर लो. व्यक्त तथा अव्यक्त दोनों ही दृश्य हैं. दोनों प्रकार के दृश्य से असंग होते ही अपने में ही अपने

प्रेम पात्र का अनुभव होगा. निराधार हो जाने पर ही चित्त पूर्ण स्वस्थ होगा. ज्ञाता की इच्छा का अन्त कर दो. व्याकुलता की शरण लो. व्यर्थ चेष्टाओं का निरोध करो—ऐसा करने से व्याकुलता या शांति स्वयं आ जावेगी आगे पीछे का चिन्तन मत करो. संसार में संसार के लिए रहो अपने लिए नहीं. अपने लिए अपने सिवाय और किसी की ओर मत देखो जिसको संसार में रहना आ जाता है वह अवश्य संसार से पार हो जाता है ॐ ॐ ॐ

सभी महानुभावों को धर्मलाभ निवेदन करें. पत्र का भाव मनन करते रहें श्री ब्रह्मचारीजी का पत्र था सभी हाल मालुम हुए.

ॐ सहजानंद

(पत्रांक १३)

लावा सरदारगढ
२२-५-५० (मेवाड़)

भगवानजी भाई

ॐ नमः

भगवान, आपना बन्ने कृपा पत्रो मल्या। कांकरोली थी मोकलेल कार्ड मल्युं हशे. हुं ता-२० अत्रे सुख समाधि पूर्वक आवी गयो छुं थोड़ीक स्थिरता छे-पछी ज्यां अलख निरंजन लई जाय त्यां जवाशे, डाहाणु तरफ हाल प्रभु आववा देय तेवुं लागतुं नथी

संसार समुद्र तरवाने संसारनो यथार्थ बोध थवा संसारिक प्रतिकूलताओ ए जीवात्मा ने अनुपम साधन छे क्षणिक पदार्थो मां न फंसाई जाय ए अर्थे परमात्मा परम कारुण्य भावथी भक्तो ने प्रतिकूलताओ थी उगारे छे जेम माताओ बालक ना हाथ मां थी सोमल झुंटवी ले छे तेम प्रभु भक्त ना हृदय मां रहेलो मायिक वासना नष्ट करवा मायिक पदार्थो नी अनुकूलता झुंटवी ले छे. जेम सोमल नो दोष बालक ने ख्याल न होवा थी माता ना उक्त कार्य थी ते नाराज थाय छे तेम भक्त पण मायिक पदार्थो नी अनुकूलता पोता ने केटली अहितकर छे ते न जाणतो होवा थी प्रभुना उक्त कार्य हृदय मां अजगमो धारण करे छे परन्तु तेथी प्रभु कांई दाद मांभले एम नथी दुनियानी अनुकूलताओ नी स्पृहा राखी ने कोई पण शरीरधारी आत्मज्ञान पामी शक्यो नथी, पामतो नथी अने पामी शकशे नहीं. आत्मज्ञान विना सचराचर जगतनु दर्शन पण थयु नथी थातु नथी अने थशे पण नहीं-जगत नु भान भूल्या विना मायिक स्पृहा टली शके नहीं मायिक स्पृहा टालवा हे जीव तुं माया नुं स्वरूप अने तारु स्वरूप जाण ! उभय नु यथार्थ स्वरूप जाणवानु संत चरण सेवा संत नी निष्काम भक्ति थेज जड़ चैतन्य नुं यथार्थ भान प्रगट्ये मायिक स्पृहा टली जइ परम सोहरनु ध्यान एवुं स्व स्वरूप अनुभवाशे जेमा जगत पण प्रतिबिंबित पणें अप्रयासे अवलोकाशे । जगत ने भूलवा हे जीव तू जगतनी प्रतिकूलता ने अपनाव 'अपनाव' प्रतिकूलता ने ज अनुकूलता गण। तेमा मग्न रहे मग्न ए तारु पोतानो रहेवा नो घर छे पोता ना घर मा रहेता तूं भय शाने धरे छे ?

पर वस्तु नी चाहना चाहनाथी ज तूं विषय भाव परघर मां प्रवेश करे छे. तेथी ज तूं पारका हाथे दुखी थाय छे. तू आनन्द स्वरूप ज छे. तेम छतां अनानन्द दुःख नी मोज मानवा मू ज तने प्रेरे छे. तेथी जड़ नो सहायता इच्छे छे ते प्रमाणे प्रवर्ते छे. छतां ते पामी शकतो नथी अने पोता ने भूली शकतो

नथी कारण के दुख समये तने आनंद ज गमे छे. अने तेज तारु पोतानुं साचुं जीवन छे. तेथी तूं तने कोई काले भूली शकतो नथी. तूं तारा थी भिन्न थई शकतो नथी, तूं तारा थी अभिन्न होवा छतां तूं तने-तारा आनंद स्वरूप ने इच्छे छे. शोधे छे. ते माटे जड़ नी सहायता मेळववा मथे छे. ते तारुं पागलपणुं तारी जाण मां शुं नथी आवतुं ? हे जीव भ्रमा ना सत्य कहुँ छूं जे तूं शोधी रह्यो छे. तेज तूं छे. तेने जाणनार जोनार ते तूंज छे. माटे जाणनार जोनार ने तूं जो तो तुं तने जाणी देखी शकशे जाणता देखाता वधा मायिक पदार्थों थी तूं सदा सर्वदा असंग छे. तेनी साथे तारो कोई प्रकारे सगपण नथी माटे तेथी उदासीन था। उदासीन था !!

आखुं जगत पोता मां अने पोते जगत मां प्रतिबिंबित छतां जगतनां अमुक शरीरधारी ने पोता थी भिन्न दूर मानी तेना वियोगे पोता ने दुखाधीन करवुं ए शुं पोतानो पोता पर अत्याचार न गणाय.

हे भय्या निर्मल, हे वन्धु सरल, मधु आप हजी आप पर आवा अत्याचार क्यां सूधी चलावाना आपनी प्यारी सरकार हवे ते आंवी शकसे नहीं-इशारा में ताकीदे समझी जावो ॐ

सहजानन्द ना प्रभु स्मरण !

(पत्रांक १४)

ॐ नमः

चारभुजा रोड (मेवाड़)

आ० शु० ३।२००७

आत्म वन्धो !

आ समजसार नो प्रथम अधिकार के जे एकाद अठवाड़िए लखायलो. तेनी एक मुमुक्षुए प्रतिकृति अशुद्धतया करी, तेने सुधारी ने मोकलाय छे. आगल संबंध जोड़वानो हाल अनुदय वर्त्ते छे. आगल जेवो उदय; शुद्धि-पत्रक पूर्वे मोकलायेल मल्यु हशे. काशी थी कनकविजय नो काले पत्र हतो अने रिप्लाय नो मारा थी जवाव अपाय तेम नथी. तेम पत्रादि व्यवहार हवे दिनोदिन रुचि क्षीण थती जाय छे. माटे कृपा करी ने आनी जाहेरात नहिं करो ! धर्म ध्यानादि मां वृद्धि हो. सर्व ने धर्मलाभ

ॐ सहजानंद

नोट :—इस पत्र के साथ समजसार अपूर्ण भी आया।

(पत्रांक १५)

लि० सेवक मीठुभाई

चारभुजा रोड

पू० अगरचन्दजी नाहटा नी सेवा मां निवेदन के आपनो पत्र पू० म० श्री सहजानंदजी ने मल्यो. विगत सुविदित. मने अहिं आव्ये १२ दिवस थवा आवशे. हजु ८ दिवस आस पास रोकावानी भावना छे जी. पू० म० श्री सुखशाता मां छे जी. मारो एक पोष्टकार्ड अपने मल्यो हशे आपने क्षेम

कुशल इच्छुं छुं. श्री हररखचन्दजी ने मारा नमस्कार कहेशोजी. पू० म० श्रीना पदोमां थी अत्रे लखुं छुं—

(१) नाथ कैसे आपो आप मिटायो

(२) मूक ने खटपट सघली शाणा।

पू० प्रभु के स्वाक्षर :—

स्वानुभूति नो ज्यां अनादर छे त्यां संत शिक्षा नो आदर केम होइ सके? जेम माछलुं पोताना ध्येय-जल विना रही शकतो नथी—दुखी थाय छे तेम मुमुक्षु पोता ना ध्येय—स्वस्वरूप विना न रही सके. तेज साचो दुखियो गणाय. स्व स्वरूप विना जे रही शके छे ते दुःख ना ढोंगी-सुखियाओ नु सत्साधना क्रम मां कोई स्थान ज नथी. जे साहित्य प्रवृत्ति थई अन्तर शान्ति न वेदाय, तेना उपर ममत्व शो? प्रभो! जागो !! जागो !! जागो !!!

आ छेल्लो ज श्वास छे एम समजी ने जे करवानुं छे ते शीघ्र करी लो. सुज्ञेषु किं बहुना?

ॐ सहजानंद आनंद आनंद

(पत्रांक १६)

ॐ नमः

(मोहनलाल जी छाजेड़) चारभुजा रोड

६-६-५०

पत्र मल्युं। जे आराधना थी जीवन पलटो थयो तेज आराधनलये ज्ञान थये (ज्ञान ने इच्छो या मात्र भक्ति इच्छो) तेमाज लयलीन रहो। फल ने इच्छा थी हो तो ते भक्ति सकाम कहेवाय। सकाम भक्ति थी ज्ञान न थाय माटे सर्व प्रकारनी इच्छाओ थी मन ने रहित करी दो अचित मांज ज्ञान प्रगटे छे।

पया इच्छत खोवत सब, है इच्छा दुःख मूल

जब इच्छा का नाश तब, मिटे अनादि मूल

आशा दासी के जो जाये, ते जन जग के दासा

आशा दासी करे जो नायक, लायक अनुभव प्यासा।

आशा मारी आसन धर-घट में अजपा जाप जपावे

आनंदघन चेतनमय मूरति नाथ निरंजन पावे (अपूर्व) (आनंदघन)

अेक निष्ठाए करेला निष्काम अनुष्ठान थी अवश्य मोक्ष थाय। बधे बीजा विकल्पो साधनामां विघ्न रूपे थाय छे ते करशो नहीं।

सहजानंदना धर्मलाभ

(पत्रांक १७)

ॐ नमः

चंद्रभागा नदी
चारभुजा रोड, मेवाड़
१३-७-५०

महानुभाव ! (मोहनलालजी छाजेड़)

आज आपनुं पत्र मल्युं. गेस्ट हाऊस ने बदले पखवाडिया थी गुफामां रहेवाय छे. त्यां करता अहिंनु वातावरण पवित्र छे. ध्येय नक्की कर्या विना ध्यान ज लक्ष वगर ना बाण जेम थाय. एमां कई पण आश्चर्य नथी. जगत भरमां कोई पण शरीरधारी ध्यान वगर तो नथीज. मात्र कोई अनेकनुं करे छे अने कोई एक नो करे छे अनेकनुं ध्यान करनार वेश्या नी माफक काम पड्ये कोई नो पण आश्रय पामी शकतो नथी त्यारे एकनुं ध्यान करनार सती नी माफक पति नी कृपा मेलवी कृतकृत्य थायछे.

अनेकनुं ध्यान अनेक तरंगो वालुं होय छे. सदाय चलचित्र दशा जालवी राखे छे ज्यारे एमनुं ध्यान एकज लक्षवेधी होवा थी चित्त स्थिरता ने जालवी राखे छे. शरीर कुटंब आदि अनेक ना ध्यान थी चलायमान चित्त सदाय भवांति निव घोर अशांति थी, छलोछल उभरातुं होय छे.

ज्यारे एक ज सत्त स्वरूप नु ध्यान चित्त ने सदाय पोता—मां सर्प मोरली नी माफक लीन करी ने साधक ने पूर्णानंद सागर ना कल्लोल मां डुबावी दई शरीरादि भाव थी निवृत्त करे छे ज्यां हूं-तूं ते नो भेदो भुलाई भुंसाई अभेदता मां लीन थवाय छे जेम कोई अन्य ने मारवा माटे अनेक दांव पेचो अनेक अस्त्र शस्त्रो नी जरूर पड़े छे त्यारे पोता ने मारवा माटे विना दाव पेच एक मात्र नानकड़ी छुरी बस थई पड़े छे. तेम अन्य ने प्रतिबोधवा अनेक युक्ति-प्रयुक्तियो नी साथे अनेक शास्त्रो भणवा पड़े छे परन्तु पोता ने प्रतिबोधवा माटे पोतानुं अहंभाव खत्म कर जगत भर नुं तमाम जाणपणुं छोड़ी दई नानामां नानुं अने थोड़ा मां थोडु एक मात्र पोतानुं आत्मज्ञान ज बस छे.

पोतानुं ज्ञान पोताथी कई छुपु रही शके खरुं ? बीजाने जाणवा मां मेहनत खरी, मेहनत करतां तेमां भूल थवानो य संभव खरो। परन्तु पोताने जाणवा मां नथी पड़ती कोई प्रकार नी मेहनत के नथी रही सकती तेमां कोई भूल।

> जे द्रष्टा छे दृष्टि नो, जे जाणे छे रूप।
> अबाध्य अनुभव जे रहे, ते छे जीव स्वरूप ॥
> सर्व अवस्था ने विषे, न्यारो सदा जणाय,
> प्रगट रूप चैतन्य मय, ए एंधाण सदाय—(राजचंद्र)

जोनार जाणनार ने भूलो नहीं एज आत्मध्यान कल्याण करे छे. सर्व ने धर्मलाभ थावो ॐ

सहजानंद

१ कुण्डलिनी उपर जागृत शक्ति थाय एटले भाव-भक्ति अने प्रेम आ बधा गुणोनो उदय थई जाय छे।

२ ज्यां सूधी विषय ऊपर वैराग्य थशे नहीं त्यां सूधी ज्ञान नो लाभ थई शकशे नहीं।

३ चित्तमां थी मन पाछुं हटे त्यारे ज शुद्ध आत्म-ज्योतिनुं दर्शन थाय छे।
४ ज्यां सुधी देहात्म बुद्धि टले नहीं त्यां सुधी ज्ञान थाय नहीं।
५ साचुं प्रभु प्रेम होय तो ज मनुष्य परमपदनो खरो अधिकारी थाय छे।

(पत्रांक १८)

दि० आ० सु० ५ २००७
शुक्रवार

चन्द्रभागा नदिनी तट-कंदरा
पारणुजा गोढ (मेवाड़)

प्रिय आनंदघन !

पोते ज पोताने शोधवा छतां न मळे !!! ए केवुं आश्चर्य। गवेषणा दुरत्ययनी संभाव्य छे। पोता थी दूर पोते दोड़ शके खरो ? छतां पोताने शोधवा निकळतां पोता थी दूर जवाय के नहिं ? कस्तूरिया मृगवत् पोतानी शोध संबंधिनी दोड़ धाम, पोता ने शुं प्राप्त करावानी ?

पोता ने शोधनारो कोण ?…तो, पोताथी पोते दूर केम दोड़ी शके ? छतां पोताने शोधवानी कल्पकूट केम ? शा उपाये ए कल्पकूट टले ? शोधवानी दोड़धाम थी विरम्यां विना टाटिया में आराम ते केम मळी शके ?

प्रभो ! सर्व जड़ भाव थी विरम्या विना आपने केम मळाय ? सर्व प्रवृत्तिनी निवृत्ति विना सर्वभाव थी केम विरमाय ? प्राप्त परिस्थिति ना सदुपयोग विना प्रवृत्ति संतति थी केम निवर्ताय ! पदार्थोनी कोटिगणन् साक्षीत्व भाव धारण कर्यां विना प्राप्त परिस्थिति नो सदुपयोग केम थई शके ? उपादान-निमित्त कारण-कार्यभाव नी यथार्थ समज विना साक्षी पणे केम रहेवाय ? सत्संगना संग विना समज क्यां थी मळवा नी ? असत्संग थी हठ्या विना सत्संग केम सधाय ? इच्छाओं थी हृदय खाली कर्यां विना असत्संग थी केम हटाय ? वास्तविक आवश्यकता जाग्या विना इच्छा-उपाड़ा ने हृदय मंदिर मां थी केम फेंकी देवाय ?

वास्तविक आवश्यकता जागे शुं आनंदघन प्रभु ! आप न मळी शको ? आपनी विरह व्यथा थी केटलुं सोसाय ? पिपासु जल विना चैन थी रही शके खरो ? जल बिन चैन थी रहेनारा पिपासु होइ शके खरो ?

भगवन ! आपने मळवानो उपाय सीखवा माटे मारे सद्गुरु ने शुं पकड़वा अनुचित न मनाय ! हे कृपालो, मने एवो संयोग आपो, के जेथी हुं सद्गुरु ना सांचो शिष्य बनी शकुं ?? नाथ मिलन विना हुं प्राण ने राखी ने शुं करूं ? प्राण प्रेमना हेत प्रेम थी दूर रखावे छे. हे प्राणनाथ ! आपना अंतराय भूत थवा आ प्राण थी शकुं ``ॐ अपूर्ण —

प्रभो ! पदार्थ के अन्य साहित्य सेवा तो, सर्वसंगिनी उदासीनता ने कारणे अनुकूल प्रायः बने छे सर्वोपरि स्व स्वरूप निष्ठा ना हेतु ए सदवस्था मूळ वस्तु ना दोहनरूप मात्र लेवा आशय ने माटे

राखी ने "अनुभवसार" लखवानी वे दिवसथी प्रवृत्ति थाय छे. जेनो लाभ लेखक ने थवा उपरांत जैन जैनेतर सुगमता थी विना मतभेदे लई शके, तेवी शैली सहजे उद्भवो छे !

सांजना ५।६ एक कलाक सत्संग सिवायना २३ कलाक मौन पणे वीते छे. तेमां मुख्य पणे आत्म विचार ध्याननु लक्ष सेवाय छे. ते लक्षनी शिथिलता मां शिथिलता नाशनार्थे उक्त ग्रंथ ग्रथी ने स्थान मल्यु छे जी

अल्प संख्यक जैन जैनतरो सत्संग प्रसंग सेवे छे. दुकानदारी नी उपरान्तता होवाथी प्राप्त परिस्थिति ना सदुपयोग रूपे एक कलाकनी सत्संग प्रवृत्ति भोगवाय छे.

ट्यूशन पद्धति थी छात्र साध्यसिद्धि थी वंचित रहे, ए निर्विवाद सत्य छेजी। चौमासुं कंदरा मां वीते एवा परिणाम वर्ते छे । आप भाग्यशाली छो के साहित्य प्रकाशन वड़े लोक सेवा करी रह्या छो। परंतु मारा मां तेवी योग्यता नो घणो अभाव प्राय छे जे थी आपनी प्रेम भरी मागणी ने संतोषवा हाल अशक्त छुं. प्रभो ।

ज्ञानसार ग्रन्थावली शीघ्र बहार पड़वी जोइए. रकम दाता ने असंतोष थवा नु कारण एक जे विलंब. ते विना विलंबे टालवानु लक्ष राखवुं. थवानु होय ते थायज प्रभो !

सर्व भावुको ने धर्मलाभ

ॐ सहजानंद

(पत्रांक १६)

ॐ नमः

सहजात्म स्वरूप

चारभुजा रोड (मेवाड़)
३-१०-५०

प्रियतम प्रभो !

आपे मुक्त विषयक किंवदंति सांभली ने प्रमोद भाव व्यक्त कर्यो ते जो के आपनी दृष्टिए उचित हशे, परन्तु मने ते यथा तथ्य होय तेम भासतुं नथी.

> शिर उपर सगड़ो सोमिले करी रे, समता शीतल गजसुकमाल रे;
> क्षमा नीरे नवराव्यो आतमा रे, जे दाझे तेहनो नहिं ख्याल रे···धन्य०

अहा हा !!! क्यां आवा महामुनिओ नी साधनता अने क्यां आ पामर नी भांड चेष्टा !!! प्रभो ! हुंतो :—

अधमाधम अधिको पतित, सकल जगत मां हुँ . अने तेथी :—

नहिं एक सद्गुण पण, मुख बतावुं शुं ?········

संपूर्ण—विदेहि भाव विहीन एवो हुं खरेज ! जड़ गुलाम 'स्वाद्व' गणावा योग्य छुं प्रभो ! शुं शरीर भाव ने राखी मोक्ष साधवा शक्य छे ? माटे ज ज्यां सुधी शरीर भावनो संपूर्ण क्षय न थाय त्यां लगी कोई पण देहधारी नो संग मने सुहावानो नथी. तेमां पण स्वांगधारीओ नो संग ऐतो मने विशेष

हेय जणाय छे. तेओ करतां तो वैराग्य भाव विभूषित गृह-योगिओ ने पण प्राय देह-ममत्व आ काले ओछो होय एम अनुमवाय छे आ न्याये सत्संग नी दृष्टीए पेलाओ करतां आ वर्ग नें हुं विशेष महत्व आपुं छुं. प्रभो ! साक्षोत्व भावे अनुभव ने छगी विचारी जोतां आ कथन आपने पण सप्रमाण लागशे. मान मत मूरछा विना शरीर भाव थी ढंचे ते केम उठाय ?

प्रभो ! गांडा म थाओ ! आ लंगोटीआ माथे रहेवाना कोड आपने शा माटे ? एतो हवे कर-पात्रित्व ना कोड सेवे छे. अेवा ने ते पछी आप केम निभावी शकशो ?

हित-शिक्षा :—

१ झांझवा ना जलथी छलकाता समुद्र ने तरवा केवा प्रकार नो स्टीमर तैयार करशो ?

२ दृश्यमान जड़ पदार्थो उपर आ चैतन्य महाप्रभु नों कोई पण प्रकार नो हयक मरो के ?

३ जेना उपर पोतानो कोई पण प्रकार नो हक न होय, जे मात्र भूल थी ज महायुं होय, अने तेथी तेना ऊपर पोतानुं स्वामित्व मनायुं होय, तेम छतां, समय जतां ते मारूं नथी अेम ज्यारे जणाय अने ते जेनुं होय तेने सोंपतां—ते दान-त्याग कही सकाय खरुं ?

४ पारकुं छोडवा थी में अमुक त्याग्युं, हुं त्यागी आवा प्रकार नो अहंत्व धारण करनार त्यागी=महात्मा कही शकाय ?

५ हे जीव ! में तने जे जडादि पर पदार्थो मां रातो मूंक्यो छे, तेथी व्यापृत थई ने तुं तने छुटो कर। तथा ते जडादि निमित्त थी में तारा मां जे राग द्वेष अज्ञानादि परभावो ने संघरी राख्या छे ते दूर फेंकी ने तारा ज्ञान भवन ने खाली करी, झाडी-बुहारी साफ कर ! के जेथी तेमां तारूं आनंद मूर्ति स्वरूप सहज पणे पधारी ने तने जन्म मरणादि बंधनों थी सदा ने माटे मुक्त कर.

६ विश्व मर्यादागत प्रत्येक पदार्थो नु पारस्परिक आश्रय-आश्रयी भावपण थी तेम छतां ते भूली ने हे जीव ! तुं पराश्रय शा माटे खोजे छे ?

७ भ्रान्ति काले निमित्त नैमित्तिक भावे पण द्रव्यो नो पारस्परिक संयोग-वियोग ज्ञानी दृष्ट नियत ज छे तो पछी ते विषयक तने निर्विकल्पी थवा मां शो वांधो छे ?

८ हे जीव ! तुं तारूं संभाल ! समाधि-मरण नी तैयारी करी ले मृत्यु अनियत छे" प्रमाद न कर. इति ॐ

सहजानंद आनंद आनंद

मुनि श्री देवेन्द्रसागरजी
घाटकोपर

(पत्रांक २०)

ॐ नमः

हवामहेल
पालगुजा रोड—मेवाड़
२६-१०-५०

प्रियतम भगवान आनंदघन !

बापी-पत्र सह उभय पत्रो मल्या जेम सुख उपजे तेम प्रवर्त्तो. परम कृपालु देव नुं वचनामृत-धन

अद्भुत-अद्भुत छे. आ काले केईक भव्यो, एनाज वले अद्भुत-अवधूतता प्राप्त करशे. करावशे. प्रभो !

हाल मां आ बाल ने तो औदासीन्यता मैयानी कृपा वर्त्ते छे. जेथी गुरुत्व वृत्ति, उपदेश प्रथा, ट्यूशन पद्धति नो ··· (त्याग) स्वीकारी ने एणे प्राय ज्यां सुधी यथायोग्य अप्रमत्तता न पमाय त्यां सुधी छात्र वृत्ति वड़े मौनता अने असंगता स्वीकारी छे.

तो हवे आप भावुको तथा मुनि वृंदादिने ए केवी रीते चालवशे ? ते विचारवा विनंती छे. कृपा करी ने आप आने प्रसिद्धि मां न लावो—ए आदि दहाणु ना प्राथमिक मिलने थयेली भलामण प्राय सचवाई नथी अने हजु सुधी ते तथा प्रकारे आगल वध्ये ज जाय छे. तेना औषध रूपे अेनुं उपर्युक्त आचरण अयुक्त तो न गणाई शके···खरुं ने ?

माटे हवे थी अत्र आगंतुको ने मौनता नो संदेश समयसर मली जवो उचित छे. के जेथी अेना उपर अकारण श्राप वृष्टि प्रसंग न सांपड़े. अत्रे ए क्रम नो प्रारंभ थइ चूक्यो छे श्री पुखराज जी सहमत छे. भूलेलाने मार्गे चडावानो खास हक्क तो आचार्य-लब्धि धारको नो ज जैन शासने स्वीकार छे. साधक-साधुओने नहिं. तेमांय एमां तो हजु साधुपणा नो यथायोग्य पणे एकाद अंशेय क्यां छे ? मात्र तेवी रुचि एने प्रगटी होय तो तेमां कांइ ना न कहेवाय.

रण जंग मां पारावार शत्रु वृंदनी विंटायलो एकाकी योद्धो ज्यां सुधी पोता वड़े पोता ने सुरक्षित न पमाड़े त्यां सुधी ते पोता ना अन्य साथीओ नी मदद़े न ज चढीशके, ए देखीतुं छे ते प्रसंगे कांई तेने निज साथिओ भणी क्रूरता नथीज. परन्तु करुणाज वर्ते छे तथापि आ काले अन्यनी स्थिति देखवानो तेने अवकाशज नथी. विकल्पज नथी. तेम छतां कदाच अन्यभणी जोवा ने खोटी थाय तो, तेना प्रमादनो अवसर जोई फावट पामेला शत्रुओ तेनुं शिर तेना धड़ पर रहेवा दे ए बनवा योग्य नथी. अन्य साथिओ नुं रक्षण एतो कमाण्डर नुं काम. एनु नहिंज. ए दिवा जेवी वात छे. एनाज कमाण्डर भगवान महावीर पण तेज शिक्षा ने १२॥ वर्ष पाली कमाण्डर पणु पाम्या. १२॥ वर्षीय तेमनु आचरण अन्य तेमना ज अनुगामी योद्धाओ ने एज सूचवे छे के छुटेलो ज बंधायला ने छोड़वी शके बंधायला थी बंधायलो न ज छुटे. माटे हे शूरा सैनिको ! तमो प्रथम अपूर्व शौर्य उपजावी ने तमने घेरी वलेला शत्रुओ ने पराजित करी तेना घेरा थी छुटा थाओ ! छुटा थाओ !! बीजाओ नी चिंता तमारे करवानी नथी तेओ ने शिक्षा आपतो हुं प्रकट उभो ज छुं. तमे तमारुं संभालो ! तमारुं संभालो !······तूं तेरा संभाल······आ वाक्य नुं परमार्थ मात्र बोलवा मां इतिश्री नथी पामतुं. परंतु आचरवा मां ज तेवी वास्तविकता छे. प्रभो !

उभय मुनिओ ना मुंबई थी पत्रो हता. तेओ श्री ने वंदनादि विनयपूर्वक आ संदेश आज पत्र थी जणाववा कृपा करजो प्रभो !

डुमरा थी सह दीक्षित श्री माणेकविजयजी नो पण आ वखते प्रथम···(पत्र) भावुकता थी आव्या छे. मोरबी थी पुण्यविजयजी ना पत्रो जवाबी हता. उत्तर थी तेमनुं संदेह विरामता ने पाम्युं-खत्म थयुं. ज्ञानी खरा पण देव नहिं-तेने बदले हवे देव ज. एम निर्णय थई गया नुं लखे छे प्रभो !

हवे पत्र व्यवहार केम सचवाय ते प्रश्न छे. जोइए आगल शुं थाय छे. विहारादि तो प्रारब्धा-

मौन रहेशे. दहाणु वासी मिश्रीमलजी कर्णावट जोधपुर थी आव्या छे. सोडप वाला भाई आव्या छे. मात्र मौन पणे मलवुं थयुं छे. ते पण १०॥/११ अने सांजे ५ ५। एम बे टाइम मलवा ना राख्या छे. ११ वागे भिक्षा आम वावत छे. मेरी नारीयल-कमंडलु नुं तथा डॉ० भगवानदास-प्रज्ञावबोध विषयक बे जवाब हजु तमारी तरफ थी नथी मली शक्या हरि इच्छा ! याद करनार भावुको ने सर्व ने यथायोग्य जणावशो. दहाणुवासिओ ने पण. इति ॐ

सहजानंद आनंद—आनंद

(पत्रांक २१)

ॐ नमः

पारभुजा रोड

कार्ती सुदि १ सं० २००७

प्रभो ! दरेक दृश्यो ने जोनार आंख जेम पोते पोता ने जोई शकता नथी तेम ज्ञानमूर्त्ति आत्मा पण दरेक पदार्थो ने जोतो थको पोते अरूपी होवा थी पोता ने जोई शकता नथी. पोता ने नहीं जोवा छतां जेम आंख नुं अस्तित्व अनुभवमां प्रगट पणे आवी शके छे तेम आत्मा पण द्रष्टा तरीके अनुभव मां प्रगट आवी शकवा योग्य छे. जोनार मां पोता ना लक्ष ने टकाववा रूप अभ्यास थी आत्म-साक्षात्कार थई यावत् कैवल्य दशा प्रगटी शके छे.

सत्संगनी अविच्छिन्न उपासना थी जोनार मां लक्ष टकाववा थी शक्ति सहेजे सधे छे. आपनी मरजी विना सत्संगे आगल वधवा नुं होय तो जगत आखो दुखी न होय. अत्र हवामहल मां जो एक मास थी स्थिरता करवा मां आवे तो विशेष साधना थवा योग्य छे. साथ पू० गंगावा निमूबा चंचल बेन सरल मधू ने पण लावो तो तेमना संग थी तमो ने भक्ति मा वधारो थशे. गुफा वगेरे सम्बन्धी अधिक विगत भगवानजी भाई ना पत्र थी जाणी लेजो. गुफा मां घर मंदिर पण बनशे, एटले पूजन वगेरेनी अनुकूलता रहेशे. नीचे नदी वहे छे भोजनादि माटे जो पोतानी स्वतन्त्रता लेवी होय तो हवामहेल मां बधी सगवड़ बनी रहेशे. एटले गाम स्टेशन भणी जवा आवा नी कडाकूट तथा सराय नी गड़बड़ नहीं नडे. पछी तो आपनी मरजी. विन सत्संगे आगल वधानुं होय तो जगत आखुं दुखी न होय. जो आववा भावना होय तो सिर्फ मुमुक्षु मंडल ने साथे लइ अत्र आसन जमावो मंडी पड़ो. साधन मां तीन गुफा मांथी एकाद मां रहेवानुं पण बनी शकशे परन्तु घाल वधा वाला ने तथा यथार्थ श्रद्धा विनाताओ ने भूल थी पण साथे नहीं लावता. थोरडी हीराचन्द केवलचंद ने पण आवो तो जणावशो. तेमज तेमनी पासे थी भगवान महावीर नो चित्रपट पण मारे माटे मांगी ने लावजो. काचनी संभाल राखजो तेओ बीजो करावी ले, एम कही देजो. सर्व ने धर्मलाभ कहेशो. मारा थी दाहाणु भणो हाल नहीं अवाय, नहीं अवाय, कोई अफवाह उठी छे तो तेनी मरजी.

ॐ सहजानंद आनंद छे

(पत्रांक २२)

ॐ नमः

चारभुजा रोड, मेवाड़

का० सु० ७।२००७

भगवन् !

आपना कृपा पत्रो मल्यां आपनी पारमार्थिक कामना ने अगणित स्नेहाभिवंदन !!!

जो के मारा मां तथा प्रकार नी योग्यता मुज वड़े देखाती नथी के जे आप धारी रह्या छो. तथापि जो ते आपने हितकर लागे तो जेम सुख उपजे तेम प्रवर्त्तो !

प्राय मारुं हाल मां अन्यत्र विचरवुं तुरत मां संभवतुं नथी. साधना ने योग्य आ क्षेत्र छे जेथी निर्ममत्व भावे अधिक रहेवा संभव देखाय छे. बीजी अव्यवस्थित गुफाओ ने अत्रस्थ भावुको दुरस्त करी रह्या छे, जे साधको ने उपयोगी नीवड़शे.

मुंबई थी अत्र आवतां प्रायः ६०० माइल नो विहार छे. तेना बे रास्ता छे–१ मुंबई थी रेल्वे लाइन यावत् महेमदाबाद-कपडवंज मोडासा-डुंगरपुर थई केशरीआजी अने त्यांथी उदेपुर थई ने अत्र अवाय छे. जे मार्ग कठिनतम छे गौचरी-पाणी दुर्लभ प्रायः अमुक प्रदेश मां छे· जेनी कपडवंज थी सामान्यतः शरुआत थाय छे. बीजे रेल्वे लाइन थ्रू आबू, त्यांथी जो नानी पंचतीर्थी मारवाड़ नी फरसवानी भावना होय तो ते फरसता यावत् मोटी पंचतीर्थी मां घाणेराव अने घाणेराव थी देसूरी नी नाल थई अत्र आवतां प्रायः ३०।३२ माइल नो रस्तो हशे· जेमां प्रथम ना करतां अधिक सरलता छे. प्रायः गौचरी पाणी मां क्वचित् ज विकटता छे अतः आ बीजो रास्तो सूरत-भरुच-अहमदावाद-मेसाणा-पालनपुर-आबू यावत् राणी पर्यंत (जो पंचतीर्थी न जवुं होय तो अने जवुं होय तो पण) थ्रू रेलवे लाइन छे. वच्चे नो ६० माइल अन्य मार्ग (आ तरफ नो) छे मारवाड़ जंक्सन थई आवतां रेलवे लाइन ज छे परन्तु चक्कर छे· घाटकोपर थी देवेन्द्रसागरजी पण आपवत् भावना सेवे छे· जो आप संतो नो तथा प्रकार नो उदय होय तो मैत्री भावे जे यथाशक्ति सेवा थई शकशे ते करवा आ सेवक संकोच नहिं करशे पछी तो एनो जेवो उदय, जो के एने अन्य क्षेत्रीय भावुको निज निज क्षेत्रे आकर्षवा मथी रह्या छे तथापि एने वर्तमान मां तेओ नी पूर्त्ति अशक्य छे, प्राय साधक ने अकाले प्रसिद्धि ए खरेज बाधक छे. आजे तथा प्रकार नो ज जोग थवा मांड्यो छे. भाविभाव ! आप कृपया जाहेरात नहिं करता. जो परमार्थलक्षी साधुओ होय अने आपवत् परिणति होय तो तेमने रोकवानो मारो इरादो नथी. परन्तु साधन अही आस-पास ना क्षेत्रो मां विचरवुं तेओए स्वीकारवुं पड़शे· मेवाड़ भूमि मां साधुओ नी बहु खप छे. आ गाम मां मंदिरमार्गी बहुज अल्प छे एकाद बे साधुओ थी अधिक पोषण अत्र असंभवीय छे आप जेवो ५० साधु-मण्डल एकत्र थई अत्र मेवाड़ देश पर कृपा करे तो स्व-पर उपकार थाय. परन्तु छे विकटता. घाटकोपर श्री मिठुभाई नी संगति कर्त्तव्य छे. प्रभो ! उचित सेवा फरमावशो. इति· ॐ आत्मभावे नमस्कार सह विरमुं छुं.

सहजानंद

(पत्रांक २३)

ॐ नमः

हवामहल
चारभुजा रोड मेवाड़
२-१२-५०

परम कृपालु मुनिवर भगवंतो !

आप उभयनुं कृपापत्र मल्युं व्यतिकर सर्व जाण्यं. जिनकल्प अने स्थविरकल्प, व्यवहार अने निश्चय, ज्ञान मार्ग अने क्रिया मार्ग तेमज मार्गानुसारित्व अने अनुभवप्रधानत्व ओ उभय श्रेणिओ मने सावी—जमणी आंखवत् सम्मान्य छे, सत्कार्य छे, स्वीकार्य छे; अने तेज प्रकारे प्रवर्त्तवा-प्रवर्त्तावंवा भणी लक्ष छे जी. एमां थी एकके नुं नथी एकान्ते खण्डन या मंडन-परन्तु "ज्यां-ज्यां जे-जे योग्य छे, तहां समजवुं तेह। त्यां-त्यां ते-ते आचरे. आत्मार्थी जन एह। (आत्म-सिद्धि)

मोकलसर कन्दरा निवास प्रसंगे स्थविर कल्पमां व्यापेला टी० बी० (क्षय) रोग ना निवारण लक्षे अति-अति विचारायुं हतुं. गुर्वादि साथे तत्सुधारणानी भावना व्यक्त करवामां आवी हती; परन्तु ते भगवंतो ने रोग युक्ता ज गमी गयेली होवा ने कारणे तेओथी तेमां सहकार ने बदले असहकार ज अपायुं 'जेहने पिपासा हो अमृत पाननी, केम भांजे विषपान ?" आवा हेतु थी साधना मां विघ्नभूत एवा सामुदायिक बन्धनो थी मुक्त थवा, अने प्राथमिक प्रस्तावो थी पण बे कदम आगल वधवा, चार वर्षीय दीक्षा समय ना एकज ओघा ना संबंध ने पलटाववा ना प्रसंगे, अलक्ष खुमारी थी मयूरपिच्छ-रयहरण ना संबंध नो प्राथमिक उदय थयो. सूत्रो ना योगोद्वहन प्रसंगे मयूरपिच्छ-दण्डासन शा माटे रखाय छे ? ते भले तो उपर नी छीत रासो. तेनो भाव तो दिगंबर संस्था थी-भिन्नत्व दाखववा पूरतो ज छे. जेम काला-लालपात्र, अगंथिया-सगंथिआ दसिआ. विगेरे खरतर तपानुं स्व-स्व संस्था जन्य कानून छे तेम, ते कांइ सिद्धान्तिक कानून न गणी शकाय. ते भगवंतोए जो विरोध न कर्यो होत, तो ओघनिर्युक्ति पिण्ड-निर्युक्यादि तेमज बृहत्कल्पादिके वर्णित कमलखण्डादि नो रयहरण राखवा मुज परिणाम हता, आतो *ताणा खचथी श्रीजो मार्ग काढ्या विना मने छूटको न हतो. अत्यारे मारी मान्यता एकान्ते तेज राखवा* भणी नी नथी. परन्तु आहारादिवत् एषणीय उपधि ना ग्रहण भणी छे. सूजतो जे मली जाय ते ग्रहवो, ए कांइ मार्ग उल्लंघन नथी, परन्तु मार्ग बहुमान छे. प्रभो ! करपात्रित्वादि परिणति-हालमां जे वर्ते छे ते मात्र अप्रमत्तत्व नी सिद्धि ने अर्थे जेमां मने प्रमाद नुं अल्पत्व प्रत्यक्ष अनुभवाय छे. बीजी पण जे कांइ प्रवृति मने उदय मां वर्ते छे. ते बे अरसपरस रूप छे. असहाय भावे मार्ग ना अजाण हतां, आगल वधवा ना कोडे, ते विना छूटको नथी. आ काले न थाय न थाय एवा नपुंसकत्व ने हृदय मां स्थान नथी. दिगंबर श्वेताम्बरो ना पदाग्रहो एकान्तवाद थी पर थई. साक्षीत्व भाव भजी, उभय अंशो मांथी सार-सार शोधी, ते निज जीवन मां वणी मध्यम श्रेणी ने जन्मावबा माटे नुं आ प्रयाण छे. एम मुज वर्तन विषे समजवा योग्य छे मात्र श्रवण थी या अनुमान थी कोई नी हृदयधारा पकड़ी शकाती नथी. मारुं ज अनुकरण बीजाओ करे तेवा पण मुज परिणाम नथी. बाह्य व्यवहार नुं कांइ मोक्ष मार्ग मां प्रधानत्व

नथी· माटे ज पंदर भेदे सिद्ध गण्या. केवल आभ्यन्तर मार्ग ज संसार-मोक्ष नुं निरूपण छे. मोक्ष मार्गे संचरतां जो कोई अजाण्यो मार्ग पूछे तो तेने अदंभपणे उचित प्रत्युत्तर आपी, निज प्रयाण मां खोटी न थवा भणी नो लक्ष रहे छे. भूतकालीन युगवरो तरफ थी मने आ जन्मे थोड़ा वर्षो पूर्वे "तूं तारुं संभाल" ए मंत्र मलेलुं छे. तेने लक्षमां राखीने प्रवृत्ति थाय छे. हजी गुरु बनवा नी योग्यता के भावना हृदय मां देखाती नथी. मात्र जगतनुं दासत्व ज प्रिय पणे गमे छे. अन्यनी जवाबदारी तो जेमां गुरु बनवानी योग्यता होय याने जे गुरुत्व पदे प्रतिष्ठित होय तेना ज शिरे होइ सके. परमहंस दशा पर्यंत ते मुझ थी छिववा-स्पर्शवा योग्य नथी. ३-१२-५०

आप महात्माओ ने म्हें कांइ आमंत्र्या न्होता, तेम छतां आपनो तथा प्रकार नो आग्रह जाणी मात्र निष्कारण करुणाभावे आपना हृदय ने संतोषवा खातर, दिशासूचन पणे पूर्वे जणावायुं अने जणावाय छे. परमहंस दशा पर्यंत मने असंग योग हितकर छे. अने आप पराणे वाझवा आवो ते केम सहेवाय ? अलवत्त मार्गदर्शक तरीके इशारो करी देवाय. पण आपतो पोतानी साथे ज चालवा नो मुसाफरी मां आग्रह धरावो ते आपथी पाछल रहेला तो पालवे, परन्तु आपथी आपनी दृष्टिए आगल चाली गएला ने अने ताकीदे निर्णित स्थले प्होंचवा ना कामी ने केम पालवे ? जेनो खयाल शांत भावे कर्त्तव्य छे जी. मोकलसर कंदरामां एक मुनि माटे तेवी दया खातां अमुक समय पर्यंत पाछा हटवुं पड्युं हतुं तेम छतां तेनी अयोग्यता ना कारणे तेनाथी पण लाभ न लेवाइ शकायो. मानार्थी-मतार्थी के जड़ार्थी ए त्रणे मांथी एक भणी नुं वलण जे हृदय मां होय ते हृदय मां आत्मार्थीपणुं केम टकी शके ? साधकोए सौथी प्रथम पोताना हृदय ने आत्मार्थी बनावी लेवो जोइए. मात्र मुख थी आत्मार्थी बनीने बणगा फुंकवा मां शो लाभ ? जगत थी छूटवा जतां ते सामो पकड़वा ज दौड़े, ए जगत नो स्वाभाविक क्रम-नियम छे. परन्तु आत्मार्थीपणु जेमां होय ते तेवा लोभ ना लाभ भणी अलेप ज रहे. कसोटी ए चढ़ीने जे नापास थाय. तेवाथी आत्मार्थ न सधाय. आवा कारणो थी ज आनंदघन बावा ने कहेवुं पड्युं के :—

आतम अनुभव रस कथा, प्याला पिया न जाय ;
मतवाला तो ढही परे, निमता परे पचाय—१

अने ए कथन मां अयुक्तता नो तो संभव होइ ज न शके.

आत्मार्थी बनी ने अनुभव श्रेणीए चडवा ना अत्रुट लक्षे जो कोई पण साधक मुज कने लाइन दोरी मागशे, तो प्रतिसेवा ना लोभ थी अस्पृश्य रही, अदंभपणे तेनी योग्यतानुसार जे कांई मारा थी सेवा बनशे ते करी छूटीश, परन्तु हूं मारा मार्ग-प्रयाण मां तेनी दया खाइ ने मोह-दया ने तो नहिं ज सेवुं. भगवान महावीरे पण तेज क्रमे १२॥ वर्ष गाल्या हता. ते दरमियान कोई ने तेओए उपदेश आप्यो के कोई ने शिष्य बनाव्या न्होता, ते छतां पराणे शिष्य बननारा ने तेओ शा माटे रोके ? मोहदया नुं स्वरूप हजु आप भगवंतो ना ख्याल मां आव्ये ज हशे. समजी लेजो के आपनी जाण मा अनुभव श्रेणी भणी नुं वलण जे प्रकारे छे, ते प्रकार थी तेनुं स्वरूप कांइ जुदूं ज छे. शब्दज्ञानिओ कहे छे तेम ते नथी. पुस्तको

थी पण ते अनुभवाय तेवो नथी. दीवा थी ज दीवो थवा योग्य छे तेम पामेला थी ज पमाय छे. प्रभो !

भगवान देवेन्द्र ! मने राज मार्ग नो कांई विरोध नथी, अने आप मानो छो तेवुं तेनुं स्वरूप पण नथी. मने चालु वेश व्यवहार थी घृणा नथी पण तेनी ओथे सेवाता दंभ थी घृणा छे. तेथी हुं परेज करूं छुं. अंतर शुद्ध करी ने जो मारी पासे मुसलमान के अन्य धर्मावलंबी आवे तो तेमना वेशादि भणी मारूं लक्ष नथी. मारूं वलण आत्माभिमुख छे बाह्य व्यवहार तो कर्माधीन छे तेथी शो लाभ के शी हानि ? सांप्रदायिक पद्धतिए आप मारी साथे रहेवा चाहो छो तेनो मारा थी स्वीकार थई शके तेम नथी. मात्र आप आपना चालु व्यवहार मां रहो, आत्मार्थी बनी स्वतंत्र पणे निज जीवन ना सारथी बनी ने जो दिशा सूचन मांगो तो ते बनते मुज थी आपनी योग्यतानुसार बतावाय. परन्तु हुं आपने मारी साथे राखवा नी जोखमदारी उठावी शकुं तेवो हाल मारी परिणति नथी, बोजा तो दूर रहो, आ शरीर नी पण जोखमदारी उठाववा मां हुं कायर छुं त्यां पछी अन्य शरीरधारिओ नी तो वातज शी ? आम बाबत छे प्रभो ! हवे आपने समाधान नी खातर आटलुं लखाण बस थशे. भगवान सूर्य नारायण नो सेवा मां रहो अने वैराग्य परिणति ने वधारो, तोय खोटुं न गणाय. कषाय भाव ने काढ्या विना अनुभव मार्ग मां आपथी टकवुं अशक्य प्रायः छे. माटे हे मुनिवर भगवंतो ! आपने जेम सुख उपजे तेम प्रवर्त्तो ! अत्र मंदिरमार्गीओ ना भावना युक्त मात्र ४ घरो छे. जे मारवाड़ थी आवेला छे. बाकी ना चारेक सामान्य भावना वाला छे. गाम मां ८ कंदोई अति गरीबी-प्रधान दशा ए मंदिर ना भाव वाला छे. थोडाक वैष्णवो मांथी पण गोचरी भावना राखे छे बाकी तो अहिंनी ओशवाल प्रजा मां तेरापंथिओ नुं राज्य प्रवर्त्ते छे—ते कारणे अत्र अधिक साधुओ नी पोसाण न थाय. अने मने जे भूमि मां साधना-सिद्धि नी वृद्धि उदय मां छे तेमांथी आ भूमि नो नंबर चडियातो देखाय छे अटले के केटलाक समय अत्र रहेवाशे. जेथी ट्रेनिंग खातर आप लोक आवो महीनो-बेमहिना तालीम लई ने आसपास विचरो शको एवा स्थानो पण छे. पाछा चार छ मासे मल्या अने पाछा आस-पास विचर्या एम थई शक्या योग्य छे जो. मंदिरमार्गीओ नी जेमां संख्या पण अधिक छे गुफा विगेरे नो जोग पण थई शके तेवा गामो १०।२० कोश मां छे. अटले आपनी साधना मां कठिनता नहिं आवे. साधना पण थाय लाइन दोरी पण मलती रहे ने लोकोपकार पण थाय तेम छे मात्र आपना शहेरी विलासी-मोह-कीर्त्ति-मोह छूटवो जोइए. फेर मरूं ने भगवान् सूर्यनारायण! आपने मारपोछोया के लंगोटिया बनवानी जरूर नथी. मात्र आत्मार्थी बनवानी ज आवश्यकता छे प्रभो ! माटे जेम सुख उपजे तेम प्रवर्त्तो, सुज्ञेषु किं बहुना ? उतावल थी लख्यं छे, लेखन दोष नी क्षमा इच्छी वंदनादि सह विरमुं छुं.

ॐ सहजानंद आनंद आनंद

हे काम ! हे मान ! हे संगउदय ! हे वचन वर्गणा ! हे मोह ! हे मोहदया ! हे शिथिलता ! तमे शामाटे अंतराय करो छो ? परम अनुग्रह करीने हवे अनुकूल थाओ ! अनुकूल थाओ !! (श्री म०)

(पत्रांक २४)

ॐ नमः

चारभुजा रोड

भक्तवर,

१३-१२-५०

अत्र आववा संबन्धी उक्त पत्र पछी तुरतज भगवानजी भाई ना कार्ड मां लखी जणावेलुं याद हशे आपने तो अशांतताज प्रिय छे. हवे पछीना म्हारा अनुष्ठान मां पत्र व्यवहार थई शकशे नहिं. जेना आवशे तेना पाछा मोकली देवाया आवशे. आथी कोईए नाराज न थवुं जोइए. कारण के अमने जे कर्या विना छुटको नथी. मननी फरियाद करवी नकामी छे। घणी वखत समभावाइ लखाई चुक्यो छुं-न समझो तो भावीभाव.

'ज्ञान विना न लहे शिव मारग, ध्यान विना मन हाथ न आवे' (चिदानंद)

ॐ सहजानंद

(पत्रांक २५)

चारभुजा रोड, मेवाड़

२६-२-५१

सरल मधु

प्रभु आपने सदा पोतानी पासेज बोलावी रह्या छे. मात्र तमारी ज खोटी छे जगत ना मोटा स्वप्न मां पोताना मानेला मायिक प्रपंच संबन्धिनी उँघमांथी जाग्रत थवाय त्यारे ज प्रभु सन्मुख जवाय ते विना प्रभु ओलखाय ज नहीं बालक जेम माता नी गोदमां सूई गएलो होय तेने स्वप्न मां जाणे पोते माता थी विखूटोपड़ी गयो होय अने तेथी विरह सहन न थतां माता ने मलवा माटे रडा रोल करतो होय अने तेवुं विरह दुख क्यारे टले ? तेम तमारो प्रभु विरह जनित दुख छे ते क्यारे टले ? ज्यां सूधी ऊँघ छे ज्यां सूधीज बालक ने माता नो वियोग देखाय छे. वास्तविक पणे वियोग छे ज नहीं, जो निद्रा मांथी जागी जाय तो पोते तो माता नी गोदमां ज छुं एम जाणी शके तेम तमो जाग्रत दशामय दृश्यमान जगत जनित मोटा स्वप्न मांथी जागो तोज तमने जणाय के अमे तो प्रभुनी ज गोदमां छीए. अधिक शुं लखुं.

ॐ सहजानंद आनंद आनंद

(पत्रांक २६)

ॐ नमः

चारभुजा रोड (मेवाड़)

२६-३-५१

श्री वाफणा जी

साधन मां आगे कूच करो, जेने समझ नथी पड़ती एवो विकल्प थाय छे तेज आत्मा कांइ रूपी नथी. जे देखाय ए पोते देखवा वालो प्रत्येक प्रसंग मां अनुभवायज तेवा अनुभव स्वरूप एवा, पोताना आत्मा ने समझवा मां शी कठिनाई ? पोते क्यां गुमाई गयो छे के जेने शोधवो पड़े छे !

आत्म भावना ना अविच्छिन्न अनुसंधान वड़े अनुभव स्थायी थाय छे एटले आत्मा आत्मा रूपे परिणमी कृत कृत्य थाय छे।

माजीसा, चंचल बेन, शिक्षिका तेमज श्री मीठु भाई आदि वधा आनंद तरंग मां डुबकी लेय छे। पुखराजजी तेमज लालचन्द कपूरचन्द वाला ए भक्ति भाव मां मग्न छे तत्र सर्व ने धर्मलाभ।

ॐ सहजानंद

(पत्रांक २७)

प्रिय भक्त मण्डली

चारभुजा रोड
४-४-५१

आपनुं कृपालु पत्र मल्युं-आप भक्त जनोनी कृपा विना परमात्म कृपा पण दुर्लभ. कारण के परमात्मा सर्वथा प्रकारे भक्तो ने ज अधीन होय छे. भक्त ना हृदय मन्दिर मां परमात्मानुं ज सदा स्वयं प्रकाशमान होय छे त्यां अज्ञान अन्धकारमय संसार नुं तो अस्तित्वज न होय जे हृदय मां माया नुं साम्राज्य प्रवर्त्ततुं होय त्यां नियमा परमात्मानुं वसवाट न होय, जेम अन्धकार अने प्रकाश बन्ने एक ज स्थान मां साथे न रही शके. तेम परमात्मा अने संसार माया पण एकज स्थाने साथे न रही सके जेना हृदय मां माया होय ते भक्त न होय. हरीजन न होय. तेने माया ऊपर प्रेम होवा थी प्रभु ऊपर न होय. ज्यां प्रभु प्रेम न होय त्यां संत प्रेम पण क्यां थी होय ? माया ना देखावटी सुख नी लालसा वालाओ पण जोके प्रभु-संत प्रेम बाहर थी बतावे पण तेथी न तो प्रभु रीजे न संत पण रीजे माटे हे भव्यो ! अंतरमांथी माया ना प्रेम ने बाली जाली फुंकी तेनो दहाड़ो पवाड़ो करी हृदय ने शुद्ध करो तेथी परमात्मा ने वसवानुं योग्य हृदय थशे. परिणामे प्रभु संत प्रसन्न थई पोतानुं आनंद तमने आपशे-तमोने आनंद सागर मां डुबवी देशे तमोने पोता रूप बनावी देशे मात्र तमो माया नो संग छोड़ो-माया ना माटे शा सारू रोवो छो. माया ने रोवुं होय तो प्रभु नी, प्रभु ना साचा आनंद नी इच्छा जती करो. शरीर कुटुंब ए सौ प्रभु ना छे तमारा नथी. तेनी फोकटनी चिंता न करो प्रभु नी चीज प्रभु संभाले छे नाहक नो भार वहनार दुखीज थाय छे. माटे प्रभुना चरणे सर्वस्व अर्पण करी अचिंत बनी जाओ· दुखी तो ते जणाय के जेना हृदय मां प्रभु मात्र प्रभु ने मलवानी तालावेली होय. माया ना गुलामो तो सुखी कहेवाय दुखी नहीं तो पछी दुख नो ढोंग छोड़ी देवा मां नुकशान पण शो ? व्हालाओ ! जरा माया ने पीठ आपीने प्रभुनी सामा तो जुओ. प्रभु तमने अपनाववा तयार नो य प्रतीक्षा करी रह्या छे, प्रभु भणी पीठ राखी ने पछी पोकार करो के मने प्रभु दर्शन नथी आपता. ए तो पोतानोज मूर्खता गणवा योग्य छे. प्रभु तो तमारी सामेज छे. जरा आंख उघाड़ी जोवो तो खरा।

सर्व ने आत्मभावे अभिवंदन सह विरमुं छुं ॐ सहजानन्द आनंद आनंद

(पत्रांक २८)

ॐ नमः

चारभुजा रोड
१४-४-५१

हे जीव ! जाणवा नी जोवा नी इच्छा न कर, कारण के मुक्ति नो मारग दुनिया नी दृष्टि थी उलटो छे. जोवा जतां ते न देखाय अने जोवा नी इच्छा थी विराम पामता ते देखाय. तूँ तारा माटे जोवा जाणवानी दोड़ा दौड़थी हे जीव, विराम पाम। हे जीव तूं ठरी ने ठाम था बीजुं कइं न कर.

ॐ सहजानंद

(पत्रांक २९)

ॐ नमः

चारभुजा रोड
२५-४-५१

परम महात्माओ,

आपनुं कृपापत्र मल्युं। प्रभु आपनी निर्मल सेवा करवानी घणी-घणी भावना छता जुओ तो खरा भगवान ते शा सारु स्वीकारता नथी. भगवान ने तेमां श्रेय लागतुं हशे कारण के भगवान कोई ने पण अश्रेय कहे ज नहीं भले आम वालुड़ाओ ने ते न समजाय तो पण भगवान मां विश्वास राखवो उचित ज छे. हे भगवान् तारे जेम रखवानुं होय तेम भले राख, पण ते प्रमाणे रहेवानी शक्ति तो मने आप. शुं तुं आटलुंय नहीं सांभले के तारी मरजी.

वालाओ सरल मधुकर, आ शरीर ने दीक्षा आपनार साधु मंडली १० ठाणा अहिं थी ३० माइल पर आवनार छे, जे आ शरीर ने मलवा वहु इच्छा धरावे छे तो शुं आ शरीरधारीए तेने मलवा न जवुं जेथी (अधमाधम अधिको पतित सकल जगत मां हुं) आवती काले ज अहिंथी विहार करी चारभुजाजी देसूरी थई घाणेराव जई ते महात्माओ ना चरण मां शरीर झुकावी भवो-भव ना अपराध नो क्षमा मांगु तो शुं नाना वाप नो थई जावुं ? माटे ज ओ सरलानंद ! हुं जाऊं छुं, तुं खुशी थी आनंद मां मधुकर भमरा ने रमाड़जो हो त्यां गया पछी जेने ज्यां लई जावुं होय तेनें कोण रोकी शकनार छे. प्रभु ना भरोसे नाव हंकराय छे. कोपीन कमंडल पीछी वालो वावो आ चाल्यो तमो आनंद मां रहेजो. सर्व ने आनंद मां राखजो एज आनंद मां समाईजशो हो वा० पू० वा० वापूजी भाई वहेनो सर्व ने मारा दण्डवत पहोंचाड़जो मने हवे थोड़ा टाइम कागल लखवानी लखो मोकलवा नी तकलीफ न लेजो हो. कारण के हुं विहार मां होऊं तेथी नहिं मले तमो पण अलख वालाओ रहो छो ते शुं मने खबर नथी, माटे तमो ने मारा साष्टांग दंडवत हो।

ॐ सहजानंद आनंद आनंद

(पत्रांक ३०)

ॐ नमः

२१-७-६१

जे वैराग्यशील साधक सर्व समा असत्संगिओ नो संग सदाय तजे छे. स्त्री या पुरुष ना शरीर माथे शवनो जेम वर्ते छे. दुखना कारणभूत विषयो ने विष समान जाणे छे. ते परमहंस आ भवसागर ने लीला मात्र थी तरीजई सिद्ध मुक्त थाय छे.

स्वप्न मां जोवाएला इन्द्रजाल समा आ जगत मां कोण कोनो शत्रु छे अने कोण कोनो मित्र छे. कोण कोनो बाप छे अने कोण कोनो पुत्र छे. कोण कोनी पत्नी छे अने कोण कोनो पती छे. कोण कोनो गुरु छे अने कोण कोनो शिष्य छे. आ रहस्य ने जे जाणे छे तेने शो दुख आजे जेना माटे हंमिये दीण काले तेना ज नाम ना छाजीया लेवा पड़से तो पछी हमणुं ज ममत्वुं छोडवा मां शुं वांधो महापुण्य धन आपी ने तेना थई आ देह नोका ने खरेदी तो ते भागी न जाय त्यां सूधी मां हे जीव ! तू आ दुखमय भवसागर ने तरो पार था पार था. विलंब न कर, कारण के आ देह नौका क्षणभंगुर छे तेनो भरोसो शो ? द्रष्टा ना द्रष्टा बनो, दृश्य ना नहीं. दृश्यो नो देखवा थी दृश्यो नी अनेकता थी ज्ञान खंड खंडपणे अनेक धाराओं मां वेंचाई जई अखंड एवा आत्मस्वरूप ने जाणवा मां समर्थ थतुं नथी. आत्मा ने जाणवा माटे ज्ञान पण अखण्ड जोइए तो ज्ञान प्रवाहो अखण्ड बणी चालवा मां आवे तो ते अेक रूपे अखण्ड थई अखण्ड स्वरूप मां अखंडानंद आपनारू थाय छे ज्ञान द्वारा अखंड स्वरूप ने वलगी रहेवुं तेज धर्म नो त्याग तेज दुख नो कारण अने धर्म नो सेवन ते दुख नो नाश ए विना दुख मुक्ति नो बीजो कोई उपाय नथी. हे मुमुक्षुओ ! प्रारंभ मां कालकूट विष समा पण परिणामे अमृत समा अेवा धर्म ने ज सेवो धर्म ने ज सेवो आ सिवाय नुं जाणेलुं सगलुं भूली जावो शीघ्र भूली जावो कारण के जे बधुं अधर्म ज छे. अधर्म विष बडे भले प्रारंभ मां सुखाभास भोगवो परन्तु हे आर्यो परिणामे तो सर्वे नरक ज भोगवो पडशे माटे साकीदे समजी ने समाई जावो । ॐ सहजानंद आनंद आनंद !

उदासीनता ना कारणे जवाब मां थयेला विलंब बदे हुं सर्व मुमुक्षु नी अंतर भावना ने पगी ज दीनता थी वारं वार खमावी अभेद नमस्कार सह विरमुं छुं . बधाय भावुको ने आ पत्र अनेक रूपे ॐ व्यक्तिगत पणु मल्ये समजवुं. बधाय मली ने मनन करवुं. व्यक्तिगत पणे कोई ने पण हाहाणु मां पत्र न आपवां एवो भाव छे. कारण के तमे साधको सौ एक रूप छो. अद्वैत छो. त्यां भेदाभेद शुं पक्षा-पक्ष शो ?

हवा महेल मां राजमाता चोमासु पधार्या छे. मने सिवाणा वाला सियाणे लई जवा माटे गत अमावस्या पूर्वे आवेला. महाराज श्रीजिनरत्नसूरिजी आदि (लब्धि) मुनिजी नो पण त्यां चोमासो छे. बुद्धिमुनि ठा. ४ जोधपुर छे. पण अहिंथी लोकोए त्यां जवा मां अंतराय कर्यो जेथी आ तन रहेवायुं सर्व ने आशीर्वाद

ॐ सहजानन्द

(पत्रांक ३१)

ॐ नमः

चारभुजा

२१-७-५१

भक्तवर सर्व सत्संगीओ,

क्या इच्छत खोवत सब. है इच्छा दुखमूल।

जब इच्छा का नाश तब; मिटे अनादि भूल। (श्रीमद्‌राजचंद्र)

सर्व इच्छाओ ने काढी नांखो· ज्यां सूधी इच्छा हशे त्यां सूधी श्रेय प्राप्ति न थाय. इच्छारहित कामना रहित निष्काम भक्ति वड़ेज भगवान मले छे· ज्ञान ने पण इच्छो नहीं परन्तु मात्र ज्ञानी नी आज्ञा मां तन्मय थाओ. ज्ञानी नी आज्ञा पालन रूप भक्ति वड़ेज ज्ञान निर्मल थाय छे. तेज ज्ञानी नी भक्ति छे. ज्ञानी आत्मा छे. शरीर नहीं: आत्मा साधक ना हाथ मांज छे बाहर नहीं, माटे लक्ष ने हृदय मांज जमावी ने प्राप्त परिस्थिति नो सदुपयोग करो. हृदय आरसी एक लक्षी बनतां ज शुद्ध थशे· ज्यां सूधी मैल छे त्यां सूधी तेमां प्रतिबिंब केम पड़े? माटे प्रथम हृदय ने मांजवा रूप अविच्छिन्न स्मरण करवानी लय एक क्षण पण मूको मा. काम पड्ये आरसी स्वच्छ थाय, मांजण पणा थी मुक्त थवाशे, सर्व ने एज नमस्कार पूर्वक विनंती छे.

ॐ सहजानंद आनंद आनंद

(पत्रांक ३२)

ॐ नमः

चन्द्रभागा गुफा

चारभुजा रोड-मेवाड़

२२-१०-५१

प्रिय भगवान सरलानंद

जे अनित्य छे जे असार छे अने जे अशरण रूपे छे ते आ जीव ने प्रीति नु कारण केम थाय छे ते बात रात्र दिवस विचारवा योग्य छे. जगतविषय ना विक्षेप थी स्वरूप भ्रांतिवड़ेविश्रान्ति पामतुं नथी. अनंत अव्याबाध सुखनो अनन्य उपाय स्वरूपस्थ थवुं तेज छे. ज्ञानीना वाक्य ना श्रवण थी उद्धसितथतो एवो जीव चेतन जड़ने भिन्न स्वरूपे यथार्थ पणे प्रतीतिकरे छे· अनुभवे छे. अनुक्रमे स्वरूपस्थ थाय छे. यथास्थित अनुभव थवा थी स्वरूपस्थ थवा योग्य छे. दर्शनमोह (भ्रान्ति) व्यतीत थवा थी ज्ञानी ना मार्ग मां परम भक्ति समुत्पन्न थाय छे. तत्व प्रतीति सम्यक् पणे उत्पन्न थाय छे. तत्त्व प्रतीति वड़े शुद्ध चैतन्य प्रत्ये वृत्ति ना प्रवाह वले छे शुद्ध चैतन्य ना अनुभव अर्थे चारित्रमोह आत्मस्थिरता संकल्प विकल्प व्यतीत करवा योग्य छे. चारित्रमोह चैतन्य ना ज्ञानी पुरुष ना सन्मार्ग ना नेष्टिक पणा थी प्रलय थाय छे असंगता थी प्रमाद गाढ अनुभव थवा योग्य छे. केवल अन्तर्मुख थवानी सत्पुरुष नो मार्ग सर्व दुख

भय नो उपाय छे. पण ते कोईक जीव ने समभाय छे. महत्पुण्य ना योग थी विशुद्ध मति थी तीव्र वैराग्य थी अने सत्पुरुष ना समागम थी ते उपाय समजाया योग्य छे. ते समजाया नो अवसर एक मात्र आ मनुष्य देह छे ते पण अनियमित काल ना भय थी ग्रसित छे. त्यां प्रमादथाय छे ए खेद अने आश्चर्य छे. ॐ

(पत्रांक ३३)

ॐ नमः

चन्द्रभागा गुफा
पारभुजा रोड (मेवाड़)
सं० २००८ कार्तिक सुदि ४ सांजे.

प्रिय भक्तवृन्द !

आ मूनाजी बराबर छे. भिक्षावृत्ति तो करपात्र थई जे शक्य होय तेज चालू छे. वच्चे जे प्रसंग कोई व्यक्ति ना अनुकरण पणे हतुं ते बंध छे. विहार ना दिन तो चौमासी पछी सुद्धा ज छे. क्यां अने क्यारे ? एतो उदयाधीन वात छे. तेनी आपण ने चिन्ता शुं करवी. जे क्षेत्र ना अन्न जल लेवा ना बाकी छे अने तेनो काल पाक्यो हशे तथा अनुसार जवाशे अने रहेवाशे.

. साधन मां जे कान्ता मैया प्रमाद दोषनी नडतर बतावे छे तेनुं कारण दुख नी ओछास छे. माछला ने जल नो विरह जे थाय छे ते साचुं दुख छे. ते दुखथी प्राण नी पण ते परवा करतो नथी तेवा दुखी साधको ने प्रमाद सतावी शकतो नथी. माटे जेने आगल वधवो होय तेमणे सुख आपी ने दुख खरीदी लेवुं पडे छे. सुख लालसा ज प्रमाद सेवरावे छे. आ वात मनन करवा जेवी छे. ते सांभली ने विचारशो·

चंचल ज्योति एक दिवस रहा हता. ज्योति उपर उपसर्ग थयो तेज भक्तो नी परीक्षा भक्तो ने तो तेवा उपसर्ग थाय ज. ते पण तेना हित माटे. तेम भगवानजी भाई ने पण सह कुटुंब तेवोज प्रसंग जाणवा योग्य छे. एकंदर ते हितकर ज छे. समजण जोइए समजजो.

ॐ सहजानंद आशीष

(पत्रांक ३४)

ॐ नमः

पारभुजा रोड गुफा (मेवाड़)
सं० २००८ कार्तिक शुक्ल ४ सांजे

(कान्ताबेन को दिया)

आप भावुकोनी निर्दोष भक्ति ने मारा आत्म भावे अगणित नमस्कार छे. वारंवार अनुमोदन करुं छुं. आप लोको मने दादाणु बोलावी रह्या छो ते आपने माटे उचित छे. मने पण ते भणी कांई तिरस्कार नथी, ते क्षेत्र भणी राग द्वेष नथी पण द्रव्य क्षेत्र काल भावे जेवो उदय होय तेमज सौ सौ नी प्रवृत्ति थाय छे. आ मर्म न समजवा थी जीव अनेक कल्पनाओ कर्या करे छे जो दादाणुनाज अन्न जल लेवा नो समय आवी रह्यो हशे तो तेवा संयोगो बनी रहेशे. पहेला दादाणु कोण तेड़वा आव्युं हतुं ? जे पद्धति ते काले

हती ते पद्धति हाल नथी ए न्यायथी सहज एकाएकी भावे विचरतां डाहाणु आववुं अशक्य प्रायः छे. गुजरात भर मां प्रायः मताधीनता अधिक छे. गच्छवासिओ तो आ सीन जोइने प्रायः भवा चढ़ावे जोके तेथी आ जीव गभराय तेवो नथी पण शरीर निर्वाह अन्न जल विना सम्भवे नहीं. अने तेने गुजरात मां आ ढवे जो के भाग्य मां होय ते समभे पण ते अग्नि परीक्षाए. आम वावत छे एटले सामान्यता थी आ एक कारण विहार ना असंभव नुं समजाय छे. जो के ते माटे मने भय नडतो ज नथो, मात्र गच्छवासिओ विचारा आ जीवना निमित्त थी फोकट ना कर्म वांधे ते सम्बन्धी करुणा आवी जाय छे. ए मुख्य कारण होय एम जणाय छे. दुखो नो तो सामनोज करवो छे. तेम ने आवकारक छेज ते तो हितकर छेज. पण आपना जीवन वड़े बीजाओ कर्म ने वांधी ले ए संभालवुं रह्यं, आ विचार समजावाथी आ प्रथाए गुजरात मां विचरवानो भाव ओछो छे के ज्यां साधुओ पण घणा छे. ज्यां साधुओ ओछा छे अने जनता ने भूख छे एवा बीजा घणा क्षेत्रो छे ते भणी विचरवा थी स्वपर अधिक लाभ थाय एवो मारो ख्याल छे. ट्रेन मुसाफरी नो तो भाव नथी लोक निंदा नुंज कारण छे. एटलुंज नहीं पण बीजा घणा प्रपंचो दोषो वधे. बीजा ओछी बुद्धि वाला तेनुं भावी मां अनुकरण करवा लागी जाय माटे ते इच्छनीय नथी आ विगेरे विचारो जे तमे मनन करशो तो जाणशो के अमे आग्रह करीये छीए ते यथार्थ नथी. तमने तो वातो ज करवी छे, ए प्रमाणे जीवी ने वताओ त्यारे खवर पड़े के केटली—थाय माटे सौ सन्तोष मनावी आत्म साधन मां लाग्या रहो. एज प्रार्थना सौने आशीष सह विरमुं छुं.

ॐ सहजानन्द

(पत्रांक ३५)

भगवानजो भाई

प्रिय आनंदघन! "त्याग विराग न चित्त मां, थाय न तेने ज्ञान
अटके त्याग विराग मां, तो भूले निज भान"

शरीर भाव छूटवुं ते त्याग कहेवाय छे, आत्मभाव रहेवुं ते विराग कहेवाय छे

शरीर भाव छूटी ने आत्म-भाव मां आव्या विना ज्ञान थई शकवा योग्य नथी. परम सत्संग विना आत्मभाव, शरीरभावनी यथार्थ समजथवा योग्य नथी. असत्संग टल्या विना परम सत्संग पामवा योग्य नथी. ज्यां सूधी असत्संग नो उदय छे त्यां सूधी तेनी माटे व्याकुलता हृदय मां प्रगटवा थी अनिवार्य छे. व्याकुलता ए हृदय मंदिर मां रहेला शरीर भाव हुं मारुं लाववा मां प्रवल अग्नि तुल्य अनन्य अमोघ साधन छे. व्याकुलता वड़े शुद्ध थएलो हृदय मन्दिर ज आत्मज्ञान राखवा माटे नुं पात्र कही शकवा योग्य छे. पात्र थया पछी संत कृपाए सहज आत्मज्ञान हृदय मां प्रगटवा योग्य छे.

व्याकुलता नो लेशन मातेश्वरी सरल मधु कने थी आपने प्राप्त करी शकवा योग्य छे. विना संकोचे ते स्वीकारवा योग्य छे.

ॐ आनंद

(पत्रांक ३६)

ॐ नमः

धारभुजा

२२-६-५१

मस्तराम, (मोहनलालजी छाजेड़)

पत्र मल्युं. तमो लखो छो के भक्ति करुं छुं पण हाल फल थतुं नथी आ दृष्टि तमारी साची नथी. फल थतुं नथी एम तमे कया रीते जाण्युं जोइजो तेम तमारी बे वरस उपरनी दशा अने आजनी. जो तमारे आगल वधवुं होय तो तमो फल तरफ दृष्टि न आपो। निष्काम भावेज प्रत्येक श्वासोश्वासे स्मरण कर्याज जावा, स्मरण विना बीजुं कोइ ख्यालज मन मां न लावो, तमने जे ज्ञान जोइए छे ते तो भक्ति पायेज मलवानुं-त्यारे तमने अधूरी भक्तिए ते पाकुं फल जोवुं छे एज असमजता छे तमो ज्ञान न इच्छो. मात्र भक्तिज इच्छो. एज करो बीजी कल्पना छोडी दो ॐ

सहजानंद

स्मरण– अनुभव करेली वस्तु याद आवे तेनुं नाम स्मरण छे।

२२-६-५१

पू० मोहनभाई.

मारो पोष्टकार्ड मल्यो हशे. आजे अत्यारे शनिवार बपोरना ३ वाग्या छे, पत्र लखी रह्यो छुं-अत्यारे पू० गुरुदेव उपर थी तापनी कृपा उतरी गई होय एम जणाय छे. केटलाक गढ सीवाणा ना भाइयो बेहनो तेमज अहमदाबाद थी आवेल छे ते एज.

आपनी फरियाद जो रोज सत्संग थाय तो अवश्य मटे. बपोर ना वांचन रोज चालु हशे तेमां आप भाग लो तो बीजा पण आवे. न आवे तोये आपनुं तो कार्य थाय (श्रीमद् राजचन्द्र ना वचनामृतनुं) वाचन रोज करवा थी खेद जे वारंवार थाय. छे ते न थाय, एम आ सेवकनो अनुभव छे जी. सौने कुशल इच्छो.

सेवक मीठूभाई

(पत्रांक ३७)

ॐ नमः

चन्द्रभागा गुफा

धारभुजा रोड (मेवाड़) २२-१०-५१

सहजानन्द ने कागल.

सर्व थी सर्व प्रकारे हुं भिन्न छुं. एक केवल शुद्ध चैतन्य स्वरूप परमोत्कृष्ट अचिन्त्य सुख स्वरूप मात्र एकान्त शुद्ध अनुभव स्वरूप हुं छुं. त्यां विक्षेप शो. विकल्प शो. भय शो. खेद शो ? बीजी अवस्था शो. शुद्ध शुद्ध प्रकृष्ट शुद्ध परम शांत चैतन्य हुं मात्र निर्विकल्प छु. निज स्वरूपमय उपयोग करुं छुं. तन्मय थाउं छुं ॐ

जेने कोई प्रिय नथी जेने कोई अप्रिय नथी जेने कोई शत्रु नथी जेने कोई मित्र नथी जेने मान अपमान लाभ अलाभ हर्ष शोक जन्म-मृत्यु आदि हूं नो अभाव करी शुद्ध चैतन्य ने विषे स्थिति पाम्याछे, पामे छे. अने पामशे तेमनुं अति उत्कृष्ट पराक्रम आनन्दाश्चर्य उपजावे छे. देह प्रत्ये जेवा वस्त्र नो सम्बन्ध छे तेवो आत्मा प्रत्ये जेणे देह नो सम्बन्ध यथातथ्य दीठो छे. म्यान प्रत्ये तरवार नो जेवो सम्बन्ध छे तेवो देह प्रत्ये जेणे आत्मा नो सम्बन्ध दीठो छे. अबद्ध अस्पृष्ट आत्मा जेणे अनुभव्यो छे ते महापुरुषो ने जीवन अने मरण बन्ने समान छे. इति

श्री परम कृपालु देव सर्व ने भक्ति भावे दण्डवत्

ॐ सहजानंद आनंद आनंद

अभण भगवान हरद्वार जी जाइ ने सीधा अहिं आव्या छे. वधाने नमस्कार लखावे छे. पुखराजजी पण प्रणाम जणावे छे. ॐ नमः मामा आवी ने गयाहशे. मोहनभाई ने पत्र वंचावशो.

वेनना शरीर विलय सरल मधु सर्व मे वंचावशो.

(पत्रांक ३८)

चन्द्रभागा गुफा

चारभुजा रोड (मेवाड़) २८-१०-५१

चैतन्य परागे गुंजायमान प्रिय मधुकर

संवेग रस भरपूर तारु प्रेम मय पत्र मल्युं. बेटा. जेने प्रेमलक्षणा भक्तिनुं भान न होय ते भले ने मने मारा आत्मा स्वरूप ने शोधवा अहिं तहिं भटके हुँ एवा भटकणाओ ने तेनी दिव्य दृष्टि विना थोड़ो ज देखाऊं. तेओ भले ने आ पंच भौतिक पिण्ड ने भेटे. तेथी कांइ मने भेटवा पणुंनथी कारण के हुं भौतिक पिण्ड शरीर नथी पण तेथी तद्दन जुदो 'सच्चिदानंदघन' आत्मा छुं. ज्ञान दृष्टि विश्व व्यापक होवाथी आखुंय विश्व मारा मय ज मारा मांज समायलुं छे. जेम आरसी मां अन्य पदार्थो समायला छे तेम. तथापि ते आखुं य विश्व जड़ होइ ने मारा थी तद्दन अस्पृश्य छे. अलग ज छे. ज्ञान दृष्टिए विश्व व्यापक होवा थी दरेक शरीरधारी मां चैतन्य रूपे हुंज छुं. जेओ पोतानी हृदय आरसी स्वच्छ करे छे तेने ज हुं हृदय मंदिर मां दर्शन आपुं छुं. बीजाओ जे हृदय ना आंधळा छे तेओ भले कठिन मां कठिन व्रत तप जप करे तोय तेने हुं प्राप्त थई शकतो नथी हूं मात्र प्रेम लक्षणा भक्ति वड़े ज प्राप्य छुँ जो तने अने सरलानंद ने सहज स्वभावे सिद्ध छे. ते भक्ति वड़े तम लोकोए-तमारा हृदयमंदिर मां केद कर्या छतां य हजु धराता नथी अने वारंवारे ओलंभा आप्या ज करो छो. भले बापू तमारा निष्काम प्रेम ने ते छाजे ज माटे तमारा पवित्र हृदयथायने अभेद प्रेमे अगणित नमस्कार छे. बेटा, आपणे जुदा छीए ज क्यां के जेथी मलवा ने मथीए माटे डाह्याथई ने प्रभुनी रजा मां राजी रहो एज हाथ जोड़ीने विनय प्रार्थना छे. आपण ने देह मिलन ना अभाव मां विरह योगी तरीके राखवा ज प्रभुनी मरजी छे, शुं प्रभु आपणुं अहित करे ? तो शा माटे तेथी नाराज थवुं ? समजणाने अधिक शुं कहेवाय बेटा, पेला सरलानंद ने

मारा वती रोज दण्डवत कहजे पूज्य बा बापूजी भाई भाभी बहेनो वि० ने भक्तिनी सारी सारी वातो संभळावजे अने सदा आनंद मां रहेजे. शिक्षिका कान्ता मैया ने याद्री. आपनी श्रीचंचल वि० मुंबेथी अत्रे पधार्या छे. श्रीपुखराजजी वि० आनद मां छे. आ शरीरने डाह्याणु ना माछलाओ नी गंध पसंद न होवाथी ते तरफ आवया तैयार नथी तो तेमां मारु शुं चाले ए स्वतंत्र छे. ज्यां पणे ठीक जणाय त्यां चले जाय. हवे अहिंथी पण प्राय ए श्रीगणेश करे एम लागे छे ज्यां ना अन्न जल लेवा नां बाकीहशे त्यां जशे छोने गमे त्यां जाय आपण ने शी चिन्ता। ॐ सहजानंद

गंगाबाने दण्डवत कहेजो बीजा पण जे याद करे तेने उचित कहेजो.

ॐ सहजानंद आनंद आनंद

भाई मुखलाल जेम उपजे तेम प्रवर्त्तो अ'' के सलाह सम्मति वगेरे संबंधी नुं मारे बधु काम श्रीमीठुभाई ने सोंपेलु छे माटे त्यांथी जे सबारे सलाह नी पूर्ण करी लेवी छे. हुं तो मारे आधीन नथी जेम राखनारो राखे तेमज रहेवा समजवा. ॐ सहजानन्द

(पत्रांक—३९)

(चारभुजा-मेवाड़)

सं०२००८ का० सु०

प्रिय भक्तवृन्द

माया भणी जे जीवनुं वहालप छे तेज जन्म मरण करावया वालो संसार छे. ते सद्गुरु ना उपदेश ना आशय ने आधारे माया पति निज सत स्वरूप भणीढले त्यारे ज साधक जीवननुं नूतन वर्ष नुं प्राथमिक दिन गणाय.

(तेवा नूतन पारमार्थिक जीवन मां आप) सर्व भक्त वृन्द नो प्रवेश हो एज नूतन वर्षाभिनंदन. आशीष साथे सौ स्वीकारशो. ॐ सहजानंद

(पत्रांक—४०)

(माता कान्ता)

' ' ज्योति नी भावना भक्ति मां आगल वधे एम जणाय छे. जो के तेने अहिं रहेवा मां अंतराय कर्म नडयो छतां ते बीजो दृष्टिए लाभदायी नियडशे. महात्मा सरल मधुकरादि सर्व भक्तवृन्द ने आत्म भावे अभेदवंदन!

मान कहेवा नो मतलब शुं छे? एक श्रद्धा जिनने श्रेष्ठ मां श्रेष्ठ करवानुं आटलुं प्रतीति विश्वास अने श्रद्धा कोई स्वरूप ने पामेळा पुरुषे कहेतुं होय तो ते गर्व जवु उतारी देवुं रोम रोम मां आ मोक्ष नो रस्तो छे. मारो समज आछे. अनेनो (काल स्वभाव नियत पूर्वकृत पुरुषार्थ) वही वतावी.

'ॐ सहजात्म स्वरूप परम गुरु' मंत्र रात दिवस धून लगाववी.

सद्गुरु नी आज्ञा मा बोध मा स्मरण मां चिंतवन मां मन ने जोडेल राखता अभ्यास बल वधे छे. अने क्रमेकरी ते आज्ञा ना विचार मांज अेकतान थतां आत्मा स्थिरता पामे छे.

सत्देव—अेटले राग-द्वेष ने अज्ञान जेना क्षय थया छे ते.

सद्गुरु—अेटले मिथ्यात्व ग्रंथी जेनी छेदाई छे ते.

सद्धर्म—अेटले ज्ञानी पुरुषो ए बोधेलो धर्म छे ते.

ज्ञानी नी आज्ञा दृढ निश्चय करवो. वृत्तिओ बाहर जती क्षयकरी अंतर्वृत्ति करवी अवश्य छे ल.

रोगादिक - ए शरीर नी पीड़ा छे.

रागादिक—ए आत्मिक पीड़ा छे.

(पत्रांक—४०)

ॐ नमः

मन नी भूमिका ७ छे.

भूमि १ लिंग | काभी कामिनी कंचन संसार मां कंचन
,, २ गुदा | मन रह्या करे आ त्रण संसार भूमि मां रहे त्यारे मन
,, नाभि |

,, ४ हृदय आरसी- चैतन्य जागृति थई चारे बाजू ज्योति दर्शन थाय
ईश्वरी दर्शन थाय. नीचे नी भूमिकाए जाय नहीं।

,, ५ कंठ. मन अविद्या अध्ययन नीकली जाय अने तेने इश्वरी वात सिवाय
तेनो संभालवा नुं बीजुं कइ मन थाय नहीं. सिवाय कोई करे तो
त्यांथी ते उठी जाय. अज्ञान अविद्या निकलो जाय.

,, ६ कपाल गन चढे त्यारे रात दिवस इश्वर ना दर्शन थाय।

,, ७ मस्तक. मन जाय त्यारे समाधि थाय छे.

		व्यवहार थी	कर्म थी	
ज्ञान	जाणवा मां आवियो	रास्ता जाणवो	ज्ञान थी जाणवो	खावाथी भूख दूर थाय
दर्शन	निश्चय थयो	निश्चय करवो	निर्णय करवो	पेट भराय ने शक्ति आवे
चारित्र	वर्त्तन करवो	क्रिया करवो	क्रिया करवी	क्रिया करे तो भूख लागे नहीं

जबसे सच्चे गुरु का सत्संग रे
तबसे न गमे संसारी प्रसंग रे
परम कृपालु छवि दृग छलके रे
मन मरकट तब कहीं नहीं भटके रे
चलते फिरते प्रगट प्रभु देखुं रे
मेरा जीवा सफल तब लेखुं रे
मैं प्रभु में, प्रभु मुझ में समावुं रे
सहजानन्द समाधि रमावुं रे

(पत्रांक ४१)

ॐ नमः

चन्द्रभागा गुफा
चारभुजा रोड (मेवाड़)
२००८ कारतक शुदि ११

भक्तवर,

सदाय अभय रहो !

श्रीमद् राजचन्द्र वचनामृत आवृत्ति सातमी तथा अर्द्धशताब्दी ग्रन्थ आ बे ग्रन्थ श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम मु. अगाश स्टेशन बोरीया-बडोदरा (वाया आनंद) आ अड्रेस थी वी. पी द्वारा मंगावजो। योगदृष्टि समुच्चय सविवेचन डा. भगवानदास मनसुख भाई मेहता M.B.,B.S चौपाटी रोड मुंबई-७ आ ग्रन्थ मुंबई थी उपले अड्रेस थी अथवा मेघजी हीरजी ने त्यां थी मेलवी लेजो (समयसार प्रवचनसार नियमसार) आ त्रणे ग्रन्थनुं संस्कृत टीका सहित नुं श्री हिम्मतलाल जेठालाल कृत (गुजराती अनुवाद ठे० जैन स्वाध्याय मन्दिर, ट्रस्ट सोनगढ़-सौराष्ट्र) जो के ग्रन्थो मां गहन विषय छे. छतां अभ्यास चले तेमां थी घणुं जाणवानुं मलशे. श्रीमदना वचनो तो तारवेला माखण तुल्य छे. ए वचनो नो जेम जेम पान थशे तेम तेम अपूर्व भावो स्फुरशे. योगिराज भरथरी कृत वैराग्यशतक नुं हिन्दी भाषांतर कलकत्ता थी बाहर पडेलुं पण मुंबई थी मंगावी मनन करवा जेवुं छे. शान्तसुधारस भावना, अध्यात्म कल्पद्रुम विगेरे अनेक ग्रन्थो आत्मा ने जागृति आपवा मां मदद करी शके पण आ बधु वाचन कोई अनुभवी नी नीश्रा मां होय तो मजा पड़े. तेवा आश्रय ना अभाव मां शुद्धभावे केवल आत्मार्थी थई ने आ शास्त्रो नुं मनन पण अपूर्व बलदायक थाय छे परम प्रेमे माहकला पोता मां उदय थवी जोइए.

(१) हे जीव ! चैतन्य चिन्तामणिरत्न आ तारु आत्म स्वरूप ज वांछित सिद्धिदायक छे तो तारे अन्य परिग्रहनुं शुं प्रयोजन ?

(२) हे जीव, एटलो ज सत्य आत्मा छे जेटलुं ज आ ज्ञान छे. एम निश्चय करी ने ज्ञान मात्र थी ज सदाय संतोष थाय तुं प्रतीति थाव. एटलुं ज सत्य अनुभववा योग्य छे, जेटलुं आ ज्ञान छे. तेज निश्चय करी ने ज्ञान मात्र थी जे सदा तृप्ति थाय. एम सदाय ज्ञान मात्र आत्मा मां रत आत्मा थी संतुष्ट अने तृप्त एवा तने वचन थी अगोचर एवुं सुख थशे (आत्मा मां ठरीने तेनुं प्रत्यक्ष अनुभव कर) बीजाने न पूछ.

ज्ञान मात्र आत्मा मां ज लीन पणे रहेवुं तेना थी ज संतुष्ट थवुं अने तेना वड़े ज तृप्त रहेवुं एज परम ध्यान छे.

सर्व सत्संगीओ ने आत्म भावे अभेद वंदन !

ॐ सहजानन्द आनंद अनंद

(पत्रांक ४२)

ॐ नमः

गेस्ट हाउस, चारभुजा रोड (मेवाड़)

१५-११-५१

भक्तवर,

पत्र मल्युं गई काले विहार करी अत्र आव्यो छुं. हवे ज्यां पगला लई जशे त्यां जवाशे अपरिचित भूमि मां रहेवासे ज्यां पत्र व्यवहार थई सकशे नहीं माटे संतोप राखी श्रीमद् राजचंद्र वचनामृत मांथी वाचन मनन करता रहेजो.

श्री सरल मधुनी संगति थी वधारे विकास थशे माटे प्रसंगे ज्ञान चर्चा करता रहेजो. आत्मा पोते जो के कइं खोवाइ गयो नथी. प्रगट देह देवल मां जाणनार जोनार मौजुद छे. छतां लोको तेने गोतता फरे आश्चर्य छें जो कइं खोवाई गयो होय अने तेने गोतीए तो ते ठीक गणाय।

माटे जो जाणवा इच्छे छे ते तेज छे एम समजी ने तेमां ठरवा राग द्वेपादि ओछां करजो कान्ति, ज्योति, गंगावा वगेरे ने यादी.

ॐ सहजा नंद

"ना सुख काजी पंडितां, ना सुख भूपभयां,
सुख सहेजां आवसी, तृष्णा रोग गयां"

(पत्रांक ४३)

ॐ तत् सत

६-३-५३ (?)

आपनुं पत्र मल्युं पुखराजजी नी जेम डा० आ शरीर मां पण टी० बी० अहमदावाद १९६६ मां वहमावेलुं पण हतुं नहीं खैर होय न होय पण देह धर्म तो विनाशशील छे ज, प्रति समय परिवर्तन पामतुं ज रहे छे, एवा मृत्युधर्मा देह नी चिन्ता करवा थी शो लाभ तीर्थंकर पण जे शरीर ने कायम न राखी शक्या ते शरीर ने आ मूढ जीव शाश्वत बनाववा मथे छे ए केवुं आश्चर्य ? जे काम माटे आ देह मलेलुं छे ते काम आत्म शुद्धि ने पड़ती मूकी आ राखना कोथला समा देह नी कलाकूट मां मलेलुं आयुष्य पुरुं करवुं एमाज शुं मानवता समायेली छे तो पछी पशु अने मानव मां शो फरक! कुटुंब ने वहाने मलेलुं डकैती मंडल मृत्यु वेला शा उपयोग नुं ? आखी जिन्दगी जेनी प्राप्ति मां गाली तो, दुनिया भरनी लक्ष्मी श्मशान नी तैयारी टाणे शा उपयोग नी ? मृत्यु थी बचाववा नथी देह समर्थ, नथी कुटुम्ब समर्थ के नथी धन समर्थ तो पछी मृत्यु ने पण मृत्यु पमाड़नार जे आत्मज्ञान तेनी प्राप्ति मां बचेला आयुष्य नो शा माटे उपयोगं न करवो-खूब मनन करशोजी।

भाई अमारा स्वभाव मां तो आ शरीर राग द्वेष ना भावो तेम ज ज्ञानावरणादि जड़ कर्मो करमो पण अस्त खोटा देखाव पुरता परना पराया भासता होवा थी अमने तेनी चिन्ता नथी तेथो

अचिंत थई ने अमे नो हृदय कमल मां विराजमान सर्व उपाधि थी विमुक्त शुद्ध आत्मा ने एकने ज मतत अनुभवीए छीए, एना विना साचा सुख ना बीजा कोई पण उपाय नथीं; नथीज. होय तो जणावजो तो अमारी भूल अमे सुधारी लईशुं, अधिक शुं भई. तमे शरीर नथी. शरीर ना मालिक नथी, शरीर ना गुलाम नथी, आ शरीर ना आधार पण नथी. त्रणे काल शरीर थी अलग सिद्धानुभव परम शान्त अडग एकाम एक स्वभावमय असंख्यात प्रदेशमय पुरुषाकार सर्व द्रव्य प्रपंच थी रहित भगवान सच्चिदानंदघन आत्मा छो. आत्मा सदा सर्वदा जोनार जाणनार मात्र अनुभव स्वरूप, आत्मा छो. आत्म ओरड़ा मां राखेली रतन दीपक ते कांई ओरडो थई जातो नथी. ओरड़ा थी तद्दन अलग छे. मात्र पोताना प्रकाश थी ओरड़ा ने अने पोताने प्रकाशित करतो रहे छे. तेम तमे शरीर रूप ओरड़ाना ज्ञान दीवड़ा छो. ज्ञान दीवड़ा पोताना ज्ञान प्रकाश थी पोताने अने शरीर मठ ने सदा प्रकाशित करता रहे छे शरीर कोटड़ो ना विनाश थी तमो विनाश पामनारा नथी, नथीज. तमारूं चैतन्य शरीर अजर अमर शाश्वत छे. कोई काले तेनो विनाश नथी ज ता पछी भय शां ? विकल्प शो ? चिन्ता शो देह देवल मां जे विचार करनहारो छे तेनोज एक विचार करी तेमां ठरी जासो, तो मस्त थई जासो मस्त आज टी० बी० नो साची औषध छे. औषध ए कर्या थी, सेव्या थी पछी टी० बी० शोध्याय नहीं जड़े, नहीं जड़े, माटे सावधान !

सर्वप्रिय जनो ने धर्मलाभ

ॐ सहजानंद

(पत्रांक ४४)

ॐ

नमोस्तु वर्द्धमानाय।

पावापुरी ज्ये० शु० ७/२०१०

"देखे न आहार निहार चरम चक्षु धणी एहवा तुम अवदात"

पद्मवि०

प्रिय भव्यात्माओ ! (श्री नाहटा युगल-बीकानेर)

कलकत्ते मोकलावेल कार्ड मल्युं हशे ? भगवान आनन्दघन ना पदो नुं ऐतिहासिक दृष्टिए संशोधन थी संशोधित प्रति नी प्रतिकृति सारा अक्षरे करावी मारा माटे मोकलावशोजी. अने एज कोटी ना अन्य कर्त्ताओ ना अमुद्रित पदो जो ख्याल मां होय तो ते पण मोकलावशोजी.

समयसार-प्रवचनसार-नियमसार तथा श्रीमद् राजचंद्र वचनामृत मां एवुं कोई अलौकिक योग बल छे के ते निवृत्ति क्षेत्रे निवृत्ति काले उत्कृष्ट त्याग वैराग्य सहित जो मनन करवा मां आवे तो आत्म प्रदेश स्थिर थवा मांडे,-सहज समाधि नो प्रगट अनुभव थवा मांडे एवो आ देहधारी नो कथंचित् अनुभव छे. भाषान्तर करवा ना प्रसंगे विशेष मनन थवा योग्य छे. माटे जो अनुकूलता होय तो प्रथम श्रीमद् राजचन्द्र सातमी आवृत्ति नु सांगोपांग हिन्दी अनुवाद करशो तो स्वपर उपकार थवा संभव छे. पछी जेवी आपनी रुचि'''

:

अत्र समाधि छे. जीत (तेन्द्र) विजय त्रण ठाणा विहार गई काले आव्या नुं सांभल्युं छे. अत्र चतुर्मास माटे आवशे. अेटले पांच भिक्षुओ अत्र एकठा थई शुं स्वपर कल्याण करशे ते प्रभु जाणे !

जरगड़ जी अहिं हजु सुधी आवी शक्या नथी. शेष कुशलम्

ॐ सहजानंद आनंद आनंद

(पत्रांक—४५)

ॐ नमः

प्रिय आत्मन् ! (भँवरलाल नाहटा, कलकत्ता)

यद्यपि साधन काल में लेखन कार्य से भी छुट्टी पाना हितकर है, तथापि भावुकों के आग्रह से कुछ न कुछ लिखना ही पड़ता है। यह पेन से तो वैराग्य हो रहा है, अतः श्री मिट्ठू भाई अच्छी पेन भेजने का लिख रहे हैं, जिसके लिये शाही की आवश्यता पड़ेगी जो आपकी ओर से आनी होगी। जो चौमासे में न विगड़ने वाली हो यथा 'पारकर इन्क'।

मुंह में छाले कुछ कम पड़े हैं, इसकी हमें चिन्ता नहीं है।

'प्रज्ञाववोध' भी श्री उमरावचन्द जी के वहाँ से कोई आगन्तुक के साथ भिजवाइयेगा।

सभी प्रियजनों को धर्मलाभोस्तु

ॐ सहजानन्द

(पत्रांक—४६)

ॐ नमः

पावापुरी

ता. १.६.५३ सांजे.

आत्मबन्धु श्री नाहटा जी (श्री अगरचंद जी व भँवरलाल जी नाहटा, कलकत्ता)

"वर्णी-वाणी" भाग बीजो खरे ज मननीय छे आत्म-लक्षी बोध एमां ठालव्यो छे व्यापक दृष्टि छे. सत्य प्रेरणा एमां थी वांचक वृंद ने मली शके.

ज्ञान दर्शन स्वरूप आत्मा मां रमणता एज समाधि मार्ग छे. असलो मार्ग छे. बाकी बधा साधनो एक एनेज प्राप्त करवा कार्यकारी छे.... अस्तु !

अेनो प्रथम भाग जो मंगाव्यो होय तो मोकलावी आपजो. मंजन और शाही (इंक) तो अहिं आ भाई ए आपी जेथी आप तस्दी नहीं लेता.

सतत् अंतर्दृष्टि नो उपयोग कर्त्तव्य छे जी. स्वाध्याय नो एज सार छे. सर्व भावुको ने धर्मलाभोस्तु

ॐ सहजानंद आनंद आनंद

"स्वामि-कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा" सोनराज जी बोथरा को पहुंचा दीजिएगा।

एक प्रेमी पागल का पत्र आया है जो साथ भेज रहा हूँ, मेरे बदले आप ही प्रत्युत्तर दीजिएगा।

(पत्रांक—४७)

ॐ नमः

पावापुरी २-६-५३

(स्वामी नवलकिशोर, बीकानेर)

विरहा विरहा मत करो, विरहा है सुलतान।
जेहि घट विरह न संचरे, से, घट जान मसान॥ १॥
प्रेम पंथ अति ही कठिन, सब ते निवहत नांहि।
चढ़ि के मोम तुरंग पर, चलिवो पावक मांहि॥ २॥
छिनहिं चढे छिन ऊतरे, सो तो प्रेम न होय।
अघट प्रेम पिंजर वसे, प्रेम कहावे सोय॥ ३॥

प्रेम ही सब प्राणियों के पुण्य पथ का द्वार है
प्रेम ही से जगत का होता सदा उपकार है
जिस हृदय में प्रेम का उठता नहीं उद्गार है
प्राणी वह निःसार है वह मनुज भू का भार है॥ ४॥

प्रिय प्रेमी पागल !

कृपा पत्र मिला। परम महात्मा श्री सरल-मधुकर से भक्ति शिक्षा पायी, यही पागलपन का कारण है, अच्छा! बहुत अच्छा! यह भाव भीतर हो पचाना होगा. क्योंकि बाहर व्यक्त करने से इसका माहात्म्य कुछ कम हो जाया करता है, याद रहे. ममता ही संसार है यदि ममता नहीं तो देह स्त्री आदि कोई बंधन नहीं है. अतः ममता को हटाकर ही भक्ति से लगे रहो यही सार है। ॐ आनंद! आनंद! आनंद!

आपका :—सहजानंद-धर्मलाभोऽस्तु!

पागल-जिसका पाप समूह गल गया हो, उसे पागल कहते हैं।

(पत्रांक—४८)

ॐ नमः

पर्यय दृष्टि न दीजिए शुद्ध निरंजन एक रे।

वैराग्य चित्त भगवन्!

(भ. आनन्दघन)

त्रयोदश गुणस्थानवर्ती केवली भगवान का भी द्रव्य मन चपल सुना गया है. जिनका अन्त अंतिम गुणस्थान में ही होता है, किन्तु भाव मन के अभाव से उससे उन्हें भावी-बन्ध नहीं हो सकता अतः भाव मन ही भावी संसार का सर्जक है, द्रव्य मन नहीं।

द्रव्य मन रेकार्डिंग-रील की भाँति जड़ है, एवं उस रील के रेकार्डिंग होने पर श्रोताओं के इष्टानिष्ट परिणाम रूप होने से भाव-मन चेतन है· अपने भाव-मन के नियमन में सभी सदा सर्वत्र स्वतंत्र हैं अतः हमें भाव मन के नियमन के लिये कटिबद्ध होना अनिवार्य है।

तथाविध निमित्त पाकर द्रव्य मन की फिल्म प्रति समय स्टेज पर आ आकर ज्ञानी अज्ञानी सभी को अपनी एक्टिंग दिखाकर विनष्ट होती जा रही है. ज्ञानी को अपने आत्म स्वरूप से भिन्न रूपेण उसकी अटूट प्रतीति एवं जानकारी होने से उसी से उन्हें इष्टानिष्ट परिणामात्मक भाव-मन पैदा नहीं हो सकता. अतएव बिना भाव मन द्रव्य मन रूप नई फिल्म न बनने से भावी संसार का सर्जन नहीं हो पाता फलतः द्रव्य मन की संचित फिल्म का अन्त होते ही वे सिद्ध-बुद्ध-मुक्त परिनिवृत हो जाते हैं।

अज्ञानी अपने आप की एवं उस द्रव्य मन रूप फिल्म की भिन्न रूपेण प्रतीति तथा जानकारी न होने से तदाकार होकर इष्टानिष्ट परिणामात्मक भाव मन प्रति समय पैदा करता ही रहता है, जिससे द्रव्य मन रूपी नयी फिल्म-संतति सदा हरी-भरी, फूली फली बनी रहती है. फलतः उन्हें जन्म-मरण परिभ्रमणात्मक संसार का अंत हो नहीं हो पाता।

उपजे मोह विकल्प थी, समस्त आ संसार;
अन्तर्मुख अवलोकतां, विलय थतां नहि वार ॥ [श्रीमद् राजचंद्र]

निमित्तज काम क्रोधादिक जो जो विकार हमारे ज्ञान दर्पण में नृत्य दिखाते हैं. उन से हमें तनिक भी भयभीत नहीं होना चाहिए क्योंकि अज्ञानतावश हमने वे खिलौने अपनी जेब में संगृहीत कर रखे थे, जिसका अब हमें प्रयोजन नहीं रहा. इसलिये वे अपने आप ही जेब से पृथक हो रहे जान पड़ते हैं, इससे हमें नुकसान ही क्या ? वे कैसे भी अपना नृत्य दिखाते जायें किन्तु हमें जब इनसे खेलना ही नहीं तब हमें कौनसी आपत्ति रही ?. वे मेरे शरीर को जरा भी बाधित नहीं कर सकते हैं. वे मुझसे भिन्न ही हैं, इतना ही नहीं अपितु वे मेरे ही नहीं हैं, खुशी से सिधार जायें ! ॐ ॐ ॐ

मैं तो शरीर किंवा द्रव्य-भाव कर्म से भिन्न ही हूँ
सहजानन्दी-शुद्ध स्वरूपी अविनाशी मैं आत्मस्वरूप...
मैं आत्मा हूँ··· आत्मा हूँ··· आत्मा हूँ···

इसी प्रकार भेद विज्ञान एवं आत्म भावना के बल से चित्तवृत्ति को सतत् अन्तर्मुख बनाये रखने से सभी उदयागत वैभाविक विकारों का पराजय तथा हमारा विजय ही विजय अनुभवों में आ सकता है। अतः धैर्य के साथ हमें वृत्ति-नियमन के अभ्यास पथ पर अकेले ही अग्रसर होना होगा क्योंकि मोक्ष मार्ग स्वाधीन है-पराधीन नहीं।

पर की आशा सदा निराशा, यह है जग जन पाशा;
वह काटन को करो अभ्यासा, लहो सदा सुख वासा;
आप स्वभाव मां रे अवधू सदा मगन में रहना।

निर्दिष्ट पथ के लिए निरंतर सत्संग, सत्शास्त्र अध्ययन, सद्विचार संयम, सर्व संग परित्यागादि पाथेय सामग्री है, जिसके बिना पथिक अपना निर्वाह नहीं कर सकता। यद्यपि आत्म-स्थिरता ही

वास्तविक चारित्र-दीक्षा है, वेष परिवर्तन नहीं, किन्तु उस भाव संयम के लिए द्रव्य संयम अपेक्षित ही है, उपेक्षित नहीं।

द्रव्य संयम पद्धति वर्तमान में बहुत ही विकृत हो चुकी है, जिसका शोधन आवश्यक है। अतः पूजनीया श्री गुरुणी जी म. से विनम्र प्रार्थना है कि अलौकिक पथ पर बिखरे हुए कंटकों का परिमार्जन करने में अपनी शक्ति का सदुपयोग करें जिससे कि आप जैसे निकट भव्य साधकों-पथिकों को व्यर्थ की मार्ग-व्यथा न हो।

चित्त शुद्धि के लिये देशविरतीय एकादश-प्रतिमाओं की शृंखलाबद्ध आराधना आदरणीय है, अतः विच्छेद मानकर उपेक्षा करना प्रमाद है। जिनकी तालीम बिना सर्वविरति ग्रहण केवल बाल-चाल प्रतीत होती है।

दि० श्वे० शास्त्र समुद्र को मंथन कर देश-कालानुसार नवनीत निकाल करके यदि बाल जीवों को प्राशन कराया जाय तो वे अवश्य तुष्ट पुष्ट होकर अगम मार्ग में सुगमतया चलने में सफल हो सकेंगे, सुज्ञेपु किं बहुना ?

भव्यात्मन्! विकृत सुकृत चाहे कैसे भी विकल्प क्यों न आवें, किन्तु घबराओ मत। आत्म भावना की 'ब्रेक' अपने हाथों में ही रखो! निर्विकारता अवश्य प्राप्त हो सकेगी।

आत्मानुभूति के लिए निर्दोष द्रव्य संयम से अभेद होने में प्रमाद क्यों ? मेरी तो अनुमति ही है।

"क्षण एक अविरत होवनी रे, वातड़ी मुख न कहाय" माताजी अनुमति आपिये रे।

ॐ आनंद ! आनंद !! आनंद !!! —(भगवान देवचन्द्र)

(पत्रांक—४६)

ॐ नमः

पावापुरी २०१०

(मोहनलाल नाहटा को श्री गुरुदेव ने स्वयं लिख के दिया)

वर्तमान में जो कुछ मिल रहा है वह भूतकाल का अपना ही किया हुआ है। जो किया है वह अवश्य ही भोगना पड़ेगा। भगवान महावीरजी का चरित्र विचारिए—जो जो उन्हें कान में खीला आदि वे सब पूर्व कर्मों के फलस्वरूप थे। जब तीर्थंकरों को भी भोगना पड़ा तब अपने को भोगने का कोई टाल सकता है ? अतः समभाव धारण करके जो हो रहा है होने दो और हृदय में सिद्धचक्र जी का जाप श्वासोश्वास द्वारा ही अविच्छिन्न जपते रहो। जब लाख जप होने के बाद सब अच्छा हो जाएगा। यह केवल कर्मक्षय के आशय से किसी लोभ की कामना न रखकर करना चाहिए। संसार की प्रतिकूलता ही संसार पार करने में मददगार है। अनुकूलता तो संसार में प्राणी को फँसाती है अतः अनुकूलता मत चाहो……

सुख दुख दोय कर्म फल जाणो; निश्चय एक आनन्दो रे।
चेतनता परिणाम चूके, चेतन कहे जिनचन्दो रे॥

सुख दुख दोनो कर्मों के फल हैं, कर्मों का आत्मा से कोई सम्बन्ध नहीं—आत्मा तो केवल आनन्द स्वरूप है। परन्तु जबतक देह में आत्मभाव है तबतक सुखदुख की परिणति रहती है। अतः शरीर से भिन्न जो ज्ञायक भाव स्वरूप अपना आत्मा है उसे जानो उनका लक्ष एक क्षण भी मत छोड़ो इसीलिए अविच्छिन्न जप में लगावो।

नाद तो २४ घन्टों चालू ही रहता है घंटानाद आदि अनेक प्रकार की ध्वनि हुआ ही करती है इसी तरह दिव्य दर्शन, दिव्य अमृतरस, दिव्य सुगंध, दिव्य स्पर्श भी अनुभव में आ सकता है। परन्तु इन सब को जो अनुभव करता है वह आत्मा है। उसमें जिन्होंने अपनी सुरता लगाई वे हो कैवल्य पद पाते हैं, जन्म मरण से छूटते हैं। सुख दुख के द्वन्द्व से सदा मुक्त होते हैं अत. स्मरण जाप में अपना मन लगाये रखो तो धीरे धीरे सब अनुभव होंगे। धीरे-धीरे अभ्यास होने पर बिना कान बंद किये सुनाई देता है अन्तर्लक्ष होना चाहिए।

ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताणं. ॐ ह्रीँ णमो सिद्धाणं. ॐ ह्रीँ णमो आयरियाणं, ॐ ह्रीँ णमो उवज्झायाणं ॐ ह्रीँ णमोलोए सव्व साहूणं. ॐ ह्रीँ णमो दंसणस्स ॐ ह्रीँ णमोनाणस्स. ॐ ह्रीँ णमो चारित्तस्स ॐ ह्रीँ णमो तवस्स।

हृदय कमल पर सिद्धचक्र की भाव स्थापना करके आँख बंद कर या नाशाग्र दृष्टि होकर लक्ष हृदय पर रख कर श्वासोश्वास द्वारा इसे जपे जाओ। २० माला एक आसन पर गिनो परन्तु बाद में चलते फिरते खाते पोते भो वही मूक होकर जप किया करो और चिन्ता को मन में मत आने दो। व्यवहार के लिये यथासाध्य प्रयत्न करो परन्तु उसकी लाभ हानि से हर्ष विषाद मत करो। समभाव केलवो। यही सच्चा साधन है। परिणाम तो मयणासुन्दरी के कथानक से समझ सकते हो। अधिक क्या? एक पारा के ऊपर नवों पद ऐसे १०८ पारा की १ माला ऐसी २० माला नित्य।

राज दरबार में प्रवेश करते हैं तब वहाँ नौबत नगाड़े, इत्र फुलेल नाज नखरे क्या नहीं होते हैं? परन्तु जिसे राजा से मिलना है उसे इधर उधर देखने से क्या लाभ? राजा से मिलने पर वह सब तो अपनी स्वागत करेंगे ही। अनाहत याने बिना बजाये बजने वाला ऐसे घण्टा, शंख, नौबत, बंशी आदि कई तरह के बाजे एवं गान तान भी स्वतः हुआ करते हैं, जहाँ मन को आराम मिलता है। मन एक जगह रहता है यावत् फिर लय हो जाता है।

हृदय चक्षु खुलने पर दिव्य दर्शन आदि होते हैं। विकल्प न कीजिए, साधना में लगे रहिए, सब साधना से ही होता है। बेकार चिन्ता में वक्त व्यतीत करना पाप है। व्यर्थ चिन्तन, व्यर्थ बकवाद, व्यर्थ चेष्टा से बचने के लिए ही साधना पथ पर चलना हितकर है।

(पत्रांक—४०)

ॐ नमो वीतरागाय

पावापुरी

ता० ५-६-५२

आत्म-बन्धु प्रिय नाहटा युगल!

कृपा पत्र मल्युं. "माय ममायं दुक्खं" तो सुख शाता नो हेतु होवो जोइए ?

शाताशीलता ज अनाराधकता छे. देह चिन्तार्थे तो अनादि काल गाल्यो, तो य वशुं वल्युं नहिं· देह चिन्ता करतां आत्म चिन्ता मां अपायली मदद स्वपर हितकारक छे. माटे आत्म-चिन्ता मां जागृति अपावता रहो· एज प्रार्थना

प्रज्ञावबोध नी साथे सोनगढ़ वालां समयसार-प्रवचनसार (दि० जै० कृत गुजराती अनुवाद युक्त) पुस्तको जो होय तो ते पण साथे लाववानुं श्री उमरावचंद जी ने जणावशो जी. ज्ञानसारनु सेम्पल पण मोकलावशो जी.

नूतन पद रचना माटे नूतन-संगीत ज्ञान नी पण आवश्यकता खरी. जो तेवुं कोई पुस्तक संगीत शिक्षक नी गरज सारे तो उपाय करी-खरीदी मोकलाववा मा आवे तो ए इच्छनीय छे.

स्मरण ध्यान मां जेनु चित्त लागतुं न होय तेने माटे वीतराग श्रुत-परिशीलन चित्त-स्थिरता नुं सर्वोत्कृष्ट औषध छे. अन्य साहित्य थी विराम थये ज वीतरागी शास्त्र समुद्र मां प्रवेशी शकाय छे.

शीघ्रातिशीघ्र आत्मश्रेय केम थाय ए प्रतिपल विचारवुं दुनिया भरनो खजानो मृत्यु वेला शा उपयोग नो ?

सर्व प्रियजनो ने आत्मस्मृतिए यथोचित ॐ आनन्द आनन्द आनन्द

आपनो सहजानन्द

धर्मलाभोस्तु !

आज प्रभाते

[पद—भज मन सहजानन्द स्वशक्ति]

नवलकिशोर जी अहिं आवी गया छे. अहिं रहेवा चाहे छे. छुट्टियो मां भले रहे. इसबगुल नो सत्व मोकलशो तो चाली शकशे—आयंबिल-नीवी मा वापरी शकाय. छालाओ मां आराम छे—जीभ तो माय पवी रहेवानी अन्ते खाख मां जेने मल्युं छे तेनी शी चिन्ता ?

(पत्रांक—५१)

ॐ नमः

पावापुरी

ता० २८-६-५३

[पद - भज मन सहजानन्द स्वशक्ति]

सत्संग प्रिय श्री नाहटा युगल !

तीन पुस्तकें व कृपा पत्र मिला। एक कार्ड श्री भँवरलालजी की हाजरी में कलकत्ते दिया था, जिसका प्रत्युत्तर न मिला। शायद न पहुंच पाया हो। इसी तरह तीन चिट्ठियाँ मिठुभाई की भी शायद चोरी गई मालुम देती है। उक्त चिट्ठी में उपरोक्त पद भेजा था। ......अस्तु।

श्री जरगड़ जी अवतक नहीं आ सके हैं, अमुक कारणवश कवतक रुकना होगा पता नहीं। पुखराज जी को मनाई लिख देने से पर्यूपण में आना चाहते हैं। चारभुजा रोड के समीप से पुरानी प्रतिमा जी निकली है, जो लालचन्द कपूरचंद वाले अपने वहाँ ले आये हैं। दशवीं शताब्दी का एक लेख पद्मप्रभु-विंवपर है "सं० ९९१ प्र० सांडेर श्री यशोभद्रसूरि" प्रतिमा जी भव्य हैं—अखण्डित हैं। चार और जिनविंव और १ अधिष्ठायक भी है—जिनमें से कुछ खण्डित हैं। लेख हैं परन्तु वँचते नहीं ऐसा श्री वस्तीमल जो लिखते हैं। गत षष्टी का मन्दिर जी में प्रतिष्ठा थी, कान्तिसागर २ ठाणा साधु थे—मूलचन्द जी एवं पुखराज जी जोधपुर हैं- पुखराज जी को T.B. की शिकायत होने से।

श्री पुजारी जी को अवतक चिट्ठी नहीं दी है। वीकानेर मन्दिरों में यदि कोई पुजारी की सीट खाली हो तो वहाँ उन्हें ज्वाइन्ट कर सकें तो वहुत अच्छा। सिवाणा से नौकरी छोड़ दी है।

अगास से ब्रह्मचारी जी की चिट्ठी थी। चतुर्मास के लिये आमंत्रण देते हैं। खुद आँख व पैर से कमजोर हो गये हैं। सातवीं आवृत्ति आदि ५ पुस्तक मेरे लिए फ्री पासल से भेजी हैं अव तक मिली नहीं हैं। आ जाएंगी। श्री भँवरलालजी आवं तो अच्छी वात है।

हिम्मतलाल कृत गु० अनुवाद हो वही लाना। और समयसारकी हमें रुचि नहीं है। प्रवचनसार भी नहीं हो तो कोई हर्ज नहीं। कल सव ९ चिट्ठीयों आई हैं, अव जाहिरात वढ़ती जा रही है। यहाँ आने को कई चाहते हैं परन्तु अधिक ठहरने के लिए भोजन व्यवस्था नहीं है। ऐसा नवलकि० के प्रसंग से मालुम हुआ। नवल के दो कार्ड मिले। मना करने पर भी पागलपन छोड़ता नहीं, और राईटिंग के पैर मत्थे का भी ठिकाना नहीं। भैया नवल! यदि तुमसे लिखे विना न रहा जाय तो शुद्ध हिन्दी में शुद्ध राइटिंग से लिखो—पर हमारे जवाव की आशा मत करना—श्रीमद् राज० वचनामृत हा हमारा जवाव मान लेना। ...मंजन के लिये मिली हुई नींव की ट्यूव समाप्त होने आई। व्य० अव्य० ता कर्मानुसार चलती रहेगी। १७ आयंविल वाद पुनः एकाशन चालू करना पड़ा। भला! हीन संस्कारी रसोइयों में शुद्ध-आहार की आशा हो सकती है क्या? यह भक्ति तो दिगम्बर जानते हैं—श्वे० ता वागाडम्बर...ॐ शान्तिः २

आपका—सहजानन्द—यथोचित

(पत्रांक—५२)

ॐ

पाधापुरी

आश्विन शुक्ल १४,२०१०

प्रिय भव्यात्मन् ! (भँवरलाल नाहटा)

आपे मोकलावेल "जैन भारती" ना बे अंक अने एक डायरी-बुक मल्यां. डायरी मां नवुं हाल मां लखाय तेवुं नथी. केम के आप जेवा अनेक भावुको ना दबाण थी 'श्री सरल-समाधि' नुं संकलन थई रह्युं छे तेमां महात्मा श्री सरल ना संस्मरणो अने समाधिमाला आवशे। नोट बुक ना ४४ पेइज लखाया छे. जैन भारती मां छपायला समाधि-शतक मां थोड़ी-क अशुद्धिओ छे. अेतुं नाम समाधिमाला राखी ने म० श्रीसरल ना कंठे समर्पण कर्युं हतुं, तेम करोशुं.

सत्संगिओ ना चालू आवागमन थी आलेखन समय बहु अल्प मले छे. गई काले जावरा निवासी श्री जड़ावचंदजी पगारिआ पण अहि आव्या छे. श्रीमद् राजचंद्रजी ना पुत्री ना परिवार मां थी पण केटलांक भाई-व्हेनो आव्या छे जे आजे पाछा फरशे. श्री सरल नो नानो व्हेन मधु जे पजुषण मां अहि हती ते पाछी हहाणुं जइ ने पिताजी सहित अठवाडीआ मां अत्र आववा भावना सेवी रही छे. पजूषण मां मौन रहेवानी भावना छतां सत्संगिओ ना दबाण थी तेनुं ऋण अदा करवा मौन रही शकायुं नहि जे अत्यारे पण तेमज चाले छे. २॥-३॥ सत्संग मां स्वाध्याय चाले छे. हवे तो धीरे-धीरे जन संख्या अहि वधशे. अेटले बाहरी-शांति गौण थशे।

पर्यूषण बाद प्रभावना मां श्री सरले अनुभव मार्ग नी श्रेणी नो प्रचार करवा मांड्यो छे. जेमां थी घणा भव्यो भावावेशमां आवी गया हता-आवे छे—अने आवशे— सम्यग्दर्शन पाम्या-पामे छे अने पामशे

तत्रत्य श्री जतनजी आदि ने आत्म-स्मरण.

ॐ आनंद आनंद आनंद

—सहजानंद आत्म-स्मरण

(पत्रांक—५३)

ॐ नमः

पावापुरी

[वैद्य कोजमल भीमाजी वाफणा, आहोर को काई]   ९-१०-५३

ॐ सहजात्म स्वरूप परमगुरु

आतम भावना भावतां जीव लहे केवलज्ञान रे

हे जीव ! कहेवा जेवुं तो घणुं तने परमकृपालु देवे कीधुं—पण पुरुषार्थ कर्या विना, तेमानुं कांइपण न सिधुं

न सधायुं. तो मूक ने पारकी पंचात—मंडी पड़ ने आराधना मां तल्लीन पणे जामवा, चेतना ने चेतन मां भेलव ! चेतन मां भेलव ! सत्य कहुं छुं. अंतर मां सुख छे वाहर शोधवा थी मलशे नहिं·

—सहजानंद

(पत्रांक—५४)

ॐ नमः

राजगिर-पटना

२-१२-५३

"आतम भावना भावतां जीव लहे केवलज्ञान रे"

भव्यात्मन् ! (भँवरलाल नाहटा)

कृपा पत्र मिला। प्रायः वीसों पुराने सत्संगी सिवा और सभी अपने-अपने स्थान पर लौट गए। मद्रास गुडीवाड़ा से करीव ६५० यात्रियों का संघ यहां आकर चार रोज ठहर, आज श्री पावापुरी जी की ओर गया. जिसमें श्री ऋषभदासजी आदि मुमुक्षुजन खाससत्संग निमित्त आये हुए थे। इसी कारण से अव तक वह निवृत्ति नहीं मिली जो श्री सरल समाधि के लेखन कार्य में सहायक हो। अतः अव तक एक अक्षर भी न लिख पाया। चौथा पहाड़ की कल यात्रा करके कुछ कानूनन ढंग अपनाया जायगा, जिससे निवृत्ति यदि मिल गयी तव तो लेखन कार्य शुरू कर दिया जायगा, अन्यथा सव यों का यों ही छोड़ कर कहीं गुप्त रूपेण नौ दो ग्यारह कर जाना होगा। ऐसे अनियत ख्याल की वजह श्री अगरचंद जी साव को कुछ रोज पूर्व ऐसा लिख दिया था कि, जवतक मेरी दूसरी चिट्ठी न आवे तव तक आप अपनी मातेश्वरी जी को संग लेकर यहाँ आने का कष्ट न उठावें।

श्री मिठुभाई का कल टेलीग्राम था 'तवियत नरम होने से आने की इच्छा होने पर भी नहीं आ सकता हूं'.

श्री विचक्षणश्री जी की भी एक चिट्ठी पुनः आयी है ।

आप यदि अपनी चित्त शुद्धि शीघ्र करना चाहें तो जाप का अविच्छिन्न सेवन करें। तीव्र व्याकुलता के साथ अविच्छिन्न जप से ही मन स्थिर होकर आत्म भाव प्रगटेगा। श्री भँवरी वाई आदि को आत्म-स्मरण प्राप्त हो ! अव यहाँ पावापुरीवत् सत्संग नहीं रखा है, क्योंकि गुप्त होना है। अतः अधिक प्रचार न करके यहाँ हमें असंगता की वृद्धि में पुष्टि दीजिएगा। वरना संग हमें सहन नहीं होता।

सभी प्रियजनों को आत्म स्मरण. ॐ आनंद आनंद आनंद

—सहजानंद

(पत्रांक ५५)

ॐ नमः

राजगिर (पटना)
१३-१२-५३

"आतम भावना भावतां, जीव लहे केवलज्ञान रे"

भव्यात्मन्! (श्री भँवरलाल जी नाहटा, कलकत्ता)

'श्री चैतन्य चरितावली' के पांच पुस्तक मिले हैं, पढ़कर वापिस कर दूंगा। श्री सरल-समाधि लिखना नये ढंग से प्रारंभ किया है। किन्तु प्रथम पढ़ने की लालसा होने से, अतीव अल्प प्रयास होता है एवं उदासीनता भी काफी बढ़ रही है, क्योंकि असंगता-शुभता और मौनता की प्रतिज्ञा हरदम जागृति दे रही है। न मालूम कब कार्यरूप परिणत होगी।

मोकलसर निवासी ज्ञानसार प्रकाशन में द्रव्य सहायक श्री जसराज जी आपसे मिलने के लिए आये हैं, अतः उचित परामर्श कीजिएगा।

साध्वीजी की पुनः पुनः चिट्ठीआं आती रहती है और जवाब देने की ताकात नहीं। एक पत्र जवाब रूपेण यहाँ से दे ही दिया था। अस्तु।

श्री मिठुभाई तबियत की वजह नहीं आ सके हैं।

सभी प्रियजनों को आत्म स्मरण

ॐ आनंद आनंद आनंद

आपका
सहजानंद आत्मस्मरण!

(पत्रांक ५६)

ॐ नमः

"आतम भावना भावतां, जीव लहे केवलज्ञान रे"

राजगिर-पटना
१७-१२-५३

भव्यात्मन् (श्री भँवरलालजी नाहटा-कलकत्ता)

कल गयाजी की ओर जा रहा हूं। आगे जहाँ पैर ले जायेंगे वहाँ ही सही, मुझे मालूम नहीं, कोई अज्ञात भूमि में जाना होगा।

साध्वीजी की चिट्ठीआं भी साथ भेज रहा हूं। जो उन्हें वापस कर दी जाए, क्योंकि मंगवायी है, उन्हीं का पहोंच पत्र आप लिख दीजिएगा, साथ में विहार समाचार भी।

श्री चैतन्य चरितावली जो रतनलालजी द्वारा जिन व्यक्ति पर आयी थी, उन्हें वापस कर दी है। जो संभालिएगा।

विहार की अचानक प्रेरणा हुई अतः जा रहा हूं। सभी प्रियजनों को आत्म-स्मरण प्राप्त हो।

ॐ आनंद आनंद आनंद

आपका
सहजानंद आत्मस्मरण!

(पत्रांक ५७)

ॐ नमः

गयाजी

२२-१२-५३

"सहजानंदी शुद्ध स्वरूपी, अविनाशी मैं आत्मस्वरूप"

भव्यात्मन् (भँवरलाल नाहटा)

राजगृह से गत चतुर्दशी को एकाकी असंग भावेन विहार करके पूर्णिमा को तीन बजे बाद दि० जैन भवन में अपना जीतेजी श्राद्ध करने के लिए आ गया हूं। जो जीते ही अपना श्राद्ध अपने आपको श्रद्धान्वित नहीं कर सकता, वह मरने के बाद अपना कल्याण कैसे कर सकेगा और दूसरों का भी कैसे श्राद्ध कर सकेगा ? अतः अपना श्राद्ध कर लेना आवश्यकीय है.

प्रायः एक दो दिन ठहर के जहाँ पैर ले जाएँगे, वहाँ चला जाऊँगा. सही कहता हूं कहाँ जाना है, अब तक निर्णय नहीं. संकल्पों का ही अन्त करना है. तब अमुक स्थान का संकल्प क्यों करें, अस्तु !

चाचाजी श्री अगरचन्दजी साब को चिट्ठी आज यहाँ मिली, प्रत्युत्तर दे दिया है. आगे की चिट्ठियाँ व साध्वीजी को भेजने की चिट्ठियाँ श्री जसराजजी को दी हैं. जो आप स्वयं आकर के देंगे या पोस्ट द्वारा भिजवा देंगे.

अब प्रत्युत्तर की चाह नहीं. श्री सरल-समाधि आलेखन समयाभाव से पूर्ण न कर सका, भविष्य पर ही उसे रख कर चला जा रहा हूं.

बड़े चाचाजी साब आदि प्रियजनों को आत्म स्मरण,

आपका

सहजानंद आनंद आनंद आनंद

आत्मस्मरण

(पत्रांक ५८)

ॐ नमः

गुराड़ु-गया

२६-१२-५३

आत्मा हूँ ! मैं आत्मा हूँ ! मैं आत्मा ही हूँ !

आतम भावना भावतां जीव लहे केवलज्ञान रे

भक्तवर (श्री विजयकुमार बडेर)

सदा प्रसन्न रहो ! गत चतुर्दशी प्रातः राजगिरि से विहार करके पूर्णिमा को तीन बजे दिगम्बर जैन भवन गया में प्रवेश किया था. दो दिन बाद वहाँ से श्री नवलमलजी, सुखलालजी एवं श्री साकर मां लक्ष्मी व विद्या भी गयाजी आ पहुँचे थे.

ता० २६ को सन्ध्याको बम्बई से श्री जेनभाई एवं श्री रत्नसिंहजी भी आ गये थे उनका सर्वांगी समाधान करके कल दुपहर बाद २।।५ की गया में अपने आपके पाठ को पूर्ण कर श्री गुरुलाल जी के साथ विहार करके डालगंज-स्कूल में रात को ठहर कर आज यहाँ आया हूँ. आहार ग्रहण के अनन्तर यहाँ से विहार करके आगे बढूंगा. शायद C. P. प्रदेश में जाना होगा.

आपकी इच्छा लक्ष्मीचन्द का समाधान कराने की थी. जो पूर्ण हुई. भाई चन्द के रिश्ते से युगलपरापर साथ रहकर आध्यात्मिक उन्नति में प्रयत्नशील रहना मंजूर करके हर्षान्वित हुए हैं.

बुद्ध गया की भी यात्रा की. बाहर भीतर की कोरणी में सिवा बुद्धिज्म और कोई दृश्य नहीं, यही बुद्ध मन्दिर की विशेषता है.

आप समचित्त रहियेगा. दुःख आपकी उन्नति का ही कारण होगा. मात्र आप कर्तापन के अभिमान को त्याग दीजियेगा. हरदम आत्म स्मृति रखियेगा. परिस्थिति संघर्षमयी होकर ही हमें उन्नतिशील बनायेगी.

पूजनीया श्री मां एवं बहिन श्री तिलकादि को आत्म स्मरण प्राप्त हो. पत्रोत्तर की मुझे अपेक्षा नहीं है. अब वही ध्वनि हरदम ध्वनित हो रही है, जो माता ने अन्तिम सुनाई थी. असंग-मौन और गुप्त. जो कार्य कर हो. यही प्रभु से प्रार्थना है.

ॐ आनन्द-आनन्द-आनन्द

आपका

सहजानंद आत्म स्मरण।

(पत्रांक ४६)

अप्रतिक्रमण :- अतीतकाल मां जे परद्रव्यो नुं ग्रहण कर्युं हतुं तेमने वर्तमान मां सारा जाणवा तेमना संस्कार रहेवा. तेमना प्रत्ये ममत्व रहेवुं ते **द्रव्य अप्रतिक्रमण** छे. अने ते पर द्रव्यो ना निमित्ते जे रागादि भावो थया हता, तेमने वर्तमान मां भला जाणवा, तेमना प्रत्ये ममत्व रहेवुं ते भाव अप्रतिक्रमण छे.

अप्रत्याख्यान :- भविष्य काल संबन्धी पर द्रव्यो नी वांछा राखवी, ममत्व राखवुं ते द्रव्य अप्रत्याख्यान छे. अने ते पर द्रव्यो ना निमित्ते भाविमां थनारा जे रागादि भावो तेमनी वांछा राखवी, ममत्व राखवुं ते **भाव-अप्रत्याख्यान** छे.

अनालोचना:- वर्तमान मां जे पर द्रव्यो ग्रहण कर्यां छे. तेमने सारा जाणवा तेमना प्रत्ये ममत्व राखवुं ते द्रव्य अनालोचना छे. अने ते पर द्रव्यो ना निमित्ते जे रागादि भावो वर्तमान मां वर्ते छे. तेमने सारा जाणवा, तेमना प्रत्ये ममत्व राखवुं ते भाव अनालोचना छे.

प्रतिक्रमण: - पूर्वे सेवेला दोष थी आत्मा ने पाछो वालवो ते.

प्रत्याख्यान: - भविष्य मां [illegible] दोषोनो त्याग करवो ते.

आलोचना: - वर्तमान दो[illegible] ने जुदो करवो ते.

त्रणे काल ना दोषो थी आत्माने अलग राखवो तेज प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान अने आलोचना छे. मात्र मिच्छामि दुक्कडं बोली जवुं ते प्रतिक्रमणादि न कहेवाय.

वर्त्तमान मां उदय पणे वर्तता समस्त प्रसंगो मां साक्षी भावे रहेतां त्रणे काल संबधी दोषो उत्पन्न ज न थाय, आत्मा अदोष रहे. आवुं अदोष जीवन जेनुं होय ते आत्मज प्रतिक्रमण प्रत्याख्यान अने आलोचना छे.

जेम के वर्त्तमान मां राजतिलक नी तैयारी छे त्यां एकदम भगवान रामचन्द्रजी ने वनवास उदय आव्यो, जेने समता थी वधावी लेतां भूतकाल ना कर्मो वर्त्तमान मां भोगवाइ जई भावि संसार ना बीज न थया. जो राजतिलक नो लोभ सेव्यो होत तो नवुं संसार तैयार थात अने भगवान पणे कोई मानत नहीं.

वर्त्तमान परिस्थिति ने साक्षी भावे सदुपयोग करे तेज भगवान-ज्ञानवान ज्ञानी कहेवाय. तेथी उलटुं रागादि सेवीने दुरुपयोग करे ते अभगवान-अज्ञानी-अभागी कहेवाय.

भगवान महावीर ना जीवे वासुदेव ना भवमां शय्यापालक ना दोष नी क्षमा आपी होत, साक्षी रह्या होत तो छेल्ला भव मां कान मां खीला न ठोकाणा होत

प्रत्येक प्रसंग पूर्व कर्मानुसार ज पोता ना वावेला बीज अनुसार ज अनुकूल-प्रतिकूल पणे आवे छे तो पछी तेमां विषम रहेवुं शा माटे ?

ॐ सहजानंद

(पत्रांक ६०) ६-४-५४

प्रियतम भगवान आनंदघन !

आजे कृपा पत्र मल्युं ता०-५ सोमवारे मलेला पत्र नी पुनीत कृपा थी मारे जे दशा अनुभवायी तेनो वेदक आत्माज जाणे अथवा ज्ञानीजनो ज जाणी शके. पण लेख मां न आवी शके. छतां तेनी रूप रेखा आ चार पेज मां लखी हती ते आ साथे बीडुं छुं. ता० १ नु नव सर्जन जे अधरु हतुं ते अने पनागर ना भावुक वृंद माटे तैयार थयेलुं "विरह की सार्थकता" काव्य पण उतावल थी पत्रारूढ करी हुं प्रच्छन्नपणे केशरिया करवानो ज हतो पण तेथी उत्पन्न थएली सुखलाल नी,हृदयद्रावक दशाए मने रोकी राख्यो. नहिं तो आज ना आप ना आ पत्र ना दर्शन नहि थात. वच्चे ना दिवसो मां शारीरिक अस्वस्थता होवा थी नवसर्जन न थई शक्युं हवे तो दिल अने दिमाग घायल प्रायः थइ जवा थी अशक्त जेवो छे.

उक्त पत्र थी आखा जीवन नुं प्रतिक्रमण थई गयुं प्रदेशे-प्रदेशे महावेदना उद्भवी जे हजु सूधी शमी नथी. क्यारे शमशे तेनी कल्पना नथी. पण आनंदावरण युक्त जीवन भणी तो हवे अतीव घृणा थाय छे. काम, मान, संगउदय, वचनवर्गणा, मोह, मोहदया अने शिथिलता झेर जेवा भासे छे. ख्याल मां नहीं तेवा छुपाएला दोषो नजर समक्ष खड़ा थया तेनो कल्पनातीत पश्चात्ताप थयो अने थई रह्यो छे हृदय मां परम दीनता छवाइ गई. कृपालुदेवनी अद्भुत शिक्षा नुं परम महात्म्य अनुभवायुं-तेमना प्रत्येक वचनो नी टंकोत्कीर्णता सप्रमाण हती-ते पुनः दृढ थई.

छगन नो गमे तेत्री भक्ति हो अने कल्याण तो नो अभक्ति हो पण हवे कोई ने कई ममतावयानी के कोइ थी धर्म ना व्हानेय मलवानी रूचि नथीज। रांड मोह दयाएज अत्यार सूधी ठेवे चढाव्या। हवे एनो विश्वास कर्त्तव्य नथी तमारे तेवी दलाली हवे न करवी. दुखी होय तो जहा मुरखं! परन्तु तमारे तेवो मोदो नवी करवो. एक राजमंत्रीए युद्ध मां परास्त थता बाल राजा ने शौर्य उपजाववा ललकार्युं के हे दासीपुत्र! रणक्षेत्रमां पीठ केम देखाड़े छे? आ वचनो सांभलतांज तेनुं क्षात्र तेज मलक्युं. जीवननी परवा छोड़ो अपूर्व शौर्य उपजावी-मरणियो थई एवो धसारो कर्यो के शत्रुओ ने क्षण मात्र मा जीती लीधा घेर जई मत्री ने तेना वचनो नो बदलो लेवो हतो पण एनी माताए त्यारे ए हित वचनो नुं मर्म समजाव्यो त्यारे ते प्रसन्न थयो. तेनीज आज्ञा ने शिरोधार्य करी राज्य नुं गौरव वधार्यु.

तेम आपना प्रथम पत्रे तो शौर्य उपजाव्युं पण आ पत्र ना ढीला धाक्यो थी ते शौर्य ने वेग न मल्यो. नहिं तो आजे आ देह कोई अटवी भणी विदाय थात, सुखलाल के अहिंनी जनता भणी नी मोह-दया आजे पराभव पामत, खैर जे थयु ते थयुं. पग हवे आवुं जीवन नथी जोइतुं. परमहंसता विना आ हंसलो तरफड़े छे. मोती थी टकनार हंसलो माछला वड़े पोतानो निर्वाह केम करी शके। शुं करूं क्यां जाऊं? कई सूझतुं नथी. हताश थई गयो छुं. हृदय अंदर ने अंदर रड्या करे छे. खावुं-पीवुं य भावतुं नथी. पेट पण गेसथी उभरातुं रहे छे. अहिना भावुकोनी भक्ति दिनोंदिन वर्द्धमान थती जाय छे. भोजन व्यवस्था जालवा मां खूब मथे छे ओषध पण भोजन मां लेवरी दे छे. छतांय अंतरनी वेदना केम टली शके? 'घायल नी गति घायल जाणे जो कोई घायल होय'.

जो के आप साथे नो पत्र व्यवहार मारे हितकर ज छे छतां तेटवो हवे थशे के केम, ते सूझतूं नथी बीजो पत्र व्यवहार तो बंद थई गयो ज समजो. सरला नुं समाधि मंदिर चाहे बनो के न बनो-मने तो आ स्वप्नजालथी छूटवा सिवाय कांइ गमतुं नथी. 'मरलचरित्र' जे अधूरूं लख्युं हतुं तेने पण जल समाधि आपवा ना मारा परिमाण वर्त्ते छे. मंदूर थो जमराज जी नी गेरहाजरी मां तेमना माणसोए रेलवे पार्सल नी रसीद अने एक पत्र जे बे तारीख ना रवाने करेला ते आजे मल्या छे। अहिं नो जे मेट्रेस कल्पा-दादप्पा नो आपेलो तेओ नो बेदरकारी थी रजिस्ट्री कवर उपर छ सात अने आठ तारीखनी अहिं नो ग्रण छापो लागेली छे ते आजे नव तारीखे तेमणे आप्युं तेमांय हवे स्टेशन थी पारसल सकुशल आवे त्यारे सही।

जमराजजीए लई जवा माटे काला वाला कर्यां साथे जणाव्युं के आप ज्यां मंगावो त्यां हुं जाते आवी आपो दईश-अथवा हु नहिं दईश तो मारा माणसो पोस्ट पार्सल रजिस्ट्री थी ज आपने मोकले तेवो भलामण करीश. पग तेओ मारवाड़ होवाथी माणसोए पाछल थी गफलत करी. अने अहिना भावुको नो तो बेवश्या थईज। कल्पा वृद्ध माणस छे. तेने तो भाषा मां ओळास नथी पग छोकराओ ने तदन लागणी नथी, माटे आम थयुं. दि० जैन मंदिर नुं मेट्रेस व्यवस्थित छे. थयुं तेज थनार हतुं.

आ पत्र मल्या पछी जो खास प्रयोजन नहिं होय तो पत्र नहिं आपता वनमृगनो परे विचर-वाना परिणाम जो जोर पकड़शे तो सुखलाल नो साथ नहीं टकी शके. त्यार सूधी रहे तो कांइ नड़तर

नथी. स्थानीय भावुको तो अहिंज राखवा मथे छे. जो के अहिं साधना मां बाधा नथी पहोंचतो, छतां मैदाने जंग मां चडवुं होय तो गच्छ-गुफा नो सहारो अप्रयोजनभूत छे. भावो नो वेग तो बहु छे. पण कोण जाणे कयां कर्मोनो दबाण थई रह्यो छे के जे अंतराय पटके छे. अस्तु.

सर्व भावुको थी खमतखामणा. ॐ शान्तिः

घायल—नमोस्तु—

(पत्रांक—६१)

स० अरिहंत नुं शरणुं मने, सिद्धो नुं शरणुं मने, साधुनुं शरणुं मने (हो) जैनधर्म नुं शरणुं मने. हे देव ! तुं आ शुं करे छे ?

दे० हुं वैरनी वसूलात करूं छुं. पूर्व जन्म मां मारी साधना नो भंग करनार सरला ने अन्त समय मां आराधना मग्न जोई ने मारूं वेर जाग्युं. तेनो वदलो लेवा मां तमे वच मां पड़ी अन्तराय कर्यो. मैं तमने प्रगट जणाव्युं के तमो मने तंग न करो नहिं तो हुं तमारी एवी फजेत करीश के तमने जीववुं मुश्केल थशे ! छतां तमे न समज्या अने मने फाववा न दीधो, तो ल्यो हवे-चाखो मजा ! तमने वच्चे पड़वा नो शो हक्क हतो ?

स० शरणागतनुं रक्षण करवुं ए मारी फर्ज हती. शरणापन्न थई ने सरलाए मदद मागी तेथी हूं तमारा पंजांमा थी तेने छोड़ाववा यथाशक्ति मथ्यो तेमां मैं शुं खोटुं कर्युं ?

दे० ते हुं न जाणुं, मने तमे अन्तराय केम कर्यो ? माटे हुँ तेनो वदलो लईश ज !

स० तारे वदलो वालवो होय तो भले ले, आ शरीर नुं तुं गमे तेम कर अने बाल, जाल, तोड़-फोड़ पण मारा निमित्त थी, बीजा जीवो ने तुं सा माटे त्रास आपे छे.

दे० हुँ बीजाओने नकामो त्रास नथी आपतो. तेओए मने जन्मान्तर मां कलंक आप्यो हतो. तेथी लाग जोई ने आ भवे तेनो वदलो हुं लऊँ छुं.

स० वैर नो वदलो शुं वैर थी वले ? एथी तो पोतानो अनन्त संसार ऊभो थाय.

दे० गमे ते थाओ ! तेनी मने परवा नथी. हुं तो वदलो लईश ! लईश !! लईशज !!!

स० धर्म नी-वीतराग मार्गनी - साधुजनो नी निन्दा थशे ते ?

दे० भले थाओ ! तेथीज मैं आ प्रच्छन्नपणे जाल पाथरी छे, के तेथी तमने जीवन भर प्राणघातक दुःख थाय. तमे जगे जगे निंदाओ, तिरस्कार पामो एमां ज मने हर्ष छे. तेथी ज तो मैं पावापुरी-राजगिरि मां तमने पजव्यो अने हजी पण तमने मृत्यु ना मुख मां लई जईश तमने पजववा मां हुँ मारी शक्ति ने गोपवीश नहीं.

स० हा ! दैव ! तारी अकल माया !!!

नैपथ्य० हे जीव ! एथी गभराय छे कां ? ए तारा स्वरूप ने नष्ट करवा समर्थ नथी—नथीज ! जड़पर्याय तो क्षणभंगुर छे ज. तेमां ए नवीन शुं करवानो हतो ?

स० हुं शरीर ना कष्ट थी नथी गभरातो· परन्तु मारा निमित्ते बीजां जीवो ने त्रास थाय. वीतराग मार्ग थी लोको विमुख थाय-धर्म निंदाय साधुजनो भणी लोको शंकाशील थाय, तेनो मने आत्मा ना प्रति प्रदेशे दर्द थाय छे.

नैपथ्य—जगत ना सर्व जीवो पोत पोताना कर्या कर्म नुं ज फल भोगवे छे. सुख दुख अने आयुष्य ए परस्पर कोई थी पण अपाना-लेवाता नथी. तो तुं कर्त्तापणा नो अभिमान केम करे छे. "तुं ताहं संभाळ!" धर्म ए कोई बजारु चीज नथी के जेथी एक बीजा थी निंदाय. एतो वस्तु स्वभावभूत छे. आत्माएं आत्म-स्वरूपे आत्मामां टकी रहेवुं ए धर्म नी व्याख्या छे. स्वरूप थी विचलित थई परभावे भटकवुं एज धर्म नी निंदा छे, ते तो सौ सौ नी स्वाधीन छे. पराधीन नथी. माटे जो धर्म निन्दा थी तुं गभरातो होय तो देहाध्यास थी असंग था. विकल्पो नुं मौन कर, अने स्वरूप मां शमाई ने गुप्त था तो तारी धर्म निन्दा टली जशे. आ सुंदर निमित्त मल्युं छे. तेने सफल कर, तारी प्रतिज्ञा याद कर विलम्ब केम करे छे? उठ! उभो था. चाल मृत्यु-मित्र थी मलवा गहन वन मां. त्यां शरीर ने वृक्ष पंक्ति मां गोठवी दे एने रहेवुं होय तो रहे अने जवुं होय तो जाय. तुं तो तारा उपयोग ने अनुभव, लक्ष अने प्रतीति वड़े तारा ज्ञायक स्वभाव मां स्थिर कर, पछी जो आयुष्य हशे तो जीवीश पण परमहंस विदेही जीवन पूर्वक जीवीश. अन्यथा आ देह कलेवर तो ज्यारे त्यारे माटी मां मलवानुं ज छे. आज थी वीस वष पूर्वे में तने जाग्रत कर्यो हतो. तारा असलो जीवन नो निर्माण क्रम बताव्यो हतो. जगत ना सर्व प्राणिओं क्यां क्यां केवा प्रकार थी फस्या पड्या छे. तेनी आखी फिल्म अन्तर्चक्षुए देखड़ावी ने तने सत्साधन माटे उत्तजित कर्यो हतो, तू तैयार पण थयो छतां बीजाओनी सलाह थी पाछो हटी गयो अने हजी सुधी वहम (?) ने वहम (?) मां गाफल ज रह्यो. तो कांई नहीं जे थयुं ते थयु—हवे चेत! ठगणां वृत्तिओ ना पंजा थी मुक्त था. वीर ना सैनिक थई शूरवीर ना बख्तर सजो आगे कूच कर!

कृपालुदेव ना वचनामृत ने साथीदार बनाव! चाल! कर फतेह! तथास्तु! हुं तयार ज छुं—चालो त्यारे—ॐ

हे वीतराग देव! आपनी आज्ञाओ नुं उल्लंघनकरी स्वच्छन्दपणे में पामरे जे कंइ प्रवृत्ति कीधी करावी अनुमादी होय तेनी हुं त्रिविध त्रिविध क्षमा प्रार्थी छुं. हवे पछी आपना ज पंथे चालवा नुं बल आपो! आपनु आपना कृपापात्र सत्पुरुषोनु अने सद्धर्ममय रत्नत्रयो नुं मने भवाभव शरण हो.

हे श्री आनन्दघन! तमे मने हमेशां हित मां मदद आपता रह्या छो तेथी हुं तमारा स्वरूप ने आत्मा ना अभेद भावे वन्दन करूं छु.

हे मित्र देवो! तमे मने मदद आपवा करतां तेमने ज मदद आपो के जे मारा निमित्त थी पीड़ाता होय! केम के मने तमारी मदद आवश्यकीय नथी.

हे मुक्त अने बद्ध आत्माओ! भूतकाल थी भ्रांतिवश परिभ्रमण करतां आ पामरे राग द्वेष के अज्ञान वश थई ने मन वचन काया ना कोई पण योग अध्यवसाय थी जाणते के अजाणते पोता वड़े के बीजा वड़े आपने असमाधि उपजावी होय उपजती अनुमोदी होय तेनो आत्मीय प्रति प्रदेशे तीव्रतम पश्चात्ताप उपजावी वारम्वार ते पाप नी निन्दा गर्हा करी, परम दीनता थी आप पासे थी तेनी पवित्र अन्तःकरणे क्षमा मांगो निःशल्य थाऊँ छुं. आप मारा सर्व अपराधो (स्वरूप आराधना थी पड्वुं ते) नी क्षमा आपजो हवे पछी हुं कोई ने पण त्रास न थाय तेम प्रवर्त्तवानो खप करीश! मारा प्रत्ये थयेला आपना अपराधो नी हुं विशुद्ध भावे माफी आपुं छुं॰॰॰ॐ शान्तिः

"आतम भावना भावतां जीव कहे केवलज्ञान रे"

भ० आनन्दघन!

जाऊँ छुं. आ पार के ओ पार थवा, भवो भव ना अपराधो नुं मिच्छामि दुक्कड़म्" हवे पत्रादि मोकलवा नी तकलीफ नहीं लेता, आयु निकाचित हशे तो भावी मां मलाशे अने सोपक्रमी हशे तो आत्मा सिवाय नुं बधुं भव प्रपंच भवोपाधि उपाधि नुं त्रिविध त्रिविध त्याग-वोसिरे वोसिरे! सर्व जीवो नी साथे विशुद्ध खामणा हो! ॐ आनन्द आनन्द आनंद

सहजानंद नमोस्तु

(पत्रांक—६२)

ॐ वीतराग शरणं मम

(अगरचंदजी नाहटा) २६-४-५५

१ भीषण नरक गतिमां०

२ जे जे इच्छेलुं पूर्व०

३ उपयोग लक्षणे०

प्रभु!

भगवान आनंदघन द्वारा आपनुं कृपापत्र मल्युं. परंतु तेणे कांइ आपना पूर्ण समाचार आपवा नी कृपा करी नथी. ते अगम्य लिपि वालो खरो ने!

आ पामर नी प्रार्थना उपर ध्यान आपी, आपे जो श्रीमद् राजचंद्र वचनामृत-सातमी आवृत्ति नो हिंदी अनुवाद कर्यो होत, तो आपने तेमज अन्य घणा भव्य जीवो ने चित्त-समाधि नुं कारण ते बनत, परंतु अमारा भाग्य नी मंदता थी ते प्रार्थना संभलाइ नहीं. खेर—

दिशा मूढ एवो आ जीव अपरमार्थ ने विषे परमार्थ बुद्धिकरी पोता ना मान अने मत ने पोषवा, दुनिया भरनी चिंता करी नकामो दुखी थाय छे. जाणे सृष्टिकर्त्ता ज पोते न होय! तेम परकर्तृत्व अभिमान पोषी हाय कलाप कर्या करे छे. छतां पोता नुं धार्युं ते ते पार पाड़ी शकतो नथी. तोय पर कर्तृत्व अभिमान छोडवा ए राजी नथी. अहो आश्चर्य!

कर्म सिद्धान्त ने ठोकरे मारवा ए पामर प्रयत्न करे छे तेम छतां कर्म सिद्धान्त वड़े ज पोते ठोकराय छे. जगत मां सुख दुःख अने आयु ए त्रणे नो आप-ले, परस्पर जीवो करी शके नहीं, एवो परम ज्ञानीओ ए बोधेलो बोध, आ पामर पचावतो नथीः तेथीज बीजा ने सुख-दुख आपवा अथवा बीजा थी पोते सुखी -दुखी थवा नी भ्रांति सेवी, चिन्ता रूपी चिता मां जीवतो बल्या ज करे छे. भला ! चिन्ताग्नि वड़े पोता नी शांति कोई पामी शके के ?

आत्म शान्ति माटे प्रथम करवा योग्य आत्म विचारणाः—

आत्मा नुं अस्तित्व, नित्यत्व, कर्तृत्व, भोक्तृत्व, मुक्त्व, अने मोक्षोपाय आ छ पदो जे न्याय थी सिद्ध थाय तेनी विस्तार पूर्वक दिन रात सतत चिन्तना तेने छोड़ी, अने जे उपली भूमिकाओ के जेमां मन बुद्धि नोय प्रवेश नही, तेनो निर्णय लेवा माटे न्यायाधीश बनवा जाय छे. अथवा अप्रयोजनभूत ऐतिहासिक, सामाजिक विचारो मां पोतानी मति ने खर्ची-खाई ने पूरी करे छे. लोको मां नामना फेला-ववा माटे पोतानी सूक्ष्म कामना माटे मरी फिटे छे. नाक राखवा माटे पोता ना चित्त नी राख करे छे, छतांय नाक कंई रहेवानुं नथी—तेनी तो श्मशान मां राखज उडशे।

बकरा नी माफक शरीर मां में-में करे छे, अने पुत्र पुत्री कुटुंबादि मां मारूं मारूं करी माथो मारे छे. जगत क्रम ने पोतानी इच्छा प्रमाणे फेरववा मथे छे. छतां पोता ने विद्वान-प्रोफेसर आदि थी कोई मान आपे तो ते लई ने मलकाय छे अहो ! मूढता ! अहो !! अहो !!!

बेटा, बेटी शरीर, कीर्ति "ए न्हाय आत्मा. ए तो कर्म छे कर्म अनुकूलता-प्रतिकूलता के संकल्प-विकल्प ते पण आत्मा ने नहीं —आत्मा मां नहीं ए तो बधीय कर्म नी फिल्म छे फिल्म, ए तुं नथी. के ए तारो नथी. मूक ने पंचात तुं तारूं संभालने ! कर्मो तो दिन-रात नी माफक आवे जाय. ते मेमानो स्थायी रहे तेम नथी तेम बधारे आवो, एम बोलाव्ये बधारे आवता नथी. अने आवेला ने धक्को मारी काढी शकाता नथी. ता पछी तेनो शो चिन्ता ? छो ने आवे ! अने रहे ! ए काई तारूं बगाड़ना नथी. तूं तो अक्षर अजर अमर शाश्वत छे. अने ए बापड़ा रूपी जड़ अने क्षणस्थायी छे तो तने मूंजवे के नष्ट करे, ए वात बनवानी नथी. ता पछो तूं शा माटे मूंझाय छे ! गभराय छे ! हायस्लाप करे छे . तू तो ज्ञाता द्रष्टाज रहे—एमां ज तारी शोभा छे ! कर्त्तापणा नु अभिमान मूक ! एज तने दुख दे छे. एज तारो शत्रु छे. ए मिथ्या मोह थी आखुं जगत हणायुं छे. त्रिविध तापे शेकाय छे. भाई तुं हवे चेत. 'प्रमाद छाड़ी जाग्रत था ! जाग्रत था ! नहि तो रत्न चिंतामणि जेवो आ मानव देह निष्फळ जशे'

प्रभु ! आवी गांठो वेलो शिक्षा पोतेज पोताना मन ने आपो तो बहुलाभ थशे. अने जो थणी शके तो सुख दुःख अने आयु ए त्रणे बीजा ने आपी न शकाय के बीजा थी लई न शकाय—एना उपर एक निबन्ध मारा माटे घलनी टपाले लखी मोकलावया कृपा करजो. पण ते लेखनी प्रतिकृति कोई सारा अक्षरे करावी ने ज मोकलजो नहि तो आपनो लिपि यी अमारे नहीं बने. रूपणुं रहेशे.

अने आनंदघनजी कृत चावीसी नी प्राचीन बे प्रतिओ नी प्रतिकृति जे भंवरलालजीए मने पावापुरी मां बतावेली तेनी सारा अक्षरे प्रतिकृति करावी मने भेट मां मलावजो. ते ऊपर कांइक विचारणा मारे करवानी भावना छे.

आप व्यवहारिक चिन्ता थी जरा विसामो लई जो अनुकूलता होय तो बीकानेर छोडो मुंबई आवी ने कोई व्यवस्थित रहेठाण राखी भगवान आनंदघन (श्री मीठुभाई) नो नियमित रात्रे एक कलाक सत्संग सेवी अध्यात्मिक उन्नति पामो --तो आपने चित्त शान्ति नो आ एक प्रबल साधन थवुं गणाशे. अने बाकी ना टाइम मां श्रीमद् राजचंद्र वचनामृत नुं हिन्दी भाषान्तर करो ए फरी फरी विनम्र प्रार्थना छे. एथी आपनी चिन्ता बदलाई ने आत्मा भणी वलशे. एम हुं धारुं छुं.

रात्रे नित्य ताजा एरंडेल तेल नुं आखा शरीरे एक कलाक मालिश अने दिवसे सवारे इसबगुल नो सत्व १ तोलो नित्य घी-साकर मां लई ऊपर दुध लेवा नुं राखतां मगज मां व्यापेली गरमी शान्त थशे. एम मारुं अनुमान छे. बाकी कर्मो तो तीर्थंकर जेवा ने य भोगववा पडे छे तेथी गभरावबुं नहिं पण शत्रु तो पोतानो विषम भाव ज छे तेने हृदय मां पेसवा ज न देवुं-एज आपनी प्रथम फरज छे, शरीर के संसार नुं गमे तेम थाओ, पण आपणे तो आत्मा ने शम भाव मां ज राखवुं इष्ट छे लोक संज्ञाए जिंदगी गुजारवा मां कल्याण नथी. पण आत्म शांति माटे अलौकिक जीवन नुं निर्माण करवा मां शेष आयु गालवो--ए लक्ष दृढ थवो जोइए. पत्रो-मासिको वगेरे मां लेखमाला मोकलवा नी जंजाल छोडी दो. जो अवकाश होय तो समयसार मां नो कर्त्ता कर्म नामनो अधिकार वारंवार मनन करी, तेना पर एक स्वतंत्र निबन्ध लखो. तो कर्त्तापणा नुं अभिमान अने तेथी उत्पन्न थती जंजाल टालवा नो उपाय हाथ लागे. आप जेवा समजु ने अधिक शुं लखुं ?

ज्ञानी के अज्ञानी जन, सुख दुख रहित न कोय;
ज्ञानी वेदे धैर्य थी, अज्ञानी वेदे रोय...१ (श्री०रा०)

ॐ आनंद आनंद आनंद
सहजानंद आत्म-स्मरण.

ता०क० पत्रोत्तर सारा अक्षरे बीजाथी लखावानो तस्दी लेजो. नहिं तो मारे तमारो लिपि मां समय अेले नथी गालवो--मने मौनता सेववी पड़शे ॐ शांति :

(पत्रांक--६३)

ॐ नमः

निसई जो
ज्ये० सु० २ सं० २०१४

शुद्ध आलोचना

त्रिविध कर्म व्यतिरेक जे, निष्कर्म चेतन ध्यान
कहिए शुद्ध आलोचना, जेम खड़ग ने म्यान (१५२ से १५८ नियमसार दोहे)

भव्यात्मन्

निमित्त पाकर सत्तागत द्रव्य मन की फिल्म का अच्छे बुरे भावों को दिखाते हुए स्टेज पर आना व उसे हमारा साक्षी रूपेण देखना कोई दोष की बात नहीं है पर उसमें घुल मिल कर इष्टानिष्ट का परिणमन करना नये बन्ध का कारण होने से दोष कहा गया है।

अच्छे बुरे विचार क्रिया विकार मुझे आ रहे हैं ऐसा स्वीकार मत करो, पर अज्ञान दशा में जेब में रखे हुए उक्त अच्छे बुरे विचार क्रिया विचार रूप खिलौने समय पाकर जेब से गिरकर अपना नाट्य दिखाते हुए बिदा तो हो रहे हैं। मुझे उनसे कोई सम्बन्ध नहीं है क्योंकि मैं उनसे प्रकट भिन्न ज्ञायक स्वभावी आत्मा हूं। ऐसा भेद-विज्ञान लक्ष्य अखण्ड रखने से संवर पूर्वक निर्जरा होती रहेगी व आत्मानंद में भय भी नहीं होगा। सुज्ञेषुकिं बहुना ? ॐ आत्मानंद

(पत्रांक—६४)

ॐ नमः

अज्ञानवश

अतिथि

मन तू गढ़े शरीर में, क्या माने सुख चैन।
जहां नगाड़ कूचके, बजत रहत दिन रैन॥
आप सो नाहीं रहे, दशरथ लक्ष्मन राम।
तुम कैसे रह जाओगे, मूढ़ पाप के धाम॥ २॥

भक्तवर (श्री विजयकुमार बंहेर)

सदा प्रसन्न रहो! मुझ से यह मत पूछो कि धर्म से क्या लाभ है? बस एक बार पालकी उठाने वाले कहारों की ओर देखलो और फिर उस आदमी को देखो जो उसमें बैठा है।

सच्चे सुख के अनुभव में मग्न रहने में पाप नहीं है, किन्तु उसके हेतु धर्म के घात करने में पाप है। मिठाई खाने से अजीर्ण नहीं होता है, किन्तु उसकी मात्रा के अतिक्रमण से अजीर्ण होता है।

दया से लबालब भरा दिल ही सबमें बड़ी दौलत है, क्योंकि सांसारिक संपत्ति तो नीच मनुष्यों के पास भी देखी जाती है।

यदि कोई मुझसे पूछे कि आप गरीब हो या अमीर? तो मैं यह उत्तर दूंगा कि मैं संसार में सबसे बड़ा धनवान हूं। क्योंकि मेरे पास इतना संतोष है जो दुनिया के बड़े से बड़े सम्राटों के खजाने में नहीं है अतएव मैं—सहजानंदी शुद्ध स्वरूपी, अविनाशी मैं आत्म स्वरूप।

ॐ आनंद-आनंद-आनंद

सभी प्रियजनों को आत्म स्मरण!

आपका

सहजानंद

(पत्रांक—६५)

ॐ नमः

(खंडगिरि)

अतिथि

भव्यात्मन् (श्री भँवरलाल जी नाहटा-कलकत्ता)

"जैन शिलालेख संग्रह" नी प्रस्तावना वांची ने आजे समाप्त करी. जेथी पुस्तक पाछुं मोकलुं छुं ते मल्ये थी पहोंच पत्र आपजो. प्रूफ तो मली गयूं हशे. जो फरी थी एक वार मोकली शकाय तो मोकलावशो जी. आत्म-सिद्धि नी संख्या केटली नक्की करी छे ? तदनुसार जेम उचित लागे तेम निसई जी माटे व्यवस्था वगेरे करशो जी.

गई काले काका भतीजा अहिं थी गया. तेमनी साथे आनंदघन पद संग्रह एवं खरतर इतिहास—बे ग्रन्थो मोकल्या छे. ते स्वीकारजो.

आत्मा ने याद राख्या करजो-तो पर्यूषणनी पर्युपासना साची थशे.

ॐ आनन्द-आनन्द-आनन्द

आपका

सहजानंद आत्मस्मरण

(पत्रांक—६६)

तपोभूमि (खंडगिरि)

५-७-५७

श्री सुखलाल भाई के पत्र में प्रभु के स्वाक्षर से—

आ प्रतिकूलताओ ए हृदय सरोवर ने भक्तिरस थी उल्लसित करी दीधुं छे. मात्र आफन अहिं रहेवानी अमने छे ता अहिं रहेवा आवनारा नी शी हालत थशे. प्रथम रसोडघरो नी हालत कढंगी छे. प्रथम अमारो निर्णय थाय पछी साहू शांति प्र० जैन नी आज्ञा लई ने ज बीजा आवे तो प्रतिकूलताओ ने भीली सके. अमारा वर्त्तमान ढंग भणी समभावी होय तो जेम सुख उपजे तेम आववा न आववा नुं विचारी लेजो.

मुनीम नी शिकायत थी जेम बचावी शकाय तेम करवुं उचित छे. अेतो निमित्त मात्र छे. आपणे तो हली मली चालवुं एज श्रेय छे. तार तो मली गयो हशे ? रहस्य जाणी गया हशो. मुनीमे कम मां कम आपण ने ऊपरीओ नी आज्ञा मंगावो लेवा नुं सूचव्युं होत तो आवी गड़बड़ी न थात. अच्छा, जेनुं काम जे करे. आम आ देहनी चिंता कोई करशो नहिं. बधुं सारुं थई रहेशे.

(पत्रांक—६७)

ॐ नमः

(खंडगिरि)

६-६-५७

भव्यात्मन् ! (मँ० नाहटा)

पत्र मिला। आपकी क्षमापना स्वीकृत है, तथैव हमारी भी त्रिकरण शुद्ध्या स्वीकृत हो। सभी से निवेदन कीजिएगा।

जरगड़ जी तो आपके यहां आगए होंगे। अतः उनका पत्र वापस न भेज कर यहाँ ही रखना उचित है। स्वास्थ्य कोई खास चिंताजनक नहीं है। प्रायः सामान्य फेरफार तो सदैव सभी के लिए होता है, अतः उसकी क्या चिन्ता !

तपस्वी श्री (मन)मोहनराज जी भणशाली के व्यतिकर ज्ञात हुए। तीर्थ सेवा की भावना प्रशंसनीय व अनुकरणीय भी है। वे जब चाहें यहाँ आ सकते हैं।

आत्मसिद्धि छपगई हो तो मुद्रित प्रतियाँ यहाँ पर थोड़ी लावेंगे ऐसी आशा है। बीकानेर आपके कुटुम्बी जनों को मेरी क्षमापना निवेदन करें।

आज मिठुभाई की चिट्ठी है, आने के लिए प्रबल भावना है किन्तु अस्वस्थता वश रुकना पड़ा है—कब आवेंगे पता नहीं. धर्मध्यान में अभिवृद्धि हो. ॐ आनंद आनंद

सहजानंद

(पत्रांक—६८)

ॐ नमः

खण्डगिरि

[वैद्य कोजमल जी को कार्ड]

७-६-५७

हे जीव ! तू भ्रमा मत, कहूं बात तेरे हित की।
आनन्द है अंतर में; मन श्रेणि खोज चित्त की ॥१॥
जो रस चिद् निधिके, अप्राप्य जड़ निधि से।
निर्दोष शांति आनंद, है प्राप्य चिद् निधि से ॥२॥
बहिरंग जड़ खजाना, चिन कोष अंतरंगे।
क्यों विषय संगि भटके, तू पंच विषय संगे ॥३॥
तज कर्म कर्मफलता, द्वय चेतनावलंबन।
भज ज्ञान चेतना को, होगा निरावलंबन ॥४॥
प्रत्यक्ष अनुभवेगा, आनंद गंग तत्क्षण।
नय सहजानंदघन तू, कहलाएगा विचक्षण ॥५॥

भक्तवर

पत्र मिला. यह स्थान जंगल में है, जहाँ धर्मशाला भी छोटी है, जिसमें प्रायः भक्त वर्ग ठहरा है. पुराने जाते हैं व नये आते हैं अतः शायद अधिक संख्या होनेपर स्थान की कमी तकलीफ देती है। खाद्य सामग्री ५-७ मील दूरी से ही लानी पड़ती है यहाँ कोई स्थायी घर किंवा चोका नहीं, सब अपनी अपनी जिम्मेदारी आते व खान पान की स्वतंत्र व्यवस्था करते हैं। वर्षा में धर्मशाला के प्राय ८-६ कमरे हैं, सभी में पानी चूता है, अब तक तो वर्षा प्रायः चल रही है थोड़ा दिन और भी संभावना है। अतः आपके आने में व ठहरने में बाधा होना संभव है, फिर भी जैसा आपको सुख उपजे वैसा करो. कृपा करके हमारी जाहिरात न करें, क्योंकि बहुत भडा भीड़ होने से साधन में लोग बाधा पहुँचाते हैं। यहाँ ऐतिहासिक २३०० वर्ष पहले की प्रायः जिन मूर्त्तियाँ व अनेक गुफाएं हैं, जो भारत की अमूल्य सामग्री है। धर्म ध्यान में वृद्धि करें। ॐ आनन्द आनन्द सहजानन्द धर्मलाभोऽस्तु।

(पत्रांक—६६)

ॐ नमः

१०-६-५७

भव्य आत्मन (रांकाजी)

पत्र मिला। मेरा भी सभी से सांवत्सरिक-क्षमापना स्वीकृत हो। चित्रपट किसी शुक्ल-पक्ष, शुक्ल तिथि और वार को चन्द्रस्वर और पृथ्वी तत्व में स्वतः ही कर लेना। मुझे बताने की कोई आवश्यकता नहीं है और न कभी किसी को मैं अब तक मुहुर्त बताता हूँ न बतलाने की रुचि रखता हूँ।

धनराजजी का सत्संग विशेषतः करना। ताखाजी स्थान तो ठीक होगा पर पुरातत्व विभाग के संरक्षण में यदि होगा तो वहाँ ठहरना संभव नहीं. तलाश कर लेना/देखने की सुविधा हो तो देख आना। किसी भी श्वे० या दि० किंवा अन्य समाज की मालिकी का स्थान न हो। निर्द्वन्द हो तो वहाँ रहना स्वावलम्बी और अक्षोभ रहता है। अन्यथा सम्प्रदायिक झंझट रहती है। अपने मुक्त रहना है। धनराज जी को पत्रोत्तर दिया था, मिला होगा।

वहाँ श्री चांदमल जी, हीरालाल जी आदि सभी से खामणा कहियेगा। हजारीमल जी बाँठिया ने द्वितीय राजचन्द्र की इस पामर को उपमा देकर एक लेख 'जैन-जगत' में दिया जिससे अगास आश्रम के ट्रस्टियों ने, मैं जो 'तत्व-विज्ञान' तैयार कर रहा था, नामंजूर कर दिया, ऐसी काल की कृपा है। अच्छा हुआ। झंझट से छुट्टी मिली। ॐ शान्तिः सुख-सुख में है।

सहजानन्द धर्मलाभ

(पत्रांक—७०)

ॐ नमः

(खण्डगिरि)

१७-६-५७

मस्तवर! (भँ० नाहटा)

आपनुं पत्र गई काले मल्युं. समाचार जाण्या. आजे धूपियाजी नी मंडली आवी गई. गई काले वे बाइओ मुंबई थी अने बे मारवाड़िओ आव्या छे. धर्मशाला मां रूम खाली नथी. आवश्यकीय प्रसंग-वश जेतबाई मुंबई जई रह्या छे. मिठुभाई हजु आवी नथी शक्या.

श्री वैजनाथजी नुं प्रयत्न प्रशंसनीय व अनुकरणीय छे. भणशालीजी तो भावनाशील तपस्वी हैं ही। आज वे भी आ गए हैं।

सोनगढ से आत्मसिद्धि-विवेचन कानजीस्वामी का प्रकाशित था, जिसको हिन्दी अनुवाद के रूप में प्रकाशित कराया होगा, हमने देखा है—गुजराती में—हमें उनके प्रति मध्यस्थता व उपेक्षा दोनों भावनाएं हैं।

आत्म-सिद्धि छप जाने पर बाइण्डिंग हो जाने पर आप ही लावेंगे. कितनी प्रतियाँ छपवाई गई व कितनी निसइजी भेजनी है ?

सभी प्रियजनों को आत्मस्मरण!

सहजानन्द आत्मस्मरण

(पत्रांक—७१)

ॐ

खण्डगिरि

६-१०-५७

भव्यात्मन्!

आपनुं पत्र मल्युं, अवकाश ना अभावे प्रत्युत्तर नी ढील थई जे क्षमा योग्य छे. शरीर मां जे अशाता-वेदनी नो उदय वर्ते छे. जे पुराणा पाप ने धोई आत्मा ने स्वच्छ करवा माटे. आवेलो होइ पोता नुं कार्य पतावी आपणा आत्म-घर थी जतो रहेवानो छे कारण के ए आपणो कुटुम्बी के मालिक नथी, पण महेमान छे. मात्र पाप शुद्धि एज एनुं अनादिय कार्य छे. जीव अनन्तानुबंधी कषाय ने वश थई पोता ना आत्मा ना स्वभाव ने छोडी, शरीर मां 'हुं' पणुं करी बीजा जीवो प्रत्ये मारा-तारापणुं स्थापी ने राग-द्वेष वड़े जे पाप कमावी ने तेनो आत्मा मां संचय करी पापी बनी दुखी थाय छे. ते दुख थी छोडावबा माटे ज वेदनी कर्म आत्म प्रदेश मां जमेला कचरा ने आग लगाड़ी बाली जाली ने आत्मा ने साफ करे छे. के जेथी तेआत्मा पेला कचरा थी छूटी परम सुख ने अनुभववा नो अधिकारी बने छे.

जो के आगनी आंच थी जरा ताप तो लागे ज, जेम संधी वा ने हटाववा ते ते जगाए शेक आपवो पड़े छे—गल गुंवड़ ना आपरेशन मां चीर-फाड़ करी, तेमां वलतरा उपजावनारी छतां मूल दर्द ने मटाड़नारी औषधि लगाड़वी पड़े छे. ते ते सहन करवामां जेम दरदी ने लाभ थाय छे—तेम कुदरत एटले पूर्व कर्म तरफ थी ज जीव ना पाप मल धोवा ने व्याधि भगवान नुं पधारवुं प्रत्येक देह-धारिओ ना देह मां जाणे - अजाणे थया ज करे छे. अने ते जीवन शुद्धि माटे अनिवार्य छे. एवो निश्चय मन मां लावी ने शरीर पर ना मोह ने जतो करी—आत्मा छुं·नित्य छुं—देह थी भिन्न छुं—एवी भावना वड़े आत्म-भावना नी धून मनो-मन चालू राखवी—के जेथी मरवानो भय मन मां प्रवेशी न शके. खोटी देह चिन्ता न थाय अने आर्त्त ध्यान वड़े जे नवा कर्मो जीव वांधे छे, ते अटकी ने आ धर्म - ध्यान थया करे, आवा धर्म ध्यान मां मन रमतो होय अने जे देह छूटे तो म दुख य थाय एने समाधि-मरण वड़े मनुष्य के देवभव पामी फरी ज्ञानी पुरुष नुं शरणुं पामी मोक्ष मार्ग ने आराधी क्रमशः थोड़ा ज भवो मां जन्म मरण नी जंजाल थी छूटी जीव-मोक्ष पामे—आत्मा ज परमात्मा वने.

आ नाशवान मसाण नी मिल्कत रूप जे शरीर ते तो गमे त्यारे पण मशाण मां ज जवानो—ते आत्मा नी साथे रहेनार नथी ज. तीर्थंकर जेवा ज्ञानिओ पण जे शरीर ने टकावी राखी न शक्या—तो आपणा जेवा पामर जीवो थी तेवुं अशक्य काम केम वणी शके ? माटे शरीर नी चिन्ता छोडी आत्म चिन्ता मां मग्न रहेवुं के जेथी अनेक भव ऊभा करवा वाला नवा कर्मो न वंधाय अने जूनुं कर्म फीटे. आ शरीर तो जगत नुं ऋण छे-ते तो जेनुं ते छे, तेने पाछो सोंप्ये ज छूटको शरीर तजवा थी आत्मा कइं मरतो नथी अमथुं जीव मरण नो भय सेवी हाय कलाप कर्या करे छे. तेम कर्या छतां पोताना करेला कर्मो कइं तेने छोड़ता नथी—उलटा नवा लफरा वधे छे.

अथवा दुख थी गभराई अकाले ऋण पताव्या विना ज मृत्यु ने इच्छे छे ! मरवाथी कइं कर्मो पोतानुं ऋण वसूल कर्या विना क्याँ जंपवाना छे ! "आपणे जइये ट्रेन मां तो कर्मो जाय तार मां" गमे त्यां गमे ते रीते जीव भाग भाग करे पण कर्मो तो वे डगला आगल ने आगल तैयार-सज्ज थईने—ऊभा ज समजो. माटे वीजुं वधी कल्पना छोडी शरीर ते हुं नहीं—हुं तो एना थी प्रकट जुदो अविनाशी आत्मा छुं. आत्मा छुं—वस एक आत्मा ज छुं. एकलोज आव्यो अने एकलोज जनार छुं. तो पछी वचला गाला मां कोने हुं म्हारुं मांनूं ? वस म्हारे आत्मा सिवाय म्हारुं मानूं ज नथी, मान्यता मां तो हुं पण स्वतंत्र ज छूं. शरीर ते हूं नहीं—अने वइरां छोकरां मां वाप मित्र शत्रु घर मिल्कत ए सौ कोइ म्हारां नहीं हूं तो एक आत्मा ज छूं.

"आतम भावना भावतां जीव लहे केवलज्ञान रे"

आ महामंत्र नी आराधना थी अवश्य गति सूधरेज माटे ते छोडता नहीं—धंधा मां थी विरक्त थई ने आतम साधना मां लगी जवुं तमारा माटे हितकर छे जी. क्यां सूधी धुमाडा न वाचका भरवा मां खोटी थवुं ? विचारशो जी.

अहिं आगल आवधानी इच्छा न करशो—कारण के जंगल छे. रहेवा करवानी के जोइती चीजो मेलववानी अहिं सुविधा नथी, माटे वर्तती भावना ने भावना मां ज साचवजो, अने एक आत्म-भावना मां मन ने रात दिन चौवीस कलाक रमाडशो तो अपार आनंद ने अनुभवाशे.

सर्व कुटुम्ब मेला मां मळेला आत्म-हंसलाओ ने म्हारा तरफ थी आत्म-स्मरण कहेजो. नाम तो शरीर ना मानी लीधेला तथा नाशवान छे—तेनी आत्मा मां छाप नथी, जेथी कोई एम नथी समजता के अमारा नाम पण पत्र मां न लख्या. तमे सौ आत्मा छो—नाम-गाम ठाम ए तमारा नथी. एतो मरडानी साथे खतम थई जनारा छे. एम जेने समज छे ते केम नाम नी माथाकूट मां पड़े? माटे एक आत्मा नुं ज सव रटन करो. एज भलामण पूर्वक विरमुं छुं. ॐ आनंद आनंद आनंद

सहजानन्द धर्मलाभ

(पत्रांक—७२)

ॐ

सच्चे भक्त न मन चोर.........(आदि पद)

भव्य आत्मन्, (रांकाजी)

आपका पत्र मिला. आपकी सत्संग रुचि अनुमोदनीय है. आपकी तृषा शान्त करने के लिये 'श्रीमद् राजचन्द्र-वचनामृत' समर्थ है. मेरे में वैसी योग्यता ही मुझे नहीं दिखती जैसी कि आपने भँवरलालजी नाहटा से सुनी थी। लाभानंदजी से आप ठीक पता लगावेंगे तब ही थोड़ी बहुत हमारी हालत आप जान सकेंगे अब्दुलागंज जाने के पूर्व उनके मुख से मेरे विषयक स्तुति परक जो ढींग सुनाई देती थी, उसे रोकने के लिये कुछ अटपटा सा प्रयोग हो गया। तब से उनकी उक्त रीति बदल गई। अतः अब उनके मुख से आप जो कुछ मेरे विषयक जानना चाहते हो कृपया जान लें। मेरे प्रति अब की वर्तना मुझे प्रिय है—हितकर है, बाकी औरों से आप सलाह मत लीजियेगा। गुर्जर देश में एक उक्ति है, 'डुंगर दूर थी रळियामणा' अर्थात् पहाड़ की सुन्दरता जो दूर से दिखाई देती है, वह समीप पहुंचते ही चौपट हो जाती है। वैसा ही हमारा ढंग जानना कोई अयुक्त नहीं। मेरी योग्यता गुरु पद की तो बात जाने दीजिये—शिष्यत्व की ही कमी हमें महसूस होती है। संत आज्ञाधीन निष्काम जीवन ही शिष्यत्व है। यदि हमें यह मिल जाय तो कृतकृत्य हो जायँ।

कृपया आप अपने में शिष्यत्व प्रगटाइये तदनन्तर आपको कोई गुरु किसी न किसी रूप में मिलेंगे—जितनी आपकी पात्रता होगी, उतना बोध कहीं से भी मिलता रहेगा. ऐसा मेरा विश्वास है.

चातुर्मास बाद किस ओर कब प्रयाण होगा—पता नहीं. वैसा निर्णय भी नहीं किया—जैसा उदय होगा—सब कुछ होता रहेगा. हमें फिकर भी नहीं है कि कहाँ जायं.

मेरे से पत्र व्यवहार भी ठीक नहीं हो सकेगा. अतः आप इस विषय में क्षमा करें।

यदि मेरी सलाह मान्य करें तो 'श्रीमद् राजचन्द्र वचनामृत' का निरन्तर पान करते रहिये. आपको क्रमशः शांति-लाभ होता रहेगा. सुज्ञेषु किं बहुना. ॐ आनंद आनंद आनंद

सहजानन्द आत्मस्मरण

(पत्रांक—७३)

ॐ नमः

(खण्डगिरि)

भव्यात्मन् ! (भँ० नाहटा) ५-११-५७

आपकी किताब श्वे० दि० भाग १-२ देख ली, जो वापस भेज रहा हूँ, मिलने पर पहुंच पत्र दीजियेगा.

आत्मसिद्धि १०० पुस्तिकाएँ किसी आगन्तुक के साथ भेज दीजिएगा. मिठुभाई प्रायः विहार पर्यन्त ठहरेंगे. यहाँ सभी सत्संगी आनंद में हैं. आजकल नवीन पद्य-रचना स्थगित है, क्योंकि तदनुकूल अवकाश नहीं है. संगीत पुस्तिका की आवश्यकता थी, जिसके न मिलने से भी - किस राग में कौन-सा पद्य बनावुं ? उक्त विचार से भी वृत्ति उदासीन हो जाती है. शेष कुशलम्

आत्म लक्ष में वृद्धि हो. ॐ आनंद आनंद आनंद

सहजानन्द आत्मस्मरण

वड़वा थी पत्र छे. तेमां मुंबई थी ता० १२-११-५७ ना कलकत्ता मेल मां रवाना थई सीधा भुवनेश्वर ते मण्डल आवशे अने का० व० ७ (गुजराती) अथवा ८ नी सवारे खण्डगिरि आवशे. एम तेओ जणावे छे. प्रायः १२ व्यक्ति आवशे.

आप श्री सोनराजजी को पद-नियमसार आदि उतारने के लिए नोट दीजियेगा. शेष कुशलम् !

सहजानन्द

(पत्रांक—७४)

ॐ नमः

क्षत्रिय कुण्ड

२२-१२-५७

भक्तवर ! (श्री भँवरलालजी नाहटा)

साधन क्रम मां हवे व्यवस्थित पणे आवशे, एम लागे छे. आहार मां आज थी घउं नो दलीओ आ भक्त मण्डलीए शरु कराव्यो छे. जेथी हवे कोइए पण फल-मेवादि न मोकलवा.

एक गुफा जेवुं स्थान छे. तेने जो व्यवस्थित करोए तो एक सुन्दर गुफा बनी शके पण अहिं काइं अधिक भीड़ भड़का नथी, जेथी सर्वत्र गुफा जेवी एकान्त होवा थी तेने बनाववा नुं आरम्भ

करावबुं उचित जचतुं नथी. तपस्वीजी पूर्ण काळजी थी वधानी सेवा नो लाभ उठावे छे, भक्ति हृदय छे. दादी मां ने सेवा नो अनुपम अवसर सांपड्यो छे. एओ तपस्वी ना पारणा ने ठीक साचवी ले छे. मीठुभाई एकला आज या काले उपडशे. घूपिया जी हजु रहेवा इच्छे छे. आज बैजनाथ श्रावगी नो पत्र छे—ईशारी माटे प्रेरणा करे छे. तेमने जवाब आपी दईश. साध्वीजी नो पत्र पण छे, साध्वीजी ने अजमेर जवाब गई काले मोकल्यो छे.

हवे तो पत्र व्य० थी छुट्टी मले तो ठीक, एवी सौ प्रत्ये प्रार्थना छे. कारण के व्यर्थ ना विकल्पो वधे छे. लेवुं देवुं तो कांइ छे नहिं अने अमथा विकल्पो वधारवा ए कोना घर नो न्याय ? याद करनाराओ ने आत्म स्मरण प्राप्त थाओ. ॐ आनन्द आनन्द

सहजानन्द

(पत्रांक—७५)
ॐ नमः

वीरात् २४८४ पो. शु० ७ शनिवार
(क्षत्रियकुण्ड) २८-१२-५७

भक्तवर (भँवरलालजी नाहटा)

आपका डाक द्वारा भेजा हुआ पत्र परसों उज्जैन वाले टीकमसिंहजी के साथ ही नीचे से ऊपर आकर मिला। सावणसुखाजी से भी मुलाकात हुई।

यहाँ की पुण्यभूमि के स्पर्श से ही शारीरिक अस्वस्थता सभी की दूर हो गई. मांजी भी खूब स्वस्थ हैं व सेवा का लाभ उठा रहे हैं.

साध्वीजी को अजमेर के पते पर ही उचित जवाब भेज दिया गया था, जिसका सारांश आप मिठुभाई से ज्ञात कर सके होंगे। भावी चतुर्मास कहाँ होगा ? इस विषय में वर्त्तमान जोग ही जवाब उचित जान पड़ता है—अन्य विकल्प करना उचित नहीं है। बीकानेर के लिए आप लोगों की भावना अनुचित नहीं है, मिठुभाई की भी यही भावना है. तथापि वचनबद्ध होना उचित नहीं समझता। समय आने पर जो परिस्थितियाँ उपस्थित होंगी, तदनुरूप विचार विनिमय किया जायगा.

तपस्वीजी तो चातुर्मास यहाँ ही कराने के लिये तुले हुए हैं। अतः साध्वीजी को यथा-प्रारब्ध विचरने की ही सलाह भेज दी है। सहज में मिलन योग ही कार्यकारी है। इच्छा पूर्वक करने में कोई दम नहीं, क्योंकि उपादान व निमित्त दोनों में कारणता की योग्यता होने पर ही दोनों के सहयोग से कार्य निष्पन्न होता है। मेरी भी अयोग्यता मुझे अखरती है। उसे ठीक किये बिना—हुए बिना जाहेर जनता के बीच आना ही नहीं चाहता। अतः 'तू तेरा सम्भाल' इस मंत्र के आशय को समज कर समा जाना—समा रहना ही मेरे लिये उचित है। तत्रस्थ साध्वीजी श्री ऋद्धिश्रीजी आदि एवं अन्य भावुक वृंद जो याद करते हों उन सभी से आत्म-स्मरण निवेदन करें। ॐ आनंद आनंद आनंद

सहजानंद-आत्म-स्मरण

(पत्रांक—७६)

ॐ नमः

क्षत्रियकुंड हिल

१८-१-५८

भावना—

पद

हे काम ! जा बेकाम रे, निर्लज्ज ! दूर हटो हे मान !
हे संग उदय ! जा अस्ताचल पर, मौन रहो हे जबान···१
हे मोह ! तेरा मोह न हमको, हम नहिं तेरे गुलाम।
हे मोहदया ! जा जा अब झटपट, तुम पर दया हराम २
हे शिथिलता हो जा शिथिल तूं, कभी न आ मम अंग।
हे देहाध्यास ! खवास ! भाग जा, हमें नहीं कर तंग···३
हे परम गुरु सहजात्म स्वरूपी, मम हिय करो निवास।
तुमरे दर्शन स्पर्शन से ही नित्य, सहजानन्द विलास···४

भक्तवर (विजयकुमारसिंह बडेर)

पत्र मिला। व्यतिकर ज्ञात हुए। रजा में राजी रहना, यही भक्तों का आज्ञांकित धर्म है। अज्ञान दशा में मोही जीव ने जो जो इच्छाएं तीव्रतम भाव से की थी, उस उस संकल्प की सिद्धि वशात् वर्त्तमान में संग प्रसंग क्रमशः उदय में आ आ कर अपनी भूतकालीन रुचि अनुसार ही नाट्य दिखा रहे हैं। इस वख्त हम यदि उन्हें इनकार कर भी दें, तो भी वे रुक नहीं सकते। अतः यह दोष किसे दिया जाय ? हम किस पर एतराज होकर छूट जायँ ? हमसे उत्पन्न होने वाली परिस्थितियों का हम ही पर प्रभाव क्यों ? क्या परिस्थितियाँ से भी हमारा मूल्य कम है, वे स्थायी हैं या हम ? तब हमें भय क्यों ? मनन कीजिएगा।

यद्यपि आपको इस सिद्धान्त का आशय लक्ष में है, तथापि कभी-कभी विस्मरण हो जाता है अतः जागृति के लिए लिख रहा रहा हूं। यह सब कुछ स्वप्न दशा का नाटक है, इस में घुल मिल न जाना, किन्तु प्रेक्षक ही रहना जिससे थकान न हो कर आनंद ही आनंद रहेगा। सुज्ञेषु कि बहुना ? पूजनीया मातेश्वरी व उनके सभी चेला चेलियों को आत्म-स्मरण संप्राप्त हो !

आपकी धर्मपत्नी का व उनकी देवराणी का स्वास्थ्य अब ठीक होगा ? उनके पिताजी की यहाँ के मुनीमजी के उपर हमारी तलाश के लिए चिट्ठी थी, जिसका जवाब दे दिया है। उसमें ससुर जंवाई दोनों मिल कर आवें तो अच्छा, ऐसा लिख दिया था। यहाँ नानीमां, भन्शाली जी व सुख सभी आनंद में हैं। पोस्ट पार्सल से कोई भी चीज यहाँ भेजने की आवश्यकता नहीं थी व नहीं है अतः भावि में ऐसा काम विना इजाजत नहीं कीजिएगा। जो कुछ भेजा हो अभी तक नहीं मिला, मिठुभाई का बम्बई

से पहुँच पत्र यहाँ आज मिला। सब कुछ समाधान है। थापी वाले वीरचंद भाई का देहान्त हो गया, करम गति टारी नहीं टरी ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

सहजानन्द—आत्मस्मरण!

(पत्रांक—७७)

(क्षत्रियकुण्ड हिल जनवरी ५८)

(विजयकुमारसिंह बडेर)

यदि किसी को पिशाब उतरने में तकलीफ हो, तो गौ का ताजा कच्चा पाव भर दूध में १ बोतल सोडावाटर मिला कर शीघ्र पीने से आराम होता है—प्रायः सुबह उक्त प्रयोग करना एवं शाम को गरम दूध में घी मिलाकर पीना।

आहार में मिर्च मसाले उष्णता जनक चीजें न खाना।

यदि आपकी धर्मपत्नी भुजंगासन, सर्वांगासन एवं अर्द्धपद्मासन करती रहें तो बहुत अच्छा स्वास्थ्य रह सकता है।

चिट्ठी दो दिन से लिखी हुई पड़ी है, नीचे ले जाने वालों के अभाव में ऐसा होता है।

(पत्रांक—७८)

ॐ नमः

(क्षत्रियकुण्ड)

१०-२-५८

भक्तवर (श्री भँवरलाल जी नाहटा)

पत्र समाचारादि मल्यां. दादीमां द्वारा अत्र ना समाचार मल्यां हशे तेमने हवे पूर्णतः आराम हशे ?

आ देह ने अंगुष्ठ-पीड़ा तथा ज्वरादि थी छुट्टी मली गई छे पूर्णतः आराम छे हवे अशक्ति पण नथी. माटे कोई वाते चिंता करशो नहीं.

देवीलाल रांका नो पत्र पण मल्यो. जवाब मां एक कार्ड आज रवाना करूं छुं. श्रीपूपिया जी श्रीरत्तु बाबू आदि ने सुख समाचार फोन थी कहेजो, सुख सुख मां छे. तपस्वी आनंद मां छे. बलवंतराय जी आदि आव्या छे.

मनोहर नी उत्तम भावना हती तेथी उत्तम गति थई छे फिकर कर्या जेवुं नथी-तमारी सद्भावनाए काम कर्युं छे, आवी मदद ज काम नी छे. बाकी तो जीव अनादि ना पुटारा मां फटकातो आवे जाय छे. तेमां थी जेमणे समाधि-मरण योग्य थई देह त्यागे ते जीव ने धन्य छे। ॐ शान्तिः

तमारा परिवार वाला सर्व ने आत्म-स्मरण।

ॐ सहजानन्द

(पत्रांक—७६)

ॐ नमः

१०-२-४८

हे काम ! जा वेकाम रे ! ...... आदि पद

भक्तवर !

पत्र मल्युं, आत्म भावना ना पुट मन पर लगाडता रहेवाथी वधी उत्तमता नी सिद्धि थाय छे- माटे अन्य विकल्पोथी विराम पामी—जेवा वनवुं छे– तेवा उत्तम गुणो नु ज स्मरण मनन ध्यान-आचरण करो. फतेह मां पोतानाज पुरुपार्थनो अपेक्षा रहेली छे.

ॐ आनंद आनंद आनंद

सहजानंद – आत्मस्मरण—

(पत्रांक—८०)

ॐनमः

(क्षत्रिय कुण्ड)

भक्तवर ! (भँवरलालजी नाहटा)

२३-२-४७प्रातः

पत्र मिला सब हाल ज्ञात हुए. यहाँ आने के लिए कितने क भावुक तय्यारी वताते हैं—अतः यहाँ की परिस्थिति की सामान्य रूप रेखा वतला देना आवश्यकीय है।

भँशालीजी ने जो तीन कुटियाएँ तैयार करवाई—उन्हीं में से एक में खुद का चौका उन्होंने रखा है. शेप दो में से एक में समीप के ग्राम वासियों को पढ़ाई के लिए एक लड़का पादरी से मिडल तक पढ़ा हुआ विना माँ-वाप का सहज ही हाथ चढ़ गया. आज ही स्कूल का उद्‌घाटन कराने के लिए भँशाली जी वहाँ गए हैं। सम्भव है कि क्रमशः सारे ग्राम वासी मांस-मदिरा, शिकार, देव के नाम पर पशुवलि छोड़ दें-(उस लड़के से उक्त प्रतिज्ञाएँ कराई गई हैं) यदि छोड़ेंगे तो वहाँ कूप कच्चा है पक्के की आवश्यकता है-उसका चार्ज किसी भावुक से दिला देने का वचन हमने दिया है। वह मास्टर एक कुटिया में रहेगा एक यात्रियों के लिए चाहिए ही।

तथैव कभी कभी दिमक विस्तर का भोजन कर लेती है. ऐसा हाल उन कुटियाओं का है। शेष तीन रूम तो हम तीन व्यक्तियों ने रोके हुए हैं। अव आस-पास के गाँवों में दूध मिलना कठिन हो चुका है। भँशाली को पारणा में पर्याप्त मात्रा में नहीं मिलता अतः आने वालों से यह भी भँशाली जी के लिए आफत सी खड़ी होगी।

हमने तो यहाँ के सिपाई को मांस मदिरा छुड़वा कर उसके हाथ का ही दोहया हुआ दूध बहुत समय से लेना जारी कर रखा है वह भी कभी कच्चा सेर भर तो कभी आधासेर मिल सकता है। दूसरों का दूध हम नहीं लेते। उसे दो आना चार्ज भी अधिक इसलिए देते हैं कि मांस मदिरा छोड़ा।

नीचे धर्मशाला में अमुक-अमुक आवश्यकीय वरतनों की कमी है—यहां दादी माँ हमारे लिए कुछ वर्तन छोड़ गइ हैं –उन्हीं वरतनों शायद हम दो से अधिक दो व्यक्ति आप जैसों का भी समावेश हो सकता है। अधिक के लिए गुंजाइस नहीं।

दादी मां ने कुछ बर्तन भेजने का भाव प्रदर्शित किया था, यदि आप साथ में ले आ सकें तो कोशिश कीजिएगा। सीधा समान साग सब्जी जो कुछ चाहिए, सिकंदरा से ही मंगवाने पर मिल सकती है—उसमें भी मुनीम जी इमानदार होने पर भी दिमाग कमजोर होने से दिए हुए आर्डर पढ़ कर रख देते हैं। वह भूल भी जाते हैं—जिससे वस्तु समयसर उनके भरोसे तो आ ही नहीं सकती। कभी कदाच भेजते हैं तो उपर लानेवाले पुजारी जो के बड़ा ही इमानदार है—डबल चार्ज किया वस्तु में भी चोरी कर लेता है—कभी पैसे भी ले जाय तो न वस्तु लावे न वापस पैसे देने का कष्ट उठावे ऐसी यहाँ की परिस्थिति है।

आने वालों में से मैं अपने पास किसी को बैठने नहीं देता. वार्त्तालाप भी हो या न हो—ऐसी इस वक्त परिणति है। क्योंकि व्यर्थ समय खोना होता तो यहाँ क्यों आये? अतः कान्तिलाल जैसे व्यक्ति को आप मौखिक विनय सह इतना मेरा समाचार अवश्य दीजिएगा कि न यहाँ कोई सत्संग का किया भक्ति का प्रोग्राम है—तीनों अपनी अपनी क्रिया एकान्त में ही करते हैं, न आप लोगों के व्यर्थ विकल्पों को सह सकेंगे न रहने करने की व खान पान की व्यवस्था अधिक संख्यक लोगों के लिए है न कोई रसोईया है—फिर भी यदि मात्र यात्रा किंवा अपने ही अवलंबन पर साधना के लिए आना हो तो हम रोकनेवाले कौन? इस रीत्या जो जो नवीन व्यक्ति आना चाहते हों तो सभी को उस परिस्थिति का ज्ञान कराया जाय।

डॉ० रूप यदि पात्र हों व धर्म-मर्म को अनुभव श्रेणि में उतारने की भावना वाले हों तो आप को अपने साथ लाने में कोई निषेध नहीं है। क्योंकि यह धर्मोन्नति व प्रभावना का कार्य है। तथैव वे लोग अपने लोगों की तरह किसी को परेशान नहीं करते।

मेरे लिये न साहित्य की व लेखन के साधनकी यहाँ आवश्यकता है—क्योंकि वृत्ति उक्त कार्य की ओर उदासीन है—अतः आप न पुस्तकादि लावे न फोल्डिंग छोटे टेबल भी।

माधवो जी श्री ऋद्धिश्री जी आदि को अभेद आत्म-अभिवादन कहियेगा। वैद्यराज जी को भी कहिएगा यदि कभी वैद्यराज यहाँ यात्रा के लिए आवे तो यहाँ के देहातियों से ट्रेकोमा के आपरेशन की विधि सीख लें क्यों कि यह क्रिया मात्र वृक्ष की पत्ती से ही विद-आउट चार्ज होती है—व उक्त रोग शीघ्र ही अच्छा हो जाता है।

हमारे पर भी उक्त प्रयोग आजमाया गया था-तब से आराम है वैद्यराज जी की दवा यों ही इवा स्था रही है। दादी मां की नजर यदि ठीक हो तो जिस रोज अपने नाक की दांडी दिखना बंद हो जाय तब से आत्म भावना की धून सदोदित उनके पास चालू रखी जाय-यह खण्डित न हो। एवं एक एक पहर का अनशन क्रम चालू किया जाय-उन्हें आर्त्त ध्यान होने का मौका न दिया जाय-ऐसी सलामण सन्देश शुभेराज जी गाँव को भेज दिया जाय। उसके पूर्व उतावली न हो अत सावधानी रखी जाय।

उस रूम की सजावट एक मंदिर की सी हो व धर्मध्यान के परमाणुओं से उसे भर दिया जाय।

तो वहुत लाभ हो सकता है। शेषकुशलम्

आपके सारे परिवार को धर्मलाभ—ॐ आनंद आनंद आनंद

सहजानंद- आत्म स्मरण।

(पत्रांक—८१)

ॐ नमः

२४-२-५७

एक वात लिखना नहीं चाहता था, फिर भी आज आत्म प्रेरणा होने से (प्राइवेट) मात्र आपको ही जानने के लिए दूसरों को नहीं कहने की शरत से लिख रहा हूं, कानून भंग न कीजिएगा।

चतुर्दशी उपवास के दिन प्रायः मच्छरों की कृपा से पारणा वाद ज्वर की कृपा हुई, प्रतिपदा को दिन भर १०३-१०४ रहा अतः उपवास सहज हो गया, दूज को दिन में कम किन्तु रात्रि भर वही हालत थी। कल आपको पत्र लिखते लिखते ९९ से १०१ होना वाद थोड़ा सा आहार ग्रहण किया कि १०३ हो गया वाद १०४-१०५-१०६ पर्यन्त शाम तक रहा-किन्तु आश्चर्य कि सन्निपात के कोई चिन्ह नहीं-व ध्यान में स्वस्थ दशा से भी एकाग्रता व विशेष उन्नति अनुभव में आई-मानो मार्ग में चलते हुए यह ज्वर मित्र सहायक ही महसूस हुआ। रात्रि भर पसीना होता रहा-अव इस वख्त ९५।।। है। आपको कल न लिखने का कारण यह था की पढ़कर आप लोग फ्रूट औषध लाए विना नहीं रह सकेंगे। मुझे उन दोनों पर अरुचि ही अरुचि हो गई है जिससे आपकी महिनत व्यर्थ हो जाने का संभव था। अतः प्राईवेट रूपेण यही प्रार्थना है कि आप इस वात को गंभोर भाव से पचा लें व फ्रूट व औषधि न लावें।

आप जितने दिन यहाँ रहने की भावना से आना चाहते हैं खुसी से आवें किन्तु उतना मात्र आटा अपने साथ लावें, वाकी सव कुछ यहाँ अधिक मात्रा में है ज्ञात रहे।

कल शाम को किसी आदमी के साथ टपाल मिली जिसमें मिठुभाई की भी चिट्ठी थी जिसमें क्षत्रियकुण्ड विपयक एक लेख भेजा है—जिसे आप स्वयं यहाँ पढ़ियेगा। मैंने अव तक पढ़ा नहीं, अव देखूंगा। ॐ शांतिः

सहजानंद आत्मस्मरण

(पत्रांक—८२)

ॐ नमः

(क्षत्रियकुण्ड)

चैत्र कृष्ण २

भक्तवर !

घेवरचन्द जी के साथ भेजी हुई चिट्ठी मिली। ज्वर मित्र की तो पूर्ण कृपा है। वीच में कभी कभी एकाध दिन किंवा रात्रि चला भी जाता है, व पुनरागमन हो जाता है। इस तरह व्यतीत पक्ष वीता-कल दिन रात पूर्ण कृपा थी- आज नहीं है।

इसने धर्म ध्यान में पूर्ण सहायता दी है—अतः इसे हमें क्यों धक्का मार के अपमान देना ? जब तक रहना हो खुसी से रहो-तब तक औषध लेना हराम है-आप व्यर्थ में चिन्ता न कीजिए, व वैद्यराज को यहाँ आने के लिए उत्तेजित न कीजिए-इस विषय में मैं किसी की एक भी बात न सुनूंगा-व्यर्थ में कोई अपना अपमान मान ले तो मैं क्या करूंगा ? अतः आप इस विषय में मौन ही रहें व वैद्यराज को किंवा औषधि को न भेजिएगा.

दादी मां के अवसान का समाचार जाना। सब का आखिर यही हाल है। अतः पहले से ही आत्मसाधन रत रहना अनिवार्य है। मिठुभाई को करीब १ मास से चिट्ठी नहीं दी थी -उनकी तीन चिट्ठियों का प्रत्युत्तर आज भेज रहा हूं, आज स्वस्थता है।

कृपया आप किंवा अन्य कोई भी यहां के लिए कोई भी खाद्य सामग्री औषध व फलादि कुछ भी न भेजें-भेजवावें-क्योंकि आवश्यकता नहीं है।

वल्लभ -माजी ने भेजे हुए बर्तन अब तक यहाँ ही है-मुनीमजी को भँसाली जी ने ऊपर बुलाया था किन्तु अब तक उन्हें फुरसत नहीं मिली-अतः जब वे आवेंगे तब स्वीकृति पत्र लेकर सुप्रत किए जावेंगे सुख आनंद में है। विजय बाबू-धूपिया जी आदि को यथायोग्य ॐ शान्तिः

आत्म स्मरण

(पत्रांक—८३)

भद्रवर !

३-३ ५८

बधी चिठीओ मली, हवे शरीरे आराम छे. आप चिन्ता करशो नहिं, दादीमां के लिए आपको बीकानेर जाने के लिए लिखते लिखते रह गया ज्वर के कारण अब तो होनहार हो ही गया—ज्वर विषयक जाहिर न करना था फिर भी उस कानून का अमल न हो सका अच्छा अब ही सही—कोई अधिक व्यक्ति न आवें, न कुछ भी चीज भेजें। ॐ शान्तिः.

[पू० दादीजी के स्वर्गवास-समवेदना विषयक श्री मनमोहनराज जी भणशाली के कार्ड के पृष्टभाग में प्रभु के लिखा है]

(पत्रांक—८४)

ॐ नमः

(क्षत्रियकुण्ड)

१६-३-५८

भद्रवर ! (श्री भँवरलाल जी नाहटा)

आपना मिलन पछी बीजे दिवसे २१ दिन पूर्ण करी ने ज्वर मित्र सिधावी गया। त्यार बाद शनै. शनैः आराम थवतां आजे बे कोश चालवा नी शक्ति होय एम जणाय छे। एक सप्ताह मां उपवास योग्यता पण आवी जशे एम लागे छे. बिना दवा ज कर्मो निर्जर्या ते लाभ ओ के व्हारथी ते समये न देखाय, पण ज्ञानिओ ना कर्म-सिद्धांत ने जाणनार ते व्हेजे अनुभवी शके ए स्पष्ट वात छे.

गुरुदेव नी कृपाए यथा शक्ति आसनादि पूर्वक हवे साधन क्रम मां उत्साह सह प्रवेशायुं छे जो के अहिं अधिक रहेनेवानो इच्छा नथी, पण अधिक जमा थएली चौका-सामग्री बलात् रोकवा प्रेरे छे. अन्यथा भक्तो नी सहायता नो दुरुपयोग संभाव्य छे.

मुमुक्षु श्री घेवरचंदजी तथा नवनीत भाई ने स्वास्थ्य समाचार आपजो. हवे कोई आपना परिचितो मां थी जो अनायासे आवी चढे तो तेमनी साथे साहित्य सामग्री मोकलवा माटे तैयार छे. विहार मां अम बे सिवाय कोई नहिं रहे एवी प्रतिज्ञा पूर्वक भावना विजय बाबू ने जणावशो. एमां जराय नमतुं नहि अपाय ॐ शांतिः

स० आत्मस्मरण

(पत्रांक—८५)

ॐ नमः

(क्षत्रिय कुण्ड)

१७-३-५८

भक्तवर ! (भँवरलाल जी नाहटा)

गई रात्रे मच्छरो नी अतीव कृपा थई तेथी आजे फरी १०२॥ टेम्प्रेचर थई गयुं। हवे तो आप मांथी कोई आवे अने सामान संभाळे, तो शीघ्र स्थल बदला नी आवश्यकता छे. कारण के गरमी अने मच्छरो नुं प्रमाण दिनो-दिन वधतुं जाय छे. माटे आ पत्र देखत कोई ने मोकलो तो तो ठीक, अन्यथा भँशाली जी ने सुप्रत करी कदाच प्रयाण थई जाय. एमनुं मन अने संभाल न जाने केवा ढंग थी थाय ? अे प्रश्न छे. गयुं पत्र मल्युं हशे.अधिक समय नथी. ॐ शान्तिः

आत्म स्मरण।

(पत्रांक ८६)

ॐ नमः

२०-३-५८ सांजे

भँवरलालजी नाहटा

आजे आराम छे. गई काल आहार बाद एवुं वमन थयुं के बधुं आहार पाणी [अने साथे कफ नी प्रचुरता] नीकली गयुं—न जाणे ए साथे रोग ना कीटाणु पण चाल्या गया होय.

आजे तपसीथी पूर्णपणे समाधान साथे खामणा थई गया छे. पोतानी भूल घणा ज स्नेह थी कबूली. सुख साथे पण खुल्ला हृदये खामणा थई गया. पूर्ववत् पारमार्थिक स्नेह हतो ते वध्यो. ए भाग्योदय नी वात छे.

सीधो समान जे अधिक हतो ते एमने भलावी दीधो छे. बाकी तो उचित सामान घी तथा माजी ना वासणो सुख साथे लेवा मागे छे जेथी तथा प्रकारे आजे बधी तैयारी करी—आवती काले प्रभाते लछवाड़ जशुं अने सांजे यथा प्रारब्ध गुप-चुप उपड़ी जशुं एवी प्रबल भावना छे ते सफल थाओ.

पुस्तक पेटी मात्र एक ज नीचे मुनीमजी ने मलावी जशुं. वीर जयन्ती समये जे कोई परिचित आवे तो तेमनी साथे आप मंगावी लेजो. जो तेवो जोग न होय तो माणस मोकली मंगावी लेजो. एनी चिन्ता हवे आपना शिरे छे. मारे यथा प्रारब्ध विचरवा मांज श्रेय छे. मिठुभाई, रवा वगेरे ने समाचार मोकली दीधा छे. हवे आशा छे के आराम रहेशे, ॐ शान्तिः

सहजानन्द आत्मस्मरण

(पत्रांक ८७)

ॐ नमः

२१-३-५८ साजे

लछवाड़

भक्तवर।

आपना बे प्रेम-पुष्प मल्यां

गजसुकुमाल मुनि सर्वविरति धारण करी प्रभु ने विनवे छे के :—

प्रभु मुखे सर्वविरति अंगीकरी रे, मूकी सर्व अनादि उपाधि रे।
पूछे स्वामि! कहो केम नीपजे रे, मुजने वहेली सिद्धि समाधि रे.
धन्य २ जे मुनिवर ध्याने रम्या रे
प्रभु भाखे निज सत्वे एकता रे, उदय अव्यापकता परिणाम रे
संवर साधे साधे निर्जरा रे, लघु काले लहिये सिव धाम रे। ध०
एक रात्रि पडिमा तमे आदरो रे, धरजो आतम ध्यान सुधीर रे
समता सागर मुनिवर तिम करे रे, शिवपद साधवा वड़वीर रे। ध०
शिर उपर सगड़ी सोमिले करी रे, समता-शीतल गज सुकुमाल रे;
क्षमा-नीरे नवराव्यों आतमा रे, जे दाझे तेहनो नहिं ख्याल रे। ध०
दहन धर्म ते दाझे अग्नि थी रे, हुंतो परम अदाह्य अगाह्य रे;
जेह दाझे ते माहरूं नहिं रे, अक्षय चिन्मय तत्व प्रवाह रे। ध०

—भगवान देवचन्दजी कृत

सने कोई गजसुकुमाल जेवो वख्त आवो,

भगवान राजचन्द्र देव

धन्य हो ओ प्रगट महावीर ने !!!

ॐ आनंद आनंद आनंद

सहजानंद

(पत्रांक—८८)

ॐ नमः

२१-३-५८

भँवरलालजी नाहटा

आजे ६।२० ऊपर थी प्रभु ने भेटी प्रयाण कर्यु, ९ वागे समाधि पूर्वक कोठी मां आवी गया छीए. मुनीम जी ना आग्रहवश एक दिन रोकावुं पड़े तो नवाई नहीं।

आप हवे कोई वाते चिन्ता करशो नहीं. अने अनुकूलताए पु० पेटी मंगावी लेजो हवे ज्वर तो गयुं जे अशक्ति छे. ते बे चार रोज मां टलती जशे, आजे थोडुंक थाक लाग्युं. ते गर्मीनी अधिकता होवा थी ॐ

आज तृतीय प्रहर में आपका पत्र मिला. भँशालीजी का उपर भेज दिया जायगा प्रत्युत्तर इसमें आ गया. मोहनलालजी नाहटा आदि सबको आत्मस्मरण !

(पत्रांक—८९)

ॐ नमः

(लछवाड़)

२१-३-५८ नाइट

भक्तवर ! (विजयकुमारसिंह वडेर)

प्रेम पुष्प मिला. आप तो भाग्यशाली है. अतः वीर जयन्ती के समय वीर प्रभु मैया की गोद में आनन्द लूटने की भावना दृढ़तम कर रहे हैं, किन्तु हम अभागे उस पुण्यभूमि को आज ६।२० प्रातः समय में (इस काल) अन्तिम नमस्कार करके ९ वजे लछवाड़ आ गये हैं, स्वास्थ्य अच्छा है। कल यहाँ से अन्यत्र यथा प्रारब्ध प्रयाण होगा व गुप्त रूपेण कुछ काल के लिये विचरना—ऐसी उदासीनता ने भावना दृढ बना दी है।

आप आनन्द में रहियेगा। गत वर्ष वत् हमें प्रतिवन्ध नहीं बढ़ाना है। अतः जा रहे हैं—आप अपने भावों को गुप्त रखियेगा, क्योंकि हीरे झवेर सबको बताने की चीजें नहीं हैं। पू० मातेश्वरी व श्री तिलक बहिन आदि आपके समस्त परिवार को हमारा आत्म-स्मरण कहियेगा। प्रभु स्मरण में मग्न रहियेगा। ॐ शांतिः

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

ॐ सहजानंद

(पत्रांक—६०)

ॐ नमः

स्थल – जमुई स्टेशन के पास
जैन फैक्टरी
२२-३-५८

भक्तवर ! (भँवरलाल नाहटा)

आज सुबह लछवाड़ से प्रयाण करके क्रमशः यहाँ आये। इस फैक्टरी के मालिक जैन महाशय गोंडल के हैं, जो कि उदार दिल हैं। आपकी ही व्यवस्था से प्रथम हम काकंदी तीर्थ की वन्दना कर आये व तदनन्तर इन्हीं के यहाँ ही प्रसाद लिया। काकंदी से भी हम आपके लिए कुछ ऐतिहासिक प्रसाद लाये हैं।

कुछ समय पूर्व किसी एक खेत में से १ देवी मूर्ति, जिसके बाँयी ओर एक बच्चा है, जिसकी शिर से पैर तक की लम्बाई करीब सात इन्च व आधी चौड़ाई होगी—वह हल से टकराकर निकली, फलतः शिर के सामने के कुछ हिस्से में गड्ढा हो गया। यह कस्बे ने उसे जैन मंदिर में एक ओर बाहर के आले में रख दी, जिसे देखकर हमें आपके संग्रहालय में भेंट रूप पहुँचाने का संकल्प हुआ. पुजारी जी ने सप्रेम हमें भेंट की व हमारा संकल्प पूर्ण हुआ।

उसे हम यहाँ साथ लाये हैं व लछवाड़ पहुँचाने के लिए फैक्टरी मालिक को सुपुर्द की है। मुनीमजी आज यहाँ तक हमारे साथ ही थे, वे तखतगढ के संघ से मिलने के लिए गिरीडीह ११ बजे गए। संघ लछवाड़ नहीं आवेगा ऐसा संघवी ने जाहिर किया है।

यदि कोई भाई पुस्तक लेने के लिए लछवाड़ आवें, तो इस मूर्ति की भी मांग करें, क्योंकि मुनीम जी भूल जाते हैं। यदि यहाँ से वहाँ मूर्ति न पहुँची तो यहाँ स्टेशन से सटी हुई जैन फैक्ट्री के मालिक से माँगें—मिल जायगी। हमारा स्वास्थ्य नरम ठीक है।

आज शाम को यहाँ से यथा प्रारब्ध प्रयाण सम्भव है। कल भेजा हुआ पत्र मिला होगा। आप सभी आनन्द में होंगे ? ॐ

मूर्ति स्लेट पाषाण की होने से बहुत ही कोमल है। बहुत-सा भाग घिसा जाने से शिल्प की शोभा लुप्त-सी है। फिर भी ऐतिहासिक रसिकों के लिए प्रसाद रूप है। आपके संग्रहालय की शोभा में अभिवृद्धि ही होगी। ॐ शांतिः

आत्म-स्मरण

(पत्रांक—६१)

ॐ नमः

अगास

ता० १४-४-५८

अनंन्य शरण ना आपनार परमात्म स्वरूप श्रीराजचन्द्रदेव परमकृपालु ने उल्लसित भक्तिए नमस्कार हो!

सत्संग योग्य भक्तवर!

पत्र आजे वडवा थई अत्र मल्युं. कारण के त्यांथी अमो गई काले मध्यान्हे अत्र आवी गया हता.

वडवातीर्थ धाम मां आठ दिवस रहेवायुं बधाय मुमुक्षु भव्यात्माओनुं अपार वात्सल्य अनुभवायुं. खूब उल्लास थी दिवसमां चार वार सत्संग रंग जामतुं.

गत रविवारे पूज्यश्री दादा ना तीर्थधाम नां दर्शन-स्पर्शन थयां मोटा भाई अने व्हेनो मल्यां. बे वार शालमां सत्संग करी सांजे वड़वा जई रह्यां हतां.

अहिं प्रायः वद पांचम पर्यंत घणुं करी ने रहेवानी धारणा छे. छतांय अहिं ना कार्य अने उल्लास ऊपर आधारित छे. 'तत्व-विज्ञान' द्वितीय खंडनी संकलनानुं रावजीभाई साथे बेसी ने आज प्रारम्भ करीशुं. एमनी भावना उदार छे. बाकी तो सौ कर्माधीन छे. वड़वा जेवुं वात्सल्य अहिं क्यां थी? कालदोष.

पुरुषार्थ वडेज आत्म सिद्धि संभवे छे. माटे हतोत्साह न थवुं. ज्यारे प्रारब्धरूप अंजीन उन्नति ने शिखरे चढ़तां अटके त्यारे जीवन गाड़ी ने पाछल थी पुरुषार्थ-अंजीन जोडी ने कुशलता थी आगल वधवुं तो गंतव्य स्थले अवश्य पहोंची शकाय. धैर्य न छोडवुं. आपनी भावना उत्तम छे. ते उत्तमगति अपावशेज. अधिक समय न होवा थी आटले थी ज अटकुं छुं. सौ याद करनाराओ ने जय सद्गुरुवंदन सह सहजात्म स्मरण संप्राप्त थाओ. ॐ आनन्द आनन्द आनन्द

सहजानन्द

[असल कापी खंभात सुबोधक पुस्तक हाल मां छे.]

अहिं थी आवता गुरुवारे खरगोन तरफ प्रयाण थशे. बे दिवस त्यां रहेवानो प्रसंग बने कदाच एक दिन अधिक पण रोके—बाद अन्यत्र गमन थशे. श्रीमद्‌राजचन्द्र वचनामृत मांथी एक तारवणी रूपे ग्रंथ 'तत्व विज्ञान' संकलन अगास आश्रम तरफ थी १६ पेजी ३००-४०० पानानुं थयुं छे तेनुं हिन्दी भाषानुवाद पंडितजी तैयार करी रह्या छे, तेना संशोधन नुं कार्य आ आत्मा उपर सौंपायुं छे ते माटे कोई हिन्दी सिद्धहस्त साक्षर साथे रही ते कार्य करवा विचारणा छे तेथी कदाच ताकीदी उत्तर भारत एक तरफ राजस्थान तरफ प्रयाण थशे. जेथी सत्संग योजना वच्चे नहीं थई शके. एम लागे छे.

मातेश्वरी जवल पहेन अत्र आवी ने गया. आशा भाई वगेरे सत्संग योजना माटे इच्छे छ जे यथा समये अमुक क्षेत्रे थवा भाव हतो पण ते कदाच अटके. सत्संगनी कामनाए रहेवुं ए पण सत्संग छे
ॐ शान्ति सहजानन्द

(पत्रांक—६२)

ॐ नमः

३०-५-५८

शुक्र-सांजे

भक्तवर ! (श्री भँवरलालजी नाहटा)

पत्र मल्युं. पूछेला आशयो ने जणाववा मां हमणा चित्त चुप होवा थी असमर्थ छुं—अतः क्षमा आपशो जी.

वर्णी जी एकाद पत्र पूर्वे शिमला थई मेरठ पहोंची गया ना समाचार छे.

अमे वे दिन पछी सोमवारे प्रभाते अहिं थी प्रयाण करशुं एक अपरिचित स्थल ना दर्शन थवा संभव छे.

आ प्रदेश मां केटलाक स्थलो मां (यथा-मेरठ-देहरादूनादि) चोमासा माटे खूब आग्रह थई रह्यो छे—परन्तु क्यां पण हा थई शकी नथी, हजु तेवो विकल्प नथी. यथावसरे जे क्षेत्र नी फरसना हशे त्यां जवाशे।

शिववाडी माटे पण हजु चित्त कबूल करतुं नथी. केटलाक कारणों तो आपने जणाव्या हता. १ मास भर अहिं थी ६ माइल दूर तपोवन मां रहेवायुं. आजे शहर मां अवायुं. काले चतुर्दशी परम दिने लोच अने सोमवारे अन्यत्र प्रयाण एवी धारणा बनी छे. माटे अत्र पत्रादि कोई आपता नहीं. ॐ आनन्द सुख आनन्द मां छे.

आत्म स्मरण.

(पत्रांक—६३)

ॐ नमः

उक्त

भक्तवर (भँवरलालजी नाहटा)

यहाँ का हाल जीजी ने लिखा ही है. अपनी ओर से क्षमा धर्म का पालन यही हितकर उपाय है। अतः यथाशक्ति पालन हो रहा है। आज भी दि० डॉ० की माँ का अट्ठम का पारणा था—आग्रह होने से वहाँ आहारार्थ गया—मन्दिर होकर ही गया—सभी लोग अपना विनय धर्म को पाला. ऐसा तो कर्मों का नाटक सर्वत्र होता ही है, निमित्त तो कोई उसमें कोई अन्य होते ही हैं—किन्तु दूसरा अन्य संभव नहीं। अतः तू तेरा संभाल—चुप.

माहूजी आदि से कुछ भी परामर्श न करियेगा. शायद मुनीम पेपर में कुछ आउट करे, ऐसी बातें बकना था—हमें तो पेपर का प्रसंग ही नहीं। अतः जैनमित्र सूरत व मथुरा से निकलने वाले उभय-पत्र देखते रहना. कुछ यहाँ का लेख हो तो हमें सूचित करना.

समय स्वल्प शेष रहने के कारण यहाँ ही चौमासा स्थिरता के हेतु रुकना पड़ा। किन्तु इतने मात्र से प्रारब्ध चुप न रहा। हमारा गुप्त वास उसने मंजूर न किया। अतः जाहिर में लाने के हेतु किसी मताग्रही को निमित्त बनाकर इस क्षेत्र के अधिष्ठाताओं में से सर हुकमीचन्दजी इन्दौर व महामंत्री श्री दयाचन्दजी पुनासा खंडवा जो कि हम से अपरिचित हैं। उन्हें बहकाया कि "सहजानंद नाम का कोई क्षुल्लक भेषधारी जो श्वेताम्बर है व भेष बनाकर आपका तीर्थ छीनने के लिये इनमें चौमासा के बहाने रहने वाला है। अतः आप लोग सावधान रहें व उसे निकाल दें।" फलतः उन दोनों की ओर से वैसा ही कर्फ्यू आर्डर मुनीमजी को पूर्णिमा के रोज मिला कि इस क्षुल्लक को न ठहरने दें—निकाल दें। यदि मदद चाहिये तो हमें इतला दें। यदि रोका तो तुम्हें निकलना होगा। मुनीमजी पढ़कर गरमाया व वैसा ही अमल करने पर उतारू हो गया। उसे शांति से समझा कर अपनी परीक्षा देने के लिये हम भी कटिबद्ध होकर वहाँ से आध-पौन मील दूर जंगल में एक अजैन स्थान में आकर ठहर गये हैं। पास में महालक्ष्मी का मन्दिर है—इसी हद में दो रूम व रसोईघर है हमें स्तेमाल के लिये मिलगये हैं—स्वतः एकान्त वास मिल गया अतः खूब आनन्द से रह रहे हैं। चौमासी चतुर्दशी के बाद अन्यत्र क्यों जायँ?

सुना है कि दो-चार रोज में ट्रस्टी मंडल यहाँ आकर हमारी जाँच करके फैसला जजमेन्ट देंगे। तब जो भाग्य के मंजूर होगा वही होकर रहेगा। हमें प्रथम से खात्री थी वह है कि "भाग्य में क्या बदा है" अतः निराकुलता ही ज्यों की त्यों बनी रही है, इस काल में हम त्यागियों की परीक्षा आवश्यकीय है। जिससे अपने परिणामों की पहचान-परिचय ठीक-ठीक हो जाय।

यहाँ आहारादि सभी व्यवस्था पुण्य ट्रस्टी स्वतः कर रहा है, किसी भी प्रकार की न्यूनता नहीं है। अतः आप अचिन्त ही रहिएगा। व अपने कारण परमात्मा जो ज्ञायक स्वभाव है उन्हें विस्मरण न होने दीजिएगा फलतः अनन्त गुण विशिष्ट कर्म निर्जरा श्रीमान् भँवरलालजी साव व मुमुक्षु आशी बाई को 'इग' समाचार आप दे दीजियेगा।

तत्र दि० व श्वे० सभी जैन बान्धवों को आत्म-स्मरण पूर्वक सद्धर्मवृद्धिरस्तु वैद्यराजजी आनन्द में होंगे। नाहटाजी को कलकत्ते पत्र दे दिया है। मिठुभाई को भी दिया था, जिसका प्रत्युत्तर भी आ गया है। उन्हें इस वक्त वैराग्य धारा चल रही है। अतः सांसारिक वैभव भी विष्टा तुल्य भी प्रतीत हो रहा है।

महात्मा किशनलालजी को हमारी ओर से धर्म-स्नेह निवेदन करें। चुनीलालजी आदि आपकी मित्र मण्डली मिलकर सत्संग करते ही रहियेगा। यहाँ आने के लिए इन्दौर से बस सर्विस चलती रहती है। ॐ शांतिः

भवदीय
सहजानंदघन

(पत्रांक—६६)

ॐ नमः

जून १६-७-५८

भक्तवर ! (भँवरलालजी नाहटा)

पत्र मिला होगा ? आपका प्रत्युत्तर अब तक नहीं मिला। साहूजी नहीं होंगे, छोटेलालजी से काम लिया होगा। सहारनपुर से छोटे वर्णीजी, देहरादून व मेरठ के जैन समाज द्वारा सर साब की आँखें खोल दी गई अतः समाधान हो गया है। हम परसों गुरु-पुष्य को यहाँ धर्मशाला से १ फर्लाङ्ग दूरी पर प्राचीन जिनालय की बगल की दो कृत्रिम गुफाओं में जावेंगे। धर्मशाला में रूम तो २८ हैं किन्तु कितनेक भरे हुए हैं, अतः सत्संग के लिए जिन्हें आना हो, जो सभ्यता, विनय विवेक से रह सकते हों व होटल तथा रात्रि में यहाँ रहें तब तक न खायें उन्हें यहाँ आने में कोई प्रतिबन्ध नहीं है। भोजन व्यवस्था अपनी-अपनी जिम्मे रहेगी। सामग्री सब मिलती है। अतः आगन्तुकों में से जिम्मेदार व्यक्ति के साथ पुस्तक-पेटी भेज दी जाय। बदलीयाजी उक्त काम में व्यवस्थित है। श्री धूपिया जी व बंडेरजी आदि खास-खास को समाचार दे दिया जाय। काकाजी श्री शुभराज जी व आप कुछ रोज पहले ही बीकानेर से आ चुके होंगे।

दादी माँ व उनकी कोई सत्संगिनी आना चाहें तो भी आ सकती हैं। श्री चेवरचंदजी श्री कांतिभाई आदि को यथोचित समाचार दीजियेगा। व कहियेगा कि हमसे पत्र व्य० में यदि जवाब न मिले, तो बर्दाश्त कीजिएगा।

अगरचंदजी साब को उचित समाचार दीजिएगा। जरगड़जी को भी। सुना है कि साध्वीजी वि० जयपुर हैं।

मिठुभाई का पत्र था। कच्छ में पू० उपाध्यायजी भगवान आदि को भी वे मिल कर आये हैं। यहाँ के आश्रम में जिनालय की प्रतिष्ठा करवाई ॐ

कोई पठनीय अपूर्व साहित्य हो तो भेजियेगा, जो आत्मार्थ द्योतक हो।

सुग० सुख में है। पत्रोत्तर दीजिएगा। ॐ आनंद आनंद आनंद

भवदीय

सहजानंदघन—आत्म-स्मरण

(पत्रांक—६७)

ॐ नमः

१६-७-५८

भक्तवर ! (रांकाजी)

कल तीन की डाक से हीरालालजी का पत्र मिला। यहाँ के ट्रस्टी मण्डल ने प्रत्यक्ष रूप में आकर आँखों का काम कान मात्र से करने रूप अपनी गलती एकरार करके अतीव पश्चात्ताप पूर्वक उत्तम क्षमा मांगी व निःशल्य हुआ।

हमें तो क्षमा धर्म का यथाशक्ति पालने था व है। अतः उनके आग्रह से महालक्ष्मी को छोड़ कर यहाँ पावागिरि के कटिमेखला स्थित गुफाओं में गुरुपुष्य को आकर निवास किया है, ऊपर तीनों ही चक्री तीर्थंकरों का विशाल जिनालय है—दर्शनीय है।

इन्दौर से सर हुकमीचंदजी साव पथारीवश होने से आ नहीं सके, किन्तु पत्र द्वारा अत्यन्त क्षमा प्रार्थना पूर्वक विनय प्रगट की है व श्वेताम्बर भाई-बहनों को सत्संग के लिये यहाँ आकर धर्मशाला में ठहरने के आदि की सभी व्यवस्था कर देने की मुनीम जी को सूचना दे दी है। अतः आप कोई भी विना संकोच आ सकते हैं। इग समाचार लिख भेजियेगा।

यहाँ खंडवा वडवानी आदि की कुछ वृद्ध माताएँ चातुर्मास के लिए ठहरी हैं अतः आहारादि की कोई प्रतिकूलता नहीं थी। आपने जो भेजना लिखा है उसकी आवश्यकता नहीं थी व नहीं हैं, अतः आने पर सुख ले तो लेगा, किन्तु आपको ही वापस उसे स्वीकारना होगा। सहारनपुर से क्षु० १०५ श्री मनोहरलाल वर्णी जी व देहरादून मेरठ आदि के सुहृदों द्वारा ट्रस्टी मण्डल की आँखें खुल गयी। जो कुछ हुआ हमारे लिए अच्छा ही हुआ। ऐसे समय पर ही अपने परिणामों की परीक्षा हो जाती है। सभी भावुकों को आत्म-स्मरण पूर्वक सद्धर्म वृद्धिरस्तु।

भवदीय
सहजानंदघन

(पत्रांक ६८)
ॐ नमः

(ऊन-पावागिरि)
२३-७-५८

भक्तवर! (भँवरलालजी नाहटा)

बन्ने पत्रो मल्या. विगत सर्व जाणी. इन्दोर थी सर सा'वनुं माफी पत्र पण मल्युं. बाकी ना ट्रस्टी मण्डले तो प्रत्यक्ष आवी माफी मांगी ते विषयक पूर्वे लखेलुं ज हतुं. ट्रस्टी मण्डल बहुज प्रभावित थयुं. ए सौ क्षमा धर्म नो ज प्रताप छे. जाती वखते तेओए कह्युं के अत्यारे तो अमने पाछा जवुं जरूरी छे—त्यां जई प्रचार करी १५-२० ना मंडल ने साथे लई पंदर दिन बाद सत्संग माटे पाछा आवशुं. भादो मां तो घणा ज आववा तैयार छे. अपने वर्त्तन द्वारा जे प्रत्यक्ष शिक्षा मली. तेनो प्रभाव भुंसाशे नहीं। अमने तो ए व्हाने पण आ काल मां आप जेवा······कोई छे···ते जाणवा मल्युं– ए महान् लाभ थयो··· मात्र भेद एटलो छे के आँख नुं काम मात्र कान द्वारा कर्यूं -तेथी आपने तकलीफ अजाण पणे आपी··· ए बधी नियति हशे ॐ

श्वे० दि० सत्संगीओ घणा आवशे, तेथी धर्मशाला मां सुधार नुं काम तेओ शरु करावी गया छे—खण्डगिरिवत् स्थान कम रहेशे. भले जेने आववुं होय शीघ्र आवी जाओ– मातृमण्डल एक साथ अने पुरुष मण्डल बधा एक साथ रहेवुं पड़शे—एक-एक ने जुदा-जुदा रूमो नहिं मले, अन्यथा स्थान पूरुं

नहीं पड़े. खण्डगिरि मां तो आवनार ओछा हता—अहिं घणा पगे घुधरा बांधो बेठा छे. नवा नवा बधता जाय छे. अत्यारे दि० समाज नी चार वृद्ध माताओ सौ पोत पोताना अलग चौका वाली जुदा-जुदा रूम मां छे. १ पुजारी १ मुनीम १ डाक्टर एम त्रण घर तो हताज एटले ७ घरो मा फरती आहार व्यवस्था प्रथम थी थती रही छे. आहार बाबत मां कोई तकलीफ नथी ज. त्यां महालक्ष्मी मां पण आवता हता.

हीरमुनि मारी साथे टकी नहीं शके हमणा तो भले श्रीमद् ना वचनो नुं पान करे—कंइक जड़ प्रकृति छे. हमणा मारा समाचार आपता नहिं.

श्री छोटेलालजी सा'ब तथा वैजनाथजी आदि को सद्‌धर्म वृद्धि कहेजो. लीधेली तकलीफ माटे आभार. वर्णी जी ना पत्र थी सर सा'ब तो ठरी गया. अने पत्र मां गद्‌गद् भावे माफी मांगी छे, ते पत्र प्रत्यक्ष मां वांचवा मलशे. गई काले मेरठ देहरादून चारभुजा थी पुखराजजी टांक अने मिठुभाई ना पत्रो हता. हमणा टपाल नी खूब कृपा छे. जवाब देतां थाकी जाऊं छुं. सौ ने धर्मलाभ ! सुख-सुख मां छे. ॐ

सहजानंद

(पत्रांक—१६)

ॐनमः

३१-७-५८

भक्तवर ! (रांकाजी)

आपके अनेक पत्र मिले सर्व व्यतिकर विदित हुए।

फैजाबाद से १ वृद्ध माताजी आ गई है। और कलकत्ता, जयपुर, बम्बई से कुछ रोज में ही कितने आने की सोच रहे हैं।

आपकी रुकावट के कारण जाने। यद् भाव्यं तद् भविष्यति। अतः मन का ही शरण अब आप बेर-बेर पत्र न दीजियेगा।

उदय हो जिसे आना हो आ सकते हैं पूछताछ की आवश्यकता नहीं है। भगवति आराधना समाधि-मरण के हेतु'''विधि विधान आदि विषयों युक्त है।- वैराग्य पोषक है। इच्छा व अनुकूलता हो वहाँ दि० मन्दिर से लाकर पढ़ लेना।

सभी प्रियजनों को आत्म-स्मृति पूर्वक सद्‌धर्मवृद्धिरस्तु'''

भवदीय
सहजानंद

(पत्रांक—१००)

ॐ नमः

१४-८-५८

जिन चरनन नत नयन मम
मनन जनन विज्ञान ॥
अरिवन-खनन-हनन-शरन
धन धन नर तन शान ॥१॥

आत्म-शरणदाता परम वीतराग परमकृपालुदेव ने उल्लसित हृदये अनंतशः नमस्कार हो! नमस्कार हो! आपनुं पत्र दशेक दिन पूर्वे लखेलुं मल्युं. समयाभावे अने स्मृति न रहेवा थी प्रत्युत्तर न आपी शक्यो अतः क्षंतव्य छूं.

परम कृपालु ना परमागम मांथी प्रत्यक्ष अमृत नुं पान करनार ने भव भय होय नहीं, आ स्वप्नवत् जागृत-संसार फिल्म नो प्रभाव अेना ऊपर पडी न शके.

द्रव्य-मन जन्य विकल्पो थी ते गभराय नहि ते भणी इष्टा-निष्ट भाव रूप भाव-मननी कल्पना थी ते सदा मुक्त रही शके.

ते द्रव्य-संग छतां भाव थी असंग रहे. अने तेथी हृदय मां समतुला ने जालवी शके. तेथी क्षोभ थी मुक्त बने. मात्र ते अमृत पान मां तल्लीन रहे तो हथेली मां मोक्ष अनुभवे अेवो विश्वास छे माटे मंडी पडो. कमर कसो ऐमां प्रमाद करवा जेवुं नथी जी. अहिं केटलाक सत्सगोओ छे. बाकी ना घणा आवनार छे. धर्मशाला मां पाछळ थी आवनाराओ कदाच समावेश नहिं पामी शके. सुख आनंद मां छे.

ॐ सहजानंद आत्म-स्मरण

(पत्रांक—१०१)

ॐ नमः

२७-८-५८

भक्तवर! (भँवरलालजी)

आपनुं कृपा पत्र मल्युं. अमारा खामणा पण तथैव स्वीकृत हो। बीकानेर थी मेघराजजी साव व अगरचंदजी साव नो खामणा पत्र हतो. प्रभाते जवाब मोकली आप्यो छे. सर्व सत्संगिओ तरफ थी पण खामणा स्वीकारजो. श्री ताजमलजी बोथरा नो खामणा पत्र आव्यो ते मल्यो. तेमणे पण मारा तरफ थी प्रतिखामणा कहेजो. समयाभावे पृथक् पत्र नथी आपतो.

जरगड़ जी ना चिरंजीवी अने धर्मपत्नी गई काले सांजे आवी गया छे. आवता पक्ष मां घणा पधारवा ना छे, अेटली धर्मशाला मां व्यवस्था नथी. छता नभावी ले तेम सौ ने भलामण करवी पड़शे.

बपोरे १/२॥ समयसार कलशा-नाटक अने श्रीमद्ना वचनामृतनुं स्वाध्याय चाले छे. सांजे भक्ति क्रम चाले छे. ज्वर तो आ क्षेत्रे तंग करतुं नथी. कोइ के मावी लीधुं होय तो खबर नथी. बंने नी

शरीर प्रकृति सारी छे. माटे चिन्ता करशो नहिं. मीठुभाई हाल मां आवी शके तेम नथी. अन्त मां आववा धारे छे. त्यां जे याद करे ते बधाने खामणा पूर्वक आत्म-स्मरण संप्राप्त थाओ.

भवदीय

सहजानंद

(पत्रांक—१०२)

ॐ नमः

C/o दि० जैन धर्मशाला

मु० पो० ऊन डि० निमाड़ वाया खरगौन M.P.

वैद्य कोजमलजी को दिया कार्ड. २६-८-५८

भक्तवर !

पत्र मिला। यह दि० तीर्थ पावागिरि है। गाम का नाम ऊन है। आपको आने की भावना को इन्कार नहीं कर सकते, पर यहां एक भी जैन घर नहीं है। धर्मशाला पर आने वालों की अधिक संख्या हो जाने से कुछ भीड़ भड़का रहता है। भोजन व्यवस्था सभी अपनी-अपनी कर लेते हैं। वर्षा की पूर्ण महिर होने से खुल्ले में तो रहा जाय नहीं। अतः आपको जो उचित जंचे कीजिए। यहाँ आने के लिए इन्दौर स्टेशन के पास जो बस स्टेंड है, वहाँ से अनेक मोटरें यहाँ होकर आगे जाती हैं। ऊन ग्राम बस स्टेंड दि० धर्मशाला के द्वार पर ही है। यदि आप आवें तो हिन्दी तत्वज्ञान जितने मिल सके लेते आना। यहाँ जो भी हमें याद करने वाले हों उन्हें आत्म-स्मरण संप्रात हो। शेष कुशलम्

भवदीय

सहजानंद आत्म-स्मरण

(पत्रांक—१०३)

ॐ नमः

पावागिरि-ऊन

३०-६-५६

भाव अप्रतिबद्धता थी निरंतर विचरे छे एवा ज्ञानी पुरुषोना चरणारविंद मां अचल भक्तिए नमो नमः।

सत्संग प्रेमी श्रीमान् कान्तिलाल भाई।

आपश्री ना बे पत्रो मल्या तेना प्रत्युत्तर नी आप राह जोता हशो ए स्वभाविक छे पन्तु पुज्यश्री नी ए विषय मां दिनोदिन उदासीनता वधती जाय छे. अने तेमां पुष्टी आपनारा बनावो बने छे. तेमा दसेक दिन पर एक घटना बनी ते आ प्रमाणे थयुं-कोई-कोई वावते कोई-कोई ना आग्रह थी पून थती हती तेमां दि० मंदिरो नो १६-१७ वर्ष नो सरल अने भावुक पुजारी पण कोई-कोई वखते सामेल थतो. तेने

धून चढ़ी जती-भादव सूद ६ या ७ ने ए धून मां हतो अने क्षेत्र मां मुनीमजीए अने मारपीट करी अने मंदिर नी वहार लई गया अने त्यां पण न बोलवा जेवा वचनो बोल्या अने तेने त्यां पण खूब मारपीट करी अने अेवा बीजा कारणो बन्या करता हता. आ प्रमाणे बन्या करतु होवा थी पू० श्री नो वैराग्य अधिक वध्यो अने भा० सु० १० ने सवारेज ए स्थान छोडी दीधु छे अने जंगल मां जई वेसी गया पछी त्यांथी पासे ज महालक्ष्मी धर्मशाला छे. त्यां खरगोन सेंधवा ना भावुको लई आव्या छे. अहीं अधिक माणसो ने रहेवानी सगवड़ नथीं. क्षेत्रना धर्मस्थान थो ए स्थान लगभग १ माइल दूर छे. माटे हवे अहीं कोई न आवे ए वात आवनाराओ ने जणावजो. अेजे विना वनी छे तो कोई ने न जणावशो. ए गुप्त राखजो. वधारे चर्चा थी लोको मां कई विकल्पो वधे छे अने वगर फोकट ना बीजा ने कर्म बंधन नूं कारण थाय माटे आप ए बात नी चर्चा न करसो अेज प्रार्थना छे. अेज. वधुं शुं लखुं दूषमकाल छे अेमा भाग्यवशात् कोई सत्पुरुष मले अने तेमने जीवन मां आवी अनेक कसोटीओ मां थी पसार थवुं पड़े छे अे जोई आश्चर्य सहित खेद थाय छे. तेथी हृदय रड़े छे. आवा कर्म वाला जीवोथी ज आ काल पण दूखीत थयो. वधारे शुं लखवुं.

पू० श्रीनुं स्वास्थ्य ठीक छे. मारा मिच्छामि दुक्कड़ं.

सेवक सुख ना वंदन.

(पत्रांक—१०४)

ॐ नमः

२३-१०-५८

भक्तवर ! (भँवरलाल नाहटा)

अहिं-विषयक कोई प्रकारे चिन्ता नहिं करजो. जे थई रह्युं छे ते वधुं ज हित रूप छे. अेमा अन्य निमित्त मात्र संभवे छे, कर्त्ता नहिं—तो कोना पर दोष देवो. माटे चुप थई ने वधुं जोया करवुं पण इष्टानिष्ट कल्पना न करवी एज वीतराग मार्ग नो महान् उद्देश्य छे.

बीकानेर थी काकासा नो पत्र हतो. अहिं विषयक जे पोते जोइ गया अने अनुमान कर्युं हतुं-तथा प्रकारे थयुं. तेवो उल्लेख कर्यो छे.

अत्र अनेक भावुको आवे जाय छे. नवा नवा भावुको वधता जाय. मुंवई थी सीधा कार द्वारा पण आवे जाय छे, एवी पांच कारो पाछी फरी.

सत् नी रूचि जीवों मां वधती जती जणाय छे तेमा मात्र सत् ने वतावनारा नी आ काले खामी जेम जणाय छे। खामीओने दूर करनारो सत्संग तो सर्वकाल ने विषे दुर्लभज छे. तो आ कालमां दुर्लभ केम न होय ? तेने सुलभ करवुं एज जीवन जीव्यानुं साफल्य छे.

तत्र काकासा ने तथा अन्य सर्व भावुक वृन्द ने सादर आत्म-स्मरण संप्राप्त हो।

ॐ आनंद आनंद आनंद

सहजानंद सद्धर्म वृद्धिरस्तु।

(पत्रांक—१०६)

ॐ नमः

हम्पी

२०-११-५८

(ब्र० सुखलाल का लिखा) सहजात्म स्वरूप परम गुरू

श्रीमान् धर्म बन्धु ! (रांका जी)

सादर जयजिनेन्द्र ! पत्र आपका मिला समाचार ज्ञात हुआ। आपकी सत्संग करने की भावना है वह उत्तम है पूनम के बाद यहाँ से गमन होगा। दो रोज खरगोन ठहरना होगा वहाँ से माण्डव की यात्रा करके कई आवश्यकीय काम के लिये दूर जाना होगा इसलिए अभी मिलन होना सम्भव नहीं है आप संतोष रखियेगा। जो बोधामृत यहां से पान किया है उसका नित्य खूब प्रेम से मनन करते रहियेगा और कृपालु देव के वचनामृत का नित्य स्वाध्याय करते रहियेगा। भक्ति नियमित करने से कृपालु फल देंगे ही। धैर्य धारण करियेगा। हिन्दी आत्म-सिद्धि पाँच भेजी है अब यहाँ पत्र नहीं देना। शेष कुशलम् पू० श्री का स्वास्थ्य ठीक है चिन्ता मत करियेगा—यहां बहुत सत्संगियों की भीड़ अधिक होने से पू० श्री को समय कम मिलता है सभी सत्संगियों का आत्म-स्मरण।

सेवक—सुखलाल का आत्म-स्मरण

प्रभु के हस्ताक्षरों से—

भव्यात्मन्। (रांकाजी)

इस समय ताराजी आना सम्भव नहीं। राजवचनामृत के हिन्दी शुद्ध पुनर्मुद्रण के लिये संशोधन हमारे जिम्मे आया है। अतः उसके लिये कहीं अन्यत्र जाना अनिवार्य है—अतः सभी के लाभ के हेतु मध्य प्रदेश में रहना सम्भव नहीं। राजस्थान में भी आपकी ओर आना सम्भव नहीं अत. क्षन्तव्य हूँ। सभी प्रियजनों को आत्म-स्मरण—भक्ति में आगे बढ़ो।

ॐ सहजानंद

(पत्रांक १०७)

ॐ नमः

हम्पी

२१-११-५८

वैद्य कोशमलजी

पत्रो मल्या, चैत्र वैशाख मां जो तेवो उदय हशे तो जणावाशे. अहिंसा प्रचारक भव्यात्मा ने प्रभु स्मरण ! अहिं हजुसुधी सत्संगीओ आव्या करे छे. यथाशक्ति भक्ति भाव थाय छे. आप सौ भक्ति धून मां अप्रमत्त रहेजो. मंत्र स्मरण नुं जोर राखशो-बाकी जे देखाय ते भणो खोटी न थवुं. जोनारा जाणनारा मां ज आत्म भावे टकवा प्रयत्न करवुं ए तरवानो उपाय छे, ॐ आनंद आनंद आनंद

सहजानंद सहजात्म स्वरूपे सतत स्मरण हो,

(पत्रांक—१०८)

ॐ नमः

२३-११-५८

परम कृपालु देव ना मार्ग-बोध ने परम भक्तिए नमस्कार !

सत्संग योग्य परम स्नेही भव्यात्मा ।

पत्र मल्युं. परमार्थ पथारूढ थवानी जिज्ञासा श्लाघनीय छे. परम कृपालुदेव नी कृपा थी ते फलीभूत थाओ !

परमार्थ-पथ मां प्रवेशवा माटे सद्वर्तन अने सद्गुणो केलववानी आवश्यकता होय छे. ते केलवणीनी श्रेणि मां आरूढ थवा मानसिक वासनाओ अने तेथी दुर्ध्यान ना जंगल मां थी पसार थवुं पडे छे. तेमांथी आगल जतां डगले अने पगले आत्म शांति स्थिति अने वृद्धि थवा मां अनेक विघ्नो नडे छे. सत्संग निश्राए प्राप्त थएला सत्साधन वडे ते विघ्न समुदाय उपर विजय मेलवी शकाय छे. जेथी सत्पात्रता प्रगटे छे. उपयोग ने त्रियोग थी असंग राखवुं एज मुख्य सत्साधन छे. तेणे माटे त्रणे योगो ने अचपल राखवा अनिवार्य छे.

प्रथम काय योग ने स्थिर करवा आसन-सिद्धि आवश्यकीय छे. ते माटे अमुक समय भक्तिनो काढी—नियमित अेकज आसने प्रतिदिन चोकस समये (टाइम टु टाइम) सुखासन के पद्मासने बेसवानी आदत पाडवी. दृढ़ आसने टटार बेसी मूलबंध लगाडवुं. गुदाने अपान वायु वड़े ऊँचे पकडी ने राखवा थी शान्त अकड़ अने स्थिर बैसाय छे. तेथी आत्म-प्रदेशो स्थिर थवा मांडे छे तेथीज श्वास अने मन नी गति क्रमशः धीरे-धीरे मंद पडवा लागे छे. साथे-साथे दृष्टि ने स्थिर राखवीज. तेथी विचार नी स्थिरता नो उदय थशे. आत्म-विचार अेज मुख्य प्रयोजनभूत छे. तेनुं बीज मंत्र "सहजात्म स्वरूप परम-गुरु" छे. परमगुरु जेवो ज हुं सहजात्म स्वरूप छुं पण शरीर के शरीरधर्मो हुं नथी. अेम भावना रूप सतत एकज विचारे टकवुं श्वासोश्वास ना अवलंबने मन्त्र जपतां आत्म-विचार नी दृढ़ता केलवाय छे. तेथी मन नी स्थिरता सधे छे. वाणी योग ने तो मौन ज राखवुं. एम त्रियोग नी स्थिरता साधवी ज.

कोई पण कार्य नी अेकदम सिद्धि थती नथी. क्रम-क्रम ना अभ्यास थी ज ते शक्य छे. ते अभ्यास थी कंटालवुं नहिं. तेम थाकी ने छोडी पण न देवुं. नियमित साधन थी कार्य सिद्धि शक्य छे. कल्याण ना कामोओ ने आवुं नियमित जीवन अनिवार्य छे. नियमित वधता अभ्यासे ३ कलाक सूधी जो आसन सिद्धि थाय तो तेनी साथे विचार-स्थिरताअे आत्म शांति वेदाय तेनो प्रभाव दिन-रात टकी रहे. व्यवहारिक कार्यो मांय ते स्मरण अखंड रहे. तेथी कषाय अने विषय ने आधीन न थवाय. अेम वर्तता घणा समये छूटी शके तेवा कर्मो थोडी वार मां निर्जरे अने आत्म-निर्मलता थाय. अनेक विध अनुभवो थाय, ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

(पत्रांक १०८)

ॐ नमः

भारमुझा रोड
४-१२-५८

परमस्नेही श्री नाहटाजी !

गत प्रतिपदा को ऊन से खारगोन प्रथम प्रयाण हुआ। यहाँ से माँडवगढ, महू, इन्दौर (खंडवा होकर) बाड़ी जाना पड़ा। वहाँ के दि० जैनों की आपसी फूट मिटी व धार्मिक शिक्षण संस्था को कायम की गई। वहाँ हस्तलिखित साहित्य है, उनमें से जो उन लोगों के उचित था, वह छोड़, शेष बहुत-सा हमें सादर भेंट मिला है, जो दो चाय की पेटियाँ जैसे देवदारु खोखों में पैक करवा कर वहाँ छोड़ आया हूँ। १ कलामय जिन बिंब स्वल्प खण्डित भी अमरावती के तालाब की खुदाई में से जो प्राप्त हुआ था, बाड़ी में ले आये हैं। दूसरी प्रतिमा अत्यन्त भग्न प्रायः अवशेष कलामय है, उसे भी बाड़ी लाने का कह कर आया हूँ। ये दोनों भी आपके कलाभवन के लिए व ग्रन्थ शास्त्रागार के लिए भेंट मिल चुके हैं। समय व शक्ति के अभाव के कारण वहाँ थापण रख आया हूँ, जिन्हें आप कहेंगे उसी प्रकार मंगवा लिए जायेंगे।

कोटावाली सेठाणीजी, महालक्ष्मी में गत चतुर्दशी को आई थीं। जयपुर के लिए उनका अति आग्रह हुआ, जिसे मंजूर करना पड़ा है।

बाड़ी से भोपाल होकर उज्जैन गए १ दिन ठहरे, जिनालयों के दर्शन हुए। शान्तिनाथजी में प्रवचन भी रखा गया था। वहाँ से कल सुबह चित्तौड़गढ़ आये. कार से सर्वत्र प्रेक्षण करके ३॥ की ट्रेन से यहाँ भारमुझारोड आये हैं।

आज यहाँ के भावुकों को मनवा करके शायद सायंकाल बाद अन्यत्र जाकर परसों शाम को अजमेर पहुँचने की धारणा है, वहाँ दादाजी को भेंट करके जयपुर हो बीकानेर आना होगा।

खरगोन में गत शनिवार को मिठुभाई आ गए थे व देवराज भाई दोनों यात्रा में साथ हैं। शायद अजमेर-जयपुर बाद वापस जायें।

यहाँ गुफा के वेण्टीलेशनों में बारीक जाली के किंवाड़ लगाना भीतर से उचित होगा। शायद अजमेर सेठानीजी आ जांय।

यहाँ सभी सकुशल हैं।

शुभेराजजी व भँवरलालजी यात्रा करके वापस आ गए होंगे।

ऊन में बीकानेरी बोर के साथ बहुत-सा जेवर भेज दिया था—मिला होगा। ॐ शान्तिः

सहजानंद आत्म-स्मरण

(पत्रांक १०६)

ॐ नमः

(बीकानेर)

२७-१-५६

[श्रीमान् भँवरलालजी साहब !

सादर जयजिनेन्द्र ! आपके भेजे हुए चित्रपट छोटे-मोटे २१ नग मिले हैं। लक्ष्मीचंदजी के लिए दो चित्र पट मंगवाए, किन्तु पू० श्री अपने हाथों से अपने चित्रपट पर लिख के देवें ये तो आज तक हुवा नहीं, ये तो आपको भी शायद मालूम होगा, यहाँ भी कितनेक लोग मांग रहे हैं। साध्वीजी भी मांग रही हैं, परन्तु अब तक यह व्यवहार नहीं हुआ, तो मैं श्रीमान् लक्ष्मीचंदजी साहब के लिए दो चित्र-पट भेज नहीं सकता, क्षमा करिएगा। अस्तु.

प्रभु का स्वास्थ्य ठीक है, मेरा भी अच्छा है, अब शरदी कम पड़ गई हैं. एक साध्वीजी जो कि आप गए जब बीमार थी, वह देवलोक हो गई है, उनकी गति अच्छी हुई है और तो कर्म अपना काम करते ही हैं। और शेष सब कुशल होंगे जो याद करें, उन सभी को यथायोग्य कहना। सेवक, सुख का वंदन]

इस कार्ड के पीछे प्रभु के हस्ताक्षरों से :—

आपना सर्व पत्रो मल्यां, आ देहना फोटू आ हाथे व्हेंचाय एवी आशा राखवी व्यर्थ छे. माटे हवे एवी आज्ञा करता नहीं साध्वीजी ना देहान्त थी उदासीनता अधिक आवी गई तेथी शास्त्राव-लोकन के लेखन कार्य कइं ज नथी थतुं. अगास अहिं थी आज बील चार्ज मनीआर्डर थी मोकली आप्युं छे. आपने काकाजीए कहेलुं ते मोकलता नहीं. तत्व-विज्ञान नुं नवुं मेटर फरी थी बनावी बांठियाजी ने मोकली आप्युं छे.

बाबू रतनलालजी नी घड़ी मली. ते तेमने जणावशो जी. साध्वीजी ना कारणे त्यां जवानुं बनतां जवाब लखवानुं भूली गयो. फरी याद न आव्युं। बाबु विजयजी वडेर आनन्द मां हशे. केशरी बाबु प्रशान्त हशे. सौ ने आत्म-स्मरण कहेशो जी मले तो. बाकी ने मांटे मौन. अहिं पण उदासीनता वश केटलुं रही शकाय ए कहेवातुं नथी. शेष कुशलम्।

सहजानन्द आत्म-स्मरण।

(पत्रांक—११०)

ॐ नमः

अगास

२-४-५६

भव्यात्मन् ! (भँ० नाहटा)

बीकानेर थी क्रमशः जोधपुर, आबू, कुंभारियाजी, अंबाजी, तारंगाजी थई अहमदाबाद उतरवुं पड्युं। त्यां बीजे दिवसे चौदश होवा थी पुण्यवि० नो प्रवचन मां समय रोकायलो होवा थी पंडित

सुखलालजी अने पं० बेचरदासजी ने मल्यो. पं० सुखलालजीए प्रथम पोतानुं बधुं सांभल्या पछी अभिप्राय आप्यो के आध्यात्मिक जीवन ने सांप्रदायिकता मां आवद्ध करशो नहिं, बीजानी दोरवणीए कंइं ज फेर-फार करसो नहिं. समन्वय नी बावत मां हिन्दु-मुसलमान जो एक थाय तोज श्वे० दि० एक थाय. एवी जड़ता छे माटे तेवी कलाकूट छोडी जेम स्वपर हित थाय तेम स्वाभाविक जीवन जीवो. जेम बने तेम बीजानो मदद ओछी लो अने बीजा ने वधारे मदद आपो।

पं० बेचरदासजीए पण तेवीज सलाह आपी अने ते हृदय ना घणाज कोमल छे सरल छे. लघुता पण खूब छे. पं० सु० तो स्पष्टवक्ता अने कंइक कड़क मिजाज ना छे. छतां म्हारी साथे नम्रता अने प्रेम थी वातचीत करी.

फा० पूनमदिने ७।। वाग्ये प्रातः पुण्यवि० म० ने लूणसावाड़े मलवा गयो-घणा ज स्नेह थी बधाओए स्वागत कर्युं. तेमां एक मारा बाल-मित्र सूर्यसागरजी पण नव मास थी त्यां तेमनी साथे रहेता होवा थी मल्या-पुण्यवि० महाराज पण पेला बंने जण नी माफकज उदार भावे स्वाधीन पणे जे आत्मा थी स्फुरे तेम बाह्याचार राखवा कह्युं. वारे घड़ीए स्वांग पलटा नी आवश्यकता नथी एम चोक्खुं कह्युं. प्राचीन जैन मुनिओ ना बाह्याचार कांइ एक सरखा न्होता एम इतिहास कहे छे. भले क्रियाजड़ जीवो न माने तो तेनी परवाह शी? एम केटलीक वातो जणावी ३ कलाक सूधी अन्यान्य विषयक घणा हर्ष थी मल्या. जेसलमेर ना गुप्त भण्डार विषे सहजे मैं जणाव्युं तो तेमणे कह्युं के आप गमे तेम करी ते खोलावो. मारे आगमो मां घणे स्थले सन्दिग्ध स्थलो होवाथी संशोधन नी मदद मां कदाच मदद मले—आ काम अम जेवा ने मदद आपवा माटे अवश्य करो ज. मैं कह्युं प्रसंगवश जोइ लेवाशे. जो कोटावाला बुद्धसिंहजी मलशे तो कइंक जो ते रस ले तो आ काम थाय. तेवी प्रेरणा करीश. बाकी मारा मा तेवी ताकात नथी. आम त्रणेनुं मिलन थयुं. त्रण वार सत्संग थतुं-घणा नव नवा परिचयो थया. पचाशेक जण ईडर साथे लई एम० वाडीलाल प्रेस वालाए खूब उत्साह दाखव्यो. पछी अंहि आव्या· अंहि नुं वातावरण विचित्र हतुं तेमां सुधारो थतो जणाय छे.

वडवा आश्रम ना आगेवानो एक सप्ताह मांटे त्यां लइ जवा नुं मंजूर कराव्युं छे. तेथी आवती १३ रविवारे त्यां जईशुं. पाछा अंहि अवाय एवो अंहि वालाओ नो आ काम ने अंगे आग्रह छे.

श्री मनोहरलालजी वर्णीजी त्यां छे तेमने मलजो. अने तेमना केवा अंतरंग परिणाम छे ते जाणी लेजो. समन्वय थाय तेवो एम नो भाव छे के नहिं? थाय तो केवी रीते? ते श्री छोटेलालजी साथ ने मली विचारजो.

अंहि रावजी भाई साथे बेसी विचार विनिमय करुं छुं. हजु मन मान्युं काम शरु थयुं नथी. वड़वे थी पाछा फर्या बाद कदाच थाय.

हाथरस मां वांठियाजीए 'राजचन्द्र-मिशन' स्थाप्युं अने महोत्सव पण उजव्यो. एम तेमनो पत्र आजे मूक भावे कहे छे.

रतनु बाबू नी घड़ी यकायक पड़ी जवा थी बगड़ी गई. ते केशरी—साथे पाछो मोकली छे. केशरी बाबू, विजय बाबू, रतनु बाबु आदि जे कोई याद करे तेने आ० स्म०

पत्रोत्तर अहिंज पाठवशोजी.

—सहजानंद

(पत्रांक—१११)

ॐ नमः

श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम
स्टे० अगास वाया आनंद
२०-४-५६

सत्संग-प्रिय प्रभावनोत्सुक मुमुक्षु श्री बाँठियांजी

आपका पत्र मिला। साहित्य भेंट रूपेण आज भेजा जा रहा है। २६ की बैठक में जो देश-काल-परिस्थिति के अनुकूल कानून बनाने हों, आप सभी विचारक वृन्द बना लीजिए।

आपने जो जो मिशन की मदद के लिये विचार उपस्थित किए हैं, वे सभी यहाँ ता० २४ को होने वाली स्थानोय संस्था के ट्रस्टी मण्डल की मीटिंग में पेश किये जायेंगे। तदनंतर आपको सूचित किया जाएगा।

इस शरीर की जन्मभूमि कच्छ डुमरा में जिनालय का हीरक महोत्सव, एक देवकुलिका का जीर्णोद्धार होने से पुनः प्रतिष्ठा, हाई स्कूल की स्थापना ३०० विद्यार्थी के लिये बोर्डिंग हाऊस का शिलान्यास श्रीमद् राजचन्द्र सर्वोदय मण्डल की स्थापना एवं वर्षीतपादि का उजमणा वगैरा अनेक धार्मिक कार्य प्रसंग वश वहां के अगुए बहुत जन आकर इस शरीर को वहां ले जाने के लिये मजबूर किया। अतः वै० कृ० सप्तमी को यहां से क्रमशः राजकोट, ववाणिया होकर वहां जाना होगा। वहाँ वै० कृ० ११ से शुक्ला षष्ठी पर्यन्त महोत्सव चलेगा। कई हजार जनसंख्या एकत्रित होगी। २१ साल बाद वहाँ जाना हो रहा है। कच्छ भर की जनता का अतीव उत्साह है। मात्र सप्ताह के लिये ही जाना मंजूर करना पड़ा है। तदनन्तर आगे का कार्यक्रम विचारा जाएगा।

हाथरस में क्या कोई सिद्धहस्त साक्षर मिलेंगे? वहां एकान्त में लेखन क्रिया के उपयुक्त स्थान मिल सकेगा।

भँवरलालजी नाहटा यहाँ हैं। यहां से खंभात-अहमदाबाद जायेंगे।

मैं वै० कृ० ६ पर्यन्त यहां हूँ। सप्तमी को प्रयाण होगा! बाद वै० शुक्ल १।८ आठ दिन शायद डुमरा स्थिरता होगी। यदि पत्र देना हो तो "सहजानंदजी Dumra Kutch इस पते से मिल जाएगा।

यहाँ साक्षरवर्य मुमुक्षु बंधु श्री रावजी भाई से आपका पत्र व्यवहार चालू करवा देता हूँ। इन्हीं से गुजराती में लिखे समाचार का आप हिन्दी में उत्तर देते रहिये।

कल महावीर जयन्ती के हेतु बोरमद जाने का निश्चय हुआ है। परसों वापस आऊंगा।

ॐ शांतिः शांतिः शान्तिः

महजानन्द सादर आत्म-स्मरण

(पत्रांक—११२)

ॐ नमः

Dumra Kutch

१४-५-४६

सत्यात्मन्!

भाई मल्यु, आजे श्रीमद् राजचन्द्र सर्वोदय संघ नी स्थापना एक नियत स्थान मां श्रीमद् ना चित्रपट्ट नी स्थापना तथा बोर्डिंग मां पण तेमना चि० नी स्था० तेमज मूलमंदिर नी सामे ना द्वार उपर श्री·······केवली भगवंत नी स्थापना निर्विघ्नतया अति उल्लास थी दश हजार थी अधिक मानव मेदनी नी वच्चे थई गई. आम अगिआर दिवसो नो महोत्सव आजे पूर्ण थाय छे. भोजनादि नी व्यवस्था मां स्थानीय संघे लाखेक रु० नो द्रव्य व्यय करी सुकृत उपार्जन कर्युं छे.

नित्य त्रण वखत ६ll ७ प्रातः, बपोरे ३।४ अने रात्रिए ८ll-१०ll एम पांच कलाक सत्संग थतुं रह्युं. हाइ स्कूल माटे पण अर्धालाख नी भरपाई आ अवसरे थई गई.

हवे परम दिवसे प्रभाते प्रयाण करी समीप नी पंचतीर्थी करता हालापुरमां भोजन लइ वच्चे अनेक ग्राम लायजा. गोधरा, मांडवी, आदि थता, कच्छ कोठाय, सांजे जवाशे. त्यां रवीवारे श्रीमद् राजचंद्र सर्वोदय मण्डल नी स्थापना थशे. पछी मुजपुर आदि थता भद्रेश्वर नी यात्रा करता भूज नगर जवाशे—त्यां श्री उपाध्यायजी भगवान ना दर्शन-मिलन थशे. त्यांथी ता० २० लगभग आबू जवाशे, त्यां अमुक समय लेखन क्रिया माटे रोकाई चौमासा माटे नुं प्रोग्राम आगल ऊपर विचाराशे. बीकानेर थी पण पत्र छे. हजारीजो नो पण पत्र हतो.

आवती वखते भूज महाराजजी न्होता. हवे मलशे. बुद्धिमुनिजी म० अंजार थी विहार करी पालीताणा भणी आगल वध्या ना समाचार छे तेथी मने मली शकाय नहीं. स्वास्थ्य तेमनुं सारुं नथी. ॐ

महजानंद आत्म-स्मरण

श्री मिठुभाई श्री गुल अने हीराभाई आदि साथे छे. बधाय मजामां छे.

(पत्रांक—११३)

ॐ नमः

हाथरस ३०-६-५६

सेकसरिया उद्यान

सद्गुणानुरागी सत्संग योग भक्तवर श्री शुभेराजजी,

श्री भँवरलालजी आदि सपरिवार जोग—कलकत्ता.

अमो सौरीपुर, वटेश्वर अने आगरा नी यात्रा करी आव्या. आजे कम्पिलाजी जइए छीए. त्यांथी श्री कामताप्रसादजी ना आमंत्रण थी अलीगंज तेमने मली पाछा अहिं आवीशुं.

लेखन क्रिया मां मात्र भक्ति-कर्तव्य श्री प्रदीपजी M. A. L T. द्वारा लखावायुं. वाद यात्रार्थ गया. अहिं पाछा फरतां प्रदीपजी वगेरे अन्यत्र कार्य मां गयेला हता. अहिं आ वाग मां नी कालेज ना मालिक अने प्रोफेसर एवा सुयोग्य साक्षरो ने क्रमवद्ध गोठवी आपवा कहे छे. हजु छुट्टी पूरी थई नथी. छतां वे दिवस मां वीजा साक्षरो-शिक्षको आवी जशे.

अहिं स्थंडिलभूमि नी पूरी प्रतिकूलता छे. पासे मील अने स्टेशन नी गड़वड़ तथा वंदरो ने अंगे वाग मां हा हू. कूवा पर पाणी भरनाराओ नी पण गड़वड़ ए आदि प्रतिकूलता छे ते सिवाय तो वधुं ठीक छे. चोमासा माटे आ लोको आग्रह तो करे छे. पण साक्षरो आव्ये थी जोयुं जशे. अलीगंज थी पाछा फर्ये साक्षरो नी योग्यता अने व्यवस्था जो जची तो अहिं. अन्यथा वीकानेर आदि मां ठाणेणं···होगा। स्वास्थ्य ठीक छे. आप सौनुं पण तेम हो! विचक्षणश्री जी म० जयपुर चौमासा नक्की हो गया। शेष कुशलम्—ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

सहजानन्द आत्म-स्मरण

(पत्रांक ११४)

ॐ नमः

हाथरस

६-७-५६

भक्तवर श्री शुभेराजजी एवं भँवरलालजी आदि सपरिवार जोग :

हमें पत्र मिला। कंपिलाजो यात्रार्थ गये थे, वहाँ से जिन विम्व-शीर्ष एवं सौरीपुर से प्राचीन ईंट लाए हैं। वीकानेरी-चोर आदि सामग्री वीकानेर न पहुँची हो, तो आप साथ में लाइएगा।

कम्पिल का इतिहास प्रसिद्ध है, वहाँ सुनाया जाएगा, यहां स्थान पसन्द नहीं है। अतः आज मध्याह्न को प्रयाण करके शाम तक देहली-दादावाड़ी पहुँचने की सम्भावना है, कोटा वाली सेठाणीजी भी आज वहाँ पहुँच रही हैं। वहाँ दो चार दिन ठहरने की भावना है! वाद में हम स्वतः वीकानेर पहूँच जावेंगे। आप अपना काम आराम से निपटा कर यथावकाश आइये, उतावल न करिएगा।

'भक्ति-कर्तव्य' छप गई, साथ में लेता जा रहा हूँ। चौमासा की अव कहीं अन्यत्र कल्पना नहीं है, फिर भी यदि भाग्यवशात् कहीं रुकावट नहीं हुई तो वीकानेर की तो है ही।

स्वास्थ्य ठीक है। वहाँ सभी को धर्मस्नेह पूर्वक जिन स्मरण।

सहजानन्द आत्म-स्मरण

(पत्रांक—११५)

ॐ नमः

शिवबाड़ी बीकानेर

२८-७-५६

श्रीमान् दलीचंदजी बाफना और कोजमलजी,

सादर जयजिनेन्द्र ! आज रोज आपका हाथरस लिखा हुआ पत्र मिला है। पू० महाराज साहब का चातुर्मास बीकानेर से तीन मील दूर शिवबाड़ी है, यहाँ एकान्त में नाहटाजी की कोठी है उसमें ठहरे हुए हैं। यहां लेखन कार्य चालू है इसलिए कोई प्रवृत्ति नहीं रखी है और सभी को आने की मनाई है। आपके लिये नीचे लिखा हुआ सन्देश पूज्यश्री ने भेजा है —

'हे संतो ! तमने सत टकाववो होय तो स्वरूप मांज संताई ने रहो। नहीं तो मोह मदारी ना मांकड़ा थई चौरासी ना चोगान मां नाचवुं पड़शे. विषय कषायो नो संग झेर हलाहल झेर छे. झाझो लोक संग करवो ते झाझा झेरी कीटाणुओ भेगा करवा तुल्य छे. परिणामे कषाय मां कषाय मली झाझु विष पान करी. सत् ने मूर्छित करी संत पणु मार्यु जाय छे. मूर्छित दशा मां दंभ छे. ज्यां दंभ छे त्यां मद छे, ज्यां भय छे त्यां कंपन छे ज्यां कंपन छे त्यां कर्म अणुओ नुं आकर्षण अने बंध छे. ज्यां कर्म सम्बन्ध छे त्यां पड़दां छे ज्यां पड़दो छे त्यां आत्म दर्शन सम्भवे नहीं ज्यां आत्म दर्शन न होय त्यां आत्म समाधि होय ज क्यां थी ? माटे हे संतो ! दर मां रहेला डर ने काढो सत् मां संताई ने रहो''

मनन करी जीवन मां उतारवा जेवा वचनो छे. लि० भ० सुखलाल

(पत्रांक—११६)

ॐ नमः

शिवबाड़ी-बीकानेर

१८-८-५६

परम कृपालु देव को पराभक्ति पूर्वक त्रिकाल वन्दना !

जब रोम - रोम में खुमारी चढ़ जायगी,
अमर-वर-मय ही आत्म दृष्टि हो जायगी
और केवल तूं ही तूं ही मनन करने का भी
अवकाश नहीं रहेगा, तब ही आपको अमर-वर
के आनन्द का अनुभव होगा,
परमात्मा, निर्विकार होने पर भी, केवल प्रेममय
परा भक्ति के ही वश है—
इस रहस्य का जिनके हृदय में अनुभव हो चुका है,
उन ज्ञानियों की यह परम शिक्षा है।

—परम कृपालु देव !

भव्यात्मा श्री दलीचन्दजी एवं वैद्यराज,

खामणा पत्र मिला। अनादिय परिभ्रमण काल में किसी भी भव में वर्त्तमान क्षण तक इस जीव ने आपको किसी भी प्रकार असमाधि उपजाई हो तो उसके लिए में परम कृपालु देव की साक्षी से उत्तम क्षमा चाहता हूँ। मेरी ओर से सभी को क्षमा ही है।

वहाँ *मुता साहिबचंदजी, मूलचंदजी, पुखराजजी, वस्तीमलजी आदि सभी को मेरी ओर से* सांवत्सरिक खामणा कहें। ॐ शांतिः

सहजानंद

(पत्रांक—११७)

ॐ नमः

अगास
२२-८-५६

संत शरणताः—

विना नयन पावे नहीं, विना नयन की वात;
सेवे सद्गुरु के चरण, सो पावे साक्षात १

—जे चक्षु विना नो होवा छतां चक्षु वगर कोई ने पण प्राप्त थतो नथी, आ केवी आश्चर्यजनक वात ? आत्मा चक्षु इन्द्रियो आदि रहित छे अने दिव्य-चक्षु वगर तेनी प्राप्ति पण शक्य नथी. जेथी दिव्य-चक्षु नी प्राप्ति माटे केवल दिव्य-दृष्टि वाला सद्गुरु नी ज सेवा अनिवार्य छे.

जे कोई तेवा सद्गुरु नी चरण सेवा करे छे, तेज आत्मसाक्षात्कार करी शके छे; बीजो नहीं १

बूझी चहत जो प्यास को, है बूझन की रीत;
पावे नहिं गुरु गम विना, एही अनादी स्थित २
एही नहिं है कल्पना, एही नहीं विभंग;
कयि नर पंचम काल में, देखी वस्तु अभंग ३

—जो तने आत्म साक्षात्कार नी पिपासा छे, अने तेने शान्त करवा नी आवश्यकता छे, तो ते माटे उपर बतावी तेज रीति छे, तेने अपनावी ले, केम के गुरुगम विना आत्म प्राप्ति कोई ने पण कदी थतो नथी, आ मर्यादा नवीन नथी पण अनादि कालीन छे. आ मर्यादा थीज आ कलिकाल मां पण केटलाय पुरुषोए आ अभंग-वस्तु नो अर्थात् आत्मा नो साक्षात्कार कर्यो छे. आ कोरी कल्पना अथवा अतीन्द्रि-ज्ञान नुं मिथ्या-मद नथी पण अनुभव कथन छे...२-३

नहिं दे तुं उपदेश कुं, प्रथम लेहि उपदेश;
सब से न्यारा अगम है, वो ज्ञानी का देश ४

—ज्यां सूधी तारी अंतर नी आँख उघड़ी नथी, त्यां सूधी भला तूं मार्गदर्शक केम थई शके ? कारण के आंधलो छे. माटे भाई ! तुं उपदेश आपवा नुं मांडी वाळ, अने लेतां सीख. तारे आ ज प्रथम

कर्त्तव्य छे, तुं ज्ञानीओ नी देखा देखी न कर, केम के ज्ञानीओ नी दुनिया आ वधी आंधली दुनिया थी न्यारी छे, माटे ते तारा थी कली शकाय तेम नथी'''४

जप तप और व्रतादि सब, तहाँ लगी भ्रम रूप ;
जहां लगी नहीं संत को, पाई कृपा अनूप'''५

—ज्यां सूधी तें अनुपम संत-कृपा प्राप्त करी ने आत्म लक्ष नथी साध्यो, त्यां सूधी तारी दृष्टि अने चाल उलटी दिशा मां छे. अने त्यां सुधी तारा तप जप अने व्रत आदि बधाय साधनो संसार परिभ्रमण नां ज पोषक छे—नाशक नहीं माटे ते बधाय भ्रम रूप छे'''५

पाया की अे वात है, निज छंदन को छोड़ ;
पीछे लाग सत्पुरुष के, तो सब बन्धन तोड़''६

जो तने कृपा पात्र बनवुं होय, तो तुं मनने मते दोड़वा नुं मूकी दे, बीजा बधाय प्रतिबंधो तोड़ी ने तुं झटपट कोई देखता पुरुष नी पाछल लागी जा. आज तारा हितनी वात छे, माटे मान्य कर।

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति

—सहजानंद

आ प्रमाणे 'बिना नयन' काव्य नो आज प्रभाते अर्थ लख्यो छे.
जुओ, कृपालु देवे केवा भावो अेमां भरी राख्या छे ? मनन करवा योग्य छे ने ?

(पत्रांक—११८)

(शिवबाड़ी) पर्यूषण बाद.

भव्यात्मा श्री देवीलालजी, श्री दुलीलालजी आदि.

प्रभु कृपया अत्र आनंद है। लेखन क्रिया में व्यस्त हूँ। फलतः असंग भावना बढ़ रही है। कोई उचित गुफाओं में पुनः अप्रतिबद्ध रूप से विचरने की भावना जोर कर रही है यहाँ तो वैसा स्थान नहीं। यद्यपि स्वतन्त्र कोठी है। सब व्यवस्था श्री अगरचंदजी के बड़े भाई साब की ओर से है। वे स्वयं भक्तकोटि के हैं। ब्रह्मचर्य व्रतादियुक्त हैं। छुटना चाहते हैं। तथापि तपोभूमि का तो यहां अभाव-सा है। 'तत्व-विज्ञान' हिन्दी में अगास आश्रम की ओर से तैयार कर रहा था। इसमें मूल गुजराती में जो भाषा की दृष्टि से अव्यवस्था है, उसे ठीक करके लिखना चाहता था पर वहाँ मतभेद हो जाने से बंध रखा। फिर भी मेहनत कुछ की है, अतः उसमें से अमुक अंश यहां से छप जायेगा। अगास वालों में गच्छ वासियों की सी दशा है। मंदिर आदि का काम कैसे चला ? श्रीमद् विषयक क्या किया ? सत्संग किस तरह चल रहा है ? लिखना यथासमय। सभी को सांवत्सरिक खामणा कहें। ॐ शांतिः.

—सहजानन्द

(पत्रांक—११९)

ॐ नमः

सूरज कोठी

भव्यात्मा, (रांकाजी)

पत्र मिला। ताखाजी एवं भानपुरा की परिस्थिति ज्ञात हुई। यद्यपि ताखाजी उत्तम स्थल है, पर गुफाऐं कम है और उमेद्वार ज्यादा हैं। यह शरीर का भानजा भी (बीस की वय) आजीवन साथ रहना चाहता है और भी कितने साधक आना चाहते हैं। अतः खंडगिरि में जो राणी गुफा जो एक आश्रम तुल्य है, उसकी आवश्यकता प्रतीत होती है। उसके लिये जाँच और व्यवस्था के लिए प्रयत्न चालू है। ईडरगढ़ पर भी कुछ गुफाएं हैं। भानपुरा से १ मील दूर नसीयांजी का स्थान भी उत्तम हो सकता है। क्या वहां आस-पास गुफाएं नहीं है ? पत्र द्वारा तलाश करा ली जाय।

ताखाजी विषयक आप इस वक्त कोई व्यवस्था का ख्याल किंवा प्रयत्न न करें। यदि प्रारब्ध-वश उस ओर आना हुआ, तो देखा जायेगा। और वैसा निर्णय भी यथा प्रारब्ध किया जायेगा। इस वख्त तो विकल्प करना उचित ही नहीं। ज्ञात रहे।

परम कृपालु देव का चित्रपट्ट यथा समय स्थापन कर लिया जाय। उनकी अनन्य भक्ति में अभिवृद्धि की जाय अगास-आश्रम वासियों की ओर कोई सवाल न बनाया जाय। 'जगत जीव है कर्माधीना अचरज कछुअ न लीना' यहां आने के लिये भावना को स्थगित रखी जाय। सभी सत्संगीयों को आत्मस्मरण सम्प्राप्त हो। ॐ शांतिः.

सहजानंद

(पत्रांक—१२०)

ॐ नमः

सूरज कोठी-शिववाड़ी

बीकानेर

अनन्य शरण प्रदान करने वाले परम कृपालु देव को पराभक्ति पूर्वक नमस्कार हो।

भव्यात्म वृन्द, (रांकाजी)

चिट्ठी कल मिली। इस वर्ष अधिक परिभ्रमण हुआ। ऊन से बीकानेर आने के बाद पुनः अहमदाबाद, अगास, खम्भात, वड़वा होकर राजकोट, मोरबी, ववाणिया से कच्छ जाना हुआ २२ साल बाद जन्मभूमि वाले इस शरीर को हठात् ले गये।

बड़ा सत्संग समारोह रहा—गुरुजनों से मिलना भी हुआ वहाँ से आबू गया। वहां की मारवाड़ पंचतीर्थी तारंगा-ईडर कुंभारियाजी की भी यात्रा हुई। जयपुर, आगरा, हाथरस, सौरीपुर, कंपिला की भी यात्रा हुई। देहली होकर पुनः यहां आना हुआ। अब असंग भावना है। अबके चौमासा

भर में लेखन क्रिया चालू है। किसी भी सत्संगीजनों को न आने देने में ही कुशलता है। सभी को मना है, अतः कोई भी नहीं आये। आप सभी सत्संगी वाचन-मनन-भक्ति आदि में तन्मय रहें मंत्र स्मरण में विस्मरण न हो यही तरने का उपाय है।

धनराजजी को तथा वहाँ को सभी दि० श्वे० प्रियजनों को हार्दिक आत्म-स्मरण पूर्वक धर्मलाभोस्तु।

स्वास्थ्य अच्छा है—आपका भी होगा—सुख मुख में है ॐ शांतिः

भवदीय
सहजानंद

(पत्रांक—१२१)

ॐ नमः

१३-६-५६

भक्तवर! भँवरलालजी

अनादि कालीन भव-पर्यटन में इस जीव ने किसी भी भव में किसी भी समय में कोई भी अपराध यदि किया हो, तो उसके लिए मैं आप सभी से उत्तम क्षमा चाहता हूँ, कृपया क्षमा प्रदान करें। मेरी ओर से सभी को क्षमा ही है।

जैन जगत में द्वितीय-राजचंद्र की उपमा बाँठियाजी द्वारा दी गई, जिसे पढ़कर अगास आश्रम वाले कुपित हुए एवं 'तत्व-विज्ञान' को बिना देखे ही नामंजूर कर लिया। हमें खुशी हुई—'भलु थयुं भांगी जंजाल, सुखे भजसुं श्री गोपाल' भक्ति-कर्तव्य' सवा फर्मा भर छपा कर बन्ध कर दिया। मन चाहा काम न हो सका। अतः स्थगित रखा।

स्वास्थ्य अच्छा है। हरखचंदजी ने वहां के सब हाल सुनाये। 'जगत जीव है कर्माधीना' केशरी बाबू और रतु बाबू के पत्र थे। आना चाहते हैं, पर यहाँ कोई सत्संग का क्रम नहीं रखा। अतः आकर क्या करेंगे। पारस, पद्म और आविका आदि एवं पेढी वाले सभी परिचितों से मेरी क्षमापना कहियेगा। ॐ शांतिः शांतिः

सहजानंद आत्म-स्मरण

(पत्रांक—१२२)

ॐ नमः

सूरज कोठी, शिवबाड़ी
बीकानेर १५-६-५६

अनन्य शरण ना दाता श्री परम कृपालु देव ने उल्लसित भक्तिए नमस्कार।

भक्तवर! (श्रीकान्तिलाल नेमचंद)

पत्र मल्युं. आ आत्मा ना भवोभव-सम्बन्धी थयेला अपराध नी उत्तम क्षमा इच्छुं छुं. मारा तरफ थी सौ ने खमाउ छे.

शरणागति-तत्व नुं रहस्य अनुभववा माटे दुःख देव नी पूर्णतः कृपा अनिवार्य छे. जेम भरसमुद्र नी मध्य श्रेणिए पसार थती स्टीमर एकाएक वावाझोडा मां सपडाइ डूबवा लागे त्यारे तेने शरणे बेठेला मुसाफरो ने वचवा नी शक्ति वापरी लीधा छतां सफलता न मले त्यारे तेमना अन्तरनी जे वेदना तेमने हचमचावी नाखे छे. ते दशा मां ते जीवो मां जे अदृश्य-शक्ति नी मदद माटे दीनता प्रगटे छे. ते दीनता नी उत्कृष्ट मर्यादा मां प्रभु नी शरणता भरी पोकार जे हृदय मां उठे छे ते हृदय मां ज दुःखहारी प्रगट थई ते दुःख ने हरी ले छे अने ए माटेज तेनुं नाम 'हरि' प्रसिद्धि मा आव्युं छे. आवी परम दीनता नी जेटली उणप छे प्रभु प्राप्ति मा तेटलीज वाधा छे. तेने बीजो कोई टालवा समर्थ नथी, पण जीवे पोताने पोते ते माटे सत्संग ना आश्रये तैयार करवो पडशे. सत्संग नो योग न होय त्यारे कृपालु देव नी वाणी नुं वारंवार चिन्तन-मनन पूर्वक आराधन अनिवार्य छे. तेमनी मुद्रा नं हृदय थी अवलोकन, तेना बतावेला गुप्त रहस्यों नुं—मन्त्रो नुं निरन्तर रटण अने वच्चे नडता प्रतिबन्धोनुं छेदन अनिवार्य छे. सुखी अर्थात् शाताशील जीवन ए पण नडतर छे. भौतिक अनुकूलताओ मात्र आ काम मां बाधक छे. ते अनुकूलता नी घाटी पार करी प्रतिकूलता नी घाटीओ मांथी जे जीवन पसार थाय छे. तेने शरणागति तत्व नी खरीखूबी अनुभवाय छे. अेम ज्ञानिओनु कहेवुं छे. अने ते सत्य लागे छे. अेज माटे वधी अनुकूलताओं ने लातमारी, भगवान महावीर १२॥ वर्ष लगी प्रतिकूलताओनी घाटीओ ओलगता आगल वध्या त्यारे ज तेओ पोताना पूर्ण ज्ञान दर्शन युक्त पूर्ण स्वरूप-साम्राज्य ना पूर्ण पणे भोक्ता वनी शक्या. एज माटे कृपालु देव पण मोहमयी नो त्याग करी असंग दशाए असंग क्षेत्रे वारम्वार जता अने रहेता हता. आ तेमनी चर्या आपण ने एज शिक्षा आपे छे के अनुकूलता नी दासता छोडो अने प्रतिकूलता नी घाटीओ पार करवा कमर कसो.

पगे वेडीओ छे अेम जेणे जाण्युं अने तेने तोड़ी मुक्त थवाना उपाय पण शीखी लीधा, छतां वारंवार केम छूटशुं ? केम छूटशुं ? एम चिन्ता कर्या करे, पण तेने तोडवा नो जो प्रयोग न करे तो ते जीव केवी रीते छूटी शके ? अेणे तो झटपट वधी खटपट छोडी वंधनो ने चटपट तोडवा मंडीज पडवुं पण केम थशे ए विकल्प ज न करवो, आम जीवने समझावी ने वलीआ थाओ. एज भलामण.

स्वास्थ्य सारूं छे. आपना सत्संगीओनुं पण तथैव हो—सौ ने धर्मस्नेह पूर्वक जय सद्गुरु वंदन सह सहजात्म स्मरण सम्प्राप्त थाओ. ॐ शान्तिः

सहजानन्द

(निर्दम्भ भक्ति करशे तेने ज्ञान निर्मल थशेज.)

(पत्रांक—१२३)

ॐ नमः

१३-९-५६

सद्गुणानुरागी श्री मेघराजजी साव एवं श्री वंशीलालजी तथा तनसुख आदि (गवालपाड़ा)

आपका खामणा पत्र मिला। इस भव पर्यन्त में किसी भी जन्म में किसी भी समय कोई भी

अपराध इस आत्मा से यदि हुआ हो तो उसके लिये मैं भी क्षमा चाहता हूँ, जिसे आप सभी स्वीकारिएगा, मेरी ओर से सभी को क्षमा है।

बांठियाजी के लेख में द्वितीय राजचन्द्र की उपमा इस पामर को दी गई थी, जिसे पढ़कर आश्रम वासी नाराज हो गए और 'तत्व-विज्ञान'—हिन्दी जो हम तैयार कर रहे थे, नामंजूर कर दिया। अतः हमने भी कुछ गौणता कर दी। यह छोटी पुस्तिका भी सवा-फर्मा भर छपवा कर बन्द कर दी।

गांधीजी का पत्र आज ही लिख कर पूर्ण किया। कोठारीजी का आने का क्रम अब से चालू होगा, जिससे इतने दिन मनचाहा काम नहीं हो रहा था। भाईजी के आग्रह से लिखने का काम चालू रखेंगे अन्यथा अब केवल असंग रहकर भक्ति में लगे रहना है। इसी में मजा है। आप सभी आनन्द में होंगे?

आप तो हमारे लिए बहुत कुछ कर रहे हैं। फिर भी गुफा की खोज करके उसमें बैठाना बाकी रह गया है। पर वर्षा में इधर-उधर जाना ठीक नहीं है। अतः अब तकलीफ मत लीजियेगा। पानी लांघ कर जाना आना खतरा है। ॐ शान्तिः

सहजानन्द—सादर आत्म-स्मरण

(पत्रांक—१२४)

ॐ नमः

२४-१०-६६

अध्यात्मा (मोहनलालजी छाजेड़)

आ चौमासा मां सत्संग आयोजन तो नथी अने असंग वृत्ति छे तेथी सत्संगीओने आववा नी आज्ञा नथी आपी शक्यो. मुंबई थी तो आ शरीर ना सगा आव्या ते पण अमुक संजोगो मां—तेथी तेमनी वात जुदी कलकत्ता वाला माजी तो जोधपुर छे.

तमने आज्ञा रूपे तो नथी लखतो पण स्वाभाविक एक दिवस मली जवानुं थायुं होय तो······ पण ते थवाने माटे नहीं. मात्र रविवारे बे कलाक सत्संग राख्युं छे. आ वात गुप्त राखी ने वर्त्तजो.

अहिं सम्भालवा नी ताकात नथी. ॐ शांतिः

सहजानन्दघन ना धर्मलाभ

(पत्रांक—१२५)

ॐ नमः

२४-१०-६६

मत्थर! (भँवरलालजी नाहटा)

आपनुं ता० १० नुं पत्र गई काले अनायास हाथ चढ्युं. काकाजी ने अहिं राखवानी भावना छे. तेथी ते वखते न वंचाव्युं होय खण्डगिरि एम तो नथी थयुं. अमे जेटलुं रहेवा इच्छीए तेटलुं परमीशन मले-

साथे गुफाओनुं पुरातत्त्व साचवी ने फाटक वगेरे नुं वन्दोवस्त थई शकतो होय. अने दि० समाज तरफ थी कोई वांधो न होय तो जवानुं उचित धार्युं छे अन्यथा नहिं. आ व्यवस्था थई शके तो करो. नहिं तो चुप रहो. वर्षो लगी रहेवाय तो घणी प्रगति स्व-पर नी थाय. आदर्श जीवन रूपे साधनालय बने. भट-कवुं गौण थाय. तपोभूमि छे. जेथी एक संस्था जेवुं भावि मां बनी शके. तेम जो व्यवस्था मले तोज त्यां जवुं छे. नहिं तो बीजे जोयुं जशे,

हिन्दी भाषान्तर वन्द छे. ते नां कोठारीजीनुं अस्वास्थ्य मुख्य कारण छे. बाकी ना गौण कारणो नी वात जुदी. तेओ अस्वस्थ रहे छे, ऊपर दीवाली आवी. काम पण घणा एटले हुं मारे आत्म-धून मां रहुँ छुं. कइंक वाचन पण करुं छुं पण मन धून सिवाय अन्यत्र गौण छे. धूपियाजी नथी आव्या. दादी मां जोधपुर छे; अहिं बधाने सचवाय नहिं आ शरीर ना जीजी, काकीवा अने भाणेज अहिं आव्या छे. भाणेज सुख० नी माफक साथे रहे छे. आनन्दघन स्तवन तो ब्यावर वाले छपवा रहे हैं। प्रेस कापी काकाजी तैयार करा रहे थे।

खरतर गच्छनायकों के दबाव के कारण साध्वी समुदाय ने हमसे व्य० बन्ध रखा है—ध्यान रहे, हमें कोई आपत्ति नहीं, जरगड़जी भी विचित्र व्यक्ति हैं, आप गुप्तता रखें।

खुरदा रोड मैंने लिख दिया है कि जब तक मेरी चिठी न आवे तब तक आप कोई चेष्टा न करें, चुप रहें। भले कोई कुछ लिखे; वैसे तो हमें रहना नहीं, गुफा हमें आश्रम की तोर मिले तो रहें। अधिक क्या ? स्वास्थ्य अच्छा है। बड़ी काकीसा (आपको) बीमार हैं; घर हैं। सुवासा अत्र है। ॐ शांतिः

सहजानन्द सौने सादर आत्म-स्मरण।

(पत्रांक—१२६)

ॐ नमः

हररामसर-घोरा

मिगसर शुक्ल द्वादशी २०१६

(भँवरीबाई खजानची)

हे आत्मा ! तू समझ ले और अच्छी तरह समझ ले कि विश्व में किसी भी आत्मा का विनाश नहीं होता। जब तक आत्म भ्रान्ति है, तब तक देह में तादात्म्य बुद्धि होने से एवं देह परिवर्तनशील होने के कारण देह के त्याग और ग्रहण के साथ आत्मा का मात्र अवस्थान्तर होता है, जिसे क्रमशः मरण और जन्म कहते हैं, वास्तव में आत्मा न तो मरती है और न जन्मती। फिर भी मरण और जन्म की कल्पना संसार भर में चल रही है। इस प्रवाह में जो जीव बहता है, वही दुख दरियाव में गुचड़कीयां खाता रहता है। यदि तुझे सुखी होना है. तो तू इस कल्पना को छोड़ और अपनी आत्मा के नित्यत्व को स्मृति में स्थिर कर ! तू आत्म-भावना का निरन्तर पुट लगाकर अपने मन को समरस रख ! याद

रख कि तू शरीर नहीं, स्त्री नहीं, पुरुष नहीं अपितु परमात्म स्वरूप आत्मा है। जैसी तेरी आत्मा है, वैसी ही सबकी है। यह कभी न पति है न पत्नी। पति पत्नी की कल्पना ने ही यह संसार जाल फैला रखी है। तू अपनी ज्ञानाग्नि से इस जाल को सुलगा दे और खाक उड़ाकर मुक्त होजा।

तू जिस देहधारी के देहविलय से सन्त्रस्त है, उस देहधारी से उसी रूप में यदि तुझे मिलना हैं, तो एक काम कर! रोना-पीटना छोड़कर जिस कुल वंश में कदापि कोई न मरा हो, उसके किसी एक घर से थोड़ा-सा जल ले आ और उस राख के ढेर पर छिड़क दे,तो वह ढेर अपनी पुरानी शक्ल में बदल जायगा अवश्य तेरा काम बन जायगा। तू व्यर्थ मे क्यों चिल्ला रही है। उठ इतना-सा काम शीघ्र कर! तुझे अवश्य पता लगेगा कि इस विश्व तन्त्र में शरीर का बनना और बिगड़ना एक आवश्यक नियम ही है। यदि शरीर छूटे ही नहीं तो कोई भी इस जाल से छूट कर मोक्ष प्राप्ति भी नहीं कर सकता। अतः शरीर का छूटना जरूरी है, क्योंकि यह एक जेलखाना है। भला जल की बदली होने से क्या कोई कैदी मरता है? यदि जेल का मकान टूट भी जाय तो भी उससे कैदी को क्या नुकशान?

हे आत्मा! तू मृत्यु-मित्र से क्यों घबड़ा रही है। गहराई से मृत्यु के स्वरूप पर विचार कर! यदि तुझे रोना ही है, तो अपने ही मृत्यु के लिए जीते जी रो ले औरों के मृत्यु को क्यों रोना? तू शांत चित्त होकर इस तथ्य को समझ! समझ को सही करने पर तुझे अवश्य आनन्द होगा!

ॐ आनन्द आनन्द आनन्द

सहजानन्द

(पत्रांक—१२७)

ॐ नमः

२०-१-६०

भरूचर!

१० दिन पूर्व आपका कार्ड मिला, सब हाल ज्ञात हुए। कोठारीजी को मेरा खामणा पत्र दिया होगा? उनका मेरे पर प्रत्युत्तर नहीं आया। मिठुभाई को ऐसा घमण्ड है कि "सभा समक्ष काकीमाँ को सरल चमत्कार पुनः कर दिखाना होगा अन्यथा उनको हम समाज में बदनाम करेंगे।"

जब कि काकी माँ का कहना है "हम जादूगर नहीं है, किंवा दुन्यवी वाद-वाद से हमें कोई मतलब नहीं है—तुम्हें जो सुरा मिले वह करो! वितण्डा के जरिये तुम्हें कुछ भी हाथ नहीं आवेगा।"

धोरा विषयक आमंत्रण ज्ञात हुआ। चौमासा बाद जहाँ की स्पर्शना नियत होगी, वहाँ जाना होगा।

भगवान महावीर प्रभु का आल्बम बम्बई से श्री मेघराजजी और से किसी सज्जन ने भेजा वह कई दिन पूर्व यहाँ हमें मिला, पर पहुँच पत्र हम न दे सके। अतः उस विषय में क्षमा याचना है।

लाला दीपचन्दजी को देखना था, वता दिया। अव वह हमारे पास है, यथा समय मेघराजजी को सुप्रत करेंगे।

वहाँ श्री अगरचन्दजी आदि सभी परिवारवालों को एवं सत्संगीजनों को आत्म-स्मृति सह धर्म-लाभ कहियेगा। यहाँ लाला कृष्णचन्द्रजी आश्रम वनाने का कह रहे हैं, पर हमने अनुमति नहीं दी।

आज ता० २१ को देहली से अहिंसा मन्दिर के मालिक ला० राजकृष्णजी आये थे. उन्होंने भी 'कैलाश कल्प' के लिए स्वयं खर्च करने को अपनी इच्छा वतलायी एवं एक आश्रम पहाड़ी भूमि पर भी वे वनाने के लिए तय्यार हैं, पर हमने इजाजत नहीं दी। दीपावली वाद वे हमें देहली ले जाना चाहते हैं। हम तीनों का स्वास्थ्य ठीक है—आप सभी स्वस्थ होंगे? पालीताना एवं कच्छ-मांडवी हमने श्री वुद्धिमुनिजी एवं उपा० श्री लब्धिमुनिजी महाराज को खामणा पत्र भेजा था, प्रत्युत्तर भी आ गया। ॐ शान्तिः पत्रोत्तर दीजिएगा।

सहजानन्द—धर्मलाभ सह आत्म स्मरण

(पत्रांक—१२८)

ॐ नमः

३-२-६०

भक्तवर श्री शुभराजजी,

काकी की दशा अजीव-सी है ही। कभी-कभी चौके में काम करते-करते भयप्रद मामला हो सकता है। दो वार कम्वल एवं एक वार साड़ी सिगड़ी ने थोड़ी-थोड़ी जला दी, पर सुखलाल गन्ध आने पर सम्भाला। वह भी रक्षक देवों की गैवी मदद से कोई और नुकशान न हो पाया। अतः ये चौके के काम के नहीं हैं, फिर भी गाड़ी चला रही हैं।

अगरचंदजी के ऐतिहासिक डायरी में नोट कराइये कि :—

१ जिनदत्तसूरिजी—सौधर्म देवलोक के टक्कलक विमान में सौधर्मेन्द्र के गुरु स्थानीय त्राय-त्रिंशक देव हैं। नाम—देवेन्द्र देव।

२ जिनकुशलसूरि—भवनपती में इन्द्राणी पद्मावती के अंगरक्षक कर्मेन्द्र देव हैं, जो कि देवी को अत्यन्त प्रिय वन्धुवत् हैं।

मुझ पर दोनों की पूर्णतः कृपा महिरवानी है। मेरे भावि जीवन के वेश व्यवहार विषयक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने अपनी यही उदारता दिखाई कि उदयवश तुम जो कुछ कर रहे हो—वही तुम्हारे लिए ठीक ही है; मत ममत्वीओं से तुम्हें क्या मतलव है? अतः निर्भय रहो! तुम्हारा रास्ता अव साफ है। हमें पूछने की अव आवश्यकता ही नहीं रही।

कुशल गुरु का उपदेश है कि जीवन एक पानी के प्रवाह तुल्य है। यदि सीधा रास्ता नहीं मिला, तो वह आड़ा टेढ़ा निकल जाय. पर इधर-उधर चक्कर काट कर भी आखिरकार सीधे रास्ते आ जाय और अपने साध्य समुद्र से ही जा मिले। तुम्हारे लिए अब रास्ता सीधा है, आनन्द करो।
ॐ शांति शांतिः शान्तिः

यहाँ अगरचन्दजी, भँवरलालजी आदि सभी को आत्म-स्मृति एवं यहाँ से काकी आदि सभी का यथोचित्।

सहजानन्दघन

(पत्रांक—१२६)
ॐ नमः

१०-२-६०

ज्ञानी ज्ञान मगन रहे, रागादिक मल खोई;
चित्त उदास करनी करे, कर्म बंध नहिं होई।

ज्ञेय और ज्ञानका भेद विज्ञानी ज्ञायक स्वभाव मात्र में आत्म बुद्धि स्थिर करके शरीर, वाणी और संकल्प विकल्पात्मक मन आदि सभी ज्ञेयों को अपने स्वभाव से भिन्न जान करके उनके कर्ता और भोक्तापन से मुक्त साक्षी मात्र रह कर नयी कर्म संतति में नहीं उलझता अतएव अबन्ध रहता है एवं पुराना ऋण चुकाता हुआ क्रमशः भवसागर से पार उतरता है। पुराना ऋण चुकाते हुए उसे पर में अहम्—मम न रहने से द्वन्द्वों का भय नहीं रहता। कम्बल ओढ़े हुए युक्ति से मधुछत्ता लेनेवाले को मधुमक्खियाँ कैसे काट सकती? विविध वर्णवाली मिट्टी का भक्षण करते हुए भी क्या शंख कभी अपनी उज्वलता छोड़ सकता? अतः हे मुमुक्षु! तू तेरा संभाल! ज्ञाननिष्ठ रह। ज्ञानी तो मार्ग का इशारा कर सकते हैं, चलना तो तुम्हें ही होगा ॐ शान्तिः। शान्तिः शान्तिः

सहजानंद

इससे अधिक उपदेश की क्या आवश्यकता?

भक्तवर! (देवीलाल जी टोका)

प्रायः १ माह पूर्व पत्र मिला था। यहाँ प्रारम्भ में तो व्यवस्था की कमी दिखती थी, पर चंद रोज में ठीक हो गई। कुछ नया विकास भी प्रतीत हुआ, एवं यहां के सत्संगीयों का अत्याग्रह होने से उस ओर नहीं आ सके। शीतकाल प्रायः यहाँ ही समाप्त होगा। आगे जैसा उदय। यह स्थान धनराजजी देख गये हैं। उनका पहुँच पत्र भी मिला नहीं है। आपकी सत्संग मण्डली अपना विकास परस्पर के ही सत्संग से साधती रहे-यही वांछनीय हैं सभी को हार्दिक आशीष है। स्वास्थ्य अच्छा है। रविवार को पूर्व क्रमानुसार सत्संग होता है। अब मौसम अच्छा है। यहाँ भी होगा। पत्रोत्तर दें। ॐ शान्तिः

(पत्रांक—१३०)

ॐ नमः

१६-२-६०

भव्यात्मन्.

दादा श्री जिनकुशलसूरि महराज नी स्वर्गगमन तिथी फाल्गुन वदि ५ नथी पण फाल्गुन वदि १५ एटले अमावस्या छे. एम तेमनो ज खुलाशो मलतां लखी जणावुं छुं. जेनी नोंध लेशो जी. पेपरो मां गच्छ-वासियो ना समाधान अर्थे कंई लखवुं होय तो मर्यादा पूर्वक आ देहधारी नी स्तुति विना ज निखालश भावे लखी मोकलवा मां हरकत नथी, बाकी समजी ने शमाई जवा मां कल्याण छे.

भाईजी ऊपर मोकलेल पत्र मल्युं हशे. अहिं सर्व क्षेम कुशल छे त्यां सौने सदैव हो !

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

सहजानन्द आत्म-स्मरण

ता० क० १५ ने बदले ५ भूल थी लखाई जाय तेवो संभव छे. ने कारीगर भी भूल प्रमाणिक न गणाय माटे प्रचलित परिपाटी ठीक छे. एम गुरुदेव घणा उदार भावे खुलाशो पाठवी जणाव्युं छे, जेने अत्यन्त विश्वासपात्र गणजो.

(पत्रांक—१३१)

ॐ नमः

सिद्धक्षेत्र श्री कैलाश. (अष्टापद)

७-५-६०

राग—आशा

चलो हंस अष्टापद कैलाश, कर्म अष्ट हों नाश...चलो.
ऋषभ प्रभु निर्वाण भूमि यही, हिम छायौ चौपास;
सागर गंग नाले शुचि हो कर—भव परिक्रमा खलास...चलो १
पश्चिम दिशि नभ-मग चढ श्रेणि, आठ तला क्रम जास;
सप्तम तल गढ-फाटक हो चढ, पैड़ी आठ उल्लास...चलो २
अष्टम तल सब चौदह मन्दिर, मध्य श्री ऋषभ आवास;
रत्न बिम्ब मणि मंडित मन्दिर, अद्भुत दिव्य प्रकाश...चलो. ३
द्वार खड़े गजराज दुतर्फा, तरु एक प्रांगण तास;
मंदिर चार विदिशि उत्तर दिशि, आठ एक पैड़ी पास...चलो. ४
सप्तम तल उत्तर दिशी दशमिल, वर्त्तमान जिन वास;
चत्तारि अट्ठ दस दोय मन्दिर, अनुभव क्रम यही खास...चलो. ५
सप्तम तल पूरब दक्षिण श्रृंग, चौवीस चौवीस प्रास;
पूर्व-अतीत-अनागत-दक्षिण, दो चोवीसी दुपास...चलो. ६
जिनालय बहत्तर अरु मुनि, निर्वाण स्तूप सुनिवास;
पराभक्ति सह वंदत पूजत, सहजानंद विलास...चलो. ७

'अष्टापद' तीर्थ विषयक तो पोरा में ही अपनी बात हुई थी. और साथ कैलाश-कल्प-तीर्थ निर्माण विषयक उचित भूमि ढूंढने का भी तय हुआ था-तदनुसार बद्रीनाथ जाते समय''''''में छोटा सा पहाड़ भी नजर में आया था, परन्तु वापिस लौटते हुए उस दृश्य में कुछ परिवर्तन प्रतीत हुआ फलतः सुनला P.W.D वाले की रियरता दरम्यान कोई दिव्य संकेत मिला कि "तीन साल रुक जाओ, क्योंकि तब तक देश में अशान्त वातावरण रहेगा. हम चुप हो गए अब भविष्य में जो होनहार होगा वही होगा इस बंगले के बगल में भी एक पहाड़ साधनालय के योग्य मिला कि जिस पर दिव्य प्रकाश चमक रहा था '''और नीचे सड़कें और दोनों बगल में जल स्रोत हैं। समीप में सुरमा की खदान भी है। और भी कितनी क विशेषताएं उस पहाड़ों में हैं जो अनुभवगम्य हैं उस पहाड़ की हाइट प्रायः ३५०० फीट की होगी। ऊपर चीड़ वृक्षावलि है जिसकी हवा स्वास्थ्यप्रद है। ॐ शांतिः

(पत्रांक—१३२)

ॐ नमः

राजपुर

(८-५-६०)

सोमवार सायं

भव्यात्मन्।

आज आपका कार्ड मिला। प्रायः एक माह पूर्व शुभेराज जी के पत्र साथ भी एक पत्र मिला था, जिसके प्रत्युत्तर में भाईजी के साथ ही मुख समाचार भेजे हैं पर वे अब तक यहाँ नहीं पहुँचे अतः उसका सारांश निम्न प्रकार लिख रहा हूँ।

ऋषिकेश से ही हिमालय की पर्वतमाला शुरु होती है। बद्रीनाथ उत्तर पूर्व कोने में है। वहाँ जाने के लिये पैदल और वाहन दोनों रास्ते लछमन झूला से प्रारंभ होते हैं। रास्ते में सर्वत्र दोनों ओर पर्वतमालाएं, बीचो बीच नदी और पर्वत को काटकर सड़क है। पड़ाव उतार बहुत हैं, जोशी मठ तक सर्वत्र उचित पहाड़ों पर उतार चढ़ावों में पहाड़ों को काट कर ग्राम हैं खेत भी हैं; और जहाँ चढ़ना सुगम नहीं वहाँ सघन वन है। शेष वृक्षावलि कटी हुई है। जोशी मठ से आगे बद्रीनाथ तक बहुत कम बस्ती है क्योंकि बसने योग्य शिखरमालाएं कम हैं, जहाँ जहाँ दो नदियों के संगम होते हैं वहाँ वहाँ वैष्णवों ने तीर्थस्थापन किए हैं जो प्रयाग नाम से प्रसिद्ध हैं। यथा—देव प्रयाग, कर्ण प्रयाग, नंद प्रयाग, विष्णु प्रयाग आदि।

ऋषिकेश से प्रायः ६४ मील पर श्रीनगर है जहाँ ६-७ जैनियों के घर प्राचीन हैं १ जिनालय भी है। पुराना श्रीनगर ७० वर्ष पूर्व जल मग्न हो गया वहाँ के जिनालय को उठा कर ही नया निर्माण किया गया है। प्रायः उस काल में आस पास गावों में भी करीब २५० घर थे पर उपदेशकों के अभाव वश जैनत्व के संस्कार क्षीण होते गये फलतः वे अजैनत्व में परिणत हो गए। वहाँ वही जिनालय

भी थे, जो विनष्ट हो गए जिनमें से जिन विम्ब श्रीनगर में (पार्श्व प्रभु जी छोटी सी प्राचीनतम प्रतिमा मौजुद है।

कुछ साल पूर्व पीपलकोटी में १ जिन विंब वृक्ष तले एक जैनी अफसर ने देखा बताया।

जोशी मठ से १६ मील उत्तर दिशि में बद्रीपुरी है। जहां अब तक पैदल रास्ता ही है। बद्रीपुरी विशेषतः अलकनन्दा नदी के पश्चिम तट पर बसी हुई है पार होने के लिए पुल'''है। पूर्व तट पर भी कुछ धर्मशालाएं आदि हैं। उत्तरीय पुल को पार कर के उपर कुछ पैड़ियाँ चढ़कर बद्रीनाथ किंवा बद्रीनारायण का मंदिर है। एवं पुल पार दाहिनी ओर तप्त कुण्ड है।''''''कुण्ड से स्नान करके मंदिर को जाने के लिए सीढ़ियां लगी हुइ हैं। उसी सीढ़ियों के नीचे से जल स्रोत निकलता है। जिसकी दो धाराएं विभक्त करके एक''''''द्वारा तप्त कुण्ड निर्माण हुआ है। ऊपर की टीन की''''''चद्दरें हैं। पुरुष प्रमाण गहराई है।''' के लिए सीढ़ियाँ हैं। उसमें पानी को खाली करने को भी व्यवस्था है। दूसरी''''''और २।३ कुण्ड भरे जाते हैं. वह जल''''''नीचे अलकनंदा में मिल जाता है। नदी'''''' निम्न भाग में एक नारदकुंड है जिसमें से ही बद्रीनाथ की मूर्ति निकाली गइ बताते हैं। जो कि पार्श्वनाथ की ही जिन प्रतिमा है और उसी कुंड में और भी जिन प्रतिमाएं हैं जो जल मग्न है। उस पर उसी समय नदी का प्रवाह चल रहा था, जिस जल में हाथ डालते ही''''''जाता है। तप्त कुंड का जल उतना तप्त है कि उसकी''''''शिर पर लेते ही शिर चकराने लगता है। ''''''यहाँ अच्छी कमाई हो रही है।

मूल मंदिर की चारदिवारी में मूल द्वार की लाइन में कुछ आले हैं जिन में पार्श्वयक्ष''''''की मूर्तियाँ हैं। मंदिर पूर्वाभिमुख है। गर्भगृह सभामंडप और रंगमंडप में विभक्त है। स्त्री और पुरुषों को अलग अलग जाने की व्यवस्था है। रंग मंडप प्रवेश और सभामण्डप से निर्गम ''''''है सभामण्डप में सामान्य दर्शकों को '''''' विशेष दानी दर्शकों के लिए '''''' पद्धति है। दोनों बगलों की सीटों पर ''''''पुजारी बैठे रहते हैं और नरनारायण के गुणानुवाद और इतिहास को आलापते जाते हैं। गर्भागार में दिगम्बर पद्धति तुल्य वेदी है। जिसमें मूलनायक रूपेण प्रायः एक हाथ भर की देशी काले भूरे वर्ण की पार्श्वनाथ प्रतिमा है, पद्मासनस्थ है। भुजाओं का मक्षी पार्श्वनाथ की तरह मानोपेत नहीं है। मुखारविंद घिसा हुआ और फणा टुटी सी है। उनकी बाँयी ओर बगल में भी उतनी ही पार्श्व प्रतिमा है जिसका चेहरा और फण अखंडित है। जिन्हें नर और मूल प्रतिमा को नारायण कहते हैं। बद्री ग्राम का नाम है, ग्राम नाम युक्त बद्री पार्श्वनाथ तीर्थ किसी समय प्रसिद्ध था जिसका बद्रीनाथ किंवा बद्रीनारायण काल क्रम से बन गया। प्रतिमा जी सातिशय है जिसका थोड़ा स्वाद हमें भी मिला जो पत्रारूढ़ करना नहीं चाहते। पुजारी रावल कहलाता है वह दक्षिणशृंगेरी मठ की ओर से ही नियुक्त होता है। दक्षिण '''''' जैन बद्री प्रसिद्ध है अतः यही''''''नामकरण युक्तियुक्त है। जैनों के बाद बौद्धों ने भी इस तीर्थ पर आधिपत्य (जमाया) होगा क्योंकि तिब्बत के बौद्ध मठों से '''''' लोग वर्ष में एक बार भेट पूजा बड़े आदर से भेजते हैं। बाद में शंकराचार्य ने अपना आधिपत्य जमवाया हो।

जोशी मठ (ज्योति मठ) में एक वृक्ष तले शंकराचार्य ने छोटी-सी वय में तप किया और ज्योति प्रगटायी तदनंतर साहित्य लिखा। यह वृक्ष अब तक मौजूद है। जिसका तना अति विस्तृत है। नीचे ज्योतिर्लिंग की स्थापना मंदिर प्राचीन है। उ''''''थोड़ी दूर पर ज्योतिर्मठ है जहां शंकराचार्य की गद्दी है। वृक्ष''''''शंकराचार्यजी की व्यवस्थित है।

जोशी मठ से प्रायः ६० मील की दूरी पर भारतीय सीमा है जहां अति प्राचीन जिनालय का खण्डहर है। जिसमें'''''' जिन प्रतिमाएं विद्यमान हैं ऐसा सवाद एक यात्री के मुख से सुना है जहां बरफ की प्रचुरता है। केवल ग्रीष्म काल में ही बरफ हटने पर दर्शन हो सकते हैं। शेष काल में ही वह खण्डहर दबा रहता है।

बद्रीनाथ के पीछे दक्षिण पश्चिम कोने में''''''मील पर एक स्तूप शिला है। जिस पर प्रभु'''''' के चरण चिह्न घिसे हुए''''''से उत्तर दिशि में ११-२ मील पर प्राचीन जिनालय के खण्डहर भी सुने हैं। वहां हम चार रोज ठहरे; किन्तु वर्षा एवं अस्वस्थतावश मन्दिर के अतिरिक्त कहीं खोज न कर सके। भाईजी स्तूपशिला पर गये, जहां बरफ सदैव रहती है। और भी क्षेत्रपालों के स्तूपादि वहां हैं। बद्रीनाथ की हाइट १०२४४ फीट है और आस-पास की शिखरमाला १०००।२००० अधिक है।

जोशी मठ से बद्री जाते हुए सात मील पर गोविन्द घट्टी है, जहां सिक्खों ने ३० साल पर गुरुद्वारा बनवाया है। वहां से''''''मील की दूरी पर हेम कुण्ड (लोकपाल तीर्थ) है। जहां गुरु गोविन्द सिंहजी ने पूर्व जन्म में तप किया था, ऐसा उनके लिखे ग्रन्थों के आधार पर से सिक्ख सम्प्रदाय की मान्यता है। अतः वहीं श्री लक्ष्मणजी का मन्दिर भी बताते हैं। वहां की हाइट १४२०० की है। रास्ते में व्हेली आफ फ्लावर दर्शनीय है। मीलों तक समतल भूमि पर विचित्र प्रकार के सुन्दरतम् पुष्प'''''' नजर में आते हैं, जो विलायती फूलों को भी मात करते हैं।

बद्रीनाथजी आदि के फोटु चित्रावली उत्तराखण्ड यात्रा सह भाईजी के पास है, जिन्हें आप देख सकेंगे और अधिक व्यतिकर भी उन्हीं से आप सुन सकेंगे। ॐ शांतिः

गंगोत्री, जमनोत्री और केदारनाथ हम नहीं गये—इच्छा भी नहीं थी।

कभी मौका लेकर आपको भी हिमालय यात्रा ऐतिहासिक दृष्टि से करने योग्य है। पर इस समय चीन के कारण कुछ दिक्कत ही बढ़नी जायेगी। अतः चुप रहने में ही कुशलता है।

देहरादून मंसूरी बीच मंसूरी रोड पर ही (राजपुर) धर्मशाला में हम ठहरे हैं। स्थान भव्य है। प्रायः वर्षा प्रति दिन चालू है। स्वास्थ्य तीनों का ठीक है। लेखन प्रवृत्ति किंवा पत्र रचनादि नहीं होती, क्योंकि वैसी रुचि नहीं है। देहरादून दि० समाज की ओर से भारी व्यवस्था है। केश लोंच हुआ था। २५०-३०० व्यक्ति एकत्रित हुए थे।

शो उपाय शीघ्रता थी छपाय एवी व्यवस्था जो थाय तो करजो ते अवश्य प्रचारित थई जशे एवी खात्री छे।

आ साथे आध्यात्मिक भूख वधारव अने तेमां विकास साधवो ए भूलावुं न जोइये। देह स्वास्थ्य करतां आत्म स्वास्थ्य विशेषतः अगत्यनुं छे. जे भणी रुचि वृत्ति अने प्रवृत्ति अनिवार्य छे आप पोते सूरा छो जेथी ओ विषय मां अधिक कहेवा जेवुं न होय ॐ शांतिः

आपना मित्रो नी वात लखी ते आध्यात्मिक पंथे जवा इशारो ताकीदी करे थे। प्रेरणां अने साधन वल सर्वत्र मली शकशे अेवी खात्री राखो ॐ शांतिः

सहजानंदघन जिन स्मरण

(पत्रांक—१३६)

ॐ नमः

२२-८-६०

अध्यात्मन् (भँवरलालजी नाहटा)

कार्ड मिला। अष्टापद विषयक जे आप जाणवा पूछ्युं—ते विषे हाल त्रण वर्ष चुप रहेवा दैवी संकेत छे; कारण के देशनी परिस्थिति त्यां लगी अव्यवस्थित जेवी रहेवा सम्भव छे. भावी मां जो वनवानो जोग हशे तो जोयुं जशे, नहिं तो स्वकार्य मां लाग्या रहेवुं एज भावना छे.

काकाजी शुभैराजजी जयपुर थी बीकानेर प्होंची गया नो तेमनो पत्र छे. पालीताणा के अजमेर-केकड़ी आदि क्यां नहिं जइ शक्या.

अहिं प्रभु कृपा थी आनन्द मंगल छे, मसूरी अने देहरादून वच्चे राजपुर समीप ना जंगल मां मंसूरी रोड उपर ज एक अजैन आश्रम मां देहरादून जैन समाज नी व्यवस्थाए रह्या छीए, दि० समाज नी उत्तम लागणी अने देख रेख छे. वातावरण शुद्ध सात्विक अने प्राशुक छे. वृष्टि नी सृष्टि पण गजब छे प्रायः चालू रहे छे. सत्संग २।३ चाले छे, स्वास्थ्य सारुं छे. अष्टापद विषयक आप पण चुप रहेजो.
... ...
... ...
... ... आप सौ पारिवारिक ... ... बधाय ने धर्मलाभ कहेजो.
ॐ शान्तिः

सहजानन्द आत्म-स्मरण

१०, मसूरी रोड रूम नं० ६ P. O. राजपुर Dist देहरादून U. P.

नोट :—यह कार्ड पानी से भींग कर अक्षर उड़ गए।

(पत्रांक—१३७)

ॐ नमः

राजपुर २२-८-६०

भव्यात्मन् [कोजमल धाकणा, आहोर]

काई मिला। सत्संग की भावना स्तुत्य है, पर हम यहाँ जंगल में हैं, अधिक ठहरने की सुविधा नहीं है। अतः आपकी भावना स्थगित रखियेगा। अहमदाबाद से "मानव-मूत्र" नामकी एक पुस्तक मंगवाइए—उसे पढ़ने के बाद आप अपने शरीर को स्वस्थ बनाना चाहें तो उसमें बताये हुए प्रयोग करके देखिएगा। उसका पता—गुर्जर ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, गांधी मार्ग—अहमदाबाद (गुजरात)

यह स्थान देहरादून और मसूरी के बीच है। प्रशान्त वातावरण व एकान्त है, देहरादून यहाँ से ७ मील है। वहाँ के दिगम्बर समाज की ओर से सब व्यवस्था हो रही है, पर जगा अधिक नहीं। मोकलसर गुफा की हकीकत ज्ञात हुई. बाबाजी धन्य है जो मौन पूर्वक अपने साधन में लगे रहते हैं—उन्हें मेरी ओर से प्रभु स्मरण कहिएगा। ॐ शांतिः

सहजानन्द जिन स्मरण

कृपालुदेव के वचनामृत में सब कुछ साध्य, साधन एवं साधकीय शिक्षा है उसी में रही शिक्षा लो—एवं आराधना में लग जाओ—प्रमाद करना भूल है, उनसे अधिक शिक्षा देनेवाला मैं कौन? सभी याद करनेवालों को जय सद्गुरु वंदन सहजात्म स्मरण—

सहजानंद—१०, मसूरी रोड रूम नं० ६ पो० राजपुर जि० देहरादून यू० पी०

(पत्रांक—१३८)

ॐ नमः

परम कृपालु देवनुं अनन्य शरण हो !

वैद्यराज कोजमलजी,

पत्र मल्युं। मूत्र प्रयोग करने पर नित्यकर्म में कोई हरकत नहीं है। यदि मालिश के समय दो घंटे शरीर मूत्राकीर्ण हो तब तक मनोमन मंत्र स्मरण किया जाय तो भी कोई बाधा नहीं है। अतः आप निःशल्य होकर नित्यकर्म में लगे रहिये। नेत्र-रोग भी इसी से ठीक हो सकता है।

एक बाई को केवल चार माहमें बिना ओपरेशन मोतिया उतर गया।

हमारा स्वास्थ्य ठीक है, हम तो ऐसा प्रयोग कोई करते नहीं है। हमारा तो एक ज प्रयोग है भगवान का भजन। जेठ मास में न जाने कहां अवस्थिति रहेगी—पता नहीं। अतः उस समय जै सा उदय। दलीचंदजी आनन्द में होंगे। बिलारी वालों को एड्रेस दिया हो तो कोई हरकत नहीं। भक्ति भाव में निमग्न रहो यही आशीष—ॐ शान्तिः

सुखलाल, शुभैराजजी आनन्द में हैं।

सहजानन्द

(पत्रांक—१३९)

ॐ नमः

५-९-६०

भक्तवर रांकाजी और धनराजजी,

पत्र मिले। यहाँ भी दशलक्षण पर्व की आराधना निर्विघ्न सम्पन्न हुई।

मेरी ओर से सभी जीवों के सभी अपराधों के प्रति क्षमा भाव ही है एवं इस अनादीय भव पर्यटन में इस जीव ने राग-द्वेष-मोहवश किसी भी योगाध्यवसाय से किसी भी समय किसी भी देह पर्याय में किसी भी जीव के प्रति जो भी अपराध किये हों! किंवा अनुमति दी हो तो उन सभी अपराधों की विशुद्ध हृदय से उत्तम क्षमायाचना करता हुआ निःशल्य हूं। तथैव सुखलालजी भी क्षमाप्रार्थी हैं।

श्री धनराजजी के प्रश्न पत्र आया था जो कहीं यत्र तत्र रख दिया गया। उनका समाधान तो स्वतः होने योग्य है। उदासीनतावश पत्र व्यवहार में मैं कमजोर हूं। प्रत्यक्ष मिलने पर जो वाणी योग से कहने योग्य होगा कहा जायेगा।

महात्मा किशनलालजी द्रव्य-भावतः स्वस्थ होंगे। उनसे जो भी लाभ उठा सको उठाओ। उपादान में कारणता प्रगट करने के लिये अपनी निगाह में स्वयं पवित्र रहने का पुरुषार्थ करो। शक्यता मत छुपाओ।

वहाँ.........हीरालालजी चांदमलजी आदि सभी सत्संगी जनों से साँ० खामणा ॐ शांतिः सुखलाल भी सभी को खमाता है। यहां अधिक ठहरनेवालों के लिए सुविधा नहीं है। अतः आनेवाले सभी अपनी भावना स्थगित रखें।

ॐ सहजानन्द साँ० खा०

पत्रांक—१४०

ॐ नमः

राजपुर—२६-९-६०

भक्तवर मेघराजजी,

आपका पत्र मिला। हाल सभी ज्ञात हुये। गणिवर श्री बुद्धिमुनिजी महाराज साब का शरीर अस्वस्थ है ऐसा जब से मैंने सुना था तब से मेरे मन में उनके प्रति समवेदना है। यद्यपि विचार भेद है फिर भी मेरे हृदय में प्रीति-भेद नहीं है। पं० हंसराजजी जैन ने अहमदाबाद में मेरे पर 'मानव मूत्र' पुस्तिका अभिप्राय के लिये भेजी है। उसे पढ़ने के बाद मेरा विश्वास हो चुका है कि यदि निकाचित कर्मों को छोड़कर शेष शिथिल कर्म के उदयवश शरीर में चाहे असाध्य से असाध्य रोग उत्पन्न हो जाय पर पद्धति पूर्वक यदि मूत्र का प्रयोग किया जाय तो मिट सकता है। क्षय, भंगदर, जलोदर, कैंसर, पक्षाघात, दमा, अेक्झिमा सभी प्रकार के ज्वर, चर्म रोग-वात रोग, सड़ागला और जला अंग, नेत्र-कर्ण दंत रोग आदि-२ सभी प्रकार के नये पुराणे रोग इसी से मिटाने के प्रयोग सिद्ध हो चुके हैं। यदि वे

मंजूर करें तो उक्त प्रयोग के लिये पुस्तक मंगवा दीजिये। ठिकाना—गुर्जर ग्रन्थ कार्यालय, गांधी रोड, अहमदाबाद। सांगोपांग पढ़ लेने के बाद यदि वे उचित समझें तो प्रयोग करने पर मुझे विश्वास है कि स्वास्थ्य लाभ हो सकेगा। मैंने उनकी सेवा की है, पर मेरा कम भाग्य है कि ऐसे मौके पर उनकी सेवा करने से वंचित हूँ। इसका मन में खेद भी है। इसी प्रयोग से गुलाबमुनिजी महाराज भी ठीक हो सकते हैं। पर इस वस्तु के प्रति घृणा मिटे तब ही अपना सकते हैं। उपाध्यायजी भगवान का प्रत्युत्तर कच्छ—मांडवी से आ गया है। आप अवश्य उनके दर्शनों का लाभ लीजियेगा। सभी पुज्यों को मेरी ओर से सविधि वंदना अर्ज कीजियेगा।

यहाँ भाद्र० पूर्णिमा पूर्व वर्षा सतत् चालू थी, बाद में अब तक कभी-कभी आती रहती है। अतः वातावरण में शीतता बढ़ रही है। स्वास्थ्य तीनों का अच्छा है। चंचल मौज में पढ़ रही है। पदादि बनाने का मेरा ध्यान ही नहीं है। फिर भी किसी प्रसंगवश क्वचित बन जाते हैं। उनमें से अष्टापद का भेज रहा हूँ।

गच्छ के और पंच महाव्रतधारी साधु साध्वी जो याद करते हों. उन्हें मेरी ओर से सविनय वन्दनादि अर्ज करें। और सभी से भवो-भव के खामणा भी कहें। आप वहां कब तक ठहरेंगे? एवं माईजी वहाँ कब आवेंगे? कितना ठहरेंगे? लिखें।

सिद्धगिरि यात्रा में भगवान के दरबार में मेरी भी वंदना-पूजा प्रभु को पहुँचावें—यही आशा के साथ विरमता हूँ। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

सहजानंद—धर्मलाभ सह आत्मस्मरण

(पत्रांक—१४१)

ॐ नमः

राजपुर

(३०-६-६०)

भक्तवर श्री शुभराज जी

आपका कार्ड मिला। सिद्धगिरि की पहाड़ी भूमि में यद्यपि आपकी इच्छा आश्रम विषयक उत्तम है। पर वहां तीर्थ निवासी वृत्तियाँ अच्छी नहीं है। अतः हमें उचित प्रतीत नहीं होता। गिरनार जी की बात और है। पर वहां साधन जुटाने में दिक्कत है। इसलिये उस ओर भी चित्त उपशान्त है। इसलिए चलता फिरता आश्रम अभी तो ठीक है। आप सिद्धगिरि कबतक पहुँचेंगे? मेघराजजी की चिट्ठी थी जवाब दे दिया है।

कोठारीजी कल यहाँ सायंकाल को आये हैं आज जाने का कहते हैं। उन्हीं के साथ बंबई से भिजवाया हुआ प्रभु महावीर के चित्र सम्पुट को भेज रहा हूं—जो मेघराजजी का है।

श्रीमान् अगरचंद जी आदि परिवार वाले सभी ठीक होंगे? यहां सभी आनंद मंगल है। तीनों का स्वास्थ्य ठीक है। अब कुछ शीत का प्रभाव बढ़ रहा है लाला कृष्णचंद्रजी हॉस्पीटल में हैं। पेट में खरावी है।

काकीमाँ आप सभी परिचितों को प्रणाम सह धर्मस्नेह लिखवा रही है। और कोई खास नवीनता नहीं है। चंचल आनंद में है। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

सहजानंद आत्म-स्मृति सह धर्मलाभ !

(पत्रांक—१४२)

ॐ नमः

राजपुर

३-१०-६०

(मोहनलालजी छाजेड़)

काचरूप शरीर ना टुकड़े टूकड़ा थवाना छे. आत्मा तो फोटू वत् अखण्ड रहे ते आगाही ए फोटु पडवा नुं निमित्त समजजो. आत्म साधना मां लक्ष्य जोड़जो ॐ शांति

सहजानंदघन

(नोट—श्री मोहनलालजी की धर्मपत्नी का ता० ३-९-६० को देहविलय हुआ, उसी वक्त रात में भीत में लगे पू० (भद्रमुनीजी) के फोटो का अकस्मात काच टूट गया, फोटो टिका रहा इसी संदर्भ में गुरुदेव की उपर्युक्त चेतावनी है)

(पत्रांक—१४३)

ॐ नमः

राजपुर

१०-६०

भक्तवर श्री शुभैराज जी.

कैलाश यात्रा की हमारी अंगत नोटवुक कि जिसमें और भी थोड़े नोटेशन थे, धनीराम को पोष्ट करने के लिए दी थी, उसने आपके ही नाम से बीकानेर भेजी थी, जिसको करीव १ मास से कुछ समय वीत चुका पर आपको ओर से पहुंच नहीं आई। क्या आपको वह पुस्तक नहीं मिली?

हमें यकायक कल उस नोटवुक की स्मृति हुई? कार्ड कल ही अगरचंद जी को भेजा है। इस विषयक प्रत्युत्तर शीघ्र दीजिए।

कुछ समय से श्लेष्म की कृपा रह आयी पर अब ठीक है। आप फिकर मत कीजियेगा। यहाँ की दि० पद्धति में दीपावली पर्यन्त चोमासा की अवधि समाप्त मानी जाती है। शायद कहीं आस पास गमन हो जाए।

काकी माँ को 'घोरा' बहुत याद आता है। वैसी मजा इन्हें और कहीं नहीं आई। पर जहाँ की फर्सना वहाँ की स्थिति अनिवार्य हो जाती है। कृष्णचंद्रजी के पेट में ३ पथ्थरी निकली, वे हास्पिटल में ही हैं। चंचल के विषय में कहाँ क्या करना है, ऐसा काकी माँ कभी कभी याद आने पर सहज बोलकर फिर भूल जाती हैं। भाग्यानुसार व्यवस्था होती चली जायेगी, ऐसा विश्वास भी उन्हें है। पर लोक दिखावा कुछ करना पड़ता है इस विषय में आपकी क्या राय है। कोठारीजी के साथ में महावीर का अल्बम भेजा मिला होगा और सभी कुशलता है। यहां सभी को आत्म-स्मृति पूर्वक धर्मलाभ हो। पत्रोत्तर शीघ्र दीजिए ! ॐ शांतिः

सहजानंद धर्मलाभ !

(पत्रांक—१४४)

ॐ नमः (राजपुर)

भक्तवर शुभेराज जी

आपका कार्ड जयपुर से एक मिला। सब हाल ज्ञात हुए। यहाँ प्रभु कृपा से हम तीनों आनंद में हैं। स्वास्थ्य ठीक है। देहरादून निवासी नियमित व्यवस्था रखते हैं इतवार को अधिक संख्या में आते हैं गत इतवार गुरु पूर्णिमा को लोच हुआ। राख के कारण मालूम पड़ जाने से २५०।३०० जन संख्या की उपस्थिति हुई। बहुत उल्लास से प्रवचन हुआ। आप के जाने के बाद दो चार रोज वर्षा बंद रही, तदनन्तर प्रायः नित्य आती रहती है फिर भी मौसम ठीक है।

मेरठ से हंसकुमार और पास की पलौर मील के मालिक प्रेमचंदजी यहां आकर चार रोज ठहरे पांच रोज हुआ वापस लौटे। उन्होंने आपका मेरठ विषयक समाचार दिया। आपने हिम्मत कर के ठीक यात्रा कर ली।

साध्वी मंडल को मेरी ओर से अनुवंदना सुखशाता कहियेगा, पालीताना यदि जायें तो वहाँ भी बुद्धिमुनिजी महाराज आदि से मेरी वंदना अर्ज करें। चंचल का मन अच्छी तरह से लग गया है। सभी से घुल मिल गयी है। इतवार को यहाँ आ जाती है।

काकीमाँ का स्वास्थ्य पहले से ठीक चल रहा है। कभी कभी हार्ट की शिकायत रहती है। पर किसी को बतलाती नहीं चेहरे से मालूम हो जाता है। पर फिर ठीक हो जाता है। दवाई तो आपकी सानिध्य में ली. बाद यहां तो बंद ही है। आप चिंता नहीं करें। आपका और आपके घर में अब स्वास्थ्य ठीक होगा? पत्रोत्तर दीजिएगा। हजारीजी का और भी एक कार्ड था। ॐ शांतिः

सहजानंद—जिन स्मरण।

(पत्रांक—१४५) राजपुर १०-१०-६०

ॐ नमः

सद्गुणानुरागी श्री अगरचन्दजी,

कार्ड मल्युं. कैलाश-यात्रा विषयक पुस्तिका माटे आपे लख्युं के मने जेनुं अहिं सहजे स्फुरण थयुं तेथी एज प्रश्न आपनी पासे मोकल्युं ते आपने मल्या पहेलां ज पत्र मल्युं. मने ते पुस्तिका मोकल्या पछी याद ज न रह्युं के ते त्यां प्होती के नहिं. में धनीराम जैन ने पोस्ट करवा ने पुस्तिका आपी हती जेने १। मास थी अधिक समय वीती गयो. तेमणे शुभराजजी नाहटा ना अेड्रेस थी ते मोकली पण तेमां एक भूल थई गई. ते ए के बुकपोस्ट थीज ते रवाना करी. रजिस्ट्री न करावी. मने आ कानून नी याद नहिं के लखेला पुस्तक बुकपोस्ट थी न मोकलाय. तेथी में ज कहेलुं के बुकपोस्ट करी देजो. आ कारणे तेमणे बुकपोस्ट करी. अने ते गेरवले गई. भावी भाव. हवे मेरठ गये अथवा पत्र व बीजी नकल उतारवा नी तजवीज करीश. अन्यथा छपायली नी प्रतिकृति करी लईश. त्यां सूधी आ काम मां अंतराय नो उदय समजवो.

वाड़ी थी आवेल प्रतिमाजी नी हवे आपने किंमत समजाई. ते वखते आपने बीजा अवशेषो मंगाववा नुं पूछ्युं पण आपने ते वात गले न उतरी खेर.

में वाड़ी पत्र लख्युं ज नथी. ते विस्मरण थई गयुं. वाड़ी ना लोको मां परस्पर संप नथी. पेला भाई कंइक लालचु हता एम पण मने लाग्युं. तेथी जाते त्यां गया विना मन मानतुं काम न थाय. त्यां बृहत्काय मूर्त्तिओ पण छे. तेमां थी शुं शुं आप पसंद करो ए पण प्रश्न छे. वली तेने एकत्रित करी पेक करवा. स्टेशने प्होंचाड़वा वगेरे मां घणी कडा कूट छे. तेथी जो आप जाते त्यां जाओ तो ज फावे. वली में घणा समय थी त्यां तपास नथी करावी. तेथी हाल मां शी परिस्थिति छे ते विचारणीय छे. त्यां प्रथम वार ज्यारे हुं गयो हतो त्यारे त्यां ना लोको कहेता हता के अमुक समय पूर्व अहिं अधिक सामग्री हती. ते लोको चोरता गया. कोई संभालनारा न्होता.

पाछल थी गयो त्यारे पण जे कलामय मूर्तिओ ना अवशेष हता ते पण रस्ता ऊपर उकरड़ा जेवा स्थान मां—में ए लोको ने सूचना करी हती के कोई सारा ठिकाणे रखावी द्यो. पण गरीबी ना कारणे तेओ तेम करी शक्या नहिं.

मारी अंगत सलाह ए छे के आप जेवा एकाद वखत त्यां नजरे परिस्थिति जुए अने पछी जे उचित लागे ते करे. एथी ते लोको ने पण प्रोत्साहन मले अने आप जेवा ने पण सामग्री-संचय मां सुलभता थाय.

हवे त्यां पत्र लखुं. तेनो जवाब क्यां अने क्यारे आवे ए पण विचारणीय छे. दीवाली बाद कदाच मने आसपास जवानु थाय. तेथी यथा उदय ते वात प्रत्ये उदासीन थवु पड़े छे.

ललितपुर थी प्रायः १३ माल दूर, शेरोन जी छे. त्या माइल भर ना विस्तार मां मन्दिरो ना मूर्तियों ना अवशेषो विखरायला छे पण सार-संभाल नथी.

वली वे वर्ष थी दि० मूर्तियो'नी चोरी थती रहेती होवा थी आपणे ते तरफ वई करवा जइए तो कदाच समाज नाराज थाय.

वाड़ी विषे तो हजु सुधो तेवी परिस्थिति नथी पण कदाच कोई भांभरे तो त्यांनु वातावरण पण डहोलाय।

जो मारा जेवा नी ते भूमि मां हाजरी होय अने आप जेवा आवे तो त्यां आस पास घणा आवशेषो मले—एम छे. पण तेवो जोग बने तो थाय.

में हजु सुधी डायरी मां लखवानुं प्रयत्न कर्युं नथी. कारण के ए विषे उदासीन छुं.

स्वास्थ्य ठीक छे. काकीमां मुलभाई आनंद मां छे. त्यां सौ सज्जनो ने आत्म-स्मृति सह धर्मलाभ

ॐ शान्तिः सहजानंद आत्म स्मरण

(पत्रांक—१४६)

ॐ नमः राजपुर १५-१०-६०

भव्यात्मा शुभराजजी आदि

पत्र मल्युं, दीवाली बाद प्रायः चाहेड़पुर वालाने संतोषवा जवुं पड़े तो जवा विचार छे ते अंग्रेज चाल्यो गयो छे. पूनम बाद अन्यत्र प्रारब्ध अनुसार जवाशे शरीर तो ठीक छे. सरदी तो समय प्रमाणे थाय ते मटी जशे अहिं आवी जाओ तो आगल नुं विचाराशे. ॐ शान्ति

सहजानंद धर्म-स्नेह।

(पत्रांक—१४७)

ॐ नमः २५-१०-६०

भक्तवर ! (रांका जी)

सभी पत्र मिले, व्यतिकर ज्ञात हुए। अन्तर्दृष्टि को प्रकट करने के लिये, स्वरूपानुसंधान याने अकेले ज्ञान मात्र में ही आत्म बुद्धि स्थापन करके उसी का लक्ष बनाये रखना और उसी के लिये छटपटाते रहना यह बाह्य दृष्टि को मिटाने का किंवा आत्म-दर्शन में बाधक परदे को जलाने का उत्तम साधन है।

तुम्हारे हृदय में जो हलचल मच रही है वह परदे को जलाने में सहायक है अतः उसी से ऊबना नहीं पर धीरता पूर्वक सहे जाओ।

दि० पद्धति में दीवाली बाद वर्षा योग की समाप्ति भी इस तरफ प्रचलित है अतः गत इतवार को राजपुर से देहरादून १ रात्रि ठहरकर कल हम यहाँ चाहेड़पुर के पास एक चायबगान में आकर ठहरे हैं। यहाँ शायद पूर्णिमा तक ठहरना हो जाय। बाद में यथा उदय विचरण होगा।

उस ओर कब आना होगा यह प्रभु जाने ! महात्माजी अनंद में होंगे। और भी वहाँ के सभी सत्संग-रंग-रंगी बान्धवों को सादर धर्मस्नेह। ॐ शान्तिः

अब पत्रोत्तर में चुप रहियेगा।

सहजानंद आत्मस्मरण

(पत्रांक—१४८)

ॐ नमः

[दलीचंदजी बाफणा को कार्ड]

राजपुर

२७-१०-६०

चेतन तुम्हें सदा हो, नूतन वर्षाभिनन्दन;
जयकार हो तुम्हारा, स्व स्वागताभिवंदन···१
मारा मारा फिरा तूं, बीता मिथ्यात्व जीवन;
पर हाथ कुछ न आया, पाया न आत्म दर्शन···२
पुण्योदये तुझे जब, मिला वीतराग स्पर्शन;
तब परम गुरु प्रतापे, समझा स्व और परधन···३
स्व - अर्थ - धन तुम्हारा, चैतन्य भाव पावन;
जड़ भाव धन पराया, तज कर किया विशुद्ध मन···४
पर ज्ञेय भिन्न केवल-चिद्-ज्योति पिण्ड सोहम्;
सोहं की लौ लगा कर, प्रविनष्ट क्षोभ मोहम्···५
दवी चेतना प्रगट जब, निज क्षेत्र वर्ष नूतन;
सहजात्म स्वरूप निष्ठित, स्वतंत्र सहजानन्दघन···६

भव्यात्मा बाफना जी और वैद्यराज !

कार्ड मिला। स्वास्थ्य अच्छा है। अब चातुर्मास पूर्ण होने आया अतः यथा प्रारब्ध अन्यत्र विचरेंगे। पत्र राजपुर नहीं देना। धर्मध्यान, प्रभु भक्ति में दत्त-चित्त रहो यही मानव जीवन का सार है। सुख सुख में है ॐ शान्तिः

सहजानंद सहजात्म स्मरण !

(पत्रांक—१४९)

चाहिडपुर

ॐ नमः

१-११-६०

परम वीतराग स्वरूप परम कृपालु देव ने पराभक्तिए नमस्कार हो !

भव्यार्त्मा श्री कान्तिभाई,

आपनुं पत्र मल्युं. वांची ने आपनी अन्तर वेदना जाणी आपने जे भावो वर्त्ते छे. ते भावो ज आ संसार सागर थी क्रमे-क्रमे अवश्य पार करशे. माटे ए भावधन ने साचवजो.

सत्संग ना अभावे पण जे सत्संग-भावना टकी रहे छे ने सत्संग थी थता लाभ नुं अंश छे ए भावना जो उत्कृष्ट स्वरूपे प्रगटे तो आत्म-गति बदलाइ जाय. आत्मा मां उज्वलता थाय अने असंग एवा आत्म-स्वरूप नुं भान प्रगटे.

सत्संग ना वियोग मां मुमुक्षु जीवे केम वर्तवुं ए विषे परम कृपालु देवे पत्रांक ६०६ मां जे जे सूचव्युं छे ते ते शिक्षा आत्मसात् करवी योग्य छे. विषय कषायो थी बचता रहेवा पूर्ण तकेदारी राखवीज. के जे थी प्रत्यक्ष सत्पुरुष तुल्य लाभ सांपडे. परम कृपालु देव ना वचनामृत प्रत्यक्ष सत्पुरुष तुल्य जाणी ने ज आराधवा-गज हित रूप छे, एमनी आगल मारा जेवा पामर नुं शुं गजुं के एथी अधिक कंइ पण कही शके? एक एमनाज शरण मां तन्मय थवुं. बीजे क्यां गुरु कल्पना करवी नहिं. एम मारो निश्चय छे. जे हित रूप जाणी आपने जणावुं छुं.

प्रायः करी अहिं थी पूर्णिमाए देहरादून जवाशे. त्यांथी अन्यत्र प्रयाण थशे. मोहन भाई, मणि भाई, अमृत भाई वगेरे केटलाक भाइओ सत्संग माटे आववा इच्छे छे. ज्यां तेवी स्थानीय स्थिरता थशे त्यां आववानुं तेमने सूचवीश. जो अवकाश होय तो तेमना मारफते तेवो निश्चय थये—प्रोग्राम बनावी आवशो तो हरकत नथी. ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

सहजानन्द आत्म-स्मरण

जय सद्गुरु वंदन अने सहजात्म स्मरण

स्वास्थ्य कंइक सरदी प्रधान छे. ते ठीक थई जशे. सुखभाई आनन्द मां छे. आपने जय सद्गुरु वंदन जणावे छे.

(पत्रांक—१५०)

ॐ नमः

घोरागुफा

३०-११-६०

सद्गुणानुरागी पंडित जी,

राजपुर-देहरादून से हम यहां बीकानेर से ४ मील आसोपा-आश्रम में आ गये हैं। 'मानव-मूत्र' हिन्दी में क्या मुद्रित हो चुकी? यदि हो चुकी हो तो देहरादून में काफी सज्जनों की मांग है। गुजराती तो यहां जानते नहीं। यदि हिन्दी में मिलती हो तो निम्न पते से आप कृपया १ किताब सेम्पल के तौर से V. P. से भिजवाइयेगा —

लाला कृष्णचन्द्रजी जैन रईश १८, तिलक रोड P. O. देहरादून (U. P.)

यदि हिन्दी में तैयार न हो तो अंग्रेजी में मूल किताव "वाटर आफ लाइफ" किसी भी तरह कहीं से भी वहाँ वी० पी० से भिजवाने के लिए मेरा आपसे सादर अनुरोध है, क्योंकि उन लोगों की वेर-वेर माँग हो रही है। अन्यत्र तलाश कराने पर भी अंग्रेजी किताव नहीं मिली। अतः आपको आत्मीयता के नाते तकलीफ दे रहा हूँ।

यहाँ भी अगरचन्दजी के पते से १ हिन्दी V. p. से भिजवाइयेगा।

यहाँ का स्थान सात्विक है। शिववाड़ी से काफी अच्छा है। अगरचन्दजी आदि आते जाते हैं। स्वास्थ्य वहां ठीक नहीं था यहां आते ही अच्छा हो गया। सत्संग चलता है।

आपका स्वास्थ्य आदि का हाल लिखियेगा। पत्रोत्तर दीजियेगा। ॐ शान्तिः

भवदीय—सहजानन्द

सादर धर्मस्नेह

नोट :—ता० २१-२-६१ के कार्ड में भी ये ही समाचार हैं।

(पत्रांक—१५१)

ॐ नमः

उदरामसर धोरा
वीकानेर २६-१-६१

भक्तवर, (रांकाजी)

पत्र मिला, जिसका प्रत्युत्तर जावरा निवासी ने यहां से दिया होगा। हम वीकानेर से ५ मील दूरी पर उदरामसर के धोरों के आसोपा-आश्रम में हैं, जिस स्थान को श्री धनराजजी जैन ने देखा है। यहाँ की व्यवस्था भी उन्होंने देखी हुई है। जो आप उनके मुख से पूछ लीजियेगा। हम तो इस विषय में तटस्थ हैं। अतः अपनी ओर से महात्माजी को कुछ नहीं लिख सकते। शुभराजजी नाहटा कि जिन्होंने हमें यहाँ ठहराया है वे अस्पताल में हैं। सारण गांठ का ओपरेशन कराया है। अतः यहाँ पर उनके कुटुम्बीजन कोई नहीं है। केवल समय-समय पर आते जाते हैं और हमारी व्यवस्था में किसी भी प्रकार की कमी नहीं आने देते।

यद्यपि महात्माजी आत्मार्थी एवं ठरी हुई प्रकृति है, अतः उनके मिलने में मुझे किसी प्रकार का संकोच नहीं है, पर जबकि मुझे अपनी व्यवस्था के विषय में भी उदासीनता है तब दूसरों का ध्यान कैसे रह सकता है ? केवल प्रारब्ध पर ही नैय्या चल रही है। तदनुसार यदि महात्माजी की नैय्या यहाँ आ जाय, तो उनकी भी फिकर हमें क्या ?

कुछ समय पूर्व एक ऐसे ही सज्जन यहाँ पधारे थे, और जो भी प्रतिकूलता होगी वह सब हम बरदास कर लेंगे-ऐसी स्वीकृति पूर्वक ठहरे परन्तु टिक न सके। उल्टे व्यवस्था करने वाले के प्रति उनके मनमें अरुचि सी हो गयी जिसकी वार वार फरियाद करने लगे। पर हम क्या कर सकते हैं। हमने तो उन्हें प्रथमतः प्रत्युत्तर दिया था कि आप अपनी व्यवस्था स्वयं बना कर यहाँ ठहरें तो अधिक अच्छा

रहेगा, अन्यथा यहाँ तो जंगल है अतः प्रतिकूलताओं का आना और सहना अनिवार्य है। व्यवस्था करने वालों का किसी को आमन्त्रण तो है नहीं फिर भी वे जो भी व्यवस्था करें—उनकी बलिहारी समझना चाहिये। पर कसर तो न समझना ही सज्जनता है। उस प्रसंग को देखकर मैं तो अधिक उदासीन हो गया। अतः महात्माजी किंवा रांकाजी किसी को भी कुछ लिख नहीं सकता। यद्यपि मुझे विश्वास है कि आप अच्छे सहिष्णु है, पर भगवान हो तो भी मैं तो भक्ति सिवा और क्या कर सकता हूँ, क्योंकि व्यवस्था करना मेरा काम नहीं, पुण्य-पाप ट्रस्टीजनों की यह जिम्मेदारी है। व्य० के विकल्प को दूर करके आप कोई भी यदि आना चाहें तो कभी भी आ सकते हैं। मेरी रजा है। धर्म-ध्यान में अप्रमत्त रहिएगा। स्वास्थ्य अच्छा है। सुख आनन्द में है। धनराजजी प्रसन्न होंगे। ॐ शांतिः

आपकी सत्संग मंडली सभी को जिनस्मरण

सहजानंद आनन्द आनन्द

(पत्रांक १६२) उदरामसर धोरा (बीकानेर)

ॐ नमः १६ - २ - ६१

भक्तवर रांकाजी.

सप्ताह पूर्व पत्र मिला। साहित्यिक प्रवृत्ति वशात् प्रत्युत्तर न दे सका। अतः क्षन्तव्य हूँ।

संत आनंदघन-साहित्य में चित्तवृत्ति खेल रही है। १५वें स्तवन-विवेचन में कलम चल रही है। अद्भुत है संत साहित्य।

महात्मा किशनलाल जी एवं सुलोचनविजय जी की भावनाएँ स्तुत्य है। यहाँ आने के विषय में मैं इसीलिए चुप हूँ कि जंगल में शरीर से सेवा में तत्पर विरले ही हो सकते हैं अर्थात् शुभैराजजी तो सामग्री व्यवस्था कर सके परन्तु खिलाने पिलाने वालों को दिन भर फुरसत न मिलने के कारण उदारता नहीं रह सकती अतः यदि आप जैसे भावुक कुछ रोज साथ में आकर ठहरें तो स्थान की सुविधा है सामग्री भी मिल सकेगी और मुझे भी कोई अरुचि नहीं है।

आज शुभैराजजी जयपुर जा रहे हैं सप्ताह बाद आकर शायद कलकत्ते जायें। ये लोग दूसरों को व्यवस्था करने भी नहीं देते। अतः मैं किसी को भी आने की आज्ञा नहीं देता। आनन्दघन साहित्य प्राचीन यहाँ ही उपलब्ध है एवं स्थान बहुत अनुकूल है अतः मैं यहाँ रुका हूँ। यदि दो-चार दिन के लिये वे दोनों महात्मा आ जायें तो कोई आपत्ति नहीं फिर यदि अनुकूलता बैठ गयी तो अधिक भी ठहर सकेंगे पर राह खर्च की व्यवस्था स्वयं कर लेनी होगी। मैं न तो स्वयं अपने लिये भी किसी को कुछ कहता हूँ और न दूसरों के लिए ॐ धर्म ध्यान में अभिवृद्धि हो। यहाँ आनन्द मंगल है। स्वास्थ्य अच्छा है। सुखलाल ठीक है। शेष शुभम् ॐ शान्ति.

सहजानन्द जिन.स्मरण

(पत्रांक—१५३) १६-२-६१

ॐ नमः

भक्तवर श्री मेघराज जी सा'ब

वहुत दिन पूर्व आपका पत्र मिला पर साहित्यिक प्रवृत्ति वशात् मुझे प्रत्युत्तर देने तक का ध्यान ही नहीं रहा। तथैव काकीमाँ को तो डुब गयी दुनिया-सी दशा में पत्र लिखने का अवकाश ही कहाँ? स्मृति दिलाने पर वह—ये भूल गयी, मैं आज लिखूंगी। मेघराज भाई जी को पत्र लिखना है, पत्र लिखना है—रट लगाती है पर सुवह ८।। से ६ वजे तक रसवती वनाने जिमाने हंसाने और स्वयं जिमने हँसने में विता कर ज्यों ही गुफा में पैर धरा कि दशम द्वार में सुरता लापता हो जाती है। जिसे वाहर रखने में वह समर्थ नहीं रहती। चाहे हाथ में लिखने की सामग्री तैयार रखे किंवा माला, किन्तु वे ज्यों की त्यों जहाँ की तहाँ धरी रह जायँ। वह नशा अमली चाखत ही भरे—तुल्य है, न, चपल की याद न खुद के शरीर की याद तव मेघराज भाईजी को रटते हुए भी कैसे याद रखा जाय? यह है परम हंसों का जीवन।

नर-मूत्र का दो घण्टे नित्य मालिस सारे शरीर पर करने से एवं साथ में उपवास पूर्वक केवल जल स्वमूत्र का जितना आता रहे सव पान करते रहने से पक्षाघात, टी० वी० केन्सर जलोधर कुष्ट आदि तमाम असाध्य रोग मिटते हैं। ऐसा सफल प्रयोग सिद्ध हो चुका है। सूग छोड़ी जाय तव यह प्रयोग हो सकता है।

गुरुदेव जिनकुशल सूरि भगवान का मन्त्र का नित्य २५ माला यदि रटते रहेंगे तो सभी रोगों की वह दवाई है और स्वयं भी अलिप्त हृदय से जव तक दूसरे तैयार न हो जाये—सेवा करते रहिएगा। आप जैसे विचारवानों के लिये इतना इशारा वस है।

आप यदि कुशल गुरु की धून चालु रखेंगे तो वह भी सत्संग नहीं तो और क्या है?

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः सहजानन्द—

धून—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं व्लूँ सुखधाम, करूं कुशल गुरु चरण प्रणाम।
जय कुशल गुरुदेव की, परम कृपालुदेव की, आज के आनन्द की॥

(पत्रांक—१५४)

ॐ नमः

घोरा गुफा २१-२-६१

पंडितवर्य श्री हंसराजजी जैन

मानव-मूत्र हिन्दी अनुवाद अव मुद्रित हो चुका होगा। देहरादून के सज्जनों की मांग हो रही है। यदि मिल सके तो सेम्पल के तौर १ पुस्तक—लाला कृष्णचन्द्र जैन १८ तिलक रोड देहरादून U. P.

वी० पी० से शीघ्र भिजवा दीजियेगा। फिर तो वहां बहुत मांग होने से रेलवे पार्सल से मंगवा ली जायेगी एवं हमें एक अगरचन्द जी नाहटा के पता से भिजवाइयेगा। हमारा स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। आनन्द-घन चौबीसी का अनुवाद चालू है। आप पंजाब से सीधे अहमदाबाद चले गए। स्वास्थ्य अच्छा होगा। और क्या प्रवृत्ति चल रही है ?

पत्रोत्तर दीजिएगा ॐ शान्तिः   भवदीय

सहजानन्द सादर धर्मस्नेह

(पत्रांक—१५५)   घोरा गुफा

ॐ नमः   २६-२-६१.

सद्गुणानुरागी माननीय पंडित जी,

आपका कार्ड मिला। पुस्तिका विषयक हाल ज्ञात हुए। मुद्रण कार्य की आजकल यही परिस्थिति है। आनन्दघन चौबीसी की पंद्रह स्तवनों पर हिन्दी में ही विवेचन लिख चुका। प्रारंभ संक्षिप्त ढंग से किया पर पीछे से धीरे धीरे विस्तार बढ़ना ही गया अतः शायद प्रारंभ के कुछ स्तवनों को विस्तार से लिखना पड़े। पूर्व प्रचलित विवेचनों से यह ढंग ही मुझे पसंद आया। खैर।

आपसे सूचित 'आत्म विज्ञान' पुस्तक मेरी दृष्टि में अभी तक नहीं आया। पर लेखक का एक ब्र० विद्वान शिष्य मुझे ऋषिकेश में मिला था जो साल भर उनकी सेवा में रहकर आया था। वह बतलाता था कि बातें बनाना एक बात और अनुभव दूसरी बात है मुझे तो वहाँ से सन्तोष नहीं मिला। और न उनका ढंग ही मुझे पसन्द आया। खैर।

मैं साहित्यिक प्रसंगवश अब तक तो यहीं हूं आगे का कुछ भी सोचा नहीं है। यदि स्थानान्तर का प्रसंग उपस्थित होगा तो याद रहने पर आपको सूचित करूँगा अन्यथा आप अगरचंदजी से पूछवा लीजियेगा।

पत्र की आदि में ॐ नमः लिखता हूं। मैं तीन साल तक कर्णाटक प्रदेश की एक गुफा में मौन रहा. तब एक लड़के से कन्नड़ लिपि के मूलाक्षर देखे अतः उसकी स्मृति रूप में ॐ नमः की पद्धति अपना ली।

स्वास्थ्य अच्छा है। आपका भी अच्छा रहो। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः।

भवदीय—सहजानन्द सादर जिन स्मरण

(पत्रांक—१५६)

ॐ नमः   ३-३-६१

होलीः—   पद   राग—होरी

पिय संग खेलूं मैं होली, प्रेम खजाना खोली……प्रिय

गुप्ति गढ चढ वंकनाल-मग, गये हम दशम प्रतोली,
अशोक-वन अनुभूति-महल में. ज्ञान गुलाल भर झोली,
रंग दी पियु मुँह-मौली……प्रियु १

घट पंकज केसर चुन-चुन कर, पांडु-शिला पर घोली,
मिला सुधारस भर पिचकारी, पियु छिडके हम चोली;
हम पियु पिण्ड डुवोली……पियु २

पियु भी हम सर्वांग डुवोकर, पाप कालिमा धोली,
वाजत अनहद वाजे अद्भुत, नाचत परिकर टोली;
दिव्य संगीत ठठोली……पियु ३

ब्रह्माग्नि सर्वांग ही धधकत, कर्म कण्डे की होली,
क्षायिक भावे खाक उडा फिर, बैठे स्वरूप खटोली;
सहजानन्द रंग रोली……पियु ४

भक्तवर (मेघराज जी नाहटा-सिलचर)

पत्र मिला सदा मगन में रहो प्रभु की कृपा से हम सभी मगन में हैं भाईजी स्वस्थ हो रहे हैं। काकीमां का आशीष सुखभाई सुख में हैं। निर्मल और उसकी भत्रीजी अस्वस्थ हैं पर धीरे धीरे स्वस्थ हो जायेगी फिक्र न करें। चंचल का पताः—

चंचल जैन C/o लाला कृष्णचन्द्रजी जैन रईश १८ तिलक रोड, देहरादून (U. P.) वह आनन्द में है। आपको नमस्कार लिखती है। वाकी सव कुशलम.

१६ वाँ स्तवन विवेचन लिख रहा हूं। आनन्दघन तो वस आनन्दघन ही हैं। क्या है उनकी अद्भुत मस्ती। प्रभु भक्ति में लक्ष वृद्धि हो ! ॐ शान्तिः

सहजानन्द—धर्मस्नेह जिन स्मरण

(पत्रांक—१५७)

ॐ नमः

धोरा गुफा
२१-३-६१

मान्यवर्य पंडितजी,

आपनुं कार्ड मल्युं. व्यतिकर जाण्या.

छेल्ला त्रणेक अठवाड़ीआ थी व्हारना तेमज वीकानेर आदि ना सत्संगीओ समय लई लेता होवा थी अने वच्चे आँख मां तकलीफ थई जवा थी आनंदघन चौ० विवेचन लखवुं वंध हतुं. मात्र १६

स्तवनो पूर्ण थया छे. रात्रे काम करतो नथी तेथी तेमां विशेष गति थती नथी. ए कृति एटली बधी अटपटी छे के तेमां थी मूल-हार्द खेंचवा मा विशेष समय लेवो पड़े छे बीजी प्रचलित अनुवादित नो आधार लेतो नथी. कारण के मारी शैली तद्दन निराली छे—ए कारणो थी आकाम धीरे-धीरे पण तलस्पर्शी करवो छे. आजे सवरमां प्रारम्भ छे. मन एमांज रमे छे. अने ए स्तवन पण मन विषयनुं ज छे.

अहिं हजु मौसम ठीक छे. उक्त साहित्य ने अंगे सामग्री नी सुलभता अने स्थानीय जनता ना आग्रहे हजु अहिं रहेवा विचार छे. पछी जेवो उदय, आपने मारी प्रकृतिनी वात ध्यान मां लेवा माटेज लखुं छुं. के प्रचलित ढंग अनुसार हुं. मारु प्रोग्राम नक्की करतो ज नथी. क्यां पण आववा जावानुं प्रोग्राम एकाएक बने छे अने तेम नभ्ये जाय छे. माटे ए विषे हुं काई ज लखी शकतो नथी. आपने ज्यारे विचार विचार थाय त्यारे अगरचन्दजी थी पूछावी लेवुं. तो जवाब मलशे.

साधु-साध्वी शिविर विषयक मारुं कईं लक्ष नथी. मुनि नेमचन्द्रजी (?) पावापुरी ना चौमास ने अंते राजगिरि अने गयाजी मां मल्या हता. संत विनोबाजी नी निश्रा मां काम करता हता. एमने योग साधना में रस छे. पण साथे लोक सेवा नो पण रस छे. बन्ने रस साथे मलता तेनो स्वाद जुदो पड़ी जाय छे हुं लोक सेवा ने खराब मानतो नथी पण ते जेवा ढबे थवी जोइये तेवा ढबे थती नथी. एम तो स्पष्ट जणाय छे. संतबालजी नी भावना पण सुन्दर छे. मने पण आमन्त्रण पत्रिका मोकली हती. शिविर नुं स्थल ज्यां 'मोहमयी' नगरी होय त्यां साधु-साध्वी ने केटली त्याग भावना दृढ़ करावी शकाय ? असली साधु-साध्वी घड़वा होय तो कोईं सात्विक भूमि मां प्रयोग करवा जोइए. पण जेमने राजसी जीवन मा रहेवुं गमे छे अने राजयोगी बनवुं छे. तो तेवी वृत्ति वाला ने प्रथम जनक जेवा पोताने बनावबा जोइए. विश्व मां आजे वात डाह्या पणुं बहु चाले छे. तेथी अलख देशनी अलख वातो लखवा मां आवती नथी एम मारुं निश्चित मत छे. ॐ शांतिः

आंखेहवे आराम छे. सहजानन्द स्वरूप स्मरण

(पत्रांक—१५८)

ॐ नमः

४-४-६१

माननीय पंडितजी,

आपनुं पत्र मल्युं. जीवन क्रम बदलाववा नी आपनी भावना कार्यान्वित हो—एज शुभ कामना हमणां सप्ताह थी. बीजा कार्यों मां रक्त होवा थी आनंद० चौ० नुं १७ मुं स्तवन पूर्ण करी शक्यो नथी भावना तेज छे. प्रायः हजु स्थिरता सम्भव छे. सत्संग मां आवनाराओ नी संख्या वधतो जाय छे. जैनो विशेष आवे छे. हवे कोलिजियन विद्यार्थिओ पण आवता थया छे. योगासनो शीखे छे.

दिव्य दृष्टि विषयक भिन्न-भिन्न महात्माओने अनुभव एक सरखो केम नथी ते विषे प्रगट मिलते चर्चा करशुं. मुनिश्री ने विषयक आपनो अभिप्राय जाण्यो आत्मोदय विना सर्वोदय शक्य नथी. स्वास्थ्य सारु छे, आपनुं पण तेमज हो.

देहरादून—लाला कृष्णचन्द्र जैन (१८, तिलक रोड) ने पेलुं पुस्तक शीघ्रातिशीघ्र मोकलाववुं छे, तेओ वारे घड़ी ए मागणी करे छे. मुद्रित थतां ज मोकलावशोजी.

तेमणे T. B. नो इलाज विषे शुं करवुं ? अर्थात् मूत्र प्रयोग केवी रीते करवो ते विधि निषेध पूर्वक प्रयोग नी समक्ष पूछावी छे. तो आप तेमने सविस्तर लखी मोकलजो सारा अक्षरों थी लखजो. कारण के मारु आ भणी लक्ष नथी. आटली तकलीफ आपने आपुं छुं तेओ ने टी० वी० नथी पण कोई परिचित ने छे—तेओ उदारचेता छे. नाहटाजी ने पत्र वंचाव्यो हतो धर्मस्नेह कह्युं छे. ॐ शांतिः

भवदीय

सहजानन्द

सादर धर्मस्नेह सह आत्मस्मरण

(पत्रांक—१५६)

ॐ नमः

राजपुर १४-४-६१

भक्तवर, (रांकाजी)

पत्र मिला। गुफा सम्बन्धी हाल ज्ञात हुए। पर यहाँ उसी गुफा को शुभेराजजी विस्तृत कर रहे हैं, अजैन लोग काफी लाभ ले रहे हैं एवं आनंदघन साहित्य के उपर्युक्त सामग्री की यहाँ सुलभता है, अतः अन्यत्र जाने की वृत्ति अब तक उपशांत है।

यों तो लाडनूं के दि० भाईयों का वहाँ के लिए आग्रह है एवं हीराचन्दजी बोरड़ी (बम्बई-सुरत के बीच समुद्र तट) ले जाने के लिये आए हैं, पर होगा क्या प्रभु जाने।

१७ स्तवन पूर्ण होने के बाद स्थानीय अव्यवस्था-सी होने से आगे का लेखन कार्य नहींवत है। सप्ताह बाद गुफा व्यवस्थित हो जाएगी तब ठीक सर होगा।

स्वास्थ्य सभी का अच्छा है। माताजी, शुभेराजजी, सुखलालजी आदि सभी आनंद में हैं। आपकी सत्संग मंडली सत् के उद्यम में दत्तचित्त होगी, क्षण एक भी प्रमत्त भाव में बहना भव वृद्धि करने तुल्य है। अतः आत्म-स्मरण धारा में अप्रमत्त रहिएगा। ॐ शांतिः

सहजानंदघन सहजात्म-स्मरण

(पत्रांक—१६०)

ॐ नमः

(धोरा-उरादमसर)

(देवीलालजी रांका) २४-४-६१

भक्तवर,

शरीर कुछ अस्वस्थ है एवं बोरड़ी निवासी श्री हीराचन्द्र जी की वर्षों की भावना के कारण १ मई को यहाँ से प्रयाण करके मेड़ता, कापरड़ाजी, ओशियाजी. होते हुये जोधपुर और फिर अहमदाबाद कुछ ठहर कर बोरड़ी समुद्रतट पर पहुंचेंगे। विशेष यथावसर सभी सत्संगियों को सादर जिन-स्मरण।

भवदीय—

सहजानन्दघन

(पत्रांक—१६१)

ॐ नमः २८-४-६१

भक्तवर (रांकाजी)

पत्र मिला, भँवरलाल जी सा'ब ने जो गुफा की खोज की उसके लिए धन्यवाद! पन्तु अब तो बोरड़ी का का प्रोग्राम टल नहीं सकता। अहमदाबाद कुछ ठहरते हुए बोरड़ी जावेंगे। धर्म ध्यान में दत्त चित्त रहिएगा। सभी से सादर जिन स्मरण! माताजी के जयजिनेन्द्र!

सहजानन्दघन

(पत्रांक—१६२)

ॐ नमः जोधपुर ५-५-६१

पंडित जी

गत सोम की सांम को आपकी चिट्ठी मिली बाद प्रयाण हुआ। मंगल की मंगल प्रभात में यहाँ जोधपुर-सरदारपुरा में ठहरना हुआ, यहाँ श्वेताम्बर अेवं दिगम्बर उभय स्थानों में प्रवचन हुए। कापरड़ाजी मण्डोवर आदि स्थानों का निरीक्षण भी हुआ। कल शनि प्रातः यहाँ से प्रयाण करके आहोर जा रहा हूँ। यदि कोई खास रुकावट न हुई तो रवि की शाम को फालना स्टेशन से पैसेन्जर द्वारा प्रयाण करके सोम की प्रभात में अहमदाबाद स्टेशन पर उतरूँगा।

आपने अमीरों के यहाँ उतरने को लिखी यद्यपि बहुतायत ऐसा ही है। पर मैं तो शहरों में खासकर ठहरने का पसन्द ही नहीं करता अतः जहाँ तक हो शहरों से बचने की कोशिश करता हूँ। फिर भी प्रसंगवश जाना पड़ता है तो जो व्यवस्था करें वहाँ ही जाता हूँ। चाहे गरीब हो किंवा अमीर। बोरड़ो हो ठहरने की व्यवस्था एक गरीब के यहाँ ही होगी। आपने अपने यहाँ ठहरने का प्रस्ताव

प्रथमतः किया होता तो मुझे अप्रमाण नहीं होता पर उसके पूर्व ही मोहनभाई का आग्रह था अतः स्वीकार कर लिया गया।

यहाँ प्रथम ही आना हुआ। फिर भी वहुत भावुकों का परिचय हो गया। यहाँ एक आध्यात्मिक मण्डल की भी पूर्वभूमिका तैयार हो चुकी।

शुभराजजी नाहटा साथ में हैं वे आज वापस लौटेंगे। सम्भव है कि अगरचन्द जी आहोर भण्डारों के निरीक्षण के लिये आ जायँ, शेष शुभम्

भवदीय शु० चि०

सहजानन्दघन

सादर धर्मस्नेह

(पत्रांक—१६३)

ॐ नमः

अहमदावाद ८-५-६१

[भक्तवर वैद्य कोजमल जी]

हम आज यहाँ सकुशल आ गए तीन रोज की यहाँ स्थिरता है। १०-५ की साम को यहाँ से प्रयाण करके करके ११-५ को वोरड़ी पहुँचेंगे। वहाँ एक माह भर का प्रोग्राम है। आने वालों के लिए केवल विस्तर साथ में लाना होगा। शेष सारा प्रवन्ध एम० वाडोलाल फर्म की ओर से होगा।

अगरचन्द जी जालोर गये होंगे। वहाँ व्यवस्था ठीक हो गई होगी। दलीचन्द जी आदि को सादर धर्मस्नेह। पत्रोत्तर वोरड़ी दें। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन जिन स्मरण।

साहिवचन्द जी सा'व से प्रयाण के समय न मिल सका क्षमा करें। यह वात सुना दीजिये यहाँ से काफी लोग वोरड़ी चलेंगे। ॐ सहजात्म स्मरण!

(पत्रांक—१६४)

अहमदावाद

ॐ नमः

८-५-६१

भक्तवर शुभराज जी

हम अगरचन्द जी को साथ में लेकर जोधपुर से आहोर सकुशल पहुंचे। अगरचन्दजी वहाँ के भण्डारों कर देख कर आज शायद जालोर पहुंचे होंगे और हम कल प्रातः अगवरी होकर चुडा में आहा-रादि से निवृत होकर फालना आए एवं पैसेंजर से आज सुवह यहां अहमदाबाद सकुशल पहुंचे हैं। यहाँ वाले श्री मोहनभाई (एम० वाडीलाल वाले) ने वोरड़ी-जैन-वोर्डिंग हाउस में ६ व्लोक १ माह के लिये किराये रख लिये हैं हमारे लिये भी एक वंगला हीराभाई ने निश्चित कर लिया है। उक्त छः व्लोक में शायद २०० । २५० आदमी ठहर सकेंगे। रसोई वैगेरह की व्यवस्था भी यह मंडल स्वयं करेगा। बड़वा

आश्रम वालों में से प्रायः बहुत से लोग बोरड़ी चलेंगे। प्रायः हम ११ की शाम को बोरड़ी पहुंचेंगे। बीच में सूरत स्टेशन के पास ८ घण्टे पेटपूजन के निमित्त ठहरना होगा। स्वास्थ्य सब का ठीक है। वहां भी होगा। श्री सजानची साब को धैर्य देते रहिएगा। मंगलचन्द जी साब को स्वतंत्र बंगला तो नहीं मिल सकेगा। पर दूसरों के साथ यदि अनुकूलता हो तो ठहर सकेंगे। ऐसा मेरा अनुमान है। शिवचन्द जी साब ने पत्रोत्तर मंगवा लिया होगा। शिवचन्द जी दीपचन्द जी सेठिया आदि याद करने वालों से धर्म-लाभ कहियेगा। पत्रोत्तर बोरड़ी दीजियेगा। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन धर्म-स्नेह

काकीमां सभी को सादर जयजिनेन्द्र लिखाती है। धर्म ध्यान में अभिवृद्धि हो गुफा कार्य की निवृति बाद आपका क्या प्रोग्राम है? यहां मनफूलसिंह मोहनसिंह आदि से आशीष।

(पत्रांक—१६५)

ॐ नमः

बोरड़ी समुद्रतट

१२-५-६१

भक्तवर्य श्री शुभराजजी,

अहमदाबाद से दी हुई चिट्ठी मिली होगी। वहाँ से परसों शाम की लोकल से सुबह सूरत पहुँचे। नेमचन्द भाई सपरिवार मिलने आये थे। श्वे० धर्मशाला में आहार विधि आदि समाप्त करके २ बजे मेल द्वारा ५ बजे गोलवड़ स्टेशन पहुँचे। जनता स्वागत के लिए खड़ी थी। एम० वाड़ीलाल फर्म के मालिक मोहनभाई आदि साथ में आये हैं।

यहाँ बोरड़ी समुद्र तट पर ही १ बंगले में ठहरे हैं। सुबह ८।१६, दोपहर बाद २।३ एवं सायं के अनन्तर ८।१६।। (प्रवचनादि सत्संग) काकीमाँ जेतवाई आदि पास के बंगले में ठहरे हैं। चंचल का तार था कि लाला कृष्णचंद्रजी के साथ १५ को मैं बोरड़ी आऊँगी।

यहाँ रात्रि को तो खिड़कियाँ बन्द करनी पड़ी, शीतता थी। दिन को आबू की तरह क्वचित् उष्णता है। अगरचन्दजी साब जालोर से वापस आ गए होंगे, चुंडा में यतिजी का एक छोटा-सा भंडार पीछे से देखा। पर कोई विशेष महत्वपूर्ण प्रति नहीं देखी। आहोर एवं जालोर की यात्रा अगर-चन्दजी के लिए सफल हुई होगी।

मंगलचन्दजी साब यदि आना चाहें—आ सकते हैं। यद्यपि स्वतंत्र बंगला मिलना १ जून के बाद सम्भव है, पर तत्पूर्व कुछ दूरी पर शायद कुछ रूम मिल जायें।

डा० आमोपा एवं जजसाब चंदानीजी से भी हमारा यहां पहुंचने का समाचार दे दिया जाय।

गुफा कार्य समाप्त हो चुका होगा। कलकत्ते जाने का प्रोग्राम बना रहे होंगे? सभी का द्रव्य भावतः स्वास्थ्य अच्छा होगा। खजानची साब को हिम्मत दीजियेगा।

और सभी याद करने वालों से धर्मलाभ, विजय ठीक हो गये होंगे?

काकीमाँ को रास्ते के परिश्रमवश कुछ ज्वर था। ठीक हो जायगा। डहाणुं, दवीयर आदि आस-पास के भावुकों का आना जाना शुरू हो गया है। बम्बई के भी कितनेक आ आ कर मकान किराये लेते जा रहे हैं—वातावरण प्रसन्न है। ॐ शान्तिः सहजानन्दघन

C/o केवलचन्द भानीरामजी,

Po. Bordi St. Gholvad (W. B.)

(पत्रांक—१६६)

ॐ नमः

Bordi 17-5-61

सद्गुणानुरागी भक्तवर श्री शुभराजजी,

मैंने यहाँ से पहुँच पत्र दिया था—मिला होगा। यहाँ की आर्द्र-हवा और वहाँ की गर्मी के कारण काकीमां को यावत् न्युमोनिया की असर हो गई थी, जो अब आराम की दिशा में है। इस शरीर में भी कुछ सरद-गर्मी की असर थी—वह भी अब ठीक होती जा रही है। तीन वख्त नियमित सत्संग चल रहा है। आस पास के देहात एवं बम्बई आदि से दर्शकों का आना जाना हो रहा है। डहाणु-संघ ने मिलकर आज अपने ग्राम में चातुर्मास कराने का जोरदार निर्णय व्यक्त किया, पर मेरे स्वभाव ने अस्वीकार किया।

चंचल को लिवा लाने लिए यहाँ से एक वृद्ध पुरुष विश्वासपात्र को कल रात को देहरादून भेज दिया है, क्योंकि कृष्णचन्द्रजी नहीं आ सके।

गुफा का काम पूर्ण हो गया होगा। स्वास्थ्य सबका ठीक होगा। भक्ति बल में विकास यदि आवश्यक हो तो आपको ३०-५ ज्ये० पू० की रात्रि यहाँ बीते उस प्रकार अपना प्रोग्राम बना कर आ जाना उचित है। क्योंकि सम्भव है कि काकीमाँ के सत्व की कसौटी उस अवसर में अपूर्व रूपेण हो, ऐसा योग है। साथ में यदि रुचि हो तो अगरचन्दजी भी आवे तो अच्छा रहेगा। फिर हम पर उस प्रकार का उपालंभ न रहे कि ऐसे अवसर पर हमको इशारा नहीं मिला। इस बात को आप सागर हो समा लीजिएगा। दोनों सिवा अन्य के कान पर न पहुंचे।

लिखने का काम अब तक शुरू न हो सका। क्योंकि वैसी परिस्थिति नहीं है। अगरचन्दजी सा'ब को आहोर-जालोर की यात्रा व्यर्थ नहीं गई होगी।

काकीमाँ का आप सभी को सादर जयजिनेन्द्र! ॐ शान्तिः

सहजानन्द-जिनस्मरण!

(पत्रांक—१६७)

ॐ नमः

Bordi 19-5-61

सद्गुणानुरागी भक्तवर्य श्री शुभराजजी एवं श्री अगरचन्दजी साब,

भेजा हुआ लिफाफा मिला होगा, आप दोनों के पत्र मिले, हाल ज्ञात हुए।

आहोर एवं जालोर की बातों को देखकर आपको भारत सरकार एवं राजस्थान सरकार से एक ऐसा प्रमाण पत्र प्राप्त कर लेना चाहिये कि जिससे किसी भी भंडार के व्यवस्थापक प्रतियों के आदान प्रदान में जरा-सा भी इनकार न कर सके। इस वक्त सत्ता के जरिए ही लोग कुछ नम्र रह सकते हैं, क्योंकि मानवता खो बैठे हैं।

आनन्द० चौ० की मूल कापी मुझे स्वतन्त्र तैयार करनी होगी अतः आज से प्रारम्भ करूँगा। और फिर आपने मंगाई प्रति वापस करूँगा। अर्थ तो यथावकाश होगा।

काकीमाँ की तबियत सुधार पर है – ठीक हो जायगी। चम्बल भी आ जायगी।

पूर्व प्रेषित पत्रानुसार यदि आप दोनों का यहाँ पूर्णिमा तक आना हो जाय तो भक्ति करण्ट अवश्य लगेगा। फिर जैसी आपकी सुविधा। गुफा का अवशेष कार्य मनफूलसिंहजी को कहने पर शायद सम्भाल ले। उनको हमारा आशीष है। मोहनसिंह को भी।

खजानची सा'ब को मन्त्र स्मरण की स्मृति बार-बार दिलाई जाय। झाबकजी ने बहुत देर कर दी। क्योंकि फिर १० जून की आस-पास शायद हम आस-पास के देहातों में चले जायँ। फिर उन्हें साथ रहना कठिन होगा। फिर जैसी मरजी।

× × × × ×

बाकी पुराणे सत्संगी बहुत आते-जाते हैं। आज काफी संख्या में आये हैं। ॐ शान्तिः

यहाँ से हम सभी का वहाँ याद करने वालों से यथोचित् धर्म-स्नेह—

सहजानन्दघन जिनस्मरण

(पत्रांक—१६८)

ॐ नमः

बोरडी २५-५-६१

सद्गुणानुरागी श्री अगरचन्दजी,

आपे झाबकजी नी साथे पाठवेल पुस्तिका अने पत्र मल्यां. समाचार जाण्या भाईजी आवशे तेम भाईजी ना भाईजी आवे तो तेमने करण्ट लागी जाय एवो अवसर प्रायः लागे छे छतां आपनी मरजी.

भण्डारो नी संकुचितताए इतिहास ने परदा मां राख्युं अने राखवा मागे छे. मताग्रह नी पण हद छे. समिति नी हालो तपासी लईश, अत्यारे अर्थ लेखन थाय तेम जणातु नथी.

शेखरचन्दजी शेठिया अने गोपीचन्दजी नाहटा जो आववा इच्छे तो तेमने हा जणावशोजी.

काकीमां नी तबियत अस्वस्थ प्रायः रहे छे औषध-प्रयोग भणी उदासीनता छे. कर्म ऋण थी उऋण थवुं एज प्रबल भावना छे।

चंचल ६ मी मां प्रथम नम्बरे पास थई ने अहिं गया सोमवारे आवी गई छे. मुम्बई मां ८वीं ना क्लास थी अंग्रेजीनुं प्रारम्भ थाय छे ज्यारे देहरादून मां ६ मी मां बीजो अंग्रेजी पास करी.

देहरादून थी लाला कृष्णचन्दजी अने लाला दीपचन्दजी जैन २६ मी लगभग अहिं आवशे. १ दि० कुटुम्ब अहमदाबाद थी सत्संग अर्थे आव्युं छे. मुंबई थी आवनाराओ नी संख्या वधे छे. तेथी घणुं करीं पूनम पछी अन्यत्र प्रयाण करवुं पडशे.

चन्दानी पत्र मां गई काले आप माटे सामान्य सूचना करी हती। तेमा आपने जेम अनुकूलता होय तेम करशो. मारुं स्वास्थ्य सारुं छे।

अहिं आवनाराओ नी व्यवस्था हीराचन्द भाई एकला संभाले छे. अने एमां अने उल्लास रहे छे.

तीन वखत नियमित सत्संग चाले छे. त्यां याद करनाराओ ने सादर जिनस्मरण ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन आत्मस्मरण

(पत्रांक—१६६)

कुंभोज तीर्थ (महाराष्ट्र)

ॐ नमः

१२-६-६१

भक्तवर (रांकाजी)

पत्र मिला; हाल ज्ञात हुए। बोर्डी में २२ दिन तक लगातार भक्तिक्रम का आयोजन रहा। बम्बई आदि से सहस्त्र लोग आये गये। सभी की सेवा की लाभ श्री हीराचन्दजी ने ही लिया। वहाँ अपूर्व आनन्द रहा। भक्ति का महात्म्य भी प्रगट हुआ। जो जल्दी में व्यक्त नहीं किया जाता।

वहाँ से यहाँ आये १० रोज हो गये। यहाँ की स्थिति अनिश्चित है। अतः पत्रोत्तर मत देना। महात्मा कि० को सादर धर्म-स्नेह लिखें। श्री धनराजजी एवं हीरालालजी आदि को सहजात्म स्मरण। धर्म ध्यान में अभिवृद्धि हो। उधर आना अभी सम्भव नहीं। सुखलाल आनन्द में है। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन

—सादर जिन स्मरण

(पत्रांक १७०)

ॐ नमः

हम्पी ३-७-६१

भक्तवर (मोहनलालजी छाजेड़)

पत्र मिला। आना हो तो मनाई नहीं। पण भक्ति क्रम व्यवस्थित नहीं रखा गया है। मात्र एक घण्टा मिलेगा। जीमने के लिए जैन भोजनालय है, रहने के लिये जूना मकान है। हमारे पास

ठहरने की सुविधा नहीं है। हमीं व्यवस्थित नहीं हो पाये, क्योंकि जीर्णोद्धार हो रहा है। और यहाँ की हकीकत हीराचन्दजी से पूछ लेना। सोहनजी का धूलिया से पत्र था। आने की आज्ञा दी है। समरथमलजी को मेरी ओर से शाबाशी देना। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन

सहजात्म स्मरण।

(पत्रांक--१७१)

ॐ नमः हम्पी ता० ८-८-६१

परम कृपालु देव नुं शासन जयवंत वर्ते!

विद्वद्वर्य सत्संग योग्य श्री अगरचन्दजी,

आपना बे पत्रो मल्यां. प्रथम पत्र ना अक्षरो तद्दन अस्पष्ट हता छतां भाव समझी लीधो हतो. आपनी लिपि अधिक समय नो व्यय करावे ए इष्ट नथी.

अहिं ना भावुको आश्रम तैयार करावे छे. जमीन पवित्र अने शुद्ध होवा थी तेम थवा मां में मना करी नथी. फ्री पट्टा मलो जवा थी अमुक विभाग तैयार थई रह्यो छे वर्षा ने कारणे काम धीमी गति ए चाले छे. तेथी एकान्त जेवुं ओछुं रहे छे. लाइट नी व्यवस्था हजु थई नथी तेथी आनन्दघन चौवीसी ने हाथ मां लीधी नथी. कांइक तबियत पण सरदी प्रधान रहे छे. नव नवुं काम जामतुं होवा थी अजैनो तरफ थी कइंक विरोध जेवुं वातावरण बनतां तेने शमाववामां पण उपयोग जोड़वो पड़े छे. हवे कईंक चित्त शांत थतां उक्त काम मां उपयोग जोडवा प्रयत्न करीश. उदय प्रमाणे थवा नुं थया करशे.

त्यां जे मारा निमित्ते एकत्रं साहित्य सामग्री छे तेमां मुख्यतः पेटी छे. बाकी ना पुस्तको छुटा थेलाओ मां छे. एमा थी आपे आपनी लायब्रेरी नुं साहित्य काढी लीधुं हशे? नहीं तो काढी लेजो. बाकीमां थी जे आपने जोइए ते राखी ने व्यवस्थित गोठवी शेखरचन्दजी सेठिया के बीजा कोई सारा मथवारा जोग मुंबई मोकली आपजो. तेनी साथे चटाइओ पीछी कमंडलु अने काकीवा ना वस्त्रो मारी मोटी चादर वगेरे भाईजीए आपने बताव्युं छे ते बधुं मोकलजो. मुंबई नीचे ना पता थी मोकलजो— खीमजी भाई C/o नानजी दामजी एण्ड कम्पनी।

27C, भातबजार बम्बई—4

आ खीमजी भाई मोटी बेन ना जमाई थाय. घोरामां आवी गया हता. आपनी साहित्य सामग्री हमणा न मोकलो तो चालशे. मारी पासे जे छे तेथी चलावी लईश. हिन्दी कोश हुं राखीश. तमे लायब्रेरी माटे बीजुं मंगावी लेजो. मात्र चौवीसी पूरतुं काम थई गया पछी कईंक विशेष साधना मां लागवा नी भावना छे. ते माटे आ स्थान उपयुक्त छे. माटे अहिं अधिक रहोश. एम इच्छा छे.

लकुंडी अने हंपीना पुरातत्व अवशेष मां बे त्रण वस्तुओ एकठी करी छे. ते प्रसंगे मोकली दईश. भाईजी नुं पत्र हतु भँवरजी नुं पण.

स्वास्थ्य ठीक-ठाक चाले छे जो के वर्षा अधिक नथी. पण स्थान अव्यवस्थित जेवुं छे जे धीरे-धीरे ठीक थतुं जशे.

आप सौ आणंद मां हशो. उमरसीए ने प्रतिक्रमण पूर्ण करी जयतिहुअण शरु कर्युं छे. एम बुद्धिमुनिजी म० लख्यो छे. हवे त्यां चित्त जमतुं जाय छे तेथी तेओ प्रसन्न छे.

उपाध्यायजी महाराज नो पण खामणा पत्र हतो। ॐ शांतिः

सहजानन्दघन

सादर जिन स्मरण

(पत्रांक—१७२)

ॐ नमः

रत्नकूट हंपी

श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम

२२-८-६१

परम कृपालु देवनो शासन जयवन्त वर्तो!

पण्डितजी,

आपनुं कार्ड मल्युं. बोरडी थी मीराज पासे कुम्भोज तीर्थे १७ दिवस स्थिरता करी गोकाक हुबली गदग थई होसपेट आववुं थयुं त्यांथी ८ माइल हम्पी किष्किंधा जावा आवतां साधनोपयोगी गुफाओ जोई अहिंज स्थिरता करी क्रमे क्रमे श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम नी स्थापना थई। आ ऐतिहासिक नगरना खंडेरो जोवा जेवा छे, शिलाखण्ड थी आच्छन्न शिखरमाला, वच्चे तुंग अने भद्रा तटीओ नुं संगम पासे हेम वनराजी वगेरे दृश्य मनोहर छे. हेमकूट ऊपर जैन मन्दिरों नो अवशेषो नुं ग्रुप छे पासे रत्नकूट छे. ज्यां नी गुफाओ मां निवास कर्युं छे. हेमकूट नीचे पंपपति (शिवालय) नुं धाम तेनुं गोपुरम् १० मंजिल नुं छे. विजयनगर नी राजधानी नुं आ शहेर टीपू सुल्ताने तोड़ी ५० लाखनी जनसंख्या ने त्रस्त करी।

अहिं स्थाननुं जिर्णोद्धार चालु होवा थी तेमज वर्षा वगेरे ना कारणे आनन्दघन साहित्य विषे हजु कलम चलाती नथी. हवे जेवे उदय.

आपनुं 'आरोग्य नुं अमूल्य साधन' १ किताब नीचे ना पता थी पोस्ट द्वारा मोकलजो एड्रेस अंग्रेजी मां ज करशो.

Jain Swami Sahajanand Ghan

Po. Hampi, Dist. Bellary, S. Rly.

स्वास्थ्य ठीक ठाक चाले छे. आप स्वस्थ अने प्रसन्न हशो। धर्म ध्यान मां अभिवृद्धि हो. ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन

सादर जिन स्मरण

(पत्रांक—१७३)

ॐ नमः

३०-८-६१

भक्तवर (कोजमलजी बाफणा)

पत्र मिला। मन और आत्मा दोनों को भिन्नता के साथ प्रतीति में रखने से और इसीलिए आत्मा में ही आत्म बुद्धि रखकर सतत मंत्र स्मरण रखने से मन की ओर ध्यान कम हो जायगा और उसी का आत्मा पर प्रभाव पड़ना भी मिटता जायगा—स्वास्थ्य का रहना-न-रहना—यह बात कर्मतंत्र के आभारी हैं। स्वास्थ्य के कानून जानते हुए भी पालन न करना—यह तो अपना वर्त्तमान अपराध है, और पालन करते हुए भी अस्वस्थता का बना रहना—यह पूर्व कर्म का अपराध है। अतः उदयकाल में प्रभु भक्ति में एकनिष्ठ हो समरस रहना यही भक्तों का कर्तव्य है। यहाँ हम सभी कृपालुदेव की कृपा से स्वस्थ एवं प्रसन्न हैं। श्री दलीचन्दजी, रिखबचन्दजी आदि तथा मुता साहबचन्दजी-मूलजी आदि सभी प्रियजनों को धर्मलाभ सह सहजात्म स्मरण कहना। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

सहजानन्दघन

सहजात्म स्मरण!

(पत्रांक—१७४)

ॐ नमः

हंपी ७-६

माताजी के लिखे पत्र में दूसरी तरफ प्रभु ने स्वयं लिखा :—

भव्यात्मा श्री मेघराजजी साब तथा श्री भँवरलालजी साब, पत्र मिला हाल ज्ञात हुए। यहाँ आनंद मंगल है, स्वास्थ्य अब ठीक है, माताजी भी प्रसन्न हैं। आप सभी आत्म-शांति के रस्ते अग्रसर हों—यही आशीष है।

जीवन में यदि प्रतिकूलताएं नहीं होतीं तो जीव ने मोक्ष के रास्ते में कभी कदम उठाने की चेष्टा नहीं की होती। अतएव प्रतिकूलताओं का आना जीवन में उत्थान के हेतु अनिवार्य है। उन्हें देख कर डरना मानों मोक्ष मार्ग से मुँह मोड़ना है। इतना ख्याल रखना होगा कि सांसारिक सारी अच्छी-बुरी परिस्थितियाँ केवल शरीर से सम्बन्धित हैं, आत्मा इन सब से न्यारा का न्यारा ही है। मैं आत्मा हूँ; शाश्वत हूँ और केवल स्वतत्व का ही जवाबदार हूं। जड़ परिस्थितियाँ मेरा न तो कोई बिगाड़ कर सकती है और न ही सुधार अतः सदैव समरस रहना मेरा धर्म है। ॐ शांतिः

—सहजानंदघन

हार्दिक आशीर्वाद

(पत्रांक—१७५) हंपी

ॐ नमः १७-६-६१

साधुस्वभाव पंडितजी,

आपनो कार्ड सप्ताह पूर्व मल्यो. पण पुस्तक न आववाथी तेमज पर्युषण पर्व ने अंगे फुरसद तो अभाव होवा थी जवाब मोड़ो लखुं छुं. पर्वाराधन मे सर्व जोवो नी साथे पण आपने पण भवो भव ना अपराध नी क्षमा स्वीकारवा विनंती छे. पुस्तक बे दहाड़ा ऊपर आव्युं पण मने कोई ए जणाव्युं नहीं आखरे में सोधी काढ्यूं.

आश्रम हजी वनी रह्यं छे तैयार थतां वखत लागशे त्यां सूधी मारी साथे कायम रहेनारा सिवाय वीजा ने हजी रहेवानी सगवड़ थई शकी नथी. तेथी स्थायी रहेनाराओ स्वीकार कर्यो नथी.

चित्त नुं परिशोधन अने परिस्कार जो सुगम होत तो मोक्ष पण सस्तुं थई पड़त. आ काल मां बहु विरल जीवो ते रास्ते चढी शके छे तेमा सम्पुर्ण विजय करनारा आ पंचम काले नगण्य थई गया। चोथा आरा मां पण मानव सृष्टि नी अपेक्षाए अल्पसंख्यक थई गया, अने तेथीज आ काल अघरु छे. छतां तेवी तालीम लई शकाय अने तेमा साक्षात्कार पर्यन्त आजे पण प्होंची शकाय छे. मात्र पात्रता विकसावबी जोइऐ. ते माटे निर्दंभ जीवन जोइए तेनी साधना मां प्रवेशवा स्व ज्ञायक सत्ता मात्र ना अनुसंधान पूर्वक स्वतत्व ने याद करावनार मंत्रनी स्मरण धारा अखण्ड वनाववी जोईए. तेमां बाधक प्रमाद ने शमवा-आसन स्थिरतादि पण आवश्यक छे. उक्त प्रयत्न जो सारी दिशा मां थाय तो क्रमशः अनाहत ध्वनि, दिव्यज्योति, सुधारस, दिव्य सुगंध. दिव्य स्पर्शादि जे अनुभव थते-थते चित्त अचपल वने छे. चित्तनो निस्तरंग दशा मां सर्वाङ्ग प्रकाश प्रगट्ये शरीर थी भिन्न केवल ज्ञानमूर्त्ति आत्म साक्षात्कार भास्यमान थई शके छे आ निर्विवाद सत्य छे. ज्यां सूधी दिव्य विषयो नो अनुभव नथी थतो त्यां सूधी आत्मध्यान कल्पना मात्र थाय छे. पछे भले Phd. D. Litt. हो के धुरंधर आचार्य हो पण तेओ नय-प्रमाण-निक्षेपातीत स्वतत्व ने ग्रहण करी सकता अेम सौ अनुभवीओ नो पड़कार छे. जे अत्यंत साचो छे. आ वात करी तर्क नी गति मां उछल कूद करनार स्वीकारी शके नहीं, तेम छतां सांच ने आंच नथी. अेवी आ आत्माने खात्री छे. आपनी भावना स्तुत्य छे. ज्ञान ने अनुरूप आचरण दुसाध्य छे. पण असाध्य नथी. पूर्व कृत अेंजिन जीवन गाडी खेंच्ये जाय छे. पण उन्नत भूमिए ते चाढी ने पाछल थी बीजुं सत्पुरुषार्थ अेंजिन लगाडया विना जीवन गाडी उन्नति ना शिखरे पंहोची शकतो नथी. अने असत्संग तथा असत्प्रसंगे नीचे नी भूमिका मां अटवाया करे छे. ते माटे सत्संग अने सत्प्रसंग अनिवार्य थई पड़े छे.

ॐ शान्तिः

सहजानंदघन

धर्मस्नेह

(पत्रांक—१७६) श्रीमद् राजचंद्र आश्रम
रत्नकूट—हंपी
ॐ नमः २३-६-६१

महाविदेही महाज्ञानी परम कृपालु देवनु अखंड शरण अने स्मरण हो।

सद्गुणानुरागी सत्सेवाभावी भक्तवर श्री शुभराजजी, भँवरलालजी, विमलचंदजी, पारसकुमार, पद्मचन्द्र आदि सपरिवार।

आपना खामणा पत्रो मल्यां, बीकानेर थी अगरचन्दजी आदि नो सामुहिक पत्र मल्यो.

अनादिय भव पर्यटन मां आ जीव राग द्वेष अने अज्ञानरूप त्रिदोष सन्निपात वड़े स्वभान भूली बीजा जीवो प्रत्ये अपराध सेवतो आव्यो छे. अमुक जन्मो थी प्रति संवत्सरे प्राय स्वअपराधोनी क्षमा याचना पण करतो आव्यो छे परंतु ते खामणा मां कंइ ने कंइ खामी रहेती आवी छे जेने लई ने आ हुंडा अवसर्पिणी काल ना हलाहल दूषमकाल मां परमज्ञानी विहीन परिस्थिति मां आवी ने सपड़ायो छे.

ते खामणा नी खामी दूर करी वहेला स्वधाम जवा सिवाय हवे एने बीजी इच्छा मात्र रही नथी तदनुसार आ सां० प्रतिक्रमण तेवा विशुद्ध भावे सौ जीवो थी खामणा कीधा छे. जेनो हृदय थी स्वीकार हो। काकीबा, जेतबाई अने सुखलाले पण तेवी रीते सौने खमाव्या छे—स्वीकृत हो।

बोरड़ी थी हीराचन्दजी ना भाई चंपालालजी व्हेन शांता तथा डाहाणु थी श्री मोहनलालजी अने वरंगल, गदग, वेल्लारी, होसपेट विगेरे ना भावुकोए मली अहिं पर्वाराधना यथाशक्ति करी छे. बीजा आस-पास ना घणा ग्राम-नगरो ना भावुको पर्व मां आव जा करी लाभ लेता हता.

आ शरीरे ठीक छे. काकीबाना पेटनी दवा-गोलिओ मुंबई थी एमना हमेश अनुभवी डाक्टरे मोकली छे—भक्ति भावे. तेनु पर्युषण बाद सेवन करवा थी दर्द मां न्यूनता थई छे. हवे बे दिवस थी अन्नलेवा थया छे. नहिं तो मात्र प्रवाही जरा-तरा लेता हता. चंचल नी परीक्षा चालू छे. ते तो लालाजी ना कुटुंबमा एवी एकमेक थई छे के लाला कृष्णचन्द्र दम्पती २५-६-६१ ना जापान जवा ने तैयार थया छे तेओ लखे छे—"घर चंचल रानी को सुप्रत करके उनका भी सभी प्रकार का प्रबंध करके हम जापान जा रहे हैं. आप फिकर नहीं करियेगा आशीष भेजिएगा"

आप सौ नुं स्वास्थ्य ठीक हशे अने रहो। आप कईक चिन्ता मां छो एम लागे छे. ते चिन्ता ने गौण करी प्रभुस्मरण मां जोर पूर्वक वधारो करजो तो आत्मशान्ति थशे-बाकी संसार नाटक तो एम ने एम विचित्र पणे चाल्या ज करशे. त्यां अन्य याद करनाराओ सौ थी अम सौना शुद्ध भावे खामणा कहेजो. ॐ शान्तिः

सहजानंदघन मिच्छामि दुक्कड़म्

अहिं हजु तेवी निवृत्ति मली नथी के जेमां आनंदघन चौवीसी पूर्ण थाय. हजी एक अक्षरे य अहिं वधार्यो कर्यो नथी. नवा पदादि प्रत्ये पण लक्ष नथी.

(पत्रांक—१७७) हम्पी

ॐ नमः २३-९-६१

भक्तवर कोजमलजी एवं रिखबाजी आदि

आपका खामणा पत्र मिला। हमारे भी तथैव खामणा स्वीकारियेगा।

मूत्र प्रयोग उपवास पूर्वक करने पर आपकी तबियत क्या सुधर नहीं सकती? बंधे हुए कर्म का करजा तो चुकाना ही पड़ता है। समभाव से सहना ही धर्म है। मानसिक स्वस्थता तो प्रभु स्मरण की अखण्ड धारा से ही संभव है। पुरुषार्थ करना ही अपना कर्त्तव्य है। यदि यहाँ आना हो आ सकते हैं। भोजनशाला एवं ठहरने की व्यवस्था है। वहाँ साहिबचन्दजी सा०; मूलचन्दजी; पुखराजजी तथा और भी परिचितों से हमारा खमतखामणा कहियेगा। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन

सहजात्म स्मरण!

(पत्रांक—१७८)

ॐ नमः

P. O. हम्पी

Dist- Bellary SYRL.

27-9-61

भक्तवर (रांकाजी)

खामणा पत्र मिला। हम सभी ने भी आप सभी से अपने जन्मोजन्म के अपराधों की उत्तम क्षमा याचना की है—स्वीकृत रहो।

यहाँ आश्रम कायम हो चुका आनेवालों के लिए हंपी बाजार में जैन भोजनालय एवं ठहरने के लिए दो तीन मकान भी प्रथमतः रखे गये हैं। यहाँ से दो फर्लाङ्ग की दूरी पर आश्रम है।

रामगंज मंडी से यहाँ आने के लिए देहली से मद्रास जो मद्रास मेल चलता है वह ठीक पड़ता होगा। रतलाम से खण्डवा जाकर वह मिलता होगा। उसी से गुंटकल में बदली करके होस्पेट स्टेशन उतरना होता है स्टेशन से एक मील दूरी पर हम्पी बस स्टेंड है। वहां से बस द्वारा हम्पी बाजार में भोजनालय के सामने उतर कर मुनीमजी से मिलते ही सभी व्यवस्था हो सकती है। यदि मद्रास मेल न मिला तो मनमाड, डोंड और गुँटकल बदली करनी पड़ती होगी। आप जाँच कर लीजिये। जब चाहें आ सकते हैं। बड़ा ही सुहावना और सात्विक वातावरण है यहाँ का। हमसे उधर आना शक्य नहीं।

आश्रम में तीन गुफाएँ, सत्संग हॉल मंडपादि कुछ तैयार हो गये हैं। गुफाएँ प्राकृत हैं। चैत्यालय की भी व्यवस्था गुफा में है।

वहाँ चाँदमलजी साव, हीरालालजी धनराजजी आदि सभी से हमारी क्षमापना स्वीकृत हो। धनराजजी का क्या हाल है? अंग्रेजी में पता न करने से पूर्व पत्र आपका हमें नहीं मिला। यहाँ हिन्दी नहीं जानते।

काकीमां, मुख भाई ने भी सभी को खमाया है। और भी बाहर से कुछ सज्जन आये हैं। पर्वाराधना भा० कृ० १२ से शु० पूर्णिमा तक ठीक चली। धर्म ध्यान में अभिवृद्धि हो। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन

सादर जिनस्मरण

(पत्रांक—१७६)

ॐ नमः

हम्पी ६-१०-६१

रे जीव साहस आदरो, मत थाओ दीन;
सुख दुख संपद् - आपदा, पूरव कर्म आधीन'''रे जीव०
ज्यां लगी तुझ इण देह थी, छे पूरव संग;
त्यां लगी कोटि उपाय थी, नवि थाये भंग'''रे जीव०
आगल पाछल चिहुं दिने, जे विणसी जाय;
रोगादिक थी नवि रहे, कीधे कोटि उपाय'''रे जीव०
अन्ते पण एहने वम्यां, थाय शिव सुख;
ते जो छूटे आप थी, तो तुझ स्यो दुख?'''रे जीव०
छेदन भेदन ताड़ना, वध बंधन दाह;
पुद्गल ने पुद्गल करे, तूं तो अमर अगाह'''रे जीव०
देह गेह भाड़ा तणो, ए आपणो नांहि;
तुझ गृह आतम ज्ञान ए, तिण मांहि समाहि'''रे जीव०
मेतारज सुकोशलो, वली गजसुकुमाल;
सनत्कुमार चक्री परे, तन ममता टाल'''रे जीव०

× × × ×

आव्यो छे तूं एकलो रे, जाइश पण तुं एक;
तो ए सयल कुटुम्ब थी रे, प्रीति किसी अविवेक'''
रे प्राणी एकल भावना भाव
शिव मारग साधन दाव रे प्राणी एकल०
ए दोष पर-महण थी रे, पर संगे गुण हाण;
परधन माही चोरटा रे, एकपणुं सुख स्थाण रे प्राणी०

सुरपति-चक्री हरि-हली रे, एकला परभव जाय;
तन-जन-परिजन सहु मिली रे, कोई सखाई न थाय रे प्राणी०

जन्म न पाम्यो साथ को रे, साथ न मरशे कोय;
दुख वेंचाऊ को नहीं रे, क्षणभंगुर सहु लोय रे प्राणी०

ज्ञायक रूप तुं एक छो रे. ज्ञानादि गुणवंत,
वाह्य योग सहु अवर छे रे, पाम्यो वार अनंत रे प्राणी०

[भगवान देवचन्दजी]

सद्गुणानुरागी श्री दलीचन्दजी,

कोजमलजी एवं आपका पत्र मिला। शरीर आत्मा नहीं है और न आत्मा भी शरीर। अतः परमगुरु जैसा ही मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं तो फिर शरीर की चिन्ता क्यों ? एक भव में हो यदि अनंत भव टालते हैं तो आत्मा के सिवाय दूसरा विकल्प क्यों ? जब निकटवर्ती शरीर न मैं हैं न मेरा तब भला, मेरे से विलकुल प्रत्यक्ष जुदे दूसरे देहधारी मकान-दौलत आदि मेरे कैसे हो सकते हैं ! इस तथ्य को ध्यान में रखकर केवल आत्म भावना में ही स्थिर रहना यही जन्म-मरण की चक्की से छूटने का उपाय है।

कृपालु देव के वचनामृत में से ७७९, ७८०, ७८१ तीन पत्रों का वारम्वार चिन्तन करने से देहाध्यास छूट सकता है और विशेषतः नीचे की गाथाएँ सभी को मंत्रवत् रटने योग्य है।

छूटे देहाध्यास तो, नहिं कर्त्ता तूं कर्म,
नहिं भोक्ता तूं तेह नो, एज धर्म नो मर्म,
एज धर्म थी मोक्ष छे, तूं छो मोक्ष स्वरूप,
अनंत दर्शन ज्ञान तूं अव्यावाध स्वरूप,
शुद्ध बुद्ध चैतन्यघन, स्वयंज्योति सुखधाम;
वीजुं कहिये केटलुं, कर विचार तो पाम,

इनके रटने से आत्मा में अवश्य शान्ति मिलेगी, अधिक क्या लिखूं ? यही साहबचन्दजी साब, कोजमलजी आदि सभी को मनन करने योग्य शिक्षा है। अपने पापों का पश्चात्ताप अमुक ही समय करके उसे भूल जाना और उक्त शिक्षा को स्थिर करके मंत्र-स्मरण धारा में तन्मय होना यही परदे को हटाने का उपाय है। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन

सहजात्म स्मरण सह जय सद्गुरु वंदन!

(पत्रांक—१८०)

ॐ नमः

Hampi
१६-१०-६१

भक्तवर श्री शुभराजजी, श्री मेघराजजी, श्री भँवरलालजी,

श्री हरखचन्दजी आदि सपरिवार

आपके दो पत्र मिले। हाल ज्ञात हुए। आपके स्वास्थ्य की गड़बड़ी एवं हमारी भी, सभी कर्म-तन्त्र के आभारी हैं। देह के दण्ड देह को भोगना ही है, आत्मा को नहीं। फिर भी जितना देहात्म भाव है उतना आत्मा सुख दुःख मना रहा है, जिनका अन्त देहात्मभाव के अन्त के साथ होगा। काकी माँ के हार्ट एवं पेट दर्द ने काफी मात्रा में कृपा की है। बम्बई के परिचित डाक्टर ने दवाई भेजी थी, जिसे पर्यूषण बाद शुरू की, पर फायदा न होते देख बन्द कर दी। अब कोई दवा नहीं लेते। बीच में हम दोनों को बुखार भी काफी मात्रा में दो रोज रहा, अब ठीक है। खाँसी दोनों को सामान्य है। हमारी दवाई तो प्रभु-भक्ति ही पेटेन्ट है; अतः दूसरा इलाज नहीं होता।

हम्पी ग्राम में डॉ० तो क्या? हजाम भी नहीं है। २०० घरों की छुटी-छुटी बस्ती है। पर यात्री गण अधिक आता है, क्योंकि हिन्दुओं की यह दक्षिण काशी है। अतः साधारण बजार है। होटलें ज्यादा हैं, सामान्य दुकानें भी हैं अतः सामान्य उपयोगी चीजें मिलती हैं। दूध मिलता है। बाकी दो मील पर कमलापुर है, वहाँ बहुत बगीचे हैं। साग-सब्जी मिलती है। होस्पेट से यातायात का साधन सुलभ होने से सब कुछ मिलता ही है। यहाँ अब तक धर्मशाला की शुरुआत नहीं हुई, पर विचारणा चल रही है। दीपावली बाद फण्ड एकत्र करेंगे, फिर काम शुरू होगा। तब तक नीचे जैन भोजनालय और अजैन धर्मशालाओं का उपयोग होता है।

आप यदि बीकानेर जायें और आपमें से कोई यहाँ आनेवाले हों तो पारसल द्वारा सामग्री भिजवाने की आवश्यकता नहीं। यदि कोई आनेवाला न हो तो उचित व्यवस्था कीजिये। दीवाली बाद शेखरचन्दजी शायद आने की सोच रहे हैं।

आप सुबह १ तोला भर घी में १० दाना कालीमिर्च उबाल कर वह घी पी लीजिए, अग्नि तेज होगी।

जेत बाई और सुखलाल ने सभी को नमस्कार लिखाया है। चंचल देहरादून ठीक है। पत्र आते हैं। पत्रोत्तर दीजिए। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन

धर्मलाभ सह आत्म-स्मरण!

(पत्रांक—१८१)

ॐ नमः

हम्पी
१७-१०-६१

परम कृपालु देवनुं शासन जयवंत वर्तो

भक्तवर ! (शुभराजजी नाहटा)

गत दिन होस्पेट एवं वेल्लारी के भक्तों ने काकीमाँ को वेल्लारी कार द्वारा ले जाकर एक्सरे में जाँच कराई एवं फोटो भी निकलवाया।

निदान में नाभि की उपरी पेट की आडी लाइन में एवं वगल तथा पीठ के हिस्से में अलसर सिद्ध हुए।

डा० भला आदमी निकला, कोई चार्ज नहीं लिया। दवाई में गोलियाँ दी हैं सुवह शाम १-१ गोली। एक माह तक लेने की है। साथ में जेत माँ एवं सुख गया था। चार बजे शाम को गये और रात्रि में ही वापस लौटे। ये अळसर धोरों में ही शुरू हुए थे। पर वहाँ जाँच कराने का किसी को नहीं सूझा। हमने यहाँ लक्ष दिया, अलसर के ही चिन्ह नजर आये इसलिए अनुरोध पूर्वक वेल्लारी भेजा—और निदान भी ठीक निकला। मेरा पूर्व पत्र मिला हो होगा।

काकीमाँ के सम्बन्ध में आपको फिक्र होना स्वाभाविक ही है। यहाँ यथाशक्ति सेवा सुश्रुषा हो रही है। अतः आप चिन्ता को कम कीजिए एवं अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान दीजिए। यह संसार की घटमाळ तो चलती ही रहेगी। सभी को धर्मलाभ। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन—

(पत्रांक—१८२)

ॐ नमः

हंपी १०-१०-६१

भक्तवर शुभराज जी आदि सपरिवार (बीकानेर)

आपका कार्ड कलकत्ता का मिला। हमारा कार्ड कलकत्ता होकर वहाँ पहुँचा होगा।

काकीमां को होस्पेट एवं वेल्लारी के भक्तों ने वेल्लारी लेजाकर एक अच्छे प्रसिद्ध डॉ० को उन्हें दिखाया, फोटो भी निकलवाया। तो एक्सरे में यह सिद्ध हुआ कि काकीमां के कलेजे में अलसर हैं। अर्थात् फोड़े एवं चांदे हैं। और वे भी काफी मात्रा में। अतः डॉ० को निराशा हो गई कि······अतः सब कुछ खाने पीने की इजाजत दे दी। शायद सान्त्वना के हेतु गोलियां दी और बताया कि १ माह गोलियां लेते रहेंगे तो अच्छा हो जायगा।

यह शिकायत बीकानेर—धोरों से ही शुरु हुई थी। वह प्रयोग चला। जब तक उस ओर ध्यान नहीं था, असर हो गई बाद में ज्ञात होने पर प्रयोग कर्त्ता ही खतरा खा गया।

डॉ० आसोपा को आपने बार-बार बताया पर, मुख्य के मरीज पर उन्होंने जैसा चाहिए, ध्यान नहीं दिया। उसीका परिणाम यह आया कि 'अब कैसे बचाया जाय ?'—यह हम—आपके कम भाग्य की बात है। कर्मोदय महा बलवान है—किसी को नहीं छोड़ता। दिव्य शक्ति वाले भी चिन्तित —वे भी अपनी ओर से यथाशक्ति प्रयत्न कर रहे हैं, परिणाम भविष्य के गर्भ में है।

कल सुबह काकीमां के मुख से यह निम्न पंक्ति घेर घेर सुनी—

'अमे थोड़ा दिवस ना मेहमान, जीवन थोडुं रह्युं'''

और भी जो आखिरी भलामण देने की है, कभी-कभी हँसी में कह देती हैं। यह हालत आपको विदित की। हृदय में रखियेगा।

इन्द्रादि भी जिनकी चिन्ता कर रहे हैं, उनके विषय में मृत्युलोक के हम मानवी क्या कर सकते हैं ? फिर भी उम्मीद है कि शायद यह घात टल जाय ! बीमा है। अपनी फरज मैंने यथाशक्ति बजाई और बजा रहा हूं। ऐसी स्थिति होने पर भी इनके आत्मानंद में कमी नहीं है। मुँह हँसता ही रहता है। आहार में कई दिनों से अन्न नहीं लिया जाता, फक्त दो वक्त कप-कप दूध एवं क्वचित् स्वल्प पपीता भी, फिर भी चौके में इस देहधारी की सेवा में जरा भी कसर नहीं। यह है अलौकिक भक्ति। भगवान महावीर के ऊपर जो जो उपसर्ग हुए, उन्हें इन्द्र टाल नहीं सका, क्योंकि कर्मतन्त्र अफर हैं, तब भला हम, आप किस गिनती में ? फिर भी अपनी ओर की शक्य सेवा वे कर ही रहे हैं, इसीलिये ये चल फिर सकती हैं। अधिक क्या ? आप चिन्ता न करियेगा, और अपनी स्वस्थता के प्रति ध्यान दीजिएगा। सभी प्रियजनों को सादर जिनस्मरण ॐ शान्तिः

—सहजानंदघन सहजात्म स्मरण।

(पत्रांक—१८३)

हम्पी

ॐ नमः

३०-१०-६१

ए री मैं तो प्रेम दीवानी, मेरा दरद न जाने कोय;
घायल की गति घायल जाने, कि जो घायल होय,
जौहरी की गति जौहरी जाने कि जिन्द जौहर होय,

भक्तवर,

पत्र मिला। दर्शन-परिषद की भूमिका ही आपके वेदन में है। जब तक प्राणों का प्रेम है तब तक पिउ नहीं मिलते। पिउ मिलन के लिये विरह व्यथा का सहना अनिवार्य है। धैर्य की प्राप्ति टूट न जाय अतः खबरदार !

सभी प्रियजनों को सादर सहजात्म स्मरण

सहजानन्दघन धर्म-स्नेह !

(पत्रांक १८४)

ॐ नमः हम्पी ११-११-६१

भक्तवर, [कोजमल वाफणा, आहोर]

अभी पत्र मिले। मुझे फुरसद का अभाव है। अतः अधिक पत्र व्य० नहीं होता। जो भी अनुभव में आते हों—आने दो, पर अनुभव करनेवाले के सिवा कहीं भी रुको मत। साधन-निष्ठा बढ़ाते जाओ। शरीर की परवा मत करो, उसे आत्म वेदी पर चढ़ा दो। क्योंकि बिना बलि चढ़ाये आत्मदेव रीझता नहीं। अनुभवों को गुप्त रखो, क्योंकि कहते रहने से अभिमान का आविर्भाव होता है, जो उसे खा जाता है। चुप रहो। क्या हमने आज दिन तक अपना फोटो अपनी इच्छा से निकलवाया है। और किसी को देने की चेष्टा तक की है ? तब वैसी मांग क्यों ? कृपालुदेव का चित्रपट ही सर्वस्व समझें। याद करनेवालों को सादर धर्मस्नेह। ॐ शान्तिः सहजानन्दघन आत्म-स्मृति

(पत्रांक—१८५) हम्पी ५-१२-६१

ॐ नमः

भक्तवर, (मोहनलालजी छाजेड़)

नवेसर थी जंजाल मा पड़शो नहीं। मोटी उमरे जंजाल⋯माटे तेमां थी छूटवानो वृत्ति राखी⋯⋯अदा करता रहेशो. अहिं प्रभु कृपा छे, भक्ति नो रंग लगावी तेमां स्नान करजो. काकीमां ने कांइ ठीक छे. आत्मा तो स्वस्थ छेज⋯⋯शुभराजजी नाहटा आव्या छे. ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन ना धर्मलाभ

(नोट :—इस पत्र में छाजेड़जी को दूसरा विवाह न करने का मार्गदर्शन दिया है।)

(पत्रांक—१८६) हम्पी P. o. (छाप)

ॐ नमः २५-१२-६१

परम कृपालु देव नुं शासन जयवंत वर्तो

भक्तवर श्री रांकाजी,

आपका पोस्ट द्वारा भेजा हुआ प्राभृत मिला। मंडल ने आपको हार्दिक सरहाया। यदि कोई निवृति के इच्छुक हों और अनुकूलता हो तो उन्हें भी भेजने को मंडल ने चाहा।

वैसे तो आप हैं, पर वैसी अनुकूलता नहीं क्योंकि अनुकूलता की दासता से भी आपको ऊँचे उठाना है। अतः जो उदय में आ रहा है समता से सहो। वैसा बल भी मिलो—यही आशीष है। वहाँ सभी सत्संगी जनों को सादर धर्म-स्नेह। काकीमाँ स्वस्थ हो रही हैं उनका एवं सुखभाई का जयजिनेन्द्र ! धर्म स्नेह में अभिवृद्धि हो। ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः सहजानन्दघन सहजात्म स्मरण

(पत्रांक—१८७) हम्पी

(१)

ॐ नमः १२-१-६२

रिखवजी,

भगवान रिखवदेव ना चरित्र रहस्य ने ध्यान मां लई तेमना जेवो तप करो तो तमे साचा धर्म ना—वृषभ-धोरी बनी शकशो ते रहस्य समजवा सत्संग अने भक्ति ने जीवन मा वणी लेजो. सत्संग ना अभावे परम कृपालु ना वचनामृतनो अभ्यास सतत करवो. तेमनी कृपा थी तेमना जेवा थवाशे. दीवे दीवो थशे, अधिक साथे ना पत्र थी जाणजो.

कहन सुनन में कछु नहीं आनन्दघन महाराज। ॐ शांतिः

सहजानंदघन सहजात्म स्मरण

(२)

देह छतां जेनी दशा, वर्ते देहातीत,

ते ज्ञानी ना चरणमां, हो वंदन अगणित ''

हे जीव! तुं देहमां रहेला विदेही—शरीर थी भिन्न आत्मा ने जो, तो तने तेना दर्शन मात्र थी अनंत अपार शांति अने आनंद नो प्रत्यक्ष अनुभव थशे. ते माटे दृष्टि ने दृश्यो थी फेरवी द्रष्टा मां लगाड़। ज्यां-त्यां तुं जुए छे. त्यां-त्यां दृश्यो ने जोनारो तुं आत्मा हाजरा हजूर ज छे. तुं तने भूली ने एकला दृश्यो ने शा माटे जुए छे? तुं तने भूले त्यां अशान्ति नो दरियो उछले छे. जे दरिया मां काम-क्रोधादि मगरमच्छो नो समूह वसे छे. ते अशांति ने टालवा नो उपाय पोताने न भूलवो—अने दृष्टि ने द्रष्टा मां स्थिर राखवी—एज छे. ते माटे परम गुरु तुल्य पोताना सहजात्म स्वरूपा—सहजात्म स्वरूप परम गुरु ने सतत एक धारू रट. स्मरण ने श्वासोश्वास मां वणी ले. श्वास बंध थतां जेम शरीर नो नाश तेम मंत्र बंध—भूलतां आत्म-शांति नो नाश थाय छे—आ तथ्य ने हृदयपट उपर अंकित करी, तूं स्वरूपानुसंधान पूर्वक 'सहजात्म स्वरूप परमगुरु' ने एक तार थी रट्ये जा, एवा बले ज अंतर नो पड़दो टलशे अने तू तने प्रत्यक्ष भेटी कृतकृत्य थशे; ॐ शांतिः

बहेन शांति,

तुं पोते शांत स्वरूप छतां शान्ति ने बाहर कां शोधे छे? तारा मां ठर पछी अशांति शोधवा छतां तने नहिं जड़े। मंत्र-रटण जेम अखण्ड सधाय तेम दरेक श्वासे दरेक क्रिया मां मनो मन करवा मां हरकत नथी तेना बल ने वधारवा भक्ति क्रम छे ते पण अन्तर्लक्षे करवुं लोक देखाड़वा कांइ ज न करवुं. अहिं आनंद मंगल वर्त्ते छे. ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

सहजानंदघन सहजात्म स्मरण!

(शा० रिखबचंद रतनाजी संघी—आहोर पर यह पत्र आया)

(पत्रांक—१८८)　　　　　　　　　　हम्पी

ॐ नमः　　　　　　　　　　१२-१-६२

[वैद्य कोजमलजी —आहोर]

अहो आश्चर्य! के पोते वैद्य छतां दर्दी दवाखानुं पोता पासे छतां दर्द न मटे!! केवुं आश्चर्य!!! अरे ओ वैद्य! शुं तारी दवा बीजा ने माटे ज छे? तारी कमाई नो रास्तो शुं ओ ज छे? ना-ना ओ तारो कमाणी नहीं, ए कमाई जड़ तुं चेतन. तने अने जड़ कमाणी ने शुं लागे-वलगे? तारी कमाई नो रस्तो तें जोयो? अहो! केटलो आनंद! केटली शांतिः? हवे तुं एमा ज रहे—एज तारी कमाणी वाकी वधी गमाणी. तुं देह नी वली चढाव; तने आत्मा मलशे अधिक शुं कहुं? तुं तने शोधी तेमां ठरी कृतकृत्य थशे. ॐ आनंद आनंद.

सहजानन्दघन

सहजात्म स्मरण!

(पत्रांक—१८९)

ॐ नमः

हम्पी

18-1-62

प्रगट परमात्मा स्वरूप परमकृपालु श्रीमद् राजचन्द्रदेव ने आत्म भावे अभिन्न नमस्कार हो!

भव्यात्मा,

माया - वाणी रे जाणी तेहने, लंघी जाय अडोल ;

साचुं जाणी रे जे वीतो रहे, न चले डांमाडोल।

आ वधुं झांझवानुं जल. ए साचुं नीर नथीज. तो पछी एने तरी पार थवा नौका बनाववानी कलाकूट शा माटे? नौका विना ज चालवा मंडी पड़ीये तो त्यां पाणी आवे-ने आवे ज ठेलातुं देखाशे. धरती तो सूकी-ने-सूकी तो पछी डूबवा नो के तरवा नो भय के पुरुषार्थ केम घटे?

मात्र आ मृगजल ने मृगजल जोई जाणी ने निर्भय स्वतत्व मां स्मरण पणे, ध्यान पणे अने लीन पणे रहेवुं एज खरो पुरुषार्थ अने अेज कर्तव्य छे,

खोटा ने साचुं जाणी—श्रद्धी ने जे चाले तेनो पग डगमगे. अेना भय नो किनारो ज केम आवे? विचारक नें अधिक शुं कहेवाय?

सत ते सत् छे. सरल छे, सुगम छे. सर्वत्र तेनी प्राप्ति होय छे"।

आ लोक नी अल्प पण सुखेच्छा.

तत्व नो अनिर्णय अने परम विनय नी खामी ने जो खतम करीए तो पल में प्रगटे मुख आगल से" ॐ आनन्द आनन्द आनन्द.

सहजानन्दघन

सादर सस्नेह पूर्वक

सहजात्म स्मरण नी अखण्ड धारा संप्राप्त थाओ!

(पत्रांक—१६०)

हम्पी

ॐ नमः

२६-१-६२

भक्तवर मेघराजजी,

पत्र मिला, हाल ज्ञात हुए। जब तक पूर्ण रूपेण तबियत सुधर न जाय और डा० रजा न दे, तब तक काकीमां को वहीं रखियेगा। भाईजी भले ही कलकत्ते रहें, आप वहाँ रह सकें तो रहिये। अन्यथा पारसमलजी सा'ब सुचारु रूप से उन्हें सम्हाल लेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

श्रीमान् हीरजी भाई भी सेवा में हाथ बँटा रहे हैं। यहाँ आनन्द मंगल है। आप सभी प्रसन्न रहिए। धर्म ध्यान में अभिवृद्धि हो। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन

धर्मलाभ !

(पत्रांक १६१)

ॐ नमः

हम्पी ७-२-६२

भक्तवर, (वैद्य कोजमलजी, आहोर)

ज्ञान धारा ही आनन्द की जननी है और वैसी धारा महान् पुण्योदय से कभी कदाचित् प्रगट होती है। यदि जीव उसे स्थिर करने में ही अपनी सारी शक्ति लगा दे तो ही वह टिक सकती है अन्यथा उस पर आवरण आ जाते हैं फलतः निरानंद का समय हाथ रह जाता है। सतत् मन्त्र स्मरण धारा उसे पुष्ट करती है और उसी लिए बलवान सत्संग योग अनिवार्य हो जाता है। असत्संग और असत्प्रसंग उसमें बाधक है। अतः कृपालुदेव के वचनामृत का बार-बार स्वाध्याय करो। वहाँ सभी प्रियजनों को सादर प्रभु-स्मरण। मुझे अवकाश तो कम ही रहता है अतः पत्र का उत्तर देने में कोई ठिकाना नहीं रहता। ॐ शांतिः

सहजानन्दघन

सादर सहजात्म स्मरण !

(पत्रांक—१६२)

हम्पी ६-२-६२

ॐ नमः

भक्तवर श्री मेघराजजी सा'ब,

दो पत्र मिले। हाल सभी ज्ञात हुए। हमने तो भाईजी को जो कहना था—कह दिया था। अपनी-२ गलतियों का फल तो सारे संसार को भोगना ही पड़ता है, क्या भगवान महावीर प्रभु ने अपनी गलतियों का फल कान में खीले आदि सहर्ष नहीं भोगे ? असली साहूकार क्या अपनी करजदारी माफ कराते हैं ? असली भक्त क्या सकाम भक्ति कर सकते हैं ?

हम क्या किसी के प्रारब्ध को बदल सकते हैं ? यदि ऐसा हो तो काकीमां को सुइयाँ नहीं दिलवाते। पर जो कर्म सूई चुभा चुभा कर ही मिटनेवाला है, उसे अन्यथा कौन कर सकता है ?

भाई साब ! जो होनहार है—होकर ही रहता है और जो होनहार नहीं—नहीं हो सकता। तो फिर चिन्ता की भी बात क्या है ? अचिन्त रहिये।

जो सेवक राज्य की सेवा तो खूब करे, किन्तु आज्ञा पाले नहीं—उनका आखिर हाल क्या हो सकता है ? हमारी कितनी आज्ञाएँ सांगोपांग पाली गई हैं ? हिसाब निकालिए और फिर दूसरी बात कहिए।

भाईजी एवं भँवरजी को कलकत्ते चिठी भेजी थी, जिसमें लिख दिया था कि हाल आप बम्बई न जाकर वहीं रहिये। बम्बई में मेघराजजी हैं ही, क्योंकि उनके (भाईजी के) शरीर का भी तो ठिकाना नहीं है और चिन्ता काफी, अतः स्वभाव में भी रूखापन दर्द बढ़ा सकता है, कम नहीं कर सकता ! जबकि काकीमाँ हैं घर की कुकड़ी और बाहर की बकरी। ॐ शांतिः

सहजानन्दघन

धर्मलाभ !

श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम
पो० हम्पी जि० बेलारी
(मैसुर-राज्य)
१३-२-६२

(पत्रांक—१६३)

ॐ नमः

अनन्य आत्म-शरण प्रदा। सद्गुरु राज विदेह।
चरण - कमल-वेदी निकट। धरूँ आत्म बलि एह॥

शेठ साहबान् मेघराजजी साब,

यदि भाईजी ने कलकत्ते से बम्बई के लिये प्रयाण न किया हो तो टेलिग्राम से उन्हें सूचित कर दीजिये कि मैं काकीमाँ को सम्भालता हूं आप वहीं रहिये; यहाँ कष्ट न लीजिये, क्योंकि वैसी गुरुदेव की आज्ञा है।

बेर-बेर दौड़-दौड़ से उनका खुद का स्वास्थ्य बिगड़ेगा। और वहीं उनकी आवश्यकता है। आज रात्रि को हमें एक विचित्र स्वप्न आया—एक बड़ा ही महोत्सव देखा। जिसमें भगवान की विस्तृत सवारी थी। अनेक पालकियाँ बड़ी-बड़ी और सजी-धजी थी, जिन्हें उठानेवाले प्रायः यति गण थे। दो एक दिगम्बर मुद्राधारी संत भी देखे। जिनमें एक की बहुत सी तारीफ हो रही थी। इस देहधारी आत्मा के नाम की नोटें (सिक्के) भी बाँटती हुई देखी। जिनालय देखे वर्षा भी बरसते देखी।

अजी शेठ साहब ! इसका अर्थ लिखकर भेजिये; क्योंकि ऐसी बातों की ओर हमारा ध्यान नहीं। आपका भजेजी का स्वास्थ्य ठीक होगा।

यह शरीर तन्दुरुस्त है, फिकर है नहीं। काकी माँ को यदि डा० रजा दे दें और दवाई का कोर्स पूरा होने पर भी बिना डाक्टर ही दवाई ले सकती हों तो शीघ्र होस्पेट की टिकट का बन्दोबस्त करके काकी माँ को यहाँ लाइये। क्योंकि उन्हें वहाँ चैन नहीं हो ऐसा हमें लगता है। उनका जी नहीं लगे पश्चात् वहाँ रखेंगे तो दवाई ठीक असर नहीं करेगी। ॐ शांतिः

सहजानन्दघन

(पत्रांक—१६४)

ॐ नमः

हम्पी

१५-८-६७

[वैद्य कोजमलजी को आहोर]

कागद और दरद का पारसल मिल्या। थांरी सारी हालत मालूम हुई। सदा मगन में रहा, बेटा! भगति में मगति है। परमाद टालने करो भगति, नहीं तो पड़ जायगा छेटा।

धुलिया शूं सोनराजजी ने म्हा रो औषध भेज्या, कल मिल्यो जिसके लगाने से सम्भव कि आराम हो जावेला थारी अब तक बाहीज स्थिति चल रही थी।

आत्मा की गाड़ी धागड़ धींगड़ चल रही है। माणिकचन्दजी बापजी ने घणा-घणा प्रेम सूं धर्मलाभ कीज्यो। सर रिखबाजी आदि सभी को भी। प्रभु भक्ति में तल्लीन बनो यही हम सभी का आशीर्वाद है।

सहजानंदघन

(पत्रांक—१६५)

ॐ नमः

हम्पी

१८-७-६८

श्री मेघराजजी साथ,

कल कार्ड मिला। भाईजी का भी था, उनका १८ पाउन्ड वजन कम गया फिर भी आप राजाधिराज उन्हें घाँची के बैल की तरह क्यों घुमा रहे हैं।

उन्हें बिल्कुल आराम देना अनिवार्य है। झंझाल कम कर दो और उन्हें मुक्त करो। आप तो रहे राजाधिराज, इसलिए आपको फिकर काय की?

भंभाड़ मा को हमारा धर्मलाभ! काकीमां का हमें मन रहती है कि उन्हीं पुनः आ जाय. हमने पहले भी लिखा था। और फिर भी लिखते हैं कि उनकी तबियत अच्छी बना कर शीघ्र यहां ले आइये।

पारसमलजी साथ आदि सभी उनके बन्धुओं को हमारा धर्मस्नेह। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन

धर्मलाभ!

(पत्रांक—१६६)

ॐ नमः

हंपी १६-३-६२

[वैद्य कोजमलजी को दिया कार्ड]

क्षुधा रोग निवारण के लिए—जैसे सूके चावल सीधे अग्नि पर पकाने लगते हैं—तो वेही नष्ट होकर क्षुधा बढ़ती है, पर यदि किसी पात्र में उसे छोड़कर उसमें जल मिला पकाते हैं तो चावलों में रस पैदा होता और उसके भोजन से क्षुधा दूर होती है वैसे ही भव रोग निवारण के लिए सूका निराकार ध्यान करने से आत्मा अभिमान की अग्नि से जल कर सन्त्रस्त होती है, पर यदि कोई परमकृपालु रूप प्रेम पात्र में उसे छोड़कर अर्थात् समर्पण करके उनमें प्रेम जल मिला पकाते हैं तो चैतन्य रस प्रगट होता है और उसी से भव रोग मिट जाता है। जैसे लोहा काटने के लिए लोहा ही समर्थ है वैसे जड़ कर्मों को काटने के लिए जड़ अणु ही समर्थ हैं--और वे मंत्र-स्मरण आदि से आकर्पित अणु ही दूसरे नहीं, अतः मंत्र-स्मरण धारा को स्थायी वनाने से आत्म दर्शन में वाधक कर्म निरंतर कटते हैं। इसीलिए सद्गुरुजन मंत्र-स्मरण धारा को अखण्ड वनाने का उपदेश देते रहते हैं। वाहरी कितनी भी प्रवृत्तियाँ क्यों न हो पर श्वास के साथ मंत्र-स्मरण करते ही रहना मुमुक्षु के लिए अनिवार्य है। ॐ शांतिः

—सहजानंदघन सादर सहजात्म स्मरण!

(पत्रांक—१६७)

ॐ नमः

६-४-६२

भक्तवर श्री भँवरजी,

मेघराजजी सा'वके नाम से आपका पत्र मिला। वे तो काफी रोज हुए, यहाँ से वापस लौट गये हैं और पते में उनका नाम छाप से दव जाने के कारण वापस कार्ड नहीं लौटाया—यहीं पड़ा है।

अगरचन्दजी साव का एक कार्ड काफी अरसे पूर्व आया था, जवाव अव तक नहीं दे सका। चौवीसी का अपूर्ण काम अव तक पुनः हाथ में नहीं ले सका हूँ। न जाने क्यों? वह कार्य रुचि रूप नहीं रहा।

यथाशक्ति साधन हो रहा है। स्थान सव प्रकार से अनुकूल है। अतः कोरा कागज-काली शाही का खर्च करने की रुचि गौण होती जा रही है। यदि हो सका तो कन्नड़ भाषा का अभ्यास प्रथम करने की आवश्यकता प्रतीत होने से—इस ओर ध्यान दूँगा।

स्वास्थ्य अच्छा है। काकीमाँ भी काफी स्वस्थ हैं। आप सभी स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे। शुभराज जी साव कलकत्ता आनेवाले हैं और मेघराजजी साव भी, उन सभी को एवं हरखचन्दजी पारसजी आदि को भी हमारा सस्नेह धर्मलाभ कहियेगा।

अन्तर्लक्ष्य की साधना के प्रति उपयोग केन्द्रित करने की तकलीफ जरूर उठायेगा। यहां सभी सत्संगी जनों का भी सादर जिन स्मरण ! ॐ शांतिः

सहजानंदघन धर्मस्नेह

(पत्रांक– १९८)

ॐ नमः

हम्पी १२-४-६२

सद्गुणानुरागी भव्यवर्य (श्री भंवरलालजी नाहटा)

आपका पत्र आज सन्ध्या को मिला। हाल ज्ञात हुए।

परम पूज्य श्री गणिवर महाराज के द्रव्य-स्वास्थ्य की क्षीणता लक्ष्यगत है, फिर भी उनकी भाव स्वास्थता को बारम्बार नमस्कार करता हूं। इस भाड़े की झोंपड़ी की क्या चिन्ता ? और चिन्ता करने से क्या कोई इसे स्थायी-शाश्वत बना सका ? तीर्थंकरों ने भी जिसे अनित्य, अशुचि और असार देखा उसे विश्व में कौन ऐसा साहसिक है जो नित्य, शुचि और सार रूप में परिवर्तित कर दे ? अतएव महाराजजी ने जो निष्ठा ग्रहण की है, सुन्दर है। साधक का ध्येय भी यही है। मेरी ओर से आप उन्हें अभिनंदन दीजिएगा एवं वंदन-सुखपृच्छादि सुनायेगा।

ऊजमसी का कार्ड पालीताणे से लिखा हुआ मिला था, जिसकी उसे पहुंच सुनायेगा। पुनशी भाई सुखी होंगे ?

बच्छी साध्वीजी और यतिजी के सम्बन्ध में उदासीन रहियेगा। उनके मन में दुःख न हो इसलिए मेरी ओर से सुखसाता पूछियेगा।

आपका स्वास्थ्य ठीक होगा। यह शरीर स्वस्थ एवं आत्मा प्रसन्न है। काकीमाँ ३-४ मील तक चल सकती हैं। यद्यपि हार्ट और पेट की तकलीफ बिल्कुल शांत नहीं है फिर भी काफी आराम है। अपना नित्य क्रम, चौका आदि सम्भालती हैं। पंचक का पूरा साथ है। सुगनचंद सुखी है। दो दिन से आविल करता है।

हीराजी भाई प्रसन्न हैं। अपने निजी कार्यवश अवश्य सेलम को जायेंगे। और एक डेढ़ माह बाद प्रायः वापस लौटेंगे।

यहां कुंड की सफाई होने आई है, अतः नूतन कूप का कार्य बंद था—जो कुछ समय बाद चालू होगा।

यहां चैत्र शु० १ की रात्रि को वर्षा का प्रारम्भ हुआ। फिर पंचमी को ठीक वर्षा हुई, कल दिन और रात्रि को तो जोरों की वृष्टि हो गई। जिससे छोटा कुण्ड पूरा भर गया। कुंड में भी पानी पुष्कल प्रमाण भर गया है। गर्मी नरिवाण है।

गत रविवार को श्वेताम्बर समाज—हॉस्पेट के आमंत्रण से हॉस्पेट में जाहिर प्रवचन हुआ, जो उन्होंने देवालय हॉल में रखाया। आमंत्रण करनेवाले वकील भंडारी था और उनके प्रधान व्यक्ति थे जाने-

गुन्डी स्टेट के राजगुरु रामानुज सम्प्रदाय के आचार्य टोडप्पाचार्य। ये जागीरदार हैं। रत्नकूट की आधी भूमि उनकी है। जो उन्होंने आश्रम को चाहिए उतनी सप्रेम भेंट करने की जाहिरात की। उसी में ही कूप होगा।

श्री महावीर जयन्ती के प्रसंगवश पुनः होस्पेट जाना होगा। आगामी सोमवार को अहमदाबाद से M. चाडीलाल फर्म के मालिक श्री मोहनभाई आदि आ रहे हैं। आज पत्र है। आप कलकत्ते कब तक पहुँचेंगे। ॐ शांतिः

सहजानन्दघन

सादर जिनस्मरण

(पत्रांक—१९९)

हम्पी

ॐ नमः

२२-४-६२

[वैद्य कोजमल बाफना—आहोर]

पत्र मिला। हरकचन्द के शिर मुंडवा कर सोते समय मोठ रा आटा री रोटी बनाय अधकची सेक ने तोलो भर सरसुं रो तेल लगाड वण ने फिर माथा रे सरसुं रो तेल खूब लगाय ने रोटी बांध देणी। सात रोज आ प्रयोग करने देखो, कांइ नतीजो आवे है। आ सबलो कर्म रो कचरो है, समभाव सुं भोगवें छूटको - थांरा जेड़ा जाण आदमी ने जादा कांई लिखुं? रिखबाजी उनके परिवार सबां रे धर्म-स्नेह पूर्वक सहजात्म स्मरण. शान्ति छ पद रो पत्र कंठाग्र करे तो अच्छा होवेला - मंत्र स्मरण २०० माला तक बढाइ तो अखण्डधारा हाथ आवेगी, थे भी मेनत करो, कोरी दवाइयां घूंटो मती, घेवरजी अटे आया था, पूनम री अखंड धून नें १०० आदमी था, फेर वै० व० ५ रात को अखंड धून होवेला. बडवा आश्रम के प्रमुख अटे आया है। १ सप्ताह हुवो अटे प्रभु री मेर है. कृपालु रो योगबल कल्याणकामी रे बल देवे ज है। थे मन री गड़बड़ छोड़ दीजो. ॐ शांतिः

सहजात्म स्मरण!

(नोट - वैद्य कोजमल के भाइ हरकचन्द पागल हो गया था तब गुरुदेव ने उपाय बताया।)

(पत्रांक—२००)

हम्पी २६-४-६२

ॐ नमः

भव्यात्मा श्री मोहनलालजी,

पत्र मिला। आप लिखते हैं कि "आप ही जो दवा देंगे—लेने को तैयार हूं—क्या यह बात सत्य है? यदि यह बात सत्य है तो रोज की २०० माला 'सहजात्म स्वरूप परमगुरु' हर प्रसंग में रहते हुए भी पूर्ण करते रहो—एक श्वास भी व्यर्थ न जाने दो। व्यर्थ बकवास, व्यर्थ चिन्ता और व्यर्थ चेष्टाएं छोड़ दो। मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं—इसे भान पूर्वक जप किए रहो तो भव रोग की यह उत्तम दवा है। अतः लेने में वापरने में कंजूस न हों—यही हित रूप है।

काकोवा स्वस्थ एवं प्रसन्न हैं। धूलिया से सोहनजी का पत्र है। उन्हें २०० माला का जप अच्छी तरह चल रहा है, तब भी। अब तुम्हारा नम्बर लगा लो। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन का धर्मस्नेह

अहिं थी काकीमां तम सौ ने आशीष लखावे छे. चंचल प्रणाम अने सुखभाई जयजिनेन्द्र, मारा सौने धर्मलाभ।

सहजानन्दघन सादर जिनस्मरण!

(ये दोनों कार्ड चूहों ने काट डाले)

(पत्रांक—२०६) हम्पी

ॐ नमः २०-६-६२

भक्तवर श्री शुभराजजी सपरिवार,

आपका पत्र कल मिला, हाल ज्ञात हुए। हमारा यहीं ठहरने का उदय है—यह आप कई वार सुन चुके हैं फिर भी आप अपनी भावना कई वार व्यक्त कर सकते हैं, किन्तु वह सफल होना न होना भाग्य पर निर्भर है।

यहाँ गर्मी तो अधिक आज तक नहीं देखी। आंधी और लू तो यहाँ असम्भव है किन्तु उकलाट भी आज तक कभी नहीं हुआ। मई की गर्मी तो नहीं देखी और जून में गुलाबी ठंड पड़ रही है।

चञ्चल का गत तेरस को यहां से देहरादून के लिए प्रयाण हुआ और बीच में गदग ठहरी। वहां से कल हीराभाई बोर्डी वाले बम्बई ले जायेंगे। सप्ताह वहां ठहरकर देहरादून पहुँचा देंगे।

चंचल को पहुंचा कर हीराभाई अपनी भगिनी शांताबाई को काकीमां की सेवा के लिये यहाँ छोड़ जायेंगे। और सम्भवतः खुद दम्पती भी चातुर्मास यहीं ठहरेंगे। रसोड़ा प्रारम्भ हुआ है। कुंआ अब तक पूर्ण नहीं हुआ है और कोई काम चालू नहीं है। अब परसों हरखचन्दजी मारवाड़ से यहां आ गये हैं, अब कुछ कार्य बनने लगेंगे।

भँवरजी ने यहां का प्रसंग लिखकर आपको खुश किया वैसे प्रसंग कई वार होते रहे हैं। अब रोक देंगे। क्योंकि उन वातों का महत्व कम हो जाय। गत १४-१५ को भी काफी मात्रा में दैवी घटनाएँ घटी, भक्तों की काफी भीड़ थी।

काकीमां स्वस्थ और प्रसन्न हैं। यह शरीर भी स्वस्थ एवं आत्मा प्रसन्न है। तथैव आप सभी हों।

शिखरचन्दजी आ रहे हैं—अच्छी वात है। किन्तु काकीमाँ कह रही है कि हमें कच्छी सिक्के आवश्यक नहीं हैं अतः आपको ही भेंट दे देते हैं स्वीकृत हो। एवं सुपारी अगरबत्तियाँ भी आप वापरें।

अभी रात का ६॥ वजे हैं। काकीमाँ बाहर के रसोईघर में गदग की महिला मण्डल ठहरी हैं उनके आग्रहवश भक्ति प्रार्थना में वहाँ गये और कुंकुम वर्षा के साथ अभी सारे मंडल के साथ 'रंग लाग्यो, रंग लाग्यो, रंग लाग्यो, रोमे रोमे जाग्यो उल्लास रे भक्ति नो रंग लाग्यो—की धून गाते हुये आयीं कुंकुम से खोला भरा हुआ है। ऐसी इनकी मस्ती है तो बताओ इनसे कागद की क्यों आशा करना।

रसोड़ा भी इन्हें ही संभालना पड़ना है। सुख को हमने इस चौके से हटा दिया है लायक नहीं है। अतः शान्ताबाई को बुलाया है।

आप पालीताना कब जा रहे हैं ? जोधपुर जजमान को आप लिख दीजिए कि यहाँ हम्पी आने के सिवाय दूसरा सत्संग के लिए प्रसंग होना शक्य नहीं है, फिर जैसा उदय। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन

. सादर जिनस्मरण।

(पत्रांक—२०७)

ॐ नमः

हम्पी

२०-६-६२

(फोजमल जी बाफणा, आहोर)

भक्तवर,

आपना पत्रो तो घणा मले छे पण मने फुरसद नो अभाव रहे छे. वे वखत सत्संग सिवाय प्रायः मौन रहुँ छुं. पोतानी साधना मां रह्यो लीला लहर करुं छुं. बीजुं कंई याद राखवा इच्छा नथी. माटे तमे मारा पत्रो नी राह कां जुओ छो ? शांति विरं जे सकाम भावना सेवी बेठा छो ते शुं आत्मार्थी ने शोभे ? कर्मानुसार जे थाय ते जोया करवुं अने प्रभु भक्ति सिवाय बीजुं कोइ न इच्छवुं आ कानून मस्तके चढावी मारी साथे प्रसंग राखजो, बीजी रीते नहिं. जेठ पुनमे १०० भक्तो नी साथे आखी रात्रि 'सहजात्म स्वरूप परमगुरु' नी धून चाली अने तेमां दिव्य सुगंध ना कुंकुम वर्षा थई. आ वात गुप्त राखजो, मात्र तमने उत्साह आपवा लखुं छुं. आश्रमवासिओ जस मारे करशो ते पामशो. रिखबजी ने धर्मस्नेह ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन

सहजात्म स्मरण !

(पत्रांक—२०८)

ॐ नमः

हम्पी २६-६-६२

भक्तवर फोजमल जी और शान्ति

आप दोनों को भी अनुभव है, उन्हीं भावों को आत्मा में स्थिर करो। इस स्थालंड में रहे हुये परम निधान को हर तरह प्रगट करो। दुन्दलो कामनाओं को प्रभु प्रेम की भट्टी में जलाकर और कर्म-पण्डे को भी भस्म करो और कोई भी चाह मत करो सुज्ञेषु किं बहुना ? ॐ शान्तिः ३

सहजानन्दघन

. कृपालुदेव की अखण्ड भक्ति और वैसी शक्ति संप्राप्त हो !

(पत्रांक—२०६) हम्पी

ॐ नमः ४-७-६२

भक्तवर शुभराजजी सपरिवार,

कार्ड मिला। मंगलचन्दजी साब के योग्य यहाँ व्यवस्था नहीं है यह तो आप जानते ही हैं; तो फिर शिवचन्दजी साब को आप क्यों नहीं कहते कि प्रथम अपने आदमी को वहां भेज कर एक कुटिया तैयार करावो और फिर बाबाजी को वहां ले जायँ। यहां ऊपर ठहरने की व्यवस्था वृद्धों के लिए कठिन है और नीचे से ऊपर जाना असंभव। अतएव प्रथम व्यवस्था स्वयं करो और पीछे लावो। हमने तो प्रथमतः ही प्रस्ताव रख दिया। फिर बार-बार क्या लिखें ?

रसोड़ा ऊपर चालू हुआ है किन्तु ठहरने की व्यवस्था में अधिक विकास नहीं हुआ है। अब क्रमशः होगा। प्रभु कृपा से यहां हमें लीला लहर है। काकीमां स्वस्थ हैं। चंचल आज देहरादून पहुँची होगी।

आज प्राणलाल भाई खादी मंत्री आये हैं, कल जाएंगे। ८-१० सत्संगी बाहर के और हैं। दो वक्त सत्संग चलता है। मेघराजजी सपरिवार ठीक होंगे। आपकी धर्मपत्नी अब ठीक होगी सभी से धर्मलाभ !

सहजानन्दघन

(पत्रांक २१०)

ॐ नमः हम्पी ९-७-६२

भव्यात्मा श्री रिखबचन्दजी सपरिवार,

वैद्यराजजी ने आपके समाचार दिये और मैंने सुने, मेरे से पत्र व्यवहार कम होता है। अतः बार-बार पत्र न दें। यदि सत्संग में हों तो प्रत्युत्तर ठीक दिए जाते। अन्यथा पत्र द्वारा उदासीनता रहती है। यहाँ का वातावरण एवं दिनचर्या का हाल वैद्य स्वयं कहेंगे। सभी को धर्मलाभ! काकीमां का आशीष! धर्मध्यान में लक्ष बनाये रखें।

सहजानन्दघन धर्मलाभ !

(पत्रांक—२११) हम्पी २२-७-६२

ॐ नमः

भक्तवर भँवरलालजी सपरिवार,

आपनो पत्र मल्यो हतो. मातंग विषे जे आपे पूछाव्युं ते भणी लक्ष आपवा थी आत्म कल्याण न थाय. एवा साहित्य करतां आध्यात्मिक साहित्य मां मन रमावो नो आत्म हित नुं कारण थाय जो के

रत्नकूट अने मातंग एकमेक छे. रत्नकूट मां नवं रत्नो नी खाण होवानुं कोई संशोधक विद्वान कहेता हता पण उपयोग देतां हाल मां तेनी स्थिति नजर मां नथी आवती.

मारी अंदर नी गुफा नी जोड़े अव्यवस्थित गुफा के जेमां थी हवा आवती हती तेने ठीक ठाक करतां अन्दर थी एक मार्ग जे गुप्त हतो—जड्यो छे. पण तेने छेड्यो नथी. नीचे पथर जतां ऊँडाण मां जवानो अवाज आवे छे. विशेष मां जड़ रत्नो प्रत्ये कंइ आकर्षण नथी. जेथी ते विषे ध्यान देवातुं नथी. आत्महित थाय ते ज विचार अने आचार कर्त्तव्य छे, त्यां सौ आनंद मां हशो.

बीकानेर थी सूरिमंत्र कल्प मंगाव्या हता. ते आव्या छे. तेनी आराधना माटे दादाजी नी प्रेरणा छतां हजु ते भणी लक्ष आपी शक्यो नथी. आवो आलसु छुं. आश्रम व्यवस्था ठीक चाले छे. रसोडुं चालतुं थयुं छे. साधको गुफाओ बनावी रह्या छे काकीमां स्वस्थ छे. भंशालीजी ए अगास मां देह छोड्या खबर त्यांथी अने तेमना बंधुए आप्या छे. ॐ शान्तिः

सहजानंदघन सादर जिन स्मरण !

(पत्रांक—२१२)

ॐ नमः

हंपी २४-७-६२

भव्यवर, (भँवरलालजी नाहटा)

आज कार्ड मिला। मेरा भी मिला होगा। उसमें भंशालीजी एवं मायंग के सम्बन्ध में समाचार लिख दिये थे।

यहाँ कृपालुदेव की मूर्ति आवश्यक होने से जयपुर आर्डर दे दिया गया है। १५ इंच की मूर्त्ति और दो इंच की गद्दी सभी १७ इंच होगी। प्रायः ३०० का चार्ज लगेगा।

जौहरी नवीनचंद नेमचंद पानाचंद की देख-रेख में उनके द्वारा यह सौदा तय हुआ है। यदि बदलियाजी की इच्छा हो तो वे उन्हें लिख दें, जिससे एक की जगह दो उसी कारीगर से बनें।

यहाँ कितनेक साधक अपनी-अपनी गुफा बनवा रहे हैं। यदि घूपियाजी एवं बदलियाजी भी तैयार हों तो यहां आकर वे स्वयं पसंद करके बनवा लें। वहाँ सभी प्रियजनों को धर्मलाभ! ॐ शांतिः

सहजानन्दघन

सादर जिन स्मरण !

श्रीमान् श्री भँवरलालजी भाई साब तथा सपरिवार सौ आनंद मां हशो. अहिं परमकृपालु देवनी कृपा थी आनंद मंगल वर्ते छे. राजेन्द्र भाई बम्बई थी चित्रपट मोकल्या नथी ते आप तेमने पत्र लखी जणावशो एज. घर मां बधाने प्रणाम। ॐ शांतिः

लि० काकीबा ना आशीष !

(पत्रांक—२१३)

ॐ नमः

६-८-६२

परमकृपालुदेवाय नमोनमः

[हिम्मतलाल वेनाजी (आहोरवाले) मु० अगास आश्रम]

हुं आत्मा छुं—शरीर नथी। एवो अभ्यास रात-दिन सतत करवो जोइए कारण के एना फल स्वरूपे आत्मानंद नी अनुभूति थाय छे. माटे एज मानव जीवन नो खरो पुरुषार्थ छे. छतां आश्चर्य थाय के जे देहादिक बावतो भाग्य उपर छोडी देवा नी छे तेने माटे जीव सतत चिन्ता कर्या करे छे अने जे आत्म-दर्शन आदि बावतो ते माटे खास पुरुपार्थ करवानी आवश्यकता छे तेने भाग्य उपर छोडी दे छे अे देखत भूलो छे. अे भूल ज्यां सूधी टालीए नहीं त्यां सूधी दुख नो अंत पण आवी शके नहीं. माटे हे जीव ! तुं पुरुषार्थ नो उचित उपयोग कर. अर्थात शारीरिक बावतो ने भाग्य उपर मूक अने आत्मोन्नति माटे सतत कालजी राखी पुरुषार्थ कर. आत्मा नी छाप पुरुषार्थ उपर लागेली छे, अने भाग्य नी छाप शरीर उपर पडेली छे. माटे पुरुषार्थ ने आत्मा तरफ अजमाव! तेमज शारीरिक अने मानसिक सर्व चिन्ताओ अने उपाधिओ भाग्यने हवाले करी तु अचिन्त था. मनुष्य पोतानी स्थिति नो पोतेज मालिक छे ई छतां दुखी अने दरिद्री केम थाय छे ? मात्र इच्छाओ ना विरुद्धपणा थी. एक इच्छा उन्नति करवानीज जो छे के तेनी साथे बीजी इच्छा इन्द्रियो ना गुलाम थवा प्रेरे छे. एमां खूबी ए छे के एक इच्छा तृप्त थाय के न थाय अने बीजी अतृप्त रहे छे तेथी करी ने दुख थाय छे अेकी वखते जात जात नी इच्छाओ करवानु आ परिणाम छे. अमुक लक्ष विन्दुए पहोंचवा थी तीव्र उत्कण्ठा अने कार्य सिवाय दृढ श्रद्धा होय तो दुख आवतुं नथी अने धार्या प्रमाणे नसीव पलटाई जाय छे ॐ

मने समय मलतो नथी जेथी पत्रादि ना माटे कोजमलजी ने ना करी हती छतां तमारो आत्मा दुभातो जाणी आटलुं स्वाध्याय मनन करवा लख्युं छे. हवे थी गमे तेटलो आजीजी छतां जवाव नहिं आपोस तो तेथी नाराज न थतां आमां कहेली शिक्षा जीवन मां उतारशो एज भलामण. आ शिक्षा जीवन मां वपराय पछी बीजी चिन्ता रहेशे नहिं अधिक शुं लखुं ? कृपालु ऊपर अखंड विश्वास थी शरण अने स्मरण रटो बाकी बधु स्वपना नो सुखड़ी जेवुं भूली जायजो. ॐ शांतिः

(२१४)

ॐ नमः

हम्पी १२-८-६२

भक्तवर (कोजमलजी बाफणा)

कार्ड मिला। सं० के संबंध में याद रहा तो ध्यान दूंगा। फिकर न करें। काकीमां ने आशीर्वाद नहीं दिया—ऐसा तुम्हारा विकल्प गलत है। मैंने यों ही मोज में कहा, किन्तु मेरी उपस्थिति में वे ऐसा विवेक रखती हैं कि अपने में वड़पन का दिखावा नहीं। अतएव वे चुप रही। इसका अर्थ वह नहीं हो

सकता है कि उनके हृदय में भेद भाव है। अतः यह विकल्प हटा दो। उनके लिए तो सभी समान हैं। रिखवाजी अब तक तो यहां नहीं आये। हिम्मतलाल के सम्बन्ध में क्या लिखुं कोई भी सकाम भाव व्यक्त करता है तो हमारे हृदय में दुख होता है क्योंकि कर्मतन्त्र को अन्यथा करना चाहता है जो कि तीर्थंकर भी नहीं कर सकते। बैंक में जितनी रकम जमा है उतनी ही चेक स्वीकृत होती है। तदनुसार कर्मतन्त्र का रहस्य है। कर्म बांधते समय तो जीव किसी ज्ञानी की बात नहीं मानता जबकि उदयकाल में चिल्लाता है। यही अज्ञान की महिमा है। हमारी आज्ञा है कि कोई भी सकाम वृत्ति वाले को झंझट हमारे सामने न लावें। यहाँ सभी तरह से आनंद ही आनद है। उस दशा में अन्य कल्पना सुहानी नहीं। ॐ शांति:

सहजानंदघन

सादर जिनस्मरण

(२१५)

ॐ नमः हंपी ३-६-६३

भक्तवर श्री रिखबचंद जी सुत शांतिलाल, सूरजमल आदि, (आहोर)

क्षमापना—पत्र मिला। यहाँ पर्व की आराधना अच्छी तरह हुई। २००/२५० तक भक्तों की संख्या थी और अब तक भीड़-सी है।

सां० प्रतिक्रमण के अवसर में सभी जीवों के साथ अपने अपराधों के विषय में पारस्परिक उत्तम क्षमा का आदान-प्रदान करते हुए आप सभी को भी खमाया है और क्षमा दी है। ज्ञात रहे। शांति की भाभी और शांति को भी खामना अवगत कराइयेगा। काकीमाँ ने सभी को खमाया है और क्षमा की है। कोजमल जी अभी तक नहीं आये। हम सभी का स्वास्थ्य अच्छा है। तथैव आपका भी सदैव रहो—धर्म ध्यान प्रभु भक्ति में समय लगाते हुये आत्मा का लक्ष सिद्ध करते रहिये यही शिक्षा है।

यहाँ याद करने वालों सभी को हार्दिक खामणा सह सहजात्म स्मरण स्वीकृत हो।

(पत्रांक—२१६)

ॐ नमः हम्पी ७-६-६२

(वैष्णव गोविन्दराम मोहीरामजी)

"मूलबंध दृढ़ लाय के, करे श्वास संचार"

मूलबंध का तीन घण्टे अभ्यास के साथ में मन्त्र स्मरण, शीर्षासन आदि से एवं सद्‌विचार के अवलम्बन से काम विकार पर विजय किया जा सकता है। आप उक्त प्रयोग द्वारा अपने आप पर विजयवंत हों, यही आशीष।

—सहजानंदघन

कोजमलजी वैद्य, रिखबाजी अपनी दुकान पर गये। अमीचंदजी मारवाड़ गए, यहाँ सां० प्रति० में सभी जीवों के साथ खामणा करते हुए आप सभी प्रियजनों को खमाया है। रिखबाजी के परिवार को भी काकीमा ने खमाया है। ॐ शांति.

—सहजानंदघन

(पत्रांक—२१७)

ॐ नमः

हम्पी

११-९-६२

परम कृपालुदेव नुं शासन जयवंत वर्तो

(रांकाजी)

पत्र मिला, अनादिय राग, द्वेष और अज्ञानवश जीव ने दूसरे देहधारियों को एवम् अपने आपको सताने में कमी नहीं रखी। उन सभी पाप ताप को दूर करने हेतु पर्वाराधन पूर्वक सां० प्रतिक्रमण के अवसर में सभी जीवों के साथ उत्तम क्षमा जल का आदान प्रदान किया गया, जिसमें आप सभी महानुभावों से भी खमतखामणा किया है। सभी के सभी अपराधों की माफी दी है और माफी मांगी है। भवोभव के अपराधों का मिच्छामि दुक्कडम्। यहाँ से सुख भाई, हीरा भाई आदि सभी बंधु एवम् काकीमां आदि सभी माताएँ भी क्षमा का आदान प्रदान कर रही हैं, स्वीकृत रहे।

प्रायः २०० भावुकों के साथ पर्वाराधन हुआ बड़ा ही उल्लास रहा। आपके जाने के बाद भँवरलालजी धींग की चिट्ठी थी। उन्हें एवं आपकी सारी मण्डली से खामणा एवं धर्मस्नेह कहिएगा।

सहजानन्दघन

(पत्रांक—२१८)

हम्पी

ॐ नमः

२६-९-६२

(वैद्य कोजमल बाफणा, आहोर)

तमारा बधाय पत्रो मल्यां, शांति नो पत्र मल्यो हतो. मने मारा साधना सिवाय बीजुं याद ओछुं छे माटे पत्र व्यवहार बराबर थतुं नथी. तमारा हार्ट उपर एटली असर नथी जेटली व्यर्थ विकल्पो नी असर छे. मार्ग बतावनार इशारो करे पण चालनारो तेम चाले नहीं अने दुख वेदे तो तेमां कोना वांक? विकल्पो ने आत्मा ने जुदा जुदा उपयोग मां लई आत्मा भणी लक्ष वारम्बार दृढ कर्या करवुं अने स्मरण-ध्यान न छूटे ते पुरुषार्थ कर्या करवुं. आम करवा थी विकल्पो नुं बल ओछुं थशे, तो ते प्रमाणे करवा मां तमने शी हरकत छे. अमस्ता रोवा थी कंई लाभ? पोताना भवोभव ना छाना करेलां पाप बहु सतावे तेवी निन्दागरहो करी मंत्रस्मरण ने अखण्ड करो. अहिं अमे तो बधा स्वस्थ अने प्रसन्न छोए. आश्रम नुं काम चालु छे कुवामां वर्षा नुं पाणी भराई जवा थी ते काम बंध छे. बे महीना बाद चालु थशे. अमीचन्दजीए गुफा तैयार करावी, पछी मारवाड़ गया. तमने रहेवा नी इच्छा होय तो आवी जाओ न अवाय तो त्यां समता थी साधन करो, अेज वारम्वार भलामण, काकीबा, सुखभाई, हीरजी भाई, जीवन भाई आदि मुमुक्षुओ आनन्द मां छे. हीराभाई बोरड़ी गया. ॐ शांतिः

सहजानन्दघन आत्मभावे सहजात्म स्मरण!

(पत्रांक—२१९)

ॐ नमः

हम्पी ८-१०-६२

विजया दशमी २०१९

भक्तवर (भँवरलाल नाहटा)

पत्र मिला। शुभराजजी का १ पहले और १ आज भी पत्र है। श्री मोहनलालजी म० एवं श्री बुद्धिमुनिजी म० के सम्बन्ध में यद्यपि कुछ लिखूं तो अनुचित नहीं किन्तु कुछ तो स्वास्थ्य में गड़बड़ी सी है और फुरसद का भी अभाव-सा है क्योंकि अधिक समय साधना में लगाना, यही लक्ष है। अतः उक्त कार्य एवं श्री आनन्दघन-साहित्य आदि किसी भी विषय में लक्ष नहीं जाता।

उमेदराजजी और उनकी माँसा तो कभी के बम्बई चले गये हैं। सम्भवतः पारसमलजी साव पूर्णिमा पर यहाँ आवेंगे और का० १५ को उमेदराजजो भी, उन्हें कुछ नियम भी दिये हैं। हृदय सरल है।

पडेरजी सप्ताह बाद यहाँ से वापस लौटेंगे। १ पत्र भिजवाया था, मिला होगा! अब स्वास्थ्य ठीक हो रहा है। पुस्तकें मिली। कुर्मापुत्र० प्रा० उतारा जा रहा है। और अनुवाद भी १ मास्टर कर रहे हैं, जो बेलारी में रहते हैं! छुट्टी में यहां आये हैं!

सूरतवाले नेमचन्दजी साव और तत्पुत्र नवीनचन्द यहां आनेवाले हैं। सूरिमंत्र विषयक यदि याद रहा और रुचि जगी तो बात करूँगा। किन्तु जो जप चालू है उसे गुरुदेव ने मंजूर किया था। १ घण्टे में १ माला हो जाती है, जो प्रारम्भ में २.२॥ घण्टे लग जाता था। अस्तु।

काकीमां प्रसन्न हैं। यदि अंग्रेजी आत्मसिद्धि एवं महात्मा गांधीजी के उपर के पत्र का अनुवाद बद्रीदास टेम्पल स्थित जैन साहित्य प्रचार में सम्मिलित किए जाएँ तो अच्छा रहेगा। आप घूपियाजी को सुझाव दें। सभी को आशीष।

—सहजानन्दघन

(पत्रांक २२०)

ॐ नमः

हम्पी १-११-६२

भक्तवर (भँवरलाल नाहटा)

पत्र मल्युं। दादाजी ना चित्रपट्ट अने साहित्य खुशी थी मोकलजो! दीवाली ना त्रणे दिवस अखण्ड धून रही. मने फुरसद नो अभाव होवा थी श्री मोहनलालजी महाराज अने श्री बुद्धिमुनिजी महाराज ना संस्मरणो लखी शकाय तेम नथी माटे क्षमाप्रार्थी छुं.

अंग्रेजी आत्मसिद्धि अने गांधीजी ना पत्रो अगास थी नहिं पण अहमदाबाद थी मंगावजो तेनुं एड्रेस—श्री जयन्ति भाई। C/o M. Vadilal & Co P. Box N. 47 Ahmedabad

आ हकीकत धूपियाजी ने जणावजो आं देहे मसा नी तकलीफ छे बाकी बधुं ठीक छे. काकीमां त्रण दिवस बीमार रही नव वर्षे स्वस्थ अने प्रसन्न थई गया, मारा अने तेमना तमारा कुटुम्बी जनो सौ ने धर्मस्नेह पूर्वक आशीष।

डुगड़ अहिं नहिं आवी शके एम पत्र थी जणावे छे. भावीभाव। ए कंई विशेष भाग्यवान नथी माटे मैं लक्ष मा नथी लीधु।

बदलियाजी पूनम पछी अहिं थी जयपुर आदि थता कलकत्ते आवशे। आश्रम कार्य प्रगति पथ पर छे। बन्ने काकाजी ना पत्रो हता, जवाब अपाई गया। आत्मसिद्धि अंग्रेजी नुं सेम्पल बड़ेरजो साथे मोकल्युं छे. ते अने सत्संगिओ ने धर्मलाभ!

—सहजानन्दघन

धर्मलाभ सह सहजात्म स्मरण!

(पत्रांक—२२१) हम्पी ३-११-६२

ॐ नमः

भक्तवर कोजमलजी,

हुँ सिद्ध नथी पण साधक छुं. मारा परिचय मां आवनाराओ नी संख्या तमारा ध्यान मा ज हशे ते सौ ने प्रति पखवाडिए पण जो हुँ कागल आपतो रहुँ तोय मने मारी साधना नो टाइम गौण थई जाय. एम छे. तो पछी विना कारणे तमे मने मारा साधन मां बाधक थवा शा माटे हठ करो! कंई आवश्यक प्रश्न होय तो ठीक पण विना प्रश्ने केवल तमारा मन ने राजी राखवा मने शा माटे तकलीफ आपवा इच्छो? आ तथ्य उपर ध्यान आपो पत्र व्यवहार थी आशा पूर्ति ने बदले प्रगट आवी ने सत्संग करो एज उचित छे. व्यर्थ नो कुटुम्ब-मोह सेवी घर बैठा सत्संग नी आशा सेववी व्यर्थ छे. तमो समझदार छो. अधिक लखवुं उचित न गणाय. जो अहिं आववुं होय तो मना नथी. अमीचन्दजी नी गुफा तैयार छे तेओ मारवाड़ गया छे. आवशो तो मनने शांति मलशे. पछी जेवी तमारी मरजी. त्यां याद करनाराओ ने सहजात्म स्मरण जणावजो. ॐ शांतिः

—सहजानन्दघन

धर्मस्नेह!

(पत्रांक—२२२) हम्पी

ॐ नमः ३-११-६२

[रिखबचन्द रतनाजी संघी—आहोर]

सूरज,

पत्र मिला। कृपालुदेव के चित्रपट के सामने उन्हें प्रत्यक्ष मान करके उन्हीं से ही आत्म-साक्षी पूर्वक तीन पाठ नित्य करने को प्रतिज्ञा कर लेना यही मेरी आज्ञा है।

सात व्यसनों का :—मांस, मदिरा-शिकार-चोरी-परस्त्री-वेश्यागमन और जूवा—जीवनभर त्याग और "सहजात्म स्वरूप परमगुरु" इस मंत्र की रोज ५ माला जपने की भी प्रतिज्ञा कर लेना। तुम्हारी जननी और भगिनी आदि सभी को मेरा हार्दिक आशीर्वाद कहना। तीन पाठ के बाद दूसरा जो कोई भी गद्य-पद्य कण्ठस्थ करना हो तो भी उपर बतायो विधि से कृपालुदेव की समक्ष स्वीकार करने की सभी को आज्ञा है। ॐ शान्तिः

—सहजानन्दघन

सहजात्म स्मरण सह आशीष

(पत्रांक—२२३)

हम्पी

ॐ नमः

१०-११-६२

(वैद्य फोजमलजी धाफणा)

सुधा में एकनिष्ठ रहे तो मन स्वतः स्थिर रहेगा, धर्मध्यान में उपयोग होगा। मस्त रहो। धर्मस्नेह। सभी को आशीर्वाद।

—सहजानन्दघन

(पत्रांक—२२४)

ॐ नमः

हम्पी १०-११-६२

म० सुखलाल के लिखा कार्ड

श्रीमान् कविराज श्री भँवरलालजी

सादर प्रणाम। यहाँ आनन्द मंगल है। प्रभु का स्वास्थ्य ठीक है, परन्तु मसे में दर्द होने से बैठने में तकलीफ है, पत्र नहीं दे सकते। पू० काकीमां का स्वास्थ्य दीपावली में तीन रोज गड़बड़ी रही। अब ठीक है चिन्ता न करें।

चीन और भारत का युद्ध हो रहा है सो क्या घबड़ाने की बात है। जो होनहार है वो होकर रहेगा, लेकिन चिन्ता करने का क्या कारण है? आत्मा मरने वाला नहीं है उसके साथ लड़ने को कोई विरल पुरुष ही खड़े होते हैं, जो होते हैं वो अवश्य विजय प्राप्त करके रहते हो। पू० गुरुदेव का धर्मलाभ व पू० काकीमां का आशीष स्वीकार हो। आपके परिवारवालों को भी तथैव। आपने यह पद कविता भेजे हैं इसके लिए मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूं, शेष कुशलम्.

गुरुदेव के स्वाक्षर :—

साहित्य छप जाने पर और दादाजी का संशोधित चित्रपट तैयार होने पर भेजिएगा, रतनु धायू पूनम बाद यहां से जयपुर आदि होकर कलकत्ते आएंगे। काकाश्री को सिलचर चिट्ठी दें—हमारा सभी को आशीष लिखें। बद्रीनाथ यात्रा समय तीन वर्ष में गड़बड़ होनहार का प्रसंग सूचित किया ही था।

(पत्रांक—२२५) सिवाना (पाली-मारवाड़)

ॐ नमः हंपी १०-११-६१

श्री शुभराजजी नाहटा को ता० २२-११-६२ को अगरतला लिखवाये पत्र में गुरुदेव के स्वाक्षरः—

भक्तवर,

आप स्वस्थ अने प्रसन्न रहेजो। सुनला मां कह्या प्रमाणे त्रीजुं वर्ष छे जेमां चीन नी गड़बड़ शुरु थई। त्रण वर्ष रोकाइ जवा नो संकेत आपने याद हशे. हवे तो जेवो उदय तेवो सत्कार. आ देहे जे कई छे ते चिन्ता जेवुं नथी आनंद मां छुं. देह तो नाशवान छे तमे चिन्ता करशो नहीं. सर्व ने धर्मलाभ.

सहजानन्दघन

(पत्रांक—२२६)

भा० सु० ५/२००५

जिज्ञासु बंधो !

पत्र मल्युं-समय ना अभावे जवाब नथी लखी शक्यो. ते बदल क्षमा !

प्रथम पाठ ज्यां सुधी न थाय. त्यां सुधी अन्य लेशन न आपवुं. एवुं प्रथम पत्र मां जणावेलुं छतां अन्यान्य प्रश्न तमो ने ते पाठ सीखवा मां दखल करता जणाय छे. ते मात्र एकज लेशन थाय तो तेवा अनेक प्रश्नो नुं समाधान स्वतः थाय, एवी ते लेशन मां सहज शक्ति छे, पराधीन वृत्तिओ नुं क्षय ते लेशन थी थई शकवा योग्य छे माटे चाही ने तमारा प्रश्नो नुं उत्तर ढोल मां राखवुं योग्य धार्युं छे, प्रथम पाठनी सहायता माटे नीचे ना त्रण वाक्यो नुं टांचण करुं छुं :—

जणाय ने देखाय जे, तेमां लक्ष न आप।
जाणनार जोनार मां, चेतन था थिरथाप—१
जणाय ने देखाय जे, ते तो पर जड़ रूप।
जाणनार जोनार तुं, सहजानंदघन भूप—२
देव गुरू धर्म तुंज तुं, ध्याता ध्येय ने ध्यान।
देह देवल थी भिन्न छे, जेम खड्ग ने म्यान ३
पर जड़ लक्ष अभ्यास थी, जन्म मरण दुख थाय।
आप आपना ध्यान थी, जन्म मरण दुख जाय—४
माटे तज पर लक्ष ने, कर निज लक्ष अभ्यास।
प्राण वाणी रस मां भली, सहजानंद विलास—५

आनुं विशेष विवेचन श्री मिठ्ठुभाई पासे थी समजवा योग्य छे. अधिक यथा समये.

लि० सांवत्सरिक क्षमापना सह विरमतो भद्र ना खामणा स्वीकृत हो। पूर्व पत्र ना उत्तर मां थोडुंक लखाण अधूरुंज आ साथे बीडुं छुं।

(पत्रांक २२७)

ॐ नमः

हम्पी १५-११-६२

भक्तवर !

पत्र मल्युँ हतुं शुभराजजी साव नुं अगरतला थी पत्र छे। तेमने आप सारा समाचार लखी देजो. बवासीर नी तकलीफ सिवाय आ देहे ठीक छे. काकीया अस्वस्थ हता, हवे ठीक छे.

ग्रन्थावली आदि छपतां मोकलजो, साथे दादा साहब नुं चित्र पण मोकलजो सोने धर्मलाभ !

दुनिया दो रंगी, करना फकीरी क्या दिलगीरी

सहजानन्दघन

(पत्रांक—२२८)

ॐ नमः

हम्पी

२२-११-६२

भक्तवर (वैद्य कोजमलजी, आहोर)

सुखलाल ने अगडं बगडं लिख दिया अतः इनकी बात पर ध्यान न दिया जाय। परन्तु यह बात सही है कि आपका पत्र पढ़कर कोई ऐसी कल्पना कर सकता है कि महाराज ठाम चौविहार एकासन का नाम लेते हैं और सुबह शाम पोल चलाते होंगे ! जिसका कोई ठिकाना नहीं। ऐसा है तो दूसरी बातों में भी पोल चलता होगा। आपको मालूम तो है ही कि एक बार ही आहार पानी सिवा दुबारा दवाई भी हम नहीं लेते तो फिर तुमने सुबह शाम तक के साथ लेने का क्यों लिखा ? इसलिए सुखलाल चिढ गया। मैंने कहा—भूल गये होंगे। क्षमा करना चाहिए।

सभी को आशीष शांति को भी धर्मलाभ !

सहजानन्दघन

(पत्रांक—२२८)

ॐ नमः

हम्पी

२६-११-६२

(वैद्य कोजमलजी, आहोर)

दवाई की थैली गन्दी हो गई है, जिससे गोलियां भी मलिन देख कर पार्सल खोला नहीं, ज्यों की त्यों रख दी है, जो आपको वापस आने पर दी जायगी, हमें ऐसी दवा नहीं चाहिए और ठाम चौविहार का ख्याल होने पर भी आपने सुबह-शाम को लेने का लिखा इसलिए धन्यवाद, भले व्याधि रही—हमें कोई चिन्ता नहीं है। शांति और उसके माँ-भाइयों को धर्मस्नेह कहें। धर्मध्यान मे वृद्धि करें।

सहजानन्दघन धर्म-स्नेह !

(पत्रांक—२२६) हम्पी

ॐ नमः १६-१-६३

परमकृपालुदेव नुं शासन जयवंत वर्तो

[खुशाल भाई और माताजी के लिखे पत्र में प्रभु के स्वाक्षर—]

भव्यात्माओ ! (शुभेराजजी मेघराजजी भंवरलाल नाहटा, कलकत्ता)

पक्ष पूर्व पत्र मल्युं. उदासीनतावश और ववासीर कृपा के कारण पत्र व्य० बंद सा है. सौभाग्यमलजी के विषय में – वे आवें तो चला लिया जायगा।

आपने जो प्रत्युत्तर जानने की आशा रखी है, तद्विषयक मैं ही प्रश्न करता हूं कि यदि पेट भर रोटी मिलती है तो फिर अधिक लोभ की क्या आवश्यकता है ? लौकिक प्रवाह में क्या शांति मिलेगी ? थोड़ी सी जिन्दगी में अधिक जंजाल क्यों बढ़ाई जा रही है ? आधुनिक राजतंत्र क्या आपको धनीमानी रखना चाहता है ? आर्य भूमि भी अनार्य हो रही है, यहां अनार्य भूमि में कितनी सावधानी रखनी चाहिए। जड़ धन की महिमा जिसके दिल में है, वे क्या आत्म धन प्राप्त कर सकते हैं ? आप जैसे प्रज्ञ पुरुषों को इन प्रश्नों पर क्यों नहीं विचार स्फुरता ? ॐ शांतिः सभी को आशीर्वाद !

सहजानन्दघन

(पत्रांक—२३०)

ॐ नमः हम्पी १६-१-६३

(देवीलालजी रांका)

पत्र मिला। धनराजजी कोचीन की ओर गए। प्रभु कृपया यहां आनन्द मंगल है। वहां भी आप प्रभु भक्तों को भी सदैव बना रहो।

काकीमां की तबियत ठीक ही दीखती है। इस देह में ववासीर का ढंग न्यूनाधिक कृपापरक है, जो उदय ! आपको स्थायी शांति और अखंड आनन्द सिद्ध हो यही हार्दिक आशीष। भंवरलाल साब को भी उक्त आशीष है। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

सहजानन्दघन

सादर जिन स्मरण !

(पत्रांक—२३२) हम्पी

ॐ नमः २६-१-६३

भव्यात्मा रिखबचन्दजी, कोजमलजी और मिश्रीमलजी,

आपकी चिट्ठियां मिली। हकीकत ज्ञात हुई। ववासीर री कृपा तो वैसी ही चल रही है। तुम्हारी गोलियां तुम्हारी हाजरी में चलु की थी वे भी राज-रोज लेता ही रहता हूं, हरड़ भी लेता हूँ, और हेण्डेसा ट्यूब भी लगाता हूं फिर भी वही हालत है और इसी में ही मजा आ रहा है। क्योंकि अठारो

लैणों देणो पूरो करने मट अपणे देश जाणो है। या बात उत्साह में वृद्धि कर रही है। थें तो कराड़ सुं हरड़ भेजवा री बात कर गिया था, पर थारी खुद री गाडी रो कांइ ठिकाणो नहीं रियो। अब तो ठीक हुसी काकीमां स्वस्थ हो रही हैं।

हीरजी भाई अलपाई मम्बई हो कर जावेंगे। यहां से कल प्रयाण कर गये। और सब आणंद है। यहां याद करने वालों सभी से आत्म स्मरण। ॐ शान्तिः सहजानन्दघन—धर्म स्नेह

साहिबजी मापजी! आपरो कागद पूगो। अतरो शरीर तो वृद्ध हो गियो, पर आप तो आत्मा हो और आत्मा तो बूढो वेत नहीं, जिण सुं फिकर मती करजो एक चित्त सुं मंत्र रटवो करजो। टावर-टीवर रो मोह वोसराय दीजो। अठे कृपालुदेव री पूरण किरपा है। भक्ति भजन चोखा चाले है मूलजी पुखजी, मसराजी सघलां ने जयसद्गुरुदेव के दीजो। फेर कागद दिरावजो। भक्तिमें मन लगाय दीजो।

ॐ सहजानन्दघन—धर्मलाभ

(पत्रांक—२३३) हम्पी

ॐ नमः ३-२-६३

भक्तवर फोजमलजी,

पत्र और पुस्तक मिले। पुस्तक के लिए आभार, बवासीर वैसे ही चल रहे हैं। आपकी गोलियाँ खतम होने आई पर असर नहीं हुआ। अब मत भेजियेगा। हमने भी कर्मों को आह्वान कर रखा है कि जो भी छुपे हुये हों मयदान में आ जायो। हम ब्याज सहित बदला चुकाने को तैयार हैं। इसलिए दवाई की असर नहीं होती। यह भी महान् लाभ है। काकीमाँ ठीक है। आशीष लिखाते हैं।

आपको मानसिक रोग ही कष्ट दे रहा है जब कि हमको प्रभु की दया से वैसा नहीं है। निंदक मित्रों की निन्दा सुन कर यदि अपने में कोई त्रुटि हो, तो उसे मिटाना हितरूप है और यदि नहीं है तो समरस रहना यही धर्म है। तदनुसार हम रहते हैं। तुम्हें भी यही अनुकरण करना चाहिए। अपना जीवन यदि निर्मल है तो फिर निन्दा से क्यों डरना? फिर भी डर लगता है यह कमजोरी ही समझना चाहिए। अतः शांत रहो ॐ—

भक्तवर रिखबाजी, आपका पत्र मिला। यहां प्रभु कृपा से आनन्द मंगल है, वहां भी सदैव रहो। यही आशीष है। एक पत्र वैद्यजी को पहले दिया था जिसमें भी आप सभी को मिलकर समाचार दिया था। आपकी पत्नी बच्चे सभी को हमारा धर्मलाभ और माताजी का आशीष। प्रभु भक्ति में दृढ रहियेगा। ॐ शांतिः

सहजानंदघन सहजात्मस्मरण पूर्वक अगणित आशीष।

(पत्रांक—२३४)

हम्पी १०-२-६३

ॐ नमः

अनन्य आत्म शरणप्रदा, सद्गुरु राज विदेह
चरण कमल वेदी निकट, धरूं आत्म बलि एह

भक्तवर श्री शुभराज जी, श्री मेघराजजी, श्री अगरचंदजी, श्री भंवरलाल जी, श्री हरखचंद जी आदि सपरिवार,

आपका पत्र तो कब का आया है, पर हमें इधर उधर की याद कम रहती है अतः उत्तर लिखना भूल गया।

बवासीर का ठाठ तो वैसा ही चल रहा है। देशी औषधियाँ जैसी कि गोलियाँ, हरडे की फाकी, निंबुरस और उष्ण जल प्राशन एवं लगाने की मरहम के कई प्रकार दीर्घकाल से चल रहे हैं, किन्तु हमने तो कर्मों का आह्वान किया हुआ है कि "हम अपनी अनादिय दुकान समेट कर स्वदेश जाना चाहते हैं अतः जो-जो माँगने वाले हों—सभी रकम व्याज समेत वसूल करलो. शीघ्र आ जाओ और जिनपर हम माँगते हैं सभी को माफ—अतएव व्याधिदेव ने कृपा की है जिसको हटाने में औषधि भी क्या कर सकती है। और इस पर भी आनन्द ही आनन्द है।

इतनी बात खरी है कि कोई खास डॉ० किंवा वैद्य को नहीं बताया और न सलाह भी ली। फिर भी यदि आप डॉ० को लाना चाहते हैं तो इतना खुलासा आपके ध्यान में रखना आवश्यक है—ठाम चोविहार में भंग न हो, दुबारा औषधि किंवा पानी भी नहीं ले सकुंगा। विदेशी औषधी किंवा पानी भी नहीं ले सकुंगा। विदेशी औषधी इंजक्सन आदि भी नहीं ले सकूंगा। आहार के नियम में निषिद्ध और त्यागी हुई वस्तुओं का ग्रहण भी नहीं कर सकुंगा। इतने पर भी कोई दवाई प्रयोग खात्री से दर्द सदा के लिए मिटाने की गेरण्टी देता हो तो अवश्य लिख भेजिए। यहाँ डॉ० को लाना मेरे लिए उचित नहीं है। व्यर्थ समाज का खर्च मेरे से वर्दास्त नहीं होता। अधिक क्या लिखूं।

हरखचन्द जी मारवाड़ से आ गये हैं पर छोटे भाई और भानजे लग्न प्रसंगादि वश मारवाड़ गए हुए हैं अतः यहाँ सेवा देने में उन्हें मुश्किल सी हो गई है, फिर भी आते रहते हैं। कलेक्टर आदि लोग वार फण्ड में लगे हुए हैं अतः अबतक पटा यों ही कलेक्टर आफिस में पड़ा है।

काकीमाँ की तबियत ठीक ठाक चल रही है। सुंठ प्रयोग चालू है इतने पर भी हार्ट की गड़बड़ी कभी कभी रहा करती है। बाँयी भुजा-हाथ में दर्द-सा रहता है। थोड़ी-थोड़ी पैरों में भी सूजन आ जाती है और ठीक भी हो जाती है। जेतबाई यहीं सेवा में है और स्वस्थ हैं। हीरजीभाई कालीकट में नयी दुकान जमाने के लिए पुत्र के आग्रहवश गए हैं। खुशाल, सुख मौज में हैं। खेंगारभाई भी प्रसन्न है।

सौभाग्यमलजी को रतलाम से यहाँ कबतक भेज रहे हैं? शीघ्र जवाब दीजिए। यदि वे न आ सकें तो वैसा उत्तर की प्रतीक्षा है। वहाँ सभी को धर्मलाभ! सहजानन्दघन सादर जिनस्मरण।

इसी के साथ माता जी का पत्र :—

ॐ नमः

भाइजी श्री शुभेराज भाईसाव श्री मेघराजजी भाइजी अगरचन्दजी भाईजी भंवरलालजी भाईजी श्री हरखचन्द जी आदि सपरिवार !

आपनुं पत्र मल्युं. भाईजी ने मालम थाएजे के गुरुदेव में बवासीर नी तकलीफ घणी रहे छे. देशी उपचार घणाकर्या छता हजी सुधी आराम नथी। आपे लखेल के डॉ० सारो छे अने बवासीर नी दवा सारी जाणे छे तो प्रभु ने अनुकूलता प्रमाणे दवा आपेतो चाले. कारण के प्रभुजी तो ठाम चौविहार करे छे ते आप बधा जाणो छो, माटे ते प्रमाणे दवा होयतो चाले अने विना आपरेशन बवासीर नी दवा आपे अने जड़ थी बवासीर नी पीड़ा चाली जाय तो आप जरूर डॉ० ने हम्पी जल्दी लई आवो. मारा थी प्रभुजी नी तकलीफ सहन नथी थती. एना करतां मारा शरीर मां पीडा थात तो जरूर खमी शकुं तेम छे. आटली व्याधिओ मारा शरीर मां छे तेमां आ एक वधारे नी पीड़ा भोगवीशकुं. एटली आत्मा मां शक्ति छे वधारे शुं. माटे भाईजी आप गमे तेम करी ने बावासीर नी पीड़ा मटावी शके तेवा डा० ने लई जल्दी आवो. जो मारा शरीर मां अत्यारे पण अनेक व्याधिओ थी घेरायलो छे. छतां मारा माटे कंइ नथी लखती पण आपणा प्रभुजी ना माटे आपने जरूर हक थी लखी शकुं छुं।

मारा भाभीजी ने हवे ठीक हशे. जीजी भाभीजी नी पासे हशे। चंचल ना पत्रो आव्या करे छे. आणंद मां छे. मार्च मां परीक्षा थशे. हवे देराधून भणवा माटे नकी नथी. क्यां भणवानुं थशे ते नकी नथी. कारण के देरादुन हंपी थी घणो आगो थाए, अने मारो शरीर हवे पहेला जेवो नथी माटे नजीक होय तो सारुं. पछी प्रभुनी मरजी जे थाए ते खरुं.

लि० काकी मां ना आशीष.

(पत्रांक—२३५)

ॐ नमः

हंपी २२-२-६३

नाहटा बन्धुओ सपरिवार,

आजे वैद्यराज जसवंतजी नी बे प्रकारनी गोलिओ मली, बराबर आहार वखते मली ते शरु करी छे. साथे एक पत्र तथा साजे पत्र मल्युं, तेमां भोला भगते लंगोटिया बाबा ना हाथ में अंगुठी पहेरावबा नी भावना करी. तो पछी छत्र चामरे शो गुन्हो कर्यो ? आ कया घर नो न्याय ?

मसा मांथी पहेलां खून बे चार वखत आवेलुं ते पाछल थी बंध छे. सूकन, ज्वलन अने चरका घणा वखत थी बहु हतां पण हवे कंइक न्यूनता थई छे. मसा व्हार ना छे ते पीड़ा नथी आपता १ अंदर पाछल नी संधी भागना जमणे पड़खे छे. ते पाकता गुंबड़ा नी माफक दर्द करे छे. जेथी बेसवा मां फावतुं नथी व्हार ना तो हवे नरम पड्या छे, अंदर नो जोर मां छे. .

दवाइओ घणा भक्तो मोकले छे. पण केटली लऊं ? कोई क देशी गोलीओ अने मलम लई शकाय छे. वाकी तो एम ज रहे छे,

आपे वैद्यराज जी नी गोलीओ मोकली तो पछी ते शिवाय डॉ० नी शा माटे मोकलशो ? लगाडवा नुं मलम भले मोकलो. पीवा ने आया पांनु तो अहिं कोइ जाणे वाणे नही. माटे ए जंजाल मां नहीं उतराय. डा० ने तेडी लाववा नी जरूरत नथी. टीकीट लीधी होय तो केन्सल करी देजो. अमारे व्याधिदेव नो अनादर नथी करवो। ज्यां शरीरज नाशवान छे त्यां पछी व्याधिदेव क्यां अमर रहेवाना छे ?

वैद्यराजजी ने हुं भूली गयो हतो ते पाछा औषधीए याद कराव्या. तेमने मारा हार्दिक धर्मलाभ!

आजे अगरचंदजी सावना हस्ताक्षर दर्शन कर्या. उत्तर तो वे दहाडा उपर लखी नाख्यो छे के आपना प्रेरेला काम मां सफलता मलवी मुश्केल छे. कारण ते वेसातुं नथी एपण ऋण पतावथा रूप साधन छे मंत्र स्मरणधारा सिवाय वीजुं कंइ प्रिय नथी. अधिक शुं लखुं ? सर्व ने आशीष.

सहजानन्दघन

(पत्रांक—२३६) हम्पी ६-३-७३

ॐ नमः

कर्ता और भोक्ता पद परद्रव्य में जोड़ना अभिमान है क्योंकि वे स्व द्रव्य से अविनाभावी हैं इस तथ्य को अपना लेने पर कर्तृत्वाभिमान वृति संक्षिप्त होती हुई लय को प्राप्त होती है-ऐसा अनुभव जिसको भी हो चुका है उन ज्ञानियों के चरणारविंद में उल्लसित भक्ति पूर्वक नमस्कार हो।

भक्तजन ?

कल शाम को पत्र मिला। हाल जाने। डा० को लाने की आवश्यकता नहीं है क्यों कि वैद्यराज की गोलियां और डा० का मलहम दोनों के साथ-साथ प्रयोग में से चाहे किसी से भी फायदा हो रहा है। ज्वलन और सूजन कम हो गये हैं। बैठने में राहत मिल रही है। मरहम अनुकूल और अभी पर्याप्त है। जो गोलियाँ यदि वैद्यराजजी को आवश्यक प्रतीत होती हो तो फिरसे भेजने में आपत्ति नहीं है। यों तो आत्मा में प्रसन्नता ही है। मस्से में भी आराम है। अतः और उपायों की चिन्ता अब न कीजिये।

काकीमां का शरीर भी ठीक ठाक चल रहा है। आत्म स्वस्थता के आगे शरीर अस्वस्थता उतनी तंग नहीं करती कि जितनी अन्यों को करती है। आप में से जिनको जब कभी भी आना हो खुशी से पधारिए। धन्नुलालजी साव को फोन से कहिये कि आपका पत्र कल मिला पुरुषार्थ करते रहिये। हमारा

हार्दिक आशीर्वाद है कि आप सफल हों। कल देहरादून वाले ला० दीपचंदजी जैन दम्पती बम्बई से यहाँ पहुंचने वाले हैं। जेतबाई बम्बई गई हुई हैं। हीरजी भाई कलीकट नयी दुकान के हेतु लड़के के आग्रहवश गये हुए हैं। रत्नु बाबु को कहियेगा। सभी को सादर जिन स्मरण।

सहजानन्दघन

रसोईघर के पीछे ६ रूम बन रहे हैं, कूप का काम चालू है, गुफाएं भी बन रही हैं।

(पत्रांक—२३७)

ॐ नमः

हम्पी ६-३-६२

[अमृतलाल जी छोगालाल जी तपावास जालोर]

मुमुक्षु बन्धु,

पत्र मिला। आपकी भावना की अनुमोदना करता हूं। परमज्ञानावतार परम कृपालु देव का एक अनन्य शरण लेकर उन्हीं की साक्षी से मंत्र और भक्ति-पाठों का स्वीकार एवं सप्त व्यसनादि का त्याग कर लीजिए—यही आज्ञा है। क्रमशः स्वाध्याय में वचनामृत के क्रमबद्ध मनन को अपनाइये।

मुझे आशा है कि आपको आत्म शान्ति मिलेगी। वैद्यराज एवं रिखबाजी को सादर धर्मस्नेह कहिये।

हंस चंचुवत् आत्म चक्षु से क्षीर-नीरवत् आत्मा शरीर को अलग अलग कर लेने पर ही भव-भ्रमण मिट सकेगा। इस तथ्य को ध्यान में रखकर सत्पुरुषार्थ करो यही आशीष।

—सहजानन्दघन सादर सहजात्मस्मरण

(पत्रांक—२३८)

ॐ नमः

हम्पी

१४-४-६४

भक्तवर श्री शुभराजजी एवं श्री मेघ महाराज,

आपदोनों के कार्ड मिले। तपस्वी जी को हमारा हार्दिक धर्मस्नेह! जयपुर में दो पगलां री जोड़ी तैयार होने आई है? श्रीमद्‌जी री एवं १ दत्त गुरुदेव की, अठे लाई सकेगा कुण? आपतो यात्रा करते आवोगा। तो पारसल से मंगवा लेंगे। कब आ रहे हैं?

अगरचंदजी साब की कलकत्ते से चिट्ठी थी। आपका इतना भंडार भरपूर है तो यहाँ के भंडार के लिए क्या कुछ साहित्य जो कि विशेष मात्रा में हो, भेट दे सकेंगे?

दादा जिनदत्त गुरुदेव की दो मूर्त्तियों का जयपुर आर्डर दे दिया है। १ यहाँ के लिए और १ दूसरों के लिए।

काकीमाँ ने सभी को धर्मस्नेह कहा है। ॐ शांतिः सहजानन्दघन सादर जिनस्मरण।

(पत्रांक—२३९)

ॐ नमः

हम्पी २७-४-६३

नाहटा बन्धुओ !

कार्ड अने अष्ट प्र० माता० स० नी प्रति मली. जे जोई शकीस. शुद्ध लागशे ते करीश. प्रस्तावना लखाशे तो लखोश. आनन्दघन पांच समिति ढालो मां छेल्ली ढाल कोई विचित्र कवि नी लागे छे. शैली भेद पड़ी जाय छे सुरत वाली प्रतिमां ते ढाल ने अंते आनन्दघन नुं नाम नथी, कच्छ वाली मां छे. ज्यारे बाकी नी सुंदर रचना छे. ते कापी करी मोकलीश. प्रस्तावना नो भरोसो नहिं राखता।

समयसार ना आधार पर समजसार प्र० अ० १२२ अने बी० अ० ना पचासेक दोहा लखाया हता, जे याद रहेशे तो नकल करावी मोकलीश.

ज्ञानमीमांसा जे मारी पासे पुस्तिका हती तेमां कैलाशयात्रा उतारेली. जे राजपुर-देहरादून थी आपने बीकानेर मोकली. पण ते बुकपोष्ट मात्र करवा थी गुम थई गई. बीजी नकल मारी पासे मुद्दल नथी. माटे ते तमे उतारी मोकलजो. परमात्मप्रकाश भी मारी पासे नथी. ते बुक मांज गुम थयुं. ते पण लखी मोकलजो.

शुभराज जी हजु आव्या नथी. मसा मां चारेक दहाड़ा थी फरी सोजो थयो छे. गोलिओ अने मलम भले मोकली देजो. ते खतम थवा आव्या छे. पिष्टी मोकली आपी हशे. काकीमां नी तबियत ठीक ठाक चाले छे. आत्मबलेज जीवन गाड़ी नभे छे. चंचल देहरादून थी मुंबई आवी गई छे. बे चार दिनमां अहिं आवी जशे.

हरखचन्द जी साथे जे मूर्त्ति मोकली बहुसस्ती मली गई. जोशो तो प्रसन्न थई जशो.

वैद्यराज जी ने धर्मलाभ जणावजो।

अहिं वर्षा तो बे त्रण वार सामान्य थई गई. कुंड भराई गया. रसोड़ा पाछल छ रूमो तयार थई रह्या छे.

बज्जी नी गोली लेतो नथी. क्वचित ज लऊं छुं माटे ते हजु पड़ी छे. मसा नी गोलीओ जल्दी मोकली देजो. खतम थई गई छे.

हवे रजा लऊं छुं. कारण के रातना ११॥ थवा आव्या छे. याद करनारा सौ ने सादर जिन-स्मरण।

—सहजानन्दघन—धर्मस्नेह.

(पत्रांक २४०)

ॐ नमः

हम्पी ३-५-६३

भव्यात्मा श्री अगरचन्दजी श्री भँवरलालजी आदि समस्त मुमुक्षु,

आ साथे आनन्दघन नो अनुभव करनारी तेमनो रचेली पाँच समिति नी ढालो संशोधन करी मोकलावुं छुं ते तपासी प्रेस मां मोकली आपजो हवे अष्ट प्रवचन माता स० नुं संशोधन शरु करीश धीमे धीमे थशे माटे उतावल नथी करता.

मसा नी दवा-गोळीओ बंने प्रकारनी अने काकीमां माटे नी विष्टी नुं पारसल मली गयुं छे. मसा ने चोपड़वा नी दवा खतम थवा आवी छे. तेथी ते ज्यां सूधी फरी नहीं मले त्यां सूधी मुंबाई थी आवेल मलम लगाडीश.

शुभराज जी नुं हाथ मां कोई पत्र नथी, तेम आव्या नथी. अत्र मौ नी तबियत सारी छे. उपरोक्त पांचवी ढाल मां घणुं संशोधन करवुं पड्युं छे. मूल भाव ने स्पर्शी ने कर्य होवा थी ते अपराध रूप नहिं गणाय.

त्यां सौ ने धर्मलाभ —सहजानन्दघन

(पत्रांक २४१)

ॐ नमः हम्पी ६-५-६३

भक्तवर (शुभराजजी नाहटा)

पत्र आज शाम को मिला और उसके बाद बम्बई होकर चंचल भी यहां सकुशल पहुंच आई। काकी मां का स्वास्थ्य ठीक सा दिखाई पड़ता है। विष्टी और बवासीर की गोलियां भी मिल गई। लगाने का मरहम आवश्यक है—कलकत्ते लिख दिया है।

अष्ट प्रवचन माता की सज्झाय का छपा मैटर यहां संशोधन के लिए कलकत्ते से आया—देख रहा हूं। काफी अशुद्धियां है और अर्थ का कोई महत्त्व नहीं दिखता।

आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य गिरता जा रहा है—अतः कुछ उपचार कराइयेगा। दादाजी की छवी चोलपट्टा के संशोधन पूर्वक तैयार तो करवाना ही है, ठीक तैयार हो जाने पर वैसी एक मूर्त्ति बनवाना चाहिए।

काकी मां ने आप और उनकी भाभीजी को अनेकशः आशीर्वाद लिखवाये हैं। चंचल ने शतः शतः प्रणाम। ॐ शान्तिः —सहजानन्दघन—धर्मलाभ !

(पत्रांक—२४२)

ॐ नमः

हम्पी
६-५-६३

(वैद्य कोजमलजी, आहोर)

भक्त उसी का नाम है जो कि अपना मन प्रभु-चरणों में चढ़ाकर और फिर उस मन को वापस नहीं चुराता। यदि मन रहित रहे तो उसे कोई संकल्प-विकल्पों से संबंध ही नहीं रहा उसे जगत के सभी पदार्थ ढेले-से मिट्टी बरोबर हैं। उसे परिस्थितियों की असर ही नहीं हो सकती क्योंकि मन ही नहीं रहा। वास्तव में ऐसे भक्तों को ही भगवान संभाल सकते हैं—विभक्तों को नहीं। रहना विभक्त और फिर भक्त का दावा रखना—नितान्त ठगाई है।

वन्दे ! सच्चे भक्त बनो, कच्चे मत रहो ! सभी को प्रभु भक्ति सिद्ध हो—यही आशीष

सहजानन्दघन सहजात्म स्मरण

(पत्रांक—२४३) हम्पी

ॐ नमः १७-५-६३

(श्री शुभराजजी नाहटा, पालीताना)

भक्तवर,

पत्र मिला। हाल ज्ञात हुए। पुराने चित्रों में चोलपट्टा समाप नहीं और भी कई बातों की कमी है। अतः संशोधन में कमी को दूर करना अपराध नहीं है। फिर जैसी आपकी मरजी।

पन्द्रह दिन पूर्व कलकत्ते एक पत्र दिया था जिसमें आनन्दघन कृत पांच समिति ढालें संशोधन करके भेजी थी, जवाब नहीं। मरहम भी वही चांदसी का भिजवाना लिखा था, वही ठीक है।

यात्रा के बाद आप यहाँ आ रहे हैं, तबियत आप दंपती की ठीक होगी।

अष्ट प्रवचन माता की सज्झाय मुद्रित करवा के संशोधन के लिए यहां भेजी है जो बहुत अशुद्ध छपी है। तथा अर्थ विवेचन भी ठीक नहीं हुआ है। मुझे तो पसन्द नहीं है। अतः वापस भेज दूंगा। प्रेस कापी ही प्रथम यहाँ भेजनी थी—पर अब तो छप जाने से शुद्धिपत्र मात्र से भी ग्रन्थ काम में नहीं आ सके—ऐसा विवेचन है, प्रभु इच्छा।

काकी माँ के कंधे पर काफी दर्द है। दवा से चमड़ी पक गई, रस्सी निकलने लगी। सोना कठिन हो गया है फिर भी बड़ी अलख मस्ती। चंचल खुश है। ॐ शान्तिः

—सहजानन्दघन. सादर जिनस्मरण।

(पत्रांक—२४४) हम्पी

ॐ नमः २६-५-६३

भक्तवर (भँवरलाल नाहटा)

मारा पत्र नो उत्तर हजु आपे नथी आप्यो ते ए के अष्ट प्रवचन माता पुस्तिका पाछी मोकलुं के अहिंज राखुं? अशुद्धि नुं प्रमाण जोतां ते वस्तु साधना मां सहायक नहिं निवड़े जेथी तेमां अधिक महनेत करवी में छोड़ी दीधी।

चंचल व्हेने आ साथे नी प्रतिकृतिओ उतारी आपी ते मोकलुं छुं. जो के राईटिंग अने पाना नी बने बाजुए लखवाथी अस्पस्टता आपने जोईती सगवड़ न आपी शके छतां अत्यारे तो आमज मोकलुं छुं.

तत्व विज्ञान हवे लगभग छपाई जवानी तैयारी करे छे. तेनी भूमिका लखी आपवा मोहन भाई शेठ आग्रह करे छे. जेथी ते कार्य मां व्यस्त छुं. मूळ भाषा गुजराती अने टाइप हिन्दी एम स्वरूप छे. २२ फर्मा छपाई ने मारी पासे आवी गया छे. ते सहज.

बवाशीर मां फरी जरा चमकारो थवा लाग्यो छे माटे वैद्यराजजीनी गोलिओ अने मलम न मोकल्या होय तो तुरत मोकलो देजो, वधारे बेसवा थी गड़बड़ थई गई छे.

शुभराजजी तो बीकानेर प्होंचीगया त्यां थई ने अहिं आवशे. विजय चडेरजीए समाचार फोन थी प्होंचाड्या हशे.

त्यां आप सोने म्हारा हार्दिक धर्मलाभ. काकीमां ठीकाठीक छे. आशीष कह्या छे. चंचल अहिं छे. ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन सादर जिनस्मरण

(पत्रांक—२४५)
ॐ नमः

२४-५-१९६३

अजी विजय जी ! (विजयकुमारसिंह महेर)

परिस्थितियों से क्यों जगड़ते हैं ? ये तो बेचारी आपके ही द्वारा बनी है न ? और उनका सर्जन जिस क्रम से आपने किया उसी क्रम से बन-बाय-बन आ-आ कर ऍक्टींग दिखावेगी ही। यदि नामंजूर हों तो विसर्जन क्यों नहीं करते। समरस रहने पर ही विसर्जन हो सकेगी। विषमता से ही तो सर्जन पुनः पुनः हो रहा है। तो फिर आपका विजय नाम बदनाम क्यों करते हैं ? जवाब दीजिए।

बवासीर में आराम है काकीमा भी ठीक ठीक हैं। सुशाल, सुलभाई आदि मजे में हैं वहां माताजी और सारे परिवार वालों को हमारा आशीष.

—सहजानंदघन जिन स्मरण

धनुलाल जी साथ को फोन से कहिये कि आपका आज पत्र मिला। अनंतशः आशीर्वाद स्वीकारें

नाहटाजी भँवरलालजी को फोन से कहिए कि-हमारे अंतिम पत्र का जवाब अबतक हमें नहीं मिला है।

अष्ट प्र० स० का अर्थ ठीक न होने से उसमें महिनत नहीं होगी।

तत्वविज्ञान छपने आया है उसकी भूमिका, शुद्धि पत्रक, अनुक्रमणिका लिख देने का अनुरोध श्री मोहन भाई ने किया है अतः यह काम भी करना शुरू करूंगा

समयसार आदि पंचक लिख रही है-पूर्ण होने पर भिजवा दूंगा।

मस्से की जुलाब शिवा गोलियां और मरहम भिजवाना। काकाजी शुभेराजजी अबतक तो यहां नहीं आये, शायद शादी में बीकानेर जावें। और सभी आनंद मंगल है। सभी को आशीष.

(पत्रांक—२४६)
ॐ नमः

हम्पी
१३-६-६३

भव्यात्मन्

आपका विस्तृत पत्र मिला। सारी जीवनी के हाल अवगत हुए। फलतः हृदय में अनुकंप हुआ।

आपको वास्तविक सम्यक् मार्ग नहीं मिला और इस मार्ग के निर्देशक असली गुरू भी। जो मार्ग अपनाया गया है वह भ्रम के बजाय भ्रम ही उत्पन्न करने वाला निकला। और फिर भी आपको पूर्व जन्म की पुण्याई से जो अनुभूतियां हुई वैसी अनुभूतियों में से कुछ अनुभूतियां आपके मार्गदर्शक को भी शायद प्राप्त हुई होगी। इतने पर भी उन्होंने आपको भ्रम में लटका दिया— यही कलियुग की महिमा है।

अब आप उनसे सम्बन्ध विच्छेद शीघ्र ही कर दीजिए, क्योंकि मृतक का आसन करने वाले कभी भी आपको अपना आसन बना सकते हैं किंवा दूसरे वैसे कितने ही आत्म वंचना उत्पादक दुष्ट प्रयोगों में आपकी बलि तक चढ़ा सकते हैं। अतः अपने को शीघ्रातिशीघ्र सावधान कर लीजिएगा।

आपको उक्त जाल से छुड़ाकर मैं एक ऐसी महान् शक्ति का शरणागत बनाना चाहता हूं कि जो शक्ति आपको सीधे राह पर ले जायेगी। जिस राह में अपार शांति और अखूट आनंद स्वतः प्रकट हो जाता है। पर उस शक्ति का यह आदेश है कि आप देव द्रव्य का उपयोग अपने जीवन निर्वाह में न करें और जैन मार्ग के प्रति अखण्ड श्रद्धालु बनें। अन्य साध्य पद्धतियों को सदा के लिए जलांजलि दे दें। व्यवहार नीति को अपनी जीवन संगिनी बनाएं। अपने हृदय मंदिर में दया देवी की स्थायी प्रतिष्ठा कर लें। हृदय में से कठोरता और मोह भावना को मिटा दें। भूतकालीन घटनाओं को विस्मृति के गड्ढे में डाल दें और भविष्य चिन्ता को अपने मन मन्दिर में प्रवेश करने न दें। वर्तमान प्रत्येक क्षण को निम्न मंत्र रटते हुए उदय आई हुई प्रवृतियों में प्रवृत्त रहें। मन्त्रः—"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं अर्हं श्रीजिनदत्तसूरि! एहि एहि, वरं देहि, सुप्रसन्नो भव! मम समीहितं करु कुरु ह्रीं स्वाहा।

विधिः—नित्य एकाशन, ब्रह्मचर्य, भूमि शय्या करते हुए एकाग्र मन पूर्वक २५ माला ५१ दिन पर्यन्त। दादावाड़ी में दादाजी के सामने पद्मासन लगाकर जप कीजिए। बैठक लगाने के पूर्व यह भावना करिये कि मुझे हे भगवान! अपनी शरण में लीजिये और आत्म समाधि दीजिए। कुगुरुओं के पंजे से छुड़ा कर उस दूषित मार्ग से बचाइए।

स्नान, शुद्ध वस्त्र धारण पूर्वक सुबह २ बजे से प्रातः काल पर्यन्त अपना नित्य क्रम बना लीजिए। मुझे विश्वास है कि एक निष्ठापूर्वक यह साधन करेंगे तो दादाजी के साक्षात् दर्शन पाकर उनसे आगे का रास्ता सुगमतया पाकर आनंद विभोर हो उठेंगे। परिस्थितियां जिनसे बनी हैं उनमें उन्हें मिटाने की भी क्षमता रहा करती है। निराशा-हतोत्साह को हटा कर आशा, उत्साह धैर्य और साहस को अपनाइये। इस विषय में अधिक सुझाव तो प्रत्यक्ष सत्संग से ही संभव है। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

भवदीय हितचिन्तक सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद!

ता० क० २५ माला बैठ कर और फिर प्रतिविश्वास में बिना गिनती के उक्त मंत्र रटते रहिए कष्ट अवश्य दूर हो सकेगा-पर कुछ देरी से।

(पत्रांक—२४७)

ॐ नमः

हंपी २४-६-६३

(वैद्यराज कोजमल बाफणा)

प्रभु भक्ति करता रहेलो. भक्ति धून नो लाहवो लेता रहेजो.

जे जे करेलुं छे ते ते भोगववानुं ज छे. रोवा थी कांइ वलवानुं नथी. माटे प्रभु भक्तिमां तन्मय रहो. बधा नुं कल्याण इच्छजो.

[नोट—यह पत्र गुरुदेव ने खुशालभाई से लिखवाया था, इसमें बड़ी चमत्कारी बात है कारण कि मेरे भाई हरकचन्द का उस रात को किसी ने मर्डर किया था। वह मेरे से अलग रहता था मुझे ता० २५ को शाम को करीब ६ बजे मालुम हुवा मगर गुरुदेव भगवन् को तो इस मृत्यु से पहले मालुम हो गया था पोष्टकार्ड होसपेट से डलवाया था ता० २५ को। हमको डिलेवरी ता० २६ को हुआ था। इस पत्र में थोड़े में सब सार आ गया है।—वैद्य कोजमल]

(पत्रांक—२४८)

ॐ नमः हम्पी २६-६-६३

भक्तवर ! (भंवरलाल नाहटा)

श्री धूपियाजी अने आपनो बंने कागल मळ्या हता. अष्ट प्र० मा० स० विषयक मारा थी मेहनत हाल थाय तेम लागतुं नथी तो पछी शा माटे आशा राखवी ? जो बनशे तो आनन्दघन साहित्य मां रुचि छे ते अधूरुं पूरुं करवा प्रयत्न करीश. बाकी हाल मां पोता ना साधन अने अहिं ना कार्य-क्रम सिवाय बीजुं कई याद नथी रहेतुं के थतुं नथी.

वैद्यराज जी हजु सुधी अहिं आव्या नथी. मसा मां एम तो आराम छे. हवे जो दवाई न लगाडुं तो कइंक सूजन जेवुं जणाय. नहिं तो तकलीफ रहेती. गोलिओ तो समाप्त थई गई.

काकाजी नो अहिं कोई पत्र नथी. दादाजी ना चित्रपट विषे लख्युं ते खुसी थी मोकलो आपजो. काकीमां आनन्द मां छे. शरीर ठीक छे.

चंचल बम्बई—सायन मां गर्ल्स कालेज मां भणवा जशे. हजु अहिं छे. मैट्रिक नी फर्स्ट डिवीजन मां पास थई. हजी एने भणवा मां ज लगनो छे. सुखभाई खुसभाई आणंद मां छे. खेंगार भाई भणशाली अने कानजी बापा तथा भूआजी बधा मजा माँ छे. जीवन भाई दंपति मुंबई थी गई काले अहिं आवी गया रहेवा माटे। त्यां आप सौ आनंद मां हशो. सौ ने सादर जिन स्मरण।

सहजानन्दघन

धूपिया जी, बडेर जी, बदलिया जी अने पारसन आदि सौ ने आत्म स्मरण !

(पत्रांक—२४६) हम्पी

ॐ नमः ३-७-६३

[कोजमल जी बाफणा]

भक्तवर ! बन्ने पत्रो मल्यां बनवा काले बनाव बनी गयो, हवे ते सम्बन्धी आत्मा मां क्लेश वधे एवी जंजाल वधारवा मां लाभ नथी, माटे आवी संसार नी रचना प्रत्ये वैराग्य पामी, पोताना कल्याण नो रस्तो शोधो, बाकी नो धंधो छोड़ी सत्संग मां नित्य निवास करो एज भलामण छे तमारा जेवा डाह्या अने विचक्षण ने अधिक शुं लखुं ? पोता ना मोत पहेलां जे करवा जेवुं छे तेमां ढील का करो ? " करेगा सो भरेगा, फकीर मलीदा खायगा"—आ वचन हृदय मां कोतरी राखो. त्यां रीखबचंदजी तेनो बधो परिवार तथा साहेबचन्द जी वगेरे ने याद करे तेने मारा आशीष कहेजो. काकीबाए आशीष लखाव्या

छे. चंचल वहेन मुंबई कालेज मां दाखल थवा गया सोमवारे अहिं थी प्रयाण कर्यु. शान्ति-भाई बहेन ने शांति हशे. वेलारी थी घेवरजी आव्या हता. अहिं सौ आणंद मां छे तमो पण सौ आनंद मां रहो।

सहजानन्दघन

(पत्रांक-२५०)

ॐ नमः

हम्पी ११-७-६३

भक्तवर श्री शुभराजजी, श्री मेघराजजी श्री अगरचन्दजी सपरिवार,

बहुत अरसे से आपका कोई पत्र समाचार नहीं, क्या हाल है? भक्ति-कर्तव्य किताब कितनी सीलक हैं? १००० यहां भिजवाइए।

तत्त्व-विज्ञान अहमदावाद में लगभग छपना पूर्ण होकर अब बाइण्डिग के लिए तैयार हो रही होगी। बवासीर में तकलीफ नहीं है। काकी माँ की तबियत अच्छी है।

चंचल कालेज में पढाई के लिए बम्बई गई है। और सब यहाँ आनन्दमंगल है। आपका क्या हाल है? पत्रोत्तर शीघ्र दीजिए।

सभी को हमारा धर्मलाभ। काकीमां का आशीर्वाद! ॐ शांतिः

श्राविकाओं को धर्मलाभ!

सहजानन्दघन सादर जिन स्मरण!

(पत्रांक—२५१)

ॐ नमः

हम्पी १८-७-६३

बन्धुत्रय सपरिवार (श्री शुभराजजी नाहटा) बीकानेर

ता० ८-७ का लिखा आपका पत्र मिला; तथैव हमारा भी उन दिनों मिला ही होगा।

आपके लिखे अनुसार कि "हम लोग शीघ्र ही सेवा में पहुँच रहे हैं" पत्रोत्तर नहीं दिया।

चंचल बंबई है। यहाँ आनन्द मंगल है। काकी मां यों तो ठीक ही थे, पर तीन चार दिन से टॉनसील के सूजने पर बुखार आ रहा है, फिक्र न करें।

श्री मेघराज जी साब ने तो आपको वचन दिया था न कि मैं भी साथ चलूंगा। तनसुख भी यहाँ नहीं आए। सभी को हमारा, काकी माँ का आशीर्वाद!

सहजानन्दघन धर्मलाभ!

(पत्रांक— २५२)

हंपी २४-७-६३

ॐ नमः

भक्तवर्य रिखबचन्दजी सपरिवार

शान्ति का कार्ड मिला। परम कृपालु देव की असीम कृपा से यहाँ आनन्द मंगल है। वहाँ आप सभी को भी हो—यही आशीर्वाद!

प्रभु भक्ति का क्रम ठीक चल रहा होगा। यहाँ ठीक चल रहा है। हम सभी का स्वास्थ्य भी ठीक है। चंचल, बंबई कॉलेज में पढाई के लिए गई है। माताजी ने आप सभी घर-भर वालों को धर्म स्नेह पूर्वक बहुत याद किया है—आशीष लिखाया है।

इस चन्द रोज की जिन्दगी में स्वरूप चन्द्र को प्राप्त कर लेना ही अनिवार्य है। उसके बिना भव भ्रमण मिटने वाला नहीं है। एक क्षण भी माया-मोह को आत्मा में टिकने न देना यही अपने आपकी फरज है। सभी को अगणित आशीष.

सहजानंदघन—सहजात्म स्मरण।

(पत्रांक—२५३)

ॐ नमः

हम्पी २४-७-१९६३

भक्तवर (वैद्य कोजमलजी-आहोर)

"बन्ध समय चित्त चेतिये, उदये शो संताप"

इस सैद्धान्तिक तथ्य के ऊपर लक्ष देकर यदि हम लोग चलेंगे, तो पुराने कर्मों की निर्जरा एवं नूतन कर्म बंध का रुकना स्वतः होता रहेगा। परिणामतः मोक्ष हथेली में ही नजर आयेगा।

आज कल तुम्हारी चित्त वृत्तियों का क्या हाल है ? भक्ति भजन में कितना समय बीतता है ? यहाँ हम सभी आनंद में हैं। बवासीर ठीक हो गए। माताजी की तबियत भी ठीक है। तुम्हें बहुत सारे आशीर्वाद लिखाते हैं। ॐ शांतिः

सहजानंदघन सादर जिन स्मरण सह सहजात्म स्मरण

परिचितों सभी को सादर धर्म स्नेह।

(पत्रांक—२५४)

ॐ नमः

हम्पी

६-७-६३

(वैद्य कोजमल बाफणा, आहोर)

भगतां,

सीटी मिली। धर्मसार जाणीया। बहारी सुं अब तक तो कोई आपरी भलामण अठे नहीं आयी। अब तो तबियत ठीक हुसी। चिन्ता करणी नहीं। आत्मा तो अमर है, फेर निर्भय क्यों नहीं रेवणो थांरी भावना मुजब बापवा कोशीष करणी-इसमें दूजारी सलाह नहीं लेणी। जो शरीर ठीक वे तो १ दफा अठे आ जावो माताजीरो धर्म स्नेह। अठे तो सगलाइ मोज में है एक थांने नहीं जोयी ठीक नहीं जिणसुं अठे आवोरा आशीर्वाद !

—सहजानंदघन

(पत्रांक—२५५) हम्पी काती सुदि २६-७-६३

ॐ नमः

श्री अगरचंदजी सांब सपरिवार.

कार्ड मल्युं-परसों एक तार मोकल्यो हतो के शुभराज जी जो न नीकल्या होय तो नीकले त्यारे जयपुर थतां आवे-त्यां नेमचंद पानाचंद जवेरी सुरत वाला ने त्यां मली-श्रीमद् राजचंद्रजी नी पाषाण नूतन मूर्ति बनी गई छे तो लेता आवे. ते तार मली गयो हशे.

शुभैराज जी नुं पत्र पण मल्युं. तेमां तेओ क्यारे नीकलशे अने अहिं क्यारे आवशे एम नथी लख्युं. शीघ्र आवीए छीए, एम लखेलुं हतुं-तेथी उपलुं. कार्य करता आवे एम इछ्युं छे।

आठ प्रवचन मातानी सज्झाय मूल गाथाओ अशुद्ध वधारे पड़ती छपाई छे. अर्थ संकलन एवा प्रकार नुं छे. के तेनुं शुद्धि-पत्रक बनाववा जतां-स्वतंत्र पुस्तक बने. एवा बेढ़ंगा कामो मां मने जराय रुचि नथी. तेमां मन लगाडतां य लागतुं नथी. जेथी ते काम अधूरुं ज मूकी दीधुं अने तेवी असमर्थता विषे पण कलकत्ते समाचार क्यारनाय मोकली आप्या हता .

आनंदघनजी साहित्य विषयक आपनुं लखवुं तद्दन वाजवी छे. छता मारा अहिं ना कार्य-क्रम एवा गोठवायला छे. के तेमाँथी अवकाश लइ शक्यो नथी, जो धारूं तो लई शकुं खरो. छतां ज्यां विचारवा बैसुं तो नित्य नयुं स्फुरे छे. धोरामां लखेला अर्थो अत्यार नी समज प्रमाणे मामूली लागे छे. जेथी हजु थोभी जवानी वृत्ति थई आवे छे. आ अनुभव एम जणावे छे के ज्यां सूधी पूर्ण ज्ञान न आवे त्यां सूधी १ अक्षर बोलवुं के लखवुंए जोखम छे· आ विचारेज श्री तीर्थंकरादि महापुरुषो छद्मस्थ दशा मां तद्दन मौन रह्या हता. ए योग्यज हतुं.

बीजा नयेः—आवी प्रवृत्ति वड़े ज ज्ञान नुं क्षयोपशम वधे छे-माटे जे दशा माँ जे सूझे ते नम्रता थी पत्रारूढ करवा मां नुकशान नथी. आ वात पण साची छे. अने तेमां तमारो नंबर उदाहरण रूपे लई शकाय. किन्तु ते प्रवृत्ति पण अत्यारे नथी करी शकतो ते मारो प्रमाद पण गणी शकाय. ते प्रमाद टालवा कदाच पर्यूषण बाद कोशीष पण करी शकुं तो ठीक गणाशे. पछी जेवो उदय. दिन रात मांथी अमुक काल साधन मां जाय छे. रात्रे लखुं तो कंइक नजर मा खेंचाण थाय छे. दिवसे फुरशद घणी ओछी रहे छे. आवी स्थिति छे. बाकी अरुचि नथी, सौने धर्मलाभ।

—सहजानंदघन

(पत्रांक—२५६) हम्पी

ॐ नमः १२-८-६३

भक्तवर्य, श्री भँवरलाल जी सा'ब सपरिवार

आपनो घणा समय थी पत्र नथी. दादाजी नुं चित्रपट्ट जे आप बनाववा आप्यो छे. तेमां चद्दर-चोलपट्टो ने गुंठण ना उपर चार आंगल होय तेम ज बनावजो. जूनी छबी मां ते बराबर नथी. आ अभि-

साथ मूल पुरुष नो सेवना ज मुनि प्रत्यक्ष पणे जाणी शकुं छुं. माटे आप इतिहास प्रमाण नी दुहाई आपी तेवो आग्रह नहीं करता. जो कदर मुजब नहीं धरावता तो शब्दि मोकलवा नी तस्दीक नहीं लेता.

काकाजी हेमराज वैद्यराज आदि आवी शक्या नथी. ममा मां आराम छे. स्वास्थ्य बराबर छे. सत्संग नियमित पणे चाले छे. सौ सत्संगी जनो आनन्द मां छे. काकी मा नी तबियत पण सारी रहे छे. तेमने गोती-चिट्ठी मारफत आपी। तेनी हजु आवश्यकता छे. जो बनावटावी ने बदलिया जी साथे मोकली शको तेवी गोठवण करजो।

त्यां आपना प्रियजनो सौ स्वस्थ अने प्रसन्न हशोज. बदलिया जी नी साथे १० किताब पूजासंग्रह नी मोकलावजो। बदलियाजी, बहेरजी, धूपियाजी आदि सत्संगीजनो ने धर्मलाभ कहेजो। पन्नूलाल जी साथ ने फोन थी जणावजो के तमारो पत्र हम्पी पहोंच्युं छे. तेमां आश्विन मास मां हंपी आववानी भावना जणावी छे. तेनो आज्ञा ज छे. खुशी थी पधारो कोई प्रतिबंध नथी.

आश्रम मां रहेवानी व्यवस्था पहेला करतां विकास पर छे. थोडो मडे हजु चाले छे.

मारा थी साहित्य लेखन थई शकतुं नथी. तेनुं एक कारण ए छे के जेम वखत वीते छे तेम तेम समज मां पण विशेषता थती जाय छे. जेथी भूतकाल नुं लखाण वर्तमाने अपूर्ण जेवुं जणाय तेथी कलम अटकी पडे ए सहज छे. आप बन्धुओ नी भावना ने ठोकरावया नथी लखतो एम नथी. पण उदय तेवा प्रकार नो छे. आगामी सां०-प्रतिक्रमण मां आप सौ आ आत्मा ना हार्दिक क्षामणा स्वीकारजो.

ॐ शान्तिः

सहजानंदघन सादर प्रेम स्मरण,

(पत्रांक—२५७)

हम्पी

ॐ नमः

१२-८-६३

जेजे इच्छेलुं पूरे, तेने ते मने अव्हारे;
जेजे इच्छ्युं न पूरे तेनो मने न वधारे... १
जे मोह भावे इच्छ्युं, निजने मुंझाया जेवुं;
तन मन धनादि, फली ने मल्युं ज तेवुं ..२
तेथी मुंझाय छे तुं, पण छे ए दोष केनो;
छे निमित्त मात्र तेने, दे छे तुं दोष शा नो?...३
करे हर्ष शोक शानो?, तज मोह रे अभागी;
निज दोष थी बंधायो, छूटे ए दोष त्यागी...४
समभाव थी सही ले, शकशे रही न कर्मो;
आवे गये शोधवा, था बेस तुं निशानो;...५
करी ए जो स्वरूप जो, सहजात्म रूप दृष्टा;
स्थिर ज्ञान मां रहे तो, हो सहजानन्द स्रष्टा...६

भक्तवर जी कोजमल जी

हमारा पूर्व पत्र मिला ही होगा। यद्यपि पश्चात्ताप, उन्नति क्रम की प्राथमिक सीढी है; सच्ची साधना का पूर्व अंग है तथापि प्रभु स्मरण किंवा आत्मध्यान के अवसर में वह अन्तराय रूप भी है। चिन्ता रहित चित्त ही एकान्त है और उसी एकान्त में ही प्रियतम-प्रभु का मिलन हो सकता है अतएव प्रभु मिलन के हेतु मन को चिन्ता से खाली कर दो। उसमें किसी भी अन्य विकल्प को घुसने मत दो। अधिक क्या लिखुं?

आपके नूतन मित्र पटनीजी का पत्र पुष्प मिला, उन्हें हमारा हार्दिक अनेकशः आशीर्वाद कहियेगा एवं मित्र धर्म के प्रति वफादारी के लिए धन्यवाद भी। ॐ शान्तिः

सहजानंदघन—अखण्ड कल्याण हो।

यदि अनुकूलता हो तो एकबार यहाँ आ जावें, दिल की दवा भी सोची जाय।

(पत्रांक—२५८)

हम्पी २४-८-६३

ॐ नमः

भक्तवर श्री शुभराज जी श्री मेघराजजी, श्री अगरचन्द जी आदि वि. जैन समाज.

कल साँ, प्रतिक्रमण में अनन्त ज्ञानियों की साक्षी पूर्वक हम सभी श्री संघ ने हार्दिक विशुद्ध भाव से अपने समस्त प्रकार के भूतकालीन अपराधों की आप सभी से उत्तम क्षमा प्रार्थी है और क्षमा प्रदान की है स्वीकृत रहे।

आपका कार्ड मिला था। मूर्त्ति जयपुर से बीकानेर पहुंच गई, अब हम्पी आप ही ला रहे हैं अतः अंजनशलाका और प्रतिष्ठा विधि की प्राचीन शुद्ध और व्यवस्थित प्रतियाँ भी आपको लानी होगी जिससे आगंतुक मूर्त्तियों को देवाधिष्ठित करके प्रतिष्ठा करना सुगम होगा। दादाजी की मूर्तियाँ और चरण चिह्न भी बनाने का आर्डर दे दिया है, ज्ञात रहे।

अब आप कब तक यहां पहुंच रहे हैं? वहां आपका सारा परिवार एवं खजानची-साब, कोठारी जी सेठियाजी आदि परिचित जनों को भी हमारा खामणा कहियेगा।

यहां ठीक सर पर्वाराधना हुई। सभी ने आप सभी को खमाया है। काकी माँ ने विशेषतः खमाया है और आशीर्वाद भी बहुत स्नेह बर्षाये हैं। स्वास्थ्य अच्छा है। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन—साँ० क्षामणा.

(पत्रांक २५९)

देह जन्म दिन

ॐ नमः

हम्पी २९-८-६३

भक्तवर मेघराज जी सा'ब सपरिवार

खा० पत्र मिला। यहाँ बड़े ही उल्लास से पर्व-आराधना हुई। संख्या ठीक रही। आज प्रायः भक्त जन हाजर हैं। १ तार श्री पूज्यजी के विषयक मिला। हमने दादाजी से प्रार्थना तो की है, पर होगा वही

जो होनहार है। कर्मतन्त्र में हस्तक्षेप कैसे संभव है? यहाँ श्री संघ समस्त से हमारा हार्दिक खामणा कहियेगा। भाईजी को कब भेज रहे हैं? काकी माँ की तबियत ठीक है। मोती पिष्टी ठीक काम आई, और भी पिष्टी की आवश्यकता है। शीघ्र तैयार करवा भिजवावें। काकी माँ ने सभी को हार्दिक सां० खामणा कहा है।

श्रीपूज्यजी का क्या हाल है? यह बात कैसी सुझी? कि यहाँ तार देना पड़ा।

सभी नाहटा बन्धुओं को धर्मलाभ ! सहजानंदघन सां० खामणा

(पत्रांक—२६०) हम्पी

ॐ नमः ३-६-६३

भक्तवर, (रांकाजी)

परम कृपालु की साक्षी से सभी जीवों के सभी अपराध क्षमा कर दिए हैं तथैव अपने सभी अपराधों की क्षमा याचना की है जिसमें आप सभी सम्मिलित हैं। साध्वीजी को भी खमत खामणा कहिएगा।

आत्म स्मरण, प्रतीति, लक्ष और अनुभूति की धारा क्रमशः सिद्ध पद प्राप्त करो-यही हमारा आशीर्वाद है।

पर्वाराधन में प्रायः २००/२५० तक संख्या थी जिसमें से कुछ भीड़ तो अभी तक भी है। काकी माँ सुखभाई आदि सभी ने भी क्षमा का आदान-प्रदान स्वीकारने को सूचित किया है। वहाँ सभी सत्संगी जनों को भी हम सभी का ख० खा० स्वीकृत कराइयेगा।

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद

(पत्रांक—२६१) हम्पी

ॐ नमः ८-६-६३

परम कृपालुदेव नुं शासन जयवंत वर्त्तो !

सद्गुणानुरागी विद्वद्वर्य श्री अगरचंदजी श्री भंवरलालजी श्री हरखचंदजी श्री विमलचंदजी श्री पारसकुमारजी श्री पद्मचंदजी आदि सपरिवार

सां० खामणा स्वीकृत हो !

भंवरलालजी साव लिखित खामणापत्र यथासमय मल्युं हतुं-अने गई सांजे अगरचंदजी साव नुं कलकत्ता थी लिखित पत्र-मल्युं-पण आ पत्र वांची शकायुं नथी. शिखरचंदजी सेठिया साथे मोकलावेल मूर्त्ति अने भक्ति-कर्त्तव्य पुस्तको मल्यां. शिखरचंदजी गया मध्याह्ने मुंबई तरफ प्रयाण करी गया. बीकानेर थी आप अने जैन संघ तरफ थी श्रीपूज्यजी विषयक बे तार पण मल्या हता. परन्तु जवाबी तार नो जवाब नथी आप्यो. दुनियां ने पारमार्थिक भूख ओछी छे. तेने आवा जवाबो थी चमत्कार प्रियता वधे. परिणामे अमने भजन मां विघ्न रूप थई पड़े माटे एवा निमित्ते जाहेर मां आववानी दस

गुरुदेव नी आज्ञा नथी. आप पण कर्म तंत्र ना रहस्यज्ञ छो. कोइ पण कार्यसिद्धि उपादान निमित्त कारण ना योगे थाय. तेमां उपादान कारण नी न्यूनता होय तो निमित्त कंइ करी शकतुं नथी. निमित्त ने शरणे थएलुं उपादान, निमित्त ने निमित्त कारणता आपे अने पोते उपादान कारण रूपे थाय. बन्ने कारणोनी योग्यताए कार्य-सिद्धि थाय। जल मांय रहेलुं माछलुं जल ने शरणापन्न होवा थी गति सहायता इच्छे तो जल तेने गति सहायक थई सके. पण स्थल स्थित होय तो तेने जल, गति सहायक थई न सके. तेम श्रीपूज्यजीनाहृदयमां आ आत्मा प्रत्ये जो शरण भावना स्थिर होय तेमज तेमना आयुकर्म ना दलिक अने अमुकपुण्य ना दलिक शिलक मां होय तो आ आत्मा नुं योगबल तेमने सहायक थई शके. बीजी रीते शक्यज नथी. तेम छतां आपणे जे कांइ दुखियाओ ना दुख ने दूर करवा नी भावना सेवीए तेनुं फल आपण ने तो मलेज परन्तु दुखियाओ ने शरणापन्नता नुं व्यतिरेक होवा थी न मले. शरणापन्नता नी अन्वयतानी महिमा बतावबा जिनागमो मां "चत्तारि शरणं पवज्जामि" नुं प्रतिपादन छे. तेनुं महात्म्य नमस्कार मंत्र थी जराय उतरतुं नथी आ रहस्य पर मनन करजो. काकी मां ना विषय मां जे कांइ आपे जोयुं के सांभल्युं तेमां एमना हृदयमां आ आत्मा भणी शरणापन्नता नी अन्वयता आदि उपादान पणे काम करता हतां जेथी आ आत्मा नी योग शक्ति चले एमनी केटलीक घात टली गई. ए जोई के सांभली तम जेवा दयालु श्रीपूज्यजी ने माटे तेम करवा इच्छे तेनी साथे शरणता नी अन्वयता नुं रहस्य भाग्ये ज जाणता होय छे. भंवरलालजी साव ने हाथे मनहरना हृदय मां शरणता नी अन्वयता नुं बीजारोपण थयुं हतुं तो तेथी आयु कर्म नी रस्सी त्रुटित होवा थी ते देहे अधिक न रहेवायुं परन्तु गति सुधरी अन्य देहे तेने ते उपकारी निवड्युं आ रहस्य अगरचंदजी साहेब जरूर हृदयस्थ करवा जेवुं छे—अस्तु.

दादाजी नी बे मूर्तिओ बनाववा जयपुर आर्डर आप्यो छे. इन्द्रचन्दजी तो कोण जाणे क्यारे छवी तैयार करशे ?

आ वखत ना पर्यूषण मां २००/२५० पर्यन्त नी भीड़ रही ते भीड़ पूनम पछी विखराई. पर्वाराधन मां उत्तम क्षमा ना आदान प्रदान समये आ जीवे, काकीबाए सुखभाई आदि सौए आप सौथी पण ते क्षमाधर्म नुं पालन कर्युं छे ते स्वीकारजो. भवोभव ना अपराधो क्षमा छे. अने क्षमा मांगी आत्मा ने हलको कर्यो छे.

ता० ३१-८ ना रोजे डिवीजन कमिश्नर स्टाफ साथे अहिं नी मुलाकाते आव्या हता. विश्वशान्ति नो उपदेश सांभली प्रसन्न थई आ आखो पहाड़ लगभग २० एकड़ आश्रम ने आपी विदाय लीधी, नाम मात्र चार्ज दर एकड़े रु० ५) लेशे. ते सहज जाणवा लख्युं छे. आप हृदय मां ज राखजो-एवा तेवा ने वात करवा नी आदत छोडी देजो. आ शरीर स्वस्थ छे. काकीबानी तबियत पण ठीक छे.

वैद्यराजजी ने खामणा साथे धर्मस्नेह जणावजो. वडेरजो, बदलियाजी, पारसन, धूपियाजी दादीमां आदि सौ ने सा० खामणा जणावजो.

अगरचंदजी साहेबे लखेलुं पत्र फरीथी सारा अक्षरे लखावेलुं जोवानी इच्छा छे, माटे तेम करजो. त्यां याद करनारा सौ भव्यो ने धर्मस्नेह।

सहजानंद सॉ० खामणा साथे जिन स्मरण !

हंपी थी ३ माइल दूर हवाई अड्डा बनी रह्युं छे. अने लश्करी कॅप बनशे एम सांभल्युं छे. तत्व-विज्ञान छपाई ने बहार पड़ी चुक्यो छे· किं० रु० ३) राखी छे सुंदर कागल छपाई बंधाई पण सुंदर छे. ते जेटला जोइए एम० बाड़ीलाल कुं० पो० बो० नं० ४७ अहमदाबाद-१ ना पता थी मंगावी लेजो।

(पत्रांक—२६२) हम्पी ८-१०-६३

ॐ नमः

सद्गुणानुरागी श्री अगरचंदजी साथ.

कार्ड मिला। हाल ज्ञात हुए। १ पत्र कलकत्ते भेजा था मिला होगा ? उसमें उपादान-निमित्त का रहस्य बताया गया था।

साहित्य विषयक हमने ऐसा लिखा था कि आपके ज्ञानभंडार में विविध साहित्य भंडार है, उसमें से *जिस जिस ग्रंथ की खप से अधिक प्रतियाँ हों, जिसे संभालने में मकान की संकीर्णता बढ़ गई* है। वैसी १-१ प्रतियाँ चारों ही अनुयोगों की यदि यहाँ भिजवा सकें तो इस देश के इसी एरिये में कोई श्वे० किंवा दिगंबर ज्ञानभंडार नहीं है इस कमी की पूर्ति हो सके। इस अभिप्राय को लेकर भाई जी को इशारा लिखा था—पर बाद में यह ख्याल आया कि शायद इस माँग को आप मेरा लोभ समझें इसलिए पीछे से इस विकल्प को भी मैंने हटा दिया है। अतः मेरी इस माँग को मैं वापस लौटा लेता हूं।

मुक्तापिष्टी विषयक लक्षा मुबक. इसके बनाने में जंजाल भी बहुत है और मँहगी भी। अतः उसकी जगह और कोई उपाय सोचा जायगा। उतनी लेने से भी *काकीमाँ* के हार्ट पर काफी सुधारा हुआ।

अभी इस शरीर में दन्त पीड़ा ने काफी कृपा की। आहार में कुछ दिन तक केवल पटोलिया ही लिया गया, और दो तीन दिन से खीचड़ी-कढ़ी चल रही है। दर्द शान्त हुआ पर रोटी चबाना कठिन हो गया है। आहोर वाले वैद्य ने मुक्तापिष्टी वापरने का कहा, जिससे केलसियम की पूर्ति अच्छी मात्रा में होने पर दाँत मजबूत बन सकें, पर हमें ऐसी बादशाही इष्ट नहीं है। नश्वर देह की अधिक चिन्ता नहीं होती।

मेरा बहुतसा समय साधन में बितता है, अतः लेखन क्रिया में चित्त नहीं लगता। भावना तो बहुत है कि आपका कार्य पूर्ण कर दूँ, किन्तु कर नहीं पाता। विशेष अनुभूतियों को पत्रारूढ करने किंवा

व्यक्त करने में दत्त गुरुदेव सम्मत नहीं हैं। उनका कहना है कि बहुत विषम काल है. जीवों की वृत्ति भौतिकता के पीछे घुड़दौड़ कर रही है। अनुभव मार्ग के अधिकारी नहीं से हैं अतः अलौकिक बातों को न समझने के कारण अर्थ का अनर्थ होना स्वाभाविक है। इसलिए सब कुछ गुप्त कर दो। समझ कर क्षमा लो। ॐ

सभी को सादर धर्म स्नेह।

(पत्रांक—२६३)

हंपी १७-११-६३

ॐ नमः

चेतन तुम्हें सदा हो नूतन वर्षाभिनन्दन
जयकार हो तुम्हारा स्व स्वागताभिनंदन !

भक्तां (वैद्य कोजमलजी, आहोर)

मंमाई रो कागद मिल्यो, पर आहोर पुगवा रो अब तक नहीं, क्या बात है ? अठे सघला राजी खुशी में हों। सदा प्रसन्न रहो, सदा रजा में राजी रहो। खेद ही बाधा है, उसे दूर करो। काकी मां रा आशीष।

—सहजानंदघन

(पत्रांक—२६४)

हम्पी

ॐ नमः

२४-११-६३

[वैद्य कोजमल जी, आहोर को कार्ड]

भक्तवर,

पहुँच पत्र मिला। अनुभूतियाँ अवगत हुई। इस प्रकार की अनुभूति जब तक रहे—रहने देना चाहिए, अपितु विसर्जन बुद्धि न होने देना चाहिए। अन्यथा आगे का रास्ता नहीं खुलेगा. उस अवसर में दैहिक प्रवृत्तियाँ रुक जायँ—परवाह मत करो। क्योंकि उस प्रकार के भावों के बाजार में कभी कभी प्रवेश हो सकता है, एवं अलौकिक अनुभूतियाँ अपनी हृदय तिजोरी में गुप्त रखनी चाहिए क्योंकि अपना प्राइवेट धन सभी को बताया नहीं जाता। अस्तु।

अंजनशलाका—प्रतिष्ठा-विधान का साहित्य भेजने की बात विस्मृत नहीं हुई होगी। यहाँ हम सभी प्रसन्न हैं। माताजी ने हार्दिक आशीर्वाद लिखाये हैं।

परसों मद्रास से हेमजी एवं उनके शाले आये हैं। प्रायः कल वापस लौटेंगे। वहाँ सभी प्रियजनों को हमारा आशीर्वाद सह सहजात्म स्मरण !

तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक चल रहा होगा। धर्म ध्यानमें अभिवृद्धि हो—

सहजानन्दघन सादर जिन स्मरण।

नोट—इस पत्र में अनुभव मुझे हुआ था उसमें विसर्जन बुद्धि हमने करली थी मगर गुरुदेव को हमने नहीं लिखा था। सो गुरुदेव ने अपने आप यह लिख दिया। मेरा खयाल आहोर बैठे का रखते थे—कोजमल.

(पत्रांक—२६५)

ॐ नमः

हम्पी २६-११-६३

[पत्र कोजमल जी, आहोर. कार्ड]

भक्तवर,

कल शाम को आपका पत्र एवं आज शाम को "कल्याण-कलिका" ग्रन्थ दोनों भाग का पार्सल व्यवस्थित रूप से मिले हैं—इसके लिए आपको हार्दिक धन्यवाद।

जो अनुभव हो रहा है—विकसित होता रहे यही आशीष.

अेग्झिमा बिलकुल मिटा नहीं है किन्तु कुछ अंशों में ठीक है और यही बात है खांसी की। माताजी का स्वास्थ्य भी ठीक चल रहा है। कर्म तन्त्र को यही मंजूर है। ॐ शान्तिः ३

सहजानन्दघन — अगणित आशीर्वाद सह सहजात्म स्मरण !

(पत्रांक—२६६)

ॐ नमः

हम्पी

२३-१२-६३

भक्तवर,

पत्र मल्युं. परम कृपालु नी पूर्ण कृपा वरते छे तेमां अमे सौ निमज्जन करीए छीए, अने आनंद पामीए छीए. तमे पण निमज्जन करी मस्त थजो. लेखन प्रवृत्ति मंद थई गई छे. तेथी पत्र व्यवहार मां लक्ष नथी अपातुं. माताजी मस्त छे. आशीष लखावे छे नित्य क्रम मां विकास थाओ अने देहाध्यास टलो अेज आशीष। त्यां याद करनारा मुमुक्षुजनो ने सहजात्म स्मरण धर्मस्नेह।

सहजानन्दघन आशीर्वाद !

(पत्रांक-२६७)

ॐ नमः

हम्पी १३-१-६४

भक्तवर (श्री विजयकुमार धडेर)

पत्र मल्युं लेखन प्रवृत्ति शून्य सी रहे छे. जेथी प्रत्युत्तर अपाता नथी, माटे क्षंतव्य छे। यहाँ तो एक आत्म-साधन सिवाय बीजुं कांइ संभारतुं नथी तो तम जेवा याद क्यां थी आवे ?

प्रारब्ध प्रमाणे संसार नी फिल्म चालती रहे छे तो पछी शा माटे समभावे न रहेवुं ? कर्म तंत्र मां कोण हस्तक्षेप करी शके ? नवलखाजी केम छे ? जयन्तीभाई पालनपुरी ने आशीर्वाद जणावजो।

काकीमाँ मस्त छे, आशीर्वाद लखावे छे, सुख भाई खुश छे। पारसन दम्पती आनंद मां छे। त्यां माताजी, तमारा बन्धुओ विथ फेमेली सौने आशीर्वाद ! धर्मध्यान मां वृत्ति राखजो।

- सहजानन्दघन सादर जिन स्मरण !

(पत्रांक—२६८)

ॐ नमः

हम्पी १३-१-६४

(वैद्य कोजमल बाफणा,)

कागद पुगो। खूब कृपालु देव री भक्ति करो और अनंत सगति ने प्रगट करो। अठे तो कृपालु री पूरी कृपा वरसे है। आनंद ही आनंद हो रियो है।

माताजी तो अपनी अलख मस्ती में है। दूजी कांइ याद आवे ही कठांऊं?

सभी को आशीष!

सहजानन्दघन सहजात्म स्मरण।

(पत्रांक— २६९)

हंपी १५-१-६४

ॐ नमः

(वैद्य कोजमलजी-आहोर)

परम कृपालु देव नी भक्ति अखण्ड हो!

वाबूलाल जी साथे मोकलेल चीजो मां थी मात्र दवा छोड़ी वाकी नुं वधुं मली गयुं छे, दवा तो आहोर रही गई। अहिं तो कृपालु कृपा थी लीला लहेर छे, जेथी दवा नी चिन्ता रहेती नथी, जो के दर्द मस्युं नथी, कर्म तंत्र प्रमाणे जवुं हशे त्यारे जशे. गई काले भक्त पुरन्दरदास नी ४०० वर्ष नी पुण्यतिथि हती तेमां राज तरफ थी महोत्सव ३ दिन नुं चाले छे। तेमां मैसूर महाराज पधार्या हता, शरीर एटलुं मोटुं छे के रत्नकूट उपर आवी शक्या नहीं। वाकी सौ आणंद मंगल छे, काकी मां कागल नथी लखी शकता तो अंतर ना आशीष थीज शुं संतोष नथी थतो? तेमणे अगणित आशीष लखावे छे. खूब भक्ति करो अने मुक्त वनो ॐ शान्तिः ३

सहजानंदघन—सहजात्म स्मरण।

(पत्रांक—२७०)

ॐ नमः

हम्पी ६-२-६४

भक्तवर (वैद्य कोजमल जी)

२१-१ का लिखा पत्र मिला। हाल मालुम हुए। यदि मानसिक अशांति मिटाना है तो यहाँ क्यों नहीं टिकते? क्योंकि यहाँ ठीक रहता था। मोकलसर गुफा वासी बावा नीलगिरिजी भी परसों यहां आये हुये हैं। अमीचन्द जी की गुफा में ठहरे हैं। तुम भी यहां आ जाओ। और भी कई साधक यहाँ हैं। परम कृपालु की कृपा पूर्ण है। उनकी भक्ति से सब कुछ आनन्द ही आनन्द है। माताजी स्वस्थ हैं और प्रसन्न भी। हार्दिक आशीर्वाद लिखाती हैं। कब आ रहे हो? वहाँ का मोह छोडो! जंजाल

सिमट लो और यहाँ आकर आराधना में लग जाओ! अधिक क्या लिखूं? यहां सभी मुमुक्षु जनों को हार्दिक धर्मस्नेह!

सहजानंदघन सादर सहजात्म स्मरण!

(पत्रांक—२७१)

हम्पी

ॐ नमः

१३-२-६४

सद्गुणानुरागी साक्षरवर्य श्री अगरचन्द जी सपरिवार

आपनो घणा समय थी पत्र नथी मारी लेखन वृत्ति शून्य जेवी वर्त्तती होवा थी हुं पण पत्र आपी शक्यो नथी.

तत्वविज्ञान ना पुस्तको मोकल्या तेमां थी १ कोठारीजी अने १ शिखरचंद जी ने आपवाना हता. ते तेमने अपाया के नहीं? तेनी तेमना तरफ थी पहोंच नथी. माटे तेमने सूचना करजो.
वे वखत प्रवचन सिवाय हुं मारा साधन मां विशेष रहुं छुं जेथी साहित्य लेखन थतुं नथी. तेवी रुचि पण ओछी थई गई छे. आपनी इच्छा ने तृप्त नथी करी शक्यो, तेथी जराक मने दुख छे छतां निरुपाय छुं.

साधन मां आत्म संतोष छे, एज अन्य कार्यो थी निवृत्ति करावे छे.

आप पण अन्तर्ज्योति जगाडवा नो पुरुषार्थ करो. आखरे समाधिमरण करवानुं छे. ते संवर समाधि गत उपाधि' विना शक्य नथी.

आयु घटतुं जाय छे, जंजाल वधती जाय छे. त्यां आत्म-समाधि केम संभवे? माटे जागो!! सुज्ञेषु किं बहुना?

—सहजानंदघन सादर जिन स्मरण!

(पत्रांक—२७२)

हम्पी

ॐ नमः

१३-२-६४

भक्तवर मेघराज जी,

क्या ही अच्छा होता यदि आप साहित्य में अपने अनुज को हाथ बँटाते! आपकी लेखनशैली बड़ी ही अलंकारिक है, जिसे पढ़ने वाला ही थक जाय!

कोरे मनसूबे करने से कार्य-सिद्धि नहीं हुआ करती। कार्य-सिद्धि के लिए तो कमर कस कर अथक पुरुषार्थ अनिवार्य है। आपतो ठहरे शेठ साब। गद्दी पर लेटे लेटे ही आपको मोक्ष की प्राप्ति करना है।

हाँ, यदि आत्मभान हो, तो राजगद्दी पर भी पृथ्वीचन्द्र राजा की तरह आप भी अपनी गद्दी पर कैवल्य प्राप्त कर सकते हैं। पर खाटले ही खोट है। आत्म भान की जगह देह भान का साम्राज्य चला रहे हैं और बातें बनाते हैं छूटने की। जो छूटना चाहते हैं तो कमर कसो। प्रमाद छोड़ो और महा-

वीर के साधना पथ पर महारथी बन कर चलो। हीजड़ों की सी चिल्लाहट छोड़ो। काटने से कर्म कटते हैं, कोरे बकवास से नहीं।

पघड़ी के वट्टकी तरह अपनी कुलवट्ट को संभालो। अन्यथा छूटने की आशा छोड़ दो। अस्तु.

आप, अपने पारिवारिक एवं मित्र बांधवों को हार्दिक आशीर्वाद। और काकीमां का भी। यहां के विशेष समाचार भाईजी के पत्र द्वारा अवगत करियेगा। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

सहजानन्दघन सादर जिनस्मरण।

(पत्रांक—२७३)

श्री मेघराजजी नाहटा को दिये माताजी के पत्र में—

भव्यात्मा,

मत मोहा मत खुश हो, मत नाखुश हो अच्छी-बुरी परिस्थिति में
मन शांति जो चाहे, सच्चिदानंद सिद्धि के लिए'''

हर हालत मां खुश रहो. दुर्जनो नो संग छोडो. गमे तेवी विपत्ति आवे छतां हिम्मत मां रही प्रभु भक्ति करो. प्रभु सौनुं भलुँ करशे. ॐ शान्तिः

—सहजानंद सौने धर्मलाभ

(पत्रांक २७४) हम्पी ४-३-६४

ॐ नमः

श्रीमान रिखबचन्दजी शांतिलालजी सपरिवार

सादर जयजिनेन्द्र। पत्र मिला। पढ़कर प० पू० गुरुदेव तथा मातेश्वरी को वैराग्य भाव में वृद्धि होकर उदासीनता अधिक आई। पू० गुरुदेव के शिर में दर्द होकर बुखार आया इसलिए आपके पत्र का जवाब मुझे लिखने के लिए फर्माया।

बाई शान्ति के देह त्याग से आप सभी को अत्यन्त दुःख हुआ है परन्तु यह नाशवान शरीर को इन्द्र, नागेन्द्र, चंद्र या जिनेन्द्र भी कायम नहीं रख सके। अनित्य वस्तु को कैसी कायमी कर सकते हैं इसलिए महान् पुरुषों ने ऐसा बोध दिया कि—हे भव्यात्माओ! जागो और मोह महाअरी त्यागो और अपना कारज साधो, इस असार संसार में कुछ भी सार नहीं है फिजूल इस मोह जाल में फंस कर अपना खोना है। प० पू० गुरुदेव का यही कहना है कि आप सभी खेद को छोड़ कर प्रभु भक्ति में प्रवृत्तिशील होवो, आत्मा कभी भी मरता नहीं, जन्मता नहीं उसे आग जला नहीं सकती, हवा सुखा नहीं सकती, पानी में डूबता नहीं। अनंत शक्तिमान यह आत्मा मोह ममता में फंसकर अपना सर्वस्व खो बैठता है। अनादि का हीनसत्व होकर बैठा है। इसलिए सत्पुरुषों-तीर्थंकरों का यह उपदेश है कि

हे भव्य आत्माओं आप बूझो, बूझो, सम्यक् प्रकार से बूझो ! अपने घर में जाओ और वही शांति है। आनन्द है। वहीं सच्चा सुख है, वहां पर जाने पर आधि व्याधि उपाधि की लपेट नहीं लगती मोह महाराज का जोर कुछ भी नहीं चलता।

बाई शांति ने अपने को इस मार्ग में लगाया था, कृपालु देव की भक्ति में विशेष कर लगाया था परन्तु कर्म की गति विचित्र है, कर्म के आगे उसका बस नहीं चला। परम कृपालु उसकी आत्मा को शांति प्रदान कर जिन वीतराग मार्ग का शरण प्रदान करें यही प्रार्थना है।

आप सभी को प० पू० गुरुदेव की आज्ञा है कि आप खेद न करें और धर्म का शरण लेकर अपने कार्य में लग जायें, पू० माताजी का हृदय आप जानते ही हैं उनको तो यह बात बहुत आस्ते से और सावधानी से सुनाई फिर भी उनके हार्ट पर असर हो गई और उदासीनता छा गई वो लिखवाती हैं कि सारा संसार इस मृत्यु के आगे अशरण है। इसके आगे क्या छोटा क्या बड़ा क्या बाल क्या वृद्ध क्या राजा क्या रंक क्या गरीब क्या श्रीमंत सभी को हार खानी पड़ती है। इसलिए मृत्यु आवे उसके पहले कमर कस लेवें और मृत्यु की ही मृत्यु हो जाय अधिक क्या लिखूँ। माताजी का भी यही कहना है कि आप सभी खेद को छोड़कर धर्म को स्वीकारें। अपने कार्य में लग जाओ। प० पू० गुरुदेव का स्वास्थ्य ठीक होने पर आपको पत्र लिखेंगे। आप सभी खेद को छोड़ कर प्रभु भक्ति में लग जाओ। ॐ

(पत्रांक—२७५) हम्पी

ॐ नमः ८-३-६४

भव्यात्मा श्री रीखबचन्द जी दम्पती सपरिवार,

शान्तिलाल के पत्र द्वारा शान्ति के देह विलय का समाचार मिला। जिसका प्रत्युत्तर सुखलाल के द्वारा दिया गया—मिला ही होगा।

सम्पूर्ण आत्म शुद्धि केवल मानव देह से ही शक्य है। देव दुर्लभ इस देह का उक्त कार्यसिद्धि के हुए बिना ही अकाल में ही छूट जाना यह खेद का ही कारण है अतएव शान्ति के देह छूट जाने पर आप सभी को खेद होना स्वाभाविक है किन्तु उस खेद को वैराग्य में ही बदलना हम आप सभी के लिए हित कर है। क्योंकि खेद से तो केवल अशान्ति ही अशान्ति बढ सकती है; शान्ति बाई किंवा आत्मशान्ति का मिलना शक्य नहीं अतः खेद को वैराग्य में बदल दें—यही हमारा सुझाव है। और अपनी आत्म शुद्धि के कार्य में लग जाँय, जिसके फलस्वरूप कर्मबन्ध होता हो वैसे कार्य आत्मार्थियों के लिए छोड़ने योग्य हैं। किसी को भी अविनाशी देह की प्राप्ति हुई हो तो बताइये। यह तो प्रकट मरघट की मिट्टी है जो यहाँ ही खाक में मिल जाती है जब कि आत्मा कभी भी मर सकता ही नहीं। शान्ति का आत्मा तो ज्यों का त्यों है, केवल शरीर का सम्बन्ध नहीं रहा और इस लिए रोना कोई बुद्धिमत्ता नहीं है।

अतः हे रिखवाजी! शांत रहो शांत रहो! अधिक आप जैसे समझदारों को क्या लिखना? काकीमां ने भी आप सभी को शान्त रहने की शिक्षा लिखाई है। जिसका स्वीकार हो। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

सहजानन्दघन—सादर जिनस्मरण

(पत्रांक—२७६)

ॐ नमः

हंपी ८-३-६४

भक्तवर (कोजमल जी वाफणा)

क्रमशः ३ पत्रो मल्यां, पण लेखन प्रवृत्ति शून्य जेवी थई जवा थी जवाब आपवा कठण थई पड़े छे, तेथी जवाब न मले तो दुख न लगाड़ी पत्र व्यवहार करशो. तमारी साधना-प्रवृत्ति अने त्यार बाद थाणा नी हकीकत तेमज शान्ति ना शरीर शान्त थवा ना खबर विगतवार जाण्या। बावा भोलागिरि ना पत्रो पण तेमने आपता गया. तेओ पोतानी रुचि अनुसार जे कांई करे छे तेमां कंइक संशोधन करवा नी तेमनी आंतरिक इच्छा न जणावा थी आपणे पराणे कोई ने कहेवा नी इच्छा राखी नथी, तेओ हजु अहिं छे, हजु अहिं रोकावा नी भावना देखायछे, तो आपण नी मनाईपण नथी, बाकी बीजु कई दखल आपण ने नथी। शान्ति ना देहविलय ने सांभली देह नी अनित्यता भणी ध्यान दई आपण सौए आत्म-शुद्धि कार्य मां जरा पण प्रमाद करवो घटतो नथी, जीव ने अप्रमादी राखी झटपट आत्म-सिद्धि करी लेवी घटे छे. तो पछी तमे हजु मकान अने संसारीओ नी सगाई नो मोह छोडी शा माटे कमर कसता नथी?

हे जीव प्रमाद छोडी जाग्रत था! जाग्रत था! नहिं तो……

तमारा जेवा समजदार ने अधिक शुं लखुं? काकीमां ए घणाज वात्सल्य थी आशीर्वाद लखाव्या छे. ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन सादर सहजात्म स्मरण!

(पत्रांक—२७७)

ॐ नमः

हम्पी
१३-५-६४

(कोजमल जी वाफणा, आहोर)

चंचल द्वारा पत्र अपाव्युं हतुं। माराथी पत्र नथी लखातः, माटे रजा मां राजी रहो। शांति नी कल्पना छोडो. अेक कृपालु ने भजो, प्रत्यक्ष सत्संग करो. पत्र ८५० नहिं जलवाय। माताजी ए आशीष कह्या छे। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन सहजात्म स्मरण!

(पत्रांक—२७८)

ॐ नमः

१३-५-१९६४

(अगरचन्द जी नाहटा)

आत्मन् !

आशुरामजी हुबली गया हता, तेथी तमने न मली शक्या. तेमणे पीजीदुकानो थी मूर्त्तिओ मेलवी ने अने कईक पोता ना पासे नी पण हती. ते अहिं मूकी गया हता ते बधी बेल्लारीवाला अमीचन्दजी ने में सौंपी तेओए पारसल थी तमारे त्यां मोकली हशे. ते मल्ये थी अहिं पण सूचना जणावजो अने आशुरामजी नुं बिल पतावी लेजो।

भाईजी नुं गई सांजे पत्र हतुं. आखातीज याद अन्यत्र जवा इच्छे छे. काकीमाँए आप सौ ने आशीष कह्या छे चंचले प्रणाम. तेम मेघराजजी साथ नेपाल मासी याद करनाराओ ने धर्मलाभ। ॐ शांतिः

सहजानन्दघन सादर जिनस्मरण।

(पत्रांक—२७९)

हम्पी

ॐ नमः

३१-५-६४

अनन्य शरणना आपनार श्रीमद्राजचन्द्रदेव ने परमभक्ति अनंतानंत नमस्कार हो!

मुमुक्षु बन्धु श्री धर्मचंदजी वखतमलजी आदि.

गई सांजे आपनुं पत्र मल्युं. आपना पिताश्री नुं स्वाभाविक आराधना क्रम दरम्यान जागृति पूर्वक देह छूटी गया नुं वांचो, देह त्याग मणी वैराग्य वृद्धि अने आत्म जागृति मणी प्रसन्नता वेदाई। वली मुमुक्षु धर्मे शोक त्यागी मृत्यु महोत्सव मनाववा ना आपना निर्णय प्रत्ये धन्यवाद हृदय अर्प्युं. साचा पुरुष नां शरणागतनुं अपमृत्यु तो संभवेज नहिं; माटे जे थयुं ते प्रशंसा पात्र थयुं. आप सौ बन्धुओ, आपना जननी अने भगिनी आदि सौ एज मार्ग आश्रय रही मात्र कृपालु देवनु शरण अने स्मरण अखण्ड पणे साधी आत्म उज्ज्वलता पामो एज आ आत्माना आप सौ प्रत्ये अंतरना आशीष छे.

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

सहजानंदघन

इसी पत्र में—

सादर जयसद्गुरु वंदन सह सहजात्म स्मरण

मुमुक्षु वैद्य कोजमलजी

आपका पत्र भी कल शाम को मिला। हाल हाल हुये। प्रमाद त्यागना यद्यपि कठिन है, फिर भी उसे छोड़े बिना छुटकारा भी तो नहीं है। देह की अनित्यता भी जागरूक रहने का उपदेश दे रही है। अतः अप्रमादी हो, परम कृपालु की भक्ति में लीन रहो, यही चेतावनीपूर्वक विराम पाता हूँ।

सादर सहजात्मस्मरण!

नोट—यह पत्र मुं. धर्मचंदजी फूलचन्दजी बन्दा आहोर वालों पर आया था।

(पत्रांक—२८०) हम्पी

ॐ नमः २७-६-६४

सद् गुणानुरागी मुमुक्षु श्री देवीलालजी,

कुछ दिन पूर्व आपका पत्र मिला। आपकी प्रेम लक्षणा भक्ति की बराबर अनुमोदन करता हूँ।

सत् विपयक विरह-वेदना एक अद्भुत और सरलतम साधन है। वह जिस हृदय में उदित होती है उसे निवारण कर देती है। अंतरंग आवरणों को दूर करने का इसके बरोबर और कोइ सुगम साधन सुना नहीं है। अतः आप धन्य है क्योंकि विरहाग्नि ने आपके ऊपर अपार कृपाकर दी है।

यहाँ आये आपको एवं आपकी मण्डली को काफी समय बीत चुका यदि फुरसद् मिल सकती हो, तो इस भूमि को भी अपने आनन्दाश्रु से प्लावित होने का चान्स दें। धनराजजी साब तो काफी व्यस्त दिखते हैं। भँवरलालजी साब धींग ने ओलीजी लगभग यहाँ पत्र दिया था। वर्षी तपपारण के उपलक्ष में कुछ साहित्य प्रभावना के हेतु यहाँ लिखा था। मगर वैसा कोई हिन्दी साहित्य यहाँ पर नहीं था, अन्यत्र क्या और कैसे मिल सकता है ? पता नहीं अतः भक्ति-कर्त्तव्य सेम्पल भेजा था, बाद में कोई उनका पत्र नहीं।

हम यहाँ सभी अपने में मस्त हैं। माताजी ने आपको हार्दिक आशीर्वाद लिखाये हैं। और सुखलालजी ने सादर जयजिनेन्द्र।

आश्रम में निःशुल्क चौका चल ही रहा है। रसोईघर भी बड़ा बन गया है और कुछ नये रूम भी बने हैं सुविधा बढती जा रही है। अतः आगन्तुकोंकी व्यवस्था की कमी दूर होती जा रही है।

आप जब भी चाहें खुशी से आवें और दूसरे मुमुक्षुओं को भी साथ लावें। सभी भावुकों को सादर धर्म-लाभ कहिये। ॐ शांतिः ॐ शांतिः ॐ शांतिः

सहजानंदघन

अगणित आशीर्वाद सह सहजात्मस्मरण।

(पत्रांक २८१) हम्पी १०-६-६४

ॐ नमः

भक्तवर भँवरलालजी सपरिवार

पत्र मल्युं. नवीन समाचार सांभली खुशी थयो-प्राप्त ऐतिहासिक सामग्री हिन्दी अनुवादमां मूल सहित छपावजो. एवी ऐतिहासिक सामग्री पंजाब ना भंडारो मां पण हशे. तेमज थलीमां तेरापंथिओ ना भंडार मां पण हशे. परन्तु खोज करनारा जोइए. गच्छभेद ना कारणे केटलीय सामग्री लोकोए छुपावेली हशे. अस्तु।

शुभराजजी तथा मेघराजजी ना गई सांजे पत्रो हवा. सजानची साव नो निधन अगरचन्द्रजीए जणाव्यो हतो. एग्जिमा मां आठ आना सुधारो छे. गदग ना एक देशी वैद्यनो वाह्योपचार चालू छे. जसवंतराजजी ने आशीर्वाद जणावजो, काम पडये तेमने याद करशुं.

पट्टा विषयक बहुत समय थी प्रयत्न न्होतुं. पण हवे प्रयत्न चालू छे. जेनुं परिणाम थोड़ा दिवस मां आववुं जोइए. पुरातत्ववाला तो पोता ना प्रयत्न मां राचेला छे. आश्रम कार्य तो ठीक चाली रह्युं छे. सौ सत्संगीओ आनंद मां छे. काकीया नी तबियत ठीक-ठीक चाले छे. चंचल १३-६ ना बपोर बाद मुंबई सिधारशे. साथे जीवणभाई दम्पती, चन्दनमलजी दम्पती, बेल्लारी अने कम्पली ना पण ४-६ जणा जशे सौनो सहेजे सुयोग थयो छे (देश जवानो).

आप सौ स्वस्थ अने प्रसन्न हशो. धर्मध्यान ठीक चालतुं हशे? धूपियाजीना समाचार जाण्या. तत्व-विज्ञान विषयक जो नक्की थाय तो अहमदावाद थी मंगावी लेजो. में पत्र द्वारा सूचना आपेली छे.

श्रीधन्नुलालजी, श्री धूपियाजी, श्री बडेरजी, श्री बदलियाजी आदि बधा भावुको ने फोन थी आशीष जणावजो.

कान्ती भाई ने पण आशीष जणावजो. हाल मां तेमनुं कोई पत्र नथी. तेम मारा थी पण पत्र व्यवहार बहु ओछो थाय छे.

शुभराजजी ने बीकानेर तेडाव्या छे. त्यां न गया तो हंपि थई ने कलकत्ते जवानो तेमनो ख्याल छे. ते यथासमय जशे।

१ ताड़पत्रीय कन्नड़ ग्रंथ मने भेट मलेलुं ते अगरचन्दजी ने सौंप्युं छे. बीजा ग्रंथो मलवाना छे. ते बधा अहिं भण्डार रूपे रहेशे. ॐ शांतिः

सहजानन्दघन

सौने हार्दिक आशीष पूर्वक सादर जिन स्मरण. काकीबा ना घणा आशीष.

(पत्रांक—२८२) हंपी

ॐ नमः १५-६-६४

(अगरचन्दजी नाहटा, बीकानेर)

पत्र मल्युं. अमीचन्दजी बेल्लारी चाल्या गया., तेमणे हजु अहिं मूर्त्तिओ पाछी मोकली नथी. आसुरामजी ने केटलीय वार विल विशे सूचना करी पण तेओ मस्त छे. पीछे देखा जायगा एज जवाब आपे छे. तेओ ...... मां मारवाड़ जाय छे.

हवेथी ए विषयमां तेमनाथी आप सीधो पत्र व्यवहार करजो. मारो काम तमारा परिचय करावा पूरतो हतो, ते सधायो. बाकी नी जंजाल मारा थी नहीं थाय बन्ने ठेकाणे सीधो पत्र व्यवहार करजो.

मेघराज जी आजकाल सुं करे छे ? प सेठ साहेब सपरिवार ने आशीष जणावजो तेमना माताजी ने आराधना करावता हशेज, भाईजी नोकागल हतो. बीकानेर नहिं आवशे तो अहिं थई कलकत्ते जवा धारे छे. मेघराज जी नो पत्र हतो तेनी प्हौंच तेमने जणावजो.

दीपचन्दजी नो पत्र हतो, तेमने प्हौंच नीं सूचना जणावजो अने विना कारणे अहिं थी वधारे पत्र नहीं लखी शकाय, ते पण जणावजो.

याद करनाराओ सौने धर्मलाभ काकी मा ए आप सौ ने धर्मस्नेह जणाव्यो छे. चंचल आज प्रभाते मुंबई प्होंची गई. ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन—सादर जिन स्मरण।

(पत्रांक—२८३)

ॐ नमः

हम्पी २६-६-६४

ॐ परम कृपालु देवायः नमः

भक्तवर, (कोजमल जी बाफना, आहोर)

पत्र मिला। इसब में १० आना आराम है। देशी अनाड़ी वैद्य का प्रयोग अनुकूल हुआ है। अतः वह चालू है। हीरजीभाई यहीं हैं। साधन में खूब दत्तचित्त हैं अतः अपने बेटे की शादी में भी नहीं गये। खेंगारभाई खुश हैं। हेमचन्दभाई दुतल्ला मकान बना रहे हैं। पक्ष भर में तैयार हो जायगा। दलीचन्दजी ने खात मूहुर्त्त किया है। दूसरे रूमों की भी तैयारी हो रही है। कूप को तो अब तक छेड़ा नहीं गया। दोनों कुण्डों में जल राशि काफी है। जशराजजी सपरिवार यहीं हैं। अब गंटूर जायेंगे। जीवन भाई दम्पति बम्बई गये। फिर पर्यूषण में आवेंगे। दूसरे सत्संगी भी कुछ संख्या में हैं। आना जाना तो लगा रहता है। सत्संग बराबर चल रहा है।

तुम्हारी तबियत क्यों गड़बड़ कर रही है ? अभी यहां का वातावरण बहुत अच्छा है। आजाओ ! बेलारी वाले सोनमलजी दम्पती, बुढ़िया मां, अमीचन्दजी, घेवरजी, केशरीमलजी आदि भाई बहन एवं कंपली मंडली के कुछ सभ्य यहाँ हैं। याद किया है। बंबई के कुछ हैं। माताजी स्वस्थ हैं। बहुत से आशीष भिजवा रहे हैं। वहाँ आश्रमवासी एवं मास्टर साहब तथा रिखबचन्दजी सपरिवार बाफना दलीचन्दजी आदि सभी को धर्म स्नेह। भक्तिमां प्रमाद करशो नहीं। ॐ शान्तिः

सहजानंदघन सादर कृपालु ना शरण पूर्वक सहजात्म स्मरण

साहिबचन्दजी को धर्मलाभ !

(पत्रांक—२८४)

हम्पी

ॐ नमः

८-६-६४

(कोजमलजी बाफणा—आहोर)

बधाय पत्रो मल्यां। परम कृपालु देवनुं शरणुं लीधा पछी कोई दुखी होय नहिं, छतां जो कोई

दुखी देखातो होयतो ते साचो शरणागत न गणाय, बाह्य दुख कोरी कल्पना ज छे. ते तेनो शरणागत छोड़ी दे छे. माटे तमे पची कल्पना छोड़ी मंत्र-धाराने अखण्ड करो. मनीराम ना भरमाया भरमावो नहिं अेम करशो तो आनंदघन बनी जशो. बेलारी थी घेवरजी हजु आव्या नथी. तमारी भेट मल्या पछी ते दुखीया भक्तों नी भीड़ ओछी करवा काकी याने सोंपारो. आश्रम मांनहिं वपराय पण आश्रम नी उपयोगिता दुखीयाओ ने दिलासो आपवा मां समायली छे तेथी ते प्रमाणे थशे एज शांति नो उपायछे. घेवरचंदजी साथे तमारी मोकलेली वस्तु मलीगई छे. काकीथाए घणा ज उल्लास थी आशीष लखाव्या छे. संचल १३-६-६४ ना मुंबईज छे. सुखभाई आनंद मां छे, भक्ति सत्संग ठीक चाले छे.

'त्यां फूलजी ना श्रेयार्थ जे उत्सव चालु हतो ते पूर्ण थयो हशे. सौने जय सद्गुरु वंदन जणावजो। ॐ शान्तिः

सहजानंदघन सहजात्म स्मरण

रिखवाजी सपरिवार ने पण आशीष।

(पत्रांक—२८५)

ॐ नमः

हम्पी ३-७-६४

भव्यात्मा श्री मेघराजजी साथ सपरिवार

आपका पारिवारिक पत्र मिला. हाल ज्ञात हुए। माँ सा की आखीर की स्थिति दयनीय है। जहाँ तक बन सके धर्म भावना में दृढ करना यही फर्ज है। बाकी तो ग्रहण हो न हो उस ओर नहीं देखना। अपने भी दिन नजदीक आ रहे हैं अतः खुद के लिए भी प्रमाद करना पाप है।

आपके सारे परिवार को प्रत्येक को नाम ले-लेकर हमारा और माताजी का आशीर्वाद सुनाइये और आप भी स्वीकार कीजिए। माताजी प्रसन्न हैं, स्वास्थ्य भी ठीका ठीक चलता है।

हमें केवल पैरों में चारआनी कसर है शेष आराम हो चुका है। और कोई तकलीफ नहीं है।

धर्माराधन ठीक चल रहा है, वहाँ आप भी करें—यही सभी को भलामण। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन—सादर जिनास्मरण।

(पत्रांक—२८६)

ॐ नमः

हम्पी ३-७-६४

भक्तवर श्री शुभराज जी साथ परिवार

आपके सभी पत्र मिले। सभी हाल पढ़े और विस्मरण कर दिये। मकड़ी की जालसी इस संसार की जाल में ठीक फँसे हो। क्या मजा आता है? महापुरुष ने भी कुछ नश्वरता का उपदेश सुनाया होगा? आसाम की परिस्थिति तो हर प्रकार चिन्तनीय हो गई होगी! याद रे मोहजाल!!

इधर माताजी स्वस्थसी एवं प्रसन्न है। आप सभी और परिचित वर्ग सभी को यादी देकर आशीष लिखाते हैं। अपनी भाभीजी को खूब याद करती हैं। अगरचन्दजी साव परिवार प्रसन्न होंगे? धर्मलाभ सुनाया जाय। चातुर्मास कहां करना है? ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन—सादर जिनस्मरण।

(पत्रांक—२८७)

हंपी ७-७-६४

ॐ नमः

भक्तवर श्री शान्तिलाल, (रिखबचन्द रतनाजी, आहोर)

पत्र मिला। बाई का कोई भी पत्र हमने जमा नहीं किया। सभी परठ दिये गए हैं। जो होनहार था, हो गया। अब तो आर्त्तध्यान से शांति वापस लौटने वाली है नहीं। और व्यर्थ का कर्मबंध बढ जायगा। इससे अच्छा है कि धर्म साधना में मन मोड़ दिया जाय। वहां चित्त नहीं लगता हो तो यहां ही तुम्हारे माता-पिताजी को कुछ दिन के लिए भेज दो। सत्संग के बल मिलने पर चित्त में शांति मिलेगी। माताजी ने भी आप सभी को आशीर्वाद के साथ यही लिखाया है। कोजमलजी को भी यहां आने का भाव है। अतः सभी मिलकर आइए। ॐ शान्तिः

सहजानंदघन— सहजात्म स्मरण।

(पत्रांक—२८८)

हंपी २६-६-६४

ॐ नमः

भक्तवर श्री शुभराजजी, मेघराजजी, अगरचन्दजी आदि सपरिवार

पत्र मल्युं. एक्जिमा मां हजु थोड़ी कसर छे. चालु दवा थी फायदो छे. छतां काम पड़शे तो तमारी दवा वापरी जोइशुं. गेस नी दवा भले मोकली देजो। अने तमे दम्पती पजूषण पहेलां अहिं आवी जजो. जंजाल तो आम ने आम चाल्या करवानी छे. आपणे तेथी मुक्त थवा धारीए तो तेम बने. नहिं तो "क्षण लाखणो रे जाय" अधिकशुं लखुं ?

दीपचन्द जी सेठिया ना बे पत्रो मल्यां. तेमने आशीर्वाद जणावजो. मेघराज जी नी वड़ी मां केम छे? श्राविकाजी नी तबियत ठीक हशे. काकीमाए आप बधाय भक्तो ने घणा उमलका थी आशीष कह्या छे, सत्संगीओए पण याद कर्या छे. सुखलाल मजा मां छे. क्यारे आववानो छे ते लखजो। धर्मध्यान मां वृद्धि करजो. ॐ शांतिः

सहजानन्दघन—धर्मस्नेह पूर्वक जिन स्मरण।

(पत्रांक—२८६)

ॐ नमः

हंपी २६-७-६४

भक्तवर, (रांकाजी)

पत्र मिला। आपकी पावन भावना सदैव वृद्धिगत रहे और निकट में ही भवपार हों—यही हमारा हार्दिक आशीर्वाद है।

आप, भँवरलालजी साहब, धनराज जी आदि खुशी से आईये। व्यवस्था में वृद्धि होती जा रही है। अतः अधिक संख्या में आनेपर भी हरकत नहीं होगी। आशीबाई, चान्दाबाई को भी साथ में लाइये। सभी भव्य आत्माओं को हार्दिक धर्मलाभ कहिये।

अन्तर्लक्ष की सिद्धि ही आत्मसिद्धि की जननी है और उसकी पुष्टी के लिये ही अनिवार्य है सत्संग। अतः सत्संग में प्रमाद क्षन्तव्य नहीं है। काकी माँ. सुखबाई ने भी आपको हार्दिक धर्मस्नेह लिखवाया है ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन—सादर जिन स्मरण।

(पत्रांक—२६०)

ॐ नमः

हंपी २६-७-६४

भक्तवर (कोजमलजी बापणा)

बे पत्रो मल्यां, तमारी प्रसन्नता जाणी संतोष. ते प्रसन्नता ने टकावी राखजो. भा० सुदी मां नहीं पण यदि मां ज आवो तो पर्यूषण आराधना लक्ष पूर्वक थाय. रिखबचन्दजी हजु आव्या नथी. तेमने पण पर्व पर्यूषण मां अहिं रहेवुं उचित छे तेथी एमना मन नुं घणुं समाधान थाय. माताजी घणाज प्रसन्न छे शरीर पण ठीक छे. तमने अगणित आशीर्वाद लखाव्या छे.

साहिबचन्दजी विगेरे ने हार्दिक धर्मस्नेह !

सहजानन्दघन धर्मस्नेह पूर्वक सहजात्म स्मरण।

(पत्रांक—२६१)

ॐ नमः

हम्पी ३-८-६४

भक्तवर सूरजमल (रिखबचंद रतनाजी संघी, आहोर)

पत्र मिला। हाल ज्ञात हुए। शांतिबाई के वियोग द्वारा संसार की असारता की प्रत्यक्ष शिक्षा लेकर शीघ्रातिशीघ्र आत्म-साधन में लग जाना—यही आपके माता पिताजी का कर्त्तव्य है। यदि थोड़ी फुरसत लेकर यहां सत्संग में कुछ दिन रहें तो इनका खेद दूर किया जा सकता है। अतः बिना संकोच भिजवा दो। पर्यूषण में अब के अद्भुत आनन्द आवेगा। साथ में कोजमलजी को भी भेज दो। माताजी

आपको—सभी को हार्दिक आशीर्वाद लिखा रही हैं। धर्म ध्यान में अभिवृद्धि हो। कृपालु देव का शरण और स्मरण हरदम स्थायी रखो, बहुत लाभ होगा। ॐ शान्तिः

सहजानंदघन—सादर सहजात्मस्मरण।

(पत्रांक— २९२) हंपी

ॐ नमः ७-८-६४

भक्तवर (कोजमल जी)

पत्र एवं उभय औषधि बाबूलालजी द्वारा प्राप्त हुये। परम कृपालु की कृपा से आनंद ही आनंद है। और प्रवचन में भी आनंदघन चौवीसी चल रही है। अमीचन्द जी बेङ्गारी हैं। हमारे पैरों में काफी आराम है। माताजी का स्वास्थ्य भी ठीक है। माताजी ने अनंत प्रेम से आशीर्वाद लिखाया है। तपस्विनी साध्वीजी को सुखशाता कहें।

साहिबचन्दजी को भी आशीष कहें। और मंत्र रटन का लक्ष करावें। मंत्र स्मरण किंवा स्वाध्याय में मन लगाना ही धरमध्यान है। अतः स्वाध्याय ही अच्छा हो।

हीरजी भाई, खेंगार भाई, सुखलाल आदि सभी का जय सद्गुरु वंदन! ॐ शान्तिः शांतिः

सहजानन्दघन —हार्दिक आशीर्वाद!

भव्यात्मा रीखबचन्द जी सपरिवार,

पत्र मिला। हाल ज्ञात हुए। धर्मध्यान में मन लगाना ही दुखों से मुक्त होने का सर्वोत्तम उपाय है। उसका आधार है सत्संग। अतः अवकाश लेकर जरूर पधारें। माताजी ने आप घरभर वालों को बहुत बहुत याद किया है और आशीष लिखवाया है। ॐ शांतिः

सहजानन्दघन—सादर सहजात्म स्मरण।

(पत्रांक—२९३) हंपी

ॐ नमः १३-८-६४

सद्गुणानुरागी साक्षरवर्य श्री अगरचन्दजी साब सपरिवार

पत्र मल्युं आशुराम जी हजु मारवाड़ छे. तेना एड्रेस नी मने खबर नथी. अमीचन्दजी बेङ्गारी छे. तेओ अहिं मूर्त्तिओ लाव्या नथी, ए विषे तमे त्यांज पत्र व्यवहार करजो. अहिं ताड़पत्रीय ३६ ग्रंथ भेट मल्या छे. अने ते आ आश्रम मां ज रहे ए सरते. ३७ मुं चौदराजलोक नुं विस्तृत दिग्दर्शन करावतुं चित्रमय कपड़ा उपर नुं आलेखित ग्रन्थ छे. बधा कन्नड़ छे. ते सिवाय थोड़ाक कागल उपर लखेला जूना कन्नड़ ग्रंथो छे. बधा अहिंज रहेशे.

प्रवचन मां आनन्दघन चौवीसी चालू छे. १४ स्तवन पूर्ण थवा आव्या. हमणां कंइक विशेष सूक्ष्म भावो स्फुरे छे. जेथी आगलुं लखाण अधूरुं लागे छे. ज्ञानसारजीए ३७ वर्ष विचारतां लगाड्या, तेम

मने मोको नथी मल्यो. माटे आवा काम उतावल ना न होय. वमारी जूनी प्रति मारी पासे छे तेनो उतारो करी ते प्रति तमने सोंपी दईश, हवे ते उतारवानी कोशीश करीस. भाईजो शुभराजजी मेघराजजी आदि सपरिवार सौ स्वस्थ अने प्रसन्न हशो. बधाने मारा हार्दिक धर्मलाभ अने काकीमाँ ना आशीर्वाद जणावजो. काकीमाँ नी तबियत सारी रहे छे.

पहेलां में भाईजी ने वात करेली के अभय जैन ग्रन्थालय मां जे साहित्य नी खप करतां अधिक प्रतिओ होय ते-ते मुद्रित प्रतिओ नुं अहिं ज्ञानभंडार करीये तो कंइक मारुं साहित्य क्षेत्र मां कंइक प्रेम जागे. तेमणे ते वात मंजूर करी हती. तेम आपे पण हा स्वीकारी हती. ए विषे भाईजी हम तैयार करावे त्यार बाद साहित्य संग्रह करीए. केमके तेमनी तेवी इच्छा हती. भाईजी ने फुरसद मले त्यारे थाय. बड़ीमांसा नी सेवा थी निवृत्त थया पछी तेमने अहिं मोकली आपजो. हवे एमने पण उन्नति करवी छे. आयु-घटतुं जायं छे. अधिक शुं लखुं ?

सहजानन्दघन—सादर जिनस्मरण।

(पत्रांक—२६४) हंपी

ॐ नमः १-६-६४

भक्तवर शुभराजजी बन्धुत्रय सपरिवार

आपनो घणा समय थी पत्र नथी, अने तेथी काकीमाँ मने वारे घड़ीए तंत कर्या करे छे के भाईजी ने कागल लखो-भाईजी ने कागल लखो में एक कागल पहेलां मोकल्यो ज हतो पण तेनो जवाब हजुसुधी नथी आव्यो। आजे दोपचंदजी सेठीया ना पत्र थी आपना समाचार नाममात्र जाण्या, शी फिकर मां छो ? बड़ीमां केम छे ? अहिं क्यारे आववाना छो ? अगरचन्दजी ने कहेजो के आसूरामजी मारवाड़थी आवी गया छे. पण कुटुम्ब ना स्वास्थ्य मां गड़बड़ छे. तेमनी मूर्तिओ बेल्लारी थी अहिं मगावी लोधी छे. तमे आवसो त्यारे आपशुं. पार्सल थी नहिं मोकलसे. अगरचन्दजी साब ने बधारे खर्च नथी करायवो.

काकीबाए आप सौ ने हार्दिक आशीर्वाद जणाव्या छे. प्रवचन मां आनन्दघन चौवीसी नु १६ मुं स्तवन चाले छे. धर्मध्यान मां वृद्धि करजो, सेठियाजी ने आशीष कहेजो.

सहजानन्दघन - धर्मलाभ।

(पत्रांक—२६५) हंपी

ॐ नमः १७-६-६४

भक्तवर श्री भँवरलालजी, हरखचन्द जी, पारसमलजी, विमलजी, पद्मचन्द आदि सपरिवार

खामणा पत्र मल्युं तथा प्रकारे अहिं अमे सौए लगभग ४०० जणा नी साथे सां० खामणा काले सर्व जीवो ने खमावतां आप सौ ने पण खमावेल छे. अने क्षमा आपी छे-ते स्वीकारजो.

ट्रस्टीओए सरकार पासे थी जेटली जमीन सरकार पासे थी मागी हती तेनो फ्री पट्टो मळी गयो छे. बाकी नी जमीन जागीरदारनी छे. तेमणे तो जणाव्युं छे से······तैयार करावो—अमो करवा तैयारज छीए ते हवे थशे. एक सत्संग भवन पण नक्की थयुं छे तेना नक्शा वणे छे.

श्री शुभराजजी तथा मेघराजजी ना खा० पत्र हता. त्यां ना समाचार जाण्यां जवाब आपुं छुं नोकरो नो विश्वास करवानो आ जमानो नथी. कइक तो पोतानी गफलत नड़े छे. भावीभाव.

काकीमां स्वस्थ अने प्रसन्न छे. तेमणे आप सौने सां० खामणा जणाव्या छे. सुखभाईए पण, ते स्वीकारजो ! रत्नूबाबू हजू रहेशे. तेमणे तथा आश्रमवासी सौ ना खामणा स्वीकारजो।

त्यां श्री धूपियाजी, श्री धनूलाल जी, वड़ेर जी, कांतिभाई जे जे याद करता होय ते सौ ने आ सां० खामणा जणावजो। चंचल मुंबई ज छे, बराबर अध्ययन करे छे.

दादीजी, मुलचन्दजी नाहटा, खजानचीजी वगेरे गया. आपणे पण तैयार रहेवुं. आ जंजाल मां रही जंजाल रहित—साधवो एज कर्त्तव्य छे।

पजूषण वत् आजे पण भीड़ छे. पुनम सुधी रहेशे.

धूपियाजी ने कहेजो के हजु जागीरदार नो पट्टो मेलववो बाकी छे. त्यां लगी बोर्ड विषयक कांइ गड़बड़ छोटेलालजी न करे ते ध्यान में राखजो. ते पती गया पछी हुँ लखीश त्यारे करजो. छोटेलालजी जी नु अेड्रेस पण मने लखो जणावजो, वधाने फोन थी समाचार आपजो. धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो—

सहजानन्दघन—खामणा हार्दिक धर्मलाभ।

(पत्रांक—२६६) हम्पी

ॐ नमः १६-६-६४

भक्तवर शुभराजजी सपरिवार

आपका साँ० खामणा पत्र मिला। तथैव काकीमाँ, सुखभाई और आश्रम वासी हम सभो ने भी आप सभी को हार्दिक खमाया है और क्षमा दी है, स्वीकृत हो।

आपको बहुत समय पहले हमने दो पत्र दिए थे पर आपका कोई जवाब नही था, फिर सुखलाल के उपर और अंतिम खामणा पत्र हमें मिले हैं। फुरसद भी कम रहा करती है अब तक भीड़ है। तपस्वी आत्माओं को हमारी तरफ से हार्दिक धर्मस्नेहपूर्वक सुख शाता कहियेगा !

आपकी धर्मपत्नी को भी हम सभीका खामणा कहियेगा ! एवं परिचित सभी को भी। धर्मध्यान में वृद्धि हो। सभी को धर्मलाभ सह खामणा।

सहजानन्दघन—

ट्रस्टीयों ने आश्रम के लिए सरकार से जितनी जमीन की मांग की थी, फ्री पट्टे मिल गई है।

एक सत्संग भवन बनाने के लिए कुछ व्यक्ति तैयार हो गए हैं। दक्षिण दिशा के टीले के ऊपर बनाना तय हुआ है। ७०।३० का हाल चारों और १० का बरामदा सब मिलकर छत १००।५० होगी।

थान कम आ रहे हैं। अच्छा हो कि आपकी हाजरी में उक्त काम हो। हम सभी का स्वास्थ्य अच्छा है। आप सभी का भी हो—आशीष है।

भँवरलाल कोठारी तथा मूलचंदजी नाहटा एवं खजानची साव के परिवार को भी हमारी तरफ से आश्वासन एवं सां० खामणा कहिये। काकीमां का भी।

भाईजी तथा भाभीजी! आपनी साथे भवोभवना खामणा करुं छुं

लि० काकीमां ना खामणा।

(पत्रांक—२६७)

ॐ नमः

हम्पी २०-६-६४

भव्यवर, (श्री देवीलाल रांका)

क्रमशः दोनों पत्र मिले। यहाँ ४०० जन संख्या के साथ खामणा के अवसर में सभी जीवों को हम सभी खमाते हुए आप सभी को भी खमाया है और क्षमा दी है स्वीकृत रहे। काकीमां ने बहुत खामणा पूर्वक आशीर्वाद लिखाये हैं। महात्माजी ने चांदबाई ने पत्र दिया है।

यहाँ चांदमलजी साव हीरालालजी साव आदि आपका सभी मंडली को हार्दिक खामणा कहियेगा। हीरालालजी साव का भी खामणा पत्र मिला प्रत्युत्तर इसी में दिया हुआ स्वीकृत रहे। धर्म स्नेह में अभिवृद्धि हो।

सहजानंदघन खामणापूर्वक अगणित आशीर्वाद :

(पत्रांक—२६८)

ॐ नमः

११-१०-६४

भव्यवर सूरजमल, (S/o रिखबचंद रतनाजी संघी, आहोर)

था रो कागद पूगो। अठे कृपालु देवरी कृपा सुं आनन्द मंगल है। आप सर्वां रे होवो थांरा माताजी-पिताजी भाई बहिनां सघळां ने मारा और माताजी रा घणा-घणा धर्मस्नेह सुं आशीर्वाद। थे सघळा अठे कद आवोला ? रेवण-री-जीमण री सघली सुविधा अच्छी है कोजमलजी मजे में है, थां सघळा ने याद कीधा है। प्रभु भक्ति सूत्र करजो। ॐ शांतिः

सहजानन्दघन आशीर्वाद

(पत्रांक—२६९)

ॐ नमः

हम्पी

२५-१०-६४

"मंत्र तंत्र औषध नहीं, जेथी पाप पलाय"

बाह्य परिस्थिति गमे तेवी होय छतां आ जीव त्रिविध कर्म थी व्यतिरेक केवल ज्ञायक सत्ता मात्र

स्वात्म भानपूर्वक समत्व श्रेणी ने सतत टकावी राखे तो अनंता भव-बंधन कापी आ देहे आ क्षेत्रे एकावतारी-पद संप्राप्त करी शके छे. एवो दृढ निश्चय अनुभव पूर्वक आ आत्मा मां वर्त्ते छे. चाहे दुनिया माने के नहि माने.

तमे पण बीजी कल्पना छोडी कमर कसो. ना कहो मां. ना हिम्मत थाओ मा. देह समुदाय के गच्छादिनी चिंता मूको. कारण के आपणे ठेकेदार नथी.

जे लफरुं छूटो गयुं छे तेने पुनः गले लगाडशो नहिं, तमारा काम नु नथी. धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि हो ।

भावकजी नी माजी तथा चाँदबाई आदि प्रसन्न छे. वंदन जणावे छे. ॐ आनंद आनंद आनंद।

सहजानंदघन सादर आत्मस्मरण

प्र० साध्वीजी श्री विचक्षणश्रीजी
श्वेताम्बर जैन उपाश्रय, मोरसली गली, इन्दोर

(पत्रांक—३००)

हंपी १-११-६६

ॐ नमः

भक्तवर्य (रांकाजी)

पत्र मल्यु. चपलोत अने चोपड़ाजी स्पेशल बस द्वारा फरता-फरता क्यां सुधी अहिं आवशे ?

आनन्दघन चौवीसी विवेचन पुर्ण करी त्रणेक दहाड़ा थी देवचन्द्र चौवीसी नु स्वाध्याय चालु छे. आवती काल थी त्रण दिवस अखण्ड धुन चालशे. थोड़ाक मुमुक्षुओ आवी गया छे. बाकी थोड़ाक आवशे.

आ देह तथा काकीबा ना देहे स्वस्थता छे आप सौने पण हो—ए आशीर्वाद छे वृद्धिचंदजी नी वृत्तियां, खान-पान गृद्धि तथा परिग्रह संग्रह अधिक जणाया. पोतानां आसन ते पण साफ न करे तो बीजो स्वच्छता काजा आदि नी पण क्यां थी थाय ? पात्रता नो अभाव छे. व्हार देखवे निस्पृह जणाय पण अंतरमा तृष्णा. ते केम तरे ?

चांद भाई प्रसन्न छे. बोरड़ीवाला हीराचन्दजी अहिं छे साध्वीजी श्री विचक्षणश्रीजी नो...... ....साध्वी विषयक पत्र हतो. उचित उत्तर आपी दीधो छे. आ वर्षे धनराजजी नो खामणा पत्र पण नथी. चांदमलजी, हीरालालजी आदि मंडली ने अगणित आशीर्वाद. अंतलेक्ष ने अखंड करवा खूब प्रयत्न करो अने तेनी सफलता मलो एज अंतर ना आशीष । ॐ शांतिः

सहजानंदघन सादर जिनस्मरण सह आशीर्वाद.

(पत्रांक—३०१)
ॐ नमः

हंपी २२-११-६४

भक्तवर्य (शुभराजजी नाहटा)

पत्र मिला। पूनम की भीड़ थी, अब कम हुई। सप्ताह से इस शरीर में कफ की शिकायत बढ़ी थी, अब कुछ कम है। माताजी के भी कण्ठ अवरोध-सा था, सुधारा है। भक्तों का आना-जाना चालू है। इधर पब्लिक में अन्न समस्या की भी गड़बड़ी थी और है अतः चोरी का आश्रय बढ़ा है। इन सभी कारणों से हमारा अन्यत्र गमन शक्य नहीं है।

आप सभी भक्तों की भावना हमारे प्रति उदार है और यही हमारा सौभाग्य है। हमारे आने न आने से आप हर्ष-शोक न करें। प्रसन्न ही रहें।

आप पालीताणा कब जा रहे हैं? यहाँ कब तक आ सकेंगे? लिखें। अगरचन्द सा० ने मूर्त्तियों का चार्ज सेठियाजी को दे दिया होगा।

सभी बन्धु परिवार, मगनबाई और उनकी भजाईजी आदि सभी को हमारा तथा माताजी का हार्दिक आशीर्वाद, धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो। ॐ

सहजानंदघन धर्मलाभ !

(पत्रांक—३०२)
ॐ नमः

हम्पी १४-१२-६४

भक्तवर (कोजमलजी बाफणा)

मनीराम केम छे! प्रभु भक्तिमां केवीक प्रगति छे? भूताजी ठीक हशे. अहिं तो कृपालु नी पूर्ण महेर छे. माताजी प्रसन्न छे. अगणित आशीष लखावे छे. धमरशी ना पत्र मां पहोंच आपी हती ते मली हशे.

अगास आश्रम थी नित्यक्रम २०० हिन्दी तथा ५० गुजराती मंगाव्या छे. रतलाम थी एक बस पड़े ५० जणा सत्संग माटे आव्या हता ते पाछा गया। हवे भीड़ ओछी छे, पूनम उपर वधशे.

सत्संग मां श्री देवचंद चोवीसी नुं विवेचन चालू छे, आश्रमवासी सौए याद कर्यां छे. धर्म ध्यान में मस्त रहेजो।

सहजानन्दघन आशीष

(पत्रांक—३०३) हम्पी

ॐ नमः २८-१२-६४

भक्तवर श्री शुभराजजी सपरिवार

आपके दो पत्र मिले—१ बीकानेर से और फिर १ पालीताना—झाबकजी के साथ का मिले। हाल मालूम हुए।

आपकी इच्छा यहाँ सरस्वती भवन बनवा देने की है—जो उचित ही है और उसमें मेरी तो सम्मति ही है। आप अवकाश लेकर आवें और खुशी से बनवावें।

सत्संग-भवन विषयक निर्णय ग्रीष्मकाल में होगा। अभी उन लोगों को फुरसद नहीं है।

एक्झीमा में बिलकुल आराम हो गया और कफ दोष भी कम हो गया। माताजी का स्वास्थ्य ठीक चल रहा है। यों तो पुरानी शिकायतें थोड़ी बहुत चलती ही है पर फिर भी मस्त हैं।

आपका स्वास्थ्य अब किस तरह है? गैस आदि में आराम हो गया होगा? मगनबाई तथा उनकी भजईजी प्रसन्न होंगे? हमारा तथा माताजी का सारे परिवार को आशीर्वाद कहिये। तथा परिचितों को भी।

धर्मध्यान में अभिवृद्धि हो। आयु कम हो रही है फिर भी व्यवहारिक झंझटें कम नहीं हो सकी हैं। तब समाधिमरण की तैयारी कैसे होगी? ॐ शान्तिः

सहजानंदघन हार्दिक धर्मलाभ!

(पत्रांक—३०४) हम्पी २८-१२-६४

ॐ नमः

विद्वद्वर्य श्री अगरचंदजी साब सपरिवार

जेम जेम अनुभव श्रेणिमां आगे कूच थाय छे—तेम तेम पूर्वे जाणेलुं अधूरुं लागे छे. अने आगन्तुक अनुभवो वर्त्तमान ने अपूर्ण बतावता रहे छे. तेथी साहित्य प्रवृत्ति स्थगित रहे छे. इच्छा छतां तेमां मौन सेववुं पड़े छे—एवो उदय छे. एना अंगे आप जेवा जिज्ञासुओ ने सन्तोष आपी शकातो नथी—बाकी मौखिक वृत्ति तो यथाशक्ति यथापात्रे कथंचित सन्तोष आपती रहे छे.

श्री देवचंदजी चौवीसी नुं १६ मुं स्तवन सत्संग मां विवेचाय छे. अद्भुत स्फुरणाओ थाय छे.

जो आप अनुभव धारा में प्रवेशो तो अत्यार नी प्रवृत्ति केटली टकावी शको? एतो ए दिशा गति थए जणाय।

श्री वीर निर्वाण पछी ९८० वर्ष पर्यन्त श्री वीर वाणी पत्रारूढ न थई, तेनी पाछल प्रबल कारण ए विचारजो.

स्नेह मां वृद्धि करजो. परिचितो ने आशीर्वाद!

...जी ए आशीष जणाव्या छे. ॐ शान्तिः

सहजानंदघन – धर्मलाभ सहजात्मस्मरण।

(पत्रांक—३०५)। हम्पी
ॐ नमः ५-१-६५.

भक्तवर श्री भँवरलालजी साथ सपरिवार

घंणा समय बाद आपनुं पत्र संप्राप्त थयुं प्रभु कृपा थी अहिं आनंद मंगल वर्त्ते छे. ते सर्व जगत मां प्रवर्त्तो अने आपने पण हो.

हालमां लेखन प्रवृत्ति घणीज मंद थइ गई छे तेथी इच्छा छतां लेखादि भणी. लक्ष जतुं नथी. छतां आपनी मागणीने संतोषवानो उदय हशे तो कोइक प्रवृत्ति करी जोईश.

आश्रम विकास ने पंथे छे. तेम आत्मानुभूति मार्ग मां पण विकास वर्त्ते छे. आत्मा मां दिनोदिन शांत परिणति वृद्धिगत जणाय छे. काकीमां परम प्रसन्न पदमां विलसी रह्या छे. आपना आखा परिवार प्रत्ये हार्दिक आशीर्वाद जणावे छे.

आपना त्रणे काकाजी ना थोड़ाक दिन पूर्वे पत्रो हता।

श्री धन्नुलालजी पारसान, श्री धूपियाजी, श्री बडेरजी अने बदलियाजी आदि ने हार्दिक आशीर्वाद फोन थी जणावजो।

पारसाने अहिं पोस्ट थी वे माला स्फटिक नी मोकलावी ते पोस्ट खाता मांज गुम थइ गई। तेनी तपास तेमणे करावी हशे. एम तेमने जणावजो.

धर्माराधना मां अप्रमत्त रहेशो. ॐ शान्तिः

सहजानंदघन

हार्दिक अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक—३०६) हम्पी
ॐ नमः २२-१-६५

भक्तवर्य (भँवरलाल जी नाहटा)

पत्र गई सांजे मल्युं. विगत अवगत थई. अनुभूतिनी आवाज मां ते वखत नी जे दशा हती, अत्यार नी दशा सविशेष वर्द्धमान होवा थी तेमां परिमार्जन अनिवार्य लागे छे। माटे तेने तो मुद्रित करवी नथी. पण "युगप्रधान पदनुं रहस्य" कईक लखवा विचारुं छुं. जे तैयार थशे तो तमे अहिं आवशो त्यारे कदाच आपी शकुं-हुं गुजराती मां लखीश. तमे हिन्दी मां भाषान्तरित करी मुद्रित करावी शकशो. हाल घणा समय थी लेखन क्रिया बंध जेवी छे. तेने फरीथी चालू करवी.अघरी लागशे छतां प्रयत्न करी जोइश.

घणो टाइम थई गयो छे तेथी अहिं थई ने कलकत्ते तमानुं राखो तो ? धर्म ध्यान माँ वृद्धि करजो। याद करनारा वधाय ने हार्दिक धर्मलाभ जणावजो। ॐ शांतिः

सहजानन्दघन धर्मलाभ !

—

(पत्रांक—३११)

हंपी २८-३-६५

ॐ नमः

साक्षरवर्य भव्यात्मा श्री अगरचंदजी तथा भँवरलालजी नाहटा सपरिवार

पत्र मल्युं. पण बरावर वांची शकायुं नथी. भँवरलाल जी शिखरजी थी सकुशल आवी गया हशे. अमदावाद थी मंगावेलुं साहित्य बधुं बरावर मली गयुं हशे. तेमने जवाब पण आपी दीधो हशे.

श्री आनंदघन साहित्य आप मुद्रित करावबा इच्छो छो अने तेमां सारो सहकार पणइच्छो ते अयुक्त नथी. पण दिनोदिन लखवानी प्रवृत्ति मारा थी घटती जाय छे. इच्छा छतां ते अमल मां मूकी शकतो नथी. छतांते संबंधी खेद उत्पन्न थतो नथी. कारण के कर्तृत्व-भोक्तृत्वाभिमान बधुं छूटो जाय ए हित रूप मान्युं छे. तमने पण ए रस्ते आव्ये वगर छूटको नथी. कारण के तेमकर्या विना पड्शे छूटशे नहीं. जिन्दगी भर कल्पना ना शुभ प्रवाह मां वह्ये जवुं-ए कांइक अशुभ प्रवाह थी बचवा रूप तो हितकर छे. पंण आत्मज्ञान ज्योति प्रगटाववा मां तो बाधक छे ज. शुभाशुभ बन्ने प्रवाहोथी परथई मात्र किनारे स्थिर रही ते बन्ने प्रवाहो ना ज्ञाता-द्रष्टा पणे आत्मभाने टकवुं एज आत्मज्ञान ज्योति प्रगटाववा नो उपाय छे. तेमां प्रयत्नशील थाओ. एज भलामण छे.

श्री धूपियाजी नो पत्र तथा चाँदमलजी ना समाचार मल्या. तेमने आशीर्वाद पूर्वक जणावो के श्रीमद् राजचंद्र शताब्दी महोत्सव तो सं० २०२४ ना का० पूर्णिमाए उजवाशे. तेनुं स्थल हजु परिषद् नक्की करी शकी नथी. फरी जेठ सु० ६-७ ना मीटिंग अगास मां मलशे. महोत्सव मां हुं जइ शकीश के नहिं तेनी मने हजी कल्पना नथी. कारण के लांबो समय बाकी छे. ते समयनी जेवी परिस्थिति (अेटले २०२४ वी साल नो) काकीमां नुं स्वास्थ्य वच्चे अधिक खराब हतुं. पण हवे विना दवाए सुधरतुं छे. त्यां बधाय भक्तो ने मारा तथा काकीमां ना आशीर्वाद जणावजो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन

हार्दिक आशीर्वाद. जिनस्मरण.

(पत्रांक—३१२) हम्पी
ॐ नमः ११-४-६५

भक्तवर्य (कोजमलजी बाफणा)

पत्र मिला। परम कृपालु की पूर्णतः कृपा है। माताजी के विषय में जो लिखा वह प्रयोग तो तुम्हारे आने पर करवाईयेगा। यों तो स्वास्थ्य सुधर रहा है। पुरंदर मंडप तक घूमने जाती हैं। टब बाथ लेती हैं। अपनी खुशमिज़ाजी तो सदा ज्यों की त्यों बनी रहती है। तुम्हें हार्दिक आशीर्वाद लिखाया है। अभी सत्संगी ठीक संख्या में है। पूनम और पंचमी आ रही है। तुम कब आ रहे हो ?

कल अहमदाबाद से ४ आदमी आ रहे हैं। सभी याद करने वालों को जयसद्गुरु वंदन ! ॐ

सहजानन्दघन हार्दिक आशीर्वाद

(पत्रांक—३१३)
ॐ नमः हम्पी २१-४-६५

भव्यात्मा श्री बाबुलाल सपरिवार,

श्री मणिभाई साथे ना समाचार मल्या हता, तमारी भावना जाणी प्रसन्नता थयी।

श्रीमद् राजचन्द्र जी ना चित्रपट साथे बेसी ने "सहजात्म स्वरूप परमगुरु" आ महामंत्र ने श्वासोश्वास ना अनुसंधान पूर्वक गणजो.

परमगुरु शब्द नो अर्थ छे पंच परमेष्ठि रूप अरिहंत—सिद्ध—आचार्य—उपाध्याय अने साधु पद. तेमां शुद्ध पद पर आरूढ़ शुद्ध आत्मा छे. तेमने शरीर नथी अने जन्म मरण पण नथी. अेटले के तेओ जन्म-मरण रहित सहज+आत्म स्वरूप=सहजात्मस्वरूप छे. शरीर स्वरूप नथी. तेमज अरिहंत पण शरीर मां रहेवा छतां तेओ शरीर स्वरूप नथी. पण सहजात्म स्वरूप छे. तेवीज रीते आचार्य नो उपाध्याय नो अने साधु नो आत्मा ने आचार्य. उपाध्याय-साधु छे शरीर नहि एटले के तेओ बधा परमगुरु सहजात्म स्वरूप छे' पण शरीर स्वरूप नथी' तेम हूँ पण शरीर स्वरूप नथी पण सहजात्म स्वरूप छु.

आ रीते परमगुरु बोलतां पाँचे पदनो लक्ष अने सहजात्म बोलतां पोताना आत्मा नो लक्ष राखी जप करवो.

जेम मूर्ति बनावनार नी दृष्टि फोटो तथा मूर्त्ति बंने उपर क्रमशः फर्या करती होय तेम आ साधना करवा थी आत्म भावना दृढ़ थये अंतर लक्ष पकड़ाय अने आत्म भान प्रगटे. एथी देह भान छूटे अने क्रमशः आत्म साक्षात्कार थाय. माटे ते प्रमाणें करता रहेजो.

एक वार फुरसद होय त्यारे अहिं आवी सत्समागम करो तो विशेश लाभ थशे.

धर्म ध्यान मां वृद्धि करजो बधा कुटुंबी जनो ने धर्मलाभ जणावजो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद !
पूर्वक धर्मलाभ

(पत्रांक—३१४) हम्पी

ॐ नमः २२-४-६५

भक्तवर (श्री विजयकुमार वडेर)

भक्ति पत्र पुष्प मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। कल दिन रात भक्ति की बाढ़ आई थी। परम कृपालु की पुण्यतिथि के कारण काफी लोग भक्ति गंगा में न्हाये। यदि आप होते तो नाच उठते। माताजी प्रसन्न हैं। अगणित आशीर्वाद लिखाते हैं। हमारा स्वास्थ्य अच्छा है। आप सपरिवार प्रसन्न और स्वस्थ सदैव बने रहो यही आशीष है। धर्मध्यान में वृद्धि हो।

श्री बदलिया दम्पती को कहिए कि आपका पत्र पहले मिला था, प्रसन्न होंगे ? हमारा आशीष, धर्मस्नेह में वृद्धि हो। ॐ शांतिः

सहजानंदघन—आशीर्वाद

(पत्रांक— ३१५) हंपी

ॐ नमः २-५-६५

भक्तवर्य श्री मोहनलाल जी

पत्र संप्राप्त थयुं। चैतन्य दर्पण उपर अनादि नो चोंटेलो मैल थोडा ज पुरुषार्थ थी हटवो शक्य नथी. ते माटे तो दिन रात सतत मेहनत करवी घटे छे. माटे तेज करसो.

जीव मृत्यु ने भूली बेठो छे. जो ते याद राखे तो प्रमाद पोतानी मेले दूर रहे।

माताजीए आशीर्वाद जणवाई छे। आपना बालको ने अगणित आशीर्वाद कहेजो. धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन

(पत्रांक—३१६) हंपी
ॐ नमः ८-५-६५

भक्तवर्य (कोजमलजी बाफणा)

पत्र मल्युं. कृपालुदेव नी मूर्त्ति मुंबई मां लगभग तैयार थई गई छे आ पूनम सुधी प्रायः अहिं आवो जशे। माताजी का स्वास्थ्य तो ठीक अठीक चलता है, आशीष लिखाते है। चंचल अहिं छे. स्वस्थ छे. मेघबाई पण अहिं छे मांघी बाई तेनी भुआजी पण खुश छे. हीरजी भाई, खेंगर भाई आदि बधा प्रसन्न छे. मुख भाई सुख मां छे. कृपालुदेव नी असीम कृपा छे. सत्संग नियमित चाले छे. भीखो परणवा मारवाड़ गयो अहिं दि० जैन रसोइयो हमणा छे नवीनता मां तो जाते आवी ने जोजो, पत्र थी शुं लखवुं ?

त्यां जे मुमुक्षु भाई बहनो याद करे ते सौने जय सद्गुरु वंदन। धर्मस्नेहमां वृद्धि हो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन—सहजात्मस्मरण आशीष

(पत्रांक—३१७) हंपी
ॐ नमः १५-५-६५

सद्गुणानुरागी साक्षरवर्य श्री अगरचन्दजी श्री भँवरलालजी

तथा श्री केशरीचंद जी धूपिया सपरिवार

आप त्रणे ना पत्रो क्रमशः मल्या फुरशद ना अभावे जवाब ढीलमांज रहे छे. लेखन वृत्ति संक्षिप्त थई जवा थी हवे श्री आनन्दघनजी चौवीसी काम मारा थी थवुं शक्य नथीमाटेए विषयमां आप जेना वड़े काम करावबुं उचित समझो करावी लेजो। जंबूविजय जी करवाना हता तो तेज ठीक छे.

अहिं मन्दिर सत्संग भवन विगेरे बनशे पण जागीरदार तरफ थी पट्टो हजू नथी मल्यो. कईक व्यवस्थापको नी पण ढीलाई ने अंगे आ काम रुंधाय छे. थशे तो जरुर पण धीरे धीरे.

मे मासनी आखरीए हुबली मा दक्षिण भारतीय श्वे० दि० जैनो नुं अधिवेशन छे. मैसूर गवर्नर 'गिरि' पण आवशे. तेमा १ प्रवचन नी मागणी तेओ नी छे तेथी प्रायः जवानु थशे. गत ११-५ ना होस्पेट मां स्वामी कनकदास नी ४०० मी जयन्ती हती तेमां एक प्रवचन मारुं रखायुं हतुं. हुं गयो हतो.

मारु अने काकीबा नु स्वास्थ्य सारु छे. मेघबाई, चंचल वगेरे वधा मजा मां छे. वधाए आपने सादर धर्मस्नेह जणावे छे एम. वाड़ीलाल ना मालिक अहिं अठवाडियुं रही ने पाछा गया. शुभराजजी नं पत्र छे. तवीयत नी गड़बड़ी ने अंगे न आवी शक्या आखरे आ देह नी चिंता छोड्या विना छूटको नथी.

आप सौ स्वस्थ अने प्रसन्न हशो. त्यां श्री धन्नुलाल जी, बडेर जी, वदलिया जी विगेरे ने आशीर्वाद जणावजो.

वदलिया नु पत्र आजे हतुं. तेमणे कइंक पार्सल थी मोकल्युं छे. ते, मल्ये थी जवाब अपाशे. एम फोन थी जणावजो।

धर्मध्यानमां अभिवृद्धि करजो. ॐ शांतिः

सहजानन्दघन—हार्दिक धर्मलाभ

सेवासंघ ना अधिवेशन मां शुं विशेषता हती? हवे अमरावती मां मलशे एम साध्वी जी लखे छे। माताजी ए वधाने आशीर्वाद जणाव्या छे चंचले प्रणाम!

(पत्रांक—३१८) हंपी

ॐ नमः २४-५-६५

श्री भँवरलाल जी नाहटा सपरिवार,

सरकारी जमीन नो पट्टो तो पूर्वे मलीज गयो हतो अने वैष्णव धर्माचार्य श्री टोडप्पाचार्य तरफ थी बाकी नो पट्टो पण फ्री मली गयो छे अेटले के व्यवस्थापकोए जेटली जमीन नी मागणी करी हती ते वधी फ्री पट्टे मली गई छे. रजिस्ट्रीपण थई गई छे. ते जाणशो. हवे श्रीछोटेलाल जी जैन ने जणावशो के पुरातत्व नो जे आफिसर अहिं हतो जेणे तीर्थना जैन बोर्ड काढी नंखाव्या हता तेनी बदली थई गई छे. ते पहेलां जे हतो ते पाछो आवी गयो छे. तेने अवकाशे अहिं बोलावी बोर्ड फरी थी चढाववा सूचवशुं जो मानी लेशे तो ठीक नहिं तो आपने तेवो खुलाशो लखशुं. तेम छता आप हवे तेनी साथे सीधो पत्र व्यवहार करो तो पछी हरकत नथी. हेमकूट सिवाय रत्नकूट तथा भोट ए बन्ने ना बोर्ड पण नथी ते अमारा आव्या पहेलांज फेरवाई गया हता ते संबंधी पण कारवाई करी शको तो करशो. पुरातत्त्व हिस्ट्री मां तेनो उल्लेख छे के केम ते पण तपासी ने अमने जणावजो. आ हकीगत श्री धूपियाजी आदि ने पण जणावजो. अहिं आनंद मंगल छे. सत्संगिओ नी संख्या सारा प्रमाण मां छे, श्रीमद् राजचन्द्रजी नी ३१ इंच नी प्रतिमा ६०००) रु० मां तैयार थई ने गया शनिवारे अहिं आवी गई छे. बहु सुन्दर छे. त्यां याद करनारा वधाने मारा तथा माताजी ना आशीर्वाद जणावजो. ॐ शांतिः

सहजानन्दघन—अगणित आशीर्वाद!

(पत्रांक—३१६) हम्पी

ॐ नमः ३१-५-६५

परम कृपालुदेव का शरण स्मरण अखंड रहो

भक्तवर, (कोजमल बाफणा)

बाबूलालजी द्वारा भेजा हुआ पत्र मिला। हाल ज्ञात हुआ माताजी और हम सभी स्वस्थ हैं और प्रसन्न भी। तुम्हें भी सदैव स्वस्थता और प्रसन्नता बनी रहो यही आशीष।

कल दुपहर बाद ॐकारजी तथा शांति के बड़े भाई आदि कितनेक सज्जन बंगलोर अनंतपुर आदि के यहां आए थे, दो तीन घण्टे बाद होसपेट गए वहां से उन्हें हुबली शीघ्र जाना था। हम भी ता० ३-६ से ८-६ तक गदग, हुबली, कुंदगोल, अनिगिरी आदि जाकर वापस लौटेंगे। कर्णाटक में दि० जैन अधिवेशन ता० ५-६-७ जून को वहां है, जिसमें साग्रह आमंत्रण है। धर्मध्यान में अप्रमत्त रहना। रिखबचन्दजी आदि याद करने वालों को धर्मस्नेह कहें। ॐ शांतिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद सह

सहजात्म स्मरण।

(पत्रांक—३२०) हम्पी

ॐ नमः १४-६-६५

(वैद्य कोजमलजी बाफणा)

भक्तवर्य,

पत्र मल्युं। परम कृपालु देवनी आसीम कृपा छे। बाबूलालजी साथेना नित्यक्रम आदि तो मल्या, पारस नी साथे ना तो मने खबर नथी. हुं कोपल, गदग, अनिगिरी, कुंदगोल अने हुबली फरी आव्यो, कुंदगोल मां अजैनो नी भक्ति जोवा जेवी हती, ॐकारजी आव्या हता—पण तेना हृदय मां कंईक गड़बड़ मची तेथी तुरत पाछा फर्या, अहिं कह्युं के मारे मारवाड़ शीघ्र पहोंचवुं छे. अने पछी हुबली मां रहेया मां तेने ते कारण नड्युं नहिं, झूठ बोलतां जे जीव अचकाय नहीं, जे शंकाशील ते निखालस थई सामे मोढे पूछे नहिं अने पाछल थी निंदा करे एवी आश्रमवासियोनी दशा जोई अनुकंपा आवे छे. करेगा सो भरेगा अपने क्या ? तुं तेरा संभाल ! ॐ

माताजी नी तबियत सारी छे. आ देहे स्वस्थता छे, परम कृपालुदेव नी प्रतिमा सकुशल आवी गई छे. तमारी तबियत सारी हशे, अगवरी वाला पुनमाजी लुहार ने अहिं आववुं छे तेने जणावी देजो के भले आवे, माताजीए तमने हार्दिक आशीष जणाव्या छे. चंचल मुंबई गई, मेघबाई-मोघी बाई प्रसन्न छे. याद कर्या छे. धर्म आराधना मां प्रमाद कर्त्तव्य नथी . जीव बीजो कल्पना मां तणाय तेथी आगळ नो मार्ग सुझे नहिं माटे खबरदार रहो । परमकृपालु प्रत्ये नी श्रद्धा अफरवाओ ॐ शांतिः

सहजानन्दघन अगणित आशीर्वाद।

(पत्रांक—३२१)

हंपी २७-६-६५

ॐ नमः

परम कृपालु देव का शरण और स्मरण अखंड रहो.

भक्तवर (कोजमल जी वाफणा)

पत्र मिला, हाल ज्ञात हुए। हार्ट की तकलीफ देह में है—आत्मा तो केवल उसे जानने वाला उससे जुदा है। मैं आत्मा हूं, शरीर नहीं इत्यादि रूप से आत्मभान दृढ़ करके सहजात्म स्वरूप परम गुरु—इस महामंत्र की धून मन में जमाए रखो—तो अनंत कर्मों का धुवाँ उड जायगा। मनोमन भक्ति क्रम चलु का चलु ही रखना। ऐसे अवसर में क्रम चालु रखने पर नया अनुभव भी हो सकता है। घवड़ाने की जरूरत नहीं है। यहां हम सभी स्वस्थ एवं प्रसन्न हैं।

माताजी भी प्रसन्न हैं, हार्दिक आशीर्वाद लिखाये हैं और कहा है कि शरीर की फिकर मत करो। सब अच्छा हो जायगा, शरीर ठीक होते ही यहाँ आ जावो। वहाँ जो कोई याद करे हम दोनों का आशीर्वाद कहें। स्वस्थता का समंचार शीघ्र दें। ॐ शान्तिः

सहजानंदघन

जय सद्गुरुवंदन सह अगणित आशीर्वाद

(पत्रांक—३२२)

हंपी ६-७-६५

ॐ नमः

भव्यात्मा भक्तवर श्री शुभराजजी आदि सपरिवार,

कार्ड मिला, हाल ज्ञात हुए। श्री मेघराजजी का भी एक पत्र पहले मिला था। वे तो अपनी काव्य भाषा में मनसूवे दरसाते रहते हैं। और आप भी अपनी प्रतिज्ञाएं भूल जाते हैं। भाविभाव! जीव अपनी बेदरकारी वश अनादि काल से परिभ्रमण को ही पसंद करता चला आया और अभी तक इसी में ही आनंद मना रहा है। वड़ी गजव की वात है।

वाँठियाजी भी सत्संग की कामना रखते हुए भी अवकाश ले नहीं पाते।

आपकी अर्द्धांगिनी, मगनवाई आदि सभी वायां और तीनों भाया सपरिवार को हमारा हार्दिक आशीर्वाद! धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो। ॐ शान्तिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद

यहां हम सभी प्रसन्न हैं। चंचल की वम्बई पहुंचने की चिट्ठी थी, चर्चगेट कालेज में जाना पड़ रहा है।

(पत्रांक—३२३) हंपी
ॐ नमः १६-७-६५

भक्तवर्य (श्री देवीलालजी रांका)

पत्र-पुष्प मिला। प्रभु कृपा से यहाँ हम सभी आनंद निमग्न हैं, तथैव आप भी सदैव बने रहें—यही आशीष।

'सेवन कारण पहिलो भूमिका रे, अभय अद्वेष अखेद—संभव०

आत्म प्रदेश में खेद भाव क्यों उत्पन्न होने देना ? आत्म भान और वीतराग स्वभाव को टिकाये हुये त्रियोग प्रवृत्ति करते रहने पर "सदा मगन में रहना"—हो सकता है। अतः मस्त रहो न भाई ! इष्टानिष्ट कल्पना को पटक दो और साक्षी भाव में आत्मोपयोग रखो तो न कुटुम्ब बाधक है और न त्रिविध कर्म। द्रष्टा से सारी फिल्म जुदी की जुदी। उसे देखा करो नाचो मत। फिर खेद हो जाने पर भी नहीं मिलेगा।

माताजी ने वात्सल्य प्रवाह पूर्वक अनन्तशः आशीर्वाद और सुखलालजी ने धर्मस्नेह लिखाये हैं। सभी धर्म स्नेहियों को अगणित आशीर्वाद कहें।

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद

(पत्रांक—३२४) हंपी
ॐ नमः १-८-६५

भक्तवर कोजमलजी,

पत्र मिला। हाल अवगत हुए। आपकी फरियाद पढ़ी। जबतक हम अपनी दृष्टि को संकल्प विकल्प की जाल में जकड़ कर रखते हैं, उसे अनुभव पथ के प्रति सरकने नहीं देते तबतक वह बेचारी अनुभव मार्ग में होने वाले अनुभवों का कैसे बता सके! बहुत सा संभव है कि आपने शारीरिक परिस्थितियों का सामना करने में अपनी पीछे हट दिखाई हो। अतएव चित्त की चंचलता बढ़ी हो। चंचल चित्त क्या अनुभव पथ में गतिमान रह सकता ? वह तो बेचारा नाच कूद से विश्रान्ति नहीं पा रहा है। उसे आप ही तो नचाते हैं, और इस थके चित्त से आप अपना आध्यात्मिक विकास नहीं कर सको तो उसमें आश्चर्य ही क्या है ? बन्दे! दैहिक चिन्ता छोड़ो और चित्त को स्वस्थ होने दो फिर देखिए कि क्या होता है।

माताजी स्वस्थ एवं प्रसन्न है और हम भी। यहाँ सत्संगियों की संख्या बढ़ती जा रही है। सत्संग नियमित चल रहा है मेघबाई बम्बई है पत्र में आपकी याद लिखी है।

यहाँ सभी स्नेहियों को आशीर्वाद! धर्मस्नेह में वृद्धि हो। ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद सह सहजात्म स्मरण।

(पत्रांक—३२५) हंपी

ॐ नमः २४-५-६५

भक्तवर्य श्री रांकाजी एवं हीरालालजी आदि मुमुक्षु गण,

आप दोनों का खामणा पत्र मिला। पर्वाराधना यहाँ भी बड़े ही उल्लास से हुई। साँ० खामणां के अवसर में सभी जीवों के साथ आप सभी को भी हमने माताजी ने सुख भाई आदि सभी काफी संख्या ने विशुद्ध भाव से खमाया एवं क्षमा प्रदान की है। स्वीकृत रहे। समयाभाव वश प्रत्युत्तर में ढील हुई।

दशमी तक काफी भीड़ रही, अभी भी है। पूनम बाद कम होंगे। भँवरलालजी नाहटा सपरिवार १ मास तक यहाँ ही थे, कल वापस लौटे। कृपालु की भक्ति में सुदृढता रही यही कर्त्तव्य है। बेचारे अज्ञ जीव कर्म बाँधने में रस वृत्ति रखते हैं जो दया पात्र हैं।

काम की निरसता दृढ होने पर निष्काम बना जा सकता है। मूल बंध ३ घण्टे तक सिद्ध करने पर भी वासना विजय हो सकता है। अतः प्रयत्न कीजिएगा। धर्मध्यान में वृद्धि हो। ॐ शांतिः

सहजानंदघन

हार्दिक खामणा सह आशीर्वाद।

(पत्रांक—३२६) हंपी

ॐ नमः २६-०-६५

भक्तवर्य (श्री देवीलालजी रांका)

पत्र मिला। आत्म भाव पूर्वक वीतरागता को टिकाने के पुरुषार्थ में अनुरक्त रहकर सदैव मस्त रहो।

श्री धनराजजी प्रसन्न हैं। माताजी ने अगणित आशीर्वाद कहे हैं। आपकी सारी मण्डली को हार्दिक आशीर्वाद ! ॐ शांतिः

सहजानंदघन

अनंतशः आशीर्वाद !

(पत्रांक—३२७) हंपी

ॐ नमः

भक्तवर्य

परम कृपालु देव नुं शरण अने स्मरण अखंड रहो

खा० पत्र मल्युं. तेवीज रीते करेला अमारा वधाना खामणा पण स्वीकारजो. तमारी भावना कार्यान्वित थाओ अे अंतर ना आशीष छे

"हणे बोध वीतरागता, अचूक उपाय आम,"

आत्म भान अने वीतरागता ने टकावी राखी उदीयमान त्रियोग प्रवृत्ति करो ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीष

(पत्रांक—३२८)

ॐ नमः

हंपी १०-१०-६५

"देह गेह माड़ा तणो. ए अपणो नांहि"

भक्तवर्य (वैद्य कोजमलजी)

पत्र १० पुस्तको अने माला विगेरे बीजी चीजो बधां मल्या. चम्पालालजी अने बीजा एक आजे अहिं सुख रूपे आवी गया. समाचार जाण्या. तमारी तबियत माटे पाणी बदल करवानी जरूरत लागे छे. अहिं आव्या होत तो राहत मलत. मानसिक चिन्ता ओछी थात. तेनी असर शरीर उपर पण पड़त. आत्मानी पकड़ एवी करो के देहनुं भानज न रहे बीजी बधी चिन्ता छोडो। स्मरण धारा ने अखण्ड बनाओ. परम कृपालु उपर पूर्ण श्रद्धा राखो। बधुं एमना चरण मां सोंपी अचिन्त रहो. पछी जुओ शुं परिणाम आवे छे ?

माताजीए हार्दिक आशीर्वाद जणाव्या छे आश्रमवासिओ बधाए याद कर्या छे· धर्मध्यान मां वृद्धि करजो. याद करनारा सौ ने आशीष. ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन

अगणित आशीष साथे सहजात्म स्मरण !

(पत्रांक—३२९)

ॐ नमः

हम्पी ७-११-६५

भक्तवर्य श्री शुभराजजी तथा श्री भँवरलालजी आदि सपरिवार

दोनों पत्र मिले। दीपावली के तीन दिन की धून के नशे के कारण पत्रोत्तर किसी को न दे सका !

माताजी प्रसन्न हैं, आप सभी को अनन्तशः आशीर्वाद कहे हैं। चंचल बी० छुट्टियों में यहाँ आई और कल वापस सधार रही है ! सभी को हार्दिक नमस्कार लिखाये हैं।

दीपावली के अवसर में तो भारतीय सुरक्षा के हेतु की गई प्रार्थना तो सुन ली गई, अब आगे तो वह ऊपरवाला जाने ?

विश्वास में निर्विकल्पता यदि रहे तो कोई भी कार्य आसानी से हो सकते हैं—आप भी वैसा अनुकरण करते रहिए।

धर्म स्नेह में अभिवृद्धि हो। ॐ शांतिः

सहजानन्दघन

हार्दिक आशीर्वाद !

(पत्रांक—३३०)

ॐ नमः

हम्पी १४-११-६५

भक्तवर्य (कोजमलजी बाफणा)

क्रमशः तीनों ही पत्र मिले, हाल ज्ञात हुए।

दादाजी का कहना है कि यदि हम मानव देह में विद्यमान होते और कोई एक्सीडेन्टवश हाथ टूट जाता तो हमको आप क्या करते ? बस उसी तरह हमारे स्थान पर जो स्थापना हो उसके साथ वैसा ही करो।

परोक्ष रूप से उन्हीं की प्रेरणा पाकर वहाँ के श्रीसंघ ने भी यही निर्णय किया जो आपके तीसरे पत्र से जानकर सन्तोप हुआ। यहाँ दीपावली के तीनो दिन अखण्ड धून थी जिसका नशा कई रोज तक चला और चल रहा है! इसलिए न किसी को पत्रोत्तर देने का सूझा और न किसी दूसरे से जवाब देने को कह सका!

पूनम पर बेल्लारी मंडली आई थी उन्हें आपका समाचार सुनाया था। विजय बाबू यहीं हैं। मिगसर सुदि ३ को वे तथा रतनू बाबु—धनु बाबु आदि कलकत्ते जायेंगे। उसी दिन हीरजी भाई भी अंगत कार्य के हेतु अलपई जावेंगे। सत्संग भवन का निर्माण कार्य माघ पूनम से शुरू होगा! हमारा माताजी का तथा सभी सत्संगियों का स्वास्थ्य अच्छा है। आशा है अब तो आप भी स्वस्थ होंगे ? इन दिनों आपको यहाँ आ जाना अच्छा है क्योंकि कुछ समय बाद सरहद की गड़बड़ी बढ कर पहले से भी ज्यादा जंग मचा दे वैसी शक्यता है।

अब यहाँ ठंड भी नहीं है और भीड़ भी कम है। माताजी ने अनेकशः हार्दिक आशीर्वाद कहा है। प्रभु भक्ति में दत्तचित्त रहना। परमकृपालु का शरण नहीं छोड़ना। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन—हार्दिक आशीर्वाद पूर्वक सहजात्म स्मरण!

(पत्रांक—३३१)

हंपी १७-११-६५

ॐ नमः

भक्तवर्य श्री शुभराजजी साब श्री भँवरलालजी साब आदि सपरिवार

पत्र मल्युं. हवे फरी थी नापाकनी नापाक प्रवृत्ति बमणा जोश थी चालू थवा सम्भव छे जो के तेमा तेज खता खाशे छतां भारत ने नुकशान तो करशे ज.

जे जे प्रदेश मां पापोदय तीव्र हशे त्यां त्यां अमारी रक्षा भावना शुं काम करी शकशे ? पुण्य बल ज्यां हशे. त्यां बाल वांको नहिं थाय.

माताजी प्रसन्न छे. बधाने अगणित आशीर्वाद जणावे छे. लुंकड़ नहिं आवे तो कांइ नहिं. बीजा मानस नो परिचय विना सो जवाब आपीये ? पालीताना थी हजु फोटो अहिं नथी आव्या. धर्म ध्यान मां वृद्धि करजो. बधाय ने फरीफरी आशीर्वाद। —सहजानन्दघन

(पत्रांक—३३२) हम्पी

ॐ नमः २६-११-६५

भव्यात्मा श्री भँवरलालजी नाहटा सपरिवार

गई सांझे पत्र संप्राप्त थयुं . जेसलमेर विषयक इशारो विजय बाबू ने कर्यो छे. ते वात सांभली आप गम्भीर रहेजो जाहेरात करशो नहिं.

पुस्तक पार्सल मल्ये पहोंच पत्र आपशुं. जन्म शताब्दी स्मारक ग्रंथ रूपे ? राजपद ग्रंथ बहार पड्युं छे. तमे ग्राहक छो. तमारा वती रतनबाबु ए रकम चूकवी छे. तेनो रसीद तेमनी पासे थी लई रकम तेमने आपी देजो अने पुस्तक लई लेजो. बाकीना पुस्तको क्रमशः छपातां जशे तदनुसार मलतां जशे.

शुभराजजी आदि ज्यां ज्यां होय ते ते सौने मारा तथा माताजी ना आशीष जणावजो।

धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि करजो। माताजीए आप सपरिवार ने आशीर्वाद जणाव्या छे. ॐ शांतिः

सहजानंदघन

धर्मलाभ सहित सादर जिन स्मरण

(पत्रांक—३३३) मार्ग० १५/२०२२

ॐ नमः हंपी ८-१२-६५

भक्तवर्य श्री शुभराजजी, साक्षरवर्य श्री अगरचंदजी तथा भँवरलालजी आदि सपरिवार

आपनुं पत्र तथा पुस्तिका नुं बुकपोस्ट मल्या नो प्रत्युत्तर लखो वेल्हारी वाला ने डाक मां नांखवा आपेल, परन्तु तेना पुत्रे ते फाड़ी नांख्यानां आज समाचार मल्या थी फरी लखुं छुं.

पालीताणा ना वल्लभविहार भवन ना नकशो बहु भायो नथी परन्तु तेमांथी कंइक शिक्षा ध्यान मां लेवाशे. दादाजी नी मूर्त्ति पसंद नथी. चेहरा बराबर नथी. अहिंना सत्संग भवन नुं खात मुहूर्त माघ पुनमे करवानुं नक्की थयुं छे. हेमचंद भाई ना देख-रेख मा कार्य शरू थशे.

अमदाबाद थी एक मुमुक्षु भाई अहिं आश्रम मां स्थायी रहेवा आवनार छे. तेओ जो आवशे तो व्यवस्था तंत्र संभाली लेशे।

मारुं तथा माताजी नुं शरीर बराबर छे. तेम तम सौनुं पण सदाय बराबर रहो ए आशीर्वाद छे. धर्मध्यान बराबर चाले छे. तमे पण बराबर करता रहेजो.

श्री धूपियाजी तथा बदलियाजी ना पत्रो छे. तेमने फोन थी पत्र पहोंच आशीर्वाद साथे जणावजो जीवे पोते अज्ञानवश जे परिस्थिति नी जाल गुंथी छे तेमां थी छूटवा ज्ञान प्रकाश अनिवार्य छे छतां अंधारुं वधार्ये जाय छे त्यां बीजा शुं करी सके ? बीजाने रंजित करवा मां अथवा बीजा थी रंजित थवा

मां काल वीतावी दे छे. एवीज रीते अनादि काल थी रखडतो रह्यो छे. जेओ अंधकार मांथी प्रकाश ने मार्गे कूच करी रह्या छे तेओ धन्य छे. माताजी ए आप सौने आशीष जणाव्या छे. अने हाथरस पण वधाने आशीष लखवा जणाव्युं छे ॐ शान्तिः

सहजानंदघन हार्दिक धर्मलाभ

(पत्रांक—३३४)

हम्पी

ॐ नमः

१३-१२-६५

भक्तवर्य (वैद्य कोजमलजी)

पत्र यथासमय मिला। दादाजी के सम्बन्ध में जो कुछ किया गया, ठीक ही हुआ। भुज से श्री लब्धिमुनीजी महाराज साब ने मुझे भी लिखा था कि मूर्त्ति हटाई जाय और नई बैठाई जाय। आजकल की रूढी भी यही है जब कि मुझे प्रेरणा कुछ और ही मिली थी जो कि वहाँ के किसी व्यक्ति द्वारा व्यक्त हुई और मुझे कुछ लिखना न पड़ा।

अच्छा, अब तुम्हारी नैया किस तरह है ? यहाँ कब तक आने का विचार है ? अभो यहाँ का वातावरण बहुत अच्छा है। हमारा तथा माताजी का स्वस्थ्य अच्छा है। सत्संग नियमित चल रहा है।

कुछ रोज से यहाँ वर्षा भी चालु है। फिर भी ठंढ नहीं है। मौसम अनुकूल है। प्रभु भक्ति में मगन रहो। ॐ

माताजी ने हार्दिक आशीर्वाद लिखाये हैं। खूब खूब याद किया है। ॐ शांतिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद सह

सहजात्म स्मरण !

(पत्रांक— ३३५)

हम्पी

ॐ नमः

२०-१२-६५

भक्तवर्य श्री शुभराजजी आदि सभी बन्धु परिवार

पत्र मिला, प्रभु कृपा से आनन्द मंगल है। हमारा तथा माताजी का स्वास्थ्य भी ठीक है। आपका स्वास्थ्य कमजोर है। इसमें कुछ मानसिक चिन्ता भी कारणभूत होगी, व्यर्थ चिन्ता से क्या ? जो होनहार है वह तो होकर रहेगा। पौद्गलिक परिस्थितियों का सम्बन्ध तो देह से है, आत्मा से नहीं है। अतः मस्त रहो ! प्रभु स्मरण को अखण्ड बनाओ। आर्तध्यान को अपने हृदय में फटकने न दो।

माताजी ने आप सभी को हार्दिक आशीर्वाद लिखाये हैं। और मेरा भी स्वीकृत हो। ॐ शांतिः

सहजानंदघन धर्मलाभ !

———o———

(पत्रांक—३३६)

ॐ नमः

हम्पी १-१-६६

आत्मा श्री शुभराजजी तथा श्री भँवरलालजी आदि सपरिवार,

पत्र मल्युं, फोटाओ पण मल्या. हुं पावापुरी हतो त्यारे पण प्रतिमाजी पत्थरो-ईंटाळा आदि थी अर्द्धी दबायली हती. त्यारे पण लक्ष्मीचंदजी (मुर्चंनी) ए ध्यान न दीधुं अने हवे जाग्या छे (लक्ष्मी-चंदजी सेठ)—वहुमोड़े जाग्या. पण हवे शुं थाय ? जेणे आ दुष्ट काम कर्युं छे. तेने तेना कर्मो ज सजा आपशे. मादे अमे एमां माथुं नाहि मारीए. त्यां मूर्त्ति ने बदले चरण होय तेज उचित छे. पछी संघनी जेवी मर्जी. आहोर मां श्री जिनकुशलसूरिजीनी मूर्त्ति नो हाथ कोईए खंडित कर्यो छे। जेने घणा भव भटकवा बाकी होय तेने कोण रोकी शके छे ? त्यां देवो पण चुप रहे छे. ॐ.

शुभराजजी सावनी तबियत हवे सारी हशे. लाला कृष्णचंदजी दम्पती अठवाडीया थी अहिं छे. तेमणे आपने याद कर्या हता. अठवाड़िया बाद जशे. कच्छ थी गुरु महाराज ना कुटुंबी पुनशी भाई सुत लखमशी भाई पखवाड़िया थी अहिं छे. जेमनी साथे दीक्षापूर्व हुं बिजनेस मां साथे हतो. अहमदा-बाद थी साकरचंद भाई आव्या छे अने अहिं नो वहीवट संभालता थया छे. मात्र सेवाभावे। बीजो एक आंध्र प्रदेश नो भाई छे जे सेवा-भावे रह्यो छे, ए बन्ने मली काम संभाले छे।

त्यां आप सौ प्रसन्न हशो. बडेरजी नुं पहोंच पत्र पण नथी. तेमणे जणावजो. बाकी बधा सत्संगीओ ने आशीष. माताजीए बधाने हार्दिक आशीष जणाव्या छे. धर्मध्यान मां लक्ष स्थिर राखजो. हवे तो कपरोकाळ संभालवा जेवो छे. ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद।

(पत्रांक—३३७)

ॐ नमः

हंपी ३-१-६६

परम कृपालुदेव नुं शरण अने स्मरण अखंड थाओ !

सत्वर्य (श्री कोजमल बाफणा, आहोर)

पत्र मल्युं-नाशवान एवा आ शरीर ना दुखे दुखी रहेवुं आत्मार्थी ने छाजतुं नथी. पण पोताना नित्य स्वभाव ने अंतरंग मां दृढ करी निर्भय रहेवुं घटे छे. त्यां तेवो सत्संग बल न होय तो त्यां नो मोह छोड़ी आवी जाओ अहिं। पछी तमारी मनोवृत्ति मां बल आवशे. अहिं ठंड तो छे नहीं मामूली तो शी गणत्री मां ? हमणां भीड़ पण ओछी छे.

माताजी प्रसन्न छे. अंतर ना आशीष जणावे छे अने निर्भर रहेवा कहे छे. हवे पूनम नजदीक आवे छे पछी भीड़ थशे। मन पवन अने मंत्र ने साथे साधो. पछी जो शांति न मले तो मारी पासे थी लेजो। ॐ शान्तिः

सहजानंदघन—अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक—३३८)

ॐ नमः

हंपी १२-१-६६

भक्तवर, (विजयकुमारसिंह बंडेर)

मातजी के लिए चश्मा और पत्र मिले। उन्हें चश्मा ठीक बैठा और पसन्द भी आया अतः हमारे एवं उनके लिए दूसरे चश्मों की कोई आवश्यकता नहीं है। अब इस विषय में अन्य महेनत नहीं करिएगा। माताजी ने हार्दिक आशीर्वाद आप परिवार को लिखाया है। और हमारा भी आप सभी को हार्दिक आशीर्वाद सदैव है।

स्वास्थ्य हम सभी का अच्छा है, तथैव आप सभी का भी सदा बना रहो। धर्म ध्यान का लक्ष अखण्ड बना रहो। मन की चंचलता भी आत्मा से जुदी समझकर उस ओर साक्षी रहने से बड़ी ही शांति मिलेगी।

आत्म भान और वीतरागता का अवलम्बन ही कैवल्य पद प्राप्त करा सकता है, अतः एतद्विषयक पक्कड़ बना लीजिए। धर्म स्नेह में अभिवृद्धि हो। कुल भाई ने याद किये हैं। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद

(पत्रांक—३३९)

ॐ नमः

हम्पी ३०-१-६६

भक्तवर्य (कोजमलजी बाफणा, आहोर)

पत्र मिला। हाल ज्ञात हुए। अब आपका स्वास्थ्य अच्छा है और नित्यक्रम भी ठीक चल रहा है—यह जानकर प्रसन्नता हुई।

हम यहां सभी परम कृपालु की कृपा से स्वस्थ एवं प्रसन्न हैं। माताजी का शरीर अच्छा है। तुम्हें बहुत स्नेहपूर्वक आशीर्वाद लिखाये हैं। चैत्रमास में आने की तुम्हारी भावना सफल हो! अनुभव में विकास के हेतु खेद भाव बाधक है। व्यर्थ की चिन्ता, बकवाद और चेष्टा से खेद भाव प्राप्त होता है और नये कर्मों का बन्ध भी बढ़ता है, अतः सावधान हो आत्मभाव एवं वीतरागता की उपासना करो। अधिक क्या लिखुं? धर्मस्नेह में वृद्धि हो। ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीष पूर्वक सहजात्मस्मरण

(पत्रांक—३४०)

ॐ नमः

हम्पी

११-२-६६

भक्तवर्य श्री शुभराजजी,

पत्र मल्युं, महाज्ञानिओए परिग्रह ने पाप शा माटे कह्यु? कर्म अने कर्म-फल मां थी आत्म-बुद्धि त्यागी ते भणी मात्र साक्षी भावे जेम पोते रह्या तेम ज बीजाने रहेवा नु कही गया, जेम पोते

वर्त्या तेमज बीजाने वर्त्तवा नुं कही गया कारण के ते आचरण नुं फळ ज शांति छे छतां आ जीव ते शिक्षा ने अन्यथा करी पोतानी मति-कल्पनाए जड़ लाभ ना लोभे वर्ते अने शांति इच्छे ए केम बने? ते तमेज कहो?

चालवुं पोता ना मन ने मते अने पछी रोनुं, रोई ने ज्ञानिओ ने गले पड़वुं—के बचाओ! पण पछी ज्ञानिओ शुं करे? ज्ञानी नी एक पण आज्ञा सम्यक् पणे उठावी नाहि, त्यां ज्ञानी ने शी गरज? ॐ

'काल मो कुटुम्ब काज' छतां तेमां ज जीव ने रस छे. कारण के लोक लाज नड़े छे पण 'लोक लाज लारसी' जणाती नथी. नाक नीं लीट ने चाटवा मा मजा आवती हशे? नाना-सा अने वावासा वन्या एटले बस छकी गया. हे जीव प्रमाद छोडी जाग्रत था जाग्रत!

आप जेवा बुजुर्ग ने अधिकशुं कहेवुं? माताजी ए आपसौ ने आशीष जणाव्या छे. धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. ॐ शांतिः

सहजानन्दघन
हार्दिक आशीर्वाद!

(पत्रांक ३४१)

ॐ नमः

हम्पी ११-२-६६

शान्तमूर्ति भव्यात्मा श्री भँवरलालजी सपरिवार,

पुस्तक-पारसल मल्युं. प्रभु कृपा थी आनंद छे. ते आप सौने हो!

वन्ने काका-सा ने पूछी ने जवाब ल्यो के राग किंमती के वैराग्य? जो वैराग्य किंमतो छे ते यथे तेवा संजोगो शा माटे मूल्यवान न समजवा?

जो द्रव्य कूटस्थ नित्य होय तोज एक समान परिस्थितिओ-पर्यायो वन्या रहे. पण परिणामी नित्य द्रव्य नी पर्याय स्थायी केम रही शके? अने पर्यायो नुं परिवर्तन शुं द्रव्य ना आस्तित्व ने खतम करी शके? तो अमुकज परिस्थिति जीव शा माटे इच्छे छे?

परिस्थिति पलटे तेमा जीवने नुकशान के लाभ शो-शो? आ बधानुं निर्णयात्मक जवाब मेलवी लखी जणावजो।

सत्संग भवन ना खात मुहूर्त वखते समयसर अमुक व्यक्तियो हाजर न थई शकवा थी आगल ऊपर जोयुं जशे।

पंचरत्न नी पोटली विगेरे सामान पण न्होतुं हवे ते व्यवस्था करशो. आप सौ परिवार ने माताजीए आशीर्वाद जणाव्या छे. धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो।

श्री घूपियाजी, वहेरजो, वदलीआजी विगेरे ने पण आशीर्वाद जणावजो ॐ शान्तिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद,

(पत्रांक—३४६)

ॐ नमः

८-५-६६

भक्तवर्य (श्री विजयकुमारजी वडेर)

पत्र मल्युं, मानसिक स्थिति नुं दिग्दर्शन वांच्युं। ए बधी पोतानी बनावेली फिल्म सामे आवे छे. तेना थी पोते जीव जुदो ने जुदो छे. जुदापणा ने कायम राखी केवल निर्विकल्प उपयोगे पोताना ज भानमां बे घड़ी जीव टके तो आनंद नी गंगा मां निमग्न थवाय. अधिक शुं लखुं ?

अहिं केटलुं रहेवाय ते चोकस नथी. तमे ज्यांथी आवी ने स्थिरता थी अहिं साधना करी शको तेटलो टाइम तो नहिं ज रोकाई शकाय।

घणा सत्संगीओ नी भीड़ जामी छे. देहे बवाशीर नी कृपा पण विशेष छे. तेथी भीड़ थी कंटालो पण आवे छे. बेसवा मा फावतुं नथी, जमणा हाथ नी आंगलीए दर्द छे तेथी लखवां मां पण अनुकूलता नथी जेथी जवाब मां ढील करवी पड़े छे।

माताजी प्रसन्न छे. घणा ज आशीष जणाव्या छे. बदलियाजी दम्पती ने आशीर्वाद मारा तथा माताजी ना जणावजो, सुखभाई हुंपि छे.

तमारा माताजी, धर्मपत्नी, पुत्र-पुत्रीओ सर्व ने अम बने ना आशीर्वाद ॐ

—सहजानन्दघन अगणित आशीष

(पत्रांक—३४७)

हम्पी

ॐ नमः

२३-६-६६

भक्तवर्य श्री शुभराजजी श्री मेघराजजी श्री अगरचन्दजी श्री भँवरलालजी नाहटा सपरिवार.

श्री भँवरजी लि० दो और श्री शुभराजजी लि० १ पत्र क्रमशः मिले, हाल ज्ञात हुए। पर अबतक बवासीर की कृपा चल रही है, बैठा नहीं जाता अतः पत्रोत्तर नहीं दिया जा सकता जो क्षंतव्य है।

अंतिम सप्ताह से कंपली के एक वैद्य पुत्र के प्रयोग से दर्द में काफी राहत मिल रही है। संभव है कि विना ही आपरेशन मस्से जड़ जायें, ३ बाहर आए हुए हैं, अतः बैठा नहीं जाता।

तीन माह हुए अनहद ज्वलन और शूल वेदना सही गई और सही जा रही है समभाव पूर्वक जो कर्मक्षय के हेतु है।

कर्मनाटक है, अनित्य में नित्य की बुद्धि अब रखना नहीं है, नित्य में नित्य बुद्धि दृढ है. और देह रोग की इतनी फिकर नहीं है, केवल भव रोग की ही फिकर है और यह विश्वास भी दृढतम है कि भव रोग भी आगामी जन्म में संपूर्णतया मिट जायगा। उसे मिटाने के उपाय चालू हैं, फलतः आत्म शांति बढ रही है। आप सभी सुज्ञ हैं, और सारी चिन्ताएं हटाकर केवल भव रोग को मिटाने में ही अपनी सारी ताकत लगा दीजिए।

असार की चिन्ता आप ज्यादा करते हैं जो उचित नहीं है ज्ञान तो अज्ञान-अंधेरे को मिटाता है और उसे उसी कार्य में लगाना उचित है, न कि असार की देख भाल में। सुज्ञेषु किं बहुना ?

माताजी भी अस्वस्थ देह से हैं पर आत्मानन्द में स्वस्थ हैं। आप सभी को सपरिवार को हार्दिक आशीर्वाद कहा है। धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो। ॐ शान्तिः शांतिः

सहजानन्दघन अगणित आशीर्वाद !

श्री दीपचन्द जी सेठीया जो का कहना कि आज आपकी चिट्ठी मिली। अभी वैद्य को नहीं लाना दवाई की जरूरत नहीं है, आशीर्वाद कहना।

(पत्रांक—३४८) हम्पी

ॐ नमः ११-६-६६

भव्यात्मा भक्तवर्य श्री कोजमल जी

आपके पत्र तथा पुस्तकें सभी मिले हैं। जवाब किसी के द्वारा भिजवाने का कहा था शायद मिला होगा। बवासोर में काफी सुधार है। दर्द नहीं है पर बाहर का बड़ा था वह चौथा हिस्सा अवशेष रहा है तथा बाजूवाला थोड़ा बड़ा होकर शांत हो रहा है। दवाई कंपली वाले की अब तक लगाने की चालू है। पैरों में रसच भी काफी ठीक होता जा रहा है।

माताजी स्वस्थ है, आशीर्वाद लिखाती है। आश्रम में अभी तो भीड़ है। दूसरा पर्यूषण चालू हो रहा है। गत पूनम पर अनोपचंद जी श्रावक एवं उनकी मांसा आये थे, साम को वापस लौटे। गत दिन गुलाबचन्दजी सपरिवार उनकी बड़ी मां सा एवं नौकर बाई आये हैं। आपको याद किया है। बड़ी मां तो आपको याद आती ही होगी। पहाड़ पर बराबर बिना विश्रान्ति चढकर आ गई।

मोंघी बाई की मां सा को काफी अच्छा है। तुम्हारी तबियत ठीक होगी। धर्मध्यान ठीक चलता होगा। याद करने वालों को हार्दिक आशीर्वाद—ॐ शांतिः

—सहजानन्दघन अगणित आशीर्वाद।

(पत्रांक—३४९) हम्पी काती सुदि ८/२०२३

ॐ नमः

श्री नाहटा बन्धुओ,

पत्रो क्रमशः घणा मल्यां. जरा कफ प्रकृति नो उदय हतो, तेथी जवाब न अपाया, हवे आराम छे. बवासीर मां पण आराम छे। माताजी प्रसन्न छे. आप सौ ने हार्दिक धर्मस्नेह नूतन वर्षाभिनन्दन सह आशीर्वाद जणाव्या छे. जरा धर्मध्यान नो जोर लगावजो, ढीला थवा नुं शुं प्रयोजन छे ?

अहिं दीवाली ना त्रणे दिवसो अखण्ड धून मा वीत्या, चंचल आवी हती ते पाछी गई. अहिं हाल मां घणां भावुको छे सत्संग नियमित चाले छे.

धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो, धर्म स्नेहिओ ने हार्दिक आशीर्वाद जणावजो ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक ३५०)

ॐ नमः

हम्पी काती सु० ८/२०२३

(कोजमलजी बाफणा)

पत्र मिला। कफ रो उदय थो जिण सूं जवाब नहीं दे सका। अब शरीर ठीक है। मसा में भी आराम है। आसन लगता है। दिवाली के तीनों ही दिन अखण्ड धून में बड़ा आनंद रहा। मोहनदासजी भी यहीं थे। बम्बई से मेघ बाई, उनकी मामीना, पुत्र वधू, टावर टीवर, जेठा भाई, हीरा भाई, चंचल बाई आदि २० जणा आये थे। आधे रहे आधे गये। हीरजीभाई, उनकी पुत्री भी आये। देवराज भाई (भूवाजी के पति) लक्ष्मी वि० यहीं हैं। अब तुम्हारी तबियत ठीक हो गई होगी। सभी समेट कर यहीं आ जावो तो क्या हर्ज है।

मद्रास से रिखबदासजी स्वामी आये थे चार दिन ठहरे, बड़े ही खुश हुए अब के एक महीने की स्थिरता के इरादे से आवेंगे। अमीचंदजी भी साथ में आये थे। वे अब ठीक हैं।

बम्बई से चम्पालाल की चिट्ठी थी। माताजी प्रसन्न हैं अगणित आशीर्वाद कहे हैं। धर्म-ध्यान में वृद्धि करसो। ॐ शान्तिः

सहजानंदघन

सहजात्मस्मरणपूर्वक आशीर्वाद !

(पत्रांक—३५१)

ॐ नमः

हम्पी २३-१०-६६

भक्तवर्य, (देवीलाल रांका)

पत्र मिला। हाल ज्ञात हुए। यहाँ आनंद ही आनंद है। आत्मा स्वयं आनंद की मूर्त्ति है उसे नजर भर देखते ही बस आनंद की गंगा लहराने लगती है। केवल नजर को वहीं ठहराने की बात है। यह क्रिया तो दूसरों द्वारा होने की नहीं है, अतः क्यों दूसरों का मुँह ताकना ? ॐ

लोढाजी का पहुंच पत्र था, जवाब देना हाथ नहीं, फुरसद भी तो मिलनी चाहिए न ? आपकी सारी मंडली को डग वालों को तथा जो जो याद करते हों सभी को मेरा एवं माताजी का आशीर्वाद कहें। सुखभाई का जयजिनेन्द्र ! ॐ शांतिः

सहजानंदघन

आशीर्वाद

(पत्रांक—३५१)
ॐ नमः

हम्पी २६-१२-६६

भक्तवर्य श्री शुभराजजी आदि नाहटा बन्धुओ,

पत्र मिला, हाल ज्ञात हुए। जब तक अशुभ उदय है—अपना नाटक दिखाएगा, अतएव धर्म-ध्यान का जोर लगा कर यह शीघ्र कमजोर किया जाय। हिम्मत हार नहीं होना चाहिए।

मन्त्र स्मरण धारा अखण्ड बनाने की कोशीश करो। घर भरवाले सामुहिक जोर लगावो तो सरलता हो जाय। अधिक आपको क्या कहूँ?

चंचल आजकल जेतबाई के यहाँ है उसका पता :—

C/o देवराज वेलजी ठि० 6/198 गुजरात सोसाइटी दूसरा मंजिल Sion Bombay 22

औषधि प्रयोग से उसे दर्द शान्त है, ऐसा लिखती है, उसकी आगामी परीक्षा बीतने पर यदि आवश्यकता प्रतीत हुई तो आपकी भावना को उचित न्याय मिलेगा।

बवासीर में अभी बिलकुल आराम है। पर दीपाली से खाँसी की शिकायत थोड़ी बहुत चलती है।

वहाँ आपके सारे परिवार की तथा परिचित सत्संगी जनों को हमारा धर्मलाभ कहियेगा। धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन आशीर्वाद

साथ के माताजी के पत्र का आवश्यक अंश :—

(पत्रांक ३५२)
ॐ नमः

हम्पी ता० २६

श्रीमान् भाईजी तथा कुटुम्ब सर्व

आपनो पत्र वांची आणंद थयो। चंचल ना दवा अथवा आपरेशन माटे आपे बीकानेर आववा माटे आमन्त्रण आप्युं ते जाणीयुं पण अन्न जल पाणी नी वात छे। चंचलनी परीक्षा पत्या बाद नक्की थशे मारो पण भाव आपना लख्या प्रमाणे छे के बीकानेर नी सूकी हवा छे मुम्बई करतां त्यां आपरेशन सारा थता होय तो बहुज सारूं पण ए आपरेशन करतां जो दवा थी दरद जायतो वधारे सारूं छे। हुं तो आपरेशननुं नाम सांभली ने गभराई गई छुं. पण प्रभुनी कृपा छे के आत्मा नी पूरी पकड़ छे अने जड़ तथा चेतन ने चोवीस कलाक भिन्न पणे देखवा करूं छुं अेटले वांधो आवे एम नथी पण मारो हृदय बहुज नरम होवा थी आपरेशननुं सांभली मारी छाती दुखावो थई आव्यो छे. ते हजी सूधी चालु छे बाकी सांसारिक कामो नी मने चिन्ता के फिकर कांई पण नथी. फिकर छे मारे मोक्षनी अने ते मोक्ष तो जरूर हुं लईश ज अने ते पण आ देह पछी एक ज देह धारण करीने एमां जरा पण फरक पड़े एम नथी ए चोकस पणे मानजो.

भाईजी प्रभु भजन मां खूब मक्कम रहेजो. अेना थी मनमां अपूर्व शान्ति थशे.

लि० माताजी ना आशीष वांचजो

(पत्रांक—३५३) हम्पी

ॐ नमः ८-१-६७

भक्तवर्य श्री कोजमलजी !

पत्र मिला, हाल ज्ञात हुए। दमा की शिकायत हुई थी पर माताजी ने तुलसी पत्तों के उकाले द्वारा मिटा दिया है। १५-२० पत्तों का उकाला आहारपूर्व नित्य दिया जाता है। इसी से कब्ज में भी उपशमन रहता है। अच्छा हो यदि आप भी यह प्रयोग करें। शायद तुम्हारे हार्ट में राहत मिले।

माताजी ने तुम्हें हार्दिक आशीर्वाद लिखाये हैं। यहाँ सत्संग नियमित चलता है और भक्ति भी। हीरजी भाई, खेंगार भाई, हेमचन्द भाई सपरिवार, दलीचन्दजी सपरिवार मोंघी वाई, मेघवाई भुवाजी आदि सभी प्रसन्न हैं, याद किया है।

मूड विद्री तरफ का एक रसोया संजीव काती पूनम पूर्व यहाँ आगया है, ब्राह्मण होते हुए भी रोज जिन पूजा भी करता है और स्वभाव का भी बहुत अच्छा है। ३५ की उमर है तथा सोजत का एक युवक उत्तमचन्द केवल सेवा भाव से मुनीम का काम सम्भालता है। दीवाली से यहीं है।

जसराजजी, हीराचन्दजी और भूवाजी के तीन रूम बन गये हैं अतः रहने की सुविधा बढ़ गई है। कल होस्पेट में इन्दिराजी बड़ी केनाल का उद्‌घाटन के लिए आनेवाली है। आज यहाँ आश्रम के दर्शन के हेतु पुलिसमैनों की पलटन की पलटनें आई थी ! गत गुरुवार को होस्पेट का प्रोग्राम था, दो प्रवचन देकर सायं वापस लोटे। वस इतना सारा हाल सुनाया—अब रजा लेता हूं। धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो। ॐ शांतिः सहजानन्दघन हार्दिक आशीर्वाद

जो साथ मिले तो नित्यक्रम हिन्दी की १०० किताबें भिजवा दें—पैसे आप दे देवें और फिर यहाँ आवें जब ले लेना। ॐ पत्रोत्तर देना।

(पत्रांक—३५४) हम्पी

ॐ नमः ता० ६-१-६७

भक्तवर्य (श्री शुभराजजी नाहटा)

पत्र मिला, हाल ज्ञात हुए। सप्ताह से खांसी-दमा तद्दन शान्त है। बवासीर में भी आराम है। आप चिन्ता न करियेगा। चंचल के पत्र से मालूम हुआ है कि अभी उसे विलकुल दर्द नहीं है। सम्भव है कि दवाई से ही आराम हो जाय।

आपका स्वास्थ्य अब अच्छा होगा ? सांसारिक उलझनें निपटाते हुए मन्त्र स्मरण का जोर लगाते रहना। सारी जिन्दगी निरुपद्रव रूप में ही वीते ऐसे पुण्य संचय कहाँ हैं ? अतः समभाव में रहने की आदत सिद्ध करना है। साथवाला पत्र मेघराजजी को भेज दिरावें। वहाँ सभी निज जनों एवं साधर्मी जनों को हमारा आशीर्वाद कहें। धन्नुलालजी को फोन से आशीर्वाद पूर्वक कहें कि खुशी से हम्पी पधारें। ॐ शान्तिः सहजानन्दघन हार्दिक आशीर्वाद !

(पत्रांक—३५५) हंपी

ॐ नमः २८-१-६७

भक्तवर्य कोजंमलजी,

पत्र मिला। हाल ज्ञात हुए। यहाँ परम कृपालु की कृपा से आनन्द मंगल है। तुम्हें भी सदैव बना रहे—यही आशीर्वाद है।

माताजी तुम्हें बहुत याद करते हुए लिखाया है कि तुम्हारा एक खास काम है इसलिए शीघ्र यहाँ आ जाओ। यहाँ आने पर ही प्रयोजन बताया जायगा। हमारी भी इसमें सम्मति है कि जरूर आ जाओ।

यहाँ ठंडी नहीं है, खुशनुमा वातावरण है। यहाँ भक्तों की भीड़ कम होती जा रही है। अमीचन्दजी को अशान्ति तो बहुत है पर अभी ज्वर नहीं है और न खाँसी—ऐसा उनकी धर्मपत्नी जो अभी बलारी जा रही है कहा है। घेवरचन्दजी और पानीबाई भी जा रही हैं।

सोमवार को हीरजी भाई अलपई जा रहे हैं। मणि भाई, देवराज भाई आदि बहुत से गए। उत्तमचन्द का जिक्र पहले लिखा था, वह विचित्र आदमी निकला। कई जगह चोरी आश्रमों से करके आया था, यहाँ भी हाथ आजमा रहा था, फिर पलायन हो गया। कभी कदाच आहोर आवे तो आश्रम में इतला दी जाय। मोंघी बाई, उसकी धाजी खुश हैं और वे भी थोड़े दिन बाद सिवाना जावेंगे। मेघ बाई प्रसन्न है. अभी यहीं ठहरेगी। भुआजी सप्ताह के लिए गदग गई हैं। खेंगार भाई खुश है। वहां याद करनेवालों को हार्दिक आशीर्वाद। माताजी का भी आशीर्वाद! धर्म स्नेह में वृद्धि हो। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन—सहजात्म स्मरण पूर्वक आशीर्वाद!

(पत्रांक—३५६) हंपी

ॐ नमः १३-८-६७

भक्तवर्य (विजयकुमारसिंह बडेर)

पत्र मल्युं. हृदय व्यथा जाणी. पूर्व कर्म नो तमासो खरेज विचित्र छे. कंइक तो अत्यारनी खोटी प्रथाओ पण नडे छे. त्यां मध्यम वर्गवाला ने कंठगत प्राण आवी जाय छे. ज्यां जुओ त्यां आग सलगी रही छे—एवो आ संसार तेने असार जाणी ने तेओ तेने दूर थी नमस्कार करी आध्यात्मिक पंथे पड्या तेने नमस्कार छे.

आवारे रूढिओ नो बंधन तोड़ी ने सादी अपनाव्या विना तमारी आफत क्यां टली जवानी छे? रूढीओ ने वलगी रही ने बधुं पतावया इच्छो छो त्यांज मुसीबत छे. तेने अम जेवा तो शुं भगवान महावीर जेवा पण पहोंची नहिं शके अधिक शुं?

माताजी ए घणाज स्नेह पूर्वक आशीर्वाद जणाव्या छे. सुखभाई ए याद.

फोन थी पारसन—श्री धन्नुलालजी ने हार्दिक आशीर्वाद जणावजो.

नाहटा, वदलिया, धूपियाजी ने पण जणावजो अने तमारा घर भरना तमाम मेम्बरों ने पण आशीर्वाद।

सहजानन्दघन आशीर्वाद !

(पत्रांक—३५७) हंपी

ॐ नमः १६-२-६७

भक्तवर्य श्री शुभराजजी सा'ब, श्री मेघराजजी सा'ब तथा श्री भँवरलालजी सा'ब सपरिवार

आप त्रणे ना पत्रो मल्यां. विगत वधी जाणी. अने संसार नाटक ने नाटक रूपे जोवानुं जाणतां साक्षी भावे रही मोज माणी. जेने साक्षी भावे रहेतां न आवड़े तेने भगवान पण सुखी बनाववा मां समर्थ नथी तो अम जेवा नी सी विसात ?

जो संसार मां रहेवा नी वधी अनुकूलता मल्या करे तो जीव तेमांज राची ने आत्मा ने भूली ज जाय, मांटे भगवाने प्रतिकूलताओ सर्जी ने महान् उपकार कर्यो छे. ते कोई भाग्यशाली ने हित रूप थई पड़े छे. तमे पण भाग्यशालिओ तो खरा ! ॐ

आ देह स्वस्थ छे. माताजी पण प्रसन्न छे. तेमणे आप सौने हार्दिक अगणित आशीर्वाद जणाव्या छे. अने प्रभु भक्ति वड़े साचा सुख ने पामवा मां प्रमाद न करवा जणाव्युं छे. मानवा न मानवा मां तमो स्वतन्त्र छो. झांझवा ना जल नी प्राप्ति वड़े तृपा छिपाववा ना ख्याल छोड़ो तो सारूं।

सौ परिवार ने आशीष—धर्म-स्नेह मां अभिवृद्धि करजो ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन

हार्दिक आशीर्वाद

(पत्रांक—३५८) हंपी

ॐ नमः २३-२-६७

भक्तवर्य, (विजयकुमारसिंह वडेर)

आज शाम को आपका दवाई पारसल मिला। आवश्यकता न होने पर भी आपने क्यों भेजा ?

यहाँ प्रभु कृपा से आनंद है। वहाँ भी आप सभी को हो। माताजी ने आशीर्वाद फरमाया है।

घर भर वालों को हमारा आशीर्वाद कहिएगा ! धर्मध्यान में अभिवृद्धि हो ! ॐ आनंद आनंद

सहजानंदघन आशीर्वाद।

(पत्रांक—३५९)　　　　　　　　　　हंपी ११-३-६७

ॐ नमः

अनन्य आत्म शरण प्रदा, सद्गुरु राज विदेह।
पराभक्ति वश चरण में, धरूं आत्म बलि एह॥

महात्मा श्री बाबूलाल भाई सपरिवार,

पत्र मल्यु विगत सर्व जाणी तमारी भावना उत्तम छे. देव गुरु अने धर्म तो मधु बिन्दु मां आसक्त जीवने आह्वान करी रह्या छे के तूं ऐ मधुबिन्दु नी आशा छोडी ने आ तरफ जो. तुं अमारी तरफ तारी भुजा पसार तो तने अमे अद्धर उपाडी विमान मां बेसाड़ी ने समाधि मार्गे दोरी जई तने तारा अनंत सुख ना धाम मां पहोंचाड़ी दइए, पण आजीव ने मधुनी मिठास आगल आत्म सुख नी कई कदर नथी. अने तेथी संसार कूप मां अद्धर लटकी ने चारों तरफ दुःख दु ख ने दुःख होवा छतां ते दुःख ने गणकारतो नथी. अने देव-गुरु धर्मनी सामे पण जोतो नथी। केवी आश्चर्य नी वात छे।

कोई जीव तरवा नी इच्छा न होय तो तेने तीर्थंकर पण तारी शकता नथी· उपादान नी तैयारी विना निमित्त अकिंचित्कर छे. अने जो कोई तारी शकता होत तो तीर्थङ्करोए एकेय जीव ने आ संसार मां रहेवा न दीधा होत माटे तमे जे धारो छो ते धारणा बराबर नथी ते समजोवा हवे फरी अहिं आवो त्यारे विशेष चर्चा करशुं·पत्र व्यवहार थी समाधान नहिं थाय. नंदीवर्द्धन-वसुधा अने तेनी बा बधाय ने आशीर्वाद जणावजो. धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. श्री चुन्नीलालभाई ने पण धर्मलाभ जणावजो·माताजीए तम सौ ने अगणित आशीर्वाद जणाव्या छे. खेंगारभाई विगेर आनंद मां छे. ॐ शांतिः

सहजानंदघन—धर्मलाभ

ता० १२

आजे मणिभाई हीरालाल भाई विगेरे सुख पूर्वक अहिं पोता छे अेमना घरे फोन थी बधाने आशीष जणावजो प० पू० उपाध्यायजी महाराज मांडवी पोंचवाना छे तेमने पत्र लखो त्यारें वंदना जणावजो.

बाबूलाल माधजी शाह २५, समुद्र मुदली स्ट्रीट, मद्रास—३

(पत्रांक—३६०)　　　　　　　　　　हंपी

ॐ नमः　　　　　　　　　　१२-३-६७

भव्यवर्य (श्री फौजमल बाफणा)

पत्र मिला। हाल ज्ञात हुए। हमारा तथा माताजी का स्वास्थ्य बहुत ही ठीक है, तुम्हारा भी ठीक जानकर प्रसन्नता हुई। जिसको मोह न हो उसे केवलज्ञान होता है। तुम्हें मोह नहीं है तब तो……..? कंई वातां बनावो ?

अभी यहाँ का मौशम अच्छा है। मद्रास वाला हीरालालजी डोकरा शांतिसूरिजी महाराज रा भगत आया है। थांने याद करे है, दो दिन वाद मद्रास जाय ने वापस आवेला, थांने बुलावे है, फिर थारी मरजी।

माताजी ने याद किया है कागद देवा री तो फुरसत को नहीं। आशीर्वाद भेजिया है। हिम्मतमल का वनारस रे पत्र है, थें लिखो जब आशीर्वाद लिख देज्यों। धर्मध्यान में अभिवृद्धि हो।

ॐ शांतिः सहजानंदघन

हार्दिक आशीर्वादपूर्वक सहजात्म स्मरण

(पत्रांक—३६१)

हंपी १२-३-६७

ॐ नमः

भक्तवर्य श्री शुभराजजी साव सपरिवार

पत्र मिला, हाल ज्ञात हुए। प्रभु कृपासे यहां हम सभी स्वस्थ एवं प्रसन्न हैं, आप सभी का भी चाहते हैं।

१ गाय का दूध पाव भर ताजा दोहकर विना गरम किये ही उसमें सोडावाटर १ वोतल मिला तुरंत पीना सुवह में; तथा शांम को छटांक घी गरम दूध में मिला पी लेना। ५-७ रोज इसी प्रयोग को जारी रखने से पीलिया ठीक हो जाता है। अतः प्रयोग करके देख लें।

२ आपकी आँते मलावरुद्ध हैं अतः तोला दो तोला गौमूत्र ताजा सुवह में लेकर तुरंत जितना वख्त छानेंगे, पीने के वाद उतने दस्त क्रमवद्ध आयेंगे थोड़े दिन में आंत सफाई होगी फलतः खाज खुजली शांत होने लगेगी। यदि ठीक समझें तो प्रयोग करके देखियेगा।

३ चंचल को दवाई से अभी तो आराम है, आगे परीक्षा के वाद सोचा जायगा।

४ सुंदरलालजी सा'व का शरीर छूट गया, यह जान कर वैराग्य में वल मिला, आप को भी मिला ही होगा।

५ आप श्री गिरनारजी-सिद्धाचलजी जाना चाहते हैं, अच्छी वात है। पर पीलिया शांत होने के वाद भी शीतळ वातावरण में रहना स्वास्थ्यप्रद होगा. अतः आप इस विषय में गहराई से सोचें।

६ अगरचंदजी सा'व सपरिवार ठीक होंगे, हमारा धर्मलाभ कहें। मगनवाई आ गई होगी उन्हें भी हमारा धर्मलाभ कहें। माताजी का आप सभो परिवार आशीर्वाद स्वीकारें।

७ वीकानेर के भक्तजनों की भावना लक्ष में है पर उदय की वात है। धर्मस्नेह में अभिवृद्धि करें। गोपीचंदजी नाहटा, जतनमलजी-विजयजी नाहटा, आदि सभी को धर्मलाभ!

ॐ शांति

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद!

(पत्रांक—३६२)

हंपी १३-५-६७

ॐ नमः

भक्तवर्य श्री मेघराजजी सा'ब सपरिवार, (कलकत्ता)

पत्र संप्राप्त हुआ। हाल ज्ञात हुए। शुभराजजी सा'ब का पत्र बीकानेर से आया है। सारा हाल मालुम हुआ, जवाब भी दे दिया है।

शान्तिनाथ प्रभु की मूर्ति के विषय में आपने जो लिखा, लक्ष में जमा करेंगे। अभी तो सत्संग-भवन निर्माण का ही ठिकाना नहीं है, कार्य प्रारंभ होने पर सोचा जायगा।

स्वास्थ्य हम सभी का बहुत अच्छा है। माताजी खूब प्रसन्न हैं। आप सभी को हार्दिक आशीर्वाद कहा है।

सत्संग नियमित चल रहा है। सत्संगी जनों की भीड़ कम है। सभी सत्संगी भव्यात्माओं को हार्दिक आशीर्वाद कहियेगा। ॐ शांति

सहजानंदघन हार्दिक धर्मलाभ

(पत्रांक—३६३)

हंपी १६-२-६७

ॐ नमः

भक्तवर्य (श्री शुभराजजी नाहटा)

पत्र मिला, हमारा पत्र भी आपको मिल गया होगा, जिसमें चंचल विषयक हाल लिखा था। यहाँ सत्संग भवन निर्माण के लिए कोई जवाबदार व्यक्ति को फुरसत नहीं है! लकड़ी के गट्ठे तो खरीद कर हास्पेट दादावाड़ी में आ गए हैं। पर खाती द्वारा काम करानेवाला जब आप जैसा कोई तैयार होगा तब देखा जायगा। अभी खाती को बुला कर कौन जवाबदारी ले।

मंदिर में शांतिनाथजी की २७ से ३१ इंच तक की भव्य मूर्ति एक ही स्थापन की जायगी। वैसी कोई हो तो नजर में रखियेगा। ज्यादा नहीं चाहिए और मामूली भी नहीं चाहिए।

अब आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा? आपके घट में लीवर को ठीक करने का प्रयोग जब तक चालू रहे— यात्रा बाद में ही ठीक रहेगी।

यहाँ माताजी, जेतबाई, मेघबाई, सुखभाई आदि सभी प्रसन्न हैं। सभी का धर्मस्नेह माताजी का हार्दिक आशीर्वाद।

सभी स्नेही जनों को धर्मलाभ! पत्रोत्तर दें, धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो। ॐ शांतिः

सहजानंदघन अनेकशः आशीर्वाद

(पत्रांक—३६४) हम्पी

ॐ नमः २-४-६७

भक्तवर्य (कोजमल वाफणा, अहोर)

पत्र मिला। हाल ज्ञात हुए। यहाँ आनंद मंगल है, वहाँ सदैव बना रहो। चम्पालालजी मद्रास लौटते हुए आए थे। माताजी प्रसन्न हैं—अशीर्वाद कहा है। परमकृपालु की भक्ति में लीन रहो—यही आशीष, बाईजी वि: ने याद किया है।

सहजानंदघन—सहजात्मस्मरण सह आशीर्वाद।

(पत्रांक—३६५)

ॐ नमः हम्पी २१-४-६७

भक्तवर्य श्री शुभराजजी साव

आहोर से आपके सम्बन्ध में समाचार मिला। साथीदारों के साथ सकुशल तीर्थयात्रा सम्पन्न हुई होगी स्वास्थ्य आप दम्पती का ठीक होगा। यहाँ हम सभी स्वस्थ एवं प्रसन्न हैं। चंचल के अेपेण्डीक्स का ऑपरेशन १-५-६७ को बम्बई में ही निश्चित हुआ है. तदनुसार माताजी २८-६-६७ को यहाँ से प्रयाण करके बम्बई ३०-४ के पहुँचेंगे। जेतबाई के वहाँ ही ठहरेंगे, ज्ञात रहे।

पावापुरीजी से श्री मेघराजजी साव का पत्र था जवाब में जहाँ हों आपही आशीर्वाद लिख दिरावें। श्री विचक्षणश्रीजी का विजयवाड़ा से पत्र था, वे वहाँ पहुँच गये हैं. मद्रास चातुर्मास होगा। कोटावाली सेठानीजी एवं मीनाबाई भी साथ में हैं। आपको पत्र में याद किया है एवं आशीर्वाद फरमाया है। माताजी ने भी आप सभी का हार्दिक आशीर्वाद कहा है। कब तक बम्बई पहुँचेंगे? लिखावें।

धर्मध्यान में अभिवृद्धि हो। सारी मंडली को हार्दिक आशीर्वाद कहें। ॐ शांतिः

सहजानंदघन धर्मलाभ

(पत्रांक—३६६)

ॐ नमः हम्पी २१-४-६७

परम कृपालुदेव ने अभेद भक्तिए नमो नमः

भव्य आत्मा श्री घेवरचन्दजी, कोजमलजी तथा श्री चंपालालजी सपरिवार

आप त्रणे नां पत्रो मल्यां विगत वधी लक्ष गत थई, कृपालुनी कृपा थी अहिं आनंद वर्त्ते छे. ते तम सौ ने वर्त्तो, प्रभु भक्तिमां लीन रहेजो, अहिं सत्संगीओ नो भीड़ छे. चंचल बाई ना अेपेण्डीक्ष नुं ओपरेशन १-५-६७ ना रोज मुंबाई मां थशे, तेमाटे माताजी अहिं थी २६-४-६७ ना प्रयाण करी त्यां पहोंचशे, महिनो भर त्यां लागो जशे, श्री अमीचन्दजी नी तबियत ठीक-ठीक चाले छे.

त्यां कल्याणवि० महाराज ने हाथे कृपालुदेवनी प्रतिष्ठा थई रही छे से आश्चर्य नी बात गणाय. कृपालुदेव ना शासन नो जयजयकार वर्त्तो! अेना शरण मां जीव आवे तो निहाल थई जाय, माताजीए आप सौ ने हार्दिक आशीर्वाद जणाव्या छे. वे दहाड़ा उपर पारस अेनो सालो अने मोहन त्रणे परिवार सहित आव्या हता, बीजे दिवसे गया. धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि करजो. ॐ शान्तिः

सहजानंदघन सहजात्म स्मरण सह हार्दिक आशीर्वाद!

(पत्रांक—३६७)

हम्पी

ॐ नमः

१३-४-६७

परम कृपालुदेव को पराभक्ति पूर्वक नमस्कार!

भक्तवर (वैद्य कोजमल वाफणा)

पत्र तथा ५ नित्यक्रम पुस्तकें मिले। लालचन्द वाफणा तो यहाँ आये नहीं किन्तु होसपेट से आसुरामजी ने पुस्तक भेजे हैं। तुम्हारा शरीर अस्वस्थ रहता है, शरीर गुण धर्म ही ऐसा है अतः शरीर के प्रति समभाव रख कर आत्मभावना में लीन रहना। आत्मा में रोग नहीं हो सकते अतः स्थितप्रज्ञ रहना।

हमारा तथा माताजी का शरीर बराबर है। कच्छ से इस शरीर का छोटा भाई मुरारजी उनके ससराजी तथा दो जणा और आये है. महीना भर ठहरेंगे। बाई मेघबाई, भुवाजी विगेरह आनन्द में हैं, बाई का छोटा लड़का लक्ष्मीचन्द आया है और तीसरे नंबर का १८ तारीख के बाद अपनी पत्नी और २ भानजी को लेकर आने वाले हैं। और भी कई सत्संगी आने वाले है। अभी ठीक संख्या में सत्संगी यहां हैं। थें प्रतिष्ठा के बाद आ सको तो आईजो।

माताजी ने बहोत बहोत आशीष कहा है। और सारी मंडली ने भी जय सद्गुरु वंदन कहा है। चंपालालजी आहोर आ गये होंगे। उनका पत्र था, आशीर्वाद कहना। धर्मध्यान में अभिवृद्धि करना। आपका बेटा रतन मोकलसर जाने वाला है। हरकचंदजी यहीं हैं। घेवरचंदजी होसपेट म्युनिसीपालिटी के चेयरमैन तथा कांग्रेस के प्रेसीडेण्ट बने हैं। बेहारी का अभी समाचार नहीं है। ॐ शांतिः

सहजानन्दघन अगणित आशीर्वाद

(पत्रांक—३६८)

हम्पी ३०-४-६७

ॐ नमः

भक्तवर्य (रांकाजी)

पत्र मिला। हाल सब अवगत हुए। अगास आ०-निवासियों में से ही वह था जिसने यहाँ आपकी हाजरी में ही अपना खजाना खोला था। गच्छवासियों की-सी वहाँ की स्थिति है। बेचारे कर्माधीन जीव हैं, दयापात्र हैं। विचक्षणश्री जी आदि का चातुर्मास मद्रास के लिए तय हुआ। अतः वे बेजवाड़ा तक पहुंच गयी है। वापसी में आने की भावना रखतीं हैं।

कल जयानंद मुनिका कच्छ-मांडवी से पत्र था, जिसमें आपका भी नामोल्लेख था।

यहाँ भी का० १५ को तो प्रति वर्ष जयन्ती महोत्सव मनाया ही जाता है, २०२४ में विशेष रूप में मनाया जाएगा।

कृपालु के जन्म भवन श्री ववाणिया में आगामी विशेषतः तीन दिन के आयोजन पूर्वक महोत्सव मनाने का तय हुआ है। कृपालु की सुपुत्री जवलबा ने हमें भी आमन्त्रित किया है किन्तु चा० काल के कारण जाना हाथ नहीं। कल विजय मुहूर्त में यहाँ से माताजी ने बम्बई की ओर प्रयाण किया। आज मध्याह्न बाद वे वहाँ पहुंच जाएंगी और कल सोमवार को आठ बजे आपकी सुपुत्री चंचल बाई के अपेंडिक्स का आपरेशन होगा। २०-२५ दिन पश्चात उसे साथ लेकर यहाँ आवेंगे। सत्संग क्रम नियमित चल रहा है। सत्संग की अनवरत कामना भी सत्संग है अतः आप धैर्य रखें। सुखलालजी आदि सभी याद करते हैं। धर्मस्नेह में अभिवृद्धि करियेगा। ॐ शांतिः

सहजानन्दघन

हार्दिक आशीर्वाद

(पत्रांक—३६६) हंपी

ॐ नमः १७-५-६७

भव्यात्मा वैद्य कोजमलजी एवं चम्पालालजी रमेशकुमार जयन्तीलाल आदि सपरिवार,

कल शाम पत्र मिला। हाल सभी ज्ञात हुए। श्री घेवरचन्दजी बेहारो आ पहुंचे हैं, कल पत्र था। यहाँ आवेंगे तब आपके नित्यक्रम मिलेंगे। और जो दूसरी वस्तु दिलाई है वह तो उन्होंने लक्ष्मीचन्दजी को सुप्रत की है—ऐसा लिखा है। सुखलाल ने श्री मिश्रीमलजी के उपर ऐसा क्या लिखा है, वह हमें लिख भेजें और उसकी प्रतिक्रिया क्या हुई? वैद्यराज ने ऐसी फरियाद कुछ समय पहले लिखी थी, वह पत्र तो दलीचन्दजी ने शायद लिखा था, ऐसा पूछने पर सुखलाल ने जवाब दिया। वह पत्र यदि मारवाड़ी में लिखा हुआ हो तो वह दलीचन्द का लिखा हुआ मानना और हिन्दी में किन्तु मराठी मरोड़ में लिखा हुआ हो तो वह सुखलाल का समझना! हमें इस विषय में कुछ मालूम ही नहीं, न तो कभी कोई जिक्र हुआ और न पत्र पढाया गया। फिर भी यदि किसी ने भूल कर भी ली तो न तो आश्रम का अपराध है और न हमारा। इसलिए परमार्थिक भावना में फरक न लाना चाहिए। क्योंकि पैसे की महिमा नहीं प्रत्युत पारमार्थिक भावना की महिमा है। जिसके सत्संग से पारमार्थिक लाभ होता हो तो उस महान् लाभ के हेतु कई अड़चनें आती हो, अपमान होता हो तो भी उसे अमृत समझना चाहिए, क्योंकि मान कषाय को जो कि महान् शत्रु है, खतम करने का सुअवसर मिलता है। मुमुक्षुओं को मान से कई गुणा अधिक अपमान लाभकर्त्ता सिद्ध होता है। यदि मान को ही प्रिय बना रखेंगे तब तो आत्मशुद्धि शक्य ही नहीं! दूसरी दृष्टि से विचारें तो तो यदि किसी ने अविवेकपूर्ण वर्ताव

किया तो उसे सुधारने की बुद्धि से कुछ प्रयत्न हुआ तो यह ठीक ही है। इस दृष्टि से ही आप दोनों ने जो लिखा—न्याय संगत है। अन्यथा उसकी गलतियों कीपरम्परा रुक नहीं सकती। पूछने से सुखलाल बताता है कि हमने तो ऐसा कुछ भी लिखा हो—ध्यान में नहीं है। फिर भी यदि लक्षफेर से कुछ लिख दिया हो तो मैं उसकी हार्दिक क्षमा प्रार्थना करता हूं। आप जाँच करें कि दस्तक किसके हैं? और कौन से कटु शब्दों का प्रयोग हुआ है? तथा प्रतिक्रिया क्या हुई? हमारी ओर से आप उन्हें शान्त्वना दें। यदि मूल पत्र अथवा उसकी नकल भेज सकें तो हम उसका उचित न्याय दे सकें। यहाँ एक तो मुनीम नहीं है, इसलिए बोझ सारा सुखलाल के शिर पर रहता है जिसे उठाने की योग्यता इसमें नहीं है। दूसरा—इसको बचपन से कुछ छल लग गया था। उसके दौरे के समय उसे भान तक नहीं रहता था। हमारे पास आने के बाद वह कम होता चला। तो भी दो-चार मास में कभी-कभी आता था। दो बार तो उस स्थिति में हमें कहे बिना ही जंगलों में भाग गया था। एक बार खण्डगिरि में तथा दूसरी बार यहाँ तीन साल पर; हमारे सामने दौरा आ जाय तो वह शीघ्र शांत हो जाता है। अभी काफी दिनों से वैसा नहीं देखा। शायद उस स्थिति में किसी को कुछ लिख दे तो सामने व्यक्ति का हृदय उलट-पलट हो जाय—आश्चर्य नहीं। १ बार घी के व्यापारी को वैसी दशा में कुछ अंट-संट लिख दिया था, जिसके परिणाम स्वरूप वह आश्रम के प्रति शत्रु बन गया। तथैव मिश्रीमलजी चुनीलालजी के प्रति यदि उस हालत में कुछ लिख दिया हो तो सम्भव है कि उनके दिल में चोट लगे ही लगे। उस घाव को भरने के लिए हमने इसकी वास्तविकता का दिग्दर्शन कराया। आप दोनों समझदार हैं और निश्चय कर सकते हैं कि उस हालत में सुखलाल क्षमापात्र है। अतः आपके मित्र को तथ्य का ख्याल दें! और उस अपराध को क्षमा करने को कह दें। माने या न मानें, वे स्वतन्त्र हैं। ऐसी हालत में सुख के शिर का बोझ हलका करने का निर्णय कर लिया है। थोड़े से दिनों में ही कोई न कोई मुनीम ज्यादा पगार देकर भी नियुक्त करने का कार्य ट्रस्टियों के ऊपर लगा दिया है पर उसका अमल करना-न-करना उनके अख्तियार की बात है। दो तीन जगह यह चर्चा चालू है। फिर भी जो होनहार होगा—वह होकर रहेगा, हम अधिक क्या कर सकते हैं? वैद्य को ही इशारा करते हैं कि तुम यहीं बने रहो। सत्संग लाभ स्वास्थ्य लाभ और कुछ आप-नाप के ऊपर नजर मात्र रखने की सेवा का लाभ—सब कुछ भलाई हो सकती है। पर इनका मोह छूटे तब न? संस्थाएँ कोई अकेले से नहीं चलती। झाझा हाथ रलियामणा। अस्तु!

चंचल बाई का आपरेशन सफलता से हुआ। तबियत में काफी सुधार है। अब तो वह B. A फाइनल भी हो गई। अतः माताजी उसे लेकर २५-५ को यहाँ पहुंचनेवाली हैं। साथ में ४-५ व्यक्ति भी आवेंगे। महोत्सव तो सम्पन्न हो चुका होगा? कोई विघ्न नहीं हुआ होगा? सब कुछ कैसा हुआ? संक्षेप में हाल लिखें। हम्पी आश्रम में केवल मुमुक्षु भाई-बहन के नाम की आमन्त्रण पत्रिका चार-छः दिन पर ही आई थी। यहाँ बम्बई से ८-६ सज्जन आये हुए हैं। कच्छ से मुरारजी भाई आदि ४ आदमी आये थे जो २० दिन के बाद गये। मेघबाई का परिवार भी ६-७ व्यक्ति आये थे माह भर

ठहर कर सोमवार को गए। सोमवार को यहाँ जोरदार वर्षा हुई, कुण्ड भर गये। गर्मी शांत हो गई। अतः अब वैद्यराज आवे तो मौसम अच्छा है।

सुखलाल तथा मेघबाई आदि ने जय सद्गुरु वन्दन कहा है। वहाँ सभी प्रिय जनों को हमारा हार्दिक आशीर्वाद। ॐ शांतिः

सहजानन्दघन—हार्दिक आशीर्वाद सह सहजात्म स्मरण!

ओ वैद्यराज! एक्जिमा फेर चालू हो गया है। बवासीर तो बिल्कुल शांत है।

(पत्रांक—३७०)

हंपी २८-६-६७

ॐ नमः

भक्तवर शुभराजजी सा'ब सपरिवार (पालीताना)

आपना बधाय पत्रो मल्या. तमारी तबियत ने लीधे जरा फिकर तो थाय, पण आ स्थिति मां दादाजी नुं स्मरण अखण्ड राखो तो शीघ्र फायदो थाय. माटे बधी चिन्ता छोडी आत्मभान पूर्वक दादाजी नुं मन्त्र रट्या करजो.

नणंद-भोजाई ने मारा आशीर्वाद जणावजो. तबीयत सुधर्ये आ तरफ आववानुं राखजो. धर्म-स्नेह मां अभिवृद्धि करजो. बीकानेर बधाने आशीष लखजो। ॐ शान्तिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद

(पत्रांक—३७१)

हंपी १२-७-६७

ॐ नमः

भक्तवर्य (वैद्य कोजमलजी बाफणा)

थांरा कागद पुगो। चम्पाजी रे कागद के साथ थांरा कागद रो जवाब पेढो दीधो थो फेर थांरो नहीं तो मारो भी नहीं अबार अेग्जिमारी गड़बड़ ज्यादा हो गई। टाप टीप करां हां।

माताजी प्रसन्न हैं। थांने तथा उठा रा भगतां ने घणा-घणा आशीर्वाद लिखाया है। चंचळ बाई २-७ को बम्बई पहुंची और एम० ए० के कोर्स को अपनाया है। तबियत अच्छी है।

सुखलाल, मेघबाई, कस्तूरबाई, जीवनभाई दम्पति वि० का सादर जय सद्गुरु वन्दन! १६-७ को बदलिया दम्पती तथा अहमदाबादवाले लालभाई, सोमाचापा आदि ६।८ जणा यहाँ पहुँचनेवाले हैं। भवानीमंडी से १ साधक चौमासा करने आया है। अब थांरी गाड़ी किसतरह चले है? भगति तो ठीक वे है ने? अठे कद पधारो? पूनम को नीलगिरि से अनोपचंदजी सपरिवार आवेंगे। अजीतकुमार को भी लावेंगे। थे तो कोरी मीठी-मीठी वातां करो हो। थांरी मित्रमण्डली ने आशीर्वाद। ॐ

जय कृपालुदेव हार्दिक आशीर्वाद!

(पत्रांक—३७२)

हंपी २४-७-६७

ॐ नमः

भक्तवर्य श्री कोजमलजी तथा चम्पालालजी

पत्र मल्यो, गत अग्यारसे आश्रम स्थापना दिन होवा थी प्रतिवर्ष नी माफक मोटी पूजा अने गुरु पुनमे अहिं तो भक्तिनी रेलमछेल प्रवही. अमदावाद थी कृपालुदेव नी प्रत्यक्ष सेवा नो लाभ लेनारा श्री सोमाभाई सुत श्री लालभाई वि० ८ जणा तथा नीलगिरि थी झावकजी वि० ७ जना हैदराबाद-गुलबर्गा-हुबली-कंपली-बेल्लारी-गदक विगेरे निवासिओए भक्ति मां खूब रंगत जमावी. सत्संग नी गंगा मां गोता लगावतां बीजुं कांइ याद रहेतुं नथी तो पत्रोत्तर क्यां सूझे ?

मांताजी, बाई वि० बधा मस्त छे. माताजीए हार्दिक आशीष जणाव्या छे, झावकजीए खूब याद कर्या छे, धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो ॐ शांतिः

सहजानंदघन सहजात्म स्मरण, अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक—३७३)

हंपी

ॐ नमः

२४-७-६७

भक्तवर्य श्री सुमराजजी सपरिवार

पालीताना से भेजा हुआ पत्र मिला। तदनुसार आप बीकानेर पहुंच कर चिकित्सा करवा रहे होंगे और अब स्वास्थ्य ठीक होगा, हाल सब लिखियेगा।

१६-७ की रात को पू० श्री उपाध्यायजी लब्धिमुनिजी महाराज साब का देहविलय का तार था। माविभाव ! उनसे पत्र व्यवहार चालू था।

यहां हमारा माताजी एवं आश्रम वासी सभी का स्वास्थ्य अच्छा है। गत गुरुपूर्णिमा के अवसर पर अहमदाबाद से ७ और नीलगिरि से झावकजी आदि ७ तथा अनेक स्थानों से भक्तगण आये थे, अभी कुल संख्या है। भक्ति में रंगत अच्छी जमी थी।

दादाजी की मूर्त्ति सहित स्थापनाचार्य चन्दन के ८ जोड़ी बनवा कर विचक्षणश्रीजी को मद्रास भेजा है और ४ जोड़ी झावकजी ने ली।

वहां श्री मेघराज जी, श्री अगरचन्दजी आदि सभी स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे। बदलियाजी दम्पती यहां आए हैं। दादाजी की बड़ी पूजा ११ के दिन पढाई गई थी। जो प्रतिवर्ष पढाई जाती है। यहां वर्षा काफी है, वहां भी हुई होगी।

-नरेंद भोजाई को माताजी तथा हमारा आशीर्वाद लिख भेजियेगा। और बीकानेरमें भी आपके सारे पारिवारिकों को भी हम दोनों का आशीर्वाद कहियेगा।

स्वास्थ्य का खबर लिखियेगा। धर्मध्यान में दृढ़ रहियेगा। ॐ शान्तिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद !

चंचल M.A में भर्ती हुई, स्वास्थ्य अच्छा है।

हंपी
७-८-६७

ॐ नमः

अनन्य आत्म शरण प्रदा। सद्गुरु राज विदेह।
पराभक्ति वश चरण में। धरूं आत्म बलि एह।

भक्तवर्य देवीलालजी सपरिवार

आपके दोनों पत्र मिले। हाल अवगत हुए। परम कृपालु को पावन कृपा से यहां आनन्द ही आनन्द है। जो विश्वभर के तमाम जीव सम्प्रदाय को भी प्राप्त हो।

आप अपनी सत्संग मंडली समेत यहां भाद्रपद-मास में आना चाहते हैं। बहुत ही प्रसन्नता की बात है। आपकी यह भावना सफल हो यही आशीर्वाद है। यह आशीर्वाद अपनी मित्र मंडली को भी पहुंचा दीजिएगा।

जिस व्यक्ति के लिये साथ में लाने की आज्ञा मंगवाई, वह व्यक्ति पूर्व आश्रम वासियों के प्रति प्रीति पात्र नही बन सका था, क्योंकि एक तो दादावाड़ी के नाम का चन्दा इकट्ठा करना दूसरे अन्य व्यक्तिओं से सेवा लेना प्रत्युत देना नहीं एवं तीसरे कारण में रसोई घर में से चोरी से समान हड़पना और नजर आने पर माया मृषावाद का सेवन करना जो अनन्त संसार का हेतु हो सकता है अतः पुनः वैसा वातावरण उपस्थित न हो यही हम चाहते हैं, अधिकस्या लिखूं? और यह बात उनके कान तक न पहुँचे ऐसी सावधानी आप अवश्य रखे, अन्यथा व्यर्थ को हम उनके वैमनस्य पात्र बनेगें। यह एक धर्म संकट आपको तथा हमको महसुस होगा, तथापि सावधानी पुर्वक होना अनिवार्य है।

यहां पूर्व आपने आश्रम के विरोधी दल का नाटक प्रत्यक्ष देखा, वह स्वतः अपने पाप के बोझ से ढह गया बाद में भी दूसरा दल तैयार हुआ और बिखर गया अब कई अर्से से यहाँ रामराज्य सा प्रतीत होता है। आश्रम विकास भी शनै-शनै चालू है। अब जबकि आप यहाँ पधारेंगे, तब इस भूमि का काया पलट देखेंगे।

एक और गोपनीय बात पेश करता हूँ। जो केवल अपने हृदय में ही भंडार दी जाय—(एक व्यक्ति का सालभर पूर्व एक पत्र था, जिसमें यहाँ अर्पण हो जाने की आज्ञा मंगवाई थी, पर हमने जवाब नहीं दिया अबके दूसरे पत्र में धनवान बनने की कामना का दिग्दर्शन किया और लोभवश जो लिखा वह हम पत्रारूढ नहीं कर सकते। कैसा जमाना आया। आत्मार्थिता का निभाव करनेवाले आप जैसे विरले हो नजर आते हैं। अस्तु, माताजी ने आपको हार्दिक आशीर्वाद तथा सुखभाई ने सादर धर्मस्नेह दर्शाया है। रसोईघर की व्यवस्था अच्छी है और ठहरने की भी। परिचितों को आशीर्वाद कहिएगा। ॐ शांतिः

सहजानंदघन अनन्तशः आशीर्वाद

(पत्रांक ३७५) हम्पी ११-८-६७

ॐ नमः

भक्तवर्य कोजमलजी एवं चंपालालजी सपरिवार

संयुक्त पत्र मिला। हाल सब ज्ञात हुए। पट्टावली पराग अब तक हमको नहीं मिला। किसके साथ भेजा है? उन्हें सूचित करें। श्रावकजी तो वापस लौट गए—उन्हें जो कहना है, सीधा पत्र व्यवहार करें। यहाँ हम सभी स्वस्थ और प्रसन्न हैं, आप सभी तथैव सदा बने रहें—यह आशीष।

माताजी ने आप सभी को हार्दिक आशीर्वाद फरमाया है। बाई मेघबाई आदि ने धर्मस्नेह कहा है। हीरजीभाई कई बार टिकट रिजर्वेशन करा कर कैन्सल करना पड़ा—ऐसा लिखते हैं। बहुत जंजाल बढ़ा दी है। दलीचंदजी सपरिवार आने में हैं! धर्मस्नेह में वृद्धि हो। ॐ शांतिः

सहजानंदघन आशीर्वाद सह सहजात्म स्मरण!

(पत्रांक—३७६) हंपी १९-८-६७

ॐ नमः

भक्तवर्य श्री भँवरलालजी सा'ब सपरिवार

पत्र मल्युं. विगत वधी जाणी. प्रभु कृपाए स्वास्थ्य द्रव्य भाव थी ठीक छे. माताजी स्वस्थ अने प्रसन्न छे. आप सौ ने हार्दिक आशीर्वाद जणाव्या छे. श्री शुभराजजी सा'ब ना पत्र यथा समय आवे छे. हवे तेमनुं स्वास्थ्य ठीक हशे. श्री अगरचंदजी पर्यूषण अत्र करवा नी भावना भावे छे, ते समय आपनी हाजरी होय तो सारुं. श्री घूपियाजी तथा अन्य पण आपनी साथे आवी शके, धन्नूलालजी पण आववा नी भावना भाव्या करे छे. सौ ने मारा हार्दिक आशीर्वाद जणावजो. बडेरजी दीवाली उपर आववा इच्छे छे.

दादा सा'ब नी पूजा आप पण बनावी शको छो. प्रयत्न करो—संशोधन करी आपीश. मने एवी फुरसद नथी. हरिसागरजी कृत पूजाओ दादाजी नी अहिं १०० किताब मोकली आपवा अगरचन्दजी ने लख्युं छे. तेओ अथवा आप मोकली आपजो. अहिं दर वर्षे दादाजी नी पूजा भणावाय छे.

बदलिया दम्पती आनंद मां छे. मुरलाल प्रसन्न छे. हमणा वीसेक सत्संगी भाई-बहेनो छे. हवे वधवाना छे. पर्यूषण मां तो प्रचुर संख्या हशे. जिनालय निर्माण शरू नथीथयुं. कोई जवाबदारी उपाड़नार मल्ये प्रारम्भ थशे. चंदन पार्श्व प्रतिमा नी वात भूलाई गई. हवे अगरचंदजी साथ आवशे अथवा आप पधारशो, त्यारे जोयुं जशे.

श्री उपाध्यायजी महाराज सा'ब ना देह विलय थी अमारा साधु समुदाय नो शिर छत्र भूंटवाई गयो. बाकी ना व्यक्तिओ नुं ते प्रभाव नथी. तेमनी छत्री आसंपिया मां बनाववा नुं नक्की थयुं छे. भद्रेश्वर मां दादावाड़ी पण थशे.

श्री विचक्षणश्रीजी ना पत्रो आवे छे. तेमने माटे दादाजी नी चंदन नी स्थापना ८ जोड़ी मोक-लावी आपी छे.

मणिधारीजी नी अ० श० विषयक जाण्यु. राज० परिस्थिति विषम छे. अन्यथा विशेष रूपे आयोजन थई शके.

जर्नल मां दादाजी नुं चित्र जोयुं. वस्त्र परिधान ठीक छे पण चहेराओ मां तो ठेकाणुं नथी. आप सौ स्वस्थ अने प्रसन्न हशो. ज० का० अठाई मां अहिं अठाई महोत्सव मनाववा मां आवशे.

चंचल बाई मुंबई छे. M. A. मां प्रवेश कर्यो छे. संस्कृत मां ऋग्वेद तथा वेदान्त आदि चालु छे. स्वास्थ्य ठीक छे.

श्री ताजमलजी साव ने पण घणो समय थयो. आप आवो तो साथे तेड़ी आवजो. आशीर्वाद जणावजो. धर्मध्यान मां अभिवृद्धि करजो. ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन हार्दिक आशीर्वाद

(पत्रांक—३७७) हंपी

ॐ नमः १६-८-६७

भक्तवर्य (श्री विजयकुमार बडेर)

भक्ति पत्र मिला। सब हाल ज्ञात हुए। यहाँ प्रभु कृपा असीम है, अतः आनन्द ही आनन्द है। आप सभी को भी हो। माताजी प्रसन्न हैं, सपरिवार को आशीर्वाद कहा है।

भाई! यह संसार ऐसा ही है, जैसा कि आप अनुभव कर रहे हैं। इसे भूल जाना ही अच्छा है। हमें वही मिलता है, जो कि हमने सेविंग-बैंक में जमा कराया है. यदि हमें अब वह पसन्द नहीं है तो रखा क्यों?

आपके माताजी, धर्मपत्नी, सभी बच्चों एवं बन्धु वर्ग सपरिवार सभी को हमारा हार्दिक आशीर्वाद! प्रभु भक्ति में तन्मय बनो! ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन

अनन्तशः आशीर्वाद

(पत्रांक—३७८) हम्पी

ॐ नमः २४-८-६७

परम कृपालु देव ना चरणे अभेद भक्तिर नमो नमः

भव्यात्मन् [हिमतमल वेनाजी (आहोर वाले) अगास]

पत्र मल्युं हकीकत बधी जाणी, भाई मुमुक्षु माटे तो गरीबी एज अमीरी छे ए अमीरी नो ल्हावो लेवो होय तो पोताना हृदय मन्दिरमां परमकृपालु श्री राज भगवान नी छवी पधरावी तेमां ज चित्तवृत्ति जोड़ी ने एमनी रजा मां राजी रहेतां थी मले पछी जूओ मजा। आ अमीरी नी सामे पेली

जइ अमीरी विष्टा तुल्य भासशे माटे कमर कसी ने मंडो पड़ो, प्रमाद करो मा. श्री फोजमलजी अस्वस्थता ने कारणे हाल मां अहिं आववानुं कंइ नथी ठरतां. तमारी भावना जाणी. भावना भावता रहो. शरीरथी त्यां रहो पण आत्मा ने तो कृपालुनी पराभक्ति रूप नैय्या मां बेसाड़ी राखो ए जरूर भव पार करशे ज.

मानाजी प्रसन्न छे. आशीष कह्या छे. सत्संगिओ नी भीड़ जमती जाय छे त्यां धर्मस्नेही श्री राजजी भाई आदि सौ मुमुक्षु भाई-बहनो ने सादर जय सद्गुरु वंदन पूर्वक सहजात्म स्मरण जणावजो आ सपना जेवो संसार नी वासना तजी देजो. ॐ शांतिः

सहजानन्दघन
सहजात्म स्मरण हार्दिक आशीर्वाद !

(पत्रांक ३७६) हम्पी १-६-६७

ॐ नमः

भक्तवर्य (फोजमल बाफणा)

पत्र एवं पट्टावली-संग्रह ग्रंथ मिले ! ग्रन्थ पूनम के रोज मिला ! देखा-था खरतरां रो ठाट कियो है। थे नशा में हो तो मां भी नशा में हों।

आज ४०० जणा बैठ सके इतने विस्तार की पर्णकुटी का उद्घाटन हुआ, जो आश्रम की शान दिखाने जैसो है। अभी सत्संग भजन चालु है। माताजी प्रसन्न है, आशीर्वाद कहा है।
थे थारे कृपालु री भगति में मस्त रहो। ॐशांतिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद।

(पत्रांक—३८०) हंपी १९-९-१९६७

ॐ नमः

भक्तवर्य श्रीभंवरलालजी श्रीमिश्रीलालजी श्रीअगरचंदजी आदि सपरिवार

आप तीनों के पत्र मिले, हाल सभी ज्ञात हुए !

यहां पर्वाराधना अतीव उल्लास पूर्वक हुई। सां० क्षामणा के अवसर पर सभी जीवों के साथ क्षमतक्षामणा करते हुए आप सभी के साथ भी उत्तम क्षमा का आदान-प्रदान हम सभी ने किया है-स्वीकृत हो, आगामी का० सुद की अठाई में यहां श्रीमद् राजचंद्र श० महोत्सव मनाने का निर्णय हुआ है! व्यवस्था समिति बनाई गई है। प्रतिपदा पर्यन्त ६ दिन तक ६ नवकारसी तय हुई। ४३००० चढ़ावा हुआ।

पूर्णिमा के दिन अतिथि विशेष पद के लिए मोरारजी देसाई एवं गिरी को आमन्त्रण भेजने का भी तय हुआ है। स्वीकृति होना-न होना अज्ञात बात है। इस अवसर पर यदि अगरचंदजी सा'ब यहां पधारें तो अच्छा होगा।

विशेष व्यवस्था के लिए कुछ रूम आदि निर्माण होंगे, शायद सड़क निर्माण भी होगी।

शुभराजजी सा'ब ! अब तो दवाई से आपको फायदा हो रहा होगा. जरा चित्त में शान्ति को बनाये रखें। नणंद भौजाई भी अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखें।

मेघराजजी सा'ब ! आपकी रिपोर्ट पढी। अपने संसार का चित्रण ठीक ढंग से किया है, जो कि सर्वज्ञों की बात को पुष्ट करता है।

अगरचंदजी सा'ब। आपका कार्ड तो ठीक पढा नहीं गया। अतः क्या समझा जाय ?

कलकत्तासे श्री भँवरलालजी सा'ब ने १०० कितावें दादाजी की पूजा की भेजी है पर अब तक मिली नहीं है।

यहाँ हम सभी स्वस्थ एवं प्रसन्न हैं। माताजी ने आप सभी को खामणा सह जयजिनेन्द्र !

श्री जतनमल जी नाहटा से कहा जाय कि आपका खामणापत्र मिला, हमारा तथा माताजी का भी खामणा आप सपरिवार स्वीकारें। और भी जो याद करते हों सभी को खामणा सह आशीर्वाद कहियेगा धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो।

सहजानंदघन

सॉं० खामणा सह हार्दिक आशीर्वाद।

(पत्रांक—३८१) हंपी

ॐ नमः १५-९-६७

भक्तवर्य श्री भँवरलालजी नाहटा सपरिवार,

खामणापत्र मल्युं-अम वधायना तम सौ सॉं० खामणा स्वीकारजो, परस्पर मिच्छा मि दुक्कडं

बीकानेर थी त्रणे काकाजी ना पत्रो छे. आज उत्तर लखुं छुं

शताब्दी महोत्सव विशेप रूप मां जन्मभवन मां उजवाशे. बाकी ना २२ आश्रमो यथाशक्ति उजवशे. अहिं ते समये अठाइ महोत्सव नुं नक्की थयुंछे. प्रतिपदा पर्यंत नवकारसी ६ नी बोली ४३०००) चढावा थी गत दशमीए थई छे. महोत्सव समिति निमाई छे. ३५० जन संख्या वेशी शकशे. पर्वाराधना त्यांज थई.

का० पूनमे सभा मां अतिथि विशेप पदे मोरारजी देशाई अने गिरि ने आमंत्रण आपवा नुं नक्की थयुं छे. स्वीकृति भाग्याधीन छे.

त्यां आपनो सकल परिवार, बन्नुलालजी, कान्तिभाई, ताजमल जी, धूपियाजी, बडेरजी आदि मित्र मंडळ ने मारा तथा माताजी ना हार्दिक खामणा सह आशीर्वाद जणावजो. रामगंजमंडीवाला देवीलाल रांकादि ५ भाईओ पर्यूपण अत्र करी मद्रास गया. साध्वी मंडल मद्रास मां खूब प्रसन्न छे.

श्रीकान्ताव्हेन ने अठाई निमित्ते हार्दिक अभिनंदन जणावजो. बडेरजी खुशी थी आवे. धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि हो। ॐ शान्तिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद सह सॉं० खामणा

(पत्रांक—३८२) हम्पी
ॐ नमः १७-९-६७

(न्यायाधीश श्री मगरूपचंदजी भंडारी, जोधपुर)

भव्यात्मा श्री भण्डारी सा'ब

पत्र मिले १२ दिन हुआ। यहाँ पर्वाराधना के कारण अवकाश नहीं मिला, भावुकों की अब तक अधिक संख्या थी, पूनम के बाद भीड़ कम हो जायगी।

हमारा स्वास्थ्य ठीक है। बवासीर शांत है। माताजी का भी स्वास्थ्य ठीक चल रहा है।

आपके स्वास्थ्य की गड़बड़ी ने परीक्षा दान ली होगी। यदि अन्तः चेतना जागृत रहे-करज मुक्त होने में बड़ी सुविधा सिद्ध हो सके। आपका उसप्रकार का प्रयत्न सफल हो—यही हार्दिक आशीर्वाद।

सां० खामणा के अवसर में हमने, माताजी ने तथा उपस्थित सभी भाई-बहनों ने आपको तथा भैंशाली जी दम्पति को हार्दिक खामणा है एवं क्षमाप्रदान की है स्वीकृत रहे।

श्रीमद् राजचन्द्र जन्म शताब्दी के अवसर पर का० शुदा ६। १५ तक अट्ठाइ महोत्सव मनाने का यहाँ निर्णय हो चुका। व्यवस्था वृद्धि के उपाय चालु हैं। आपको तथा भैंशाली सा'ब दंपती को माताजी ने बहुत याद किया है और सत्संग मिलन चाहा है।

धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो। ॐ शान्तिः

सहजानंदघन हार्दिक खामणा सह आशीर्वाद !

(पत्रांक—३८३) हंपी
ॐ नमः १७-९-६७

भव्यवर्य,

सां० खा० पत्र मळ्युं. परम कृपालु नी पावन कृपाथी अहिं पण पर्वाराधना पणाज उल्लास थी थई सां० खामणा अवसरे उत्तम क्षमा सौ ने याची. जेने तमे पण स्वीकारजो.

शताब्दी अवसरे अहिंनी कमिटीए अट्ठाइ महोत्सव उजववा निर्णय लीधो छे. नवदिन नव स्वामी ना चढावा ४३०००) पण बोलाई गया छे.

अतिथि विशेष पदे मोरारजी देशाई तथा वी. वी. गिरि ने आमंत्रण मोकलाववानुं पण नक्की थयुं छे पछी जेवो उदय.

तमे ते अवसरे पधारो तो उल्लास मां वृद्धि थशे. सौ स्नेही जनो ने हार्दिक खामणा जणावशो. श्री लालभाई सोमचंद पर्युषण मां अहिंज हता. ते पूर्वे एक महीना पर सोमा० वि. ७ जण आव्या हता. जगमबन मां ३ दिवस नो प्रोग्राम रखायो छे. त्यां विशाल पाये उजवाय तेवी प्रेरणा आपनो रहो हतो. समय प्रमाणे गोठवण थशे. धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि हो ॐ शांतिः

सहजानंदघन
हार्दिक खा० सह आशीर्वाद

(पत्रांक—३८४) हंपी २६-६-६७

ॐ नमः

भव्यात्मन् (श्री भँवरलालजी नाहटा)

आज सांजे दादाजी नी पूजाओ नुं पारमल आश्रम मंत्रीए अहिं पहोंचाड्युं छे. ते मोकल्या बदल हार्दिक धन्यवाद. अहिं आनंद मंगळ वर्ते छे. त्यां आप सौ ने पण हो. माताजी ए आप सौ ने हार्दिक आशीर्वाद जणाव्या छे. ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक—३८५) हंपी

ॐ नमः २६-६-६७

भक्तवर्य (कोजमलजी बाफणा)

पत्र मिला। हाल ज्ञात हुए। बाबूलालजी ने मोक्षमाला १ किताब दी। खामणा पत्र भेजा था, मिला होगा। दलीचंदजी-मांघीबाई माजी आये हैं। यहां कृपालु की कृपा है। सब आनंद ही आनंद है। माताजी प्रसन्न हैं। हार्दिक आशीर्वाद कहा है। देह ठीक रहे या नहीं, पर आत्मा को ठीक रखो। मनोमन मंत्र को आत्मभान पूर्वक रटा करो धारा को अखंड बनाओ। देह भान भूल जाओ। "देह गेह भाड़ा तणो, ए आपणो नांहि।" अतः इसका खयाल छोड़ दो। यहां परम कृपालुदेव की जन्म शताब्दी निमित्त किये जाने वाले अट्ठाई महोत्सव की पूर्व तैयारियां हो रही हैं। बहुत से मुमुक्षु काम में जुटे हुए हैं, तब तक थांरी मोटर ने ठीक करके थें अठे आई जावो। धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो।

ॐ शांतिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद !

(पत्रांक—३८६) हम्पी

ॐ नमः १५-१०-६७

भक्तवर्य श्री शुभराजजी श्री मेघराजजी एवं श्री अगरचंदजी साब सपरिवार,

पत्र मिला, हाल ज्ञात हुए। मोतीओ का ऑ० हुआ, अब उन्हें और आपकी स्वस्थता बढी होगी। यहां आनंद है, माताजी ठीकाठीक है। फिर भी दिन भर व्यस्त हैं, क्योंकि भीड़ काफी जमा रहती है। १०-११-६७ से १८-११-६७ तक ६ दिन का महोत्सव निर्णित है, उसकी पूर्व भूमिका व्यवस्था तंत्र चल रहा है।

२००/३०० आदमी सड़क तैयार कर रहे हैं एक हॉल १०/५५ का एक शोरूम ७ बाथरूम दोनों खेत का जमीन लेवल तंबुओं के लिए इत्यादि काम तड़ामार चल रहे हैं। काफी सेवक सेवा दे रहे हैं। क्या तब तक आप तैयार हो जावेंगे ?

मानाजी ने आप सभी सपरिवारों को समुचय आशीर्वाद कहा है। आ० शुद १४ को मद्रास से १५० आदमी का संघ आवेगा। १५ के दिन चंचल आदि ११ पैसेंजर आ रहे हैं।

स्वास्थ्य का खबर देते रहिए। मंत्र-रटण अखण्ड रखियेगा। शिवचंद जी साथ का पटना से पत्र था, शरद पूनम तक बीकानेर के प्रति प्रयाण करेंगे। मैंने १ पत्र उन्हें दिया था, मिला नहीं, अतः आप उन्हें कुशल समाचार पूर्वक हार्दिक खामणा एवं आशीर्वाद हमारा तथा माताजी का सुनावें। धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो। ॐ शांतिः

सहजानंदघन

(पत्रांक—३८७) हम्पी

ॐ नमः ५-१०-६७

भव्यवर्य, (रांकाजी)

पहुँच पत्र मिला, हाल ज्ञात हुए। ज० श० महोत्सव की पूर्व तैयारियाँ हो रही है। बड़ा चौतरा और बगल में दो हाल बन रहे हैं-दोनों खेत समतल बनाये जा रहे हैं। जहाँ तम्बू लगेंगे मोटर रोड भी बना रहे हैं २००/३०० मजदूर काम कर रहे हैं। श्री लोढा जी और कटारिया जी खूब सेवा दे रहे हैं। बहुत से मुमुक्षु सतत् श्रमदान दे रहे हैं। संभव है महोत्सव के निमित्त लक्षावधि खर्च हो जाय। का० सु० ६ से प्रतिपदा तक नव दिन साधर्मीवात्सल्य होंगे। जिनका चढावा ४३००० हुआ है। कृपालु की पूर्ण कृपा है। महोत्सव के निमित्त आश्रम का कलेवर ही बदल जायेगा। आप सभी स्वस्थ एवं प्रसन्न रहेंगे। यहाँ माताजी तथा आश्रमवासी सभी प्रसन्न हैं, माताजी ने आप सभी को हार्दिक आशीर्वाद तथा शेष सभी को सादर जयजिनेन्द्र कहा है। मद्रास से दो बस-यात्री शरद १५ तक शायद यहाँ होंगे।

जो व्यक्ति जब तक अपने अपराधों का एकरार न करें तब तक सत्संग फलदायी नहीं हो सकता। बाकी हमारा कैसों के प्रति कोई दुर्भाव नहीं है। अधिक क्या लिखूं? धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो! सभी सत्संगीजनों तथा रांकाजी सपरिवार को हार्दिक आशीर्वाद! जयानंद मुनि ने रांकाजी को धर्मलाभ लिखा है।

सहजानंदघन.

(पत्रांक—३८८) हम्पी

ॐ नमः २५-११-६७

भव्यात्मा (बाबूलालभाई, मद्रास)

पत्र मल्युं अहिं दिव्य महोत्सव उजवाई गयो, आनंद-आनंद थई गयो.

तमारी भावना कृपालु प्रत्येनी अनुमोदनीय प्रगटी जाणी, प्रसन्नता थई. ते भावना स्थिर थाओ. ते भावना ना प्रवाह थी उदय ने पलटाववानी इच्छा न करशो. पण तमे सेवा कर्म हृदय मां समरसी रहेवा नी दृढ़ता केळवो.

आत्म भान अने वीतरागता ने विकसाओ ज्ञानीओनी एज आज्ञा छे.

विशेष मां मुळ मेळापे घर भर तमाम ने मारा तथा माताजी नां आशीर्वाद. ॐशांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद,

(पत्रांक—३८९)

हंपी २५-११-६७

ॐ नमः

भक्तवर्य

पत्र यथा समये मल्युं अहिं दिव्य महोत्सव दिव्यता नी साथे उजवायुं. हवे मागसर सुदि १० ना रोजे श्रीतीर्थधामे दिव्य महोत्सव मां भाग लेवा प्रायः अहिं थी प्रयाण थशे. तमे त्यां जरूर आववानुं बनावजो.

अहिं महोत्सव प्रसंगे १॥ लाख भक्तोए खर्च्या-ते ऊपर थी अन्दाज महोत्सव नो करी शकशो।

धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि करजो ॐ शान्ति !

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद.

(पत्रांक—३९०)

हंपी २६-११-६७

ॐ नमः

भक्तवर्य (देवीलाल रांका)

अहमदाबाद से लिखा पत्र मिला। यहाँ महोत्सव बड़े विस्तार पूर्वक मनाया गया—१ ॥ लाख खर्च हुआ। मिगसर पूनम को वडवा आश्रम में महोत्सव मनाया जायगा। वहाँ के भक्तों के अनुरोध के कारण वहां जाना होगा। अतः ११-१२-६७ को प्रयाण करने का निर्णय हुआ है, माताजी एवं कई भक्त साथ में चलेंगे।

स्वास्थ्य ठीक है। चाँदमल जी सा'ब और रिखबचंद जी प्रसन्न हैं। वहाँ आपकी सारी मंडली को आशोर्वाद। चाँद बाई यहीं हैं। धर्मस्नेह में वृद्धि हो।

भँवरलालजी धींग को भी आशीर्वाद लिखें। वापस कब तक लौटना होगा ? पता नहीं—जैसा उदय। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन आशीर्वाद।

(पत्रांक—३९१)

हंपी ३०-११-६७

ॐ नमः

भव्यात्मा श्री बाँठियाजी आदि सपरिवार (हाथरस)

यहाँ महोत्सव बड़े उल्लास और विस्तार से सम्पन्न हुआ। १॥ लक्ष का व्यय और २ की आय हुई। श्री मेघराज जी सा'ब श्री अगरचंद जी सा'ब तथा श्री भँवरलाल जी सा'ब सपरिवार वापस लौट गए। आपने भी वहाँ महोत्सव मनाया—पढकर प्रसन्नता हुई।

अब खंभात के पास वड़वा आश्रम में मिगसर पूर्णिमा को दो दिन महोत्सव मनाया जायगा। जिसमें हमें वे खींच कर ले जाना चाहते हैं। अतः ११-१२-६७ को प्रयाण तय हुआ है। माताजी और २५-३० भक्त मण्डली साथ में चलेंगे।

यहाँ आस पास वालों का भी काफी आग्रह है। कब तक वापस लौटना होगा-पता नहीं।

रतनचंदजी सा'ब आदि प्रसन्न होंगे। सभी घर भर वालों, मित्रों और साधर्मी जनों को हार्दिक आशीर्वाद ! माताजी का भी आशीर्वाद। धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन हार्दिक आशीर्वाद !

(पत्रांक— ३६२) हम्पी

ॐ नमः ३-१२-६५

भक्तवर्य (देवीलालजी रांका)

यहाँ महोत्सव सानंद संपन्न हुआ। अब ११-१२-६७ मध्याह्न बाद माताजी और भक्त मंडली के साथ खंभात के पास वडवा आश्रम के प्रति प्रयाण करेंगे। ४ घण्टा बम्बई ठहरेंगे।

वहाँ मार्गशीर्ष शुक्ल १४ १५ महोत्सव में हाजरी देकर ववाणिया-ईडर-राजकोट भी शायद जाना होगा। आगे कहाँ तक बढ़ेंगे और वापस कब तक लौटेंगे ? निश्चित नहीं है।

यहाँ श्री लोढाजी और कटारिया जी अतीव प्रसन्न हैं। वहाँ आपकी सारी मंडली को हमारा तथा माताजी का हार्दिक आशीर्वाद कहें और आप भी स्वीकारें। धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो। ॐ शान्तिः चाँदबाई अमीतक यहीं हैं।

सहजानंदघन

(पत्रांक—३६३) हम्पी ३-१२-६७

ॐ नमः

अनन्य आत्म शरणप्रदा, सद् गुरुराज विदेह
परा भक्तिवश चरण में, धरूं, आत्म बलि एह

भव्यात्मा

अहिं हवे हुं तथा माताजी स्वस्थ छीए. केवल सुखलाल ने हजु आराम नथी ते थई जशे. आपना उपर नो अगरचंदजी नो पत्र मोकलशो. अमाराथी ते वंचायो ज नथी. अने आजे आ शुभेराजजी नो मोकलीए छीए.

१२-१२-६७ ना रोजे वडवा मादे प्रयाण थशे. साथे माताजी तथा घणा भाई बहेनो आवशे, त्यांथी ववाणीया-ईडर पण कदाच जवाय, सौने आशीर्वाद अहिं थी माताजीए पण आशीर्वाद जणाव्याने छे. धर्मस्नेह मां वृद्धि ॐ शान्तिः

सहजानंदघन
आशीर्वाद

(पत्रांक-- ३६४)

हंपी ८-१२-६७

ॐ नमः

भक्तवर्य (बाबूलाल भाई, मद्रास)

पत्र मल्युं हित अहित नो विवेक भावना ने हार्दिक अनुमोदन आत्म भान अने वीतराग भाव ने टिकावी राखवुं एज हित अने तेनो छुटी जवं एजअहित—एम श्री तीर्थङ्करे कह्युं छे. हितना मार्ग संचरतां एटले आत्मभान वीतरागता टिकावतां जो पूर्व ऋण होय तेने पतावत्रुं अे अहित नथी. पूर्व ऋण मां गृहस्थी नीं जबाबदारीओ बाकी होय तेने ठोकरावी ने केवल बाह्य तप त्याग ने अपनावत्रुं पण आत्म-भान वीतरागता नुं लक्ष जलावत्रुं के हित नथी पूर्व ऋण पतावता निमित्ते नट थई ने नाचवुं पड्युं ए हित हतुं त्यारे नें ? आम अनेकान्त सिद्धान्त थी हित-अहित विचारवुं अने युक्ति थी. संसार ना कीचड़ मां थी निकलवुं आमां संसार मां फसवा वेरो जराय उपदेश नथी पण युक्ति थी निकलवानी कुंची छे. ते कुंची अखंड धाराए आत्मभान अने वीतरागता ने टकावी राखवानी खबरदारी. कृपालु देवे ते करी बताव्युं. तेना ऊपर तमे ध्यान दो. हजु बाल हो ने तैयार करवा नी जबाबदारी तो छे ने ? तेमां थी उऋण थवा अटकवुं पडशे, एम लागे छे

अमो माताजी वि. चालीसेक भाई-बहेनो आवता सोमवारे अहिंथी प्रयाण करी बुधवारे १० वागये खंभात पासे ३ माइल दूर वड़वा आश्रमे पहोंचशुं, त्यांथी पालीताणा, गिरनारजी पण जशुं-त्यां याद करनारा सौ भाई बहनो ने मारा तथा माताजीना आशीष धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन

आशीर्वाद

(पत्रांक—३६५)

श्री भांडकजी तीर्थ

ॐ नमः

२३-२-६८ शुक्र

भक्तवर्य श्री शुभराजजी श्री मेघराजजी श्री अगरचंदजी आदि (बीकानेर)

हम कोटा में १ दिन ठहरे सुबह २ और रात्रि में ५ हजार श्रोता उपस्थित थे। १ दिन रामगंज मंडी और फिर मक्षीजी, उज्जैन इन्दौर, खंडवा, मुक्तागिरि होते हुए अमरावती में दर्शन करके यहाँ आज २॥ बजे पहुँचे हैं। यहाँ से अंतरीक्षजी, इलोरा, अजण्टा, उस्मानाबाद शोलापुर गुलबर्गा आदि होते हुए हंपी पहूँचेंगे !

माताजी के शिर में आज दर्द है। बाकी ठीक है। वहाँ भक्तगण सभी को हमारा एवं माताजी का हार्दिक आशीर्वाद कहें। तथैव आप भी स्वीकारें।

धर्मस्नेह अभिवृद्धि करें। हमारी डाक हंपि भिजवा दें। ॐ शांतिः

सहजानन्दघन

हार्दिक आशीर्वाद।

(पत्रांक—३६६) अजन्ता-रेस्ट हाउस

ॐ नमः माघ कृ० १३ सोम

भक्तवर्य श्री शुभराजजी. श्री अगरचन्दजी अने भक्त मंडली

हम कोटा से मालपुरा, कोटा, रामगंजमंडी, मक्षीजी, उज्जैन, इन्दौर. खंडवा, मुक्तागिरि, अमरावती, भांडकजी, यवतमाल, अंतरीक्षजी, बुलढाना, होते हुए कल संध्या को यहाँ पहुंचे। अब गुफाओं का निरीक्षण करके औरंगाबाद. इलोरा. कुंथलगिरि-उस्मानाबाद, धाराशिव जैन गुफाएं, सोलापुर, गुलबर्गा, रायपुर होते हुए हंपी पहुंचेंगे।

हम सभी का स्वास्थ्य अच्छा है। मेरा और माताजी का आप सभी को हार्दिक आशीर्वाद !

सहजानंदघन

(पत्रांक—३६७) हंपी २३-६-६८

ॐ नमः

भव्यात्मा श्री शुभराजजी श्री अगरचंदजी श्री भँवरलालजी आदि सपरिवार

आजे देहरादून, मेरठ, हाथरस, ग्वालियर. ललितपुर, विदिसा, भोपाल, खंडवा, खामगाँव, गुलबर्गा थता २०-६-६८ मां अहिं क्षेम कुशल पहोंचा छीए. थाक ने उतारी हवे आपने पत्र सूचना मात्र जणावुं छुं. स्वास्थ्य सौना ठीक छे.

मेघराजजी सा'ब कलकत्ते आव्या हशे. तेमने तथा बांठियाजी ने एवं कलकत्ता मां वैद्यराजजी, पारसन मंडली, बदलिया, बडेरजी, धूपियाजी, कान्तिभाई एवं आप सौने मारा तथा माताजी ना अगणित आशीर्वाद !

हाथरस मां रतनचद जी सा'बे भक्ति भाव मां जराये कमी नथी राखी. उत्तर तरफ जतां दिल्ही अने दक्षिण तरफ ग्वालियर सपरिवार साथे आव्या हता. हवे बेल्लारी अने कंपली वाला लई जवा हठ करे छे. तेथी तेमने राजी करवा जवुं पड़शे. आ वखत नी यात्रा मन्दिर ना कलश रूपे सिद्ध थई। विचक्षणश्रीजी ने बेंगलोरज चोमासा माटे इशारो तेमना पूछवा थी लखी जणावेल. तेथी त्यां स्थिर थयाना समाचार छे ऋषभदास स्वामी नो हवे समाचार मलशे-ते पछी तेमनी जेम भावना हशे तेम थशे धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद !

(पत्रांक—३६८) हंपी

ॐ नमः ७-७-६८

भव्यात्मन् (श्री विजयकुमार जी बडेर)

यात्रा थी पाछा फरी अहिं आव्यो के आस पास जवुं पड्युं. बेल्लारी थी आव्ये ३ दिवस ज थया छे. जेथी पत्रोत्तर न आपी शकायुं.

हजु साचुं दुख तमने जेटलुं आवश्यक छे. तेटलुं तमारी पासे नथी आव्युं. जे आव्ये दुखहारी परमात्मा ने पलमांज हाजर थवुं पड़े छे.

सीताजी के द्रौपदी जेवुं दुःख आववा द्यो! नकामा रडा रोल कां करो? एवा ढोंगथी प्रभु छेतराय एवा नथी हो! अधिक शुं लखी जणावुं?

हंसतां बांधे कर्म, रोतां न छूटे प्राणियां रे...

बंध समय चित्त चेतिये, उदये शो संताप?

ॐ शांति। माताजी ए आप सौ ने हार्दिक आशीष जणाव्या छे अने मारा पण स्वीकारजो.

सहजानंदघन

(पत्रांक—३९९) हम्पी

ॐ नमः २५-७-६८

भव्यात्मन् (श्री देवीलालजी रांका)

पत्र संप्राप्त थयुं. भोपाल ना श्री मेहता तथा श्री कोठारी विषयक पहेली थी सूचना नहीं, तेथी जणावी न शकायुं।

तमे स्वरूप जाग्रत सदैव रहो ए अंतर ना आशीष.

श्री लोढाजी मकान निर्माण करी खुशी थी अहिं पधारे. कटारियाजी नी कुटिया पासे नी मोटी गुफा तैयार थई रही छे ए समाचार साथे तेमने तम वधाय ने मारा तथा माताजी ना अगणित आशीर्वाद। कटारियाजी ना सादर धर्मस्नेह। ॐ शांतिः

सहजानंदघन. आशीर्वाद!

(पत्रांक—४००) हम्पी

ॐ नमः २-८-६७

परम कृपालु देव नुं शासन जयवन्त वर्त्तो

भक्तवर श्री शुभराजजी. श्री मेघराजजी श्री अगरचंदजी श्री भँवरलालजी श्री केशरीचंदजी श्री हरखचंदजी श्रीपारसकुमार अेवं पद्मचंदजी आदि नाहटा परिवार

पत्र मल्युं. अने अंग्रेजी मासिक पण मल्युं. आपने ए भाषण नी नकल मली तेना भाषणकर्ता मैसूर स्टेट नी विधान सभा ना अध्यक्ष श्री वालिगा साव के जेमनुं थोड़ाक महीना उपर अवसान थई गयुं छे. तेओ हता-जैन दर्शन प्रत्ये तेमने घणो आदर हतो.

चंदन-संपुट बनाववा माटे श्री कुशलगुरु नो फोटो अत्यार लगी बरोबर कोई जोयो नथी. माटे पजूसण मां जो कोई पेण्टर अहिं आवशे तो तेनी वड़े रेखा चित्र दोरावी ने पछी आर्डर अपाशे. चार्ज गमे ते लागे तो वांधो नहिं. कच्छ मां मोकली तेनो १०१ चार्ज अपायो हतो-हमणा शुं ले ते न कही शकाय.

रिखबदास स्वामी नो आज दिवस सुधी कोई पत्र के समाचार नथी. अने मने शिष्यलोभ नथी तेथी हुं पुछा करतो ज नथी जो शिष्य लोभ होत तो शुभराज जी साब ने ज मुंडी लेत. तेने कंइक प्रत्यक्ष चमत्कार जोवानी शांतिसूरिजी वत् कईक करी बतावबा नी अंतरंग इच्छा होय एम लागे छे. तेम कांइ अहिं नाटक मांडवुं नथी.

तमने अनेक वखत कहेवायुं के अहिं कोई रेकार्डिंग-व्य० संभाली शके तेवो उचित व्यक्ति नथी तेमज न भाषण पत्रारूढ करे तेवो कोई छे. तो पछी शा माटे तेम इच्छो छो ? मारा थी अधिक लखाण थई शके तेम पण नथी पत्रो ना ढगला आवे छे. ते बधाने उत्तर आपी शकाय ते पण शक्य नथी. जेने जे कंइ रुचि होय तेने ते व्यवस्था करी कराववी. छूट छे ॐ

बेंगलोर थी गुजरातीओ ३ दंपतिओ अने अहमदाबाद थी श्री लालभाई तथा बोर्डी थी श्री हीराभाई दादाजी नी जयन्ती वखते अहिं आवी गया. पंदरेक दिवस रह्या. सत्संग गंगा मां न्हाइ शीतल थई ने गया. हीराभाई नी पत्नी अहिं ज छे, माताजी ना मोटा व्हेन मवा महीना थी अहिं छे. पजूसण करी जवानी इच्छा राखे छे. वदलिया दम्पति आवी प्होता छे.

खेंगारभाई, जीवनभाई दंपती, बे मालवी, एक गुजराती आदि मुमुक्षुओ छे. आव जा तो चालु ज छे. हीरजी भाई नो द्वितीय पौत्र कालधर्म पाम्यो तेथी हीरजीभाई त्यां अटकी गया छे. हेमचंदभाई अठवाड़िया मां आवनार छे। समयोचित अने पात्रोचित श्रीमद्‌ना वचनामृतानुसार प्रवचन चाले छे. निर्माण कार्य पण चाले छे.

माताजी नी तबियत नरम गरम चाले छे। वैद्यराज जसवंतरायजी अहिं तेमने तपासी गया छे. तेमनी दवा प्रमदा गोळीओ एमणे वापरी तेथी थोड़ो फायदो जणायो. ते दवा खतम थई गई बीजी तमे तेमनी पासे थी लई ने मोकली आपजो. रोज खेंगार बापा तेमने फरवा लई जाय छे. आ देहे ग्वरज वाली दवा तेज वैद्यराज नी चालु करी छे. बाकी आणंद छे. सुखभाई सुख मां छे.

बधा आणंद मां हशो अने सदाय रहो—ए अंतर ना माताजी तथा मारा आशीर्वाद छे. चंदना देवराज भाई ने त्यांज मुंबई छे. भुवाजी परलोक प्होंची गया.

याद करनारा तमाम ने हार्दिक आशीर्वाद ! धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि हो ॐ शांतिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद.

(पत्रांक—४०१)

हम्पी ४-८-६८

ॐ नमः

अनन्य आत्म शरण प्रदा, सद्गुरु राज विदेह।
परा भक्ति वश चरण में, धरू आत्म बलि एह।

भव्यात्मा श्री खींवराज जी सपरिवार

आपका पत्र मिला। आपके शरीर की अस्वस्थता का समाचार पढ़ कर आत्म-प्रदेश में अनुकंपन हुआ।

परम कृपालुदेव की वाणी के आप अभ्यासी हैं। अतः आप जानते ही हैं कि शरीर प्रत्यक्ष वेदना मूर्त्ति है। अशुचि, असार और अनित्य है। जब कि आत्मा आनन्दघन मूर्त्ति, शाश्वत, पवित्र और सार स्वरूप है, अतः शरीर में से आत्म-बुद्धि हटाकर उसे आत्माधीन करके सतत् परम कृपालु परम गुरु समान ही मैं सहजात्म स्वरूप हूँ किन्तु शरीर स्वरूप नहीं हूँ—इस प्रकार आत्म भावना सतत करते रहना नितान्त आवश्यक है।

यह सब कर्म का कचरा उदय में आ-आकर जा रहा है, मेरा कुछ भी नहीं जाता। तो फिर हे जीव! तू क्यों फिकर करता है? फिकर की फाकी करे वह उसका नाम फकीर। वास्तव में तू फकीर है क्योंकि यहाँ तो न कोई तेरा है और न तू किसी का है अतः तू अपने काम में मस्त रह! ॐ शांतिः

जया बहन, तुम अपने पिताजी को आत्म जागृति रखना। चाहे स्मृति शक्ति चेतना वश कुण्ठित हो गई हो, फिर भी बार-बार याद दिलाते रहने से बड़ा ही लाभ होता है।

श्री गणेशमलजी, सोहनलालजी, श्री कांकरियाजी एवं वकील साहब आदि को हमारा आशीर्वाद कहियेगा और वे भी इन्हें आत्म जागृति में मदद करते रहें—वैसी उन्हें भलामण कहियेगा।

यहां आनंद ही आनंद है। माताजी प्रसन्न हैं। आप सभी को आशीर्वाद कहे हैं।

धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो। ॐ शान्तिः

सहजानंदघन
हार्दिक आशीर्वाद
सार रूप आत्म स्मरण।

(पत्रांक—४०२)

ॐ नमः

हम्पी
५-८-६८

भव्यात्मन् (स्वामी नवलकिशोर)

लांबे गाले पत्र मल्युं। अमे परम कृपालु देव नी जन्म शताब्दी निमित्ते आ महिना सुधी भारत भ्रमण कर्युं १६००० माइल नी सफर थई। २० जून पाछा अहिं आव्या छीए।

तमारा व्यवहार तंत्र बराबर चालू हशेज। धर्म व्यापार पण ठीक चालतुं हशे। धर्मपत्नी अने बालको मजा में हशे। अहिं अमे बधा आनंद मां छीए। माताजीए हार्दिक आशीर्वाद जणाव्या छे। सुखलाल भाई याद करे छे.

आत्मभान अने वीतरागता नो अभ्यास सतत करता रहेजो। जीवन नैया प्रभु पार लगावे छे अने लगावशेज। धर्मस्नेह में अभिवृद्धि करजो। ॐ शान्तिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद.

(पत्रांक—४०३) हम्पी
ॐ नमः १४-८-६८

भक्तवर श्री भँवरलालजी मा'थ

पत्र तथा प्रमदा गोली मिले, सब हाल ज्ञात हुए।

वैद्यराज जे छपाववा इच्छे छे, ते माटे हार्दिक अभिनन्दन. ए लेख भाषा अने विषय उभय दृष्टिए परिमार्जन करवा लायक छे. माटे हमणा छपाववा नथी. अवकाश मळ्ये ते एक ग्रन्थ रूपे आलेखित थई शकशे.

वळी काकाजी जे माटे भेला मळ्या छे ते कार्य पण घणुं संशोधनीय होवा थी ते माटे त्यां रहे तो कांइ खोटुं नथी. हमेशनी चिन्ता मटावी नेज अहिं आवे तोज निश्चिन्त पणे रही शकाय, हवे वारे घडीए आंटा फेरा करावता नहिं. बधु पतावी नेज मोकलजो.

माताजी नी तबियत सुधारा पर छे. तेमने द्विदल न खावा नी परेज वैद्यराजे बतावी छे. शुं लीला वटाणा आदि हरी सब्जी तेओ न वापरी शके ? ते पूछी ने शीघ्र खुलाशो लखजो.

परिवार ना नाना मोटा बधाने वडीलो बधाने तथा मित्रादि ने मारा तथा माताजी ना हार्दिक आशीर्वाद जणावजो.

श्री प्रेममुनिजी म० आदि कच्छ मांडवी चो० छे. पत्र व्यवहार चालू छे. धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि करजो. ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक—४०४) हम्पी १९-८-६८
ॐ नमः

भक्तवर्य (श्री कोजमल बाफणा)

पत्र मिला। मुझे फुरसद कम मिलने से हीराचन्दजी के द्वारा प्रत्युत्तर भिजवाया था। चम्पालालजी की ओर से दादाजी की पूजा और मिष्टान्न भोज खूब ठाठ से हुआ था। वे स्वयं क्यों नहीं आ सके ? उन्हें, रीखबचंदजी सपरिवार एवं अन्यान्य जो याद करते हों, सभी को मेरी ओर से तथा माताजी का हार्दिक आशीर्वाद कहियेगा। माताजी की तबियत ठीकठाक चल रही है। रोज प्रातः घूमने जाती हैं। हमारे खरजवा का प्रयोग चालू है। आपका स्वास्थ्य ठोक-अठीक चलता है यह ज्ञात हुआ। देह गेह भाड़ा तणो, ए आपणो नांहि - यह बात लक्ष में रखकर आत्म-भावना याद करते रहना। मन्त्र धारा अखण्ड बनाना। यदि यहाँ आ जाते तो अब रहने आदि की सुविधाएं भी बढ़ गई हैं। रसोइआ मीना का मामा देवा भी अच्छा है। सड़क आदि होने से टहलने में भी सुविधा हो गई और सत्संग-गंगा में गोता लगाना भी मिल सकता है—अतः उभय दृष्टि से लाभ हो सकता है। कब आने की गुंजाइश है ? लिखना। माताजी का हार्दिक आशीर्वाद ! धर्मस्नेह में वृद्धि हो ॐ। शांतिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद !

(पत्रांक—४०५)

हंपी २३-८-६८

ॐ नमः

नाहटा वन्धुओ !

पत्र अने औपधि मल्या. शुभराजजी नी तबियत हवे सुधार पर हशे. सवारे ताजा १ गरम करेला दूध मां दूधनो ज पावडर वे चमची मेलवी पीवा थी व्लड प्रेशर मां फायदो थवानु सांभल्युं छे. माटे ते प्रयोग करी जोजो। चिन्ता ओछी करजो।

अहिं आनन्द मंगल वर्त्ते छे धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. वधाने मारा तथा माताजी ना आशीर्वाद अने सॉं० प्र० वखत हार्दिक क्षमापना स्वीकारजो.

सहजानन्दघन

मैसूर असेम्वली स्पीकर नुं नाम छे—वंटवाल वैकुण्ठ वालिगा

अहिं पर्वाराधन आनन्द पूर्वक चालू छे. वैद्यराजजी आदि ने आशीर्वाद !

(पत्रांक—४०६)

श्री भांडकजी तीर्थ

ॐ नमः

३१-८-६८

भक्तवर्य श्री कोजमलजी,

पत्र कल शाम मिला। हाल सभी ज्ञात हुए। यहाँ परम कृपालुदेव की कृपा से आनन्द ही आनन्द है। हमारा स्वास्थ्य अच्छा है, माताजी का शरीर वैसा ही ठीक-अठीक चलता है। तुम्हारे शरीर का नाटक भी वैसा ही चलता है. पर आत्मा उससे जुदा है यह ख्याल छूटना नहीं चाहिए। और शरीर में तथा मन में जो कुछ दिखाई पड़ता है—उसका ख्याल छोड़कर इन सबको देखनेवाला मैं आत्मा सहजानंद स्वरूप हूँ. मैं परमगुरु परम कृपालु के समान ही हूँ—इस तरह उन दृश्यों में न उलझ कर आत्म-भावना की धारा को अखण्ड वनाने के काम में लगा रहना चाहिए। देह की सुध-बुध ही न रहे—वैसी तल्लीनता हो जाए—बस यही मोक्ष मार्ग है—इसी की आराधना किया करो। ॐ

वहाँ संवत्सरी के दिन प्रायः ६०० जन संख्या थी। पचासेक…नये नये आये थे। घी की वोली भी अच्छी हुई। आज, कल और परसों तीन दिनों में काफी लोग आनेवाले हैं। अहमदावाद से श्री लालभाई, जयन्ती भाई, वावुभाई, नीलगिरि से अनूपचंदजी सपरिवार वेंगलोर से गुजराती मण्डल. रामगंज मंडी—भवानी मंडी से देवीलालजी आदि तथा अलपई से हीरजीभाई. उनकी पुत्री-जँवाई-वच्चे विगैरह आ रहे हैं।

नैनमलजी ने आपको वहुत याद किये हैं, उनके वड़े भाई ने यहीं पर्वाराधना की। वेल्लारी से अमीचंदजी अस्वस्थ होने से नहीं आ सके। हुवलीवाले मिश्रीमलजी (गढ़ सीवाणा वाले) दम्पति को अठाई थी, सुन्दरजी भाई और दामजीभाई के पत्नियों के भी अठाई थी।

सड़क और थोड़े मकान बन जाने से आश्रम का दृश्य ही बदल गया है सत्संग भवन और कई मकान व्यक्तिगत अब तुरन्त में ही बनने वाले हैं. हिम्मत करके तुम आओ-सुविधा बढ़ जाने से तुम्हें प्रसन्नता बढ़ जायगी और उससे शरीर भी सुधर जायगा।

चम्पालालजी को चिट्ठी लिखवा भेजेंगे। उनसे मन-मुटाव होने का क्या कारण बना? रिखबाजी सपरिवार को मेरा तथा माताजी का हार्दिक आशीर्वाद कहना और उन्हें भी हंपि साथ में लाना। यह पत्र उन्हें पढाना। मुझे फुरसद कम है अतः अलग कागज नहीं देता! भुआजी जेतबाई का शरीर छूट गया। बाई मेघबाई, उनकी मामीसा हीराभाई दम्पती दलीचंदजी, मोंघीबाई रतन बदलिया दम्पती, धन्नूलालजी के पुत्र-दोहित्र, वंशराजजी हुंडिया, हेमचंद भाई दम्पती, जीवनभाई दम्पती. संगारवासा हुबली वाले मिश्रीमलजी आदि बहुत से यहाँ है, सभी का धर्मस्नेह स्वीकारियेगा।

देखो. यह बड़ा पत्र दिया है। अब खुश-खुश होना भला! ऐसा अवकाश क्वचित मिलता है। ५-६ नयी गुफायें भी तैयार होने वाली हैं—यदि आवो तो एकांत बहुत मिलेगी बोलो! कब आ रहे हो। चंचल बम्बई में भुआजी के ही घर है · अप्रेल में M. A. की डिग्री प्राप्त कर ली। उसका भी मुजरा स्वीकारना। ॐ शांतिः

हम सभी का आप सभी से हृदय की विशुद्धि पूर्वक सा० क्षामणा और आशीर्वाद स्वीकारना।

(पत्रांक—४०७) हंपी

ॐ नमः १३-९-६८

भव्यात्मन् (स्वामी नवलकिशोर)

सभी पत्र। चातुर्मास बाद हमको बंगलोर आदि जाने की भावना है। अब तुम कार्तिक में यदि आ सको तो सुविधा रहेगी। किन-किन तिथियों में प्रयाण करना यह ज्योतिषियों से ही अवगत कर लो।

हम तो अगली बार उस ओर आ चुके। अभी सम्भावना निकट में नहीं।

हम सभी ने तुम्हें क्षमा प्रदान की और याचना भी की है प्रभु भजन में मस्त रहो। ॐ शांतिः

सहजानंद हार्दिक आशीर्वाद!

(पत्रांक—४०८) हंपी

ॐ नमः १६-९-६८

भव्यात्मा रिखबाजी सपरिवार,

क्षामणा-पत्र मिला। हम सभी ने भी आप सभी को क्षमा दी है और क्षमायाचना की है स्वीकृत रहे। भीड़-भाड़ के कारण पत्र न दे सके। फोजाजी का पत्र मिला है—उन्हें आशीर्वाद!

चम्पालाल को पत्र दिया था, पर आज तक जवाब नहीं और न बिल की स्वीकृति। यहाँ हर साल पंचली मंडली की ओर से आषाढी एकादशी को पूजन आदि होता है, उन्हें स्थगित करके

इन्हें मौका दिया गया—जिसका परिणाम यह आया। क्या हम लोगों ने कोई उनका गुना किया है या कोजाजी ने ? उन्हें सूचित किया जाय कि आश्रम को खुलासा वार हा-या-ना का जवाब दें।

माताजी ने घर भर को कोजाजी को खामणा और आशीष फरमाया है। ॐ शांतिः

सहजानंदघन खामणा पूर्वक आशीर्वाद !

(पत्रांक ४०९) हम्पी ३-१०-६८

ॐ नमः

भव्यात्मन् (स्वामी नवलकिशोर)

पत्र मल्युं. विगत जाणी. तमारी अहिं आववानी भावना सफल थाओ।

अहिं आववा माटे बीकानेर थी मुंबई थई via गुंतकल जं० थई हुबली लाइने होस्पेट स्टेशन उतरवुं। त्यांथी हंपी बस स्टेंडे थई हंपीनी बसमां कण्डक्टर ने कहेवुं के श्री रा-आश्रम पासे उतारजो। कारण आश्रम ना बोर्ड पछी बीचे पूल उतरवी हम्पी गांव माँ जाय छे। त्यां जवाथी ४ फर्लांग पाछुं आववुं पड़े। होस्पेट थी हम्पी ७। माइल थाय छे. आश्रम ने बोर्ड पासे आश्रम मां आववानी सीधी सड़क बे फर्लांग नी छे ते ठेठ गुफा पासे ना कम्पाउण्ड सुधी छे.

बीकानेर अगरचंदजी साव ने आशीर्वाद जणावजो। त्यां ना कुंभाराम शास्त्री ने अहिं आववा नी भावना हती। तेना पण खबर होता आपजो.

कार्तिक कृष्णा १३-१४ और अमावस्याए. तीन अहोरात्र अहीं अखण्ड धून चाले छे तेमां आवेल थया होत तो बहु मजा आवत.

तमारा परिवार ने अने तमने मारा तथा माताजी ना हार्दिक आशीर्वाद। सुखभाई ना धर्मस्नेह—

ॐ शांति : सहजानन्दघन

(पत्रांक— ४१०) हंपी ८-१०-६८

ॐ नमः

भक्तवर्य (श्री देवीलाल जी रांका)

पत्र मिला। हाल ज्ञात हुए। यहाँ आनंद ही आनंद है, वहां भी सभी को हो—यह आशीर्वाद। लोढाजी का अन्तराय का उदय जाना। भाविभाव !

यहाँ सत्संग भवन का ग्राउण्ड—लेवल चालु है।

माताजी आदि सभी प्रसन्न हैं, आप सभी को हार्दिक आशीर्वाद कहते हैं। धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो। ॐ शांति :

लोढाजी सपरिवार को हा० आशीर्वाद।

सहजानंदघन आशीर्वाद !

(पत्रांक—४११) हंपी .

ॐ नमः ८-१०-६८

भव्यात्मा श्री चोपड़ाजी एवं बांठियाजी सपरिवार (हाथरस)

पत्र मिला। कलकत्ता से भी शुभराजजी सा'ब का पत्र कल ही मिला। यहाँ प्रभु कृपा से आनंद ही आनन्द है।

माताजी की तबियत वैसी नहीं जो बिस्तर में रहना पड़ा हो, प्रत्युत सामान्य गड़बड़ बनी रहती है, वर्षा बीत गए। रोज प्रातः घूमने जाती हैं, चौका भी सम्भालती हैं। अतः चिन्ता न करें. आपकी यहां आने की भावना सफल हो।

दीपावली के दिन तीन रोज १३-१४-३० अहोरात्र यहाँ अखण्डधून का प्रोग्राम प्रति वर्ष रहता है। यदि इसमें सम्मिलित होना हो तो उसके अनुकूल वहां से प्रयाण करियेगा। अन्यथा बाद में ही सही।

शुभराजजी साहब तो का० व० ७-८ को पावापुरी जाने की भावना करते हैं। घर भर वालों को, साधर्मियों को और मित्रों को मेरा एवं माताजी का हार्दिक आशीर्वाद कहियेगा। और आप भी स्वीकारियेगा। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन हार्दिक आशीर्वाद !

(पत्रांक—४१२)

ॐ नमः १३-१०-६८

भव्यात्मन् (सौभाग्यमलजी कोठारी)

जीव यदि हृदय की सच्ची लगन से अपना माना हुआ सारा बोझ, ज्ञानी के चरणों में चढ़ा कर, श्वासानुसंधान पूर्वक प्रभु स्मरण की धारा को अखण्ड बना ले तो छह मास में ही अपनी दुवि-धाओं से छुट्टी पा सकता है।

सहजानन्दघन आशीर्वाद !

(पत्रांक ४१३) हम्पी १६-१०-६८

ॐ नमः

भव्यात्मा (श्री विजयकुमारसिंह बंडेर)

पत्र मल्युं हृदय व्यथा जाणी। ज्ञानी कर्म टाळवानो उपाय बतावी शके पण कोई ना कर्म वाळी न शके. आ बाद ध्यान मां रामवा जेवी छे. बच्चीयो ना अने तमारा तथा प्रकार ना कर्म नो उदय वर्ते छे ते धैर्य थी सहवा मेहनत करतां शीघ्र टळे माटे तेम करजो। माताजी ना बनेवी हीराजभाई गुजरवा वाला नुं हार्ट फेल थतां माताजी ना हृदय ने सख्त आघात लाग्यो, तेथी तबियत नरम छे.

तमने आशीर्वाद जणाव्या छे. धन्नुलालजी आवी प्होता छे. आज थी अखण्ड धून चालू छे. प्रभु कृपा छे. सत्संग भवन निर्माण नुं कार्य चालू थवानी तैयारी छे. तेम फुरसद ओछी रहे छे. माटे पत्रोत्तर आपता नथी. घर भर ने आशीष।

सहजानन्दघन अगणित आशीष

नूतन वर्षाभिनन्दन !

(पत्रांक—४१४)

ॐ नमः

हंपी २६-१०-६८

अनन्य आत्म शरण प्रदा, सद्गुरु राज विदेह,

पराभक्ति वश चरण में, धरूं आत्म बलि एह।

भक्तवर्य श्री शुभराजजी एवं श्री भंवरलालजी सपरिवार

पत्र यथासमय मिला था, पर प्रत्युत्तर देना विस्मरण हो गया। माताजी के बहनोई सा'ब खेराजभाई गुलबर्गा वालों का हार्ट फेल हो जाने से वे अचानक चल बसे. जिसके समाचार ज्ञात होते ही माताजी के हार्ट पर बड़ा धक्का पहुँचा। कुछ रोज से धीरे-धीरे सुधार हो रहा था कि कल से वायु गोला का आक्रमण हुआ। रात भर बड़ा कष्ट रहा, अब कुछ राहत है। चन्दना १७-१० को हीराभाई आदि के साथ यहाँ आई हुई है, पूनम के बाद वापस लौटेगी !

सत्संग भवन—५१·६१ हॉल और १० का चारों ओर बरामदा ऊपर आर० सी० सी० जिसमें पूर्वाभिमुख कृपालुदेव की स्थापना होगी। केवल बिल्डिंग का १। लाख अन्दाज खर्च सम्भव है। टीले को १० फुट नीचे उतारा जा रहा है। मिट्टी हट चुकी, शिलाएं अब हटाई जा रही हैं।

जिनालय एक व्यक्ति ने एक लाख की आफर की है। अतः सत्संग भवन से सम्बन्धित किन्तु अलग बनेगा। उत्तराभिमुख भवन के द्वार से ही दर्शन हो सके उसी प्रकार निर्माण भावि में होगा। भवन निर्माण के पश्चात् मन्दिर निर्माण होगा।

दादावाड़ी—इसके लिए २५ हजार एक व्यक्ति की ओर से मिलने की सम्भावना है, अतः स्वतंत्र रूप में निर्माण होगा।

एक सम्पन्न और धार्मिक जैन कण्ट्राक्टर के हाथों ही उक्त निर्माण कार्य होंगे। रसोईघर के हाल के उपर हाल निर्माण लगभग पूर्ण होने जा रहा है। कुछ गुफाएं भी तैयार हो रही हैं। सत्संगी जनों का आना-जाना चालू रहता है—इन सभी कारणों से पत्रोत्तर में ढील हुई. अतः क्षन्तव्य है।

आप यात्रा से निर्विघ्न लौटे होंगे ? स्वास्थ्य ठीक होगा ? मगनबाई और उनकी भुजाई साब स्वस्थ होंगी। आप सभी को हमारा तथा माताजी का हार्दिक आशीर्वाद और मेघबाई, चन्दना, सुखभाई आदि का सादर जयजिनेन्द्र।

आपकी व्या० उपाधि का वर्णन पढ़ा : समय अपना काम कर रहा है। जन्मान्तर के रोड़े, गाड़ी अटका रहे हैं। धैर्य से निपटाना होगा। हताश न होकर मन्त्र स्मरण की धारा को अखण्ड बल लगाकर उचित उपाय करते रहना चाहिए।

आर्त्त-रौद्र विहीन केवल धर्मध्यानावलम्बन वश कर्म स्थिति को अल्प काल में निःसत्व बनाया जा सकता है। अतः वैसा पुरुषार्थ करते रहो। धैर्य, साहस और उत्साह में मंदता न होने दो।

धूप और छायावत परिस्थितियां परिवर्त्तनशील हैं, अतः धूप के बाद छाया की प्रतीक्षा करो। नाहिम्मत मत बनो। अधिक आप जैसे सुज्ञों को क्या लिखना ?

सत्संग भवन के ही दीवारों में उचित स्थानों पर लोहे के कपाट भी साहित्य के लिए संयोजित किये जायेंगे। जिनमें आपकी संस्था के अधिक साहित्य को स्थान दिया जायगा। आपकी संस्था में से क्या क्या और कितना साहित्य हमें मिल सकेगा ? इसका निर्णयात्मक जवाब अब हमें मिलना आवश्यक है, अतः आप श्री अगरचन्दजी साहब को हुक्म फर्माइयेगा जिससे कि हमें भी यहाँ व्यवस्था करना सुगम हो जाय।

माताजी से पत्र लिखना असम्भव है, अत. इनकी ओर से धैर्य की गठरी आप स्वीकार करेंगे— वैसी आशा है। अपनी भोजाई सा'ब को भी बहुत याद करती हैं। धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो।

भंवरलालजी सा'ब ! आप प्रसन्न रहने अभ्यासी हैं ही। परिस्थितियों की जाल में दिखती हुई अपनी छाया से अपने स्वरूप को द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव से भिन्न और निजी सहज ज्ञानादि चतुष्टय से अभिन्न-जानते ही हैं, अतः अक्षुब्ध रहियेगा। क्योंकि मोह क्षोभ से रहित अपने आपको रखना यही वीतरागी-धर्म है। अतः सब धर्मनिष्ठ बने रहियेगा।

अपने सारे परिवार को, मित्रों को, साधर्मियों को—धूपियाजी, बडेरजी, वैद्यराजजी, कान्तिभाई, सुन्दर बाबू, विमल बाबू इत्यादि को मेरा और माताजी का हार्दिक आशीर्वाद कहियेगा। फोटो मिला था। यदि माताजी की अस्वस्थता कम हुई तो मिगसर कृ० ६ को यहाँ से प्रयाण करके गदग, हुबली, कुंदगोल बाहुबली विद्यापीठ-कुम्भोज, गुलबर्गा आदि जाने की शक्यता है।

बेंगलोर के कानजीस्वामी के भक्तों में से कुछ-कुछ यहाँ आने लगे हैं—उनका भी वहाँ ले जाने का अति आग्रह हो रहा है।

पावापुरीजी और शिखरजी की प्रतिष्ठा विषयक तत्संबन्धित व्य० को पूछा जाय कि ज्योतिष की दृष्टि से कौन-कौन से मुहूर्त इस वर्ष आते हैं ? तलाश कर लिखावें। यदि यहाँ से अवकाश मिलेगा तो हम उचित सेवा कर सकेंगे। दिए हुए मुहूर्त्तों में से फिर हम पास कर सकेंगे। माताजी तो अपने शरीर की स्थितिवश आ सकेंगे या नहीं, कोई ठिकाना नहीं। इनकी स्थिति और निर्माण कार्यों को देखते हुए हमसे भी आना होगा या नहीं—निश्चित जवाब हम अभी नहीं दे सकेंगे।

धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन—हार्दिक आशीर्वाद !

(पत्रांक— ४१५) हम्पी

ॐ नमः १०-११-६८

भव्यात्मा श्री शुभराजजी, श्री मेघराजजी, श्री भँवरलालजी आदि सपरिवार,

आपना पत्रो मल्या हता. तार थी जवाब मोकल्यो ते मल्यो हशे ज. दीवाली अने पूर्णिमा घणाज उल्लास पूर्वकनी आराधना वडे वीत्यां. वरघोड़ो, जमण वि० रखाया हता. जन संख्या ३५०/४०० नी हती.

माताजी नी तबियत सुधरती जाय छे. एमणे आप सौने गण्या गणाय नहिं वीण्या वीणाय नहिं तेटला आशीर्वाद जणाव्या छे. पोतानी भाभीजी अने मगनभाई ने घणाघणा याद कर्या छे.

आवती प्रभाते लगभग आश्रम अने आस पास ना भक्तो पचासेक नी संख्याए १ बस अने बे कार वड़े अहिं थी प्रयाण करी क्रमशः गुलबर्गा, कुलपाकजी, वरंगल, हैद्राबाद, रायचुर, गदग, हुबली, कुंदगोल, कुंभोज आदि जशुं. पखवाड़ीउ लागशे, पछी जेवो उदय.

चंदना, हीराभाई वि० गुलबर्गा थी सीधा मुंबई जशे. बधाये आप सौने सादर जयजिनेन्द्र साथे प्रणामादि जणाव्या छे.

सत्संग भवन नुं लेवलिंग कार्य हजु पूरुं थयुं नथी. धीमे धीमे चाले छे. दस फुट नीचे उतारायं छे. पृथ्वी शिलाओ आखा विस्तार नी तोड़वामां आवी रही छे.

तमारी परिस्थिति थी तमारे मुंझाई ने नवा कर्म बांधवा नहिं. परंतु सभाई थी प्रभु स्मरण नी अखण्ड धारा ने चालवी उद्यम कर्या करवो. पोतानी नजीवी भूल नुं परिणाम केवुं भयंकर आवे छे. ए जाण्या पछी फरी थी भूलो न करवी. एवो दृढ़ निश्चय राखवो। परिस्थितिओ स्वयं बदलाया ज करती होय छे. तो तेने बदलवा नी व्यर्थ चेष्टा न करवी. हिम्मतहार न थवुं ॐ

त्यां धूपियाजी, बडेरजी, वैद्यराजजी, सुन्दरलालजी पारसान, विमल बाबू अने कान्तिभाई विगेरे ने हार्दिक आशीर्वाद जणावजो. धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि करजो. ॐ शांतिः

सहजानन्दघन अगणित आशीर्वाद सह सहजात्म स्मरण !

(पत्रांक—४१६) हम्पी २५१-१-६८

ॐ नमः

भव्यात्मा श्री शुभराजजी श्री मेघराजजी श्री भँवरलालजी आदि परिवार

आपनुं कार्ड मल्युं. अमो गुलबर्गा, कुलपाकजी तीर्थ, वरंगल, हैद्राबाद, रायचुर अने गदग फरी आव्या. सर्वत्र उल्लासपूर्ण कार्य क्रम उजवायुं. हैद्राबाद मां ४ व्याख्यानो थयां. बब्बे हजार श्रोताओ घणी शिस्त थी श्रवण करता हता.

माताजी ने हार्ट मा व्याधिदेव नो अधिक उदय थतां डा० ना अभिप्राय थी बाकीनुं प्रोग्राम केन्शल करी ता० १६ नी सांजे अहिं आवी प्होंता. लोहानी आदि औषधि प्रयोग चालु कर्या, हवे राहत छे लोही आठ आना घटी गयुं होवा थी ते वधे तेवा प्रयोग चालु कर्या छे. चिन्ता करशो नहिं चंचल गुलबर्गा थीज मुंबई गई.

आप सौना स्वास्थ्य नां खबर आपजो, सौ स्वस्थ अने सदाय प्रसन्न रहो. ए मारा तथा माता जी ना आशीर्वाद !

दादाजी ना मंत्र-जप ने अखण्ड बनावतां अशुभ उदय जल्दी थी वेदाई शुभोदय ने अवकाश मले। पूर्वबद्ध अशुभ कर्म ज आपने सामुदायिक पणे कनड़े छे. तेमां बीजा जीवो तो निमित्त मात्र छे. एम समजी समता पूर्वक उद्यम चालू राखजो हताश न थवुं.

श्री अगरचंदजी आदि ने आशीर्वाद जणावजो. धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि करजो, त्यां याद करनारा तमाम भाई व्हेनो ने अने आप सौने मारा तथा माताजी ना आशीर्वाद ! ॐ शांतिः

सहजानंदघन

(पत्रांक—४१७) हम्पी

ॐ नमः २-१२-६८

भक्तवर श्री रांकाजी सपरिवार,

पत्र मल्युं अहिं आनन्द मंगल छे।

लोढाजी दम्पती एवं कटारियाजी मी० शु० ७ ना दिने अहिं थी प्रयाण करी तमारा तरफ पधार्या तेमना मुखे अहिं ना बधा समाचार जाणी लेजो।

माताजी नी तबीयत हवे घणी सुधारा पर छे एम तेमने जणावजो।

जेम'''जीव छूटवा इच्छो अने प्रबल'''पूर्व नुं ऋण पतावता कर्मो भेळठो हल्लो करेज करे। माटे मोक्षार्थीए तेथी गभरावुं नहिं. सतत् आत्मभान अने वीतरागता जाळवो ने निरयोग प्रवृत्ति करवी. तेमां भूल थाय एटली हानि छे परिस्थिति बदलवा नी चेष्टा न करवी पण पोताना भावो ने बदली स्व स्वभावे वर्तवुं'''एज मोक्ष नो समा ?) छे.

माटे तेवो पुरुषार्थ कर्जेज वरो अधिक शुं लखुं ?'''''एवं स्वजनो ने'''''माताजी नां हार्दिक आशीर्वाद जणावजो अने तमे पण स्वीकारजो। ॐ शांतिः

सहजानंदघन—सहजात्म स्मरण

(पत्रांक—४१८) हम्पी

ॐ नमः ६-१२-६८

भक्तवर्य श्री शुमराजजी एवं श्री भँवरलालजी सपरिवार

हम यात्रा से लौट आये. बाद में पत्र दिया था मिला ही होगा।

माताजी के हार्ट की गड़बड़ी के कारण ६ ही यात्रा में बीते और अध बीच में यहाँ लौटे। देशी उपचारों से राहत है, चिन्ता न करें। सत्संग भवन आदि निर्माण कार्य धीमी गति से चालू है।

आप सारे परिवार के मेम्बरों का स्वास्थ्य ठीक चल रहा होगा। आप सभी को हमारा एवं माताजी का हार्दिक आशीर्वाद संप्राप्त हो।

श्री मेघराजजी और अगरचंदजी को भी हम उभय के आशीर्वाद लिख भेजिएगा। एवं वहाँ सभी मुमुक्षुओं को भी आशीर्वाद कहिएगा। हाथरस भी सभी को आशीर्वाद लिखें।

चंचल बम्बई है, उसका स्वास्थ्य एवं अभ्यास ठीक चल रहा है। धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो! ॐ शान्तिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद!

विजयराजजी पगारिया दो दिन से यहाँ हैं, उनका सादर मुजरा।

(पत्रांक—४१६)

हम्पी

ॐ नमः

१७-१२-६८

भक्तवर्य, (रांकाजी)

अपने प्रेम धन को कामराग, स्नेहराग और दृष्टिराग इन तीनों प्रवाहों में से रोक कर ज्ञानियों में बहाते हैं तब जिन ज्ञानी के प्रति वह प्रेम प्रवाह बहने लगता है, उसी आकार में अपनी आत्म सत्ता में छिपी हुई प्रभुत्व शक्ति प्रकट हो उठती हैं, जबकि वह प्रेम प्रवाह उपरोक्त तीनों में से किसी भी एक के प्रति मुड़ जाता है, तब यह धारा खंडित हो जाने से वह साकार प्रभुत्व शक्ति, ओझल हो जाती है यह तथ्य है। अतः यदि हमें इसे स्थायी बनाना है तो अपने प्रेम प्रवाह को भी इस ओर अखंडित बनाना अनिवार्य है। यह कार्य दूसरों से नहीं प्रत्युत अपने से ही होना शक्य है, अतः भैया! कमर कस लो और अपने प्रेम प्रवाह को अन्यत्र कहीं भी मत बहने दो। सुज्ञेषु किं बहुना? आपका पत्र मिला।

माताजी का स्वास्थ्य कभी ठीक तो कभी अठीक रूप में दर्शन हो रहा है। फिर भी व्याधि के उदय में भी आत्म समाधि का वेदन हो रहा है, और यही कर्त्तव्य है। इनका और हमारा आप सपरिवार को श्री लोढाजी आदि मित्रमंडली को हार्दिक आशीर्वाद। ॐ शान्तिः

सहजानंदघन. आशीर्वाद!

(पत्रांक—४२०)

हंपी

ॐ नमः

१८-१२-६८

भक्तवर्य श्री शुभराजजी, श्री भँवरलालजी आदि सपरिवार (कलकत्ता)

पत्र मिला, हाल ज्ञात हुए। प्रभुकृपा से यहाँ आनंद है, आप सभी को भी हो. यही हार्दिक आशीर्वाद। माताजी के स्वास्थ्य में जो सुधार मालुम होता था, फिर सीने के दाहिने ओर दर्द बढ गया। डा० ने वायु बताया, जिसका भी इलाज चालू है। उसमें थोड़ा-सा फायदा दिखता है। पर अब थक गए हैं। अतः आराम जैसी स्थिति होने से पूरा-पूरा नहीं प्रत्युत कुछ-कुछ आराम लेती हैं।

वहाँ आपका स्वास्थ्य ठीक सा होगा। आप की धर्मपत्नी को साईटिका का उपद्रव हो गया, ऐसा है बुढापा। रोगों का घर ही तो यह शरीर है। केवल शुद्ध भाव में रहना जीव से कठिन है अतः

बार-बार अशुभ भावों में बह कर पाप प्रवृति का बंध करता रहता है जिसका यह नतीजा है उपचार तो चालू होगा। मगनबाई की हालत भी ज्ञात हुई। कर्मों का भी अजब तमाशा है।

कलकत्ता और बीकानेर आप के सारे पारिवारिकों को एवं स्नेहियों को हमारा एवं माताजी का हार्दिक आशीर्वाद कहें—लिखें।

प्रभु-भजन में जोर लगाते रहना जिससे भविष्य निर्माण उत्तम हो। धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो। ॐ शान्तिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक—४२१)

हंपी १२-२-६६ बुधवार

ॐ नमः

भक्तवर्य बडेरजी सपरिवार

ता० २०-१ ना रोज अहिं थी ससंघ प्रयाण करी अमो अनंतपुर, मद्रास, वेल्लुर, तिरुवन्नामलइ, ट्रीची, बंगलोर, हिरीयुर, अने बेल्लारी थतां १-२ मां अहिं सुखरूप आवी पहोंता, सर्वत्र धर्म प्रभावना खूब थई।

गत रविवारे बेल्लारी दि० जैन मन्दिर ना शिखरे कलश स्थापना माटे त्यां ना आगेवानो ना अति आग्रहे जइ आव्या. दि० श्वे० उभय मली ने ए काम आदर्श रीते कर्युं।

माताजी नी तबियत हमणां सारी छे. एमणे आप सौने एवं नूतन दंपती ने लग्न मंडप मां होय त्यारे सहर्ष आशीर्वाद जणाव्या छे. अने जणाववा सूचना करी छे.

अने मारा तरफ थी आ आशीर्वाद-पत्र मोकलुं छुं. ते अर्पण करजो-पुत्रीओ नी चिंता सतावती होय छतां तेमना ज कर्म प्रमाणे जे थाय छे तेमां फेरफार कोण करी शके? ए जाणी अचिंत पणे भजन चालू राखवा.

तमारां जननी, धर्मपत्नी अने यथाय बालको, एवं भाइओ सपरिवार ने मित्रो ने मारा हा० आशीर्वाद जणावजो. अने माताजी ना पण. धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो ॐ शान्तिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक—४२२)

हंपी १८-२-६६

ॐ नमः

भक्तवर श्री फोजमल जी,

दोनों पत्र मिले। बाहुबली यात्रा और बम्बई दादावाड़ी के समाचार अवगत हुए। बम्बई के तोफान का भी दर्शन हुआ होगा? भायखला एवं बम्बई के कोई दादाजी के भक्तों का गच्छ कदाग्रह के कारण हमसे सम्बन्ध नहीं रहा। दादाजी खुद के प्रति हम प्रार्थना तो करेंगे पर वे खुद अपनी नामवरी में उदासीन हैं। पंचम काल के दुर्भागी जीव हैं। वे ज्ञानी की आशातना न करें तो अधोगति

में कैसे जा सकें? हमारा काम प्रार्थना करने का है, सो तो करेंगे ही. फिर जो होना होगा, वही होगा।

माताजी का स्वास्थ्य अच्छा है। आप को रिखबचंदजी सपरिवार को तथा याद करने वाले सभी को आशीर्वाद कहा है। और हमारा भी सभी स्वीकारें।

तुम दूध में दूध का पावडर दो छोटी चमच डाल कर सुबह लेने का प्रयोग करके देखो। दस्त लगे तो लगने दें। फरियाद मिट जायगी। मेघबाई, गुणवंतीबाई, दलीचंदजी, सुखलाल, खेंगार भाई, धन्नुलाल जी की ओर से दादाजी की पूजा बड़े ठाठ से सम्पन्न हुई ॐ शान्तिः

आशीर्वाद! बेंगलोर के विशेष समाचार लिखें

सहजानंदघन।

(पत्रांक—४२३) हंपी

ॐ नमः ५-३-६६

भव्यात्मन् (राजवैद्य श्री जसवंतराय जैन, कलकत्ता)

हम २०-१-६६ को प्रयाण करके अनन्तपुरम्, मद्रास, वेल्लुर, तिरुचनापलई, ट्रीची, बेंगलोर, हीरीयुर, बेल्लारी आदि हो आए। सर्वत्र खूब धर्म प्रभावना हुई।

फा० सु-४ कोबेल्लारी वाले श्री अमीचंदजी ने यहाँ दीक्षा लेकर अनशन शुरु कर दिया, अखंड धून रखी गई थी। नव दिनों में चारित्र पूर्वक आराधना करके समाधिभाव से शरीर छोड़ा। १० हजार भावुकों ने दर्शन लाभ लिया। खूब धर्म प्रभावना हुई माताजी ने उक्त आराधना में दिन रात खूब सेवा दी, परिश्रम वश थोड़ी तबियत खराब हुई पर अब सुधर रही है। इन्होंने आप को हार्दिक आशीर्वाद कहा है।

वहाँ शुभराजजी, भँवरलालजी नाहटा, धूपियाजी, बदलियाजी, बडेरजी एवं कान्तिभाई आदि जो जो याद करें—सभी को आशीर्वाद हमारा एवं माताजी का कहिएगा। कल शाम तक भीड़ कम हुई. धर्मस्नेह में वृद्धि हो। ॐ शान्तिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद!

(पत्रांक—४२४)

ॐ नमः ५-३-६६

भव्यात्मन् (रामजीभाई तथा शांतिभाई)

पत्र मल्युं-चावरी विषयक व्यवहारिक प्रश्नो तो तमारा वडीलो उकेले. लग्न अने पुत्रोत्पत्ति मे मूलेज आत्मार्थ नथी, त्यां बीजी वात शी? तमारा वंश ने ओशीयां साथे संबंध छे. तेथी तेवी प्रथा चाले छे.

धामण प्रतिष्ठा विषयक जाण्युं. तमारी साधना मां प्रतिदिन वे वखत प्रार्थना-भक्ति, आत्मसिद्धि अने श्वासानुसंधान पूर्वक 'सहजात्म स्वरुप परमगुरु' मंत्र नुं सतत रटना करो। थोड़ाक समय वांचन कृपालु ना वचनामृत नुं राखो जेथी पात्रता खीलशे.

रामजीभाई ने आशीर्वाद जणावशो. अहिं वेल्लारी वाला अमीचंदजीए दीक्षा साथे अनशन वत् स्वीकारी ६ दिवसमां अखंडधाराए आराधना करी देह छोड्यो. हीराभाई हाजर हता. तेओ थोरड़ी गया. तेमनी पासेथी विशेष माहीति जाणशो. काकीबाना आशीष. सुखभाईनी याद ॐ शान्तिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद!

(पत्रांक—४२५)

श्रीमद् राजचंद्र आश्रम
हम्पी रत्नकूट

ॐ नमः

ता० २१-३-६६

अनन्त आत्म शरण प्रदा। सद्गुरु राज विदेह,
परा भक्ति वश चरण में। धरुं आत्म बलि एह,

भक्तवर्य श्री शुभराजजी, श्री मेघराजजी. श्री अगरचन्दजी श्री भँवरलालजी श्री केशरीचन्दजी श्री हरख-चन्दजी अने पारस—पद्मकुमारादि सपरिवार,

मुम्बई थी मोकलावेल १४ पुस्तकों विशनजीए गई काले अहिं आव्या. साथे पत्र पण मल्युं. विगत जाणी.

गई काले अमो कम्पली ग्रामे मंडली सहित जई आव्या, अने गई काले ज श्रीचन्द्रप्रभाश्रीआदि ४ ठाणा अहिं आव्या छे. आपने याद कर्या छे. वे एक दिवस रोकावा नी वात करता हता। मद्रास वाला श्री पूनमचंद भाई दम्पती अने एमना वेवाण मिसिस सिंघजी भाई करनुर मां थी श्री विचक्षणश्रीजी नो हैदराबाद तरफ विहार करावी आ मंडली नी व्य० करावता अहिं आव्या छे. माताजी ने एमनी व्य० माटे अहिं रोकव्या हता. अने अमे कम्पली जई आव्या त्यां 'आचार का विचार' आ विषय उपर वे प्रवचन थयां. जनता उत्साह पूर्वक सांभलती हती. गंगावती, वेल्लारी अने होसपेट ना भावुको पण त्यां आव्या हता. श्री तिलकश्रीजी ठाणा ५ वेल्लारी छे. ते सहज जाणवा लख्युं छे.

माताजी नी तबियत ठीक चाले छे. आ देहे फरी सप्ताह थी बवासीर नी कृपा शुरू थई छे ते ठीक थई जशे, त्यां आप सौ स्वस्थ हशो. अगरचन्दजी सा'व ने आशीर्वाद लखी जणावजो. तेमनो बीकानेर थी पत्र मल्युं हतुं. साहित्य मोकल्या बदल हार्दिक अभिनन्दन!

अहिं आनन्दघन बाबा नी अन्तिम आराधना मां तमो कोई न आवी शक्या ते क्षम्य छे. मात्र जाणवा खातर तार अपायुं हतुं।

कर्म ना विषम उदये समभाव जालवी जो जीव वर्त्ते तो कर्म ऋण थी शीघ्र मुक्त थाय छे. माटे

ते हित रूप जाणी समता भाव ने साधजो. आ नाटक ने नाटक जाणी साक्षी भावे रहेजो. ए विषय मां आप प्राज्ञो ने अधिक शुं लखाय ?

आपना सौ ना पारिवारिकजनो, मित्रो, धर्मस्नेहिओ सौ ने हार्दिक आशीर्वाद जणावजो.

माताजी ए आप सौ ने हार्दिक आशीर्वाद जणाव्या छे. वीकानेर अने हाथरस पण आशीर्वाद जणावजो. धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि करजो. ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक—४२६) हंपी

ॐ नमः २१-३-६६

अनन्य आत्म शरण प्रदा। सद्गुरु राज विदेह।
पराभक्ति वश चरण में। धरू आत्म वलि एह ॥

भक्तवर श्री धूपियाजी सपरिवार

आपनुं पत्र मल्युं. विगत अवगत थई, अहिं आनंद मंगल वर्त्ते छे. आ देहे गर्मी वशात् थोड़ी ववाशीर नी कृपा शरू थई छे. माताजी नी तवियत हवे सुधरी छे. तेमणे आप सौ ने हा० आशीर्वाद जणाव्या छे.

श्री धन्नूलालजी वहोत खुश खुश रहते हैं. एमना धर्मपत्नी अने छोटे लड़के अहिं आव्या छे. त्रणे ना हा० जयजिनेन्द्र स्वीकारजोजी.

श्री वैद्यराजजी, श्री कान्तिभाई, श्री वदलियाजी, श्री वडेरजी आदि ने शुभ समाचार नी साथे आशीर्वाद जणावजो जी, श्री वडेरजी ने पत्रोत्तर न आप्या वद्दल उपालम्भ आपजो.

आपना धर्मपत्नी ने धर्म आराधना मां वल आपता रहेजो. वहु विचित्र कर्म उदय एमने वर्त्ते छे. पूर्व सेवित देहाध्यास नड़े छे. माटे जागृति अपावजो.

श्री सुन्दरवावू, श्री विमलवावू श्रीमाल आदि ने आशीष जणावजो. धर्मस्नेह मां वृद्धि हो.
ॐ शांतिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक—४२७)

ॐ नमः हम्पी २३-३-६६

अनन्य आत्म शरण प्रदा। सद्गुरु राज विदेह।
पराभक्ति वश चरण में। धरू आत्म वलि एह ॥

भव्यात्मा आत्मार्थी श्री वावूलाल भाई सपरिवार,

पत्र यथासमय मल्युं. पण अहिं साध्वी मंडल वि० आवी जतां फुरसद ना अभावे प्रत्युत्तर मां ढील थई ते क्षम्य छे.

जीव अनादि काल थी वर्तमान नो दुरुपयोग करतो आव्यो छे. तेमा मुख्य कारणो छे—१ भूतकाल नी स्मृति. २ भविष्य नी चिन्ता अने ३ वर्तमान संग नी आसक्ति. आ त्रणे कारणो ने लीधे वर्त्तमान नुं एक एक प्रत्येक क्षण आत्मभान अने वीतरागता पूर्वक वितावुं घटे, ते बनी शकतुं नथी. परिणामें व्यर्थ नु कर्म बन्धन थया कर छे.

भूतकाल नी प्रत्येक घटना वीती चुकी तेने याद करता रहेवा थी शुं फायदो ? भावीनी एक पल पण हाथ मां नथी. तेनी चिन्ता कर्या करता होइए तो तेथी पण कइं लाभ थतुं नथी. अने वर्तमान संग तो कर्माधीन छे तेनी साथे साक्षीभावे वर्तीए तोज नवां कर्म न बंधाय अने आसक्ति भावे वर्तीए तो नवां कर्म बंधाई भव भ्रमण वधे, माटे ए त्रणे बंध ना कारणो जाणी, तेथी भिन्न पोताना आत्मा नुं भान राखी अने साक्षी भावे वर्तवुं हितरूप छे

जेने भव भ्रमण नो भय वर्त्ते छे पण इहलोक, परलोक आजीविका चोरी, अरक्षा, वेदना अने मृत्यु ए सात प्रकार ना भय वर्तता नथी—तो ते हित रूप छे कारण के तेथी वैराग्य भाव दृढ थाय छे. माटे भव भय कामनो चीज छे ते होय तो हित रूप छे पण ते सिवाय नो कोई प्रकार नो भय नकामो छे कारण के आत्मा अजर-अमर शाश्वत छे. जेने जन्म मरण होय नहि; पण देह ने होय एने आ लोक के परलोक ना भौतिक सुखो के दुखो स्पर्शता नथी पण देह ने स्पर्शता होय छे. जेनु आत्म धन चोराय ज नहि—जड़ धन तो ए भोगवी शकतो नथी. ए अजर अमर होवा थी मरी शकतो नथी, पण देह मरे छे. अने एनी शाश्वत होवा थी रक्षा स्वतः करती होय छे. एमां वेदना पण होती नथी ए वेदनादि देह मां सम्भवे छे. अने देह तो श्मशान नी चीज छे तेनी फिकर शा माटे ? आजीविका वड़े जे जड़ वस्तुओ मले तेने देह भोगवे पण आत्मा भोगवी शकतो नथी तो पछी ते सम्बन्धी पण भय शाने ?

हे आत्मन् ! आत्मभान ने जाळवी राख, आत्मानुं अस्तित्व, नित्यत्व, कर्तृत्व, भोक्तृत्व, मोक्ष अने मोक्षोपाय आ छः प्रकार नी विचारधारा वड़े आत्मभान टकावी राखवा थी, भय ने भय लागी जशे अने ते भागी जशे, एम चोक्स मान. एम निर्णय थई ने भाविनी आशा ना पाश ने कापी नाख—

"आशा मारी आसन घर घट में, अजपा जाप जगावे,
आनन्दघन चेतनमय मूरति, नाथ निरंजन पावे"—आनन्दघनजी.

अर्थात्—तमाम भौतिक आशाओनी कतल करी 'चैतन्य प्रदेशे चेतना ने वेशाडी— केवल ज्ञान मात्र ने ज आप्पा करवा मां उपयोग स्थिर करी विनाज जप प्रयत्ने पोताना स्वरूप अस्तित्व नुं भान राखवा रूप अजपा जाप जप्या कर, पछी हे जीव ! तुं आनंद नी नक्कर ज्ञानमय केवलज्ञानमय कर्म अंजन थी रहित अने सदाय पोताना रक्षा रूप सहजात्म स्वरूप मूर्ति ने जरूर पामीश. एटले के सिद्ध पद ने प्राप्त पोताना आत्मा ने पोतेज तुं पामीश ज. वधारे शुं कहेवुं ? "कर विचार तो पाम"

बाकी नकामी कल्पनाओ ना कोथळा भरी-भरी तेनो व्यापार कर्या करवा थी काई हाथ नहीं आवे. आटलुं जो ध्यान रहेशे तो तमारा तमाम प्रश्नो ना समाधान मळी रहेशे, स्वतः मळी रहेशे, तेम

छतां न समजाय तो अवकाश लई ने अहिं थोडुंक सत्संग करी एनो रंग लगाड़ी जाओ. अधिक पत्र वाटे केटलुं समजावाय ?

श्री पूनमचंद भाई दम्पती अने तेमना वेवाण गया गुरुवार थी अहिं छे आजे सौ ने जवानुं सांभल्युं छे. एमने वहु गम्युं छे. साध्वीमण्डल ना प्रसंगे सत्संग लाभ एमने मल्यो छे. खेंगारभाई त्यां आव्या छे. तेमना मुखे थी अमीचन्दजी उर्फे आनंदघन मुनिनी हकीगत जाणी प्रफुल्लित थजो.

तमारी अर्द्धाङ्गना अने वालको ने हार्दिक आशीर्वाद मातांजी ना पण आप सौने अगणित आशीर्वाद. धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. श्री मणिभाई सपरिवार ने हा० आशीर्वाद जणावजो ॐ शांतिः

सहजानंद अगणित आशीर्वाद !

'सहजात्म स्वरूप परम गुरु' अखण्ड स्मरण कायम थाओ ए आशीष, आशीष !

(पत्रांक—४२८)

हंपी ३१-३-६६

ॐ नमः

मंत्र तंत्र औषध नहिं, जेथी पाप पलाय,
वीतराग वाणी विना, अवर न कोई उपाय···

भक्तवर (श्री विजयकुमार वडेर)

पत्र मल्युं. विगत सर्व जाणी. आपना जननी और मामा साथ आवेंगे तब आपकी सूचना मुजब समय दिया जायगा-

नूतन दंपती-आशीर्वाद- पत्र मुद्रित कराया वह खुशी से भेज देना.

आपनी वालिकाओ ने अंतराय कर्म नो उदय विशेष होवा थी ते कर्म ज्यां लगी न हटे त्यां लगी दैवी शक्ति पण शुं करे ? माटे समभाव ने लालवी प्रयत्नो कर्या करवा.

अहिं विचक्षणश्रीजी नी ७ शिष्याओ आव्या हता ते गया, सप्ताह रोकाया सत्संग समय अधिक वीततो हतो. आ देहे······ वाद बवासीर नो विशेष उदय थयो छे. योग्य उपचार घर गत्थु चालु छे. चिंता करशो नहिं. औषध मोकलशो नहिं, मातांजी नी तबियत सारी छे.

आनंदघन वावाए तो चौथा आरा ने याद कराव्या, तेमना निमित्तें १ मास गई काले थतां गई काले सिद्धचक्र पूजा भणाववा मां आवी हती-जन संख्या सारी हती. त्यां आप सौने मारा तथा मातांजी ना हा० आशीर्वाद ! धर्मध्यान वृद्धि करजो. ॐ शान्तिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक—४२९)

हंपी ७-४-६६

ॐ नमः

भक्तवर्य ! (स्वामी नवलकिशोर)

बधा पत्रो क्रमशः मल्या १ कार्ड पहेलां मोकल्युं ते पाछुं आव्युं। कार्तिक सु-४ नां मुमुक्षु श्री

अमीचंदजीए अनशन लीधुं। छः दिवस मां उत्कृष्ट आराधना थी समाधि पूर्वक देह छोड्यो। पनरह हजार जैनो ते प्रसंगे लाभ लीधो)

आ देहे बरावर (बवासीर) नी कृपा वर्त्ते छे। आत्मा मां आनंद छे। माताजी प्रसन्न छे। तमने हार्दिक आशीर्वाद जणाव्या छे। सुखलाल भाई याद करे छे। अने परम कृपालु नी पुण्य तिथि छे। विशेष अपीने'''उजवाशो। प्रभु भजन में मस्त रहो धर्मस्नेह मां वृद्धि हो ॐ शान्तिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद

(पत्रांक—४३०)

हंपी-रत्नकूट

ॐ नमः

ता० १०-४-६६ प्रातः ७॥

श्री चंद्र.

हमणाज आपनुं पत्र मल्युं. विगत जाणी. वर्तमान ज्ञानी ना आदेश प्रमाणे जे साधन मले ते प्रति निर्विकल्प विश्वास होय तोज साध्य सिद्धि थाय. "आणा मूलो धम्मो पण्णतो"

तमे सर्व प्रथम दादा गुरु ने प्रत्यक्ष करो, पछी बीजी वात. सन्मुख वृत्ति हशे तोज प्रेरणा मलती रहेशे. एमां दूर निकट नो सवाल ज नहि रहे।

माताजी आदि सौए हा० वंदनावलि जणावी छे. बवासीर मा आपना गया पछी विशेष कृपा वर्त्ते छे. येमवा मां पण अंतराय थाय छे. कर्म नो कचरो जाय छे अहि वैशाख सुदि २-३-४ त्रण दिवस नो महोत्सव वर्षी तप ना पारणा निमित्ते थशे ज. अने आषाढ चौमासीए अट्ठाइ महोत्सव थशे.

मनोहर० मुक्ति० ने पण हा० आशीर्वाद धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि हो.

सहजानंदघन आशीर्वाद !

श्री मणि,

वै. सु. ७ गुरु पुष्य दश वाग्या पछी शरु थाय छे. तदनुसार प्रयोग करजो.

जो देहादि भिन्न ज्ञायक सत्ता मात्र सहज चतुष्ठय सम्पन्न स्वभाव नुं लक्ष जमी शकतुं होय तो सोहं नु अनुसंधान ठीक छे, अन्यथा सिद्धचक्र अथवा तेना सार रूपे 'सहजात्म स्वरूप परम गुरु' रटवुं हित रूप छे। तो मों मांधी जे मंत्र सिद्ध करवो छे तेनी योग्यता विकसाववा सर्व प्रथम दादा गुरुदेव ने प्रत्यक्ष करवा पडे. माटे ते महेनत करजो. धर्मस्नेह मां वृद्धि हो. ॐ शान्तिः अगणित आशीर्वाद !

सहजानंदघन.

श्री अविचल श्री जी के लिए जप-मंत्र :—

"ॐ ह्रीं श्रीं चक्रौं ब्लूं श्री जिनकुशलसूरि ! एहि एहि वरं देहि, सुप्रसन्नो भव मम समीहितं कुरु कुरु ह्रीं स्वाहा।

साधन विधि तो चाँद सितारों से छिपी नहीं रह सकती- फिर भी चेतन चाँद पर पहुँचने वालों के लिए निम्न बातें ध्यान में रखनी होगी—

१ जिनका शरीर प्रदरादि से अशुद्ध रहता हो, वे इस साधन के पात्र नहीं हैं।

२ मासिक जन्य अशुद्धि जव तक दूर न हो जाय तब तक चालू साधना में तप तो अनिवार्य है किन्तु जप नहीं, तथैव अन्यान्य कारणोंवश यदि जप नहीं हो सके तो तप चालू रहना चाहिए-रखना ही चाहिए.

३ जप भी वर्त्तमान संघयण वश क्वचित् दो विभागों में १३-१२ माला प्रमाण करना पड़ता हो तो स्वीकार्य है, किन्तु वास्तव एक साथ में हो—यही आवकार्य है।

४ साधन समय में 'अडोल आसन ने मन मां नहि क्षोभता' अनिवार्य है। और इसलिए प्रथमतः प्रेक्टिश द्वारा अभ्यास दृढ कर लेना चाहिए बाद में विधि-विधान में प्रवेश सुकर हो सकता है।

५ मौनावलंबन तो सारे साधनाकाल में साध्य साक्षात्कार तक रहे। तब तो वह साधक 'वीरों का वीर' ही कहलायगा; फिर भी प्रतिदिन जपकाल प्रमित मौनी वना रहने वाला भी वीर सेवक-सेविका पदाधिकारी वन सकता है।

६ मन्त्र स्मरण के साथ साथ साध्यशरण-शरानुसंधान की तरह साधकीय वृत्ति प्रवाह साध्याकार के प्रति अखण्ड धारावाही वना रहना नितान्त आवश्यक है।

७ साधन में एकनिष्ठा ही सफलता की कुंजी है

८ मोह क्षोभ से रहित परिणाम द्वारा ही साधना हो सकती है, अतः जप काल में आत्म भाव और वीतराग स्वभाव को आसन लगाते ही दृढ करना चाहिए और उठने तक इन्हें स्मृति से हटने नहीं देना चाहिये।

ॐ शान्तिः सुज्ञेपु किं वहुना ? मुनीम जी से हार्दिक आशीर्वाद कहें।

(पत्रांक—४३१)

हम्पी १६-४-६६

ॐ नमः

भक्तवर्य (कोजमल वाफणा)

पत्र मिला। हाल ज्ञात हुए। उठे थें थारी मिठी-मिठि वातां किया करो। अभी पंचमी पर अनोपचंदजी, वालचंदजी, प्रविणभाई आए थे। वहाँ कुनूर में मन्दिर दादावाड़ी. धर्मशाला निर्माण का निर्णय पक्का हो चुका है। परसों शाम को बेंगलोर से छोटुभाई, चंदुभाई टोलिया और हिमतभाई इलेक्ट्रिक वाला आये हैं, आज शाम वापस लौटेंगे। एक सुपरवाइजर लाये हैं।

अव तक काम काज वंद था अव चलेगा। गदक वाले मिश्रीमल जी की ओर से उनकी वधू पुत्र वधू के वर्षी तप के पारणा निमित्त यहाँ २-३-४ तीन दिन ओच्छव होगा —थांने घणा मान सुं आमंत्रण है। पण थें मानो जव खरा ! आनंदघन वावा ने तो चोथा आरा दिखा दिया। वम्बई में भुंगली लगाय ने मसा काढे है। वै. सु. ७ को उनको अठे ही वोलायने कढावुंगा। थें तो कांई मोंरी खबर लेवो नहीं —तो फिर कांई करां ?

होळी मांद मसा री घणी कृपा चालू रैवे है परा कढावों। माताजी थांने घणो घणो ओलंमो दे है। पैसा रे ऊपर कांई साप-धाप बनजो मती।

रिखवाजी सपरिवार ने मारा तथा माताजी रा हा० आशीर्वाद! दुजा कोई याद करे वानें भी आशीर्वाद के दीज्यो। प्रभु भक्ति में लीन रहेजो। ॐ शान्तिः

सहजानंदघन हा० आशीर्वाद सह सहजात्म स्मरण!

(पत्रांक—४३२) हम्पी

ॐ नमः १६-४-६६

अक्षय तृतीया २०२५ (गु०)

भक्तवर्य श्री भँवरलालजी साव सपरिवार।

आ रजि० कवर मल्युं तेमा मसा नी दवाई ना पड़ीकां अने आपना वे कागलो मल्या. पण वैद्यराज जी नुं पत्र नीकल्युं नहिं जेथी दवाई लीधी नथी. मुंबई थी अनाड़ी वैद्य ने भक्तो तेड़ो आवनार छे ते वै० सु० ७ गुरु पुष्ये भुंगडो वडे काढवानी क्रिया करशे. प्रथम दवा चोपड़ी काप मुकी अने भुंगडी वडे मुख ना पवन थी चुशी लेशे. उपाध्यायजी महाराज नुं तेवुं आपरेशन १६६७ मां लालवाड़ी मुकामे कराव्युं हतुं, तदनुसार थशे.

माताजी नुं स्वास्थ्य सारुं छे. तेमणे आप सौने हा० आशीर्वाद जणाव्या छे. वडेरजी ना मामा साव अने माजी आवी ने यात्रार्थ आगे कूच करी गया।

श्री कान्तिभाई ना जननी वियोग निमित्ते मारा तरफ थी समवेदना आपज जणावजो. आ देहे वेसवा मां अन्तराय छे तेथी आटलुं काम आप करजो. बाकी तो पोतेज सावधान छे अतः मुक आशीर्वाद मोकलतो रहुं छुं.

आपे साहित्य मोकल्यो तेमां थी प्रा० मार्गोपदेशिका अने एक सं० काव्य नुं पुस्तक चन्द्रप्रभा श्री जी लई गया छे.

आपने माटे दत्त कुशल गुरु नु चंदन मां संपुट मूर्त्ति बनाववानुं हवे आर्डर अपाशे. ते कलाकार हवे फारेक छे.

बधा काकाजीओ ने मारा तथा माताजी ना हा० आ० कहेजो. अने त्यां बधाय आपना धर्म-स्नेहिओ मित्रो अने पारिवारिको ने हार्दिक आशीर्वाद वैद्यराज ने धन्यवाद.

हवे समय न होवाथी......लउं छुं ॐ शांतिः

सफर विषे—मुंबई, अमदावादनी व्यर्थ नी कोईए अफवाह फेलावली अमे नथी जवाना.

(पत्रांक—४३३) हम्पी

ॐ नमः २-५-६६

भव्यात्मन् (श्री सोभागमल जी कोठारी)

भगवान महावीर को भी कर्मों ने नहीं छोड़ा तब भला हम आप क्या चीज हैं !

वंध समय चित चेतिये उदये क्यों संताप

भाई ! समभाव से कर्मों का नाटक देखा करो, और उचित पुरुपार्थ किया करो ! जो होनहार है होकर ही रहेगा। निष्काम भक्ति से ही छुटकारा है।

इस शरोर में ववासीर को असीम कृपा होली वाद शुरू हुई अव शांति हो रही हैं। धर्मध्यान में वृद्धि हो। ॐ शांतिः

हा० आशीर्वाद क० खुद

(पत्रांक—४३४) हम्पी

ॐ नमः ३-५-६६

भक्तवर्य श्री भँवरलालजी साव सपरिवार,

गई काले पत्र मल्यं. वैद्यराजजीए कहेली तथां कान्तिसागरजीए कही मोकलेली विधि जाणी. कब्जियात नी गोलिओ तो हवे ३ वाकी रही छे. ते यथावश्यकताए ४ लीधी हती. पड्या अक वंध पड्या छे. ते आवश्यकताए लईश. मुंबई थी अनाड़ी वैद्ये वै० सु० ७ ना दिने दवा चोपड़ी विना इंजेक्सने शस्त्र क्रिया थी काप मुकी भुंगडी वडे चुसी १ मस्सो काढ्यो, एथी ज्वलन, शूल आदि दर्द शान्त थयुं. वाकी हजु काचुं छे ते ठीक थई जशे.

कान्ति० समेतशिखरजी छे ते समाचार जाण्या.

पालीताणा थी शुभराज जी तथा अगरचंद जी ना पत्रो हतां. अगरचन्दजी भद्रेश्वर जवानुं पण लख्युं हतुं श्री धन्नूलालजी पारसनने समयसार नाटक हिन्दी अनुवाद वालुं जोइए छे. ते क्यां थी मलशे ? ते खवर होय तो लखी मोकलो।

माताजी स्वस्थ अने प्रसन्न छे. आशीर्वाद जणाव्या छे. कान्तिभाई ने हार्दिक आशीर्वाद जणावजो। आप सौ स्वस्थ अने प्रसन्न हशो ज. अहिं अक्षयतृतीयाए त्रिदिवसीय महोत्सव सानंद संपन्न थयुं हतुं. वाकी वधुं व्य० तंत्र चाले छे.

मृगेन्द्रमुनि जयपुर थी हैदरावाद प्रतिष्ठा करावया आवेल ने कपूरचंद तरफनी वीनती लई ने अहिं आवेला। ४ दिवस रही ने पाछा गया. हजुं एनुं चित्त व्यग्र छे. तेने उचित सलाह आपी छे. साधन पद्धति मां प्रवेशवा समजाव्युं छे. वीकानेर अने पालीताणे आशीर्वाद मोकलजो. त्यां तमारी मित्र मण्डली ने हा० आशीर्वाद कहेजो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद !

(पत्रांक—४३५) हंपी

ॐ नमः २४-५-६६

अध्यात्मा श्री कोजमलजी

मसा नी कृपावश घणा समय थी पत्र आपी नथी शक्यो. हवे वदन आराम थई गयो छे. माताजी नी तबियत मां थोड़ीक गड़बड़ रहे छे ज्वर शिर दर्द नी फरियाद छे पण हवे आराम थई जशे तेमणे तमने हार्दिक आशीर्वाद जणाव्या छे त्यां आश्रम मां महोत्सव सानन्द सम्पन्न थयो हशे तेना समाचार तो तमे लख्या ज नहीं. तबियत ठीक रहती हशे. रिखबाजी सपरिवार आनन्द मां हशे. तेमने सपरिवार ने मारा तथा माताजी ना हार्दिक आशीर्वाद जणावजो. अहीं ३ बार साधारण वर्षा थई जवा थी पाणी नो सगवड़ तथा शीतलता थया छे चंदना M. A. फर्स्ट क्लास पास थई छे. कच्छ गई छे. हवे कच्छ थी मुम्बई आवनार छे त्यांथी अहिं आवशे। अहिं सुखभाई, रिखबचंदजी, चन्दुभाई, रमणभाई, धन्नुलालजी वि० भाइयो अने मेघबाई, गुणवंती बाई, रूपा बाई वि० बहेनो ना जय सद्‌गुरु वंदन! धर्मध्यान में लक्ष ठीक रहतुं हशे. हुबली वाला मिश्रीमलजी ने श्वास-पेशाब नी रुकावट वि० नो हुमलो थतां १० दिन थी होस्पीटल में छे. त्यां आश्रमवासियो आदि ने सादर जय सद्‌गुरु वंदन! धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि हो. ॐ शांतिः

सहजानन्दघन अगणित आशीर्वाद सहजात्म स्मरण

(पत्रांक—४३६) हम्पी

ॐ नमः २८-५-६६

अध्यात्मा श्री कोजमल जी

कल लक्ष्मीचंदजी भोजाणी सपरिवार मारवाड़ से आकर यहाँ मिलने के लिए आए थे। आपका संदेश भी सुनाया। आपको दादावाड़ी यहाँ धन्नुलालजी के द्वारा शीघ्र बनाने की उत्कण्ठा है पर यहाँ काम कराने वाला ही कोई नहीं है अतः अब तक सत्संग भवन की जमीन का लेवल भी जो अधूरा पड़ा है पूरा नहीं हो सका है। तब सत्संग भवन, मन्दिर और दादावाड़ी कोरी बातों से ही सकेंगे? धन्नुलालजी की बात छोडो। वे अपने खुद के मकान को भी पूरा नहीं कर सके हैं, क्योंकि अधिक दाम देते हुए भी अच्छे आदमी नहीं मिल रहे हैं। जो मकान खड़ा किया वह भी बेढंगा है R. C. C. भी मुश्किल से हुई। शेष काम बाकी छोड़ कर वे कलकत्ते जाने वाले हैं, फिर आकर पूरा करायेंगे। बंगलोर वाले चंदुभाई टोलिया जो जैन कण्ट्राक्टर है, सत्संग भवन का कार्य अपनी देख रेख में वे करवाना चाहते हैं, पर यहाँ सुपरवाइजर का चार्ज संभालने के लिए अब तक उन्हें कोई अच्छा आदमी नहीं मिल पाया।

आहोर में १ दादावाड़ी है और दूसरी आपके स्नेही हिम्मतमलजी गाँव के बाहर बना रहे हैं— ऐसा समाचार जीवराजजी ने लिखा है जो खुशी की बात है। वास्तव में वहाँ दो दादावाड़ियों की

आवश्यकता नहीं है। क्या वे आहोर के बजाय हंपी में बनावें तो दादाजी नाराज हो जायेंगे? हमारी ओर से तुम ही यदि ठीक लगे तो इन्हें उक्त सुझाव दो।

धन्नूलालजी के चि० की ओर से २५ के सिवाय जो कुछ खर्च करना है मंदिरजी में लगवाने की बात कलकत्ते में हुई थी जो धन्नुलालजी को भी मालूम नहीं है। क्योंकि शिखरबंध मंदिर बनवाना है अतः मन्दिर और दादावाड़ी दोनों के लिए खर्च करने वाले तुमही तैयार करो। कोरी बातों करने से क्या? और एक खुशखबर सुनाता हूं—आश्रम के बोर्ड से आश्रम की सड़क शुरु हुई और जहां दरवाजा बनाने की योजना थी उसके नीचे जहाँ पुराना कुँआ मिट्टी से बंधा था, उसकी बगल में कुवा खोदना शुरु हुआ है। मात्र १५ फीट खुदाई होते ही कल पानी निकलना शुरु हुआ है। यह काम रखुनाथजी की ओर से हो रहा है।

माताजी का शरीर कुछ दिन से अस्वस्थ है, ज्वर और शिरदर्द रहता है। हमारा शरीर अब ठीक है। वहाँ ९ दिन का महोत्सव आश्रम में हुआ उसका वर्णन तो थोड़ा-सा लिखो। खिवराजी सपरिवार एवं याद करने वाले सभी को हमारा तथा माताजी का आशीर्वाद कहें। और शेष सभी का जय सद्गुरु वंदन!

अनोपचंदजी झाबक के भाई विमलचंदजी झाबक जो इनकम टेक्स आफीसर-मद्रास में हैं—सपरिवार यहाँ आये हैं, उनकी ओर से यहाँ कल गुरुवार को दादाजी की पूजा और पूर्णिमा को जीमण है। वे कुनूर मिलने आए थे।

भक्ति भजन ठीक चल रहा होगा। जीवराजजी ने कल्याण से दादावाड़ी के लिए पुरानी दादाजी की मूर्त्तियाँ एवं चरणपादुका का लिखा है पर मिलना कठिन है। यहाँ चंदन में दादा जिनदत्त सूरिजी की ५१ इंच की पद्मासन में बनवाई है अत्यन्त सुन्दर बनी है। इस पर से ३६ इंच की मूर्त्ति यहाँ के लिए बनवाएंगे। वैसी मूर्त्ति ही सर्वत्र नयी बनावें ऐसी चीज बनी है। कुनूर में जिनालय और दादावाड़ी तथा परम कृपालु देव की समापना नक्की हुए हैं। ॐ शान्तिः

माताजी का भी हा० आशीर्वाद! सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद!

(पत्रांक—४३७)

ता० १०-६-६६

ॐ नमः

अनन्य आत्म शरण प्रदा। सद्गुरु राज विदेह।
पराभक्ति वश चरण में। धरू आत्म बलि एह।

भक्तवर्य श्री बाबूलाल भाई दम्पती अने बालको,

कोचीन अने मद्रास बन्ने जग्या थी पत्रो मल्या. तेमां लखेली संसारी प्राणिओनी दशा, अने छूटवां इच्छता मुमुक्षु जीवो नी अन्तर व्यथा नुं चित्र-शब्दचित्र जोयुं. अने ते यथार्थ लाग्युं सत्संग परम सत्संग विना सर्वत्र त्रिविध तापाग्नि सलगी रही छे तेमा भयानकता शिवाय बीजुं शुं होय?

तम दम्पती नी नाम स्मरण नी टेव अतीव अभिनंदनीय छे. मन्त्र स्मरण द्वारा अखण्ड रहेवी, ए भाग्योदय नी निशानी छे. धर्मध्यान मा संक्षिप्तसार रूपेण आ प्रयोग छे. एनाथीज आर्त अने रौद्र भावो निवारी शकाय छे. माटे तेमां तमने सफलता प्राप्त थाओ ए अंतर ना आशीष छे.

जेम लोढा वड़े जो लोढु कपाय छे. तेम मंत्र स्मरण वड़े आवता पुण्याणुओ पापाणुंओ ना स्तर ने धहेरी नाखता होय छे. आत्मा ए बंने थी जुदो जाणनार जोनार पणे उक्त क्रिया थी अलिप्त भावे रही शके छे. जो तेवी टेव पड़े तो मात्र निर्जरा अने मोक्ष थाय, छतां जो साक्षी भावे न टकी शके तो पुण्य वधे अने पाप घटे पुण्य थी देवलोक आदि ना भौतिक सुखो मले तेने भोगवता मां खोटी थवुं पड़े तेमां जो जागृति न रहे तो पाप पण वखते बंधाई जाय. आ बधी भूलवणी छे. माटे साक्षी भावे पुण्य-पाप नो लक्ष छोड़ी ने जाप करो एज सार छे.

अहिं आनन्द मंगल वर्त्ते छे. स्वास्थ्य सौनुं बराबर छे. तमो सौ स्वस्थ अने प्रसन्न रहो, ए आशीर्वाद छे.

त्यां मणिभाई सपरिवार, मनसुखभाई सपरिवार, खेंगारभाई सपरिवार आदि ने हा० आशीर्वाद मारा तथा माताजी ना जणावजो. खेंगारभाई ना जमाई देवेन्द्र भाई ना बहेन-भाणेज वि० ३ जणा गई सांजे आव्या छे. आज पाछा जवानी वात करतां हता अहिं वर्षा नी महेरबानी छे. वातावरण शीतल छे. धर्मध्यान मां वृद्धि हो ॐ शांतिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद !

(पत्रांक—४३८)

हंपी रत्नकूट २२-६-६६

ॐ नमः

भक्तवर्य श्री शुभराजजी सपरिवार

कल शाम पत्र मिला। हाल ज्ञात हुए। अगरचन्दजी सा'ब यहाँ आये हुए हैं, यहाँ के समाचार उन्हीं के साथ भेज रहा हूँ। पुखराजजी १५ दिन पर आये और मुनीम-पद सम्भाल लिया है। आप पालीताणा जा रहे है, वहाँ का काम सम्पन्न होते ही यहाँ आवें। क्योंकि काफी समय से यहां आपकी गैरहाजरी है।

हमारा तथा माताजी का स्वास्थ्य ठीक चल रहा है। चन्दना कच्छ होकर बम्बई में विशनजी के छोटे भाई प्रेमजी की शादी में हाजरी देकर सप्ताह हुआ यहाँ आई हुई हैं। १ सप्ताह बाद बम्बई जायेगी। १ वर्ष का लायब्रेरी साइन्स का कोर्श पूर्ण करेगी। बाद में शायद पी० एच० डी० की भावना को पूर्ण करेगी।

आपका स्वास्थ्य तो ठीक है न ? श्राविका के पैरों में दर्द है तो उपचार चालू होगा ? एक न एक गड़बड़ी चलती ही रहती है। यही है संसार की असलियत।

हमारा माताजी का आप सभी को हार्दिक आशीर्वाद। मेघबाई, चन्दना, रूपाबाई आदि का प्रणाम। सपरिवार मेघराज साब को भी हम सभी का आशीर्वाद और प्रणाम। धर्मस्नेह में वृद्धि हो ॐ शांतिः

सहजानन्दघन

(पत्रांक—४३६)

हंपी ६-७-६६

ॐ नमः

भक्तवर्य श्री विजयजी सपरिवार

पत्र मिला, विषम परिस्थिति का सामना करते हुए धैर्य का बांध टूटता हुआ आपको दिखाई दे रहा है—यह ज्ञात हुआ।

आपने सुना ही होगा कि द्रौपदीजी ने जब तक दाँतों का सहारा लेकर अपनी सुरक्षा का भार अपने ही उठाया तब तक सफलता नहीं मिली, आखिर अपनी शक्ति कामयाब नहीं हुई; तब अपनी शक्ति की आजमायश छोड़ सिर्फ परमात्म शक्ति के प्रति अखण्ड विश्वास रख कर सातों धातुओं के भेदन पूर्वक एक ही पुकार प्रभु के प्रति की कि तत्काल अपनी सुरक्षा होने लगी। बस, वैसे ही अपनी निःसहाय दशा में सारा बोझ भगवान को सुप्रत करके स्वयं निर्विकल्प होकर प्रभु को पुकारना चाहिए। किन्तु आप अपनी कल्पनाओं के जाल में फँसे हुए निर्विकल्प नहीं रहते अतः पुकार सुनाई नहीं पड़ती, उसकी फरियाद करते हैं—यही खुद की कमी खुद को परेशान कर रही हैं तब भला हम क्या कर सकते हैं।

खुद का जन्मान्तर का पाप संगृहीत है, और वह जब तक शिलक में है तब तक शान्त भाव से प्रभु स्मरण करते रहना चाहिए किन्तु आप अशांत हो उठते हैं। उसीसे वह बोझ बढ़ता है, इसे ध्यान में क्यों नहीं लेते ? बाकी शुभाशुभ कर्म तो सभी को भुगतने ही पड़ते हैं, वे किसी को नहीं छोड़ते, तब भला धैर्य की पाल क्यों तोड़ना ?

माताजी ने हार्दिक आशीर्वाद लिखाए हैं। घर भर में सभी को हमारा भी आशीर्वाद कहें और जो कुछ बनता रहे, साक्षी भाव से सहें। पुण्य शिलक में नहीं अतः ऐसी हालत का सामना करना अनिवार्य है। सुज्ञेषु किं बहुना ? ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन हा० आशीर्वाद !

(पत्रांक—४४०)

हंपी

ॐ नमः

१०-७-६६

भव्यात्मा श्री रांकाजी सपरिवार एवं सत्संग मण्डल,

पत्र मल्युं। तेमांनी हृदय व्यथा वांची। अहिं आनन्द मंगल वर्त्ते छे. तबीयत अम बधायनी सारी छे. माताजीए आशीर्वाद कह्या छे.

साधकीय जीवन मां कर्मोदय प्रमाणे विपरीत परिस्थिति नां उदये जे आत्म प्रदेशे खेद भाव जागे तेने बदले समभाव जो टकावी शकाय तो महान लाभ थाय. अनुकूल परिस्थिति मां रस वृद्धि अने प्रतिकूलता मां खेद वृद्धि बन्ने नो अभाव अने स्वरूप जागृति रहेवी-राखवीज. तेथी ज समत्व नी साधना मां विकास सम्भव छे. माटे आपणे सौए दृढ़ीभूत करवा मथवु ॐ

लोढाजी सपरिवार ने अन्य मित्रो ने हार्दिक आशीर्वाद जणावजो लोढाजी क्यारे पधारवाना छे ? ते जणावजो. कटारिया प्रसन्न छे. सुखभाई आदि बंधा याद करे छे.

श्री वल्लभश्रीजी नी शिष्याओ कुसुमश्रीजी ४ ठाणा ८ दिवस रोकाई वेल्लारी चोमासार्थे प्रयाण करी गया।

सत्संगीओ नी आव जा चालु छे निर्माण कार्यो पण चाले छे. लोढाजी नी पधरामणी इच्छनीय छे. धर्मस्नेह मां वृद्धि हो. ॐ शान्तिः

सहजानंदघन हा० आशीर्वाद !

(पत्रांक—४४१)

ॐ नमः

हम्पी १०-७-६६

भव्यात्मा श्रीरामजीभाई तथा शांतिभाई सपरिवार,

भक्तिभर हृदय थी लखायलुं तमारो पत्र मल्युं, वांची प्रसन्नता हुई. तमारी तत्त्वानी भावना जो बलवान थाय अने तेने पुष्टी मले तेवुं सत्संग बलवान योग होय तो जीव आत्मज्ञान पामी कृतकृत्य थाय. पण आ कलियुग मां असत्संग अने असत्प्रसंग नी बोलबाला छे. अेवा समये सतत आत्म जागृति राखवी घणी कठिन छे. तेने टकाववा ज्ञानियो नी वाणी—शिक्षा-बोध नुं नित्य परिशीलन करवुं. रोज एक कलाक परम कृपालु ना वचनामृत वाचवा विचारवा. अने प्रवृत्ति पूर्वक श्वासानुसंधान पूर्वक 'सहजात्म स्वरूप परमगुरु' आ महामंत्र नुं आत्मभान पूर्वक आ देह मोटर मां बैठेला आत्म-ड्राइवर भणी लक्ष राखी ने कार्य करवुं, के जेथी प्रवृत्ति मां जीव खोवाई न जाय। मृत्यु ने क्षणे-क्षणे याद करता रहेवुं. एथी वैराग्य भावना वधशे. मार्गानुसार ना गुणो जीवन मां उतारवा. ए विषे परमकृपालु घणु समजाव्युं छे. माटे ते ग्रन्थ ने हृदय मां उतारी लेवो,

अहिं कृपालु नी कृपा थी आनंद वर्त्ते छे. कोई बाते तेमनी कृपा नी न्यूनता नथी. देह पण ठीक छे. माताजीए आशीर्वाद जणाव्या छे. सत्संगिओ नी आव जा चालुज रहे छे. घणा नवा-नवा जीवो लाभ लेवा आवे छे. आश्रम नी प्रगति सघाई रही छे. निर्माण कार्यो पण चालता रहे छे. सगवड़ वधती जाय छे. सुखभाई ए याद कर्या छे. धर्मस्नेह मां वृद्धि करशो.

सहजानंदघन

आशीर्वाद सह सहजात्म स्मरण

(पत्रांक—४४२)

ॐ नमः

हम्पी १७-७-६६

पूज्य आदरणीय श्री सौभागमलजी कोठारीजी, कलकत्ता

सप्रेम जयजिनेन्द्र ! आपका पत्र मिला, पढकर समाचार जाना। परम पूज्य गुरुदेव की आज्ञा से यह पत्र लिख रहा हूं।

आपको मालूम होगा कि अभी जो परिस्थिति से आप गुजर रहे हैं वो अपने ही पूर्व कर्म का फल है। पुण्य और पाप से शाता और अशाता वेदनीय का अनुभव होता है। पूर्व में जो फिल्म तैयार की वो तो स्टेज पर आकर अपना नाटक दिखायेंगी। ज्ञानियों ने यह सब बातें देखकर समस्त वैभव छोड़कर असली सुख की प्राप्ति के लिए वे कमर कसकर निकल पड़े व पुरुषार्थ से वो प्राप्त किया। आत्मा ही अनन्त सुख का खजाना है। आत्मा को भूल कर जड़ पदार्थों में सुख का शोध करने में हम सब पड़े हैं। असली सुख है ही नहीं सुखाभास है. शाता वेदनीय है। सो आप धीरज रख कर धर्म में अपना मन को लगाओ तो जरूर शांति मिलेगी।

आपने परम पूज्य गुरुदेव के व्याख्यान सुने होंगे? वे उपदेश में सुनाते हैं कि एक श्वास भी प्रभु नाम स्मरण विना खाली न जाना चाहिए। हर एक काम करते हुए भी श्वास पर लक्ष करके नवकार मंत्र का जाप अपने श्वास में रटलो।

पंच परमेष्ठि में अपने पांचों पद में आत्मा है, स्मरण करते हुए मैं भी उन जैसा आत्मा हूँ, ये भाव दृढ़ करना और अपने व्यवसाय के हरेक काम करते हुए भी वो लक्ष कायम करने का अभ्यास करना। जब व्यवसाय से निवृत्ति मिले तब प्रभु पूजन, प्रभु प्रार्थना वगैरह से धर्मध्यान में अपने को लगाये रखो। एक क्षण भी प्रभु भक्ति सिवाय में दूसरे काम में न जावे उसका ख्याल रखो। नाम जपना यह भी प्रभु भक्ति ही है। मैं पुरुष स्वरूप नहीं हूँ। वाणिया, ब्राह्मण नहीं हूं। देह देवल में जो विचार करने वाला बैठा है वह मैं आत्मा हूँ। यह चार छः महीने के लिये करो तो मन को शान्ति मिलेगी और पाप के अणु हटते हटते पुण्य के अणु जमा होने लग जायेंगे। पाप पुण्य दोनों को छोड़ना है। इससे लक्ष में निष्काम भक्ति का रखना उचित है।

इस काल में प० पू० कृपालुदेव श्रीमद् राजचंद्रजी एक अद्वितीय पुरुष हो गए। उनके साहित्य को कहाँ से भी प्राप्त करके पढो और उनकी प्रार्थना वगैरह का क्रम है वो भी अपनावो। सच्चे दिल से और प्रेम से और पूरी ताकत लगाकर भक्ति करोगे तो उसका फल भी छ महीने में ही अनुभव होगा।

श्रीशा भँवरलालजी नाहटाजी के पास वो साहित्य मिल सकता है। सत्संग का बल बढ़ावो तो कठिनाइयों का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। अस्तु

आपके पुत्र-पुत्री और पत्नी को भी प्रभु भक्ति में लगा दो। मेरे अल्प मति से लिखने जो दोष हुए होंगे वो क्षमा कीजियेगा।

दासानुदास हीराचन्द का प्रणाम।
अनेकशः आशीर्वाद—सहजानन्दघन

(पत्रांक—४४३)　　　　　　　　　　　　　हम्पी
ॐ नमः　　　　　　　　　　　　　　　　१८-८-६६

अनन्य आत्म शरण प्रदा। सद्गुरु राज विदेह.
पराभक्ति वश चरण में। धरुँ आत्म बलि एह
जीव प्रमाद छोडी जाग्रत था, जाग्रत था.

भक्तवर्य श्री बाबुभाई श्री लक्ष्मीबाई, बेबी वसुधा अने नंदीवर्द्धन कुमार,

तमारुं भक्ति पत्र मल्ये पखवाडियुं थई गयुं. परन्तु समय ना अभावे प्रत्युत्तर मां ढील थई गई ते क्षंतव्य गणजो.

कर्म ना उदय प्रमाणे बाह्य परिस्थितिओ, मां थी सौ ने पसार थवुं अनिवार्य होय छे. तेमां स्वरूप जागृति बनावी राखीये तो नूतन बंध अने तेथी उत्पन्न थतुं भावी संसार ने अटकावी शकीए, पण जो अजाग्रत रहीए तो आ अनंत संसार नी फिल्म उतर्यांज करे. खप्याज करे अने तदनुसरी जीव ने भटकवुं ज पड़े-माटे स्वरूप जाग्रत रहो अेज कर्त्तव्य छे. ते माटे अवकाश मेळवी सत्संग नो लाभ ल्यो.

माताजीए आप सौ ने घणा-घणा आशीर्वाद जणाव्या छे. अहिंना बाकी नां समाचार साथे ना पत्र थी जाणी ते पत्र मणिलाल ने पहोंचाड़जो.

परिचितो ने हा० आ० जणावजो. धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो ॐ शांतिः

सहजानंदघन हा० आशीर्वाद

(पत्रांक—४४४)　　　　　　　　　श्रीमद् राजचंद आश्रम
　　　　　　　　　　　　　　　　　　हम्पी-रत्नकूट
ॐ नमः　　　　　　　　　　　　　　　२०-८-६६

भक्तवर्य श्री भँवरलाल जी सा'ब सपरिवार

भक्ति पत्र मिला. पढ कर प्रसन्नता हुई. यहाँ कृपालु की कृपा से आनंद है, तथैव आप सभी को भी हो!

माताजी नुं शरीर हार्ट, ब्लडप्रेशर आदि थड़े अस्वस्थ हतुं. उपचार थी हवे घणी राहत छे. आ देह स्वस्थ छे. श्री शुभराजजी नुं परम दी पत्र हतुं आपना काकीसाब नी तबियत बधारे लथड़ी छे. मगन बाई ने तेडुं मोकल्युं छे. उदय महा बलवान। आपना व्यवहार मां पण अशुभोदय वर्त्ते छे. समभावे भोगव्ये ज छुटकारो छे.

अहिं सत्संग भवन नुं लेवलिंग पण छ महीना थी अधूरं पड्युं छे. जवाबदारी लेनाराओ कोशीष चालु राखे छे छतां अंतराय नो उदय काम करे छे. संभव छे के पर्यूषण बाद मशीन वाला फुंड पासे गोदाउन तथा इक्षोक रूमो बनवानुं चालु थशे. महिला भवन अने रसोईघर ना हॉल उपर १-१ हाल बन्या छे. बदलीआजी पासे चंदनमलजी नुं अने धन्नुलालजी साब नं तेनी सामे मकान बन्या छे.

धन्नुलालजी आज कलकत्ते पहोंच्या हशे. तेमनी पासे थी अहिं ना समाचार अवगत करी लेजो. श्री कान्तिसागरजी ना चातुर्मास विषे जाण्युं।

श्री सावणसुखाजी नी पुत्री विषयक घटना जाणी. आ० तुलसी विषे पण आपनी भावना वांची. आ काल कराल छे. मूल मार्गे संचरवुं पुण्यानुबंधी पुण्य विना संभव नहिं. उपादान कारण ने विकसाववा नुं भुलाई गयुं छे. मात्र निमित्त कारण ना नामे वेपार वधाराइ गयुं छे.

श्रीदेवचंद्रजी महाराज नुं साहित्य खरेज संशोधन पूर्वक चोकसाई थी संकलित करी छपाववुं घटे तमारुं उद्यम सफल थाओ।

अत्यारे अहिं त्रीसेक मुमुक्षुओ नी संख्या छे-बाकी ना रोज आव जा चालू रहे छे. केटलाक आवनार छे. पर्यूषण मां तो भीड़ रहेशे ज। श्री रतनसिंह जी वैद आदि ने हा० आशीर्वाद। भावना सफल थाओ। समय ना अभावे लेखन कार्य के पत्र व्य० मां पण पहोंची वलातुं नथी, रतलाम ना पुखराज जी वोरा अहिं २॥ मास थी मुनीम पदे हता. तेओ पड़ी जवा थी गोठण मा वाग्युं तेथी परम दो सांजे मुंबई तरफ गया. त्यांथी घरे जशे. कदाच एमने फाव्युं पण नथी एम लागे छे. मासिक २५० अने भोजन अपातुं हतुं. बीजा कोई मु—ने फरी शोधवुं पड़े, एम लागे छे.

अवकाश मल्ये आप आपनी मण्डली सहित खुशी थी पधारजो. पारस ने आशीर्वाद लखी मोकलजो। घर भर मां तमाम ने कुटुंबीओने, मित्रो ने, साधर्मिओ ने, वैद्यराजजी ने कान्तिभाई आदिने हा० आशीर्वाद जणावजो. धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि करजो. ॐ शान्तिः

सहजानंदघन हा० आशीर्वाद

आप आवो त्यारे श्री कान्तिभाई ने पण साथे लावो तो तेमनुं दिल अहिंना वातावरण थी खीली उठे. प्रेरणा आपजो।

(पत्रांक—४४५)

हम्पी

ॐ नमः

७-९-६६

भक्तवर्य श्री भँवरलालजी सा'ब सपरिवार, समित्र मण्डल.

आपनुं भक्तिरस निर्भर जिज्ञासु पत्र मल्युं. वांची प्रसन्नता थई. अहिं प्रभु कृपा थी आनंद वर्त्ते छे. पर्वाधिराज नी आराधना हेतु भक्तो नी पधरामणी चालु छे. माता नुं स्वास्थ्य सुधरतुं जणाय छे. अेमणे आप सौ ने हार्दिक आशीर्वाद जणाव्या छे. आ देह स्वस्थ छे आप सौ स्वस्थ अने प्रसन्न हशोज.

श्रीमद् देवचन्द्र भगवान नुं अमूल्य साहित्य जे अत्याचार लगी प्रसिद्ध थयुं. ते घणुं अशुद्ध मुद्रित थयुं छे. मूल पाठो मां पण कालक्रमे शब्द परिवर्त्तनो थया छे. पण अत्यधिक नहीं, थोडुंक अमुद्रित पण रही गयुं छे.

गुजराती संस्करण प्रथमतः थयेलुं होवा थी ते भाषा-भाषीओ ने तेनो जे लाभ मल्यो छे. ते लाभ अन्य भाषा-भाषिओं ने तेटला प्रमाण मां नथी मली शक्यो. वली तपागच्छीओ नुं वलण आ अनुभव वाणी प्रत्ये तेनो द्वेष प्रधान वधतुं जाय छे. अने गुजरात मां प्रधानता अेयो नी छे. ज्यारे स्वगच्छीओ

नी संख्या अल्प अने अकर्मण्यता जेवी स्थिति वर्ते छे. आ बधुं जोतां गूर्जर गिरा मां रहेलुं आ साहित्य अंग्रेज छपावीए तो तेने छपतां घणो समय लागे, ज्यारे हिन्दी भाषा भाषिओ ने सन्तोष न मले. एवुं जणाय छे. माटे पद्य विभाग जेम नुं तेम राखी, जे जे गद्य विभाग जेम नुं स्वतः करेलुं छे, तेनो सारा साक्षरो द्वारा हिन्दी मां अनुवाद करावी मुद्रित कराववुं हितावह जणाय छे

प्राचीन प्रतिओ ना आधारे पाठान्तर युक्त पाठ शुद्धि करी सर्वप्रथम तेज भाषा मां संशोधित फाइनल नकल तैयारी करवी. एक शुद्ध प्राचीन हस्तलिखित प्रतिओ वत हस्तलिखित प्रति तैयार करी भंडार मां राखवी—फाइनल नकल-वर्ष क्रमे जो थाय तो एमनी उन्नति श्रेणि नो वाचक ने ख्याल आवी शके. भाषा शास्त्रिओ ने ते वखत नी भाषा शुद्ध मली शके. साथे उपलब्ध जीवनी पण सांकलवा मां आवे. आ बधु व्यवस्थित गोठवाई गये अने तेनी एक प्रति भंडार राखवा योग्य बनावी ने पछी विषय वर्गीकरण पूर्वक गद्य विभाग अने पद्य विभाग एवा बे भाग करवा. गद्य विभाग नुं भाषान्तर मौलिक हिन्दी मां केवल शब्दानुवाद नहिं प्रत्युत भावानुवाद करावी मुद्रित कराववुं. ज्यां सूधी फाइनल प्रेसकापी तैयार न थई जाय त्यां लगी छपाववा नो उतावल न करवी। आजे हिन्दी भाषा ज राष्ट्रभाषा होइ ने तेनो प्रचार सार्वत्रिक थई शके। जेथी आ कथन जो आप साक्षरो ने उचित जणाय तोज आ वात मंजूर करजो. बाकी मुद्रण कार्य मां तो कागल, शाही अने बाइंडिंग सारा ज वापरजो एवी मारी सलाह छे.

श्री शुभराजजी सा'ब नुं पत्र आव्युं छे. तेमां तेओ हाल मां आ तरफ आववा नुं लखता नथी. पछी तो जेवो उदय.

श्री अगरचन्दजी सा'ब ने तेड़ावो ने आप बंने संकलन करशो तो ठीक फावशे.

आजे कलकत्ता थी सुन्दरलाल नी त्रिपुटी, ट्रोंचो थी श्री नवीन भाई, श्री मोहनभाई दम्पती, तथा बेंगलोर इत्यादि थी भावुकों नी पधरामणी थई छे. सत्संग थी धर्ममय वातावरण छे. आवतो काल थी तो भीड़ अधिक थशे. धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. ॐ शान्तिः सहजानन्दघन

श्री हजारीमलजी, श्री चोपड़ाजी चि० ने हार्दिक आशीर्वाद!

हजी रामगंजवाला नी मंडली तथा चोपड़ाजी नी मंडली आवी नथी. ते सहज जाणवा लख्युं छे. बरलियाजी दम्पती पण तो पूर्वे आवी ग्यां छे

(पत्रांक—४४६) पावापुरी

ॐ नमः श्रावण सुद ११ गुरुवार

'सम्यग् दर्शन जेना आत्मा मां प्रकाश पाम्युं हतुं, एवा श्री सरला ना आत्मा ने

आत्म भावना थी उल्लसित प्रेमे नमस्कार हो! नमस्कार हो!'

प्रिय भक्तजनो! (श्री पुरुषोत्तम प्रेमजी पौंडा, वकील दहाणु)

गया परम दिवसे (मंगलवारे) ता० १८-८-६३ मा रात्रे जेने निराकार परब्रह्म नो साक्षात्कार थयो हतो. एवी श्री सरलाए गई काले (बुधवारे) प्रातःकाल थी कह्युं के "हे गुरुदेव! हवे आ देह नुं

आयुष्य पूर्ण थाय छे. अने वर्त्तमान देह ना कुटुम्बी जनो नुं ऋण हजु बाकी छे. हे प्रभु ! ए नर्कागार ना नव मास नो त्रास मारा थी सहन नहि थाय. जेथी हे नाथ ! मने आत्मा मां लीन करावी दो. रे ! रे ! आ राख ना ढगला मां पाछो जीव जाय छे'''तो तेवुं लक्ष न थवा पामे तेवी कृपा करो'''दृष्टि सम्यक् थतां तेना उघाड़ थी एम जणाय छे के हवे फरी नज जन्मवुं पड़े तेम अत्यार थी करी लेवुं. देह भावे जीव घणुं रखड्यो'''पण आत्म भावना एणे दृढ न भावी. हवे हे नाथ ! मने आत्मा नोज एक भाव रहे तेम कृपा करो ! अने मने जवा नी आज्ञा आपो. इत्यादि'''बाद परमहंस दशा नो मस्तीमां आवी जइ एक आत्मा नी ज रट लगाड़ी हती. श्री कान्ती व्हेन रोवा लागी तेने छानी राखवा नो घणो ज असरकारक बोध आप्यो. श्री वेलबाई मां विगेरे नी पण रड़ना बंध करावी शांति नो सन्देश संभलाव्यो'''माए दूध पिवडाववा प्रयत्न कर्युं त्यारे कह्युं के 'एवा दुध तो अनन्ती बार पीधा'—हवे एने चैतन्य रस पीवडाववो छे—हवे एवा दुध थी सर्युं ! पछी पिवडाववा थी पीधुं, पछी मने एकान्त मां पोताना केटलाक पाछला भवो (जन्मो नी) वातो करी अने पोता ना अत्यार सूधी ना अपराधो नी माफी मांगी. 'मारा देह ना छुटवा थी आपने उत्कृष्ट वैराग्ये एक मास मां परमहंस दशा नी पुष्टि थशे.'—एम कही मने अखण्ड-मौन पणे असंग पणे-गुप्त पणे विचरवा नो सम्मति आपी के जे पहेलां तथा प्रकारे रहेवा मां दुख व्यक्त करती हती. 'बपोरे एना पोताना पूज्य'''ना हाथे थोडुं क प्रसाद लीधु हतुं. बे वाग्या पछी नया वस्त्रोपहेरी ने "आत्म भावना भावतां जीव लहे केवलज्ञान रे."—एनी धूनमां लीन थई भावावेशमां केटलांक कलाको रही—सांज पछो देह छोड्यो. आप बधा शोक ने तजजो. कारण के वस्त्र बदलवा थी आत्मा नो नाश थता नथी. ए सरला मटी ने "सच्चिदानंद कुमार" बन्या. एना भक्ति आदि गुणो नु वारम्वार स्मरण करी आत्मा मां आत्म पणे स्थिर थवा भलामण करूं छुं.

आप सौ आ वाल नी विनम्र प्रार्थना स्वीकारी ने शांति अने धीरज मां दृढ़ थई प्रभु स्मरण मां तल्लीन बनजो. जे देह ने अवतारी पुरुषो पण कायम न राखी शक्या अेवा देह ने आ क्षुद्र-पामर जीवो स्थायी केम राखी शके ? ते ज्यारे त्यारे ने ज्यां त्यां वस्त्र नी जेम देह थी अलग थाय छे. तेमा सरलाए तो मोटा योगी पुरुषो जेवुं आत्म-भाव जागृत करी ने देह छोड्यो. माटे शोक ने बदले हर्ष करवा जेवुं छे.

—"सहजानन्द"

(पत्रांक—४४७)

ॐ नमः राजपुर ३-१०-६०

स्नेही श्री मोहनलाल जी,

भाई श्री हीराचंदजी ना पत्र थी जाण्युं के आपनी अर्द्धांगना देह छोड़ी गया। खरेखर आ असार संसार मां कांई सार नथी. आ स्वप्न सृष्टि मां कांई साचु थोडुं ज छे ? ए तो आंख उघडे वधु लय थवानुं ज छे.

साधकीय जीवन मां साधक उत्तरसाधक नो संयोग अमुक मर्यादा सुधी अनिवार्य गण्यो छे.

आत्मोन्नति माटे साधकीय जीवन बे भेदे विभक्त छे—आगारी (गृहस्थ) अने अणगार. ज्यां सुधी आत्मप्रतीति अने आत्म-लक्ष अखण्ड न सधाय त्यां सुधी साधक आगारी कोटी मां गणाय छे. आत्म-प्रतीति माटे सतत उद्यमवंत रहेवुं ए एमनुं मुख्य कर्त्तव्य होय छे. ते कर्त्तव्य गृहस्थ व्यवहार मां रहे ते छे......जोइयेज। युवावस्था मां प्रवेश थया बाद पोताना जीवन धोरण नक्की करता आत्मसिद्धि नुं उद्देश्य राखी वर्त्तवा नुं प्रयत्न करता छतां जो विषय वासनादि सतावा मांडे, तेने विचार द्वारा हटाववा मथतां असफलता जणाय तो व्यभिचार दोष न सेवाय ए हेतुए पोताने योग्य उत्तरसाधक मेळवी पंच नी साक्षीए पाणीग्रहण वडे अमुक प्रतिज्ञाओ मां आरूढ थई ते वासना क्षय अर्थे आगारी जीवन मां प्रवेशाय छे आत्म प्रतीतिमा बाधक विषय विकारो ने शमाववा अने क्षय करवाना हेतुए ते ते विषयो नो अनुभव लई तेनी तुच्छता अने दुःखदता नी खात्री करी तेथी विराम पामवा प्रत्येक क्षण चिंतववो. एज गृहस्थ जीवन नुं धोरण छे. ते धोरण प्रमाणे वर्त्तता थोड़ा क समय मां विषयो थी विमुक्तता मळे छे. अने आत्म-दर्शन सांपड़े छे आत्म दर्शन थी खात्री थता के हुं आत्मा ज छुं. आ शरीर ता मारा स्वरूप थी भिन्न छे माटे हवे मारे एमा अहम्-मम न सेववो ते प्रमाणे ते साधक क्रमशः आत्म लक्ष साधवा मथे छे ते अभ्यास क्रमशः विकास माटे श्रावक नी अगियार प्रतिमाओ ज्ञानीओए बतावी छे जे श्रेणी ऊपर अभ्यास अने वैराग्य वले चढ़ता त्यागी जीवन केळवाय छे अने साथे आत्मलक्ष नी अखंडता थाय छे ते सिद्ध थये अणगारी जीवन मां प्रवेशाय छे ते साचो साधु बने छे.

अहि आगारी जीवन नुं विशेषत्व बतावता एम कहेवुं पड़े छे के जे साधक जीवन समाप्तिपर्यंत आगारी बन्यो रहे छतां ये आत्म साक्षात्कार न करे तो तेना जीवन बड़े साधक के उत्तरसाधक पद लजवाय छे ने कुदरत माफी (?) शकती नथी तेथी ते साधक ने अथवा उत्तरसाधक ने पद भ्रष्ट करी दे. एवी हालत मां ते जोड़ी विखुटी पड़े छे तेने मोहवश विखुटा पड़नार दुःख रूपे अनुभवे छे पण खरी रीते आत्म-साक्षात्कार न थया नुं दुःख आत्मा मां वेदावुं जोइए पण ते भणी उपेक्षित रहे छे एज मोह नुं माहात्म्य छे.

आपना उत्तरसाधक नो वियोग एवी हालत मां थयो के अधवचमा आपने छोड़ी विदाय लीधी छतां घर मां गृहस्थ नी उपाधि मां ज रही आत्म साक्षात्कार कर्या विना तेओ गयी तेनुं दुःख जरूर तमने तेम अन्य संबंधिओ अने परिचितो ने लागवुं ज जोइए अने साथे पोते पण आगे कूच न करी शक्या तेनु पण दुःख वेदावुं जोइये-पण तेमना शरीर संबंधे वियोग थयो तेनुं दुःख जो तमने आत्म साक्षात्कार इष्ट होय तो ते थवुं होय तो पण न करवुं जोइये आवी ज्ञानिओ नी आज्ञा छे जे साथे चढाववा योग्य छे.

आप समझदार छो तथा आपना पिताजी पण समझदार छे माटे आर्त्तध्यान नहीं करतां धर्म-ध्यान मा मन ने लगाड़जो. लि सुखलाल ना प्रभु स्मरण.

काच रूप शरीर ना टुकड़ा थवा ना छे अने आत्मा तो फोटुवत् अखंड रहे छे ते अगाडीए फोटू पड़वा नुं निमित्त समजी ने आत्म-साधन मां लक्ष जोड़जो. ॐ शांति—

सहजानंदघन

(पत्रांक—४४८) हम्पी

ॐ नमः १७-९-६६

श्री केशरीचंदजी धूपिया सपरिवार [क्षमापणा के ४ पत्र]

सहजानन्दघन, माताजी ना हार्दिक खामणा स्वीकृत हो एवं हार्दिक आशीर्वाद भी।

पर्वाराधना सानन्द सम्पन्न हुई ४०० जनसंख्या प्रायः थी। चार अट्ठाइयां भी थीं। सुन्दरलाल जी सा'ब को अठाई तपस्या एवं पारणा निर्विघ्नतया पार हुआ। हमारा तथा माताजी का स्वास्थ्य अच्छा है। वहाँ आपकी धर्मपत्नी एवं बच्चों को हार्दिक आशीर्वाद कहें।

सुखभाई, हीराभाई आदि श्री संघ ने हार्दिक खामणा कहा है।

धर्मस्नेह में वृद्धि हो, पद्मावती बदलिया की भी अट्ठाई थी, परिचितों को हार्दिक आशीर्वाद!

(पत्रांक—४४९) हम्पी १७-९-६६

ॐ नमः

भँवरलालजी सा'ब सपरिवार

(खमावुं सर्व जीवो ने० पत्र ४)

सहजानंदघन, माताजी ना हार्दिक खामणा एवं हार्दिक आशीर्वाद स्वीकृत हो!

पर्यूषणाराधना सानन्द सम्पन्न थई। सां० दिन प्रायः ४०० जन संख्या हती. त्यां पण मुनि द्वय नी निश्रा मां आराधना ठीक थई हशे। माताजी नी तबियत हाल ठीक काम आपे छे. आ देह स्वस्थ छे. श्री सुन्दरलालजी नी अट्ठाई सानन्द सम्पन्न थई. ४ अठाइओ हती.

श्री हीराभाई, सुखभाई, मेवबाई आदि बधाना हार्दिक खामणा स्वीकारजो. परिचित बधाय ने खामणा जणावजो। धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि करजो। ॐ शांतिः

(पत्रांक—४५०) हम्पी १७-९-६६

ॐ नमः

श्री मेघराजजी सा'ब नाहटा सपरिवार

सहजानंदघन अेवं माताजी ना हार्दिक खामणा स्वीकृत हो एवं हार्दिक आशीर्वाद! एवं च— माताजी का स्वास्थ्य ठीक-ठाक चल रहा है आप सभी स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे? ऐसी आशा है। पर्वाराधना यहाँ उल्लास पूर्वक हुई, वहाँ भी वैसे ही हुई होगी?

यहाँ से सभी भाई-बहनों का खामणा। धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो।

(पत्रांक—४५१) हम्पी १८-६-६६

ॐ नमः

परम धर्मस्नेही साधर्मी मुमुक्षु श्री कान्तिभाई सपरिवार

सांवत्सरिक—क्षमापना चार पत्र

सहजानंदघन ना हार्दिक खामणा स्वीकृत हो एवं हार्दिक आशीर्वाद !

कृपालु नी कृपा थी पर्वाराधना सानंद सम्पन्न थई. प्रायः ४०० जनसंख्या हती. आ देह स्वस्थ छे. तम सौ स्वस्थ अने प्रसन्न हशोज. अहिं थी माताजी आदि बहेनो अने सुखभाई, हीराभाई आदि भाइओ ना हार्दिक खामणा स्वीकारजो.

कृपालु नु शासन जयवंत वर्त्ते छे. आ प्रदेश मां हजारेक भक्तो बन्या छे. प्रचारनुं लक्ष नथी. छतां जेमना योग बले बधुं पार पडतुं जाय छे. धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो।

(पत्रांक—४५२)

ॐ नमः

सं० २०२७ आषाढ वदि १ को बम्बई से गुरुदेव की आज्ञा से भँवरलाल नाहटा के कान्तिभाई को लिखे पत्र में गुरुदेव के स्वयं हाथ से लिखा :—

आपनुं भक्ति पत्र मल्युं उत्तर आपवा मां विलम्ब थाय एवीज स्थिति छे. कृपालु नी कृपाए तीव्र वेदना छतां अन्य कई चिन्ता रहेती नथी.

हाल मां बीजी बधी व्याधिओ शांत थइ अने भगन्दर व्याधि नो तीव्रोदय थयो जेथी परिचारक वर्ग अहिं गई काले तेडी आव्या छे. आजे देशी पद्धति ए चिकित्सा नो प्रारम्भ थवा संभवता छे धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि करजो.

सौ परिचितो सह आप सौ ने मारा तथा माताजी ना हार्दिक आशीर्वाद।

सहजानंदघन हा० आशीर्वाद !

(पत्रांक—४५३) हम्पी

ॐ नमः

अध्यात्मा श्री पानमलजी मुन जतनमलजी और विजयचंदजी एवं प्रमोद, प्रभात, अशोक, देवेन्द्र, विनोद, नरपतकुमारादि सपरिवार

आपका खामणा पत्र मिला। मेरी ओर से सभी के प्रति क्षमा भावना ही है, मेरी ओर से किये गये भवोभव के अपराधों की भी विशुद्ध हृदय से उत्तम क्षमायाचना करता हूं—स्वीकारियेगा। एवं काकीमां तथा सुखभाई भी आप सभी को खमाते हैं, स्वास्थ्य तीनों का अच्छा है। देवेन्द्र का याद

किया कि दूसरे रोज पत्र आया। यहाँ का मौसम अच्छा है आप सभी धर्मध्यान में प्रयत्नशील रह कर मानव जीवन को सफल करें यही अन्तरंग की आशीष है, श्राविका मण्डल को भी खामणा कहिएगा ! ॐ शांतिः

सहजानंद, खामणा सह धर्मलाभ

दूसरी ओर माताजी के हस्ताक्षरों से :—

श्रीमान् जतनमलजी विजयचंदजी सह कुटुम्ब परिवार ने खमत-खामणा, आपनो पत्र पोंनो अमोने हिन्दी लखवानी लीपी आवती नथी एना कारण थी आपने पत्र आपेल नथी, याद तो आप बधाने करीए छीए. देवेन्द्र नी माताजी नी तबियत नरम छे ते जाण्यूं तेमां गभरावा जेवूं कांइ नथी कर्मो ना उदय थी व्याधि आवे तो शांत भावे सहन करवूं— देवेन्द्र ने पत्र याद करीए छीए छोकराओ कुमारिकाओ आनंद मा हशे. लीं० काकीबा ना खामणा

(पत्रांक—४५४)

हम्पी २४-६-६६

ॐ नमः

मद्रास के इनकमटैक्स कमिश्नर श्री विमलचंदजी श्रावक को दिया सांवत्सरिक क्षमापना पत्र
विमलचंदजी सपरिवार

(खमावुं सर्व जीवों ने गा० ४)

सहजानंद व माताजी ससंघ ना हार्दिक खामणा स्वीकृत हों एवं आशीर्वाद !

पत्र मिला। गुरुदेव कृपा से आपकी मनोकामना पूर्ण हो यह आशीर्वाद – पर्वाराधना सानंद संपन्न हुई. जन संख्या बढ कर ४०० की हुई थी. दशम को भी अधिक थी। लक्ष्मीचंदजी साव सपरिवार कुनूर से यहाँ आये हुए हैं। माताजी सुखलाल जी आदि सभी ने खमाया है। सुन्दरलाल जी ने ८ उपवास किये थे. पूनम के बाद प्रयाण करेंगे। माताजी का हा० आशीर्वाद !

भाई साव तो तप जप में मग्न हैं अतः नहीं आ सके।

(पत्रांक—४५५)

हंपी रत्नकूट २४-६-६६

ॐ नमः

सांवत्सरिक क्षमापना का मुद्रित पत्र

श्री कोजमल जी रिखबचंद जी सपरिवार

ढगला बंध टपाल मां तमारुं खामणा पत्र पण मल्यूं. पर्वाराधना घणाज उल्लास भावे थई। साँ० दिने अने दसम दिने ४०० थी अधिक संख्या प्राय हती। उपज तीसेक हजार नी प्रायः थई छे. माताजी भक्ति रस मां बधा ने तरबोल करता रहे छे. एमनी तबियत ठीक-अठीक छतां परवा करता नथी। आ देह स्वस्थ्य छे. दशम ने दिन दजन भर भाई व्हेनो सेवार्थे आश्रम मां कायमी अर्पाई गया। दिनोदिन आश्रम मां उन्नति थई रही छे. घणा नवा जीवो आवे छे. माताजी आदिए तमने याद करिया

छे. पधारे आवो छो ते प्रतीक्षा करे छे. पण घर नो मोह छूटे तो ने. तबियत ठीक हशे. परिचितो ने हार्दिक खामणा सह जय सद्गुरु वंदन जणावजो. धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. हिम्मत ने पण खामणा आशीर्वाद जणावजो ॐ शांतिः

सद्‌ज्ञानंदघन

(पत्रांक–४५६) हम्पी
ॐ नमः २४-६-६६

भव्यात्मा श्री केशरीचंदजी सा'ब सपरिवार

पत्र संप्राप्त थयुं, त्यां ना बधा समाचार ज्ञात थया. श्री कान्ति भाई, श्री वडेर जी, अने आप सुखी थी पधारो. तथा कमलसिंह जी दुधोडिया दंपती पण सुखी थी पधारे. सां० दिन तथा दर्शन ना ४०० थी अधिक संख्या हती. हवे विखराइ रही छे. दुधोड़ियाजी ने यथोचित व्यवस्था थई रहेशे.

जो तेओ साथ् कार आवे तो अहिं थी ३॥ माइल उपर हंपी पावर हाउस पासे आधुनिक गेस्ट-हाउस छे चार्ज पण ओछो छे. अने रजा मेलवी लेवाशे. अहिं पण रूमो छे. तेमां मात्र शौचालय नथी. श्रीसुन्दरलालजी त्रिपुटी आनंद मां छे तेओ प्राय. २६-६-६६ की शाम को प्रयाण करशे. पमनी अठाई निर्विघ्न समाप्त थई

देवचद्र साहित्य अने चिदानंद साहित्य विवेचन तैयार थये यथाशक्ति संशोधन मां काली आपीश. फुरसद तो ओछी मले छे. छतां दिग्दर्शन आपीश तमे तमारुं भाषान्तर लई आवजो।

केशलोच सभा वच्चे ज दिगंबर मुनिओ करे छे. परन्तु बोली बोलवा विषे नी वात तो हजू सुधी सांभली नथी. ए तो आप आपणी मरजी नी वात छे. श्रद्धा नी वात छे. एवी चर्चा मां न उतरवुं.

श्री अगरचंदजी श्री भंवरलालजी. श्री वैराजजी. श्री पारसन परिवार, श्री कान्तिभाई, श्री वडेर जी, केशरिया कंपनी वाला श्री जयन्ती भाई आदि जे जे याद करता होय ते-ते सौ ने हा० आशीर्वाद जणावजो. धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि करजो. माताजी. सुगनलाल सघा ना सादर जयजिनेंद्र !

धर्मस्नेह ज मंगल रूप छे. अर्थात् मन नी धरपकड़ ज मंगल रूप छे. घर मां बधाने हा० आशीर्वाद. ॐ शान्तिः

सद्‌ज्ञानंदघन धर्मलाभोस्तु—

(पत्रांक–४५७) हंपी ७-१०-६६
ॐ नम.

[केशरीचंदजी धूपिया]

आप का पत्र एवं चिदानंद (१६) पद्यानुवाद की कापी मिली। अवकाश लेकर निरीक्षण करूंगा, श्री अगरचंदजी ने पदों का वर्गीकरण करने का सुझाव दिया, सर्वथा उचित है। श्री लूणवाणीजी ने मूल

ज करशो. अने तमने समाधि तथा राजयोग होवा थी मोटर मां बेसवूं पड़शे ! ए सांभली आपणे बधा हस्या हता. वली सूरत मां आ शरीर ज्यारे लाकड़ा जेवुं थयेलुं तेमां में अनशन करावचा नी गुरु महाराज ने प्रार्थना करेली, पण बधा आप गमगीन बनी गएला त्यारे में कहेलुं के मारे सीमंधर भगवान नाज दरबार मां जवूं छे. समवशरण नुं वर्णन संभलावो. पण आप सौ गलगला थई गयेला. पछी में "सोहं तथापि तव भक्ति वशान्मुनीश !" आ काव्य नी जोर थी धून लगाडेली. तेना परिणामे मने समाधि स्थिति थई गयेली. तेमां पण मने आकाशवाणी वड़े घणा अनुभवो थएला पण कोई ने कह्या न्होता. वली जामनगर ना चोमासा ने अंते ज्वरग्रस्त थतां दादाजी ना प्रत्यक्ष दर्शन अने उपदेश पाम्यो. तेमणे गच्छ नी फिकर छोडी आत्मा नी आराधना करवा आदेश आपेलो. मेसाणा चौमासा नी दीवालीए अष्टापद ना प्रत्यक्ष दर्शन थयां. तेनो महाराज श्री ने पण लखी जणावेलुं. फरी पालणपुर नी का० पुनमे बद्ध थी मुक्त पर्यन्त बधाय जीवो ना समूह ने चौदे राजलोक मां क्यां-क्यां केम छे ते फिल्मवत् प्रत्यक्ष जोयुं. पछी अगवरी चोमासुं पूरुं करी गुफावासी बन्यो जेमा पण कोई दिव्य शक्तिओ काम करी रही हती. गुफा निवास थी समुदाय नो सम्पर्क छूटी गयो. पण समुदाय प्रत्ये एज सद्भावना वर्त्ते छे. आपनी मारा प्रत्ये गमे तेवी भावना हो ते मारे जोवानुं नथी. पण मारे मारी भावना बगाड़ी कर्म नथी बांधवा अेवो शरुआत थी ज निर्णय छे. पू० श्री रत्नसूरिजी महाराज पण देवलोक मां गया पछी आ आत्मा प्रत्ये प्रसन्न छे. ज्यारे आपनी फिकर करता जोया छे.

कल्पसूत्र. बीजा गच्छवासियो नी सभा मां खरतर थी भिन्न पर्यूषण मां वांचवा नी आपणी प्रणाली ने आपे बंध करावी छे. तेथी अन्य गच्छिओ नी सद्भावना ने धक्को लाग्यो अने आपणा समुदाय प्रत्ये तेओ नुं सन्मान घट्युं छे. जो के तप गच्छवाला एवी ईर्ष्या करता होय छे अने तेथी व्यर्थ ना कर्म थी बंधाय छे पण आपणे एम करवूं न्होतुं. बीजाओ नी पण अनुकम्पा होवी घटे. तेने बदले द्वेष भाव केलववा थी पोतानो अनर्थ थाय छे. आपना आयुबंधकाल मां पण आप व्यग्रचित्त हता अने जे गति मां जवुं पड़शे ते महा दुखदायी नीवडशे. तेनो पू० गुरुदेव अफसोस करता हता. अधिक शुं लखुं ? आपने आ वाक्यो ऊपर विश्वास आववो कठण छे छतां हितबुद्धिए लखी रह्यो छुं. केवल आत्मा आत्म-भाव मां जाग्रत रहे अने श्रेय ने पामे ते सिवाय बीजो कोई हेतु नथी. ए सिवाय आपनी गति तथा आयु मर्यादा नी वात जणाववा नी मने पूज्यो नी आज्ञा नथी. माटे माफ करशो. बाकी हुं तो अल्पज्ञ अधिक शुं जणावी शकुं ? परन्तु पूज्यो नी कृपा थी थोडुंक सूचन करी शक्यो छुं अने ते आपना उपकार ना बदला रूपे. आप स्वीकारी शको तो स्वीकारजो.

पुनशी भाई ना लखवा प्रमाणे आप मारवाड़ तरफ जवानी भावना करो छे। परन्तु कच्छ नी माफक राधनपुर स्टेट, जोधपुर स्टेट, जेसलमीर स्टेट ए प्रदेशो मां पण दुष्काल छे. लोको पाणी ना अभावे सन्त्रस्त छे. जो कच्छ मां आपने अगवडतु होय तो जामनगर आपने अनुकूल पडशे. बाकी आ अवस्था मां दूर तो नीकली शकाय नहिं, पछी आपनो जेवो उदय।

उपर ना लखाण थी आपने कोइ पण प्रकारे दुभववा नुं आ आत्मा मां भाव नथी. मात्र आपना आत्मा ने शान्ति मलो एज सद्भावना छे. अने तेथी जे इशारो लख्यो ते तरफ ध्यान आपी कषाय भावो ने वोसरावी आप आत्म भाव ने केलवी देह भाव ने घटाड़ो एज मंगल कामना छे देह भाव घट्ये ज समाधिमरण शक्य बनशे. ए तो आप पूज्यो नो ज उपदेश छे.

मुनि जयानन्द आपना थी अलग विचरवा तैयार थया छे. तेमा जे प्रीतिभेद थवा ना कारणो पैदा थया, ते आपने टालवा जोइए. मोटाओ ने पेट नी माफक मन पण मोटुं राखवुं घटे छे. अन्यथा आ जमाना मां पेट ना जण्या पण सेवा थी विमुख बनता जोइए छीए. तो पछी पारका घरना नुं शुं कहेवुं ? अतएव आपने शांत भाव केलवा नी अनिवार्यता छे. ॐ. धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो अने आ बाल ना भवोभव ना अविनय आशातनादि वड़े थएला अपराधो नी त्रिकरण शुद्धिए मिच्छामि दुक्कडं स्वीकारजो ।

लि० आपना बाल ना सविनय सादर सविधि वंदना सुख पृच्छादि स्वीकारजो ।

(पत्रांक—४५६)

ॐ नमः १०-१०-६६

भक्तवर्य श्री देवीलालजी सद्मुमुक्षु मण्डल,

पहुँच पत्र मिला। हैदराबाद से साध्वीमंडल का भी पत्र आया, जिसमें आप लोग वहाँ होते हुए गए लिखा है।

डग से भँवरलालजी सा'ब का खामणा पत्र था जिसमें आपको खामणा व यहाँ का वर्णन लिखने का लिखा था। आप उन्हें समाचार लिख दें। हमारा, माताजी का और सभी आश्रमवासियों का स्वास्थ्य अच्छा है, सभी प्रसन्न है। सभी ने आपको याद किया है। लोढाजी की तबियत कुछ सुस्त है, सीजन बदल रही है. जिसका कुछ प्रभाव पड़ता ही है, ठीक हो जायेंगे।

उनके परिवारियों को हीरालालजी आदि को हा० आशीर्वाद कहें। माताजी ने आप सभी को हा० आशीर्वाद कहे है। धर्मस्नेह में वृद्धि हो। जयानंद मुनि कच्छ मुद्राशहर में अपनी जन्मभूमि में चौमासा है। खामणापत्र था। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन हार्दिक आशीर्वाद।

(पत्रांक—४६०)

ॐ नमः हम्पी १९-१०-६६

भव्यात्मा श्री सुमराजजी सा'ब सपरिवार

आप सौ कुशल हशो. अपनी अर्द्धाङ्गिनी नी तबियत हवे ठीक हशे, अहिं अमो बधा आनन्द मां छीए. माताजी नी तबियत साधारण ठीक चाले छे. पालीताणा थी दर्शनविजयजी वे ठाणा पंजाबी

बाप दीकरो के जेओ स्थानकवासी काची दीक्षा मां हता अने पछी पालीताणा मां आवेला छे. तेओ आपने पण मल्या हता एम लखे छे. आपे तेमने हंपी जवानी सलाह आपेली; तेथी तेओ अहिं आववानी रजा मंगावे छे. तेमनो बीजो कागल पण आव्यो छे. तेओ केवा छे ? तेओ आपनो परिचय थये केवा लाग्या ? ते लखी जणावजो। वली तेओ अहिं कई रीते आवी शकशे ? ए एक प्रश्न छे. आप कार्ती पूनमे सिद्धाचलजी जवाना छो ? जवाना हो तो लखी जणावजो. तेओ चम्पानिवास मां रहे छे जो योग्य होय अने आत्म-शांति पामवा बतावेलो मार्ग आराधे तो अहिं ना नथी. ॐ

माताजी ए आप दम्पती ने घणाज याद करी आशीर्वाद जणाव्या छे. धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. परिचितो बधाय ने आशीष जणावजो, ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन हार्दिक आशीर्वाद !

देहरादून मां लाला कृष्णचंद्रजी ना मोटा पुत्रवधू कुशाजी नु देहावसान थयु छे. लाला दीपचंद जी नी सीड़ी उतरवानीय शक्ति नथी रही. एवा पत्रो छे. चंचल घणु करी कुटी मां तुरत आववा इच्छे छे. पण टूर मां जवानु नक्की होवा थी अहिं नु अ······लखे छे. आत्म तंत्र हाल ठीक चाले छे. ॐ

श्री जतनमलजी, विजयजी नाहटा सपरिवार, शिखरचन्दजी सेठीया, दीपचन्दजी सेठीया, भंवर-रतनजी पारेख, भंवरलालजी कोठारी आदि सभी को हार्दिक खामणा व आशीर्वाद कहियेगा।

(पत्रांक—४६१)

हम्पी

ॐ नमः

१५-१०-६६

भव्यात्मा श्री मेघराजजी सा'व सपरिवार,

कल आपका पत्र सम्प्राप्त हुआ, पढ कर प्रसन्नता हुई। श्राविकाजी ने बड़ी हिम्मत की। इस वय में ३१ उपवास धन्यवाद के पात्र हैं। पारणा निर्विघ्नतया सम्पन्न हुआ ही होगा।

कल रात को माताजी, तपस्विनी को देखने आपके घर आयी थीं, क्या आप लोगों को पता चला ? उन्हें हमारी तथा माताजी की ओर से हार्दिक अभिनन्दन सह आशीष कहियेगा एवं सुखशाता भी पूछियेगा।

श्री शुभराजजी सा'व दम्पती, श्री अगरचन्दजी साव सपरिवार, आपके पारिवारिक सगे सम्बंधी और साधर्मी जनों को भी हमारा तथा माताजी का हार्दिक आशीर्वाद कहियेगा। सभी स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे ही। यहां हम सभी स्वस्थ एवं प्रसन्न हैं ही। माताजी का स्वास्थ्य ठीक-ठाक चल रहा है। चंदना को अब छुट्टियाँ हुई हैं, शायद यहाँ आवेगी और फिर १-११ को दक्षिण भारत की टूर में जावेगी।

पर्यूषण की भीड़ पूनम बाद कम हुई फिर भी अब तक सामान्य रस चालू था, जो दीवाली की निकटता के कारण सामान्य रहेगा। धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो। ॐ शांतिः

सहजानंदघन।

(पत्रांक—४६२) हम्पी १७-१०-६६

ॐ नमः

भक्तवर्य श्री कोजमलजी,

पत्र मल्युं. तमने आगल पाछल पत्रो ना जवाब तो आपेला ज छे पण टपाल खाता नी अने अह-मदाबाद तोफान ना कारणे कदाच वच्चे ज गेब थया होय तो ना नहिं वली अहिं मुमुक्षुओ नी आव जाव चालु ज रहे छे अने टपाल ना ढगला आवता होय छे. मने आ काम मां मदद करे तेवो एके मददगार नथी अने अेकले हाथे मारा थी पहोंची वलातुं नथी. माटे हवे थी तमे कोई ने जो मारा थी लाभ नी इच्छा होय तो प्रगट-मिलन सिवाय मात्र टपाल वड़े आशा छोडी देवी, मने हवे टपाल थी बहु कंटालो आवे छे. बधाने घर बेठे बिगर महेनते जेम पैसा तेम ज्ञान जोइए छे. दिवसे-दिवसे दुनिया मां जेम सेवा चोरी फेलाई रही छे तेम मुमुक्षु वर्ग मां पण एज वृत्ति वधती देखाय छे. तमने केटलाय वखत थी डंका नी चोटे जणाव्युं छे के हवे घर नो मोह छोडी अहिं धामा नांखो पण ए सांम्भले कोण ? अहिं जे व्यवस्था मां खामी लागे ते व्य० पोते करी लेवी, घरे करवीज पड़े छे ने ? तो पछी अहिं बधाने मफत मां मले अेवी आशा कां करवी ? अत्यारे वड़वा जेवा आश्रम मां पण भोजन चार्ज चालू कर्यो छे कोई ठेकाणे मफत चोको नथी. ज्यारे अहिं आटला समय थी मफत चाले छे आटली सगवड़ छतां तम जेवा लोभीआओ ने लोभ नो थोभ नथी एथी वधारे केटला चावखा मोकलुं ?

मावाजी पण ठपको लखावे छे अने साथे अम बंनेना हा० आशीर्वाद. आश्रम ना बधा भाई बहेनो नो धर्मस्नेह—आपना परमस्नेही हजु तो आव्या नथी. आवशे त्यारे वात. घेवरचंदजीए तो पजूषण पण अहें कर्या तो तमने भुली ना जाय ? अेनी घरवाली त्यां साध्विओ नी पाछल फिदा छे. एवा समाचार मले छे त्यां रिखबचंदजी सपरिवार पहेलवान (मिश्रीमल) दलीचंदजी बाफणा हिम्मतमल आदि बधाय परिचितो ने मारा तथा मावाजी ना हार्दिक आशीर्वाद ! सदा कृपालुदेव नुं शरण अने स्मरण राखजो. आत्मा शिवाय बधुं भूली जजो. थोडुं लख्युं घणुं करी ने जाणजो. बोल्या चाल्या मिच्छामि दुक्कडम् ॐ

सहजानन्दघन हार्दिक आशीर्वाद !

(पत्रांक—४६३) हंपी रत्नकूट ६-११-६६

ॐ नमः

अनन्य आत्म शरणप्रदा । सद्गुरु राज विदेह,
पराभक्ति वश चरण में । धरुं आत्म बलि एह ॥

सद्गुणानुरागी आत्मार्थी श्री केशरीचन्दजी साथ सपरिवार

पत्र मल्युं आपना अनुवादित १६ पद जे पहेलां मलेला छे. तेनुं एकज पद जोयुं न तेमा व्यवस्थित व्याख्या आप लखी शक्या नथी. पद मा आवेला शब्दो अने विषय ने ध्यान मां लई तेम क्रमे अनुवाद

जलवायं जोइए. मूल शब्दो अने भावार्थ मां थी प्रयोजनभूत एक पण शब्द-शब्दार्थ छूटवुं न जोइए. आपनी कलमे ए क्रम जलवायुं नथी. तेमज प्रारम्भ नुं पद के जेमां पात्रो गोठयाया छे. तेनुं वर्णन सर्व-प्रथम करी पछीज पद लखी अने शब्दार्थ-भावार्थ लखवुं उचित गणाशे. ते प्रथम पद नुं (एक नुं) अनुवाद करी हवे मोकलीश. के जेथी आपने समज पडे वली त्यार पछी तेज पात्रो जे-जे पद मां आवे, एकज विषय रहे. त्यां पात्रोना अर्थ करवा नी आवश्यकता न होय. पण विषय बदले त्यां पदनी पूर्व भूमिका लखी पछी मूल पद आपी पछी भावार्थ लखवो घटे.

आपे सर्वप्रथम प्रस्ताव मूक्यो के हुंपि आवी ने आपनी पासे थी चिदानंद पदावली नो भावार्थ समजी पछे उचित संशोधन करी छपाववा आपीश तो ते कार्य मां मारो पूर्ण सहयोग मली शकशे. परन्तु आप त्यां बेठामात्र पत्र व्यवहार थी सूचना के लेख मोकल्या करो अने हुं तेने ठीक करी-करी ने मोकल्युं-ए काम मारा थी बननार नथी. कारण के मने तेवी जराय फुरसद नथी. दिनभर नवा-नवा मुमुक्षुओना समाधान बे वखत प्रवचन अने पोतानी आत्मा तथा देहनी आवश्यक क्रियाओ मां तथैव आश्रम ना वहीवटदारो नी मुंझवण वखते मार्गदर्शन आपवा मां जाय छे. वली विजयादशमी नी आगल पाछल ४-४ दिन जोरदार वृष्टिथई तेथी छाती मां कफ नी असर वधी गई. श्वास लेवामां तकलीफ थवा लागी. तेनो अमुक भाग हजीय उदय मां वर्त्ते छे. आवा कारणो थी तमे हुकम चलावो तेनुं पालन मारा थी बिल्कुल थई शकशे नहिं. मारा अनुभवनो फायदो उठाववो होय तो कोई सारा साक्षर ने पोतानीज जवाबदारीए मोकलो. तो हुं जरूर मार्ग दर्शन करतो रहीश. ए पदो मां आगल जतां जे अनुभव-मूलक कथन समस्यापूर्ति वि० नो अनुवाद आपथी थई शकशे नहिं. जे पूर्व मुद्रित शब्दार्थो के अमुक पद्योनुं अनुवाद जोई ने तमे तेनुं अनुकरण करशो तो पछी उक्त कृति ना कर्त्ता ने अन्याय आपवा जेवुं थशे. हमणां अहिं चिदानंद बहुतरी ऊपरज प्रवचन शरू कर्युं छे. ज्हारथी सादो विषय छतां अन्दर थी गहन जणाय छे. अने ते गहनता ने सरल शब्दों मां विविध दृष्टिकोण थी प्ररूपाय छे. ते मांय आप जेवां श्रोताओ होय तो ओर ज मझा आवे.

अगरचन्दजी सावनो गमे तेवो तकादो के उतावड होय छतां आ कार्य कोई सारा साक्षर विना एकला आपथी उचित ढबे पार नहीं पडी शके. एवो भास मने थाय छे. विद्वानों ने भोग्य नहीं बने पण आप जेवा ने साधारण पणे काम आवे तो भले. वली थोडाक पदोनो अर्थ तो तमे समजी न सको एम पण मने लागे छे. तो पछी मन फावे तेम अर्थ लखी बीजाने शुं पमाडी शकशो माटे तमारी परिस्थिति वश तमे न आवी शको ए वात साची पण बीजा कोई साक्षर नी गोठवण करीने अहिं मोकलो तो आ काममां हुं जरूर मदद करीश. ते शिवाय मारी आशा राखवी नहिं अने जेम आप सौने सुख उपजे तेम करवा मां हुं वांधो उठावीश नहिं.

वली देवचंद्र साहित्य विषयक आपे जे च्यार विभागो कल्प्या ते अनुचित नथी. हिन्दी-अनुवाद थाय तो उत्तम छे. पण सारा साक्षरो वडे ते काम लो करावशो तो जनता मां ते आदर पामशे. पहेलां जेम प्रभंजना अष्ट प्रवचन सज्झाय आदि ना अनुवादो करावो ने छपाव्या छे ते छाछ-बाकला जेवां

मने लागे छे माटे कहेवुं जोइशे के श्री अगरचन्दजी अने आपनी वृत्ति आध्यात्मिकता नो व्यापक प्रचार करवा नी तो छेज पण विना पैसे ज्यां लगी काम थतुं होय तो दमड़ी खर्चवानुं सीख्या ज नथी-हा। मोज शोख मां तणावा मां ते वृत्ति उपयोगी छे किन्तु आवश्यक खर्च मां छते पैसे कंजुसाई विषे आप बने ना परिचितो आपनी फरियाद करताज होय छे. अने ते आवा कार्यों मां पण जोवाय छे. ए ने हुँ वैराग्य नथी गणतो. पण आप बन्ने एने वैराग्य मां खतावता हो एम लागे छे. तमे वई परिग्रह-परित्यागी नथी थई गया ! हुं हृदय ना निखालस भाव थी जणावूं छुं के आवी वृत्ति हवे त्यागी अने उदार बनो. सिद्धहस्त साक्षरो ने रोकी देवचन्द्र-साहित्य विशुद्धि अने संकलन-मुद्रण कार्य करावो अन्यथा एवुं तेवुं तो छपायलो छेज. अस्तु हमणां दीवाली छे. त्रण दिवस अखण्ड धून रहेशे. मारे अंगत कामो मां पण लागवुं छे. फुरसद मलये १६ पद जोईने एक नुं आदर्श लखी तैयार करी ने मोकलीश. जो उतावल करशो तो एमज मोकली दइश. माटे बारे घडीए आ उपराणो करशो नहीं तमारुं लेखन कोई सारा साक्षर ने सोंप्याविना छपावशो नहीं. एवो मारो अंगत अभिप्राय पण छे. कारण के ए विषय मां लेखनकला अनिवार्य छे. हुं धारुं छुं के उचित सलाह देवी वखते सर्जन डाक्टर थवुं हितरूप छे. खाली हाजी हा करी राजी राखवा थी शुं भलुं थवायनुं हतुं ? माटे मारी आ टेव ने तमे ठोकरावशो नहि. मारुं लगाड़शो नहि हो के.

आगम साहित्य जे अवशेष बच्युं छे. तेमां पाछल थी घणी गालमेल थई गई छे. तेमांय भूगोल अने खगोल विषयक तो घणी स्खलनाओ उल्टी प्ररूपणाओ थएली नजराय छे. वली अर्थ घटन पद्धति पण विकृत थएली जणाय छे.

महाविदेह अने भरतादि प्रदेश युक्त आ दुनिया अलग-अलग छे. एम तो अनुभव कहे छे. वच्चे घनोदधि-तनोदधि रूप वातावरण ना समुद्रो छेज एवं जेम अढी द्वीप (२॥) मांज दुनिया मांज मनुष्यो गणावा मां तेम ज्योतिष चक्र मां मात्र बेज इन्द्रो गणावा मां तेनुं मतलब थवाय सूर्य-चन्द्रो के जे असंख्य छे. ते पैकी बेज मां देवताओ नी आवादी होय अने तेना ऊपर शासन तंत्र रूपे बेज इन्द्रो होवा घटे· बाकी ना बधा खाली होय. आ अर्थ घटन करतां विज्ञानियों नी वातो ने खोटी ठरावषा नो वारो नहि आवे एटले के अहिंथी जे चन्द्र देखायछे ते एक आखी दुनिया छे. पण वस्ती वगर नो छे. तेमां चन्द्रेन्द्र के तेनी प्रजा नथी पण असंख्य चंद्रो पैकी कोई अन्य एक मांज ते होवा घटे. अने तेमज लागे छे.

आत्मार्थ रूपे एना विशेष ज्ञान नो आवश्यकता न होवा थी ए विषे पाछल थी थएला अनुभवीयो उदासीन रहा पूर्वना अनुभवीयो नुं कथन घसाइ गयुं अने अज्ञानीओ द्वारा अर्थनिर्णय थई प्ररूपणा मनमानी चाली रही छे जे संशोधनीय छे. ॐ

श्री शुभराज जी, श्री अगरचन्दजी, श्री भँवरलालजी, श्री धन्नुलालजी आदि प्रियजनो ने आपना पारिवारिकों आपने मारा तथा माताजी ना हा० आशीर्वाद—ॐ शान्ति. सहजानंदघन

उतावले पत्र पूर्ति करी छे. अतः शुद्धि-अशुद्धि विवेक करी लेजो.

(पत्रांक—४६४)

हंम्पी १३-११-६६

ॐ नमः

परम कृपालु देव ने अभेद भक्तिए नमो नमः

भक्त कोजमलजी श्री रिखबचन्दजी सपरिवार श्री दलीचन्दजी बाफणा पहेलवान श्री मुनीलालजी श्रीभँवरलालजी श्री हिमतमलजी आदि मुमुक्षु वृंद !

आ नवुं वर्ष आप सौ ने व्यवहारिक तथा अध्यात्मिक उन्नतिशील बनो ए मारा तथा माताजी हा० आशीर्वाद !

दीवाली नी त्रण दिवस नी अखण्ड धून मां आ वखते अपूर्व आनंद वर्त्यो. थोड़ाक भव्यो भावावेश मां देहभान भूली अपूर्व अनुभव करवा लाग्या हता. हवे कातीपूनमे कृपालु नी जन्म-जयन्ती व्याख्यान, ध्वज महोत्सव, वरघोड़ो, साधर्मीवात्सल्य, वार्षिक रिपोर्ट, ट्रस्टीओ नुं चुनाव वि० कार्यो थशे. कृपालुदेव ना शासन नो जय जयकार वर्त्ते छे. आश्रमवासी बधाओए तमने नूतन वर्षाभिनन्दन जणाव्या छे। चन्दना पोनानी मण्डली सहित मुम्बई गई। चम्पालालजी वि० हुबली कुंदगोल नी मंडली बधा नाना मोटा आवी ने गया. सारा समाचार आप्या. अहिं हमणां सामान माटे १ मोटुं गोदाम बनी रह्युं छे. रघुनाथजी देख-रेख राखे छे। धर्म स्मरण मां वृद्धि करजो ॐ शांतिः

सहजानन्दघन अगणित आशीर्वाद सह नूतन वर्षाभिनन्दन !

(पत्रांक—४६५)

हंपी ५-१२-६६

ॐ नमः

आत्मार्थी भव्यात्मा श्री केशरीचंदजी साव सपरिवार,

का० पूर्णिमा सुधी अहिं भक्तो नी भीड़ हती, त्यार बाद बवासीर नी कृपा शुरु थई. रोज नवा-नवा जिज्ञासुओ नुं आवागमन तथा टपालना ढगला आ बधु एकले हाथे संभालवुं अने साहित्य मां प्रवेशवुं दुष्कर थई पड्युं छे तेमाय आ बवासीर बेसवा मां दर्द पैदा करावे छे, छतां सत्संग तो नियमित चालूज राख्युं छे पण आपनुं काम बीजा कोई मददगार विना जल्दी उकले तेम न लागवाथी आपना १६ पद ना अनुवादित पत्रो पाछा मोकलावुं छुं.

आ चिदानंद साहित्य मां ना पदोनुं विवेचन केवुं होवु जोइए तेना सेम्पल रूपे प्रथम पदनुं विवेचन थोडाक दिवसो मां तैयार करी पाछल थी मोकली आपीश. केवल प्रथम पद नी भूमिका ३ पेज लखी राख्या छे. अने पद नो अनुवाद उपला कारणो थी हजु लखायो नथी हवे भीड़ ओछी थतां अने बेसवा योग्य शरीर थतां तुरत लखी पूर्ण करी ने मोकलीश.

आपनी योग्यता प्रमाणे आपे महेनत कईक करी छे. परन्तु ते विद्वानों ने योग्य संकलन न गगी शकाय. आपने मूलभूत समज छे पण तेने व्यवस्थित गोठववानो अभ्यास नथी जेथी ए मूल कृति ने पूरतुं न्याय आपी शकशो नहीं—एवुं लागे छे.

१ सर्वप्रथम विषयोनुं वर्गीकरण करवुं २ प्रत्येक पदनुं विषय मुजब नामकरण ३ वर्गीकृत विभागीय नामकरण अने पछी ४ व्यवस्थित विवेचन—ए क्रम रहेवुं जोइए.

प्रत्येक पदनी प्रत्येक गाथा नुं एक पण शब्द के शब्दार्थ-न छूटे अने शृंखलाबद्ध विषय स्पष्टीकरण थाय तेवुं आलेखन थवुं जोइए, तेमज वर्गीकृत विषय विभाग मां प्रथम विषय ने लगती पीठिका होवी जोइए के जेथी पूर्वापर क्रम समजवुं सुलभ थई शके. वली प्रचलित शब्दोनुं वैज्ञानिक अर्थशास्त्रीय सुमेल पूर्वक आपवुं जोइए रूढिगत अर्थों के जे जीव ने रहस्य समजावी न शके तेवा होय त्यां-त्यां वैज्ञानिक अर्थ प्रतिपादन अनिवार्य गणवुं जोइए ॐ.

आपनुं एक पदनुं विवेचन जोयुं बाकी कोई जोया नथी. प्रथम पद थीज तमारी शैली जोइ लीधी अने उपलो अभिप्राय बांध्यो छे.

श्री धन्नुलालजी साव ना पत्र थी जाण्युं के अपनो धर्मपत्नी नुं देह छूटी गयुं छे—ऐ विषय मां मारा तरफ थी समवेदना सह आशीर्वाद आपसो तमने पारिवारिको ने स्वीकृत हो—तेमना आत्माने शांति थाओ.

हवे लौकिक व्यवहार पत्या पछी जो आप अहिं आवी शको तो चिदानंद बहुत्तरी ऊपरज सभा मां विवेचन शुरु करी आपने ते विषये मार्ग दर्शन आपवानी भावना छे. माटे आप ए विषे उचित निर्णय लही जणावजो.

आपनी पुत्रवधूनुं अपे० ओपरेशन सफल रीते थयानुं तेमना दादाजी ना पत्र थी जाण्युं छे. तेमने आपरेशन बाद आवश्यक राहत मलती हशे. जो ते नहीं संभलाय तो तेमनुं स्वास्थ्य भविष्य मां स्व-पर ने चिन्ता उपजावे ए स्वाभाविक छे. ए दंपतीए वर्ष भर नुं तो ब्रह्मचर्य पालवुं ज घटे. तेवी प्रेरणा तेमने मारा तरफ थी जरूर आपजो अने तेओ सौने मारा आशीर्वाद जणावजो.

श्री धन्नुलालजी साव अने तेमनुं लश्कर, श्री अगरचन्दजी, श्री भेंवरलालजी सपरिवार, वडेरजी सपरिवार एवं परिचितो पैकी जे-जे मले तो तेमने पण मारा हार्दिक आशीर्वाद जणावजो.

अहिं आश्रम प्रगति पथ पर छे. वदलीया दंपती दशेक दहाड़ा पछी अहिं थी प्रयाण करी महेन्द्रगढ़ तरफ जशे. फरता-फरता कलकत्ते आवशे तेमणे पोताना रूम आगल धाराबदा अने उपर केबीन बनावी लीधां छे· आप अहिं आवशो त्यारे पहाड़नो नकशो सुदोज जोई शक्शो.

धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि करजो पूर्व पत्र नो उत्तर मल्यो नथी. हवे आ पत्र अने साथे नुं आपनुं साहित्य आपे पहोंच शीघ्र आपजो ढील करशो नहिं. ॐ शांति

सहजानन्दघन हा० आशीर्वाद

(पत्रांक—४६६) हम्पी १६-१२-६६

ॐ नमः

अनन्य आत्म शरण प्रदा। सद्गुरु राज विदेह।
पराभक्ति वश चरण में। धरुं आत्म वलि एह,

भव्यात्मा वावुलाल भाई सपरिवार

विस्तृत पत्र मल्युं. विगत वांची प्रसन्नता थई. देहरोग जेम प्रभु कृपा थी दूर थयो तेमज अेमना अखण्ड शरण अनेस्मरण थी. भवरोग पण दूर थाय छे. आपणे तो खास भव रोग खमवा योग्य छे माटे कमर कसी ने मंडी पड़ो.

तमारा लख्या प्रमाणे तमारा हृदय मां जो शंकाओ उठे ते पण कर्म, कर्म नो उदय जाणी तेना थी व्हीवुं नही परंतु तेने जाणनार हूं आत्मा छूं—एम आत्म भावना वलण ने वलगी रहे—के जेथी ते शंका प्रत्येना गमा अणगमा थी अने शंका रूप विकल्प थी पोताना आत्मा नुं जुदा पण ध्यान मा टकी शके अने ते विकल्प वमल मां वही न जवाय पण तेना साक्षी रहेवाय. परिणामे जुनूं ऋण पते अने नवुं उत्पन्न न थाय नवा कर्म न वंधाय.

आ संसार मां—पोताना आत्मा सिवाय वीजु कशुं आत्मा ने काम आवतुं नथी. माटे इच्छवा योग्य ज नथी. अने जे आत्मा ने खप मां आवे ते तो आत्मा-आत्मा मां ज छे. तेने व्हार शोधीये तोय केम मली शके ? माटे आत्मार्थ सिवाय वीजी वधी इच्छाओ व्यर्थ जाणी, कर्म वश उत्पन्न थती. इच्छाओ ना पण साक्षी रहेवूं. हितावह छे—आ शिक्षा मननपूर्वक जीवन मां उतारजो आ देहे मस्सा रूपे अने माताजी ना देहे हार्ट हाई प्रेशर रूपे व्याधिदेव नी कृपा वर्ते छे. उचित उपायो थी राहत छे. अने प्रभु कृपा थी व्याधि पण समाधि पणे वेदाय छे.

मस्सा मां ज्वलन अने शूल जेवूं कोई-कोई वार अनुभवाय छे. अने एज कसोटी छे. परीक्षा छे. परीक्षा मां जो नापास थईए तो ? ए आपण ने केम पोसाय ? माटे चिन्ता जराय नथी अने तमेय चिन्ता करशो नही धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. घरमां वधाने तथा परिचितो वधाय ने अने तमने मारा तथा माताजी ना हा० आशीर्वाद कहेजो अने स्वीकारजो. ॐ शांतिः सहजानन्दघन

(पत्रांक—४६७) हम्पी १८-१२-६६

ॐ नमः

भक्तवर्य नवलकिशोरजी सपरिवार

पत्र मिला। यहाँ प्रभु कृपा से आनंद ही आनन्द है। वहां भी आप सभी को हो, यह सर्वदा आशीर्वाद ! यहां आश्रम की ओर साधकों की अभिवृद्धि हो रही है। माताजी ने हार्दिक आशीर्वाद तथा सुखभाई ने हार्दिक धर्मस्नेह लिखाया है।

प्रभुभक्ति में निमग्न रहो ! व्यवहारिक एवं पारमार्थिक उन्नति हो। ॐ शांतिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद !

(पत्रांक—४६८) हम्पी

ॐ नमः १८-१२-६६

भवदर भींवराजजी सपरिवार

आपके क्रमशः दोनों कार्ड मिले काफी दिन हो गये। इन दिनों इस देह में भी व्याधिदेव की असीम कृपा बरस रही है और माताजी के देह में भी। एक ओर भक्तों की भीड़, दोनों वक्त प्रवचन, उसके बाद जिज्ञासुओं की शंका समाधान, आनेवाली डाक का ढेर—इन सब परिस्थितियोंवश आपके जवाब में ढील होना स्वाभाविक है।

आप तो अपने हृदय में कृपालुदेव की साकार मूर्ति प्रतिष्ठित करके श्वसानुसंधानपूर्वक- सहजात्म स्वरूप परमगुरु—इस मंत्र को रटा करें। और सारी कल्पनाएं छोड़ दें। श्रीमती कांकरिया को भी यही सूचित करावें। पत्र द्वारा हम क्या मदद कर सकते हैं और यहाँ आना भी आप लोगों के हाथ नहीं। अतः अब तक जो सुना है और समझा है, उसे जीवन में उतारें, यही सार है।

यदि हृदय मंदिर में प्रभु की प्रतिष्ठा करके उन्हीं का शरण और स्मरण रहा तो यह व्याधि भी समाधि के रूप में बदल जायेगी ऐसा हमारा अनुभव है, अधिक क्या लिखें?

यहाँ सभी मुमुक्षुओं को हमारा तथा माताजी का हार्दिक आशीर्वाद कहें और आप भी स्वीकार करें। ॐ शांतिः सहजानंदघन का० आशीर्वाद!

(पत्रांक—८६६) हम्पी

ॐ नमः २८-१२-६६

भक्तवर्य सुमेरजजी सपरिवार

पत्र मल्युं, वांची विगत जाणी, करम न छूटे रे प्राणिया रे.

आ देहे १ मास थी मामा-परमेश्वर नी असीम कृपा वर्ते छे. अने माताजी ने देहे पण हाइ प्रेसर, हार्ट ट्रबल हता. हवे तेमने राहत छे. आप दम्पती पण व्याधिदेव नी उपासना करी ज रह्यो.

आपने भी व्याधिदेव नी समभावे उपासना करशुं तो ज तरशुं माटे गभराता नहि मस्त रहेजो.

त्यां श्री भेंवरलालजी सेठ सपरिवार अने याद करनारा सघाय ने अने सव दम्पती ने मारा तथा माताजी ना का० आशीर्वाद! धर्मस्नेह नी वृद्धि करजो ॐ शांति

कमलश्री, हायरस आदि सघाय ने आशीर्वाद जणावजो. सहजानंदघन

(पत्रांक—४७०) हम्पी १७-१-७०

ॐ नमः

स्वरूप जिज्ञासु आत्मार्थी मुमुक्षु श्री नथमलजी चौरड़िया,

दोनों पत्र मिले। पढ़कर प्रसन्नता हुई। यहाँ हमारी स्थिरता माघ शुक्ला १० तक प्रायः संभव है, तत्पश्चात् दक्षिण भारत में ही कई जगह के आमंत्रण हैं अतः शरीर व्याधि यदि शांत हुई तो अन्यत्र

गमन होगा। अभी बवासीर के दर्द में कुछ राहत है और माताजी के देह में भी आंशिक राहत है। आगे जैसा उदय।

प्रयाण करने के पश्चात् रास्ते में जगह-जगह की जनता आगे निकलने नहीं देती अतः निश्चित समय का पालन भी हमसे नहीं हो सकता। चातुर्मास तो यहीं होता है अतः उस समय जिसे लाभ लेना हो आ जाते हैं। आपकी आराधना की तमन्ना सफल हो, किन्तु जब तक प्रत्यक्ष मुलाकात और यहाँ की परिस्थिति का परीक्षण न हो जाय तब तक आप इस्तीफा की कल्पना स्थगित रखें, मार्च में हम कहाँ होंगे, पता नहीं।

आपके प्रश्नों का संक्षिप्त और अपर्याप्त उत्तर निम्न प्रकार है :—

(१) जिस मंत्र को रट कर सिद्ध किया गया हो और उसके द्वारा अपनी आत्मा को जिन्होंने महात्मा बनाया हो वे सद्गुरु हैं और उनसे प्राप्त मंत्र द्वारा शिष्य भी आत्म-शुद्धि कर सकता है और उसी मंत्र में सभी मंत्र समा जाते हैं। 'एक साधे सब सधे, सब साधे सब जाय' यह सैद्धान्तिक तथ्य है।

(२) आपके लिये नित्य स्मरण-सतत स्मरण के रूप में 'सहजात्म स्वरूप परम गुरू' जो कि नवकार मंत्र का ही सारांश है—रटना उचित है। नवकार में पांच पद है, वे परमगुरु कहलाते हैं और वे सिद्ध भगवान आदि सहज-अकृत्रिम-जन्म-मरण रहित आत्म स्वरूप हैं प्रत्यक्ष शरीर स्वरूप नहीं है। जैसे परमगुरु सहजात्म स्वरूप है वैसे ही मैं हूं—मैं देहादि स्वरूप नहीं हूँ। इसी भावना-आत्म साधना को जगाने-सतत जागरूक रखने के हेतु श्वासानुसंधान पूर्वक आप सहजात्म स्वरूप परमगुरु इस महामंत्र को निर्विकल्प विश्वास के साथ रटते रहियेगा—बड़ा लाभ होगा—इस विषयक विशेष ज्ञातव्य बातें प्रत्यक्ष मिलने के समय पूछियेगा।

(३) वन्दौं पांचो परमगुरु, चौवीसों जिनराज—"देह त्याग के समय जब तक आत्म साक्षात्कार नहीं हुआ हो तब तक उन परमगुरुओं में लक्ष टिकाना आवश्यक है कि जो बाह्यान्तर ग्रन्थि मुक्त निर्ग्रन्थ है अतएव सर्वज्ञ देव भी। इस तथ्य को हृदयगत रखने हेतु "परमगुरु निर्ग्रन्थ सर्वज्ञ देव" की नित्य ५ माला जाप करते रहें। ये दोनों मंत्र आत्मभावना स्वरूप हैं और आत्म भावना के······से ही केवलज्ञान होता है—इस उद्देश्य को हृदयगत रखने के हेतु "आत्म भावना भावतां, जीव लहे केवल ज्ञान रे"······इस मंत्र की नित्य तीन माला जपते रहिये। ॐ

(४) भोजन के अवसर पर यह ध्यान रहे कि मैं तो आत्मा हूँ' अणाहारी हूँ अतः मैं खाता-पीता नहीं हूँ यह खुराक देह-मोटर का है अतः इस मोटर को पेट्रोल-पानी दे रहा हूँ। इसी भावना से साक्षी भाव रहेगा। शेष कल्पना छोड़ दें।

(५) चौवीसों जिनराज की शासन देवियाँ भिन्न-भिन्न हैं—एक नहीं;

पत्रोत्तर अवश्य दीजिएगा। धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो। ॐ शांतिः

सहजानंदघन आशीर्वाद।

(पत्रांक—४७१) हम्पी
ॐ नमः १८-१-७०

परमकृपालु देवाय नमो नमः

भक्तवर्य कोजमलजी

पत्र मिला। हमने पूर्व पत्र का जवाब संघपति पुखजी के साथ भेजा था, क्या नहीं मिला ? आपकी बहन सोनीबाई अस्पताल में है और अब ठीक है—यह ज्ञात हुआ। भजन का लक्ष तो कराया होगा। तुम्हारे साधन में होनहार अनुभव वृद्धिगत हो—यह हमारा और माताजी का हा० आशीष, देह भान छूट जाय और आत्म भान टिका रहे यही परिणाम जीवन के अन्त तक सिद्ध हो जाय—यही कर्तव्य है।

जो मुलायम स्पर्श होता है वह दिव्य स्पर्श है। दिव्य सुगन्ध दिव्य ध्वनि-दिव्य ज्योति-दिव्य सुधारस ये सब अन्तर्लक्ष के अन्तरंग साधन हैं—साध्य तो आत्मा ही है। इन सभी का अनुभव करने वाला मैं आत्मा हूँ—सहजात्म स्वरूप हूँ—परमगुरु जैसा ही हूँ—इस प्रकार सहजात्म स्वरूप परमगुरु शब्द द्वारा अपने आत्मलक्ष को पकड़े रखो—निहाल हो जावोगे। ॐ

बवासीर की कृपा अभी तक चालु है—फिर भी सत्संग क्रम चालु रहता है—आने जाने वालों को तथा डाक को सभी सम्भालना पड़ता है। कितनी फुरसद मिलती होगी ? माताजी के स्वास्थ्य में भी घटा बढ़ी होती रहती है। फिर भी मस्त है। तुमको रिखबाजी सपरिवार को पहलवान, संघपति हिमत आदि सभी भक्तों हमारा तथा माताजी का हा० आशीर्वाद !

कल वन्मली का प्रोग्राम है। यहाँ की मण्डली का हार्दिक धर्मस्नेह ! ॐ शांतिः

सहजानंदघन हा० आशीर्वाद !

(पत्रांक—४७२)
ॐ नमः हम्पी १८-१-७०

भक्तवर्य श्री शुभराजजी सपरिवार

प्रभु कृपा से बवासीर में आधा दर्द कम हो गया है, शेष ठीक हो जायगा, वैसी सम्भावना है। माताजी को भी सुधार है। शिवचंदजी सा'ब से यह मालूम हुआ कि आप यहाँ तुरन्त में पधारने वाले हैं—यह जानकर प्रसन्नता हुई।

पंजाबी बाप-बेटा तो चल जा रहे हैं। बेटा अपात्र है। बैठे-बैठे खाना-पीना और सोना सिवाय कुछ करने को तैयार नहीं अतः उसके पीछे बाप भी खींचा जा रहा है। भावी भाव !

आशा है अब आपकी धर्मपत्नी को और आपको स्वस्थता होगी। मेघराजजी सा'ब सपरिवार एवं भागचन्दजी सा'ब सपरिवार सभी ठीक होंगे। आप सभी को हमारा तथा माताजी का हार्दिक आशीर्वाद !

कल हमारा कंपली का प्रोग्राम है और फिर माघ सुद १० के बाद अन्यत्र कई जगह दक्षिण भारत में ही जाने की सम्भावना है, ज्ञात हो। कलकत्ते, हाथरस सभी को हार्दिक आशीर्वाद लिख दें। धर्म-स्नेह में वृद्धि हो। ॐ शांतिः

सहजानन्दघन हार्दिक आशीर्वाद।

हम्पी

(पत्रांक—४७३)

ॐ नमः

१८-१-७०

परम कृपालुदेव ने अभेद भक्तिए नमो नमः

मुमुक्षु श्रीरामजी भाई तथा शांतिभाई परिवार,

पत्र मल्युं. आ देहे मसा नी तथा हाय प्रेशर विगेरे व्याधिदेव नी कृपा हती. तेमा हवे राहत छे. देह नो गुण धर्म ज नाशवंत छे. तो पछी व्याधि तेमां टकी शके एनी चिन्ता नथी तमे कृपालु नी भक्ति मां मग्न रहो. माताजीए तमने वनेने आशीर्वाद जणाव्या छे. आवती काले कंपली गामे प्रोग्राम छे, त्यां जशुं. पछी वे-त्रण महीना घणे ठेकाणे प्रोग्राम वने तो दक्षिण भारत मां ज. एवी सम्भावना छे. पछी जेवो उदय. गुजरात तरफ हमणां सम्भावना ओछी छे. धर्मस्नेह मां वृद्धि करशो. ॐ शांतिः

सहजानन्द अगणित आशीर्वाद !

(पत्रांक—४७४)

दिनांक २५-१-७०

ॐ नमः

भक्तवर्य श्री शुभराजजी, श्री मेघराजजी, श्री अगरचंदजी, श्री केशरीजी, श्री धर्मचंदजी आदि सपरिवार,

पत्र मल्युं, विगत जाणी, कृपालु नी कृपा थी आत्मा मां आनंद छे. ववासीर विषयक राहत छे. पंजाबी वाप वेटा अपात्र जणाया. एक अठवाडियुं औषध आपी पछी स्वतः वंध करी. पछी घी, गोल, साकर ना डव्वा भरी-भरी लेता'''पाणी पण वीजाओ प्होंचाड़े, एवी गोठवण करी, वैठे-वैठे खावुं पीवुं अने आराम. प्रभाते शेर भर दूध सूर्योदये ज मंगवावे. प्राइमस वि० साधनो एकठा कर्या. पुत्र पण आलसु. अध्ययन नी प्रेरणा करी तो एक वे दिवस पछी थाक्या. मुंवई थी ३००) नी औषधिओ सुख-लाल ने राजी करी मंगावी. पण ते वधी व्यर्थ गई. आ वधुं ठाठ जोई ने तेमने उचित शिक्षा आपी पण तेथी सुधरवाने वदले नौ-दो-ग्यारह—आज पालीताणा भणी जाय छे आव जा नो व्यर्थ खर्च माथे पड्यो आवो छे माथा मुंड्याओ नो परिणाम।

हाल मां यति देवेन्द्रसागरजी ए मोकलेल दवा चोपडुं छुं. तेथी फायदो छे. धीरे धीरे ठीक थई जशे. माताजी ने पण व्याधिदेव नी कृपा ज छे न ? कर्म नो कचरो जाय छे. तेने जवा द्यो अने आत्मा ने जागृत राखो. आप सौ ने मारा तथा माताजी ना हार्दिक आशीर्वाद.

शिखरचंदजी साव तो लख्युं हतुं के शुभेराजजी साव हम्पी १०-१५ दिवस मां आवनारा छे. पण'''ए वात काची.

सफर ने योग्य शरीर थतां दक्षिण भारत नां घणा आमंत्रणो ने उचित न्याय आपवो पडशे. धर्मस्नेह मां वृद्धि हो ! माताजी ए आप मौ ने घणा घणा याद कर्या छे त्यां परिचित वर्ग ने हा० आशीर्वाद जणावजो. ॐ शांतिः

सहजानन्दघन अगणित आशीर्वाद।

(पत्रांक—४७५) हंपि ३०-१-७०

ॐ नमः

भगतां (कोजमल जी बाफणा)

थांरो कागद पुगो। साराई समाचार जाण्या। भँवरजी को कागद तो अबतक मिलियो कोनी है अब बेंगलोर सूं कारीगरों ने लै नै एक कण्ट्राक्टर आया है। तीन दिन सुं कमठाणो चालु हुवो है। अब मारवाड़ रा मनख छो मारवाड़ वैठता और थां उठेज रेजो। मैं थोड़ा स दिन में मद्रास राज्य में सत्संग रै वास्ते जावां हां। चार महीनां लागसी। और पछे हैदराबाद-सिकंदराबाद गुलबर्गा आदि जावणो पड़सी। थांने आवणो वे तो चोमासा में परा आवजो।

मसा में चार आनी कसर है, ठीक हो जासी। माताजी पेटेण्ट दवाई लेवे है। थांने भी लेवणी चाहिजे। पेट री गड़बड़ ठीक वे जाय। कलकत्ते सुं घणी मिले। जरा परीक्षा करने देखजो। होके ! थांरी तथा वेनरी तबियत ठीक जाण के खुशी हुई। भजन रो जोर राखसी। श्री मुन्नीलालजी, रीखबाजी सपरिवार, भँवरजी शान्तिलाल आदि भाई बाई सघला याद करवा वालों ने मारा तथा माताजी रा हा० आशीर्वाद के दीजो और थे भी स्वीकारजो।

आवो जरे भगतां री टोली साथे लाइजो रे कि वेगा आइजो रे.........ॐ शांतिः

उठे दादावाड़ी तैयार हुई होसी. सहजानंदघन हा० आशीर्वाद !

(पत्रांक—४७६) हंपी २-२-७०

ॐ नमः

भक्तवर्य श्री भँवरलालजी सा'ब सपरिवार,

व्यतिकर जाण्या, पंजाबी साधुओ मां वैराग्य नो अभाव हतो. तेथी गया. देवेन्द्रसागरजी नी औषधि लगाववानुं चालु छे. घणो फायदो छे. वे आनी कसर छे ते टली जशे. माताजी वाकला पेटेण्ट दवा ले छे. अम बने ने पाणी बदलवा नी आवश्यकता छे तेथी त्रीची आदि ना संघ ना आग्रहे ता० १५-२-७० ना रोज मद्रास तरफ प्रयाण करवानुं थायुं छे. जवा नो वखत आव्यो त्यारे श्री अगरचंद जी साथ आवे छे. तमे साहित्य सामग्री मोकलवा इच्छो छो ! जो शक्य हशे तो तपासी लईश चारेक महीना बाहर रहेवाशे. प्रायः अक्षयतृतीया नीलगिरि-कुनूर जिनालय ना खातमूहूर्त्त वखते हाजरी भरवी पड़शे. आम होवा थी परिचित आगंतुको ने चेतवी देजो.

बदलिया जी नुं बनारस थी पत्र छे हमणा शिखरजी हशे. पखवाडीअे कलकत्ते पहोंचशे.

पदवी विषे हुं उदासीन छुं, अवएव अभिप्राय नहि लखी शकुं.

मातुश्रीए आप सौने तथा तमाम परिचितो ने हा० आशीर्वाद जणाव्या छे. शुभराजजी सा'ब ना क्वचित् पत्रो आवे छे. वाँठियाजी ना हाल मां पत्र समाचार नथी, आशीर्वाद जणावजो, धूपियाजी, वडेरजी, वैद्यराजजी अने सर्व परिवारिको ने हा० आशीर्वाद ! धन्नुलालजी नुं स्वास्थ्य हवे सुधारा पर हशे ? पत्र नथी-धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. ॐ शांतिः

(पत्रांक—४७७)

हंपी १३-२-७०

ॐ नमः

सद्गुणानुरागी मुमुक्षु भव्यात्मा श्री भंडारी सा'ब

विस्तृत पत्र मिला, हाल ज्ञात हुए। प्रभुकृपा से हम प्रसन्न हैं, देह में ववासीर की कृपा थी, जिसमें अब दो आनी भर कसर है। माताजी के लीवर में कुछ गड़बड़ है और शिर दर्द भी। जल स्थल परिवर्त्तन की आवश्यकता होने से ट्रीचनापल्ली के भावुकगण ने उक्त कारण तथा सत्संग की तीव्र कामनावश हार्दिक अनुरोध किया है अतः ता० १५-२ को हम कुछ भाई-बहन सहित यहाँ से प्रयाण करके १६-२ को मद्रास जा रहे हैं, वहाँ के संघ को ४-६ दिन संतोष देकर ट्रीची जावेंगे। ट्रीची से १६ मील सिंगीपट्टी ग्राम के समीप कुछ समय तक ठहरने की भावना है वहाँ का जल स्वास्थ्यप्रद प्रसिद्ध है। ३०० फीट गहरा है। T. B. के मरीज भारत भर के यहाँ स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करते हैं, बड़ी भारी होस्पीटल है जो वहां से ४ मील की दूरी पर है।

वहाँ से तामील देश के कुछ अन्यान्य नगरों में परिभ्रमण करके बेंगलोर-मैसूर को संतोष देकर नीलगिरि जाना पड़ेगा। वहाँ के जिनालय आदि के कार्य में हमारी हाजरी श्री संघ ने आवश्यक मानी है। अतः वर्ष भर से आग्रह है।

सुखलाल आदि कुछ सज्जन यह आश्रम संभालेंगे। आपका स्वास्थ्य ठीक होगा ही। आपको ज्योतिषियों के संकेत अनुसार समाधिमरण की पावन भावना है और उस हेतु आपने जो-जो धारणायें बनाई है, प्रशस्त हैं। तदुपरान्त जो मार्गदर्शन आप चाहते हैं, वह लिखने के लिए अब तक समय नहीं मिल सका। कुछ स्वास्थ्य की गड़बड़ी आगंतुकों के शंका-समाधान और प्रवचन आदि में समय बीत जाता है।

वास्तव में ऐसे समय में प्रत्यक्ष मिलन आवश्यक है पर न तो हम इस समय उस ओर आ सकते और न आप इस ओर आ सकते। अतः अन्तिम दिनों में कोई एक उत्तरसाधक जो आत्म-जागृति में सहायता दे सके वैसा आप वहीं नियुक्त करें तथा आपकी शारीरिक प्रकृति के परिचित वैद्य जब भी आपके स्वास्थ्य में गड़बड़ी हो, तब बिन कहे और आपकी आराधना में बिना बाधकता के उचित सेवा देता रहे जिससे कि आपके दिल में आकुलता पैदा न हो।

समाधिमरण की पूर्व तैयारी रूप में अपनी आत्म-जागृति के लिए ड्राइवर और मोटर की तरह आत्मा और शरीरादि की भिन्नता का सतत भान रखना आवश्यक है।

सप्तधातु का पुतला यह शरीर, जन्म-मरण-रोग आदि में शरीर के गुण धर्म-ज्ञानावरणादि कर्ममल तथा विकल्प जाल आदि को जो जानता है वह ज्ञाता द्रष्टा मैं आत्मा हूं, उक्त देहादि से भिन्न शाश्वत हूं। आत्मा हूं, नित्य हूं, देह से भिन्न हूं।

जैसे देहादि से सिद्ध भगवान परिमुक्त हैं, वैसे ही मैं भी देह में रहते हुए भी स्पर्श विहीन होने से देहादि से मुक्त ही हूँ। मेरे चैतन्य दर्पण में देह तथा देह गुण धर्म झलकते हैं किन्तु मुझमें उनका अत्यन्ताभाव है। अनादि मोहवश वे मुझमें अभिन्न से लगते हैं किन्तु भिन्न ही है। देहादि मृत्युधर्मा हैं, जबकि मैं शाश्वत हूँ अतएव मुझे मरने का भय नहीं है। इस तरह भेदविज्ञान की भावना से आत्मा तथा देहादि को भिन्न-भिन्न जानकर के आत्मा के अस्तित्व और नित्यत्व का भान स्मृति में दृढ़ करके बहिरात्म भाव का परित्याग और अन्तरात्मभाव का परिग्रहण करके अपने हृदय मंदिर में भगवान की वीतराग छवि स्थापित करके सतत मंत्र स्मरण करते रहना चाहिए।

साधु-उपाध्याय-आचार्य-अरिहंत और सिद्ध ये आत्मा के साधक और साध्य पद हैं। वे पांचों ही पद एक मात्र आत्मा के ही हैं। वे परम गुरु कहलाते हैं। वे परमगुरु सिद्ध भगवानादि जैसे सहजात्म स्वरूप *अर्थात् जन्म मरणादि से रहित आत्मस्वरूप हैं, वैसा ही मैं भी "सहजात्मस्वरूप" हूँ।* देहादि स्वरूप नहीं हूँ। इस प्रकार की भावना दृढ़ रखकर श्वास लेते हुए "सहजात्मस्वरूप" इस शब्द का तथा उच्छ्वास के साथ "परमगुरु"—इस शब्द को जो कि नवकार महामंत्र का सार मात्र है, स्मरण करने की आदत जमावें। हम सोते हों या बैठे हों, हमारी नजर के सामने वीतराग प्रभु की छवि रखी हुई रहे जिससे कि हममें वीतराग भावना बसी रहे। इसी प्रयोग के नित्य अभ्यास से परमात्मा का अवलम्बन-शरण और स्मरण पूर्वक आत्म जागृति बनी रहेगी। जैसे कलाकार मूर्त्ति बनाने के वक्त अपनी नजर को सामने फोटो रखा हुआ है उसमें तथा प्रस्तर खण्ड जिसमें कि मूर्त्ति कंडार रहा है इसमें बार-बार परिवर्तित करता रहता है वैसे ही हमारी नजर सहजात्म स्वरूप के उच्चारण के साथ पांचों ही पदयुक्त भगवान की छवि में परिवर्तित करते रहना चाहिये। इसी प्रयोग में निमग्न रहने पर घट में अनाहत ध्वनि, दिव्य प्रकाश और प्रकाश में प्रभुमूर्त्ति का दर्शन, दिव्य सुगन्धी, दिव्य सुधारस तथा दिव्य प्रभुमूर्ति का ध्यान द्वारा स्पर्श अनुभव में आने लगेंगे। देहमान छूट जायगा, व्याधि का आत्मा में कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा और वैसी ही हालत में देह छूटने पर निश्चय से समाधि-मरण सिद्ध होगा। ॐ शांतिः

इसी प्रकार आप सतत आत्म जागृति बनायें रखें और इसमें सफल हों—यही हमारा हार्दिक आशीर्वाद है। श्री काकीमां ने तथा जुगलालजी ने भी आपकी भावना की भूरि-भूरि अनुमोदना की है और हार्दिक नमस्कार कहा है।

यहां सुजानमलजी भण्डारी तथा सुखराज भंडारी यदि मिलें तो उन्हें हार्दिक आशीर्वाद कहें। उनके पत्र थे पर अवकाश के अभाववश पत्रोत्तर नहीं दे सका हूँ। धर्म स्नेह में अभिवृद्धि हो।

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद!

(पत्रांक—४७८)

ॐ नमः

हंपि १५-२-७०

भव्यात्मा मुता श्री मुन्नीलालजी तथा भँवरलालजी

आपका पत्र मिला। हाल ज्ञात हुए। देह तो नाशवान है, उसकी क्या फिकर? फिकर आत्मा की ही रखो जो शाश्वत और निज रूप है। हम आज मध्याह्न को यहां से प्रयाण करके मद्रास जा रहे हैं। ४-६ दिन के बाद ट्रीची जावेंगे। आगे ३-४ महीना इधर-उधर सत्संग गंगा बहाएंगे। धर्म स्नेह में वृद्धि हो। मेरा तथा माताजी का हा० आशीर्वाद। ॐ शांतिः

—सहजानन्दघन

ओ कोजाजी! थें थॉरे उठे ही बेठा रेजो। में आ चाल्या! थोड़ी हवा फेर करनें आवों। ३-४ महीना लाग जावे। माताजी आशीर्वाद लखावे है। सारा जणाय याद किया है। रिखबाजी आदि को आशीष। और थोंने भी। ॐ शांतिः

सहजानन्दघन

(पत्रांक—४७९)

ॐ नमः

ट्रीची ता० २४-२-७० मंगल रात्रे

भक्तवर्य श्री भँवरलालजी साव सपरिवार

आजे आपनुं पत्र मल्युं, विस्तृत समाचार ज्ञात थया अमोमद्रास नुं प्रोग्राम पतावी गत शनीवारे प्रातः त्यांथी प्रयाण करी पुनूर-पहाड़ी मां कुंदकुंदाचार्य नो चरण वंदना करी तिंडीवनम् थता १८ माइल उपर दि० भट्टारक ना एक गाम मां विशाल जैन मन्दिरो वंदी जैन मठ जोई तिण्डीवनम् मां आहार··· पतावी सांज पछी अहिं सकुशल आवी प्होंता। रवीवारे सिंगीपट्टी मांना ते स्थान ने जोई आव्या के ज्यानुं पाणी स्वास्थ्यप्रद छे। जे मकान जोई राखेलुं तेनी आसपास ग्राम्यजनो शौचादि करता होवा थी हवा दूषित जाणी। ते स्थान केंसल कर्युं अने पछी सांजे ट्रीची थी उत्तर पश्चिम खुणे १२ माइल कावेरी अने एक बीजी नदी ना संगमे रहेला एक ठापू उपर विशाल विस्तृत घटाओनी वच्चे नो डाकबंगलो जोयो ज्यां अपरडेम आवेलुं छे। शीतल वातावरण छे। ते बंगलानो अमुक अंश मलवानी संभावना जाणी ते प्रयत्न करतां १ हाल मल्युं तेमां माताजी पोताना मातृमंडल सहित रहेशे। अने आ देहधारी एक कुटिया मां रहेशे। एम नक्की थयुं। जेथी त्यां वाइट वॉश थई रह्युं छे। गुरुवारे प्रभाते त्यां जईशुं, त्यार पछी आपे मोकलावेल श्री देवचन्द्र साहित्य नुं संशोधन हाथ धराशे। जे त्यां नो पाणी अनुकूल थशे तो महीनो मास त्यां रहेवाशे। श्री मोहनलालजी राखेचा अने रजनीकान्त भाई सेवा मां हाजर रहे छे। बवासीर मां कांइक पहेलां नी अपेक्षा राहत थती जाय छे। श्री देवेन्द्रसागरजी प्रेषित चार डबीओ पैंकी बे हजु सिलक मां छे. आशा छे के आराम थई जशे. वली माताजी ना गरदन नी गाँठ, हार्ट, पसलीओ,

गुर्दा वि० ना एक्सरे फोटो मद्रास मां कढाव्या हतां. तेमां खास चिन्ताजनक न जणायुं. प्रायः आ तरफ नुं पाणी बदल थतां ठीक थई जशे. एमणे आप सौ ने ह्रा० आशीर्वाद जणाव्या छे.

श्री अगरचन्दजी सा'ब विषयक आपे लख्या मुजब राह जोई, पण ते आवी न शक्या, एमना प्रोग्राम ने अंते कुम्भोजगिरि नुं प्रोग्राम कॅन्सल करेलुं अस्तु.

आपे वडिलिन श्री शिखरजी आदि ना समाचार तथा भक्तमण्डली ना समाचार ज्ञात थया, यथाय भक्तो ने ह्रा० आशीर्वाद जणावजो.

मुंबई थी गई काले विमल बाबू नो फोन हतो. तेओ गुरुवारे आपरेशन करावशे. मांगेला आशीर्वाद आप्या।

श्री धन्नुलालजी सा'ब सपरिवार ना समाचार ज्ञात थया तेमना फोन नम्बर नोट नथी कर्या अन्यथा फोन थी वात करी लेत तो तेओ खुश थात. तेमने आशीष जणावजो. माताजी ना पण ह्रा० जणावजो.

सुखलाल हंपी मां छे. तदुपरान्त हीरजी भाई, दलीचन्द दम्पती, मिश्रीमलजी दम्पती आदि पण त्यां छे, त्यां बांध काम चालू छे. गोडाउन, मोटी आफिस अने दशेक रूमो प्रत्येक मास मां तैयार थई जवानी शक्यता छे. त्यार बाद सत्संग भवन, जिनालय ना काम शरु थशे ज.

आप सौ स्वस्थ अने प्रसन्न हशोज. अमारा समाचार बीकानेर, हाथरस विगेरे सघले जणावजो. धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि हो.

साहित्य संशोधन विषयक बीजी आदि सामग्री नथी. मात्र तमे लखेलुं जोई जईश. क्रम मां फेरफार जेवुं हशे तो ते सूचित करीश ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन ह्रा० आशीर्वाद !

(पत्रांक—४८०) अपर डेम P. W. d. बंगला
ॐ नमः त्रीची फा० कृ० ६ गुरु/२०२६

भक्तवर्य (श्री विजयकुमार बडेर)

पत्र मिला। परिस्थितियों वश आपको संप्राप्त दुःख की समवेदना के अतिरिक्त हमसे और क्या हो सकता है। जन्मान्तर में आपने जो अपने आत्म प्रदेश में पापाणु का संग्रह किया है, उसे पुण्य में परिवर्त्तन करने की हम में तो शक्ति नहीं है तो फिर झूठी आशा से क्या मतलब ?

हां ! भावी संसार की अच्छी विल्डिंग निर्माण में हम मार्गदर्शन दे चुके हैं और देते रहेंगे। जिन्हें पुण्य का उदय निकट में हो तो हम निमित्त बन सकते हैं। उपादान में योग्यता न हो तो हम खुद हमारे लिए भी कुछ नहीं कर सकते, औरों की क्या कथा ? गहराई से सोचने पर यह तथ्य हृदय-गत हो सकेगा।

१५-२ से हम सफर में हैं और गर्मी की सीजन सफर में ही वीतने की सम्भावना है। मातजी ने हार्दिक आशीर्वाद कहा है। घर भर वालों समेत आपको हमारा अगणित आशीर्वाद।

धर्मस्नेह में वृद्धि हो।

(पत्रांक—४८१) अपर डेम—P. W. D. वंगला ट्रीची

ॐ नमः १०-३-७०

सद्गुणानुरागी मुमुक्षु भव्यात्मा श्री मगरूपमलजी सा'व

आपका पत्र कल मिला, पढकर वड़ी प्रसन्नता हुई। हम दक्षिण भारत के दर्शनीय स्थलों को देखने की दृष्टि से नहीं, प्रत्युत भक्तों की सत्संग रुचि और स्वास्थ्य सुधार के हेतु इस ओर आए हैं।

'सिंघी पट्टी' ट्रीची से २२ मील पश्चिम में है, वहाँ T. B. का वड़ा भारी अस्पताल कई मीलों में है, वहाँ का जल अतीव स्वास्थ्यप्रद है। अस्पताल के समीप १ ग्राम है, वहाँ रहने लायक कोई मकान नहीं, एक डाक वंगला अति पुराणा है, वह भक्तों ने इंतेज किया था, किन्तु आसपास तीनों दिशा में लोग शौच जाते हैं, अतएव वातावरण अशुद्ध ज्ञात हुआ, जिससे उसे नापास किया। और ट्रीची से उत्तर-पश्चिम कोने में कावेरी और दूसरी नदी के वीच के इस टापू के ऊपर इस वंगले में आए पक्षभर हो गया। हंपि से प्रयाण करके छह दिन मद्रास ठहरे थे। ४ दिन ट्रीची शहर में ठहरना पड़ा था।

प्रारब्धवश यहाँ गत सप्ताह इस देह के लिए व्याधिदेव की कृपा पूर्ण वीता। ऋतु परिवर्तन के कारण श्लेष्म ज्वर का उपद्रव हुआ। ज्वर वढ़कर एक अहोरात्र १०३।१०५ तक रहा। औषधी कोई लेनी नहीं थी, फिर उपशम ही महौषधि के रूप में प्रयोगान्वित रहा। व्याधि ज्यों-ज्यों वढ़ रही थी त्यों-त्यों अन्तर्लक्ष सविशेष सुदृढ़ होता गया और आत्मानन्द में वृद्धि होती गई, वड़ा उपकार पूर्ण था वह व्याधिदेव का उदय। उस वीच आप भी याद आए और अन्तर्भावना से आपके शिर कर पसार कर आशीर्वाद देता रहा। अव ज्वरादि तो शांत हो गए, किन्तु थोड़ी-सी अशक्ति है ठीक हो जावेगी। यहाँ का जल कफ प्रधान महसूस हो रहा है अतः परसों एक अन्य स्थान जो श्रीरंगम् के समीप है, भक्त लोग वहाँ ले जाने की भावना भाते हैं। श्री मोहनलालजी और उनके घर भरवालों तथा मित्रों आदि सेवा में कटिवद्ध रहते हैं। स्थलान्तर करने के वाद वहाँ शायद पक्ष भर ठहरना होगा। वाद में कई स्थलों से भक्तों का आमंत्रण मिल रहे हैं, जहां का उदय होगा—जावेंगे। श्री अगरचन्दजी नाहटा ने श्री देवचन्द्रजी साहित्य की प्रेसकापियाँ संशोधन के लिए भेजी हैं अतः इस कार्य को भी सम्पन्न करना है।

केरल प्रान्त के अलाई-कोचीन-कलिकट निवासी भक्तों की भावना कोर्टालम् ले जाने की है जव कि नीलगिरि वासियों की अपने यहाँ ले जाने की। नीलगिरि से श्री गुलावचन्दजी सा'व श्रावक लेने आए भी हैं, पर अभी हमारी तैयारी नहीं है। श्री माताजी के स्वास्थ्य में वृद्धि दिखाई पड़ती है—यह भी एक लाभ है। यह हुई हमारी कथा।

ॐ आपकी भावना को देखकर और समाधिमरण की तीव्र लगन को जान कर हमें आपके प्रति हार्दिक अनुमोदना जागृत होती है। मित्र बुद्धि से मृत्यु मित्र को भेटने के लिए प्रतिपल जागृत रहना—यह भी जीवन में एक लहावा है।

चाहे ज्योतिषियों की बातें सच निकलो य झूठ, किन्तु सभी देहधारियों को आगे-पीछे प्राप्त देह छोड़ना ही होगा। इस विषय में जो जीव सतत जागरूक हों—वे धन्य हैं।

आगळ पाछळ चिहुँ दिने, जे विणसी जाय;
रोगादिक थी नवि रहे, कीधे कोड़ि उपाय…
अन्ते पण एहने तज्ये, थाय शिव सुख,
ते जो छूटे आपथी, सो तुम स्यो दुख…
[देवचन्द्रजी, सत्व भावना से.]

आपको श्वासानुसंधान पूर्वक जप करने की आदत नहीं है, अतः यह प्रयोग जमने में भले देरी हो—किन्तु लक्ष यही रखने पर सुलभ हो जायगा और अनहद ध्वनि में प्रवेश होगा। अनहद ध्वनि से व्याधि के उदय में भी मन्द स्वतः सुनने में आता रहेगा, जिससे बिना किसी के सहारे स्वतः आराधना होती रहेगी।

हृदय में वीतराग छवि अंकित कर लेने पर प्रेरणा-आदेश और उपदेश भी स्वतः मिलता रहेगा। इस हेतु त्राटक पद्धति से नजर को साध्याकार बाँधकर श्वासानुसंधान पूर्वक जप करने की कोशीष करते रहें। देह भिन्न आत्मा को १ क्षण भी विस्मृत होने न दें। बस, इतना सधा तो वीतराग भावना टिकी रहेगी—जो समाधि मरण की सहायक सिद्ध होगी।

धर्मस्नेह में अभिवृद्धि हो। पक्ष भर ट्रीची के पते से ही डाक मिलती रहेगी। आगे स्थान परिवर्त्तन होने पर सूचित करूंगा। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन सहजात्म स्मरण पूर्वक अगणित आशीर्वाद!
माताजी ने आपको हार्दिक धर्म-स्नेह फरमाया है। और आपकी भावना की सफलता चाही है।

(पत्रांक—४८२) ट्रीची

ॐ नमः

१०-३-७०

भक्तवर्य नवलकिशोरजी,

पत्र मळ्युं। तमारी पराभक्ति मां वृद्धि जयपुर थी प्राप्त समागम विषे जाण्युं। आ देहधारी मंडली सहित ता० १५-२ नां हम्पी थी प्रयाण करी छः सात दिन मद्रास रही अहीं आव्या छे। प्रारब्धवश श्लेष्म, ज्वरादि पूर्वक गत सप्ताह वीत्यो हवे आराम छे। थोड़ीक शक्ति आव्ये अहिं थी आगळ प्रयाण करशुं। अतः हवे पाछुं पत्र नहीं आपता। सफर मां मळी न शके। श्री अगरचन्दजीए श्री देवचन्द्र

साहित्य प्रेस कापीओ संशोधन माटे मोकली छे ते कार्य हवे कोई एकान्त स्थले जई ने थशे। बे त्रण महीना सफर मां व्यतीत थशे।

आत्म भान अने वीतरागता नुं आराधन अेज आत्मा नु आराधन एज आत्म-शुद्धि नो मार्ग। ए रस्ते चाल्या विना मोक्ष नहीं जई शके। सत्पुरुष ना शरणे एज मार्ग आराधशो। बालकों ने आशीष कहेजो।

माताजीए हार्दिक आशीर्वाद जणाव्या छे।

श्रीरंगम् पासे अमे छीए। दक्षिण भारत मां प्राचीन मन्दिर ना शिखरो सोने मढेलो छे। खूब विशालतम छे। अने नानुं गाम अेमा समाई जाय तेवी विस्तृत रचना छे। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन आशीर्वाद!

(पत्रांक ४८३)

ॐ नमः

माउण्ट रोड, कुनूर

२५-३-७० बुधवार

भक्तवर्य श्री भँवरलालजी सपरिवार,

ट्रीची मां पहेलां आप काका भतीजा ना पत्रो मल्या हता त्यार पछी २०-३ नुं आपनुं पत्र ट्रीची थई ने अहिं गई काले मल्युं विगत जाणी।

ट्रीची आदि दक्षिण भारत मां लू जेवी गरमी वधी जतां अने गुलाबचन्द जी श्रावक त्यां लेवा आवतां २२ दिन ट्रीची रही १ दिवस त्रिपुर रही गया बुधवारे अहिं सकुशल आवी प्होंता, बालचन्दजी साथ बच्छावत पण सपरिवार त्रिपुर सामे आव्या हता। त्यांथी १६ माइल विजयमंगलम् गाम मां प्राचीन दि० जिनालय पण जोई आव्या।

अहिं तो बीकानेर ना सीयाला जेवी ठण्डी छे। अहिंना पाणी मां केल्सियम नथी। तेथी कब्जि-यात रहे छे अने तेने लीधे बवासीर मां दर्द वध्युं छे। खून पड़वा लाग्युं छे। शूल जेवुं दर्द रहे छे। तेथी साहित्य संशोधन मां प्रगति थई नथी। ट्रीची मां उडती नजरे चोवीसी जोई गयो हतो, अहिं व्यवस्थित पणे फरी थी जोई गयो। हवे बीसी चाले छे। धीमे धीमे संशोधन थई जशे। ध्यानदीपिका आदि अहिं ज मोकलजो।

ज्यां सूधी श्री देवचन्द्र साहित्य पूर्ण पणे न जोवाई जाय त्यां लगी बीजं साहित्य नहिं मोकलता। श्री अगरचन्दजीए श्री आनन्दघन साहित्य मोकलवा लख्युं हतुं एमने तमेज उक्त जवाब लखी मोकलजो अने साथे बधा ने आशीर्वाद पण।

माताजी ने कब्जी सिवाय बीजुं बधुं अनुकूल छे। एकंदरे तबीयत ठीक रहे छे। एमणे आप सौ ने घणाज उमलका थी आशीर्वाद जणाव्या छे। गई पूनमे अहिं दादाजी नी पूजा भणाववा मां आवी हती। भीड़ सारी हती। अहिं जिनालय-दादावाड़ी ने हजु बार महीना व्यतीत थवानी आवश्यकता छे। तेथी हमणा खात मुहूर्त नहिं थाय। भूमि मां रौद्रता छे तेने दूर करवा अनोपचन्दजी अनुष्ठान करी रह्या छे। ते वर्ष भर लेवाशे।

आपनी कमर मां दर्द रहे छे। छतां व्यापार तंत्र तथा साहित्य सेवा मां पीछे हट नथी करता। ए खरेज धन्यवाद ने पात्र छे अहिं आववानी आपनी भावना वैशाख मां छे, ते काले अमे अहिं कदाच होइशुं। जो बवासीर अने कब्जी नी फरियाद मटशे तो बे महीना रोकाइशुं अन्यथा जेवो उदय। चोकस विचार नथी कर्यो। यथा काले जणाइ जशे।

चंचल उर्फे चंदना ने अहिं आववुं अने रोकावुं छे। तेनी गई काल थी लायब्रेरी सायन्स नी पाकी परीक्षा शुरु थई छे। ४-४-७० ना पती जशे अने १५-४ पछी अहिं आववानी छे। एनी भावना PH. D करवानी छे। कया विषय मां ए हजु नक्की नथी कर्युं। ए विषय मां आप काका-भतीजा कंईक सलाह आपजो। संस्कृत अध्ययन छे। एनी पुष्टि थाय एवुं कईक जणाववो।

गई काले हाथरस थी चोपड़ाजी नुं पत्र छे। एमने किशनजीए मुंबई थी स्वरादि विषये लख्युं हतुं। जवाब लखी मोकलीश वोठियाजी तो त्यां हशे आशीर्वाद कहेजो।

पारिवारिको, मित्रो, साधर्मिओ यथाय ने मारा तथा माताजी ना हा० आशीर्वाद जणावजो। एमने जंजाल ने लीधे हंपि आववानो मोकोज नथी मल्यो। हाल कलकत्ता मां शासन बदलाई गया थी शांति हशे।

सूरजमलजी बच्छावत बे दिवस थी अहिं छे। रोज बे वार मुलाकात थाय छे। आपना सगा थाय ने? तेओ अहिं थी मुंबई थई कलकत्ते आवशे।

गई काले धन्नुलालजी साव ना बे पत्रो हता। हवे तबियत सुधरती जाय छे। ट्रीची मां फोन थी वातचीत करी हती। मस्त बनी गया हता।

शिखरजी आदिनी यात्रा सुचारू रूपे थई हशे। भावकजीए बहु याद कर्या छे धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि करजो। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन हार्दिक आशीर्वाद.

लि० जे० अनोपचन्द भावसका जयगुरुदेव वन्दन स्वीकार होवे। पू० माताजी एवं पूज्य गुरुदेव ता० १८-३-७० को यहाँ हंपी से पधारे हैं, हमारा परम सौभाग्य है। परन्तु यह बवासीर व्याधि इस बार भी सता रही है। बाकी जलवायु व वातावरण अनुकूल है। उपचार कराने से इन्कारी है। ज्ञानियों की रीत ज्ञानी ही जानते। कृपा स्नेहपूर्ण रखनाजी। योग्य सेवा कार्य लिखावें जी।

(४८४)　　　　　　　　　　　　　　　　नीलगिरि-कुनूर
ॐ नमः　　　　　　　　　　　　　　　　रविवार ता-५-४-७०

भक्तवर्य श्री भँवरलालजी सपरिवार

ध्यान-दीपिका चतु० प्रेस कापी मली. पण हालं केटलाक दिवस थी संशोधन कार्य बंध छे.

ता० २८-३-७० ना देशी वैद्य द्वारा १३ मस्सा तथा भगंदर विषयक शस्त्र क्रिया थई जेनुं वर्णन झावकजीए आपने लखी जणाव्युं छे ते मल्युं हशे. त्यार पछी ज्यारे-ज्यारे शौच क्रिया थाय छे त्यारे-त्यारे वायु प्रकोप चालु रहेतो होवा थी भड़भड़ शब्द करतुं वायु निकले छे. ते वड़े मलद्वार नुं संकोच विकास अवार नवार थतुं होवा थी ... आवे छे ते ठेकाणे असह्य पीड़ा शरु थई कलाको सूधी चाले छे. जेथी संशोधन कार्य थई शकतुं नथी. आ पत्र पण सुते-सुते ज लखुं छुं—जो के शस्त्रक्रिया थया पछी सूजन अने पीड़ा मां छः आनी आराम छे. तद्दन परिपूर्ण आराम थवा मां विलम्ब लागशे। अतएव संशोधन कार्य मां पण विलंब थशे जे क्षंतव्य छे. आशा छे के आ हकीकत बीकानेर जणावी दीधी हशे. आ संशोधन पूरुं थया विना बीजुं कंई पण मोकलशो नहिं. आप सौ स्वस्थ अने प्रसन्न हशोज. पूर्व पत्र मां पृथ्वीसिंह विषयक लख्युं हतुं पण नाम बीजुं (सूरजमलजी) छे. पण भुलाई गयुं छे.

माताजी नी तबियत ठीक-ठाक चाले छे. आप सौने तेमणे हार्दिक धर्मस्नेह आशीर्वाद जणाव्या छे।

त्रणेक दहाड़ा ऊपर वदलियाजी ना भाणेज दम्पती (नवयुवक) अहिं मलवा आव्याहता. त्रण कलाक रही ने फरवा गया उटी उतर्याहता. आ वात साथे आशीर्वाद तेमने फोनथी जणावजो. बीजा वधा सत्संगी जनो वैद्यराज आदि ने पण हा० आशीर्वाद कहेजो. अहिं थी झावकजी आदि मंडली नी सेवा मा कोई कसर नथी.

तेओ सौ ना हा० जय गुरुदेव स्वीकारजो। ॐ शान्तिः

सहजानंदघन अगणित आशीर्वाद।

(४८५)　　　　　　　　　　　　　　　　नीलगिरि-कुनूर
ॐ नमः　　　　　　　　　　　　　　　　११-४-७०

भक्तवर्य श्री भँवरलालजी सा'व सपरिवार

आपनुं पत्र सविस्तार मल्युं. सर्व विगत अवगत थई।

आ देहे मस्सा-भगंदर काढ्या पछी २४ कलाक वाद वैद्य घेर प्रयाण करी गयो. त्यार पछी-शौच-शंका लागी. परन्तु कब्जियात ना कारणे अने देशी आपरेशन पछी जे घाव हता तेथी मल द्वार सुझायलुं हतुं तेथी व्याधिदेव नी कृपा विशेष वर्द्धमान थई. आहार मां घऊँ-घी बंध रखाव्या हतां. मात्र दूध भात मग आदि लइ अंते दूध मां बे तोला एरंडेल लेवा नी सूचना हती-ते मुजब करतां वायु प्रकोप वध्यो. शौचकाले भड़भड़ शब्द पूर्वक गुदा संकोच विस्तार वारंवार थवा लागी, तेथी असह्य दर्द ने

सहन करवुं पड्युं हतुं। सातेक दिवस बाद फोन द्वारा वैद्य नी सलाह लई ने तेल बंध कर्युं. आहार मां मात्र मग अने तेनुं ओसामण बे दिवस लीधुं. मळ कष्ट वधी गयुं. पछी अहिं ना एक भक्त डा० ने सलाह माटे तेड्या. तेणे प्रेशर जोयुं तो आ देहनी वय मुजब १४०/१५० होवुं घटे. तेने बदले मात्र १०० हतुं अर्थात लो ब्लड प्रेशर जाहेर कर्युं. उचित सलाह सूचनो साथे पूर्ण आराम लेवा जणाव्युं. त्यार बाद ६-४ ना दिने एक चिदाकाशी संप्रदाय ना त्रीजा पट्टधर आयुर्वेदाचार्य स्वामी चैतन्यानंदजी नुं अहिं अचानक आगमन थयुं. मळवा आव्या. तेमनी सूचना मुजब मळद्वार द्वारा १ औंस अरेंडेल रात्रे चढाववा नो प्रयोग थयो. तेथी मळ शुद्धि थवा लागी. कमर थी नीचे ना भाग मां ब्लड सर्क्यूलेशन बराबर न थतुं होवा थी शरीर तद्दन टंडु रहे छे. मळाशय-मूत्राशय आदि बराबर काम न आपता होवा थी अने वायु प्रकोप दूर करवा तेमणे दशमूल क्वाथवाला पाणी थी टब बाथ लेवा नुं आज थी शरू कराव्युं छे. ते प्रयोग पताबी ने आ पत्र लखवा बैठो छुं. परिणामे हवे गाडी पाटे चढे एवा एंधाण जणाय छे. अशक्ति एटली वधी छे के अनिवार्य पत्रोत्तर आपतां पण थाकी जवाय छे. शक्ति सम्पन्न थतां एक मास तो लागी जशे. अने त्यां लगी अहिं थी भक्तो कंइ ऊथा दे नहिं अतः वैद्यराज श्री जसवन्त रायजी आदि आगन्तुको ने मई ना पूर्वार्द्ध मां साचवुं शक्य बने तो आ शीतल भूमि मां प्रायः मिलन थाय. माताजी आ देह स्थिति थी क्वचित गभराई गया हता पण फरी ज्ञान बळे आत्म जागृति ने सतेज करी मजबूत बनी गया. एमणे आप सौ ने हा० आशीर्वाद जणाव्या छे. चन्दनानी परीक्षा ४-४ ना पती. हवे १५ सुधी जवाहर नी पतशे पछी देवराज भाई बंने भाई व्हेन ने तेड़ी आवशे.

मणिधारी दादाजी नी अ० श० विषयक समय निर्णय. ते अवसरे प्रकाश्यमान स्मारक ग्रन्थ ते मां आ देहधारी नु लेख आपवुं तथा ते काल ते समये दिल्ही मां हाजरी भरवा आदि विषे नी हकीकत वांची. ए विषे उदय अनुसार जे शक्य हशे ते बनशे.

जामनगर थी मुनि जयानन्द नुं पत्र छे. साम्यानन्द मुनि नी आंखे घणुं ओछु देखाय छे. ठंडो मोतियो छे तेथी शक्य हशे तो त्यां आपरेशन करावशे. अने चोमासुं त्यां ज करशे. ते लखे छे के प्रेम मुनिजी महाराज घणुं करी महीदपुर पहोंच्या हशे. पोते दादाजी नुं अनुष्ठान व्हेला में बताव्युं ते शरू करशे.

आचार्यपद विषे मारा हृदय मां थी कंइ ज स्फुरतुं नथी. संघ ने जेम सुख उपजे तेम संघ करो.

ध्यान दीपिका मळ्या नी व्हेंच लखी हती ते मळी हशे. तेमां थी लीधेला थोड़ाक पद्यो स्वाध्याय रूपे पूर्वे पुस्तिका मां छपाव्या हता ते मारा ध्यान मां छे ते आपनी प्रेसकापी मां थी टाळी देवाशे. अत्यारे तो संशोधन कार्य थतुं नथी. शक्ति सम्पन्न थये शरू करीश.

श्री शुभराजजी, श्री मेघराजजी नुं संयुक्त आमंत्रण-पत्र मळ्युं. प्रतिष्ठा ऊपर बोलावे छे. पण हाल मां ते शक्य नथी. साध्वी मण्डल ना समाचार जाण्या.

श्री अगरचन्दजी सा'ब हवे पत्र प्होंच्ये आव्या हशे तेमने हा० आशीर्वाद। त्यां श्री धन्नूलालजी श्री सुन्दरलालजी आदि बन्धुओ वडेर बदलियाजी धूपियाजी आदि ने मारा तथा माताजी ना हार्दिक आशीर्वाद! ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन अगणित आशीर्वाद

(पत्रांक—४८६) Coonoor-2

ॐ नमः

६-४-७०

भक्तवर्य श्री शुभराजजी सा'ब दम्पती तथा मेघराजजी सपरिवार

आपका पत्र कल शाम मिला। हमें आमंत्रण भेजा जिसके लिए हार्दिक अभिनन्दन! परन्तु यह शरीर सफर के योग्य नहीं है; योग्य होने में भी समय लगेगा।

दीपावली के बाद मस्से की फरियाद शुरू हुई, यावत् यहाँ आते-आते बहुत बढ़ गई। अतः चिदम्बरम् नगर के समीप के एक देहाती वैद्य जो कि इस विषय में ख्यात नाम है, उसे बुलाया गया २८-३ की सुबह में उसने परीक्षण किया। वनौषधि की एक छोटीसी पुड़िया आहार के समय दूध में दी। पांच घण्टे बाद मस्से सभी निःसत्व होकर तृणांकुरवत् मलद्वार में बाहर स्वयं आए और फिर वैद्य ने चिमटे से कंटकवत् खेंच लिए– सभी १३ नग निकले, तथा दो जगह पर वैद्य की नजर में प्रारम्भिक अवस्था में 'भगन्दर' दिखे, जिसे शस्त्र क्रिया से काटकर अलग किए। चमड़ी को शून्य किये बिना ही ये सारी क्रियाएँ हुई। २४ घण्टे बाद वैद्य अपने घर चला गया। बाद में शौच क्रिया बराबर नहीं होती, बहुत कब्जी रहती है, जिसका कुछ उपाय करते हैं। कल एक भक्त डा० को अनोपजी लाए, उसने ब्लड प्रेशर देखा तो १०० मात्र था याने लो ब्लडप्रेशर था—उपर्युक्त कारणों वश अशक्ति अत्यधिक है। अतः पूर्णतया आराम ले रहा हूँ। व्याख्यान आदि बन्ध है। शरीर में शक्ति आते आते महीना भर लग जाय—ऐसी हालत है। तो फिर आपका आमन्त्रण कैसे स्वीकार किया जाय? आप अपने व्यवस्था तन्त्र के अनुरूप कर लीजिएगा।

माताजी का स्वास्थ्य यों तो ठीक है, पर जैसा चाहिए वैसा नहीं। इन्होंने आप सभी को बहुत याद किया है और हार्दिक आशीर्वाद फरमाये हैं– स्वीकृत हो।

चंचल की परीक्षा ४-४-७० को पूर्ण हुई है किन्तु जवाहर की १५-४ के पूर्ण होगी और फिर देवराज भाई दोनों को साथ लेकर यहाँ आवेंगे।

भँवरजी का पत्र दो दिन पर था। श्री देवचन्द्र साहित्य संशोधन के हेतु भेजा हुआ है—यों ही पड़ा है, क्योंकि शक्ति नहीं है। यह पत्र भी लेटे हुए ज्यों त्यों लिख रहा हूँ।

यहाँ भक्तों की सेवा में कोई कमी नहीं है, अतः आप चिन्ता न करें। भावकजी आदि बहुत से

भावुक सेवा में सदा तत्पर रहते हैं। भक्त मंडली ने सादर जय गुरुदेव कहा है। वहाँ शिवचन्दजी साहब आदि परिचितों को हा० आशीर्वाद कहें। धर्मस्नेह में वृद्धि हो। ॐ शांतिः

मातजी के हस्ताक्षर :— सहजानन्दघन हार्दिक आशीर्वाद !

भाई साहब तथा भाभीजी ! आणंद मां हशो आपनो तथा मेघराज भाई साहब नो लखेल पत्र वांच्यो आनन्द थयो. पू० प्रभुजी नी तबीयत बराबर नथी अशक्ति खूब छे. मारा मन मां खूब चिन्ता थाय छे. ज्ञानिओ पासे रोज प्रार्थना करुं छुं के मारा प्रभु ने जल्दी आराम थाओ अने महान् पुरुषो जरूर आराम करशे. भाईजी, पू० प्रभुजी मारा भवोभव ना उपकारी छे, मारी जीवन दोरी छे। एमने ठीक नथी तेथी मारो हृदय रात दिन रोया करे। मेघराजजी भाई सा'ब तथा तेमना घरे आशीष जणावजो आप बन्ने नी तबियत सारी हशे। ॐ शांतिः शांतिः शान्तिः

लि० मातजी ना आशीर्वाद !

(पत्रांक—४८७)

कुनूर नीलगिरि

ॐ नमः

परम कृपालुदेव ने अभेद भक्तिए नमो नमः

मुमुक्षु श्री रामजी भाई तथा शांति भाई

प्रारब्ध थी अमो हंपी थी १५-२ ना प्रयाण करी मद्रास, ट्रीची, त्रिचुरा आवी विचरतां-विचरतां भक्तो ने १८-३ ना अहिं आव्या. प्रारब्ध कर्म ना जोरे मसा नुं दर्द वध्युं भक्तो एक देशी वैद्य ने लई आव्या. ता० २४-३ ना रोज तेणे आहार वखते एक वनस्पति दवा नी नानी पड़ीकी दूध मां आपी. तेथी मशा ४ कलाक मां निरतप भूमि मा अंकुर नी जेम अंकुरित थया. तेणे चिपीया थी कांटा नी जेम खेंची नांख्या. वळी बे ठेकाणे भगन्दर जेवुं वैद्य ने जाणतां बिना इंजेक्सन के चामड़ी ने शून्य कर्या बिना शस्त्र थी कापी दूर कर्या, बहु झड़प थी काम पतावी ने २४ कलाक मां आ वैद्य घेर गयो। त्यार पछी बहु दर्द थतुं हतुं. हवे घटवा लाग्युं छे. एक डॉ० मलवा आव्या तेमणे प्रेसर माप्युं तो लो प्रेशर निकल्युं. एटली अशक्ति वर्ताय छे के कागळ क्वचित् लखुं तोय थाक लागे छे. हाल मां हलवा मलवा नु बंद राख्युं छे. पूर्ण समय आराम लेवाय छे. शा बधु छतां कृपालु नी कृपा थी भय खेद के चिन्ता रहेती नथी. कर्म एक समय मां आवे छे. अहिं भक्तो नी संख्या वधती जाय छे. सेवा मां कमी नथी. चिन्ता करशो नहीं.

तमारा प्रश्नो ना जवाब कृपालु ना वचनामृत मां थी मली जशे. तेमां थी शोधी मनन करशो. यथा जरूर थी मलशे. श्री धामण आश्रम मां नरसिंह भाई ने जय सद्‌गुरु वंदन जणावशो. धर्मस्नेह मां वृद्धि करशो. मातजीए आशीर्वाद जणाव्या छे.

आडे पड़खे रहीने आ पत्रादि पतावुं छुं. शक्ति आवता समय लागशे. अने गाडी पाटे चढशेज. ॐ शान्तिः

सहजानन्द ना अगणित आशीर्वाद सह सहजात्म स्मरण,

सहजानन्दघन   (पत्रांक—४८८)   माउण्ट रोड
C/o लालचंद अनोपचंद अेण्ड कं०   ॐ नमः   कुनूर २ नीलगिरी S. I

श्री महावीर जयन्ती १९-४-७०

भव्यात्मा श्री भँवरलालजी, श्री केशरीचन्दजी धूपिया, श्री रतनलालजी वदलिया अने श्री कान्तिभाई सपरिवार

आपनुं सामुहिक पत्र अने वदलियाजी नुं पृथक पत्र मल्यां. आ देहे मस्सा निकाल्या पछी नी व्याधि दं आनी शेप रही छे. पण अशक्ति घणी वर्त्ते छे. परम दिवसे मध्याह्ने आहार ग्रहण नी चालु क्रिया हती अने एकाएक पेट मां अधोवायु नुं ऊर्ध्वमुखी दबाण थतां ते प्राण मां भली जई ठेठ ब्रह्मरंध्र मां जवा लाग्युं. अने देहभान छुटतुं गयुं—छूटी गयुं. शरीर कन्ट्रोल न रहेता ते आडुं पडवा लाग्युं. जेथी माताजी आदि परिचारिक वर्ग सावधानता पूर्वक शरीर ने पकड़ी लीधुं. जोर शोर थी प्रभु स्मरण रटते हैये सौ करवा लाग्या. १५ मिनट थी अधिक नाड़ी आदि बन्द थई गया. श्री अनोपचन्दजी ने डा० साथे तेड़ी आववा एक भाई तेमने घेर दोड़ी गया. आ तरफ माताजीए दत्त गुरुदेव ने आह्वान करी तेड्या. तेमणे पोतानी दिव्य शक्ति वड़े मशीन बराबर कर्युं. पछी देह भान आववा मांड्युं. अनोपचंदजी डा० ने तेड़ी आव्या त्यां सुधी पूर्ण सुधि आवी गई हती डा० प्रेशर तपास्युं ६४ जणाव्युं औषधि लेवी न्होती, तेथी तद्दन आराम लेवानुं तथा बोलवा-चालवा नुं बंध रखाव्युं—फरी ५ वाग्ये ते डा० अहिंना एक मिलीट्री मोटा डा० ने तेड़ी आव्या. तेमणे परीक्षण कर्युं, प्रेशर १०० सुधी प्होंच्युं हतुं, शरीर एकदम ठंडु पड़ी गयुं हतुं ते पण उचित गर्मी युक्त थयुं. उचित सलाह सूचन अपाया त्यार बाद शरीर सुधरी रह्युं छे.

आ देह नी उक्त स्थिति थी माताजी ने हाइ ब्लडप्रेशर थयुं. तेमने गई काले अन्न खूब उल्टी थई, अत्यारे तेओ घणा असक्त जणाय छे. ज्वर जेवुं पण छे, आ रीते कर्मोदय वर्त्ते छे. छतां आ आत्मा मां कोई प्रकार नुं भय, शोक ने चिन्ता नी लागणी जन्मी नथी. माताजी ने पोताने माटे नहि पण आ देह ने अर्थे हजु सूधी गभराट वर्त्ते छे. जेने आत्म बले शमाववा नुं प्रयत्न करी रह्या छे. पहेले थी प्रकृति नाजुक होवा थी हार्ट ऊपर जे धक्को लाग्यो छे. तेने शमतां वखत लागे छे.

आवी स्थिति मां घणा भावुको नी टपाल स्वाभाविक आव्ये जाय छे. दरेक भलामण लखे छे के आप पूर्णतः आराम लेजो. अने साथे ए पण लखता होय छे के तबियत ना समाचार जरूर जरूर लखता रहेजो. हवे टपाल आखो दिवस लख्या करूं तोय प्होंचाय नहिं। तो आराम क्यां थी मले? ए सवाल ऊभो थाय छे चलतां खास प्रसंगीओ ने तो कचित् आड़े पड़खे जवाब आपुं छुं तेम अत्यारे पण आपी रह्यो छुं।

हवे वदलियाजी आदि आप सौ ने जणाववा नुं के आप ना पत्रो भले आवे पण ज्यां सूधी आ देहे प्रकृतिस्थ न थाय त्यां लगी मारा तरफ थी जवाब नी राह न जोवी. ए न्याये पत्रो लखवा. कारण के मारा उपर पूर्ण कण्ट्रोल वर्त्ते छे.

गई काले माताजी ए गभराटवश मुम्बई अने होस्पेट फोन थी खबर आप्या हता. तेथी मुम्बई थी आ देहनी छहे नो श्री मेघबाई, भाणबाई, चन्दना अने देवराज भाई, खीमजी भाई, बोडीवाला हीराभाई, जवाहर आदि टेक्सी थी आवी रह्या ना गत रात्रिए फोन वड़े समाचार मल्या. तेओ आववी काल पर्यन्त आवी प्होंचशे अने होस्पेट थी श्री घेवरचंदजी, श्री हरखचन्दजी, श्री सुखराजजी, श्री दलीचंदजी, श्री मिश्रीमलजी तथा श्री जेठमलजी आज आवी प्होता छे ता० २०-५-७०

गई रात्रे बल्लारी थी श्री लक्ष्मीचन्दजी सपरिवार, आनन्दघन बाबा सुपुत्र श्री कपूरचन्दजी, श्री रिखबचन्दजी, श्री केशरीमलजी आवी प्होता छे अने आजे गदग थी पण लक्ष्मीचन्दभाई, श्री लगन जी आदि आवनार छे.

रात्रि शांतिपूर्वक वीती, आजे घणी स्फूर्ति जणाय छे. माताजी तबियत मां पण सुधारो छे. तेमणे आप सौ भक्तो ने ह्या० आशीर्वाद जणाव्या छे अने सौ भक्तोए सादर जयजिनेन्द्र। श्री अगरचन्दजी सा'ब नी हाजरी हशेज श्री सुन्दरलालजी सा'ब पारसान ने उपला समाचार जणावजो. पण धन्नुलाल जी सा'ब ने न जणावे. ए भलामण करजो. कारण के तेमणे भावुकतावश धक्को लागे.

धर्मस्नेह मां वृद्धि करजो. सौ ने अखंड प्रभु भक्ति सिद्ध हो ए आशीर्वाद। ॐ शांतिः

सहजानन्दघन

(पत्रांक—४८६)

२०-४-५०

ॐ नमः

भव्यात्मा श्री बाबुलाल भाई सपरिवार,

तमारो पत्र मल्युं हतुं. अहिं ना समाचार श्री मणिलाल उपरनां पत्र थी जाणी लेजो. परम कृपालु सर्वज्ञ सर्वदर्शी छे. जेओ ओमना चरण मां समर्पाई ने रहे छे. तेओ ने तो मात्र तेमनी निष्काम सेवाज करवी रही. तेओ ने पोतीकुं कई ज बाकी न होवा थी शेनी पुकार करे? जेणे कंइक पोतीकुं बाकी छे तेओज पोकार करे छे. अने पात्रतानुसार तेने तेमनो परचो मलवो होय छे.

जेटलुं पोतीकुं रखाय छे. तेटली शरणता मां खामी गणवा योग्य छे. साचो भक्त पोतीकुं कई ज न राखे. तमे साचा भक्त बनो एज अन्तर ना आशीष.

माताजी ना पण तम सौने आशीष. ॐ शांतिः

सहजानंदघन ह्या० आशीर्वाद!

(पत्रांक—४६०) हम्पी

ॐ नमः १६-६-७०

मुनिवर श्री जयानन्द

तमारुं पत्र मल्युं. नीलगिरि थी अहिं आव्ये आज १ महीनो थयो. छेल्ला पखवाड़िया थी डल्टिओ तद्दन बंद छे तेने बदले भगन्दर नो प्रकोप वधी रह्यो छे. जो के १३ मसा नी साथे बे भगन्दर ना विभाग पण देशी वैद्ये कापी काढ्या हता. पण ते अधूरा रह्या हशे. जेथी आम बण्युं. छेल्ला अठवाड़िया थी तीव्र अशाता नो उदय वेदायछे. तेम छतां ज्ञानिओ नी कृपा थी आत्म-जागृति रहे छे. बीजो कोई भय नथी वेदातो. त्रणेक दहाड़ा ऊपर १ डा० ने अभिप्राय अर्थे बतावतां भगंदर नुं ज निदान थयुं. अने तेणे तुरन्त आपरेशन कराववा नो अभिप्राय आप्यो. मारे एलोपैथी पद्धति ओछी फावे छे. नियमो मां वाधा आवे जेथी मुंबई मां वकरीवाला बोराजी मलहम पट्टीवाला के जे भींडीबजार मां पेढीओ थी प्रसिद्ध छे तेनो देशी उपचार कराववा साथवाली मंडली नो आग्रह स्वीकारवो पड्यो छे. अने ता० १८-६ अेटले आवता गुरुवारे अहिं थी प्रयाण करी वेल्लारी रोकाई गुंतकल जई ता० १६-६ नी सांज नी ट्रेन थी प्रयाण करी २०-६ ना मध्याह्न वाद मुम्बई पहोंचवा नुं नक्की थयुं छे. घणुं करी माटुंगा मां कोई सेफ मकान मां थोड़ी स्थिरता करवी पड़शे. त्यां रही बोराजी ने बताववुं. पाटा पींडी कराववी अने आव्या गया ने सन्तोष आपवो सुगम पड़शे.

गुदानी जमणी बाजु मां मोटी गांठ पाकी रहे छे अने नासूर पण थई चुक्युं छे छेल्ले आठ दिवस थी सतत शूल नो अनुभव थया करे छे आम एकंदरे छेल्ला आठ महीना वेदना ना उदय मां वीत्या तेम आगलपण जे अवशेष हशे ते वीतशे.

वेसातुं नथी. एकाशन वखते पण बहु मुश्केली पड़े छे आडे पड़खे पड़ी रही तमारा मन ना सन्तोष खातर आ पत्र लखी रह्यो छुं. श्री विचक्षणश्रीजी ने पण एज रीते आज पत्र लखी दीधो। अन्यथा टपाल मारा थी लखाती न होवा थी अन्य कोई द्वारा क्वचित् पतावुं छुं. त्यां श्री गुणवन्ती व्हेन ने उपला समाचार जणावजो अने साथे सपरिवार ने आशीर्वाद ! मुनिश्री शाम्यानंद ने हवे केम रहे छे.

तमे दादाजी ना जप विषे कयो रस्तो लीधो ? मारो अभिप्राय हुँ हाल नथी दर्शावी शक्यो ते आगल ऊपर जोयुं जशे श्री पारेख परिवार आदि खरतर गच्छ संघ ने मारा हार्दिक आशीर्वाद जणावजो. धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि करजो,

गणिवरजी ने पत्र नथी आपी शक्यो. तेमनी पदवी नी वात प्रायः दबाई गई छे. श्री अगरचंदजी नीलगिरि अने अहिं चार-छः दहाड़ा रोकाया हता। विचक्षणश्रीजी नी मंडली छत्तीसगढ प्रान्त मां विचरे छे. सिवनी आदि थई जबलपुर तरफ आगल वधवा धारे छे. ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन हा० आशीर्वाद !

(४६१) हम्पी
ॐ नमः ३-७-५०

भक्तवर्य श्री भँवरलालजी सपरिवार तथा श्री कान्तिभाई सपरिवार

आपनुं संयुक्त पत्र सम्प्राप्त थयुं. आ देहे भगंदर व्याधि मां छेल्ले १० दिवस थी यदंक वृद्धि जणाय छे अे रीते अशाता वेदनीय नो जत्थो शीघ्र खपवा उदय आवी ने आत्मा थी अलगो थई रह्यो छे. अतएव आत्म सन्तोष रहे छे। बोराजी नी मलमपट्टी चालु ज छे. ए पण ऋणानुबंध पूर्ण करशे ज छे. अस्तु,

हजु थाडे पड़ले रह्यो ने प्रवचन अपाय छे. पण लेखन क्रिया मां फावतुं नथी. अतएव श्री देवचन्द्र साहित्य संशोधन शरू थई शक्युं नथी. अने न टपाल ना जवाब मां व्यवस्थितता जलवाय छे. अतः ज्यां लगी आ उदय छे त्यां लगी अहिं थी प्रत्युत्तर न अपाय अथवा वेहला-मोडा अपाय तो अपराध गणशो नहिं, बीजा कोई सम्भाले तेवा नथी,

श्री शुमराजजी हजु आवी शक्या नथी. तेमने ज्वर देव नी कृपा वर्ते छे.
श्री अगरचन्दजी नुं पत्र छे. अेमनी मागणी पण क्यां थी सन्तोषाय ?
त्यां बधाय भक्तो ने नाम वार हा० आशीर्वाद जणावजो अने आप पण स्वीकारजो.

वदलिया दम्पती ३० नी राते अहिं आवनार हता. पण ट्रेन हड़ताल ने लीधे अटकी गया लागे छे.

अहिं थी माताजी, सुखलाल आदि सौ ना हा० आशीष तथा जयजिनेन्द्र। ॐ शान्तिः
सहजानंदघन हा० आशीर्वाद !

(४६२) बम्बई
ॐ नमः ११-७-५०

मुनिवर श्री जयानन्द मुनि

तमारं पत्र यथासमय अहिं मल्युं हतुं. परन्तु अहिं सत्संगीओ ना वसारा अने फुरसद नो अभाव होवा थी प्रत्युत्तर मां ढील थई भिन्न-भिन्न स्थाने प्रवचन माटे जवुं पड़े छे.

भगंदर व्याधि मां अर्धो आराम छे. वकरीवाला बोराजी नी मलम पट्टी सिवाय बीजा प्रयोगो कराव्या नथी. हवे वाकी नी दवा साथे लई ने अमो ता० १३-७ सोमवारे २-२५ नी मद्रास एक्सप्रेस गाड़ी मां प्रयाण करी १४-७ ना बपोर बाद हम्पी पहोंचवा नी तैयारी मां छीए ११ नी दादाजी नी

जयन्ती पूजा—जमण विगेरे त्यां प्रतिवर्ष थाय छे तेमां हाजरी अनिवार्य छे अने चोमासुं बेसवुं नजीक छे. माटे अधूरा प्रयोगे ज जवानुं अनिवार्य छे.

तमे पत्र साथे मारा हस्ताक्षर वालुं पत्र मोकल्युं ते मल्युं. ते विषे धन्यवाद. प्रसंग हशे तो उपयोग मां लेवाशे. गणिवर ने पत्र नथी लखी शक्यो, हवे हंपि जइ ने लखीश

साम्यानंदजी नी आँखे उपचारो चालू हशे. तमारी साधना विषयक भावना प्रदर्शित करी ते जाणी. तेमां सफलता थाओ.

त्यां हठीसिंह भाई ना परिवार ने हार्दिक आशीर्वाद जणावजो. अहिं गई काले घाटकोपर नुं प्रोग्राम पताव्युं. आजे वडाला अने आवती काले भांडुप तथा मुलुंड ना प्रोग्राम पतावशुं.

दिनों दिन श्रोताओ नी संख्या वधती ज जाय छे. प्रतिवर्ष अमुक समय अहिं आवी ने जनता ने लाभ आपवा नो स्थानीय भिन्न-भिन्न संघो नुं आमंत्रण मल्या ज करे छे. तमे पण जामनगर नुं पतावी मुम्बई तरफ आवो तो कचित् शिष्य लाभ सम्भवे. हमणा खरतर गच्छीय हीराश्री जी ४ ठाणा महावीरजो ना उपाश्रये चामासुं आव्या छे. गच्छ ना आगेवानो मलता रहे छे. ॐ शांतिः

धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि करजो. ॐ शांतिः

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद !

(पत्रांक—४६३) हम्पी २१-७-७१

ॐ नमः

साक्षर भक्तरत्न श्री भँवरलालजी सा'व सपरिवार

आपनुं पत्र मल्युं. व्यतिकर सर्व जाण्या. भगन्दर मां वोराजी नी मलमपट्टी नो प्रयोग छे. जेथी दशआनी सुधारो छे. आशा छे के दर्द सम्पूर्णतः शमी जशे.

माताजी स्वस्थ अने प्रसन्न छे आप सौ ने खूब-खूब आशीर्वाद जणाव्या छे. मुम्बई मां श्री हरखचन्दजी अने पदमचन्दजी मल्या हता. बीकानेर थी अगरचन्दजी नो पत्र छे तेनां मुम्बई थी समाचार न लख्या ते विषय मां उपालम्भ लख्यो छे. में आपने भलामण करेली पण आप भूली गया लागो छो. त्यां चांदमलजो सा'व चोपड़ा, कान्तिभाई, बदलियाजी, धूपिया, वडेरजी, पारसन आदि मुमुक्षु भाई व्हेनो जोग अमारा तथा माताजी ना खूब खूब आशीर्वाद जणावशो, अने आप सौ स्वीकारशो,

चन्दना मुम्बई छे. अमारी साथे दशेक भाई व्हेन आवेल, तेमां थी केटलाक रह्या केटलाक गया. धर्मस्नेह मां अभिवृद्धि हो ॐ शांतिः

लि० सहजानन्दघन हा० आशीर्वाद !

लि० बाल विशनजी ना सादर जयजिनेन्द्र !

(पत्रांक ४६४)

ॐ नमः   हंपि २८-७-७०

साध्वी श्री सुव्रताश्रीजी आदि श्रमणी मंडल,

पत्र मल्युं. आ वर्षे आ देहे व्याधि देव नी असीम कृपा वर्त्तती आवी छे. जे हजु चालु छे. छेल्ले भगंदर नो उदय वर्त्ते छे. वाह्योपचार मात्र मलमपट्टी चालु छे. आत्मा कर्म बोझ थी हलवो थई रह्यो जाणी प्रसन्नता रहे छे. माताजी प्रसन्न छे. आप सौ ने विधिवत् वंदना जणावे छे.

यतिवर्य श्री जतनलालजी ने धर्मस्नेहपूर्वक तेमना प्रत्युत्तर नीचे मुजब जणावजो—

(१) श्री जिनकुशलसूरिजी महाराज नो उपयोग आयु बंध काले पार्श्व प्रभु ना अधिष्ठायको प्रत्ये होवा थी भुवनपति नुं आयु बंधायुं.

(२) महाविदेह ना विजयो अलग-अलग दुनिया जेवा होवा थी तीर्थंकरो अन्य विजय मां जता नथी. जेम अहिं कोई संयमी दरिया पार जई शके नहिं. किंवा अलंघ्य पहाड़ी शिखरो ओलंघी शके नहिं. तेम समजवुं.

जेने तत्वानी भावना होय तेमणे पोता ना दोषो नुं संशोधन अनिवार्य छे. सदोषी जीवन वड़े आत्मशुद्धि नी साधना संभवे नहिं. अतः आप सौ निज दोष ने छुपाववा करतां काढ़वा महेनत करो, एज हित रूप छे. ॐ शांतिः

सहजानंदघन हा० धर्मस्नेह

तमारुं पत्र भटकी ने मल्युं, अहिं नुं पतुं अंग्रेजी मां ज होवुं जोइए हजु बेसी शकातुं नथी माटे थोड़े पड़ले आ पत्र लखी रह्यो छुं.

(पत्रांक—४६५)

ॐ नमः   हंपि. दिनाङ्क २६-७-७०

अनन्य आत्मशरण प्रदा। सद्गुरु राज विदेह
परा भक्तिवश चरण में। धरुं आतम बलि एह

मुनिवर श्री जयानंद,

पत्र यथा समये मल्युं. वाची व्यतिकर सर्व जाण्या

अहिं ज्ञानिओ नी कृपा थी आनंद मंगल वर्त्ते छे. ते सर्वत्र वर्त्तो तमने अंगत अभिप्राये मुंबई नां मकानो जणाय छे अने तेथी ते भूमि मां न जवानी धारणा बनावी छे. ते तमारी मानसिक नबलाई टाळवी घटे छे.

जे देहधारी प्रत्ये आकर्षण जन्मे तेनी शारीरिक अशुचिता ने लक्ष मां लेवी. आसनस्थ थई ने ते व्यक्ति नुं पोते सर्जन पणे सर्वांग आपरेशन चितववुं. टेबल पर सुतेली ते व्यक्ति नुं प्रथम चर्म, लोही, मांस, नशजाल, अस्थि मज्जा, मल मूत्र, कृमिओ आदि बधा शरीर तंत्र ना विभागो शस्त्र क्रिया वड़े अलग अलग पात्र मां राखी पोताना मन ने पूछवुं के हे मन! तने आ पैकी शुं गमे छे?" ५-१०-१५ मिनिट ओ रीते चिन्तवन करतां धीरे धीरे ते देह प्रति घृणा जन्मशे ते जन्म्ये सिद्ध समान आत्मा चिंतववो. सिद्ध सुखो ध्यान मां दृढ़ करवा. के जेथी आत्मा प्रत्ये प्रेम जागशे अने देह आत्मा बन्ने जुदा छे ते उपयोग मा रहेवा लागशे. परिणामे. देह भाव छूटी आत्मभाव जागृत रहेशे. आ पद्धतिए ज्ञान बल विकसी वासना विजय थशे. मूलबंध-मलद्वार नुं संकोचन करीने जप आदि करवानी टेव पाडवी. एथी उर्ध्व रेतस थवाय. वासना जय थाय. जो उक्त नबलाई टालीए नहिं तो मुंबई मां ज नहिं सर्वत्र भय स्थानो रहेला ज छे. माटे जीवन नी घड़तर मजबूत करो. ॐ

विगइओ जेम ओछी लेवाय तेवो आहार लेवो. अने स्वाध्याय ध्यान बल बधारवो रामसूरि पासे उत्तराध्ययन नी वाचना मां जवा मां हरकत नथी पण तेथी अधिक आकर्षण मां पडवुं नहीं. दादा साहेब ना ए निंदको थी सावचेत रहेवुं. आ मारी खास भलामण छे. घेरा मां घेरावुं नहिं गुण गमे त्यांथी लेवा. अस्तु.

मुंबई ना जशमीन मील ना मालिक श्री प्राणलाल भाई कापड़िया के जेना शरीरे सफेद कोढ ना डाघ छे, तेओ मारी पासे पण आवता होय छे अने रामसूरि पासे पण जाय छे. गुणानुरागी छे. तेओ हमणा प्रायः जामनगर तेमना प्रवचनो सांभलवा चोमासे आव्या हशे. तेओ ने ओलखी शको तो साधुओ सामे नहिं पण एकान्त मां मारा हार्दिक आशीर्वाद जणावजो.

आ देहे भगंदर व्याधि हजी चाले छे. बकरीवाला बोराजी नी मलमपट्टी चालू ज राखी छे, हजु बेसी शंकातु नथी. आडे पड़खे ज बे वखत व्याख्यान अपाय छे. औषधी थी धीमो सुधारो छे. बाकी उदय ने कोण राखी शके? कर्म बोझ थी आत्मा हलवो थतो होवा थी रोग-भय मूंजवतो नथी. साम्यानंद नी नेत्र चिकित्सा पूर्ण थया पहेलां जामनगर छोडशो नहिं. त्यां हठीसिंग भाई ना पारिवारिक बधाय नाना-मोटाओ ने हा० आशीर्वाद जणावजो. सिंह भाई, कनैया भाई ए जोड़का बन्धुओ जातिस्मृति ज्ञान वाला छे. तेओ सौ प्रेमाल अने खुशमिजाज छे प्रसंगवश बधा याद आवी जाय छे.

श्री गणिवर साथे ना मारा पत्र व्यवहार विषयक तमे जे अभिप्राय आप्यो तेवो तेमनो ठाठ मारा लक्ष मां ज छे मात्र उपाध्याय भगवंत नी हाजरी मां पत्र व्य० तेमना ज आग्रहे जालवी राख्यो हतो. अने गणिवर साथे ते नहिं टके एवी पण खात्री ज छे, छतां कदाच वर्ष भर मां एकाद पत्र अपाय अने खामणां ना भावो वड़े तेमना परिणाम मां थी द्वेष भाव घटे तो श्रेय नु कारण थाय. एम जाणी ने

क्वचित् पत्र आपवुं एवी धारणा छे. कच्छ थी तेमणे ज पत्र लखाव्यु हतुं के अमे अहिं थी प्रयाण करी मालवे जइए छीए. तेनो जवाब कच्छमां ज मोकल्यो हतो. हवे मालवे आ देह-व्याधिवश हजु लखीशक्यो नथी पण सां० खामणा प्रसंगे लखवा विचार छे. श्री गुणवंती व्हेने तमने हार्दिक वंदना जणावी छे. केटलाक साधक भाई व्हेनो अहिं कायम रहे छे. तेमां वृद्धि थई रही छे. बाकी नी रोज आव-जा चालु होय छे. मुंबई मां तमारा देह ना वडील बन्धुओ मल्याहता. पण भीड़ ने लीधे विशेष वातचीत न थई शकी. २३ दिवस मुंबई मां रहेवायुं, पण आराम हराम हतुं. लोको नी सद्भावना वर्द्धमान जणाई आध्यात्मिक रुचि वधतो जणाई ॐ शान्तिः धर्मस्नेह मां वृद्धि हो।

सहजानंदघन हार्दिक आशीर्वाद।

दादाजी नुं जापक्रम सिद्धि करवा महेनत करता रहेजो. खपमली रहेशे बीजी कोई फिकर करशो नहिं ॐ

(पत्रांक—४६६)

ॐ नमः

हंपि १६-६-७०

श्री विमलचंदजी श्रावक मु० फेलीकट

आपका पत्र ता० ६-६-७० का मिला। पूज्य गुरुदेव और माताजी सभी का खमत खामणा और आशीर्वाद लिखाया है। पूज्य गुरुदेव की तवियत आगे से ठीक है फिर भी अशक्त हैं इसलिए पत्र खुद नहीं लिख रहे हैं। पर्व पजूषण में यहां पर तपस्या और धर्मध्यान ठीक हुआ। एक बाई के आज १६ उपवास हैं और मासखामण की भावना है सो जानना।

लि० लखमीचंद पारख का छमछरी खमत खामणा वंचीजो

(पत्रांक—४६७)

ॐ नमः

हंपि १८-६-७०

भक्तवर्य श्री भंवरलालजी नाहटा सपरिवार,

कृपालु नी कृपा थी आत्मा जाग्रत छे. शांत छे. अने देह व्याधिदेव नी कृपा थी कसोटी मां थी पसार थई रह्यु छे. हजु केटलाक समय थी क्वचित् उल्टीओ थई जाय छे. नासुर मां धीमो सुधारो छे. पण हजु आसने वेसी शकातुं नथी. आम छतां प्रवचन आदि चालु रह्या. गई काल थी भीड़ ओछी थवा थी अने बाकी ना भक्तो नी भावना आ देह ने तद्दन आराम आपवानी होवा थी ते बंध रह्युं छे. आजे पण घणा प्रयाण करी रह्या छे.

पर्यूषण विषयक तथा आ देह विषयक सुन्दरलालजी सा'व पासे थी विशेष समाचार जाणी शकाशे।

श्री देवचंद्र साहित्य ने पाछुं मोकलुं छुं कारण के हजु घणो समय शरीर स्वस्थ थवा मां लागशे. त्यां सुधी अहिं रोकी राखवुं मने उचित न लाग्युं. अने अहिं आश्रम तंत्र मांय वधु क समय आपवो पड़शे—पड़े छे. एथी फुरशद नो अभाव वर्ताय छे. माटे बीजा कोई द्वारा संशोधन कार्य करावो अथवा स्वयं पतावी ल्यो एज इच्छनीय छे.

शुभैराजजी साव हजु सूधी अहिं न आवी शक्या. वदलियाजी प्रायः आवती काले आवे एवा समाचार छे.

गई काले श्री धूपियाजी नुं खामणा पत्र छे. तेमने मारा खामणा अने शुभ समाचार जणावजो.

तदुपरान्त श्री कांति भाई, वडेरजी, वैद्यराजजी अने याद करनार वधाय भावुको चोपड़ाजी आदि ने हा० खामणासह आशीर्वाद जणावजो. माताजी ना पण सौ ने हा० आशीर्वाद सॉ० खामणा. धर्मस्नेह मां वृद्धि हो ॐ शान्तिः

सहजानंदघन खामणा सह आशीर्वाद।

परिशिष्ट

(१)

नागजी नन्दन सहजानन्द, काटो अशुभ कर्म दल फंद !! ना० ॥
नयनाङ्कज नत सहस्रनयन प्रभु, चरण मधुप जसु श्री धरणेन्द ।
युगवर युग पुरुषोत्तम स्वामी, राजत हम्पी रत्न गिरिन्द ॥ ना० ॥ १ ॥
अन्तर्यामी आतम - दर्शी, अमित शक्ति प्रकटित सुखकंद ।
ज्ञान सूर्य इस पंचम काले, पद्मासन जिन मुद्रावंत ॥ ना० ॥ २ ॥
आश्रम दिव्य सुगन्धी प्रसरित, शुभ्र सौम्य ज्योति ज्यों चन्द ।
धन - धन जगमाता धनलक्ष्मी, भंवर प्रति श्वासे समरंत ॥ ना० ॥ ३ ॥

(२)

अजब धाम की मस्ती हो, प्रभु त्रिभुवन-मोहन ।
चिर साधना से पायी हो, करि मंथन दोहन । अ० । टेर ।
दर्शन ज्ञान चारित्र रमणता, में इकतान विसारी हो, शारीरिक वेदन ॥ १ ॥ अ० ॥
छूटा देहाध्यास ध्यान पण, अन्तर शांति अपारी हो, प्रगटा आतम धन ॥ अ० ॥ २ ॥
रहा चिकित्सक विस्मित गद्गद्, देखा न लाख में कोई हो, ऐसा जाग्रत मन ॥ अ० ॥ ३ ॥
नहि औषध लूं उदयागत कर्म, भोग खपाऊं न छोड़ूं हो, निश्चिय एकाशन ॥ अ० ॥ ४ ॥
प्रगटित हो दादा जिनदत्त ने, की सहाय समयोचित हो, सब ही हर्षित जन ॥ अ० ॥ ५ ॥
गिरि गह्वर वासी प्रभु गिरि सम, धीर शूर महाज्ञानी हो, नत इन्द्रादिक गन ॥ अ० ॥ ६ ॥
देहधारी परमातम देखा, ज्ञानावतारी मैंने हो—प्रभु सहजानंदघन ॥ अ० ॥ ७ ॥
भँवरलाल कहे प्रतिश्वासे, समरूं नांहि विसारूं हो, तव नाम सुपावन ॥ अ० ॥ ८ ॥

(३)

चाल—पग घुंघरु बांध मीरा नाची रे

सद्गुरु की भक्ति मन साची रे, साची रे नहिं काची रे । स० ।
मन मयूर मेरो प्रावृष घन, देख लाग रह्यो नाची रे । स० ॥ १ ॥
रंग लाग्यो है हृदय पटल पर, मानो मेंहदी राची रे । स० ।
सद्गुण राग पराग संग्राहक, लागो झट-पट माची रे । स० ॥ २ ॥
अगम मार्ग की अगम लिपि को, बतलाते लो बांची रे । स० ।
प्रबल पुण्य जाग्रत जो है तो, लो आत्मिक सुख जाची रे । स० ॥ ३ ॥
भावी तीर्थप क्षायक - द्रष्टा, महाविदेह जा प्राची रे । स० ।
'भंवर' करोड़ों में ये सद्गुरु, सहजानंद लो टांची रे । स० ॥ ४ ॥

(४)

अहो आज निशि नींद में एक सुपना आया।
हृदय हुआ आनन्दपूर्ण रोमांचित काया ॥ १ ॥

गुरुवर बैठे पाट पर, थी परिषद सन्मुख।
बैठा था एक बाघ, परमनिर्भय विकसित मुख ॥ २ ॥

वन्दनान्तर सद्गुरु जी से पूछी सुख शाता।
बैठ बाघ के निकट विकट भी लगा सुहाता ॥ ३ ॥

पीठ सहला मैं बोल उठा बाघ भाई नमस्कार।
उसका भी करबद्ध किया प्रतिनमन स्वीकार ॥ ४ ॥

पर्यूषण अष्टम तप के दिन को यह वार्ता।
दो हजार छवीस भंवर सद्गुरु गुण गाता ॥ ५ ॥

(५)

रत्नकूट की रत्न-खान में पुरुषरत्न इक पाक्यो।
इन्द्रादिक सेवा में हाजिर पण भव भ्रमणे थाक्यो ॥ १ ॥

हुए प्रभु सहजानंद विदेही, नहिं किंचित् पुद्गल नेही ॥ हु० ॥ टेर।

जन्मे डुमरा कच्छ देश में, नागजी नयणा माता।
रत्नमुनि के कर कमलों से, चारित्र रत्न सुहाता ॥ हु० ॥ २ ॥

अतिशय ज्ञानी लब्धि सिद्धि जसु, लोटे चरण कमल में।
पण अद्भुत साधक प्रभु ने नहिं दीना लक्ष्य अमल में ॥ हु० ॥ ३ ॥

ज्ञायक-द्रष्टा देह भिन्न, चिन्मय सुज्योति के ज्ञाता।
पुण्य राशि संचय कर पाया, तीर्थप नाम विख्याता ॥ हु० ॥ ४ ॥

नहि जानी प्रभु की महिमा को, दूषम दोषी प्राणी।
लाभान्वित न हुए किंचित् पा, महापुरुष सद्वाणी ॥ हु० ॥ ५ ॥

हाय रहे हम वंचित कोरे, सत्वहीन सप्रमादी।
अवसर पा निकले न भंवर से, पायी न आत्म प्रसादी ॥ हु० ॥ ६ ॥

कैसे थे और कहां गये ? मुझे कहो न सहजानंद प्रभु कहां गये ?
कच्छ डुमरा में जन्मे, नागजी-नयनानंदन कहां गये ॥ मु० ॥ १ ॥

वय यौवन में संयम धर, गुरु-निश्रा बारह वर्ष रहे।
व्याघ्र व्याल की गुफा वास, मोकलसर ईडर आदि रहे ॥ मु० ॥ २ ॥

चारभुजा गोकाक खंडगिरि, में परिषह उपसर्ग सहे।
बोरड़ो में देवेन्द्रों द्वारा, युगप्रधान वर बिरुद लहे ॥ मु० ॥ ३ ॥

अंतिम साधना रत्नकूट पर, कर के महाप्रयाण जये।
श्रावण सुदि दशमी सुप्रभाते, महाविदेह में जन्म भये ॥ मु० ॥ ४ ॥

कल्याणक इन्द्रों ने मिल कर, मेरु शिखर पर स्नात्र किये।
समय पाय तीरथ प्रगटावें, मोक्षमार्ग सत्थवाह भये ॥ मु० ॥ ५ ॥

दक्षिण भरत दुषम दुर्भागी, पाकर भी नहिं लाभ लहे।
माता जी को पूर्ण कृपा से, विह्वल जन आश्वस्त हुए ॥ मु० ॥ ६ ॥

हमें बुलाओ चरण कमल में, सम्यग् दर्शन बोधि चहें।
करुणामूर्ति तारक तारो, दास 'भंवर' गुरु कीर्त्ति कहे ॥ मु० ॥ ७ ॥

(७)

बिन सहजानंद सब जग सूना ॥ बिन० ॥
लागत जग की सारी बातें, रसवती हो जैसे बिन लूना ॥ बि० ॥ १ ॥

आतम ज्ञानी श्रमण कहाते, और भेषधर सबही न्यूना।
लाख बरस संयम ढोकर के, स्वानुभूति पायी नहिं अधुना ॥ बि० ॥ २ ॥

जड़ मतार्थ छोड़ा नहिं जब तक, कैसे हो स्वात्मार्थ बहुना।
सप्रभाव बाणी सद्गुरु की, इतर बीज सबही ज्यों भूना ॥ बि० ॥ ३ ॥

आत्मा अजर अमर अविनाशी, सपर्याय होत नव जूना।
उत्पत्ति व्यय होता है प्रतिक्षण, पुद्गल सड़न गलन रस छूना ॥ बि० ॥ ४ ॥

वर्ण गंध विरहित चिद्धातु, ध्रौव्य आतम द्रव्य है सुन लहुना।
सम्यग् दृग् दीनी सद्गुरु ने, 'भँवर' पीन मकरंद मधूना ॥ बि० ॥ ५ ॥

॥ योगीन्द्र युगप्रधान सद्गुरु श्री सहजानन्दघन दशकम् ॥

नागजी श्रेष्ठिनः सूनु, मूलजीत्यभिधानतः।
सुकच्छे डुमरा जन्म, दशम्यां नभसित्तिथौ ॥ १ ॥

ज्ञान वैराग्य संप्राता, रत्नमुनिना दीक्षितः।
पाठितानि सुशास्त्राणि, पाठकोत्तम लब्धिना ॥ २ ॥

द्वादश वर्ष पर्याये, ध्यानाभ्यास सदाशये।
अङ्गीकृतो गुहावास, श्री मुक्लसर पुरे ॥ ३ ॥

प्रेरणा स्वावलंबस्य, श्री जिनदत्तसद्गुरु।
प्रवर्त्तनोदयाधीन, नव्य वन्ध विवर्जनम् ॥ ४ ॥

आप्ता युगवरोपाधि, चोरड्यां सागर तटे।
सीमंधर स्वाम्यादेशा, द्वेवेन्द्रेण प्रकाशितः ॥ ५ ॥

रत्नकूटे श्रीमद्राज-चन्द्राश्रम संस्थापितः।
वितरणादात्मबोधस्य भव्य जीवोपकारकः ॥ ६ ॥

नय युग्म विंशत्यब्दे भ्राद्र द्वितीयायां निशौ।
कृत्वा महाप्रयाणेन महाविदेह क्षेत्रेऽव्रजन् ॥ ७ ॥

श्रेयांस-सत्यकी कुक्षौ पुरी श्री पुण्डरिंगिणी।
दशाम्यां जन्म कल्याण वसु युग्म सिच्छ्रावणे ॥ ८ ॥

यथा समय चारित्र—कैवल्य सुकल्याणकौ।
तीर्थ प्रवर्त्तना काले वाञ्छा चरण सेवनम् ॥ ९ ॥

सुदेव सद्गुरुनाथ त्वमेव शरणं मम।
भव निस्तारको स्वामी, सहजानंद दायकः ॥१०॥

भँवरलाल नाहटा

● योगीन्द्र युगप्रधान श्री सहजानंदघन-सद्गुर्वष्टकम् ●

—भँवरलाल नाहटा

श्रीमन्तं सहजाभिधेय सुगुरुं श्री रत्नकूटे स्थितम्
आत्मज्ञं सुरपादपं युगवरं कारुण्य - मूर्ति बुधम्।
इन्द्राद्यैरपि सेवितं सुयमिनं वैशिष्ट्यसंधारिणम्
वंदे तं करुणाकरं मुनिवरं श्री भावितीर्थंकरम् ॥ १ ॥

जन्माद्यस्य सुकच्छ स्वच्छ विषये पुण्योदयादर्चिते
ऊकेशे परमारवंशविभवे श्रीनागजी श्रेष्ठिनः
देव्या श्री नयनाभिधान सुमतेः श्री 'मूलजी' नामतः
वंदे तं करुणाकरं मुनिवरं श्री भावितीर्थंकरम् ॥ २ ॥

प्राग्जन्मार्जित साधना स्मृति वशाच्छ्री मोहमय्यां पुरे
सद्वैराग्य विभूषितं श्रुति श्रुतं सर्वस्व त्यागेप्सितम्
श्रीमन्मोहन मौनशिष्य कृपया जैने नये दीक्षितम्
वंदे तं करुणाकरं मुनिवरं श्री भावितीर्थंकरम् ॥ ३ ॥

सच्छास्त्रैः परिधूत मानसमलं चारित्र्यसंचर्चितम्।
यावद्द्वादश वर्षमेव गुरुणां साकं ततो केवलम् ॥
संतप्त विपुलं तपः परिषदैः घोरं गुहायां गिरेः।
वन्दे तं करुणाकरं मुनिवरं श्री भावितीर्थंकरम् ॥ ४ ॥

पल्ल्यामीडरभूमिभागभुवने हामेटके स्थानके,
गोकाके ह्युपिकेरापावापुरे मौनं त्रिवर्षी कृतम्।
व्याघ्र व्याल कराल कालकलिते कुञ्जे समाधौस्थितम्
वन्दे तं करुणाकरं मुनिवरं श्री भावितीर्थंकरम् ॥ ५ ॥

घोरड्यां शिववाडि रुद्रामसरे कृत्वा विहारं विभुम्
श्री सीमंधर प्रेरितं युगवरोपाधि दधानं मुदा
मातृ श्रीधनदेवि कीर्तिममलं चेतश्चमत्कारिणम्
वन्दे तं करुणाकरं मुनिवरं श्री भावितीर्थंकरम् ॥ ६ ॥

कर्णाटे फलिते सुदेश विषये श्रीरत्नकूटे नगे
श्रीमद्राजप्रभु - प्रताप विदितः चन्द्राभिधोह्याश्रमः
स्थाने सद्गुरु प्राग्भवे परिचिते संघेन संस्थापितः
वन्दे तं करुणाकरं मुनिवरं श्री भावितीर्थंकरम् ॥ ७ ॥

अब्दे पाण्डव युग्म विंशति शते श्री पौषमासे शुभे।
कृष्णे कामतिथौ च भौम दिवसे श्री कालिकातापुरे
अल्पज्ञ 'भ्रमरेण' चाष्टकमिदं सद्भक्तिभावैः कृतम्
वन्दे तं करुणाकरं मुनिवरं श्री भावितीर्थंकरम् ॥ ८ ॥

अर्थ-सहायक

५००१) श्री सिद्धार्थ भाई झवेरी, मुंबई

२००१) शा० भानीरामजी घेवरचन्दजी चंदनमलजी पालरेचा श्री होस्पेट वालों ने अपने पिता श्री पुनमचन्दजी की यादगार में

१००१) शा० हरकचन्दजी सेराजी पालरेचा श्री होस्पेट

१००१) शा० गुलाबचन्दजी प्रसन्नकुमारजी झावक, श्री कुन्नुर

१००१) श्री जेठमलजी अनोपचन्दजी झावक चेरीटेबल ट्रस्ट, श्री कुन्नुर

१००१) श्री रतनलालजी बदलिया, कलकत्ता

५०१) श्रीमती वल्लभकुमारीजी नखत, (धर्मपत्नी श्री मोतीचन्दजी नखत)

५०१) शा० मीसरीमलजी भोजाणी, श्री बल्लारी

५०१) शा० जोगाभाई वेलजी नाला, श्रीहंपी

५०१) शा० राजकुमारजी कोठारी, श्री हैदराबाद

५०१) शा० छगनलालजी वीरचन्दजी ललवानी श्री कडपा

५०१) शा० मीसरीमलजी बाबुलालजी, श्री बेंगलोर

५०१) शा० मीसरीमलजी हजारीमलजी, श्री गंगावती

५०१) शा० वालजी मुलजी, श्री हैदराबाद

५०१) शा० मुलचन्दजी रतनचन्दजी, श्री सिकंदराबाद

५०१) श्री वर्धमान ट्रेडर्स, श्री गदग

३०१) शा० मीसरीमलजी मुलाजी धारीवाल, श्री होस्पेट

३०१) शा० रीखबचन्दजी प्रमोदकुमारजी बागरेचा, श्री कंपली

३०१) शा० सांकलचन्दजी चुन्नीलालजी, श्री मद्रास

२५१) शा० सुन्दरजी गेलाभाई, श्री गदग

२५१) श्री राज ट्रेडिंग कम्पनी, श्री मंडिआ

२५१) श्री राज उत्तम एण्ड कम्पनी, श्री मंडिआ